CERTIFICATE.

This is to certify:-

(a) that the Thesis embodies the work of the candidate himself.

(b) that the candidate worked under me for the period required under ordinance 7: and

(c) that he has put in the required attendance in my department during that period.

(Durga Prasad Mital)
M.A., Ph.D., D.Litt.,
Head Hindi Department,
Bundelkhand College,
Jhansi.

Dated:12.3.81.

दुर्गा प्रसाद मीतल
एम ए., पी.एच डी., डी. लिट्
पीठ एवं अध्यक्ष
हिन्दी विभाग
बुन्देलखण्ड कॉलेज, झाँसी

बुन्देलखण्ड की संस्कृति

:: और ::

वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यास

सन् १९८१

BUNDELKHAND UNIVERSITY
Central Library
Date
t1504
JHANSI

निर्देशक—

द्वारकाप्रसाद मीतल
एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्.
अध्यक्ष हिन्दी-विभाग
बुन्देलखण्ड कॉलिज, झांसी।

देवीप्रसाद
एम. ए.
हिन्दी-विभाग
बुन्देलखण्ड कॉलिज, झांसी।

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी की पी-एच. डी.

:: की ::

उपाधि के लिए प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

●●

सन् १९८१

निर्देशक—
द्वारकाप्रसाद मीतल
एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्.
अध्यक्ष हिन्दी-विभाग
बुन्देलखण्ड कॉलिज, झाँसी।

देवीप्रसाद
एम. ए.
हिन्दी-विभाग
बुन्देलखण्ड कॉलिज, झाँसी।

आभार-प्रदर्शन

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को पूर्ण करने में, अधिष्ठाताओं श्रद्धेय डॉ० कुमार सारदा प्रसाद जोशी का मुझे सदैव निर्देशन प्राप्त हुआ। विषय के विविध पक्षों पर सम्पर्क कर वे उनके साथ मेरा विचार-विमर्श होता रहा है। इस शोध-प्रबन्ध में, उनके विशिष्ट निर्देशन एवं प्रासंगिक सुझावों के फलस्वरूप ही विषय की वस्तु स्थिति को पूर्णतया स्पष्ट करने में सक्षम हो सका हूँ। उन्होंने मेरे शोध प्रबन्ध का आद्यन्त मनो-निवेश पूर्वक अध्ययन किया तथा संशोधन और सम्पादन करके, उसमें प्राण-प्रतिष्ठा की। उन्होंने जिस आत्मीयता, सहृदयता और उत्साह वर्धन के साथ मुझे निर्देशित किया है, उसके लिये मैं उनका आभार प्रदर्शन शब्दों के माध्यम से कर सकने में असमर्थ हूँ।

बहनों के परिवार वर्ग से भी मुझे सदैव सहयोग प्राप्त हुआ है। उनके सुख की सत्प्रेरणा वर्ग ने अपने सौजन्य से संकुचित प्रकाशित एवं अप्रकाशित अध्यायों निःशुल्क प्रदान किये तथा अन्य सम्बन्धित सामग्री भी उपलब्ध कराई, जिसके लिये मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। बहनों के बीच श्री सरोजिनी कान्ता और रमा कान्ता ने भी इस कार्य में, मेरी यथा सम्भव सहायता की जिसके लिये मैं उनका कृतज्ञ हूँ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में जिन लेखकों, कवियों, पत्रकारों एवं ग्रन्थ-विदों से मुझे सहयोग मिला है, उनका भी मैं अनुगृहीत हूँ।

आदरणीय डॉ० जीवन लाल के परिवारके सदस्यों ने इस में मुझे यथा सम्भव सहयोग दिया है, जिसके लिये मैं आभार प्रदर्शन करना अपना कर्तव्य मानता हूँ।

इस दायित्व के निर्वाह में मेरे सभी परिवार वर्गों से भी मुझे सदैव सहयोग मिला है, जिसके लिये मैं उन सबका हृदय से आभारी हूँ, साथ ही अपनी माँ, श्रद्धेय श्रीमती कालिका देवी जी के नाम यहाँ विशेष रूप से उल्लेख करना चाहूँगा, जिनकी सतत् प्रेरणा और आशीर्वाद से मैं प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को पूर्ण करने में सक्षम हो पाया हूँ।

अन्त में, इस महान पूर्ण कार्य को पूर्ण करने में और इस शोध-प्रबन्ध को पूर्ण रूप से प्रदान करने में मेरी पत्नी, श्रीमती तारा देवी ने भी सहयोग दिया है, उसके लिये मैं उनका सदा रहूँगा।

देवी प्रसाद

अतीत के पटल पर दिव्य दृष्टियों का सृजन करके बुन्देलखण्ड के जन जीवन में मानवता की अमर ज्योति जाग्रत करने वाले, बुन्देली संस्कृति के अनन्य उपासक वृन्दावन लाल वर्मा एक अद्वितीय प्रतिभाशाली उपन्यासकार थे।

वर्माजी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर विभिन्न विद्वानों ने कुछ अनुसन्धान किये हैं। डा० शशिभूषण सिंहल ने "उपन्यास वृन्दावन लाल वर्मा", श्री शिव कुमार मिश्र ने "वृन्दावन लाल वर्मा:साहित्य और समीक्षा", श्री रामदरश मिश्र ने, "ऐतिहासिक उपन्यासकार वृन्दावन लाल वर्मा" डा० कृष्ण अवस्थी ने, "वृन्दावन लाल वर्मा के उपन्यासों का सांस्कृतिक अध्ययन" तथा डा० राम नारायण सिंह "मधुर" ने "हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास" विषयों का अनुसन्धान किया है।

वर्माजी के उपन्यासों में आद्योपान्त व्याप्त बुन्देली संस्कृति की अभिव्यक्ति से सम्बन्धित कोई महत्वपूर्ण अनुसन्धानात्मक कार्य अभी तक नहीं हुआ है

मैंने इस शोध प्रबन्ध में इस अभाव की परिपूर्ति करने का प्रयास किया है।

बुन्देलखण्ड की संस्कृति, भारतीय संस्कृति में अपना एक महत्व रखती है। वर्माजी के उपन्यासों में यहाँ का सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन मुखरित हो उठा है तथा बुन्देलखण्ड की प्रकृति प्रतिबिम्बित हुई है। उनके उपन्यासों में लोक संस्कृति, लोकगीत एवं लोक शब्दावलि का प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है। बुन्देलखण्ड की सामान्य सांस्कृतिक विशेषताओं का समावेश अपने उपन्यासों में करके, उन्होंने बुन्देली संस्कृति के प्रति लोगों को आस्थावान होने का प्रयास किया है।

ऐतिहासिक उपन्यासों की परम्परा को चरम विकास प्रदान करने वाले शीर्षस्थ उपन्यासकार वर्माजी ने इस शुद्ध भाव से सम्बद्ध ऐतिहासिक पुरुषों को नव जीवन प्रदान किया है, जिससे वातावरण में सजीवता आ गई है।

अभी तक किसी भी विश्वविद्यालय से "बुन्देलखण्ड की संस्कृति और वृन्दावन लाल वर्मा के उपन्यास" शीर्षक पर कोई भी अनुसन्धान नहीं हुआ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में बुन्देलखण्ड की संस्कृति मुखरित हुई है, इस दृष्टि से हिन्दी साहित्य में, यह एक मौलिक योगदान है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के प्रथम-अध्याय में भारतीय संस्कृति एवं बुन्देलखण्ड की संस्कृति की मूल-भूत विशेषताओं का विवेचन किया ह गया है। बुन्देलखण्ड के जन-जीवन से सम्बद्ध लोक साहित्य, लोक रीतियाँ, रीति-रिवाजों प्रथा -त्योहारों और संस्कारों की महत्ता की दृष्टि में रख कर इन सबका उल्लेख भी प्रस्तुत अध्याय में किया गया है।

बुन्देलखण्ड की भौगोलिक सीमाओं, प्राचीन काल से इतिहास एवं विभिन्न परिस्थितियों का यथार्थ एवं सजीव चित्रांकन, द्वितीय अध्याय में अभिव्यक्त किया गया है।

तृतीय अध्याय में, वर्मा जी की जीवन झाँकी प्रस्तुत करते हुये उनकी सांस्कृतिक विचार सीमाओं एवं अभिव्यक्तियों को दर्शाया गया है। साथ ही उनके ऐतिहासिक, सामाजिक एवं विविध उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय भी दिया गया है।

चतुर्थ अध्याय में उपन्यास, वर्मा जी के ऐतिहासिकउपन्यासों का सांस्कृतिक दृष्टि से विवेचन करते हुये, उनके उपन्यासों में चित्रित बुन्देलखण्ड की संस्कृति की उपलब्धि को दर्शाते हुये, यहाँ के प्रेरणाप्रद ऐतिहासिक स्थलों, मनौतियों प्रभृति, पुरातनी जन, बुन्देली भाषा का सौरभ, विविध रीति -रिवाजों तथा अनूठी मनो-दशाओं की झाँकी प्रस्तुत की गई है। यहाँ के नर-नारियों की मनोवृत्तियों का भी उल्लेख किया गया है।

पंचम अध्याय में, वर्मा जी के सामाजिक एवं विविध उपन्यासों का अनुशीलन करते हुये, सामान्य सामाजिक जीवन व्यतीत करने वाले नर-नारियों की मनोभावनायें और उनके रहन-सहन पर प्रकाश डाला गया है। भाषा का सौन्दर्य, प्रचलित रीतियाँ तथा कलाओं के उत्कृष्ट रूपों को भी जन भाषा के साथ प्रस्तुत किया गया है।

वर्मा जी ने अपने विविध उपन्यासों के माध्यम से बुन्देलखण्ड की संस्कृति का समूचा रूप जन -भाषा के साथ प्रस्तुत किया है। "झाँसी-उरछा-ओरछा, झाँसी-दमोह-उरछा-टीकमगढ़" की भौगोलिक सीमाओं से सम्बद्ध रह कर, ऐतिहासिक उत्थान पतन और सामाजिक जीवन का जो यथार्थभूत आदर्श रूप वर्मा जी ने अपने उपन्यासों में प्रस्तुत किया है, जिससे उनके उपन्यासों में बुन्देलखण्ड की संस्कृति प्रतिबिम्बित हुई है और उन्हें बुन्देलखण्ड के उपन्यासकार की प्राप्त प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है।

मैंने, वर्मा जी के उपन्यासों का विवेचन करके, उनके व्यापक बुन्देली संस्कृति की अभिव्यक्ति से जन-जन को अवगत कराने का प्रयास किया है।

आशा है, इस शोध-प्रबन्ध के माध्यम से अन्य बुन्देलखण्ड की संस्कृति सम्बन्धी विवेचनायें प्रकाश में आयेंगी।

विषय अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय

भारतीय संस्कृति और बुन्देलखण्ड की संस्कृति की मूलभूत विशेषतायें 2-68

पृ.सं.

(अ) भारतीय संस्कृति की परिभाषा 2
भारतीय संस्कृति के मूल तत्व 5
भारतीय संस्कृति और जीवन 8
भारतीय संस्कृति और साहित्य 10

(ब) बुन्देलखण्ड की संस्कृति 14
बुन्देलखण्ड की संस्कृति के मूलतत्व 15

(स) बुन्देलखण्ड के उपास्यदेव 16
रीति रिवाज 19
लोक त्यौहार 24
व्रत 31
भोग 38
संस्कार 42
लोक रीतियां 47
लोक साहित्य 49
बुन्देली लोक कथायें 55
कहावतें 60

(द) भारतीय संस्कृति में बुन्देलखण्ड की संस्कृति का स्थान . . 66

द्वितीय अध्याय

बुन्देलखण्ड की भौगोलिक सीमायें एवं विभिन्न परिस्थितियां : 70-100

१: (क) बुन्देलखण्ड की भौगोलिक सीमा प्राचीन अर्वाचीन - - - 70
(ख) बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत राज्य एवं उनका संक्षिप्त परिचय - 71
(ग) बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास - - - - - 75

२: (क) बुन्देलखण्ड की भौगोलिक परिस्थितियां - - - - 82
(ख) बुन्देलखण्ड की ऐतिहासिक परिस्थितियां - - - - 84
(ग) बुन्देलखण्ड की सामाजिक परिस्थितियां - - - - 88
(घ) बुन्देलखण्ड की राजनीतिक परिस्थितियां - - - - 91
(च) बुन्देलखण्ड की आर्थिक परिस्थितियां - - - - 94
(छ) बुन्देलखण्ड की साहित्यिक परिस्थितियां - - - - 96

तृतीय अध्याय

वर्मा जी की सांस्कृतिक विचारधारायें एवं उनके उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय : 102-122

क : वर्मा जी का जीवन परिचय : - - - 102
(१) जन्म - - - - - - - - - 102
(२) वंशावलि - - - - - - - 102
(३) बाल्यावस्था - - - - - - 103
(४) शिक्षा - - - - - - - 103
(५) पारिवारिक वातावरण - - - 104
(६) दाम्पत्य जीवन - - - - - 104
(७) नौकरी और व्यवसाय - - - 105
(८) साहित्यिक देन - - - - 105
(९) देहावसान - - - - - - 107

स : वर्मा जी की सांस्कृतिक विचार धाराये : - - - 107

च: १ ऐतिहासिक उपन्यास - - - - 111

बृहत्तर - - - - - - - - - - - 111
विराटा की पद्मिनी - - - - - 111
मुसाहिब जू - - - - - - - - - 112
कचनार - - - - - - - - - - - 112
झाँसी की रानी - - - - - - - 113
मृगनयनी - - - - - - - - - - 113
रामगढ़ की रानी - - - - - - 114
टूटे काँटे - - - - - - - - - 114
दुर्गावती - - - - - - - - - 114
भुवन विक्रम - - - - - - - - 115
माधव जी सिन्धिया - - - - - 115
अहिल्याबाई - - - - - - - - 117
ललितादित्य - - - - - - - - 117
कीचड़ और कमल - - - - - - 117
देवगढ़ की मुस्कान - - - - - 117
जय दया जो - - - - - - - - 116

२: सामाजिक उपन्यास - - - - - - - 118

अब मेरा कौन - - - - - - - - 118
लगन - - - - - - - - - - - - 118
प्रेम की भेंट - - - - - - - - 118
कमल पत्ते - - - - - - - - - 119
मुन्हली चन्द्र - - - - - - - 119
पूर्वाभास - - - - - - - - - 119
संगम - - - - - - - - - - - 120

कभी न कभी - - - - - 120
जागता - - - - - - - 120

३: विविध उपन्यास

सौमा - - - - - - 121
उदय किरण - - - - 121
अमर ज्योति - - - - 122

चतुर्थ अध्याय

वृन्दावन लाल वर्मा के उपन्यासों में बुन्देलखण्ड की संस्कृति की उपलब्धि : 124-251

१: ऐतिहासिक स्थल - - - - - - 124
२: आधुनिक स्थल - - - - - - - 128
अ : पर्वत - - - - - - - 128
ब : नदियाँ - - - - - - - 130
स : वृक्ष - - - - - - - 132
द : उपवन - - - - - - - 134

३: लोकगीत :

प्रकृति - - - - - 135
बैल पूजा - - - - 143
आचार विचार - - 150

४: पुरातत्व पाठ :

प्रकृति - - - - - - 165

वैज्ञ कुमार - - - - - 174

आचार विचार - - - 181

५: भाषा :

बुन्देली के शब्द - - - 200

लोकोक्तियाँ - - - - 214

मुहावरे - - - - 222

६: स्थापत्य कला :

मन्दिर - - - - - 229

भवन - - - - - 232

गढ़ - - - - - 234

७: ललितकला :

चित्र कला - - - - 236

नृत्य - - - - - 237

गायन - - - - - 238

रागरागिनी - - - 240

बुन्देली लोकगीत - - - 241

८: बुन्देलखण्ड के रीति रिवाज - - 244

९: बुन्देलखण्ड के मनोरंजन - - - 249

पंचम अध्याय

वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यासों में बुन्देलखण्ड की संस्कृति का चित्रण : 253-308

१: प्राकृतिक स्थल :

खेत - - - - - - 253
नदियाँ - - - - - - - 254
वृक्ष - - - - - - - 254
उपवन - - - - - - - 255

२: नारी पात्र :

प्रकृति - - - - - - 256
वेश भूषा - - - - - - 258
आचार विचार - - - - 259

३: पुरुष पात्र

प्रकृति - - - - - - - 264
वेश भूषा - - - - - - 266
आचार विचार - - - - 267

४: भाषा :

बुन्देली के शब्द - - - 273
लोकोक्तियाँ - - - 278
मुहावरे - - - - 287

५: स्थापत्य कला :

मन्दिर - - - - - 289
भवन - - - - - - 290
गढ़ - - - - - - 290

६: ललितकला :

चित्रकला - - - - - - - - 291

नृत्य - - - - - - - - 291

गायन - - - - - - - - 293

राग रागिनी - - - - - - 293

बुन्देली लोक गीत - - - - - 294

७: बुन्देलखण्ड के रीति रिवाज - 298

८: बुन्देलखण्ड के मनोरंजन - - - 302

षष्ठ अध्याय

वर्मा जी के उपन्यासों में उपलब्ध बुन्देलखण्ड की सामान्य सांस्कृति विशेषतायें 310 — 423

आध्यात्म भावना - - - - 311

आस्तिकता - - - - - 321

धर्म परायणता - - - - - 339

अवतारवाद - - - - - 350

पुनर्जन्म - - - - - 353

कर्मफल एवं पुनर्जन्म - - - 358

पारलौकिक जैसे भावना - - - 363

संस्कार - - - - - - - 367

समन्वय की भावना - - - 371

आशावादिता - - - - 377

अन्य उपन्यासकार

राहुलदेव सांकृत्यायन - - - - - - - - - - - - - 445
मेहता प्रसाद गुप्त - - - - - - - - - - - - - 446
यशोदानन्दन हेतु - - - - - - - - - - - - - 447

च: सांस्कृतिक दृष्टिकोण से वर्मा जी के उपन्यासों का प्रदेय :

१: आंचलिक स्तर पर वर्मा जी के उपन्यासों का प्रदेय - - 449
२: सामाजिक स्तर पर वर्मा जी के उपन्यासों का प्रदेय - - 452
३: ऐतिहासिक स्तर पर वर्मा जी के उपन्यासों का प्रदेय - 455
४: राजनीतिक स्तर पर वर्मा जी के उपन्यासों का प्रदेय - 458
५: आध्यात्मिक और धार्मिक स्तर पर वर्मा जी के उपन्यासों का प्रदेय - - - - - - - - - - - - - 460
उपसंहार - - - - - - - - - - - - - - 463
सहायक ग्रन्थ-सूची - - - - - - - - - - - - - 467-471

स्व० डा० वृन्दावनलाल वर्मा

"मैं उस बुन्देलखण्ड का तेलिया पत्थर हूँ, जिसपर बड़े-बड़े भूकम्पों तक का कोई असर नहीं होता"

(अपनी कहानी-पृ.सं.217)

प्रथम अध्याय

"भारतीय संस्कृति और बुन्देलखण्ड की संस्कृति की मूलभूत विशेषताएँ"

क- भारतीय संस्कृति की परिभाषा
भारतीय संस्कृति के मूल तत्व
भारतीय संस्कृति और जीवन
भारतीय संस्कृति और साहित्य

ख- बुन्देलखण्ड की संस्कृति
बुन्देलखण्ड की संस्कृति के मूल तत्व

ग- बुन्देलखण्ड के उपास्य देव
राम-विवाह
तीज-त्योहार
ब्रज, मेले
संस्कार
लोकरीति
लोकसाहित्य
कहानी, कहावतें आदि ।

बुन्देलखण्ड की संस्कृति और वृन्दावन लाल वर्मा के उपन्यास

प्रथम अध्याय

"भारतीय संस्कृति एवं बुन्देलखण्ड की संस्कृति की मूलभूत विशेषतायें "

क :- संस्कृति की परिभाषा :-

संस्कृति की परिभाषा के सम्बन्ध में दो मत परिलक्षित होते हैं। प्राचीन मतानुसार " संस्कृति" शब्द संस्कृत भाषा के "कृ" धातु में "क्तिन" प्रत्यय तथा "सम" उपसर्ग जोड़ने से बनता है । कृति का अर्थ है मनुष्य के व्यवहार किया हुआ कार्य आचार एवं व्यवहार , अतः मनुष्य के क्रिया- कलापों का लेखा- जोखा ही संस्कृति के अध्ययन का प्रमुख विषय है । ऋग्वेद में प्राचीन सांस्कृतिक परम्परा का विवरण इस प्रकार मिलता है :-

"सा संस्कृतिः प्रथमा विश्ववारा " अतः प्राचीन मतानुसार संस्कृति का सम्बन्ध कल्याण, परिष्कार, सुन्दर तथा उन्नत से है ।

आधुनिकमत के अनुसार संस्कृति शब्द का प्रयोग अंग्रेजी के "कल्चर" के पर्याय के रूप में किया जाता है जिसका अर्थ है उपजना या बनाना । आधुनिकमत इसी आधार को लेकर मानसिक, भौतिक तथा आध्यात्मिक विकास के लिये संस्कृति शब्द का प्रयोग करता है । इस प्रकार विभिन्न विद्वानों ने संस्कृति की परिभाषायें दी हैं । जिनका यहाँ उल्लेख किया जायेगा ।

छान्दोग्योपनिषद में संस्कृति की परिभाषा निम्नवत दी है :-

"कथाधि देशस्य समाजस्य, व विभिन्न जीवन व्यापरेक, सामाजिक सम्बन्धेषु वा मानवीयाम दृष्ट्या प्रेरणा प्रदानं तथा दर्शनां समष्टिरेव संस्कृति ।" :1:

डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी का अभिमत है कि :-

"संस्कृति मनुष्य की विविध साधनाओं की सर्वोत्तम परिणति है ।" :2:

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार के विचारानुसार :-

"मनुष्य अपनी बुद्धि का प्रयोग कर विचार और कार्य क्षेत्र में जो सृजन करता है, उसी को संस्कृति कहते हैं ।" :3:

1:-छान्दोग्योपनिषद: 8-4-1

2:-आलोक के सूत्र :निबन्ध संग्रह: प्रथम संस्करण सं2064-डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी

3:-भारतीय संस्कृति और उसका विकास - डा० सत्यकेतु विद्यालंकार

डा० देवराज का मत है कि :-

"संस्कृति उन गुणों का समुदाय है, जिन्हें मनुष्य अनेक प्रकार की शिक्षा व्यवहार अपने प्रयत्न से प्राप्त करता है, जिन में सांस्कृतिक विशेषतायें मनुष्य की बुद्धि एवं व्यवहार की विशेषतायें हैं ।" :1:

डा० भगवत शरण उपाध्याय के अनुसार :-

"संस्कृति उस प्रकार का संस्कार है कि वह व्यक्तिगत भी हो सकता है और सामूहिक भी ।" :2:

दिनकर का अभिमत है कि :-

"असल में संस्कृति जिन्दगी का एक तरीका है और वह तरीका सदियों से जमा होकर उस समाज में छाया रहता है जिसमें हम जन्म लेते हैं ।" :3:

डा० गुलाबराय भारतीय संस्कारों को संस्कृति मानने के पक्ष में हैं ।

"भारतीय संस्कारों को संस्कृति कहते हैं ।" :4:

डा० भगवत देव शास्त्री का विचार है कि :5:

"किसी देश समाजके विभिन्न जीवन- व्यापारों या सामाजिक सम्बन्धों में मानवता की दृष्टि से प्रेरणा प्रदान करने वाले उन- उन आदर्शों की समष्टि को ही संस्कृति समझना चाहिये ।" :5:

राधा कृष्णन अपने विचार व्यक्त करते हुये लिखते हैं :-

"संस्कृति ...विवेक बुद्धिका , जीवन को भले प्रकार जान लेने का नाम है । " :6:

करवाली जी के अनुसार :-

" लौकिक, पारलौकिक, धार्मिक , आध्यात्मिक, राजनैतिक अभ्युदय के उपयुक्त देहेन्द्रिय, मन, बुद्धि, अहंकारादि की भूषणभूत सम्यक चेष्टाएं एवं गुणों की संस्कृति है । " :7:

1:- भारतीय संस्कृति पृ० 21 - डा० देवराज

2:- भारतीय समाज का ऐतिहासिक विश्लेषण-पृ०223- डा० भगवत शरण उपाध्याय

3:- संस्कृति के चार अध्याय- प्रथम संस्करण - पृ० 653- दिनकर

4:- मुंशी अभिनन्दन ग्रंथ - पृ० 285- डा० गुलाबराय

5:- भारतीय संस्कृति का विकास :वैदिक धारा: पृ०-4-डा० भगवतदेव शास्त्री

6:- स्वतंत्रता और संस्कृति, अनु० विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी संस्करण 1955पृ०53 डा० राधाकृष्णन

7:-कल्याण हिन्दू संस्कृति अंक- पृ० 35 - करवाली जी

वर्मा

रामचन्द्र संस्कृति के सम्बन्ध में लिखते हैं कि :-

"किसी व्यक्ति, जातीय अथवा राष्ट्र के मन, रुचि, आचार- विचार ,कला-कौशल और सभ्यता के क्षेत्र में हुये क्रमिक विकास के दृष्टांत तत्वों की समष्टि को ही संस्कृति कहते हैं । " :1:

निष्कर्ष यह है कि विद्वानों ने संस्कृति को जिस रूप में आंका ,उन्होंने उसी रूप में उसे व्यक्त करने का प्रयत्न किया । किसी ने उसे "जीवन का आन्तरिक सौन्दर्य" 2 घोषित किया, किसी ने "कलाकार" :3: कोई संस्कृति को "आदर्शों की व्यावहारिक उपयोगिता" :4: और"गुणों का समुच्चय":5: पुकार कर उसे "सब" में देखता है , तो कोई "सब प्रकार की क्षमताओं व आदतों को ही" :6: संस्कृति मान कर'सद्' और'असद' दोनों परिप्रेक्ष्यों में पर्याप्तता है । किसी ने "चिन्तन तथा कलात्मक ऊर्ध्व सृजन की क्रियाओं" :7: को संस्कृति मानकर उसे क्रियात्मक रूप प्रदान किया है , तो किसी ने "आध्यात्मिक, सामाजिक और मानसिक स्थिति" :8: एवं उपलब्धि घोषित किया । डा० गोपाल गुप्त उसे "मानव जीवन की विशिष्ट परिणति बताते हैं , विकास की दशा में सतत् गति शील बिन्दु स्थायी जीवन व्यवस्था" :9: बताते हैं, वहीं मुंशी और के.एम. मुन्शी उसे "मानव जीवन का सौन्दर्य एवं सैद्धान्तिक केन्द्र बिन्दु से संयुक्त सामूहिक दृष्टिकोण " :10: घोषित करते हैं ।

1:-प्रमाणिक शब्द कोष - पृ०-1239- रामचन्द्र वर्मा

2:- मध्यकालीन हिन्दी काव्य में भारतीयसंस्कृति - डा० मदन गोपाल गुप्त भारतीय संस्कृति

3:- समाज शास्त्र के रूप रेखा - पृ०-21 -श्रीराम बिहारी सिंह तोमर

4:- प्राचीन भारत की जन शक्ति और संस्कृति- पृ०-66,

5:- भारतीय संस्कृति -पृ० - 21 - डा० देवराज

6:- व्यक्ति और समाज -पृ०- 26- प्रो० गोस्वामी

7:- हिन्दी साहित्य कोष भाग-1 पृ०-869-धीरेन्द्र वर्मा

8:- भारतीय संस्कृति का प्रवाह- श्री चन्द्र विद्या वाचस्पति

9:- मध्य कालीन हिन्दी काव्य में भारतीय संस्कृति- पृ०-18

10:- अवर हेरिटेज नीड प्रथम संस्करण -पृ०- 58-60- के. एम. मुंशी

भारतीय संस्कृति के मूल तत्व

प्राचीन भारतीय संस्कृति का विकास आर्यों द्वारा किया गया । आर्य जाति में श्रेष्ठ होने के कारण उसे आर्य संस्कृति की संज्ञा प्रदान की गई । तदनन्तर राजा दुष्यन्त के पुत्र भरत ने आर्यावर्त जीत कर एक चक्रवर्ती साम्राज्य की स्थापना की इसी समय से यहाँ का निवासी भारतीय कहलाया तथा यहाँ की संस्कृति कोभारतीय संस्कृति का नाम दिया गया ।

भारतीय संस्कृति में निम्न तत्वों का समावेश है ।

1:- आध्यात्म भावना, आस्तिकता तथा देवों में गहन आस्था :-

प्राचीन काल से ही भारतीयों का जन जीवन आध्यात्म भावना से ओत-प्रोत रहा है । आत्मा- परमात्मा, जीवन -मृत्यु, सृष्टि -प्रलय आदि गम्भीर आध्यात्म विषयों पर मनीषियों द्वारा सूक्ष्म मनन -चिन्तन किया गया । आध्यात्म भावना ने ही अद्वैतवाद, द्वैतवाद एवं त्रैतवाद जीव और प्रकृति की सत्ता को जन्म दिया । भारतीय स्वभाव से आस्तिक होते हैं ।वे ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करते हैं । उनके- आचार - विचार एवं दिनचर्या में पूजा - पाठ, व्रत - स्नान, कथा- वार्ता आदि का विशिष्ट स्थान है ।

देवों के प्रति गहन आस्था एवं श्रद्धा उनके हृदय में विद्यमान रहती है । देवों पर जो देवमाया भी अविश्वास करता है, वह चोर निन्दा का पात्र व समझा जाता है और नास्तिक कहलाता है ।

2:- धर्म परायणता :-

भारतीय संस्कृति के विकास में धर्म ने प्रमुख भूमिका का निर्वाह किया है । समाज में रहकर किस प्रकार का आचरण करना चाहिये, यह धर्म द्वारा निर्देशित होता है । संस्कार वेद के ही अंग माने जाते हैं । राजनीति को भी धर्म के कंटकाकीर्ण से विमुक्त नहीं किया गया । न्याय प्रजापालन , देश रक्षा, सुख परायण आदि भी धर्म से ही सम्बद्ध हैं । भारतीय समाज धर्म की रक्षा के लिये प्राण - पण से अडिग है ।

3:- देवता वाद :-

"देव" का अर्थ है दिव्य गुणों से सम्पन्न । भारतीय ऋषियों, मुनियों को संसार में , जिन जीव- निर्जीव वस्तुओं में दिव्य गुणों की अनुभूति हुई, उन्होंने उसे देवता की संज्ञा दे डाली है । वरुण , अग्नि, सूर्य , चन्द्र , वायु , यम ब्रह्मा - विष्णु - महेश आदि को देवताओं के रूप में माना जाता है । ब्रह्माजी द्वारा सृष्टि का सृजन , विष्णु द्वारा पालन और शंकर द्वारा संहार किया जाता है । सर्वज्ञ प्रकृति की कल्पना से सम्बन्ध

देवी प्रकोप से बचने के लिये लोग बुरे कर्मों से दूर रहते हैं और देवी - देवताओं को प्रसन्न रखते हैं । देवताओं का प्रभाव जन - जीवन पर इतना था कि संस्कृत वाणी को देववाणी की संज्ञा प्रदान कर दी गई ।

4:- अवतार वाद :-

भारतीय मनीषियों की अभिधारणा रही है कि धर्म की स्थापना और अधर्म के विनाश के लिये समय - समय पर देवी - देवताओं ने अवतार लिया जिससे सज्जनों की रक्षा की जा सकी और दुष्टों का संहार हुआ । भगवान के दस अवतार भारत में हो चुके हैं जो कि निम्नलिखित हैं :-

मत्स्य , कूर्म , वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध और कल्कि । सम्पूर्ण देश में इन अवतारों के मन्दिर प्रतिस्थापित हैं जिनकी पूजा - रचा सदैव श्रद्धा - भक्ति के साथ प्रतिदिन की जाती है ।

5:- कर्म फल एवं पुनर्जन्म :-

भारतीय दर्शन इस बात को पुष्टि करता है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने व्यवहार अच्छे - बुरे कर्मों का शुभ - अशुभ फलअवश्य भोगना पड़ता है । इन्हीं कर्मों के आधार पर स्वर्ग - नर्क की कल्पना भी की गई है । काम, क्रोध, मद, लोभ दुष्ट कर्म माने जाते हैं तथा दया, नम्रता, सत्य, अहिंसा आदि सुकर्म हैं । अच्छे कर्मों से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है । कर्मों को भोगने के लिये ही जीव अनेक योनियों में जन्म लेता हैऔर तब तक भटकता रहता है जब तक कि उसे मोक्ष प्राप्त नहीं हो जाता। विविध दुःखों से निवृत्ति प्राप्त कर लेना ही मोक्ष की प्राप्ति है । इसी लक्ष्य को पाने के लिये जन - जीवन सत्कर्मों में संलग्न रहता है और धर्म को आधार मान कर उत्तम आचरण करता है ।

6:- यम नियमों का पालन :-

सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह पंच यमों का जीवन की आचार संहिता में विशिष्ट स्थान है । शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान ये पांच नियम माने गये हैं । भारतीय मनीषियों सामाजिक जीवन को सुव्यवस्थित करने और व्यक्तिगत जीवन में पवित्रता बनाये रखने के लिये इन यम नियमों का पालन करना परम कर्तव्य माना है ।

7:- यज्ञ :-

लोक के कल्याण की भावना से किये गये कर्म ही यज्ञ होते हैं । तप, मौन, स्वाध्याय एवं ज्ञान आदि को यज्ञ माना गया है , इनमें व्यक्तिगत स्वार्थ न होकर जन कल्याण की भावना निहित रहती है । भारतीय परम्परा में गृहस्थ के कर्मों में ब्रह्मचर्य,

देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ एवं अतिथियज्ञ तथा राजाओं के लिये ब्रह्मयज्ञ यज्ञ, राजसूय यज्ञ, विश्वजित आदि यज्ञों का निर्वाह किया गया है ।

8:- महापुरुषों के प्रति श्रद्धा- भक्ति :-

महा पुरुषों के प्रति श्रद्धा, सत्कार, भक्ति भावनायें भी भारतीय जन- जीवन में विशेष व्याप्त रही हैं । उदाहरण के लिये वसिष्ठ, गौतम, व्यास आदि ऋषियों, सिद्धार्थ, वर्धमान जैसे राजनीतिज्ञों, भीम, अर्जुन जैसे वीरों, तुलसी, सूर, जैसे सन्तों, अशोक, चन्द्रगुप्त जैसे राजाओं तथा राणा प्रताप, शिवाजी जैसे वीरों की जनता आज भी पूजा करती है । राम, कृष्ण और गौतम को तो भगवान का अवतार मान कर उनकी पूजा की जाती है । निःसन्देह भारतीय जनता में सत्पुरुष की भावना का बाहुल्य रहा है ।

9:- पुरुषार्थ :-

प्राचीन ऋषियों ने चार पुरुषार्थ बताये हैं - धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष । धर्म, अर्थ और काम को प्राप्त करके मोक्ष पाने के लिये सतत् प्रयत्नशील रहना ही मानव जीवन का ध्येय रहा है । ब्रह्मचर्य और गृहस्थ आश्रम में धर्म, अर्थ और काम को व्यक्ति प्राप्त करता है तथा वानप्रस्थ आश्रम में संसार से मुक्त होने का प्रयत्न करता है और अन्त में मोक्ष को प्राप्त करता है ।

10:- वर्णाश्रम व्यवस्था :-

यह व्यवस्था का ही श्रेय वेदों से होता है । सम्पूर्ण समाज को कार्य एवं स्वभाव की दृष्टि से चार भागों में विभाजित किया गया - ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा सन्यास । ब्रह्मचर्य में बालक गुरु के आश्रम रह कर विद्या प्राप्त करता है तत्पश्चात वह गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करके धनोपार्जन एवं सांसारिक भोगों का उपभोग करता हुआ अधिक आयु होने पर वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करे मुनि वृत्ति को धारण करता है तथा सन्यास धर्म का पालन करता हुआ मोक्ष प्राप्त करता है ।

11:- संस्कार :-

भारतीय संस्कृति के विकास में संस्कारों ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है । शिशु के गर्भ में स्थापित होने से लेकर मृत्यु पर्यन्त विभिन्न संस्कारों का उल्लेख मिलता है । जीवन के सर्वांगीण विकास के लिये संस्कारों का विशेष योगदान रहा है । सोलह संस्कारों का उल्लेख मिलता है जिनका अपना विशिष्ट स्थान है । संस्कारों का धार्मिक दर्शन माना गया है । संस्कारों से सामाजिक और व्यक्तिगत दोनों ही प्रकार से लाभ मिलता है ।

12:- विश्वकल्याण की भावना :-

भारतीय संस्कृति में विश्व बन्धुत्व की उदार भावनाओं का समादर किया गया है । संसार के सभी प्राणी सुखी और निरोग रहें ये सबका कल्याण हो, इस प्रकार की प्रार्थनायें भारतीय मनीषियों द्वारा की जाती रही हैं । जो मानव स्वार्थ का परित्याग करके दूसरों का उपकार करता है वही श्रेष्ठ समझा गया है ।

13:- समन्वय की भावना एवं साम्प्रदायिकता :-

भारतीय संस्कृति में समन्वयशीलता के दर्शन सभी क्षेत्रों में होते हैं । भारतीय ऋषियों ने परस्पर विरुद्ध सिद्धान्तों में भी समन्वय स्थापित करने का भगीरथ प्रयत्न किया आर्य संस्कृति में तो समन्वय भावना चरम सीमा पार कर गई फलतः अनेक मतों और धर्मों के विकसित होने पर भी इस देश में धार्मिक और सांस्कृतिक एकता बनी रही । विभिन्न सम्प्रदायों के आराध्य देवों, शिव, ब्रह्मा, विष्णु, जिन आदि सब को भगवान के रूप में हैं, इस प्रकार की कल्पना ने द्वारा ही साम्प्रदायिक ऐक्य बना रहा । इसके अतिरिक्त भारतीय संस्कृतिमें सत्य निष्ठा, निर्भीकता, कलाप्रियता, आदि तत्व भी समाहित है।

भारतीय संस्कृति और जीवन

" जो जातियाँ भारत वर्ष में आयी वे यद्यपि भारतीय संस्कृति के समुद्र में विलीन हो गई किन्तु भी हमारी संस्कृति को उनकी कुछ न कुछ देन है । यह देन कभी तो हमारे धर्म में मिल गई, कभी हमारी पोशाक में और कभी हमारे खान पान अथवा रहन सहन के दूसरे ढंगों में ।" :1:

इस प्रकार भारतीय संस्कृति का जो रूप प्रकट हुआ उसमें विभिन्न संस्कृतियाँ भी अपना अस्तित्व रखती हैं । भारत धर्म निरपेक्ष राज्य है । धार्मिक स्वतंत्रता भारतीय संस्कृति की मूल प्रवृत्ति रही है । भारतीय संस्कृति की छाप ज्यों- ज्यों मानव जीवन पर पड़ती जाती है, उसमें त्याग, तपस्या, प्रेम , बलिदान, श्रद्धा भक्ति आदि विभिन्न मानवीय सद्गुणों का आधुनिक हो जाता है । संस्कार जो मानव को परिमार्जित करते हैं , पशु से मानव की कोटि में लाते हैं , संस्कृति के ही अंग माने जाते हैं ।

भारतीय संस्कृति में जीवन के चार लक्ष्य माने जाते हैं धर्म , अर्थ, काम, मोक्ष । इन सभी स्तरों से होता हुआ मानव अपने अन्तिम लक्ष्य को प्राप्त करता है । चारों लक्ष्यों की प्राप्ति का सरलतम उपाय भारतीय संस्कृति के मूल में अभिहित है । जीवन की चार अवस्थायें , भारतीय संस्कृति के अनुसार विभक्त कर दी गयीं हैं ।

1:- संस्कृति के चार अध्याय - पृ०- 61- रामधारी सिंह "दिनकर"

प्राचीन भारतीय मनीषियों ने चार आश्रमों में जीवन यापन करने की अनुमति दी थी । " चारों आश्रम, चारों पुरुषार्थों से घनिष्ट रूप से सम्बन्धित है ।" :1:

1:- धर्म संग्रह के लिये - ब्रह्मचर्य आश्रम

2:- अर्थानुकूल "अर्थ ज्ञान से सम्बन्धित" - गृहस्थ आश्रम

3:- धर्म मोक्ष से सम्बन्धित - वानप्रस्थ आश्रम

4:- मोक्ष से सम्बन्धित - सन्यास

इस प्रकार भारतीय संस्कृति ने मानव जीवन के सभी पहलुओं पर विहंगम दृष्टि डाली है । धर्म, परिवार , समाज आदि जीवन के सभी उपादानों को भारतीय संस्कृति लेकर चलती है ।

" भौतिक उन्नति से शरीर की भूख मिट सकती है, किन्तु उससे सन्तुष्ट मन और आत्मा तो अतृप्त ही बने रहते हैं । उन्हें सन्तुष्ट करने के लिये मनुष्य अपना विकास और उन्नति करता है, उसे संस्कृति कहते हैं । " :2:

भारतीय संस्कृति मानव जीवन की आत्मा को सुख करती रही है । जीवन प्रारम्भ से अर्थात जन्म से अन्तिम समय अर्थात मृत्यु पर्यन्त भारतीय संस्कृति, मानवजीवन का एकसूत्रीय, कर्मठ और सच्चे विकास की ओर का मार्ग दर्शन करती रही है । प्रेम, सहृदयता परिश्रम, सत्यार्थ, ईमानदारी, भक्ति, ज्ञान आदि विभिन्न गुणों को सुदृढ़ रूप में भारतीय संस्कृति ने मानव की झोली में डाल दिया है ।

मनुष्य का जीवन , संस्कृति के विभिन्न तत्वों धर्म, साहित्य, कला, दर्शन आदि से प्रभावित है।मनुष्य परिवार से समाज तक इन सभी तत्वों से अपने जीवन को परिपुष्ट करता है । धर्म के अन्तर्गत भारतीय संस्कृति अत्यधिक उदार रही है । भारत में विभिन्न जातियों और धर्मों के लोग निवास करते रहे हैं। सभी धर्मों और धर्म ग्रन्थों का समादर भारतीय संस्कृति करती रही है । धार्मिक सहिष्णुता भारतीय संस्कृति की विशेषता है । धार्मिक महापुरुषों और अवतारों की जीवन लीला से हमारा जीवन नित्य - प्रति प्रेरणा लेता रहा है ।

भारतीय साहित्य के अध्ययन से मनुष्य की मानसिक प्रवृत्तियाँ बदली जाती है कि वह मानव से महा मानव की कोटि में आ जाता है।"रामचरित मानस पर ही यदि सूक्ष्म दृष्टि डाली जाये तो स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय कविवर गोस्वामी -

---

1:- भारतीय संस्कृति के मूल तत्व - पृ० 17 - डा० इन्दु माली

2:- भारत का सांस्कृतिक इतिहास - पृ० 2 -हरिदत्त वेदालंकार

आत्मा राम एण्ड सन्स दिल्ली - 6

तुलसी दास जी ने अपने पद की ओर में कर्तव्य पालन, पारस्परिक सम्बन्ध, व्यवहार, आदर्श, रहन-सहन ईश्वर के प्रति अगाध प्रेम आदि विभिन्न विषयों पर गम्भीरता पूर्वक विचार कर मानव को अभिनवीय " जीवन सुधारनी " संजीवनी बूटी प्रदान की है । साथ ही राम कथा के रूप में भारतीय संस्कृति को समुचित रूप में समन्वित किया है " भारत में संस्कृतियों का जो विराट समन्वय हुआ है, राम कथा उसका उज्ज्वल प्रतीक है ।" :1:

भारतीय संस्कृति में कला का भी विशेष स्थान है । चित्रकला और स्थापत्य कला से यहाँ का मानव जीवन प्रेरित हुआ फलतः गुफाओं और छैनी लेकर उसने स्थापत्य कला का जो उदाहरण उपस्थित किया उससे यहाँ की सभ्यता परलक्षित हुई है । खजुराहो की मूर्ति कला किसे नहीं भाती ? आगरे का ताज महल किसके सात आश्चर्यों में से एक है। अजन्ताकी के स्तूप, सारनाथ में बुद्ध प्रतिमा , दक्षिण भारत में भारतीय संस्कृति के प्रसारक महर्षि अगस्त्य की प्रतिमा आदि इस बात के प्रमाण है कि भारतीय संस्कृति ने भी इस कला परिस्फुट करने के लिये मानव जीवन में कला छोर दी । तानसेन, बैजूबावरा आदि ने जीवन को संगीत मय बना दिया ।

वैज्ञानिक दृष्टि कोण से भारतीय संस्कृति ने मानव के जीवन स्तर को ऊँचा उठाया है, परमाणु बम तथा अन्तरिक्ष यान के निर्माण में भी सफलता मिली है ।

इस प्रकार भारतीय संस्कृति ने जहाँ मानव जीवन के रहन सहन, रीति - रिवाजों, धर्म आदि पर प्रभाव डाला है वहीं मनन चिन्तन, ज्ञान विज्ञान , आध्यात्म - वादी दृष्टि को प्रदान कर भारतीय दर्शन ने मानव जीवन को प्रभावित किया है । कुछ भी हो भारतीय संस्कृति धर्म पर अधिनिष्ठा है ।

" भारतीय संस्कृति और साहित्य "

धर्म ग्रन्थों के अनुसार मनुष्य जीवन के प्रधान चार लक्ष्य है :- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष । यही पुरुषार्थ चतुष्टय के नाम से प्रसिद्ध है । मनुष्य जीवन की सम्पूर्ण क्रियायें इन्हीं चारों लक्ष्यों को ध्यान में रखकर कार्य रूप में परिणित होती है । धर्म तथा काम पुरुषार्थ की सहायता से परमपद मोक्ष को प्राप्त करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है । :2:

भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही साहित्य की विशेष महत्ता रही है ।

1:- संस्कृति के चार अध्याय -पृ०- 95-रामधारी सिंह दिनकर

2:- भारतीय संस्कृति के मूल तत्व- पृ० - 1 - डा० बन्धुमती मिश्रा डी०लिट्

भारतीय ऋषियों ने साहित्य के ही माध्यम से जीवन के लक्ष्यों की पूर्ति की है । मानव व्यक्तित्व बुद्धि और हृदय के समन्वय का सुफल परिणाम है । बुद्धि से मानव मनन, चिन्तन, विश्लेषण तथा कल्पनायें करता है और हृदय से विभिन्न भावनाओं की अनुभूति होती है । विचारों, कल्पनाओं आदि को व्यक्त करने का माध्यम भाषा है। " भाषा की उपादेयता , शब्द सामर्थ्य लोकोक्तियाँ और मुहावरों से ही उसकी संस्कृति का ज्ञान होता है ।" :1: अपनी भावनाओं एवं विचारों को यथार्थरूप प्रदान करने के लिये व्यक्ति भाषा को लिपिबद्ध कर देता है और यही ज्ञान को विरासत के रूप में नवागन्तुक पीढ़ियों को प्रदान करता है । ज्ञान राशि का यह संचित कोष ही साहित्य कहलाता है ।

" भारतीय संस्कृति की अद्भुत पूर्व विशेषता: यह है कि उसके सत्य- धर्म, दर्शन कला और साहित्य आज भी निर्बाध में जीवन सूत्र देने की अतीव शक्ति संजोये है । " :2: भारतीय ऋषियों मुनियों और मनीषियों ने जीवन के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु शास्त्रों के रूप में जो साहित्य दिया उसमें चिर स्थायी रूप से न केवल भारतीयों को , अपितु सम्पूर्ण विश्व को कल्याण मयी भावना निहित है । भारतीय मनीषियों ने धर्म शास्त्र, अर्थशास्त्र, काव्यशास्त्र एवं मोक्ष शास्त्रों की रचना करके भारतीय संस्कृति का मार्ग दण्ड दिया गया । धर्म सम्बन्धी ग्रन्थों को श्रुति एवं स्मृति दो भागों में विभाजित किया जा सकता है । श्रुति वेदों से सम्बन्धित है जिसकी उत्पत्ति को दैवी माना गया है अर्थात संस्कृति को ब्रह्म द्वारा निर्धारितकिया गया है । इसकी उत्पत्ति ब्रह्मा द्वारा मनु को दिये गये उपदेशों से सम्बन्धित है जिसे मनु ने महर्षि, अत्रि, अंगिरस , पुलस्त्य , पुलह, क्रतु, प्रचेता, वशिष्ठ, भृगु तथा नारद दस ऋषियों को पढ़ाया । स्मृतियों को आचार, व्यवहार तथा प्रायश्चित खण्डों में विभक्त किया गया है । भारतीय संस्कृति ने विश्व को सतयुग त्रेता द्वापर और कलयुग चार युगों में विभक्त किया है और धर्म शास्त्र के अन्तर्गत अनेक ऋषियों की संहितायें प्रत्येक युग के लिये उपयोगी सिद्ध होती है । दूसरा अर्थशास्त्र है जो केवल धन से सम्बन्धित नहीं है उसके अन्तर्गत धन, कृषि, पशु पालन, वाणिज्य, दण्डनीति, शासन व्यवस्था आदि सभी विषय आते है । :3: विशेषकोष ज्ञान कराते है ।

1:- भारतीय संस्कृति की प्रमुख धारायें -पृ०-10- मालवीय एवं त्रिपाठी

2:- भारतीय संस्कृति की प्रमुख धारायें - पृ०- 22- मालवीय एवं त्रिपाठी

3:- कौटिल्य - 1-3-1

यहाँ भारत काल में तो भारतीय संस्कृति और साहित्य का अनन्य साथ रहा है । गृहस्थ आश्रम के लोगों का भौतिक जीवन सुखमय बनाने और धर्म के अनुकूल दाम्पत्य जीवन निर्वाह हेतु कामशास्त्र की आवश्यकता स्वीकार रखना गर्व सदुपरान्त मोक्ष शास्त्र आता है साधारण तथा सभी दर्शन शास्त्र का रूप माना जाता है । दार्शनिक सिद्धान्तों पर भारतीय संस्कृति की प्रतिष्ठा आधारित है । हमारे प्राचीन भारतीय मनीषियों ने बड़ी उन कल्याण भावना से इस शास्त्र की रचना की । जैसे साहित्य ने हमारी भारतीय संस्कृति के प्रचार और प्रसार में अभिनंदनीय योगदान दिया । किसी काल के साहित्य को हम में स्पष्ट रूप से यह सत्य सामने आता है कि वह साहित्य भारतीय संस्कृति से जुड़ा हुआ है । भक्ति काल के कवि कबीर, जायसी, तुलसी, सूर आदि साहित्य का आधार लिये रहे ।

"19 वीं सदी में अपनी अपूर्व भारत भक्ति से सारे यूरोप को चौंका देने वाले मैक्समूलर ने यह लिखा है कि " अगर मैं अपने आप से यह पूछूं कि कैसा यूनानी, रोमन और यहूदी भावनाओं एवं विचारों पर चलनेवाले हम यूरोपीय लोगों के आन्तरिक जीवन को अधिकतम पूर्ण , अधिक पूर्ण और अधिक विश्व जनीन, संक्षेप में अधिक मानवीय बनाने का मुझसे हमें किस जाति के साहित्य से मिलेगा तो बिना किसी हिचकिचाहट के मेरी उंगली हिन्दुस्तान की ओर उठ जायेगी ।" :1:

भारतीय संस्कृति को पुष्पित और फलित करने का बहुत कुछ श्रेय सन्त साहित्य को प्राप्त है । जिस परिपक्व रूप में आज हमारी संस्कृति है, सन्तों की साधना का सुपरिणाम कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति न होगी " प्राय : हजार वर्षों के इस निरवधि काल में अगर भारत की सनातन आत्मा कहीं कुछ शेष बिखरा सकी है तो वह सन्तों के साहित्य में । जब हिन्दू राज्य सत्ता बिखर गई । पंडितों की भी अति रूढ़ गई और पुरोहित धर्म के दलाल मात्र रह गये तब हमारे धर्म और साहित्य दोनों ने सन्तों की शरण पकड़ी और वहीं से, अपने पैर पर चलते और पुष्ट होते रहे । वेद उपनिषद गीता , रामायण, महाभारत और कालिदास से आज उतने ही हमारा नाम शंकर, रामानुज, मध्वाचार्य , रामानन्द, कबीर और सूरदास के ही मिलते है । " :2: रामकथा को ही भारतीय संस्कृतियों के समन्वय का उच्च -आदर्श, भावना उपयुक्त प्रतीत होता है ।

1:- संस्कृति के चार अध्याय- पृ० -91- रामधारी सिंह "दिनकर"

2:- संस्कृति के चार अध्याय- पृ० -193- रामधारी सिंह "दिनकर"

भारतीय संस्कृति पूर्ण सुरक्षित नहीं रही। किसी भी काल में, किसी भी भाषाओं साहित्य में जो कुछ प्रकट कर सकती थी, उसने किया । मुस्लिम शासकों के राज्यकाल में हिन्दी साहित्य का विशाल भण्डार जो भारतीय संस्कृति को प्राप्त हुआ उसे कैसे विस्मरण किया जा सकता है । " हिन्दी भाषा संसार के समस्त साहित्य के समक्ष अपनी निज समृद्धि का दावा करती है, यह सारी की सारी उसने पठानों और मुगलों के समय में ही अर्जित की ।" :1:

रहीम का यह दोहा ही भारतवासियों को संकेत करने के लिये पर्याप्त है -

जहुवारी भोजन लिये, आए चिरै रसेत
दादुर मोर चकावरे, रहत धान को खेत ।

बिहारी की दो पंक्तियां राजा जयचन्द्र की कामलोलुपता को दूर करने की विशेष शक्ति रखती थी :-

"नहि पराग नहि मधुर मधु, नहि विकास इहि काल
अली कली ही सो बिध्यो , आगे कौन हवाल । "

सूरदास की निम्न दो पंक्तियां कितनी महत्व पूर्ण पथ प्रदर्शिका बन कर भारतीयों के सामने आई :-

सुनहु भरत भावी प्रबल, बिलख कहेहु मुनि

ऐसी प्राचीन प्रतिभा सम्पन्न है भारतीय संस्कृति और ऐसा महान कल्याण कारी है यहां का समृद्ध साहित्य ।" भारतीय संस्कृति की कहानी सभ्यता और सभ्यताओं का समन्वय है तथा प्राचीन परम्पराओं और नवीन मतों के पूर्ण संयोग की उन्नति की कहानी है । यह प्राचीन काल से रही है और जब तक यह विश्व रहेगा अक्षय रहेगी । दूसरी संस्कृतियां नष्ट हो गयी परन्तु भारतीय संस्कृति में वही चमक अमर है । " :2:

1:- संस्कृति के चार अध्याय - पृ० - 430 - 31

2:- भारतीय संस्कृति की प्रमुख धारायें - पृ० - 9- मालवीय खण्ड त्रिपाठी

पौराणिक युग में महाभारत के रचयिता महर्षि वेद व्यास का जन्म बुन्देल - खण्ड के यमुना कालपी में हुआ था । व्यास जी के पूज्य पिताजी पराशर ने यमुना जमुना के पराशर ग्राम को अपनी तपोभूमि बनाया, महर्षि उद्दालक ऋषि ने इसी जन पद की सुरम्य नगरी में तपस्या की । सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में धार्मिक स्थलों, तीर्थों और मन्दिरों का बाहुल्य है । चित्रकूट तीर्थ रामवन , भीमशैल चौसठ योगिनी, जटा - शंकर तीर्थ, पंचम कुण्ड, गुप्तेश्वर महादेव, कालिंजर , चित्रकूट, द्रोणागिरि आदि धार्मिक स्थल बुन्देल खण्ड की संस्कृति की पावनता को प्रकट करते हैं । साहित्य के माध्यम से भी बुन्देलखण्ड के कवियों ने अपनी संस्कृति को समुन्नत बनाया । आदि कवि वाल्मीक, वेदव्यास, जगनिक, तुलसी, केशव, मैथली आदि अनेकों कवियों ने अपना योग दान दिया । पंचुरी की पंक्तियों ने तो सम्पूर्ण भारत में रस घोल दिया है । राम मोहन शर्मा "मोहन" की निम्न पंक्तियों के माध्यम बुन्देल खण्ड की सांस्कृतिक झांकी प्रस्तुत है -

" "पंचुरी" की पंक्तियों में, मथुरा - वृन्दावन ,
"तुलसी" का राम चरित, चारों धाम पावन,
"लाखी" के काशी, विश्वनाथ तीर्थ राज
घोडर में मन्दिलायें, मुक्त है समाज
जीवन - उत्सर्ग के, पाने को स्वर्ग के
रचे हैं सदा ही विधान ।
बुन्देली भूमि को प्रणाम ।। :1:

की निधि विदेशी की निम्न पंक्तियां अवलोकनीय है -

" बुन्देला है अम्बर, धरती माता बुन्देली,
बुन्देले हम धन्य आज, विश्वमाता बुन्देली" :2:

बुन्देल खण्ड की संस्कृति के मूल तत्व

बुन्देल खण्ड की संस्कृति अपने विशिष्ट गुणों, विशेषताओं एवं विभिन्न तत्वों के समन्वय का परिणाम है । अगस्त मुनि की आज्ञा से नत मस्तक घोडर विन्ध्याचल पर्वत, यमुना, नर्मदा, चम्बल और टौंस नदियों से आवृत्त बुन्देल खण्ड , वेद व्यास, तुलसी की जन्म स्थली तथा अनगिनत तीर्थों एवं मन्दिरों की पुण्य भूमि , इस क्षेत्र की संस्कृति की महत्ता को प्रतिपादित करते हैं ।

भारतीय संस्कृति एवं बुन्देल खण्ड की संस्कृति में कोई विशेष अन्तर नहीं है -

---

1:- अभिनव ज्योति -पृ०- 6:12 - राममोहन शर्मा "मोहन"
2:- की निधि विदेशी - आसीन कवि मेघ पर पूरी पंक्तियां "

जिसमें बुन्देली संस्कृति में कुछ तत्व विशिष्ट रूप से उभर कर जन मानस का मार्ग दर्शन करते हैं बुन्देलखण्ड की संस्कृति के मूल तत्व निम्नवत् हैं । -

:1: आस्तिकता :2: आध्यात्म भावना :3: धर्म परायणता :4: कर्तव्य - भावना :5: संस्कार :6: आत्मदायित्वता :7: समन्वय की भावना :8: परस्परिक स्नेह भावना :9: देवों में आस्था :10: अवतार वाद :11: कर्म फल एवं पुनर्जन्म :12: देवता वाद :13: जन नियमों का पालन :14: पर्वों की महत्ता :15:कुल - मार्ग :16: कर्म व्यवस्था :17: विश्व बन्धुत्व की भावना :18: महान व्यक्तियों का समादर आदि ।स्थानीय तत्वों में - शौर्य, वीरियाँ, स्वातंत्र्य प्रेम, विश्वासघात-पतन, (आ
उत्सव, त्यौहार आदि आदि) इत्यादि सभी तत्वों का समावेश बुन्देल खण्ड की संस्कृति में मिलता है ।

यहाँ आर्य संस्कृति तथा अनार्य संस्कृति का अभिशैलीय सम्मिलन परिलक्षित होता है । कबीलों, गांवों, खेतों, घरों और आस्था आदि सभी स्थानों पर गाये हुये गुणी पाती है । आचार - विचार , आर्थिक आस्था भी समान रूप से दृष्टव्य है ।

यहाँ का जन जीवन त्याग, सहनता परोपकार एवं कर्तव्य निष्ठा की भावना से ओत - प्रोत है । विन्ध्यवासिनी देवी की उपासना से प्रारम्भ करके कुल पूजन तक करके लोग अपनी आस्तिकता और धर्म परायता को सिद्ध करते हैं ।

यहाँ के लोग चन्द्र , अग्नि , सूर्य , चन्द्र , वायु को देवता के रूप में पूजते हैं । दस अवतारों को मानते हैं । उनके जीवन का उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम के उपभोग के उपरान्त मोक्ष की प्राप्ति करना है । यहाँ के निवासी नारी के प्रति आस्था वान हैं । बुन्देल खण्ड की सांस्कृतिक परम्परा के अनुरूप राम, कृष्ण, गौतम, गांधी के आदर्शों का अन्धानुकरण करना यहाँ के निवासियों का परम कर्तव्य है ।

इन सभी उपरोक्त विशेषताओं के कारण हजारों उतार - चढ़ाव के रूप - रान्त आज भी बुन्देल खण्ड की संस्कृति जीवित है ।

बुन्देल खण्ड के उपास्य देव

बुन्देल खण्ड के निवासियों का जीवन देवी - देवताओं से सम्बद्ध है । राजनीतिक उथल - पुथल , युद्ध तथा अनेक शासकों के राज्य स्थापन ने बुन्देल खण्ड के निवासियों के जन जीवन को समय - समय पर त्रस्त किया । आत्म रक्षा हेतु लोग ईश्वर की शरण में गये । संकट काल में ईश्वर ही उनके प्राणों की रक्षा करता है।

भगवान की कृपा के बिना कुछ भी सम्भव नहीं । जीवन को सार्थक बनाने के लिये धर्म, अर्थ, काम से होता हुआ मानव अन्तिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करता है तथा मोक्ष की प्राप्ति ईश्वर की कृपा से ही सम्भव है । बुन्देलखण्ड में धर्म का साम्राज्य है तथा लोगों के हृदय में आस्तिकता विद्यमान है । पूजा-पाठ, धर्म-ध्यान, और श्रद्धा-भक्ति यहाँ के निवासियों की विरासत में मिली है ।

बुन्देलखण्ड के निवासी जितने सीधे और सरल हैं उतने ही आस्तिक भी है ,उनके पूर्वजों का जीवन देवमय था जिसके प्रभाव से बुन्देली - शिल्प , कला साहित्य आदि सभी देवमय बन गया । यहाँ का मानव कर्मफल और जन्मान्तर वाद की कल्पना से संकेत रखता है तथा वह लोक के साथ परलोक सुधारने का भी सतत प्रयत्न करता है । यहाँ के निवासी अनुकूल रूप में देवी देवताओं की उपासना में रत रहते है ।

सामान्य रूप से बुन्देलखण्ड में आदि देव ब्रह्मा, विष्णु , शिव वहाँ अवतार तथा विभिन्न ग्रामीण देवताओं की उपासना की जाती है किन्तु विशिष्ट रूप से यहाँ के निवासी देवी की की उपासना में तल्लीन रहते है । बुन्देली की आदि शक्ति विन्ध्यवासिनी रही है । इसके अतिरिक्त राम- कृष्ण - शिव तथा हनुमान के भी अनेक उपासक बुन्देलखण्ड में विद्यमान है । इन देवताओं में से व्यक्ति किसी एक देवी - देवता को अपने इष्ट देव के रूप में मान लेता है । ग्रामीण अंचलों में तो गुहा पर प्रतिष्ठित देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित कर दी गई हैं और लोग जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त उनकी पूजा करते हैं । उपास्य देव और उनकी उपासना पद्धति निम्न रूप है ।

1:- देवी उपासना :-

बुन्देलखण्ड में देवी के उपासकों की संख्या काफी रही है । यहाँ जन विश्वास है कि देवी शक्ति दाती है । उनकी कृपा से विजय भी प्राप्त होती है तथा सभी कष्टों का निवारण होता है । बुन्देलखण्ड में विभिन्न रूपों और नामों में माँ भगवती के विख्यात मन्दिर विद्यमान है । विन्ध्यवासिनी देवी , शारदा, देवी, मनिया देवी, दुर्गा देवी, काली की आदि देवियों की उपासना की जाती है। देवी की उपासना न केवल राजाओं, योद्धाओं तथा सामन्तों ने की की अपितु लोकप्रिय कुलवास आदि मानसिंह ने भी बेतवा की शारदा माता को अपनी इष्ट देवी माना है।लोगों द्वारा विन्ध्यवासिनी दुर्गा की उपासना तन - मन - धन से की और वांछित फल प्राप्त किया । इस देश में देवी की के कई मन्दिर उपलब्ध है । जालौन जनपद में मेहर तहसील के अन्तर्गत पर्वत पर शारदा देवी का मन्दिर प्रतिष्ठापित है ।

मां शारदा, विश्वास बुन्देली और आस्था- उदर की अधिष्ठात्री थी । रक्त - दन्तिका देवी, अम्बा देवी, दुर्गा देवी, चौसट योगिनी देवी, काली जी, बड़ी माता बराही देवी आदि विभिन्न मन्दिर सम्पूर्ण बुन्देल खण्ड में उपलब्ध हैं । चैत्र और क्वांर मास की नव रात्रि में देवी के उपासक उपवास होते हैं और नौ दिन तक व्रत रख कर देवी जी की उपासना करते हैं ।

2:- राम -कृष्ण, शिव - गणेश उपासना

बुन्देल खण्ड में राम, कृष्ण, शिव, गणेश तथा राम दूत हनुमान की पूजा की जाती है । यहां पर विभिन्न स्थानों पर राम लीला, राधाकृष्ण, शिव - पार्वती , गणेश तथा हनुमान के मन्दिर उपलब्ध हैं । राम चरित मानस का पाठ तो प्राय: यहां प्रत्येक घर में होता है । राधा कृष्ण की उपासना गृहस्थ लोग प्रचुर रूप में करते हैं । श्री गवल बिहारी , मुरली बिहारी, बिहारी जू, उल्टे कुएं मनोहर आदि के मन्दिरों में प्रति स्थापित मूर्तियों की उपासना भक्तों द्वारा तन्मय होकर की जाती है । महारानी लक्ष्मी बाई नित्यप्रति कुएं मनोहर के मन्दिर में सर्व - मार्थ उपासना करती थी । शिव जी के भी अनन्य भक्त हैं । शिव लिंग का स्नान - अभिषेक करना तथा उनकी पूजा करना शिव भक्तों का परम कर्तव्य है । शिवरात्रि को शिव भक्तों को अपार जन समुदाय देखने को मिलता है । दतिया जनपद के भुवनेश्वर शिवालय के पास शंकर , अमृतेश्वर के नाथ तथा शिवपुर के नीलकंठ महादेव के उपासक प्रसिद्ध हैं । गणेश पूजन तो यहां हर कार्यों एवं पर्वों में सर्व प्रथम किया जाता है ।

बुन्देल खण्ड में हनुमान जी के भी अनेक उपासक हैं, जो श्रद्धा पूर्वक मंदिरों में जाकर दर्शन करते हैं , प्रसाद चढ़ाते हैं तथा मंगल और शनिवार का व्रत रखते हैं । भक्त गोपाल महाराजी हनुमान के गले बन्दें सिन्दूर चढ़ाते हैं , फूलों से अभिषेक करते हैं । घरों पर उनके मन्दिरों पर मेले लगते हैं । भक्त जनों की आस्था है कि हनुमान चालीसा का नित्य प्रतिदिन पाठ करने से संकटों से मुक्ति मिलती है और कार्य सिद्ध हो जाते हैं । भूत - प्रेत, रोग - व्याधि का निवारण भी राम दूत हनुमान की पूजा से ही होता है । रामवन :(जो कि छतरपुर सड़क पर स्थित है) में देश की सबसे बड़ी हनुमान जी की प्रतिमा प्रतिस्थापित है, जो कि यहां " गणेश जी की उपासना की भक्ति को पुष्टि करती है । " :1:

1:- दैनिक नवीन देश दीपक की विशेषांक पृ०- 21 - सुन्दरी रामलीला रामवन

ग्रामीण - देव उपासना

बुन्देल खण्ड के निवासी ग्रामीण देवताओं की भी उपासना करते हैं । गाँव के निवासी विभिन्न पर्वों पर उनकी पूजा दूध - दीप, अगरबत्ती, धूप, नारियल, दूध, बताशे तथा मिष्ठान आदि से करते हैं जिससे उनके कष्ट , निवारण तथा मनो - रथ सिद्ध होते हैं । क्षेत्रीय देवताओं के रूप में उनकी कृषि उपासना गाँव, खेत आदि में मठियों में की जाती है ।

बुन्देल खण्ड में पूजे जाने वाले ग्रामीण देवताओं में - कन्हा बाबा, गोड़-बाबा, खूबा बाबा, सिद्ध बाबा, कल्याण बाबा, बुन्देला बाबा, दिवाकर बाबा, मैथड बाबा , खाती बाबा, शिरवर्ष बाबा, भूमिया बाबा, पठान बाबा, जीवन-शाह बाबा, लखन शाह बाबा, मसान बाबा, कारस देव बाबा, रक्कस बाबा, गुसाईं बाबा, आलम बाबा, अघोरी बाबा, दुल्हा बाबा, छटोरिया बाबा, भैंका-सुर बाबा, हरदौल,हुरैयरकी, हरदेव, लाल देव, खाजदेव, करसाल देव तथा कुल देवता के नाम उल्लेखनीय हैं ।

रीति - रिवाज

रीति रिवाजों से संस्कृति का व्यापक चित्रांकन होता है । यहाँ के जन जीवन को रीति रिवाज समय - समय पर प्रभावित करते रहते हैं । जन्म से लेकर मृत्यु तक स्थानीय रीति रिवाजों से लिप्त मानव अपनी क्षेत्रीय परम्पराओं का निर्वाह करता है और अन्तिम समय में विदाई के रूप में यही रीति रिवाज अपनी सन्तान को सौंप जाता है ।

रीति रिवाजों पर स्थानीय परिस्थितियों का भी समुचित प्रभाव पड़ता है । भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक परिस्थितियाँ रीति रिवाजों को जन्म देती हैं । रीति - रिवाज पृथक - पृथक पूजा करते हैं । रीति रिवाजों का उल्लंघन करने वाला व्यक्ति सामाजिक अपराधी माना जाता है । कभी - कभी उसे यथोचित दण्ड भी भुगतना पड़ता है । बुन्देल खण्ड का सांस्कृतिक परिवेश यहाँ के रीति रिवाजों पर प्रकाश डालता है । यहाँ के निवासी प्रकृतिप्रेमी रहे हैं और प्रायः रीति रिवाजों से चिपके रह कर अपना जीवन यापन करते रहे हैं । अतः इस क्षेत्र में रीति रिवाजों की प्रधानता रही है । बुन्देल खण्ड के रीति रिवाजों को निम्न रूप से वर्गीकृत करने समझा जा सकता है ।

बुन्देल खण्ड के रीति रिवाज :- (पारिवारिक)

बुन्देल खण्ड के परिवार सम्बन्धी रीति रिवाजों में यहाँ गाँवों में सामूहिक परिवार की प्रथा रही है । घर का मुखिया घर के सभी कार्यों का संचालन करता है । बिना उसकी आज्ञा से कोई कार्य नहीं किया जा सकता है । शादी बिना मुखिया के निश्चित नहीं होती । तीज - त्योहारों में या ओसर-काजों में घर के सदस्य अपने बुजुर्गों के चरण स्पर्श करते हैं और उनसे आशीर्वाद लेते हैं । पर्दा सम्बन्धी रीति - रिवाजों के अन्तर्गत बहू, ससुर, देवर आदि की विशेष पर्दा करती है । लम्बा घूँघट निकालने की प्रथा है । सुहागिन महिलायें सिन्दूर, काँच की चूड़ियाँ, आभूषण, रंगीन साड़ी या धोती , बिछिया, काजल, बिन्दी का प्रयोग करती है जबकि विधवा प्लास्टिक की चूड़ी , सफेद धोती आदि पहनती है । शुभ कार्य का भी नेग विधवाओं के द्वारा नहीं कराया जाता । नगरों में पर्दा प्रथा कम होती जा रही है । बुन्देल खण्ड में सिर पर कपड़ा"साड़ी का ‌ " ढकने की प्रथा है। मायके में विवाहित या अविवाहित लड़कियाँ सिर नहीं ढकती है । दिन में पति - पत्नी वार्तालाप नहीं कर सकते । घर की बहुयें सब के भोजन करने के बाद भोजन करती हैं । रिश्ते में मामा के पैर भाँजे नहीं छूता । कुवाँरी लड़कियाँ "कन्यायें" देवी का रूप मानी जाती हैं । उनसे कोई पैर नहीं छुलाता । विवाह के उपरान्त लड़की व दामाद के पैर लड़की के मायके वाले छूते हैं । बहुयें धोती या साड़ी के ऊपर चादर ओढ़ती हैं । विदा के समय लड़कियाँ रोया करती हैं और जोर - जोर से रोती हैं । माँ का स्थान पिता से ऊपर माना व जाता है । वंश पिता के नाम से - चलता है ।

संस्कार सम्बन्धी रीति रिवाज :-

यहाँ पर सवर्ण और हरिजन दोनों जातियाँ लोग निवास करते हैं । ब्राह्मण, बनी, वैश्य, कायस्थ आदि तथा हरिजन, चमार, धोबी, बसोर, महतर, खटीक आदि और पिछड़ी जाति के लोग जिसमें काछी, तेली,तमोली , नाई, कोरी, ढीमर, कुर्मी, कुम्हार, सुनार,कोरी आदि में संस्कार सम्बन्धी रीति रिवाजों में थोड़ा बहुत अन्तर है ।

जन्म से विवाहतक के संस्कारों के रीति रिवाज :-

सवर्णों में विवाह का आयु सीमा कन्या की 17-18 वर्ष और वर की 22 -24 वर्ष प्रायः होती है । किन्तु गाँवों में जो सवर्ण रहते है उनमें लड़कियों की

विवाह की आयु 14 - 15 वर्ष होती है । सभी में वैवाहिक नियम कड़े होते हैं । अग्नि को साक्षी मानकर सात परिक्रमा के साथ विवाहित पति पत्नी को जन्म भर में माना जाता है । यदि पति की मृत्यु हो जाती है तो पत्नी को पुनर्विवाह का अधिकार नहीं है । विधवा विवाह भी नहीं के बराबर है । लड़के का जन्म उत्सव लड़की की अपेक्षा धूम - धाम से मनाया जाता है । लड़के का महत्व भी अधिक माना जाता है । विवाह में दहेज प्रथा का बहुत चलन है । क्षेत्रों में खेत, "सोना" कार्यालयों में नौकरी लड़के। ब्राह्मण व क्षत्रियों को भी दहेज देना पड़ता है । सभी में जाति जाल काफी फैला हुआ है । आपस में रोटी का सम्बन्ध नहीं है केवल ब्राह्मण जाति के हाथ का बनाया भोजन स्वीकार किया जाता है । विवाह सम्बन्ध अपनी ही जाति की उपजातियों में जन्म गोत्र आदि मिला कर होते हैं । कायस्थ नौकरी, वैश्य व्यापार , अहीर खेती व ब्राह्मण खेती तथा नौकरी और पुरोहिती करते हैं । ब्राह्मण सभी जातियों के संस्कारों में पुरोहित का कार्य करता है ।सभी संस्कारों में अलग - अलग कुण्डेली लोक गीत स्त्रियों द्वारा गाये जाते हैं तथा कन्या को देखने जाने वाले कुमुर्ग जाते हैं ।

हरिजनों में विवाह की प्रथा के अन्तर्गत नियम कुछ कच्चे हैं । यदि पति पत्नी अलग होना चाहे तो पंचों के माध्यम से छोड़ छुट्टी हो जाती है । दूसरी जगह विवाह कर ली जाती है । उनमें भी मृत्यु का महत्व खुशी से अधिक है । दहेज कम देना पड़ता है । विधवा का प्रचार अल्प है है । मजदूरी और थोड़ी सी खेती ही उन का जीवकोपार्जन का साधन है । यह विवाह सम्बन्ध अपनी - अपनी जाति में करते हैं ।चमार ब्राह्मण के साथ का , महत्व व क्षत्रियों के साथ का हुआ पत्नी नहीं होते । अनेक संस्कार केवल ब्राह्मणों में ही होता है । पिछड़ी जाति के भी रीति रिवाज कुछ वही प्रकार के होते हैं । उनमें लड़कियों की विवाह की आयु 11- 15 वर्ष है । किसी किसी जाति में तो यह भी सुनने में आता है कि गरीबहरिजन या पिछड़ी जाति के अमुक व्यक्ति ने धन लेकर अपनी कन्या का विवाह कर दिया । किन्तु यह रिवाज कहीं कहीं है जिसका कारण सम्भव तथा बुन्देल खण्ड की गरीबी भी कहा जा सकता है ।

विवाह में जहाँ सभी में पति पत्नी के मरने पर दूसरा विवाह कर सकता है वहाँ पत्नी ऐसा नहीं कर सकती । अन्य जातियों में दोनों पक्ष ऐसा कर सकते हैं किन्तु पंचों की अनुमति पर उन्हें बिरादरी भोज देना पड़ता है । दूसरी जाति में विवाह कर लेने पर यही दण्ड भोग कर भिन्न जाति के लोग बिरादरी के विश्वास पात्र बन जाते हैं । विवाह में सभी जातियों , कुलवारी, बालक और -

निम्नतम सुख दायकों की प्रथा यहाँ सभी जातियों में है ।

मृत्यु संस्कार :-

इस संस्कार में यहाँ की सभी हिन्दू जातियाँ एक सा रूप अपनाये हुये है । जब कभी किसका पति जीवित है और उसकी मृत्यु हो जाती है तो शंगार किया जाता है और लाल कपड़े की अर्थी पर लुप किया जाता है जब कि पति की मृत्यु उसके सामने हो जाती है तो उसकी चूड़ियाँ, बिछिया, सिन्दूर आदि पति की अर्थी के साथ दाह के लिये भेज दिया जाता है । अति वृद्ध आदमी की मृत्यु होने पर बाजों के साथ अर्थी निकाली जाती है । तेरहवीं का भोज सभी गाँव के निवासियों, बिरादरी, पंडितों को सामर्थ्यानुसार दिया जाता है । दान के रूप में तेरह बर्तन भी पंडितों को दिये जाते हैं । किसी की मृत्यु के समय सिर के बाल बनवाना घर के अन्य पुरुष वर्ग के लोगों के लिये आवश्यक होता है । मृत्यु होने पर प्रत्येक पुरुष चिन्तक उसके घर जाता है और सहानुभूति व्यक्त करता है । शव के साथ सूखी सुतली की डाले भी रख श्मशान में दाह करने की प्रथा है ।

सामाजिक रीति रिवाज :-

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसे समाज में रहना है फलतः सामाजिक रीति रिवाजों को मानना उसके लिये अनिवार्य है । समाज में सम्बन्धित जाति के व्यक्ति सुख दुख में एक दूसरे के घर जाते हैं । त्योहारों में कुटुम्बों के घर मिले है तथा सब उम्र के लोगों से मिले मिलते हैं । कुटुम्बों के समक्ष मुख - पान आदि नहीं करते । पति - पत्नी आपस में कुटुम्बों के सामने मुख कर बात नहीं करते । गाँव में सार्वजनिक चौपाल, खेत की मेड़ , चबूतरों आदि पर बैठ कर कथानियाँ , किस्से, आल्हा, रामचरित मानस या राधेश्याम की रामायण पढ़ते है । रामलीला , रास लीला, नौटंकी, कीर्तन आदि की खूब प्रथा है । विवाहों में तो बेचारायें नर्तकी के रूप में बारातों के साथ जाती है । सामाजिक नियमों के उल्लंघन करने वाले का हुक्का पानी बन्द कर दिया जाता है तथा उसे आर्थिक दण्ड दिया जाता है बेचारुनों "अतिथियों" का गाँव के सब निवासी आदर सत्कार करते है । घर वाले तो उनकी और बाहर से टीका करके रुपये आदि भी देते है । यहाँ के पहले लोग दंगल, व लाठी - चलातेथे और अब तो बन्दूकों का केवल सा चल पड़ा है । लोग त्योहारों में लोक - गीतों का बड़ा रिवाज है । होली में फागें , दीपावली में दिवारीतथा विवाह में " गारी " सुन्दर लोग आल्हादित नहीं होता । आल्हा तो यहाँ के कवि की की -

देन है ।

खान - पान :-

बुन्देल खण्ड में कुछ त्योहारों पर पकवान खाने की प्रथा है । दीपों में पुड़िया , बबरिया, खेत, बाल्मीक, खुरमा आदि तथा कच्चे खाने में चने की दाल बरा, कढ़ी, रोटी, चावल आदि । आजोनी जिसमें दाल - चावल - बरा - घी शक्कर आदि मिला कर बना लिया जाता है उसे बड़े चाव से ग्रहण करते हैं लहसुन , प्याज कुछ ब्राह्मणों और वैश्यों के समुदाय को छोड़ कर सभी खाते हैं । मांस आदि सभी कायस्थों और क्षत्रियों का प्रिय भोजन है । गांवों में खाजरे के भुजा "मीठी पूड़ी" ज्वार की "बनवरयू " बाजी बना कर ज्वार के आटे की मोटी रोटी । समय के चावल महेरी, आम का "अथाना" अचार बड़े स्वाद से खाते हैं । नगरों में गेहूं , चना आदि का मेवन होता है । कच्चा खाना चौके के अन्दर ही खाया जाता है । चौके में कोई प्रतिबन्ध नहीं है । कच्चा खाना केवल अपनी - अपनी बिरादरी में बैठ कर ग्रहण करते हैं । कच्ची पंगत की भी प्रथा है जिसमें कढ़ी, दाल व बड़े प्रमुख है ।

वस्त्र - आभूषण सम्बन्धी रीति रिवाज :-

यहां पुरुष अंगरखी, कुर्ता, धोती, साफा "रंगीन बारकेट "बड़ी" एवं भरी बड़ी, अंगोछा, कमीज, पैजामा, फूले, लंगोटा आदि पहनते थे । शहरों में पेन्ट, कमीज, कोट आदि भी पहने जाते हैं । स्त्रियों में लहंगा - दुपट्टा, साड़ी -चोली, घाघर, लम्बर जिसमें पेट नहीं दिखता , चोली , लाले, बोड़ार, पेटीकोट, धाघरा, गदारा, मलयार, कुर्ता आदि का तथा रंग बिरंगी चप्पलों का रिवाज है ।पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियां रंगीन वस्त्रों को अधिक धारण करती हैं । उनकी साड़ियों पर गोटा - जरी के बूटे आदि भी बड़े रहते हैं । सौन्दर्य प्रसाधनों में काजल, बिन्दी, नाक में कील, नथुनी बड़ी तथा छोटी, पुंगरिया "सुलिया" , हार, कानों में बुन्दे, बूंदर, बाला होते हैं । गले में बसुली, मटरमाला, हाथों में कंगना "बहुआ" कंगन, अन्य जेवरों में ,पैंजना, अंगोरियां, करधोनी, लच्छे, बाजू, बिछिया आदि पहनती हैं । गहनों में चांदी के जेवर अधिक पहने जाते हैं । जेवर विवाह और त्योहारों में अधिकतर पहने जाते हैं ।

आर्थिक रीति रिवाज :-

यहां आर्थिक रीति रिवाजों की प्रमुखता है । स्त्रियां अधिकतर ग्राम

ख :- बुन्देलखण्ड की संस्कृति

आदि काल से बुन्देलखण्ड संस्कृति, सभ्यता और शिक्षा का केन्द्र रहा है । बुन्देलखण्ड के निवासियों का दृष्टि कोण बड़ा उदार एवं व्यापक है । बुन्देल खण्ड की संस्कृति का रूप उदधि के समान है, जिसमें विभिन्न सांस्कृतिक सरितायें विलीन होकर उसे महान गम्भीरता का रूप प्रदान करती है । यहाँ की महान संस्कृति की मूल भावना में " वसुधैव कुटुम्बकम् " का पावन उद्देश्य निहित है । यहाँ के कार्यों का संचालन 'बहुजन हिताय' और " बहुजन सुखाय " की दृष्टि से सम्पन्न होता है ।

बुन्देलखण्ड की संस्कृति में वे सभी तत्व समाहित हैं जो विश्व को विनाश के स्थान पर पोषण की ओर ले जाते है । अतीत में बुन्देलखण्ड को दशार्ण , जेजाक मुक्ति , कुलोत्ति , कुमार खण्ड और विन्ध्येल खण्ड किसी भी नाम से क्यों न सम्बोधित किया जाता रहा हो किन्तु यह अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक परम्पराओं का निर्वाह करता हुआ सदैव अपनी प्रतिभा से सम्पूर्ण भारत का आकर्षण केन्द्र बना रहा । बुन्देलखण्ड में सांस्कृतिक एवं साहित्यिक धारायें अर्वाचीन काल से प्रवाहित हो रही हैं । यहाँ के वीरों का रण -कौशल , इतिहास के स्वर्णिम अक्षरों में अंकित किया जाता रहा है । इसी बुन्देलखण्ड की विन्ध्य भूमि के कीर्ति प्रसाद के चमकते हुये सितारे महाराज मधुकर शाह , वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई 4 वीरसिंह देव , हरदौल , छत्रसाल , छत्रसाल आदि की वीरगाथा इतिहास प्रसिद्ध है । भगवान वेदव्यास से लेकर तुलसी , केशव , लाल, पद्माकर पंतुरी और मैथिली शरण गुप्त ने अपनी साहित्य साधना स्थली, बुन्देल खण्ड को बनायी ।

बुन्देल खण्ड की संस्कृति , धार्मिक प्रवृत्तियों पर पूर्णतया आधारित है । यहाँ पर प्रचलित होने वाली विभिन्न पावन सरिताओं के कूलों पर बने ऐसी देवताओं के अनेकों मन्दिर , यहाँ के जन जीवन की धर्म परायणता को प्रकट करते है । धार्मिक स्थलों पर जहाँ मानव को चिर शान्ति मिलती है, वहीं उसे आध्यात्मिक आनन्द की सुखानु भूति भी प्राप्त होती है ।

बुन्देलखण्ड की ललित कलायें, साहित्य, धार्मिक आस्था और जन विश्वास , अनायास ही जीवन के प्रति जागरूकता ला देता है । खजुराहो की मूर्ति कला तो विश्व विख्यात हो चुकी है । यहाँ का मानव कीलोग से समाधि की ओर अग्रसित होता है। यहाँ की आन , मान और मर्यादा, भी अमूल्य निधियाँ रही हैं ।

रखती हैं । पूजा पाठ अधिक करती हैं । कुछ में घरेलू देवता की पूजा करती हैं । तुलसी नामक पौधा तो घर -घर में होता है जिसको जल चढ़ाती है । भिन्न - भिन्न तीर्थों से त्योहारों में पूजा होती है। आरती, कथा, रामचरित मानस का अखण्ड पाठ प्राय: होता रहता है । मन्दिरों में काफी भजती है । तीर्थ दर्शन करने प्राय: होते जाते हैं । दुर्गा की भी विशेष उपासना होती है । चैत की नव दुर्गों में व्रतों के व्रत का विशेष आयोजन होता है । अन्य विश्वास भी अपना अस्तित्व बनाये हुये हैं । जादू टूटा , जन्म मरण में लोग विश्वास करते हैं । गले में ताबीज भी लोग धारण करते हैं । सभी देवताओं के प्रति लोग आस्था रखते हैं । जीवन से मृत्यु तक पंडितों के माध्यम कर्म काण्ड सम्पन्न होते हैं । भूत-प्रेत , हुआ-प्रेतर से भी सावधान रहते हैं । कन्या खिलाना , ब्राह्मण भोज करना , नदी स्नान करना, व्रत - रखना , दान पुण्य करना यहाँ की अनिवार्य की रीति बन गई है । गंगा माता की पूजा की जाती है । ग्रामीण देवी - देवताओं को भी पूजा जाता है । टोना - टोटका का काफी प्रचार है । मनौती मानकर कार्य सिद्ध कराने के लिये देवताओं की आराधना यहाँ की परम्परा भी बन गई है । विन्ध्यवासिनी पर बकरे की बलि भी जाती है । शकुन अपशकुन भी लोग मानते हैं ।

लोक - त्योहार

लोक त्योहार कुमाऊँ अंचल की लोक संस्कृति का प्रमुख अंग है । त्योहारों के माध्यम से मानसिक शान्ति प्राप्त करती है । त्योहारों में देवी देव - ताओं की आराधना के साथ चित्त से प्रेरणा लेकर मानव स्वार्थिक भविष्य निर्माणकर लेता है । " सभ्यता और धर्म त्योहार तो एक साधन है जिन अवसरों पर हम पीछे मुड़ कर देखते हैं और आगे बढ़ने के लिये मार्ग चिन्तन करते हैं । " :1:

त्योहारों का सम्बन्ध सभी क्षेत्रों से है चाहे राजनीति हो या धर्म । त्योहारों के माध्यम से लोक संस्कृति चलती फूलती है । सभी, पुरुष जन्मे सभी आस्था-वादित होकर त्योहार मनाते हैं । यदि जीवन में त्योहार न हो तो सारा जीवन नीरस हो जायेगा । त्योहारों की परम्परा हमके जीवन में रस घोल देती है । यह-

---

1:- हमारे पर्व और त्योहार -पृ० 1- चौधरी हरिहर सिंह,सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली।

" मनुष्य का यह स्वभाव है या जीव मात्र का यह स्वभाव है कि वह सुख कर जीवन को बार -बार दुहराना चाहता है । इसका कारणभी वह पर्व और त्योहार मनाता है । ... पर्व त्योहारों की उत्पत्ति प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक कारणों से हुई ।" :1: जब व्यक्ति परिश्रम करता हुआ थकावट और उदासीनता का कटु अनुभव करने लगता है तो त्योहार उसकी थकान को नव स्फूर्ति और नई चेतना में परिवर्तित कर देता है ।

बुन्देल खण्ड में लोग तीज - त्योहारों को बड़ी निष्ठा से मनाते हैं । अभावों अपने उत्साह को कम नहीं कर सकते । यह धरती पर जो त्योहार मनाये जाते हैं उन त्योहारों की अपनी एक विशिष्टता एवं मौलिकता है । अन्य क्षेत्रों की तुलना में अधिक उत्साह के साथ त्योहारों को मनाया जाता है । हर त्योहार अपनी विशेषता के कारण उनमें बुन्देल खण्ड की मुहर अंकित कर देता है । यहाँ के त्योहारों का परिचय निम्नवत् है । -

1:- चैत्र की नव दुर्गा - "नव रात्रि" -

चैत्र मास की नव रात्रि पखवाड़े प्रारम्भ होती है और रामनवमी को समाप्त होती है । यह 9 दिन का व्रत है और त्योहार के रूप में मनाया जाता है । राम नवमी के दिन हजारों का मेला लगता है । बुन्देल खण्ड में इस त्योहार को बड़े उत्साह से मनाते हैं । आदमियों और स्त्रियों का खुला दौर, मंदिरों, बागों में साधारणतया है । देवी के भक्तों के गालों में मोटी - मोटी लोहे की छड़े छिदी रहती है किन्तु खून नहीं निकलता । स्त्रियाँ पेट की तरफ से जमीन पर लेटती हुई देवी जी के मन्दिर में जाती हैं । धूनी पेड़ भक्त जला जाता है । अंधेरी रात में गाते नर - नारी यहाँ दुर्गा भक्ति की विशिष्टता प्रदर्शित करते हैं । राम नौमी के दिन भगवान राम के मन्दिर में दर्शन कर प्रसाद चढ़ाते हैं । अखण्ड रामायण " रामचरित-मानस" का पाठ होता है । इस प्रकार नव रात्रि की और राम नौमी दोनों त्यो-हारोंके मिले जुले होने पर त्योहार में और अधिक आनन्द आता है । "बुन्देल खण्ड में यह त्योहार बड़ी धूम - धाम से मनाया जाता है । देवी का बड़ा भारी जुलूस हजारों के साथ निकाला जाता है । " :2:

1:- हमारे पर्व और त्योहार-पृ० 29 - चौधरी हरिहर सिंह सम्पादन प्रकाशन दिल्ली

2:- हिन्दू व्रत कथायें - पृ० 20 - ओम भगवती अनुवाद

इस त्योहार में कुछ नर - नारियों को देवी की आवाजें हैं तब कहते हैं कि " देवी सिर " आ गई आज में गदी " नारियल" बताशे आदि का भोग लगा कर धूप आदि से पूजा कर दी जाती है और व्यक्ति सामान्य स्थिति में आ जाता है "।

2:- भैया दशहरा :-

यह पर्व प्रत्येक शुक्ल दशमी को मनाया जाता है।यह अधिक बड़ा त्योहार नहीं है फिर भी बुन्देल खण्ड के गाँवों में भैया दशहरा के त्योहार की अवहेलना नहीं की जाती । इस दिन नर भैया जिसके घर की एक मुंह अनुष के समान बनाई जाती है और अन्तिम समय में मुंह में डाली जाती है उसकी पूजा करना भला कैसे भुलाया जा सकता है । इस त्योहार के विषय में " बुन्देल खण्ड में भैया दशहरा के दिन सर्वत्र त्योहार मनाया जाता है । देवास में भोजन कराया जाता है ।" :1:

3:- नाग पंचमी :-

यह त्योहार प्रत्येक शुक्ल पंचमी को मनाया जाता है । बुन्देल खण्ड में नाग देवता की आदि काल से पूजा होती चली आ रही है । कहीं - कहीं तो नागराज " भुमिया बाबा " की मढ़ियाँ हैं जिनका पूजन होता रहता है । इस त्योहार में दिन भर सवेरे नाग देवों को लेकर गाँव - गाँव , गली - गली घूमते लोग दर्शन कराते हैं , नागों को दूध पिलाते तथा फूल फल आदि भी चढ़ाते हैं। वैसे भी चढ़ाने की पूजा कहीं - कहीं हैं । इस त्योहार को मनाने की कृषक भूमि को हल लेते हैं तो नाग देवता की सहायता कैसे पता चलता है । एक कृषक ने हल चलाते समय साँप के तीन बच्चों को मार दिया था जब नागिन ने अपने बच्चों को कायेलो उसने किसान की घरनी और बच्चों को डस लिया है मर गये और जब नागिन किसान की झुकी को काटने गई तो उसने नागिन के सामने दूध रख दिया और पूजा तथा प्रार्थना की उससे प्रसन्न हो गई और उसने उसको मा तथा भाइयों का पुन: जिव दान दिया है जीवित हो गये तब से नाग देवता की पूजा प्रारम्भ हो गई । इस त्योहार में बुन्देल खण्ड में घरों घर में दीवालों पर दरवाजों और खिड़कियों के आस पास कोयले की कालो में पीस कर नाग के चित्र बनाते हैं और पूजा करते हैं ।

1:- " लग्न " - पृ० 14 - कृष्णदत्त लाल वर्मा

मेला त्योहार

4:- रक्षा बन्धन :-

यह त्योहार श्रावण मास की पूर्ण मासी को मनाया जाता है । यह हिन्दुओं के महात्योहारों में से एक है । इस त्योहार से साथ एक कथा जुड़ी हुई है । किसी समय में देव दानवों में युद्ध प्रारम्भ हुआ और 12 वर्षों तक चलता रहा । देवताओं की हार हो रही थी । देव राज इन्द्र श्रावण पूर्णिमा को तैयार हो गये विष्णुप्रिया इन्द्राणी घबराई को मालूम पड़ गया उन्होंने इन्द्र से कहा कि मैं एक उपाय बताती हूँ और कच्चे धागों को रंग कर एक गोल पोटली बनाई और इन्द्र की को खुला कर इन्द्र के दाहिने हाथ में बंधवा दी । उनकी विजय हुई उस दिन श्रावण की पूर्णिमा थी थी । रक्षा बन्धन वैसे तो सम्पूर्ण भारत में भाई बहन के प्रेम का प्रतीक माना जाता है किन्तु बुन्देली वसुन्धरा में बहनें भाइयों से अपनी बहिनों के अधिकार को कि भुजरियां " जवारे " सिराने से सम्बन्धित था उसकी रक्षा के लिये कारण सागर के युद्ध में अपने प्राणों की बाजी लगा दी थी । यहाँ बुन्देल खण्ड के युवकों ने इस त्योहार को केवल भावात्मक नहीं बनाया अपितु इस त्योहार की गौरव आन बचाने के लिये अपनी रक्त की लालिमा समर्पित की है । इस त्योहार में बहिनें अपने भाइयों की कलाइयों पर रक्षा सूत्र बांधती हैं और अपने हाथ से मिष्ठान खिलाती हैं । कभी अक्षत का टीका करती हैं । परम्परानुसार भाई बहिन के चरण रज अपने मस्तिष्क पर लगा कर यह प्रतिज्ञा करता है कि वह बहिन के ऊपर आंच आ ने ही सब भाई प्राणों की बाजी लगा कर रक्षा करेगा । राखी " बाटे की " रेशम के धागों की बनी होती है उसका यहाँ अधिक महत्व है । भुजरियों का मेला लगता है और पकवान मिष्ठान के साथ यह त्योहार समाप्त होता है ।

5:- कृष्ण जन्माष्टमी :-

यह त्योहार भाद्रपद कृष्णाष्टमी को मनाया जाता है । यह त्यो - हार व्रत से प्रारम्भ होता है । भगवान कृष्ण का जन्म भादों की अष्टमी को अर्ध - रात्रि के समय कंस के कारागार में हुआ था । अतः यह त्योहार कृष्ण और कंस की कथाओं से सम्बन्ध है । बुन्देल खण्ड में इस त्योहार में काफी मनाई जाती है । रात्रि को कृष्णजी का जन्मोत्सव मनाते हैं । छोटा का पेट चीर कर कृष्ण के जन्म की कल्पना करते हैं । रात को 12 बजे यह पूजा की जाती है । परम्परा के अनुसार कृष्ण जन्म -

छत पर आती जवारें जाती है । पंजीरी " धुना मोठा मेवा चुरा आटा " तथा पंचामृत आदि से कृष्ण का भोग लगाया जाता है । भजन कीर्तन होता है । काशी मथुरा जैसा का प्रदर्शन किया जाता है एक " कागज पर छपा चित्र " जिसमें मथुरा की जेल, वासुदेव कृष्ण को सूपे में रख कर गोकुल ले जाते हुये यमुना के मध्य जल का कृष्ण के उद्धारा जेल भवन के चित्र रहते है उसकी भी पूजा की जाती है । भगवान , निष्कलंक का जेलन होता है ।

6:- जवारे की नव रात्रि :-

जेल की नव रात्रि की तरह दुर्गा की पूजा करने का यह भी त्योहार है इसमें भी जवारे बोये जाते हैं । पूजा पाठ होता है और व्रत रखा जाता है । दुर्गा चालीसा और राम चरित मानस का पाठ किया जाता है । यह शारदीय नव - रात्रि के नाम से प्रचलित है ।

7:- विजया दशमी -(दशहरा) महा त्योहार :-

यह त्योहार आश्विन शुक्ला 10 को मनाया जाता है । आज के दिन भगवान राम ने रावण का वध किया था ।आज केवलिन बुन्देल खण्ड में रावण, कुम्भ - करण और मेघनाथ के पुतले जलाये जाते हैं । दस दिन पहले से राम लीला का आयो- जन किया जाता है । प्रातः मछली और नीलकंठ पक्षी के दर्शन शुभ माने जाते है । सभी लोग रावण का पुतला जल जाने के बाद एक दूसरे से गले मिलते है तथा पान खिलाते है । दशहरे का पान प्रेम और सद्भावना का प्रतीक है । रात्रि को सूपों में पटाखे , फूल पत्तियों से आतिश बाजी के कार्य क्रम को पूर्ण किया जाता है । दशहरे केवलिन बुन्देल खण्ड में लोग अपने घोड़े और अस्त्रों की पूजा करते है और अपने वार्षिक अभियान पर निकलते है । आज भी यहाँ के गाँव - गाँव में मूर्ति विसर्जन हैं । बुन्देल खण्ड में कहीं - कहीं दुर्गा की प्रतिमा जुलूस के साथ निकाली जाती है । झाँसी नगर में महाराष्ट्रीय समाज द्वारा प्रतिमा निकालने के उपरान्त राम रावण का जुलूस निकलता है और अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँचता है । बुन्देल खण्ड के शहरों में दशहराके दिन नव स्फूर्ति जागृत होती रही है और ऐसा लगता है कि यह त्योहार बुन्देल खण्ड का ही । आज ही के दिन दुर्गा जी ने महिषासुर राक्षस का वध किया था इसी लिये दुर्गा की पूजा की जाती है ।

सुराँती

दीपावली के अवसर पर बुन्देलखण्ड में पूजन हेतु बनाये जाने वाला सुराँती का भित्ति-चित्र।

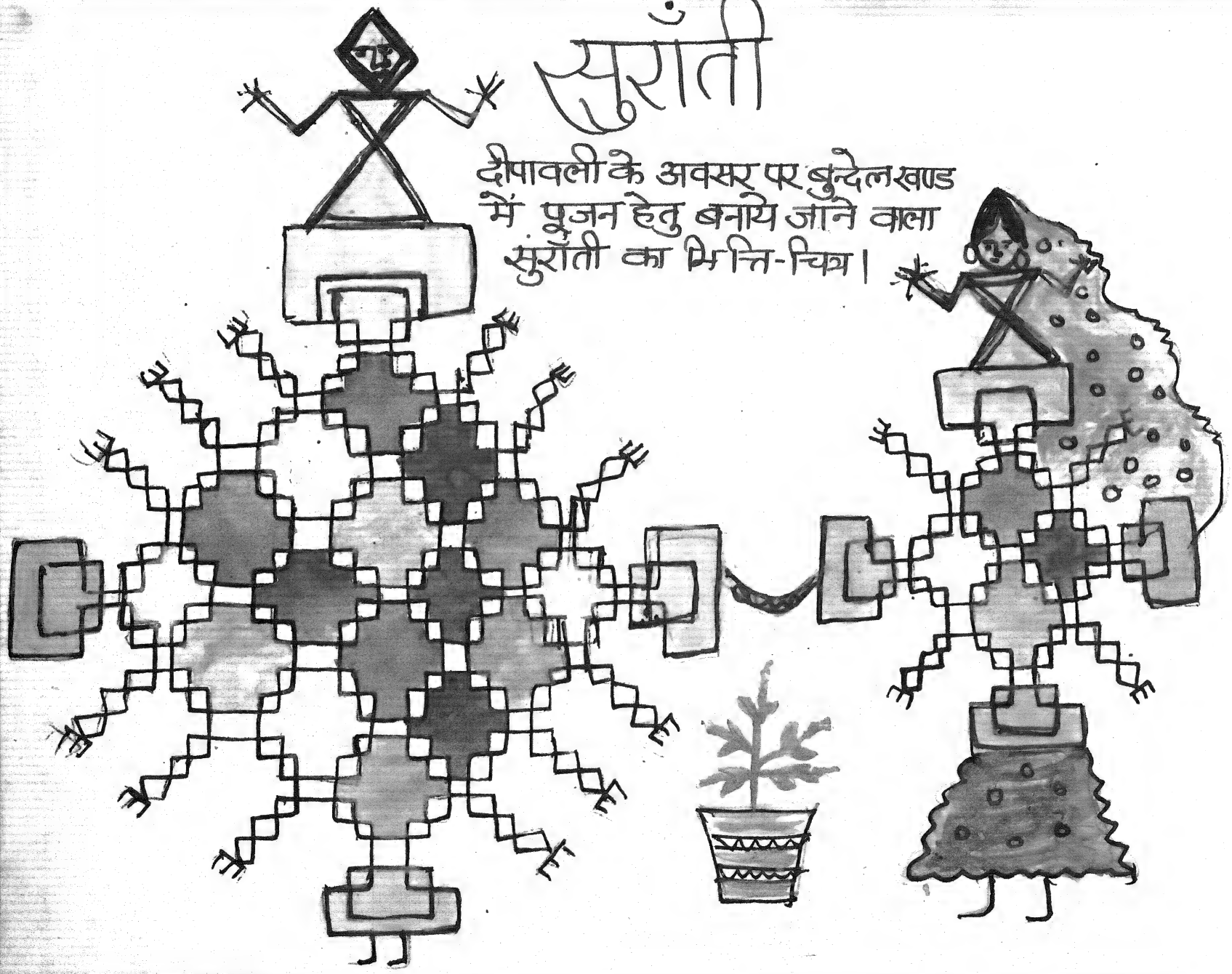

6:-दीपावली :-

यह त्योहार बड़ा त्योहार के रूप में मनाया जाता है । कार्तिक की अमावस्या को यह त्योहार मनाया जाता है । इस त्योहार को 5 भागों में विभक्त किया जा सकता है । -

क:- धनतेरस :-

इस दिन लोग बाजार से नये - नये बर्तन खरीदते हैं । कलश, कांसा, पीतल, तांबा, चीनी आदि के बर्तन खरीदे जाते हैं जिनकी पूजा दीपावली के पूजन के समय की जाती है ।

ख:- नरक - चतुर्दशी :-

धनतेरस के उपरान्त नरक चतुर्दशी आती है । जिसे नरक चौदस के नाम से बुन्देल खण्ड में ख्याति मिली है । नरकासुर को विष्णु का वरदान था कि उसकी मृत्यु का दिन त्योहार के रूप में मनाया जाये फलत: आज उस राक्षस का नाम भी त्योहार के रूप में जुड़ गया । इसे छोटी दीपावली भी कहा जाता है ।

ग:- बड़ी दीपावली :-

प्रमुख त्योहार आज की मान्यता है रात्रि को लक्ष्मी की का पूजन होता है । विभिन्न चित्र बनाया जाता है । मिट्टी की गणेश , गौरा, लक्ष्मी, गाय, बैल, हथौड़िया तथा मिट्टी के दिये आते हैं । पूजन के उपरान्त दीपक सारे घर में जला कर रखे जाते हैं । दीप - मालाओं तथा विद्युत का भी प्रयोग बढ़ा है । नारि-यल भी पूजा चढ़ाया जाता है । घर में उपलब्ध आभूषणों की पूजा होती है । वैश्य वर्ग का यह प्रमुख त्योहार माना जाता है । जहां सारे बाजे जाते हैं दुकानों की भी पूजा होती है । रात में पटाखे बारूद आदि चलाई जाती है । अन्य स्थानों की तरह बुन्देल खण्ड में भी जुये की प्रथा है । आज के त्योहार में नये वस्त्र धारण किये जाते हैं । पकवान आदि भी बनते हैं ।

घ :- पड़वा:-

दीपावलि के दूसरे दिन पड़वा होती है इस दिन गोवर्धन की पूजा होती है । बुन्देल खण्ड में गाय के गोबर के गोवर्धन आंगन में बनाये जाते हैं । सूर्य - चन्द्र तथा गोवर्धन की प्रतिमा बना कर पूजा की जाती है तथा चौक आदि पूरा जाता है कढ़ी, बाकला, दाल, बरा आदि से भोजन की पूजा की जाती है।परिक्रमा की जाती

बुन्देलखण्ड में गोधन पूजा के लिये गाय के गोबर से निर्मित - प्रतिमाएं

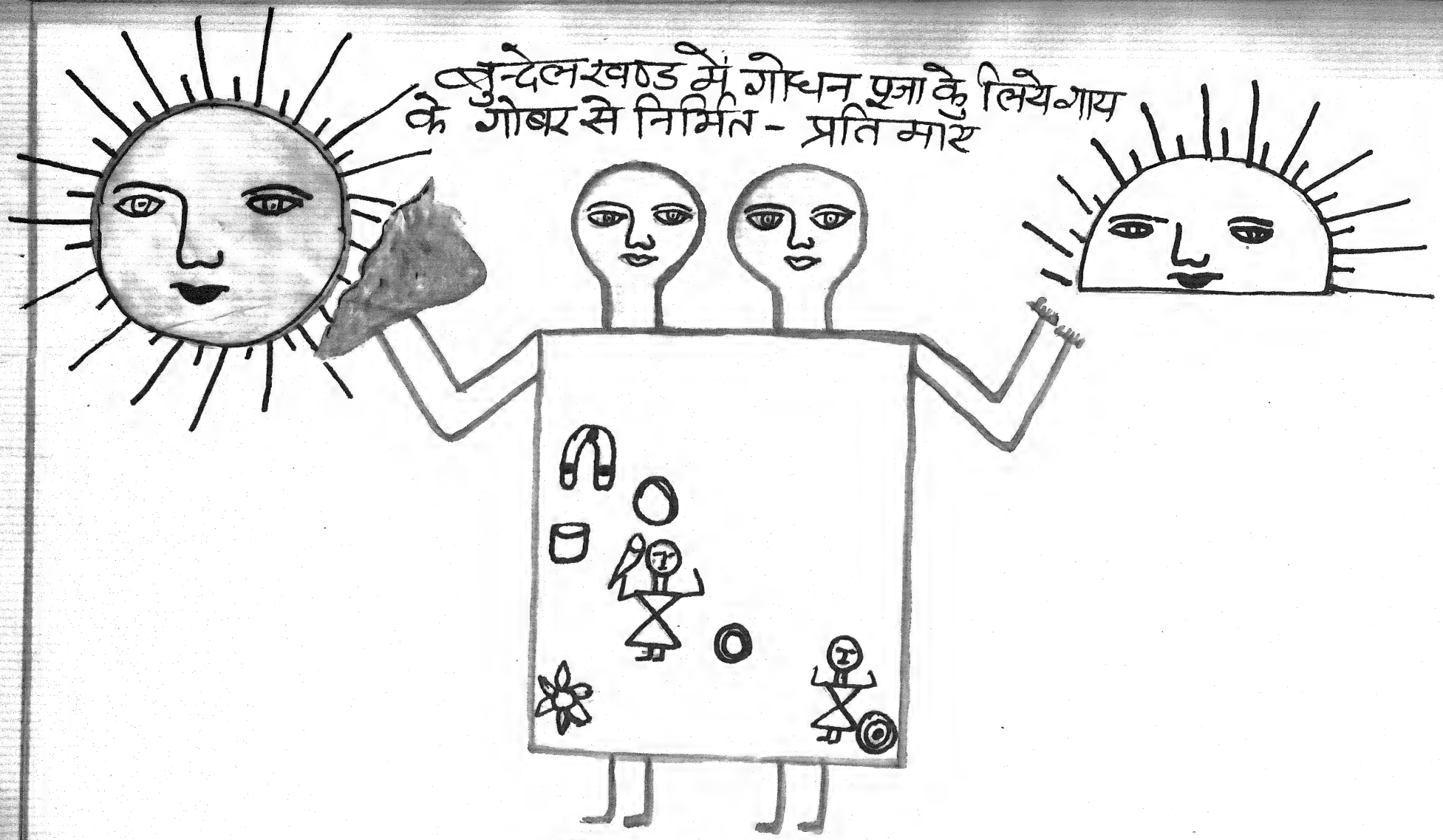

"गोबरधन"

है । कलश बताशे की पूजा की जाती है ।

ड॰ :- भइया दोज :-

दीपावलि का अन्तिम त्यौहार भइया दोज के रूप में मनाया जाता है । इस दिन घर के द्वार पर गोबर की मूर्तियां रखकर पूजा की जाती है । पंडित॰ बहन भाई को टीका करती है , मिष्ठान खिलाती है , प्रति उत्तर में बुन्देली परम्परा के अनुसार भाई बहन के चरण स्पर्श करता है और रुपये भेंट करता है । यह त्यौहार का काफी महत्व है । दीपावलि में घर की सफाई - पुताई भी की जाती है यह त्यौहार स्वास्थ्य की दृष्टि से भी महत्व रखता है । लक्ष्मी के आगमन हेतु इस सम्पूर्ण त्यौहार की पूजा की जाती है ।

मकर संक्रांति :-

अन्य त्यौहारों में मकर संक्रांति जिसमें कलश त्योहरपरम्परा-स्नान का महत्व है(इस दिन घरों पर तिल की पूजा होती है । तिल की लेहन किये जाते हैं । तिल, घी आदि का दान होता है । अग्नि की पूजा होती है ।

वसन्त पंचमी :-

यह त्यौहार माघ सुदी पंचमी को मनाया जाता है इस त्यौहार में किसान इस की पूजा करते हैं । तथा सभी लोग पीले वस्त्र धारण करते हैं । मेला - आदि भी लगता है ।

होली :-

यह त्यौहार फाल्गुन सुदी 15 को मनाया जाता है इस त्यौहार के साथ हिरणाकश्यप की बहिन होलिका जो प्रह्लाद को जलाने का प्रयत्न कर रही थी और स्वयं जल गई उसी होलिका का दहन किया जाता है । बुन्देल खण्ड में बहुत समय पहले यह त्यौहार पंच माह तक चलता था । फागें यहाँ की प्रसिद्ध है । गोबर के बरबूलों की माला बना कर होली जलाते है । बुन्देली कवि ईसुरी फागें सारे देश में प्रचलित है । अन्य प्रान्तों की फागों से उनमें अधिक सरसता है ।

" बुन्देल खण्ड की फाग्गु मस्ती तथा टेसू के रंग में सराबोर और धूल सनी होली का त्यौहार सुदूर बुन्देल खण्ड है । इस ने तो इसे सुरक्षा है पर नकल - में असल कहाँ ।" :1:

1:- बुन्देल खण्ड प्रान्त निर्माण रेखा -पृ० 211 - बन्धु सक्सेना

बुन्देल खण्ड की होली की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि होरा - निशान की होली का जन्म ऐसा यहीं हुआ । जिसे उत्साह के साथ यहाँ की अनुपम रंग रलियों के साथ खेली जाती है , अन्यत्र उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती । इस त्योहार में भी 3 दिन तो मान ही जाते हैं । पहले दिन रात को होली जलती है । दूसरे दिन होरा निशान की होली खेली जाती है फिर तीसरे दिन रंग की होली खेली जाती है । काशी में दूसरे दिन होली नहीं खेली जाती है । क्यों कि यहाँ महाराजा गंगा-धर राव का देहावसान हो गया था । फिर भइया दोज का त्योहार होता है । भाई को बहिने टीका करती है । पकवान - रोट , खीर आदि से यह त्योहार - सम्पन्न होता है ।

अन्य त्योहार :-

अन्य त्योहारों में क्वार की पूर्णिमा के दिन नौरता - सिंझिया (सुआरा) टेसू का विवाह यहाँ एक त्योहार के रूप में मनाया जाता है जिसमें लड़कियाँ - सिंझिया का विवाह टेसू के साथ करती है तथा इसमें लोक गीत गाये जाते हैं । भित्ति चित्र भी बनाती हैं । कुछ त्योहार ऐसे है जिनका विवरण व्रत शीर्षक के अन्तर्गत किया गया है । बुन्देल खण्ड के व्रत तीज त्योहार का प्रकार है :-

नवरात्रि दुर्गा पूजा , कौमार्य साधना , मातृ पूजा से आरम्भ होकर क्वार सुतोया , बट सावित्री व्रत , गंगा दशहरा , व्यास पूर्णिमा , रक्षा-बन्धन , जन्माष्टमी , गणेश चतुर्थी , ऋषि पंचमी , अनन्त चतुर्दशी , पितृमोक्ष , दीपावली । गोवर्धन पूजा , मकर संक्रान्ति , वसन्त पंचमी और शिव रात्रि तथा होली । " :1:

व्रत

प्राचीन काल से ही बुन्देल खण्ड धार्मिक परम्पराओं का केन्द्र रहा है । इस धरती पर अनेकों ऋषि मुनि जन्मे जिनके सद् उपदेशों और आदर्शों की छाप यहाँ के जन जीवन पर पड़ी फलतः यहाँ अनेकों मन्दिरों - तीर्थों का निर्माण हुआ । यहाँ - यहाँ से यहाँ की धार्मिक नदियों का प्रवाह हुआ यहाँ तीर्थों का जन्म हुआ ।

1:- बुन्देल खण्ड की संस्कृति और साहित्य -पृ० 33- रामचरण हयारण मित्र

यहाँ के नर नारी पूजा पाठ आदि के साथ उपवासों और व्रतों को महत्व देने लगे। व्रत यहाँ की संस्कृति का आधार बने। त्योहारों में व्रतों का निर्वाह अनिवार्य हो गया। कुछ व्रत केवल स्त्रियों में रखना प्रारम्भ किया। कुछ ऐसे भी व्रत हैं जिन्हें पत्नी - पुरुष और बच्चे सब रखते हैं। यहाँ पर यह बात प्रचलित है कि वर्ष में जितने दिन होते हैं उतने ही तीज त्योहार - व्रत हैं। जिससे व्रतों की महत्ता प्रति ध्वनित होती है। बुन्देल खण्ड में स्त्रियाँ विधिवत व्रत रखती हैं और अपने परिवार की रक्षा, कार्य की सिद्धि, पुत्र धन की प्राप्ति, दीर्घायु की प्राप्ति करती हैं। व्रत से यहाँ स्वास्थ्य लाभ होता है यहाँ व्यक्ति के आध्यात्मिक सम्बन्ध प्रकट और सुदृढ़ हो जाते हैं। आत्मा की पवित्रता मन की शुद्धता, ईश्वर की आराधना आदि व्रत के मुख्य ध्येय माने जाते हैं। " व्रतों से शरीर स्वस्थ आत्मा शुद्ध, चित्त निर्मल तथा पुण्यमय होकर हो जाता है।" :1:

बुन्देल खण्ड में व्रतों की परम्परा में छोटे बड़े सभी व्रत आते हैं। सब व्रत यहाँ पर धार्मिक महत्व के साथ सामाजिक महत्व भी रखते हैं। व्रतों के निर्वाह करने में पारिवारिक सम्बन्ध मधुर एवं सुदृढ़ हो जाते हैं। घर की स्त्रियाँ सास-बहू, देवरानी, जिठानी, ननद आदि सामूहिक रूप से व्रतों में पूजा पाठ करती हैं और फलाहार का सेवन करती हैं। व्रतों में किसी न किसी देवी देवता की पूजा होती है और प्रत्येक व्रत में पूजा के समय स्त्रियाँ सम्बन्धित व्रत की कहानियाँ कहती हैं। बुन्देल खण्ड में प्रचलित व्रतों में कहानियाँ कहने की रीति है। इन कहानियों में सामाजिक कुरीतियों से मुक्ति, ईश्वर की आराधना की भावना एवं समस्याओं का समाधान सरल में ही प्राप्त हो जाता है। बुन्देल खण्ड में जिन व्रतों की प्रधानता है वे इस प्रकार हैं :-

1:- नवरात्रि व्रत :-

चैत, आषाढ़, क्वार और माघ के महीनों में उजले पक्ष की पड़वा से नौमी तक जो नौ दिन होते हैं, उन्हें नव रात्रि कह कर सम्बोधित किया जाता है। :2: किन्तु आमान्य रूप से बुन्देली परम्परा के अनुसार नव रात्रि वर्ष में दो - बार मनायी जाती है। एक तो चैत में और दूसरे क्वार में।

1:- हमारे पर्व और त्योहार पृ० 161 -डॉ० हरिहर सिंह
2:- हिन्दू व्रत कथायें - पृ० 20 - ओमप्रकाश

चैत की नव रात्रि :-

चैत मास में नवरात्रि की षष्ठमी के दिन मनिकारा देवी जी की स्थापना की जाती है और नौमी को उनका विसर्जन किया जाता है । बुन्देल खण्ड में षष्ठमी के दिन जब देवी जी की स्थापनाहोती है तो अधिकतर घरों में जवारों में मिट्टी डाल कर जौ , गेहूं बो दिया जाता है । देवी जी की पूजा रोज शाम को की जाती है और भाविक लोग कर प्रसाद वितरण कर दिया जाता है । प्रतिदिन स्नान आदि करके जवारों में पानी दिया जाता है और उन्हें हवा से सुरक्षित रखा जाता है । पंचमी और अष्टमी को जवारों की झाँकी खुलती है जिसमें सैकड़ों लोग दर्शन करते हैं । नौमी में कहीं -कहीं सुबह और कहीं - कहीं शाम को जवारे गढ़ जवा कर दुर्गा मन्दिर में ले जा कर लौट दिये जाते हैं । बुन्देल खण्ड में स्त्रियाँ नौ दिनों तक व्रत रखती हैं । नमक बिल्कुल नहीं खाती और प्रत्येक रात में मिल जुल कर अलग मनुहियाँ, भजन आदि गाती हैं ।

" बुन्देल खण्ड में नव त्योहार बड़ी धूम - धाम से मनाया जाता है । देवी का जवा भारी जुलूस जवारों के साथ निकाला जाता है । यह जुलूस देखने योग्य होता है । स्त्रियाँ रंग बिरंगे कपड़े पहिने, घूंघट निकाले , सिर पर मोटे की बंडुली रखे गाती हुई चलती हैं । पुरुष भी साथ - साथ गाते हुये चलते हैं और नाचे जवारे हैं । पुरुष गले में ढोलकी डाले औरतों की तरफ मुंह किये उल्टे - उल्टे चलते हैं । थोड़ी - थोड़ी दूर पर जुलूस रुकता है और तलवारों का खेल दिखाया जाता है । कहीं -कहीं तो कुछ लोग हाथ के माथे में 20 - 22 फुट लम्बी और 3 - 4 फुट मोटी लोहे की (सरिया) "सांग " घुसी रहती है ।" (1)

नव दुर्गा शक्ति आदिशक्ति मानी गई है और नौ दिनों तक यह व्रत का काफी महत्व है । " नव रात्रि की रहस्यमय शक्ति की पूजा के माध्यम और 9 मन्द स्वर में लोक संस्कृति की यह दीपिका का आरम्भ होता है । शक्ति ही जीवन का आधार है । " :2:

क्वार की नव दुर्गा का व्रत :-

चैत की नव दुर्गा से क्वार की नव दुर्गा का कुछ अलग महत्व है । बुन्देल खण्ड में ठीक चैत की नव रात्रि की तरह यहाँ भी नौदिन का व्रत रख कर -

---

1:-हिन्दू व्रत कथायें-पृ0 20 - ओमप्रकाश अग्रवाल
2:- हमारी जीवन्त संस्कृति - पृ0 34- डा0 रामानन्द तिवारी

पूजा पाठ आदि किया जाता है । कहीं - कहीं जवारे भी बोये जाते हैं ।

2:- अक्ष तृतीया का व्रत :-

वैशाख के शुक्ल पक्ष की तृतीया को अक्ष तृतीया कहते हैं । इसी दिन से लोग वसन्त का प्रारम्भ मानते हैं । इस व्रत के साथ एक कथा जुड़ी है । कथा एक गरीब ब्राह्मण की है जो सदाचारी था और पूजा करता था किन्तु था बहुत गरीब , अपने बड़े परिवार के भरण पोषण से चिन्तित रहता था । एक दिन उसने अक्ष तृतीया व्रत का महात्म्य सुना उसने भी यह व्रत प्रारम्भ कर दिया मृत्यु के उपरान्त उसका जन्म व्रत के प्रभाव से राजा के घर में हुआ । तभी से इस व्रत का प्रचलन हुआ । बुन्देल खण्ड के नर -नारी इस व्रत को करते हैं और भगवान की पूजा करते हैं । कुछ व्यक्तियों ने परशुराम की जन्मना और पूजा का प्रावधान बताया है ।

3:- वट सावित्री व्रत :-

बुन्देल खण्ड में इस व्रत का बड़ा महत्व है । यह व्रत ज्येष्ठ कृष्ण 13 को रखा जाता है । तिन भर व्रत रखने के बाद शाम को वट वृक्ष की पूजा की जाती है । वृक्ष के तनों पर कच्चा धागा लपेटा जाता है । घर में चित्रित पर हल्दी या रोली से अरगज का चित्र बनाया जाता है और पूजा की जाती है । रात्रि में फलाहार किया जाता है । यह व्रत परिवार सहित पुत्र की दीर्घायु , आरोग्य और मंगल के लिये किया जाता है । सावित्री ने इसी व्रत को करके अपने पति सत्यवान के प्राणों को यमराज से जीता था । इस व्रत में सावित्री - सत्यवान की कथा कही जाती है । जो स्त्रियाँ इस व्रत को करती हैं उनका कल्याण होता है ।

4:- हर सावित्रीव्रत " तीजा व्रत " :-

बुन्देल खण्ड में इस व्रत को सधवा स्त्रियाँ रखती हैं । कुंवारी लड़कियाँ भी इसे रखने लगी हैं । यह व्रत भाद्र मास शुक्ल की तृतीया को पड़ता है । इस व्रत की तिथि की शाम को भोजन करके प्रारम्भ किया जाता है । प्रायः स्त्रियाँ खीरा आदि अवश्य खाती हैं । तृतीया को यह व्रत निर्जल व्रत के रूप में रखा जाता है । गौरा " पार्वती " की मिट्टी की प्रतिमा बनाकर उसका पूजन किया जाता है । सारी रात जागरण होता है तथा कीर्तन भजन भी होते हैं । रात में स्त्रियाँ मंडितों के आकार बोली खुलती हैं । प्रातः -नदी - तालाब आदि में गौर विसर्जन जाती है तब यह व्रत टूटता है । यह कठिन व्रत है क्यों कि इसमें जल तक ग्रहण नहीं किया जाता है । इस व्रत में पार्वती का शिव की से साथ किस प्रकार -

पूजा उससे सम्बन्धित कथा कही जाती है । यह एक धार्मिक व्रत है इसको करने से स्त्रियाँ सौभाग्य वती रहती हैं तथा कु० कन्याओं को इस व्रत के करने पर शीघ्र ही वर की प्राप्ति होती है । ऐसा बुन्देल खण्डियों का विश्वास है । मोक्ष प्राप्ति का एक साधन भी इस तालिका व व्रत माना गया है । इस दिन पकवान भी बनाये जाते हैं ।

5:- गणेश चतुर्थी व्रत - " गणेश चौथ या बछर चौथ ":-

बुन्देल खण्ड में इस व्रत को बछर चौथ व्रत के नाम से जाना जाता है । यह व्रत भाद्र पक्ष शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को पड़ता है । इस चौथ को चन्द्रमा नहीं देखा जाता है जो लोग उस दिन चन्द्रमा देख लेते हैं उन्हें चोरी का झूठा कलंक लगता है । उस दिन गणेश की पूजा की जाती है । इस व्रत की एक कथा है - गणेश जी एक बार ब्रह्मलोक से चन्द्र लोक को जा रहे थे उन्हें मार्ग में ठोकर लगी और वे गिर पड़े उनका शरीर क्षीरज से भिड़ गया । चन्द्रमा यह देख कर बहुत हँसा जिससे क्रुद्ध होकर गणेश जी ने अभिशाप दिया कि तुझे जो देखेगा उसे झूठा कलंक लगेगा । चन्द्रमा अपनी प्रतिष्ठा बनायें रखने के लिये छिप गया किन्तु मनुष्यों के विशेष आग्रह पर उन्हें निकलना पड़ा । चन्द्रमा ब्रह्मलोक गया ब्रह्मा जी ने उसे गणेश चौथ व्रत करने को कहा उसने किया और अभिशाप से बच सका । क्योंकि गणेश जी ने कहा कि प्रति दिन तो नहीं किन्तु चतुर्थी को देखने वाला अवश्य कलंकी होगा । इसी प्रकार परम्परानुसार आज भी बछर चौथ देख देखने वाला पड़ोसियों के अपशब्दों को सुनता है ।यद्यपि अब शब्द कहने वाला यह नहीं जानता कि बछर किसने देखे । सभी यह कलंक मिटता है । गणेश की पूजा हेतु यह व्रत रखा जाता है ।

6:- ऋषि पंचमी व्रत :-

यहाँ बुन्देल खण्ड में भारी महत्व का व्रत है । भाद्र के शुक्ल पक्ष की पंचमी को ऋषि पंचमी कहते हैं । इस व्रत को करने से सारे पाप दूर हो जाते हैं । इस व्रत को करने से स्त्रियाँ दोष मुक्त हो जाती हैं । इस व्रत में उत्तंक नाम के विद्वान की विदर्भ देश के निवासी थे उनकी एक कन्या थी जिसने विवाह के उपरान्त रजस्वला " रजस्वला" होते हुये भी अपने पति को सेवा किया और उसके गर्भ हुये जिससे वह स्त्रियाँ दो गर्भ और रजस्वला होने पर उसके कीड़े पड़ गये । यह सब मुनि आत्मा के साथ से सुना था उसने मुक्ति हेतु ऋषि पंचमी का व्रत किया था इसी परम्परा का निर्वाह यहाँ भी होता है ।

"बुन्देलखण्ड की विवाहित स्त्रियों द्वारा मनाये जाने वाले करवा-चौथ का भित्ति-चित्र"

7:- अनन्त चौदस " अनन्त चतुर्दशी व्रत " :-

यह व्रत भाद्र शुक्ल 14 को रखा जाता है । इस व्रत को स्त्रियाँ और पुरुष दोनों ही करते हैं । धनधान्य में वृद्धि करने वाला यह व्रत है । इसमें अनन्त भगवान की पूजा की जाती है । पुरुष दायें हाथ में और स्त्रियाँ बायें हाथ में अनन्त को सूत में 14 गाँठे लगा कर बाँधा जाता है , धारण करते हैं इसमें 14 पूजा अनाकर पंडित को दान किये जाते हैं और 14 पूआ व्रत कर्ता ग्रहण करता है । अनन्त चौदस व्रत की कथा सतयुग के सुमन्त नामक ही ब्राह्मण की कन्या शीला से जुड़ी हुई है । उसकी कन्या का विवाह कौण्डिन्य नाम के ब्राह्मण से हुआ । शीला ने अनन्त की पूजा देखी और अनन्त धारण किया था जिसे कौण्डिन्य ने अग्नि में डिया जिससे उसकी सम्पत्ति नष्ट हो गयी थी अन्त में उसने इस व्रत को किया और पुनः अपनी पूर्व स्थिति को प्राप्त हुआ ।

8:- शिवरात्रि व्रत :-

फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को शिवरात्रि का व्रत किया जाता है । इसमें शिव जी की पूजा की जाती है । रात भर जागरण होता है । कीर्तन भजन आदि भी होता है । शिवजी और पार्वती जी की कथा इस व्रत का आधार है । शिव जी ने पार्वती जी को यह बताया था कि जो व्यक्ति इस व्रत को करते हैं वह शिवलोक को प्राप्त करते हैं । व्याध जो लेट का कर्णधार था । शिवरात्रि के दिन लेट कर दिया गया । इसका अनायास ही यह व्रत हो गया और उसने मोक्ष प्राप्त किया । शिवलिंग पर बेलपत्री , अधूरे के चावल , फूल आदि चढ़ाये जाते हैं । फलाहार, शकरकन्द , आलू आदि इस व्रत में धारण करते हैं । सिंगाड़े के आटे का हलुआ भी प्रसन्नता जाते हैं । जो लोग इस व्रत करते हैं वे सीधे शिवलोक में जाकर मोक्ष प्राप्त करते हैं ऐसी यहाँ के लोगों की धारणा है । इस व्रत को स्त्री - पुरुष बच्चे सभी करते हैं ।

9:- करवा चौथ का व्रत :-

यह व्रत कार्तिक कृष्णा चतुर्थी को रखा जाता है । यह व्रत वे रूप में मनाया जाता है । इस व्रत को केवल विवाहित स्त्रियाँ ही रखती हैं । दिन भर निर्जल व्रत रखा जाता है । विधिवत चित्र भी बनाया जाता है । जब चन्द्रोदय हो जाता है तो करवा और छलनी से चन्द्र देव को अर्घ्य दिया जाता है ।

अर्जुन एक दिन नीलगिरि पर्वत की ओर चले गये द्रौपदी उनके काफी देर के बाद न आने पर जब व्याकुल हुई तो कृष्ण ने उन्हें यह व्रत करने को कहा जिसके करने पर पांडवों की सारी व्यथायें दूर हो गई और खोया राज्य मिल गया । इस व्रत में सेठ शर्मा नाम के ब्राह्मण की सुन्दर सौराष्ट्री की कथा प्रचलित है । वह इस व्रत को करती थी । जब चन्द्रमा नहीं निकला और वह भूख से व्याकुल होने लगी तो उसके भाइयों ने पेड़ पर चढ़ कर छलनी से दीपक दिखा दिया और उसने व्रत तोड़ दिया । जब वह मायके से ससुराल गई तो पति प्राण छोड़ चुका था किन्तु वह वर्ष तक उस पति के मृत शरीर के पास बैठी रही और सेवा करती रही अगले वर्ष उसने विधि करवा चौथ का व्रत किया तब उस मृत शरीर में प्राणों का पुनः संचार हो गया । बुन्देल खण्ड की स्त्रियाँ इस व्रत को बड़े नियम पूर्वक करती हैं । चन्द्र को आभूषण और वस्त्रों से सुसज्जित कर पूजा करती हैं ।

अन्य व्रत

क :- हरछट -व्रत :-

इस व्रत को स्त्रियाँ रखती हैं । इस व्रत को दोपहर तक रखा जाता है और बाद में ऐसी चीज खायी जाती है जो हल की जुती न हो । "लसनवा " साल चरई के अनाज " गेहूं , चना , बाजरा , जौ , मक्का , ज्वार " भाड़ में भुना कर मिट्टी की कुल्हियों में भर कर उन्हें कूटा जाता है । बाद में बच्चों को बाँट दिया जाता है । इस व्रत में कहानी भी कही जाती है । 7 पूतरियों का भित्ति चित्र बनाकर पूजा की जाती है ।

ख :- महालक्ष्मी - व्रत :-

यह व्रत क्वार मासमें विधु पक्ष में किया जाता है । इस व्रत को स्त्रियाँ रखती हैं । घरमें काशी पर शिवरूप मान लक्ष्मी की पूजा होती है । कुम्हार के यहाँ से मिट्टी का हाथी प्राप्त हो जाता है ।

घ:- संतान सातें -व्रत :-

भाद्र मास में यह व्रत किया जाता है । इसमें गौरा महादेव की पूजा होती है । धागे की चूड़ी धारण की जाती है ।

प्रति मंगल वार का व्रत हनुमान जी के लिये , शुक्रवार का व्रत सन्तोषी-

माता के लिये , रविवार का व्रत सूर्य भगवान के लिये भी कुछ लोग करते हैं । कृष्ण - मास में दो बार "प्रदोष" व्रत भी सभी कुलम करते हैं शिवजी की पूजा करते हैं । कहीं - कहीं सोमवार का भी व्रत करते हैं । फाल्गुन मास में सोमवारों के व्रत का विशेष महत्व है ।

बुन्देल खण्ड के मेले

बुन्देल खण्ड विशिष्ट तीर्थों का पावन संगम है । यदि नदियों से घिरा सम्पूर्ण को बुन्देल खण्ड तीर्थ धाम के रूप में आंका जाये तभी इस अंचल का यथार्थ मूल्यांकन सम्भव हो सकेगा । वन - वन पर यहाँ साक्षात प्रधान राम का दर्शन प्राप्त होता है । यहाँ के सात्विक प्रकृति के नर - नारियों की पुण्य आत्मा छल कपट से कोसों दूर है । बुन्देल खण्ड वसुन्धरा का चम्पा क्षेत्र में प्रतिष्ठापित श्री गुप्त त्रिवेणी जी के दर्शन का महत्व भारत वैदिक तीर्थ से कम है । इस सम्बन्ध में प्रचलित है कि -

दो ठेर अयोध्या, तिरेनी तीन ठेर धाम
चार ठेर काशी ढंग - ढंग के नहाये से ।
पांच ठेर गया जाये छे ठेर नीम धार
सात ठेर पोकर जी आचमन कराये से ।
कामनाथ, जगन्नाथ, बद्री केदार नाथ
ब्रह्मा सुमेर दस बार बन धाम से ।
ऐसे यज्ञ कोस कोटि तीरथ - स्नान करें
ऐसे फल कोस की त्रिवेणी दरस पाये से । :।:

बुन्देल खण्ड में आर्थिक साधनों का अभाव है यहाँ का जन - जीवन ईश्वर की आराधना में सदैव रत रहा है । अपने धर्म और अपनी संस्कृति की रक्षा करने के लिये मूर्ति पूजा का सहारा लिया है । अनेक देवी - देवताओं की भव्य मूर्तियाँ मन्दिरों में पूजा अर्चन हेतु प्रति स्थापित कर दी और सामूहिक रूप से त्योहारों में दर्शनार्थ जाने लगे । छोटे - छोटे ग्राम स्थानों पर भी मेले लगने लगे । प्रायः आर्थिक क्षेत्र बुन्देल खण्ड में इस प्रथा ने काफी जोर पकड़ा । जिसका परिणाम यहाँ मेलों की संख्या में वृद्धि और अधिक पालनार्थ मानस में सभी लगन जागृत हुई ।

चम्पा धाम त्रिवेणी तीर्थ - डा० हरीराम मिश्र "मध्य देश दीपावलि विशेषांक"

बुन्देल खण्ड में विभिन्न नदियाँ प्रवाहित होती है किन्तु बेतवा और यमुना का महत्व कुछ अधिक है । यहाँ मेला केवल मनोरंजन का साधन नहीं है अपितु आत्मा से परमात्मा के एकीकार होने का सरलतम उपाय है । यहाँ मन की शान्ति और तन की पवित्रता दोनों एक साथ प्राप्त होती हैं ।

बुन्देल खण्ड में ऐसे सौ गाँव - गाँव कस्बों - कस्बों में मेले लगते व आ रहे हैं कि उन सभी मेलों पर प्रकाश डालना अनिवार्य है । कुछ जनपदों के अनुसार मेलों का वर्गीकरण निम्नवत है :-

"जबलपुर" जनपद के मेले :-

जबलपुर जनपद के अर्न्तगत भेड़ाघाट में गोरी शंकर एवं चौसठ योगिनी के मन्दिर हैं जिनमें चौसठ योगिनी देवी की की 81 मूर्तियाँ हैं । यहाँ कार्तिक पूर्णिमा को 3 - 4 दिन वार्षिक मेला लगता है और सैकड़ों तीर्थ यात्री नर्मदा नदी में स्नान करके दर्शन करते हैं ।

"सागर" जनपद :-

क:- द्रोणागिरि :-

द्रोणा गिरि का मेला । द्रोणागिरि छतरपुर रोड पर मलहरा से पूर्व की ओर लगभग 9 किलोमीटर दूर स्थित है । इस पर्वत पर हनुमान जी संजीवनी बूटी लेने गये थे । यहाँ जैन तीर्थ स्थान भी है । यहाँ प्रतिवर्ष चैत्र सुदी 12 से 15 तक विशाल मेले का आयोजन किया जाता है जिसमें सैकड़ों तीर्थ यात्री भाग लेते हैं ।

ख :- नयन - नेनागिरि :-

यह सिद्ध क्षेत्र सागर जनपद की बंसान सीमा पर सागर रेलवे स्टेशन से 45 मील पर स्थित है यह सं0 1700 तक से प्राचीन जिनालय है । यहाँ प्रति वर्ष मगशिर सुदी 11 से 15 तक मेला लगता है ।

टीकमगढ़ :-

ख, :- कुण्डेश्वर का मेला :-

यह स्थान टीकमगढ़ ललितपुर रोडवेज मार्ग पर 8 किलोमीटर दूरी पर स्थित है । यहाँ पर जो शिव मन्दिर के विशाल प्रांगण में मकर संक्रान्ति व शिवरात्रि के पावन त्यौहारों पर विशाल मेला लगता है ।

ख :- पनोरा का मेला :-

यह मेला टीकमगढ़ से 4-5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है यहाँ 81 जिला स्तर एक साथ स्थित है । यहाँ पर प्रति वर्ष कार्तिक सुदी 13 से 15 तक कार्तिक मेला लगता है । काफी भीड़ एकत्र होती है तथा प्रसाद भी होते हैं ।

ग :- अतिशय क्षेत्र अहार का मेला:-

यह स्थान टीकमगढ़ से पूर्व की ओर 15 मील दूर पर स्थित है यहाँ प्रति - वर्ष माह सुदी 13/14/15 को कार्तिक मेला लगता है जिसमें सहस्रों यात्री इकट्ठे - आते हैं ।

घ :- ओरछा:-

यह स्थान झाँसी से 15 किलोमीटर दूर स्थित है । यहाँ रामराजा का प्रसिद्ध मन्दिर है । यहाँ वसन्त पंचमी को मेला लगता है ।

दमोह :-

क :- बादल पुर का मेला :-

यह स्थान दमोह से पूर्व की ओर 9मील दूरी पर है यहाँ जिसमें 200 वर्षों से जागेश्वर "शिवजी" का प्रसिद्ध मन्दिर है । यहाँ प्रति वर्ष वसन्त पंचमी को मेला लगता है ।

ख :- कुण्डलपुर का मेला :-

यह स्थान छतरपुर तहसील में शिवप्रोदिया पटेरा मार्ग पर दमोह से 23 मील की दूरी पर स्थित है । यहाँ महावीर स्वामी के मन्दिर हैं । तालाब के किनारे हिन्दुओं के भी प्राचीन मन्दिर हैं। माह सुदी 14-15 को यहाँ एक बड़े मेले का आयोजन होता है । जिसमें सहस्रों जैन बन्धु भाग लेते हैं ।

छतरपुर :-

बटा शंकर शीर्ष मेला :-

यह स्थान छतरपुर जिले में जिलाधार से पूर्व की ओर 8 मील दूर है यहाँ महादेव जी की प्राचीन मूर्ति है । मकर संक्रान्ति पर यहाँ मेला लगता है ।

झाँसी :-

पचकुण्डों का मेला :-

झाँसी जनपद में झाँसी नगर में पचकुण्डों पर चैत्र की नवरात्रि में 9 दिन मेला लगता है यहाँ 9 कुंये हैं और देवी जी का मन्दिर है ।

महारानी पुर :-

जो कि झाँसी की तहसील है जन्मदिवस का मेला लगता है ।

दतिया :-

गुप्तेश्वर महादेव बड़ौनी- दतिया का मेला :-

यह स्थान दतिया से दूर स्थित है बड़ौनी ग्राम में पहाड़ पर स्थित है । यहाँ गुप्तेश्वर महादेव का प्रसिद्ध मन्दिर है ज्येष्ठ पूर्णिमा को यहाँ मेला लगता है ।

उनाव बालाजी :-

यह स्थान दतिया के समीप है यहाँ सूर्य भगवान का मन्दिर है प्रतिवर्ष यहाँ वसन्त पंचमी को मेला लगता है । यहाँ कुष्ट रोगी जाते हैं । सेतवा में स्नानकरके सूर्य भगवान को जल चढ़ाते हैं और स्वास्थ्य लाभ पाते हैं ।

सतना :-

मैहर की शारदा देवी का मेला :-

यह स्थान सतना की एक तहसील मैहर में स्थित है यहाँ आल्हाखण्ड की अधिष्ठात्री देवी पर चैत्र की नव रात्रि में मेला लगता है । बकरे की बलि दी जाती है ।

बाँदा :-

बाँदा जनपद में चित्रकूट में मंदाकिनी नदी में स्नान तथा कामद गिरि की यात्रा का मेला प्रति अमावस्या को लगता है ।

हमीर पुर :-

हमीरपुर जनपद में सिमनोड़ी से 2 कि0मी0 दूर मनासुर "शिवजी" का मन्दिर है जहाँ कार्तिक पूर्णिमा को मेला लगता है ।

बालौन :-

क:- कन्कबरा का मेला :-

बालौन "कन्कोसा" में (ग्राम कन्कोसा) यहाँ 9 नदियों का संगम होता है -

"चम्बल , सिन्ध , बेतवा , यमुना , पार्वती" यहाँ कार्तिक पूर्णिमा के दिन विशाल मेला लगता है ।

ख :- अन्य मेले :-

कालपी के कुलौली ग्राम में सूर्य यात्रा का मेला अगहन के अन्तिम रविवार । देवगढ़ में शारदा देवी का मेला चैत की नवरात्रि , ललौच रामपुरा में अगहन सुदी 10 को बराहियों का मेला लगता है ।

इस प्रकार यदि सूक्ष्म अवलोकन करें तो शिवरात्रि , बसन्त पंचमी , कार्तिक पूर्णिमा , नवरात्रि आदि मेले तीज त्योहार हैं जिनमें बुन्देल खण्ड के हर जनपद में छोटे - बड़े मेले अवश्य लगते हैं ।

निःसन्देह यहाँ के तीर्थों ,मेलों , मन्दिरों को देख कर यहाँ की सांस्कृतिक - सत्ता का पूर्ण आभास मिलता है । मेलों में न केवल पुरुष वर्ग अपितु ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की नारियों का जमघट यहाँ की वास्तविक महत्ता भक्ति का रसास्वादन करने में सक्षम है ।

संस्कार

" परिवार व्यक्ति के लिये वैवाहिक , आर्थिक , सामाजिक और सांस्कृतिक यथार्थ है । बच्चा व्यक्ति के जीवन पर इतना गहरा प्रभाव पड़ता है कि जीवन के अन्त तक भले ही वास्तव उत्तेजकों के कारण इसमें कुछ परिवर्तन या परिमार्जन आ जाये ,व्यक्ति के आधार विचार लगभग वैसे ही बने रहते हैं । इसे साधारणतया हम संस्कार की संज्ञा देते हैं ।" :1:

संस्कार का अर्थ है शुद्ध या परिष्कृत करना । संस्कारों के द्वारा मानव की आत्मा और मस्तिष्क परिष्कृत होती है जिससे संस्कृति का जन्म होता है । संस्कार ही वे साधन हैं जिनसे आत्मा और मन पवित्र हो जाता है इससे अच्छे बुरे का ज्ञान उत्पन्न हो जाता है । संस्कारों के द्वारा ही ~~मानव~~ मानव पशु से भिन्न है, उसमें सोचने विचारने की क्षमता है ।

रहन-सहन , रीति-रिवाज , कार्य-व्यवहार आदि पर संस्कार अपनी छाप छोड़ देता है । बिना संस्कारों के संस्कृति का निर्माण असम्भव है । संस्कारों का निर्वाह परिवार और समाज के मध्य होता है । संस्कारों का मानव जीवन से अति-

---

:1:- भारतीय ग्रामीण समाज पृष्ठ 29 - धनेश्वरी सिंह परिवार

घनिष्ट सम्बन्ध रखता है । जीवन से लेकर मृत्यु तक संस्कारों का चक्र चलता रहता है जिससे जीवन के सभी लक्ष्यों " धर्म , अर्थ , काम , मोक्ष" की प्राप्ति सम्भव है ।

प्राचीन भारतीयों में सोलह संस्कार प्रचलित रहे हैं जिनका अपना विशिष्ट महत्व है । जब बुन्देल खण्ड की परिधि की परिक्रमा करते यहाँ के जन जीवन में संस्कारों की महत्ता और अनिवार्यता का सूक्ष्म अवलोकन करते हैं तो यह तथ्य प्रकट होता है कि बुन्देल खण्ड में किन्हीं - किन्हीं संस्कारों की विशेष महत्ता है ।वैदिक कालीन संस्कारों से यहाँ का भी जन मानस अपने को पृथक नहीं कर सका किन्तु इस में यदा कदा सूक्ष्म परिवर्तन और परिमार्जन अवश्य हुये हैं । कुछ संस्कार अपूर्व गुप्त रूप से सम्पन्न होते हैं । पुरानी संस्कृति में गर्भाधान एक संस्कार था जिसका अस्तित्व आज भी है किन्तु गर्भाधान की निश्चित तिथियाँ नहीं रख गयी हैं । सहवास के अतिरिक्त सहवास कभी भी सम्पन्न हो सकता है । बुन्देल खण्ड में जिन संस्कारों को प्रत्यक्ष एवं स्पष्ट रूप से देखा जाता है उनका वर्गीकरण निम्नवत है ---

1:- जन्म संस्कार - छटी बरहोम आदि :-

जन्म होते ही बालक या बालिका के गुण नक्षत्रों के अनुसार उसकी जन्म कुण्डली पंडित द्वारा बनवायी जाती है । पंडित गुण दशाओं के अनुसार उसके नाम के प्रथम शब्द को निर्धारित करते हैं और उसका राशि का नाम रख देते हैं । राशि के नाम के अतिरिक्त उसका एक प्रचलित नाम भी रखा जाता है । जन्म के पश्चात छः दिन बाद छटी होती है और लड़कों के जन्म पर दस दिन बाद बरहोम होता है । यह बड़ी धूम धाम से मनाते हैं तथा पुत्र को नये वस्त्र आभूषण " सोने के कड़े , करधनी , सोने की बाँह" गले में गोलाकार एक आभूषण जिसे कहते हैं आगे से पहिनाते हैं ताकि बच्चे को कुदृष्टि आदि न लगे । इस संस्कार में लड़के की बुआ नाचे जाने के साथ "बलना" वस्त्र , मिष्ठान , आभूषण लेकर आती है । लड़के के ननिहाल से भी इसी प्रकार सामान आता है । भोजनादि की व्यवस्था होती है । इस संस्कार नेगोचार आदि नाये जाते हैं ।

2:- पासनी :- अन्नप्राशन -

इस संस्कार में बच्चे को चाँदी की कटोरी में खीर रखकर चाँदी चिलाती है । चूँकि यह संस्कार आठवें या दसवें माह में किया जाता है इस लिये खीर बच्चे की जीभ से चटा दी जाती है तथा वस्त्र रुपये और राशि दान भी नानी के द्वारा दिये जाते हैं । यह संस्कार अधिकतर नानी के मायके वाले ही सम्पन्न करते

है । लड़के की बुआ भी इस संस्कार को कर सकती है ।

3:- मुण्डन :-

यह संस्कार बालक के प्रथम अथवा तीसरे वर्ष में किया जाता है । किसी तीर्थ स्थान विशेष रूप से कालिका देवी आदि के मन्दिर पर मार्ग द्वारा यह संस्कार सम्पन्न होता है । जन्म के समय से जो सिर पर बाल जिसे पैट की तरह कहते हैं उसे मुड़वा दिया जाता है । भोजन आदि भी कराया जाता है । स्त्रियाँ गाती बजाती इस संस्कार को सम्पन्न करती हैं । बताशे या लड्डू भी स्त्रियों को बाटे जाते हैं ।

4:- वर्षगाँठ :-

जब बालक एक वर्ष का हो जाता है तो प्रतिवर्ष या उसकी वर्ष - गाँठ मनाती है । इस संस्कार में बालक को उसकी बाल का टीका किया जाता है। मिठाई खिलाई जाती है । नये वस्त्र पहिनाये जाते हैं । सम्बन्धी तथा पड़ोस की स्त्रियाभी उसे टीका करती हैं और रुपये देती हैं । यह व्यवहार के रूप में किया जाता है जो कि प्रति उत्तर में वापिस कर दिया जाता है । लोग भोज भी स्त्रियाँ गाती हैं । मिठाई भी बाटी जाती है। बच्चे की दीर्घायु की कामना की जाती है ।

5:- कर्णवेधन :-

इस संस्कार में लड़कियों के नाक - कान छेदे जाते हैं ताकि वे आ - भूषण पहिन सके । स्वर्णकार लोगे की बालियाँ पहिना देता है । बुन्देल खण्ड में लड़कों में कर्णवेधन संस्कार समाप्त प्राय हो चुका है । फिर भी परम्परानुसार पहले लड़का के कान तथा नाक छिदा दी जाती है। पहले तो यहाँ लड़के लड़कों के कानअवश्य छिदते थे । इस संस्कार में भी भोज आदि रखे जाते हैं ।

6:- पाटी पूजन :-

5 वर्ष की अवस्था में लोग अपने बच्चे को विद्यालय भेजते हैं उनकी पट्टी का पूजन गुरु के द्वारा किया जाता है तथा बस्ता या स्लेट पर "क" अक्षर का हाथ पकड़ के लिखाया जाता है । मिष्ठान्न वितरण का भी आयोजन होता है ।

7:- जनेऊ :-

यह संस्कार अधिकतर बुन्देल खण्ड में ब्राह्मणों में प्रचलित है । इस -

संस्कार में 8 वर्ष के बाद बालक को मंत्रों के उच्चारण के साथ यज्ञोपवीत "जनेऊ" पहिनाया जाता है । ब्राह्मण भोज आदि का भी प्रावधान है । देवी देवताओं का पूजन भी किया जाता है ।

8 :- विवाह :-

यह संस्कार अनिवार्य माना जाता है। प्रत्येक हिन्दू जाति में विवाह धार्मिक संस्कार के रूप में प्रचलित है । इस संस्कार की आयु अनिश्चित है । भारतों में 11 वर्ष की कन्या 13-14 वर्ष का लड़के का विवाह संस्कार सम्पन्न हो जाता है । हरिजनों तथा पिछड़ी जाति में अल्प आयु में इस संस्कार को सम्पन्न कर लेते हैं । सवर्ण जातियों में आयु की सीमा अधिक है । नगरों में 18-19 वर्ष तक कन्या एवं 22-23 वर्ष तक लड़कों का विवाह किया जाता है । यहाँ ब्राह्मण विवाह का सब से अधिक प्रचार है । यदा कदा गान्धर्व विवाह "प्रेम विवाह" भी सुनने में आ जाता है । विवाह सम्बन्ध अपनी - अपनी जातियों में ही होता है । कोई गोत्र नहीं मिलना चाहिये । लड़के के पिता का गोत्र , मामा का गोत्र तथा बड़ मामा "मामा के मामा" का गोत्र लड़की के पिता मामा और बड़ मामा के गोत्रों से भिन्न होना चाहिये तथा जन्म पत्री भी मिलना चाहिये । इस मिलान को कहते हैं कि अमुक लड़के से अमुक लड़की को 24 गुण मिले । 18 से 28 गुण मिलना अनिवार्य है । उच्च जातियों में विवाह सम्बन्ध होता है ।

विवाह में सुन्देल खण्ड के अनुसार -

1 :- सगाई "बचवारा"

2 :- तिलक "कलदान" या लगुन

3 :- टीका या ज्वारावार

4 :- चढ़ाव "आभूषण कन्या को वर पक्ष की ओर से चढ़ाना"

5 :- भावरें "वर वधू की सात भावरें पड़ना"

6 :- पांव पर खर्च - "वर कन्या के पांव परिवार के पास में हल्दी के पानी से धोना और उपहार देना"

7 :- कुवंर कलेऊ - "वर तथा उसके सहयोगी , साथी , भावरों के साथ कलेवा कराना" नेग देना।

8 :- मुँह छुटाई - विवाह के पूर्व मंडप से कांस की गांठ घर के चारों ओर घुमाने का नेग ।

9 :- बेला - शादि का पुत्र और चावल भर कर घर की कन्या पक्ष की ओर से बेला नेग सहित समर्पित ।

10:- विदा - कन्या की विदाई "मिलनी - सभी बरातियों को पैर छूकर रुपये देना"

11:- गौना - जिन लड़के लड़कियों की आयु कम होती है उनका तीन - चार वर्ष में गौना होता है । सभी लड़की की विदा की जाती है । उसमें भी रुपये वस्त्र आदि दिये जाते हैं । यदि लड़की की आयु परिपक्वता को प्राप्त हो गई है तो उसी समय गौना भी कर दिया जाता है ।

इस संस्कार में बुन्देल खण्ड में घर से कुल देवता की पूजा भी करायी जाती है । साथ - नेवर का भी सम्बन्ध विवाह में जुड़ा रहता है ।

अन्तिम संस्कार :-

जीवन का अन्तिम संस्कार देहावसान माना गया है । इस संस्कार में बुन्देल खण्ड की परम्परा के अनुसार ---

लगभग 12 वर्ष तक के बच्चों को भूमि में दफनाया जाता है या जल प्रवाह कर दिया जाता है । नवजात शिशुओं को तो भूमि में ही दफन कर दिया जाता है । भारत में यह परम्परा कभी जगह नहीं मिलती ।

14-15 वर्ष से वृद्धावस्था तक के लोगों का दाह क्रिया ज्यादा यह सं: - कार किया जाता है ।

अन्य लोगों में जिनमें साधु या माता - मोतीझरा , कुष्ट रोगी , क्षय-रोगी आदि का जल प्रवाह किया जाता है ।

दाह संस्कार के अन्तर्गत गंगा या संगम में अस्थि प्रवाह कर दिया जाता है । दाह क्रिया के तीन दिन घर की शुद्धता, बाल कटवाना, नखार्थ करना, कच्चे वर्तन हटाना आदि होता है । 13वें दिन तेरहवीं होती है कम से कम तेरह ब्राह्मणों को भोजन अवश्य कराया जाता है । दान पुण्य किया जाता है । 1वर्ष के बाद वर्षी के रूप में यह संस्कार का सम्बन्ध रहता है ।

लोक - रीति

लोक रीति का तात्पर्य है ऐसी रीति से है जिसे लोकमत या जन मत प्राप्त हो । अधिकांश लोग कुछ रीतियों का अनुसरण करते हैं और अपने जीवन के उपरान्त उन रीतियों को विरासत के रूप में अपने परिवार के अन्य सदस्यों को सौंप देते हैं । लोक रीतियाँ अत्यधिक महत्व पूर्ण भूमिका का निर्वाह करती हैं । उन की अवहेलना करनेवाला समाज की दृष्टि में उच्च स्थान प्राप्त नहीं कर पाता और समाज में उपहास का पात्र बन जाता है ।

बुन्देल खण्ड में भी लोक रीतियाँ यहाँ के जनमानस से जिनकी दूर हैं जिसे विस्मृत करके बुन्देली समाज में प्रतिष्ठा अर्जित करनाअसम्भव या प्रतीत होता है । मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । जीवन से मृत्यु तक वह समाज में रहता है और उसे सामाजिक नियमों का पालन अवश्यमेव रूप में करना पड़ता है । बुन्देल खण्ड के सम्पूर्ण क्षेत्र का सर्वेक्षण करने पर यहाँ की लोक रीतियों का ज्ञान होता है । लोक रीतियों का विवरण निम्नवत् है -

पारवारिक लोक रीतियाँ :-

क:- बुन्देल खण्ड में प्रचलित पारवारिक लोक रीतियों में "चरण स्पर्श" एक लोक रीति के रूप में प्रचलित है । यहाँ पर कुँवारी लड़कियाँ , माता , पिता , भाई , बड़ी बहनोंआदिकेचरण स्पर्श नहीं करतीं, अपितु कुँवारी कन्याओं को देवी का रूप मानकर घर के सब सदस्य लड़की के पैर छूते हैं । लड़का माता - पिता , भाई बहिन या अन्य सम्बन्धियों "मामा - मामी फोड़कर" सभी के चरण छूता है । विवाह के उपरान्त वह अपनी सास - श्वसुर , साले , साली , सहपत्र आदि के पैर नहीं छूता । "पैर छूना अर्थात" आदर करना बुन्देल खण्ड की प्राचीन लोक रीति रही है । बहुयें ससुराल में सबके पैर छूती हैं ।

ख :- बुन्देल खण्ड में यह लोक रीति अपना काफी महत्व रखती है जिसके अन्तर्गत महावारी सिन्दूर , बिछिया और काँच की चूड़ियाँ पहनती हैं । ये सब सौहाग की निशानी माने जाते हैं । विधवाओं को इनका परित्याग करना पड़ता है अन्यथा कटु आलोचना की पात्र बनती हैं और लोग व्यंग करने लगते हैं ।

ग :- विवाहित लड़की की ससुराल में जाकर पिता के घरकर भोजन ग्रहण न करना , यह रीति सी चलना जोर पकड़ चुकी थी कि जिस गाँव में लड़की का विवाह होता था, उसके उसके गाँव जाने,उस गाँव का पानी तक नहीं पीते थे ।

ख :- बुन्देल खण्ड में स्त्रियों द्वारा घरों में केवल घाँघी के घेराबन्दि - नहीं है । केवल राजकीय अथवा बड़े घरों में लोगे के घेरा पड़ती थी किन्तु अब घेरा देखने में नहीं आता ।

ग :- रोटी - बेटी का सम्बन्ध केवल अपनी ही जाति तथा उपजाति में करना ।

घ :- घर के बुजुर्गों को उनके नाम से सम्बोधित न करना ।

ङ :- किसी की मृत्यु होने पर घर के लोगों के द्वारा शोक मनाना "रोना धोना " आदि व्यक्त करना ।

च :- हिन्दुओं में केवल दाह संस्कार करना या जल प्रवाहिनी देना । इसमें दफनाते नहीं हैं । छ छोटे - छोटे बच्चों को दफना दिया जाता है या जल प्रवाहिनी होती है । किन्तु बच्चों के दफनाने की लोक रीति अन्य स्थानों पर नहीं है । वहाँ केवल छोटे बच्चों का जल प्रवाह किया जाता है । ऐसा कहते हैं । मरघट से लौटने पर मार्ग में या घर में प्रवेश करने से पूर्व अनिवार्य स्नान करना होता है । दाह संस्कार बड़े या छोटे लड़के , भाई या साली द्वारा कराया जाता है ।

सामाजिक तथा धार्मिक लोक रीतियाँ :-

1 :- जूता - चप्पल तथा ताज आदि पहन कर निकलना ।

2 :- मन्दिर में जूते - चप्पलों सहित प्रवेश न करना ।

3 :- पुरोहित, पण्डित, गुरु, माता - पिता के चरण स्पर्श करना ।

4 :- हिन्दुओं द्वारा माँस ग्रहण न करना ।

5 :- गाय, बिल्ली न मारना । मर जाने पर शीघ्र करना ब्राह्मण भोजन कराना ।

6 :- स्त्रियों पर हाथ न उठाना ।

7 :- धार्मिक ग्रन्थों का समादर करना ।

8 :- भगवान की प्रतिमा के समक्ष हाथ जोड़ना या माथा टेककर चरण छूना ।

9 :- बुन्देल खण्ड के इतिहास में स्पष्ट हो जाता है कि यहाँ पुराने समय में कुछ लोकरीतियाँ अपना विशिष्ट प्रभाव जमाये हुये थी जैसे किसी राजा की सवारी निकले तो अन्य व्यक्ति घोड़े आदि पर से उतर जाता था । राजा को ईश्वर का दूसरा रूप मान कर यह लोक रीति प्रचलित हुई थी किन्तु राज्य और रियासतों के समाप्ति के साथ रीति भी समाप्त हो गयी ।

लोक - साहित्य

" लोक साहित्य मानव जीवन का वह स्रोत है , जिसमें जन जीवन पलता - फूलता और अनुभव होता है । लोक धाती सर्वस्व माता पृथ्वी और लोक का व्यक्त रूप मानव हमारे नये जीवन का धारक है, जिसकाअर्थन हमको धरती पुत्रों :किसान : के लोक गीतों में होता है । " :1:

बुन्देलखण्ड के अतीत पर जब सूक्ष्म दृष्टि डाली जाती है तो एक तथ्य उभर कर सामने आता है कि प्रकृति की इस देश पर विशेष कृपा रही है । इस पृथ्वी को स्वर्ण सुन्दरी के समान सृजन करने का श्रेय यहाँ की अविरल प्रवाहित सरिताओं, गगनचुम्बी पर्वतमालाओं सघन वन और मनोरम वृक्षों को रहा है ।

बुन्देलखण्ड के नर - नारियों का जीवन सर्वथा प्रीतिमय रहा है । यहाँ पर " जन्म होरे" की क्रियाएं विसम्मिल कर लोकरे गाती हैं । इसी के अन्तर्गत किसने की नेग आदि के अवसरों पर भिन्न - भिन्न गीत गाये जाते हैं । मुण्डन के गीत, खनेड़ के गीत , विवाह आदि संस्कारों के गीत , बारह-मासे मेरे, कजलियों के गीत देवियों के गीत , होरा - चरखी के गीत , गंगा स्नान गीत , मेले के गीत गाये जाते हैं । लोक गीतों की भाषा ,नित्य व्यवहार किये जाने वाले मुहावरे और सच्चे भाव सुनते ही मन मुग्ध हो जाया करता है ।" :2:

लोक साहित्य में अपनी मौलिकता है, सरसता है, भाषा की मधुरता है जिससे पाठक और श्रोता बरबस ही यहाँ के लोक साहित्य को कण्ठाग्रम कर लेते हैं । " बुन्देली बोली और उसके लोक गीत की शैली इतनी प्रभाव ग्राही है कि उत्तर भारत के सभी अंचलों मे वह ग्राह्य है ।" :3:

बुन्देलखण्ड का लोक साहित्य , देश प्रेम , सामाजिक रूढ़ियों के प्रति विद्रोह, पुरानी परम्परा का निर्वाह , ईश्वर के प्रति गहन-

---

1:- लोक गायनी -पृ०-3- रामचरण हयारण "मित्र"

2:- ईसुरी प्रकाश -पृ०-11-स्व० पं०गौरीशंकर द्विवेदी "शंकर"

3:-संचालक बुन्देलभारती प्रकाशन-श्री सुधि देश मिश्रा :मिर्जी की लोकगायनी:
प्रकाशकीय अंश :

आस्था, आंगारिकता, भावुकता, रागात्मक प्रकृति श्रृंगार एवं वीर रस का आधिक्य, मातृभूमि के प्रति अतीव अनुराग, नारी के प्रति श्रद्धा, कृषक जीवन की महत्ता, धार्मिक आस्था आदि अनेकों गुणों से अभिहित है । "
"लोक भाषा के रूप में बुन्देली का अपना एक निराला है, वह अमिट है ।"
:1: बुन्देलखण्ड का लोक साहित्य भण्डार अत्यधिक समृद्ध है किन्तु साहित्य के संकलन और प्रकाशन के अभाव में उसका प्रचार अधिक नहीं हो सका । इस सम्बन्ध में दिया गया यथार्थकथन इसकी पुष्टि करता है । "ऐसे तो बुन्देलखण्ड मधुर लोक गीतों की खान है और यहां आल्हा के गीत से हिन्दी संसार थोड़ा बहुत परिचित है भी, परन्तु अंकुरी फागें, ददरिया, सावन, अकती, आला के गीत ,भगतें तथा खिलवारी : घास काटते समय जंगल में गाये जाने वाला विशेष गीत : तथा गोटे और दिवारी आदि विभिन्न लोक गीतों का कोई परिचय नहीं । " :2:

इस प्रकार हम सम्पूर्ण बुन्देली लोक संगीतिक्ष को जिन रूपों में पाते हैं उनका नाम करण निम्नवत है ।

1:- फागें :बोली :

2:- दीपावलि (दिवारी)

3:- संस्कारों के गीत :-

1:-सोहरे 2:- बाबरे 3:- गारी : विवाह गीत : आदि

4:- सावनी

5:- गोटे

6:- अंकुरी : माता के गीत : , संगुरिया

7:- भजन : भगतें :

8:- बायन गीत : बुला गीत :

9:- खिलवारी

10:- सेर

11:- अकती गीत

2:- बुन्देलखण्ड की आत्मा-पृ0- 52 -विष्णु दत्त शर्मा

2:- बंसुरी प्रकाश : गोरेलाल शंकर विद्यार्थी द्वारा संकलित पुस्तक की भूमिकायें

धीरेन्द्र सिंह का अभिमत :

12:- मेला - मनोरंजन गीत आदि

13:- टेसू गीत : सुआटा गीत :

14:- बुन्देली छन्द : दोहे, सवैया, छप्पय आदि :

15:- बारह मासे

16:- आल्हा

17:- प्रणय

18:- हास्य गीत

लोक गीतों का सम्बन्ध किसी घटना विशेष से होता है । संस्कारों में पृथक - पृथक प्रकार के गीत गाने का प्रचलन है । बारह महीने गीत गाये जाते हैं । उदाहरणार्थ फागुन में फागे, सावन में कजरी आदि । कुछ गीतों के उदाहरण दृष्टव्य हैं -

फागे

बुन्देली कवि बंसुरी की फागों के विषय में तो बुन्देली कवि स्व० रसिकेन्द्र - जी की यह पंक्ति -

"राग में माधुरी आ गई " बंसुरी ने अनुराग की फागें रचा दीं " पर्याप्त होगी । ' बंसुरी ' की फागों के कुछ अंश प्रस्तुत हैं

का कुछ भओ लालरे मइया, हमे गये को गुइया ,
परबू करे दूध पीबे को, मास के लगे लइया ।

\+ + + + +

मेला छजराए की भारी चलो देखिए प्यारी ,
काल बंसुरी चलब के देखों, कुछ को देखों भारी ।।

\+ + + + +

हमसे दूर तुम्हारी जइरी रजऊ हमें का जइरी
जली चाईयत दोर सामने छोर सोऊ को लइरी ।

\+ + + +

ऐगर बैठ लेओ बहुकाने, काम जनम भर राने ।।

\+ + + +

गोरी तोरे नैन उरझेला, छबीले छैला

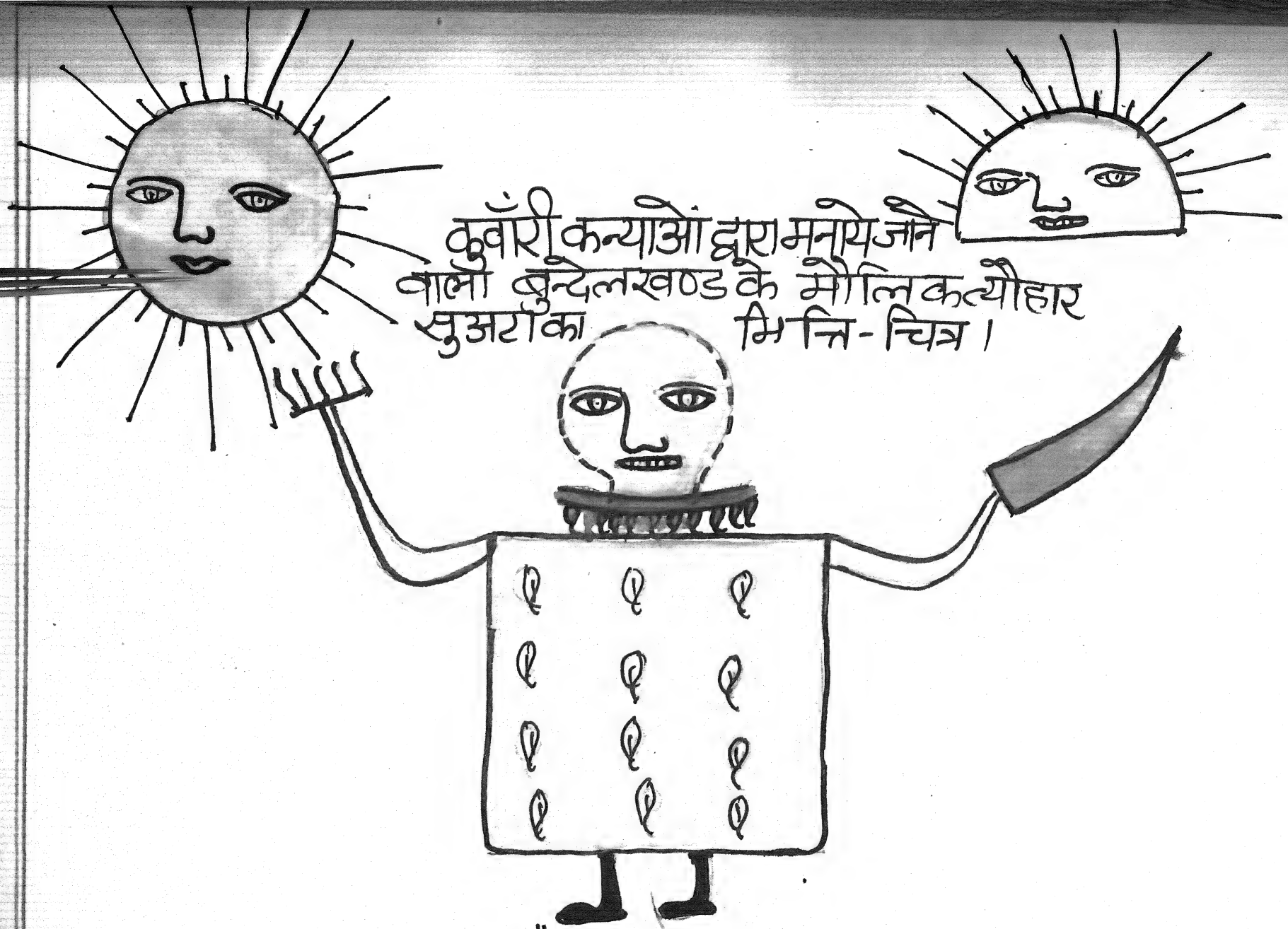

"सुअरा"

भैया-रन के चौट करत हैं, आये रास बुंदेला ।। :1:

बुन्देली - सुआटा गीत :1:

हिमाचल पू की कुंअरि लड़ायती,- नारे सुआटा ।
मोरा बेटी ने रा तेरा ग्वारे, - नारे सुआटा ।
मेरा तेरा ग्वरयो बेटी मो हिमा, - नारे सुआटा ।
दसयें औ करियो सिंगार, - नारे सुआटा ।
खेल लो बेटी खेल लो मार्ई आसुल के राय ।
जब दूर जेहों बेटी लासरें भास न खेलन देय,
रास चिलाये; पीसनों, दिन के गुजर की खेल-नारे सुआटा । :2:

बुन्देली - प्रणयगीत :2:

ईस दे मय ईंदर किवार , सजन'
कंगना बनवा देओ सौने के ।
आरे देवरा ने पूलरी ले दई, कय गढ़ दय सुंदर सुनार
सजन ! कंगना बनवा देओ सौने के ईस..... :3:

बुन्देली - हास्य गीत :3:

लक्ष्मी पू काय गई अम्मा !
तुम बिन भासा बेकार उरे कवि के ये हास लिखित पन्ना ।

\+ + + + + +

सड़क लरका छठ पकरें गरीब की-आई पंखोरी खाने
बेटा मइयाँ चुन गांठ में,लगी मताई मनाने ।। :4:

हरदौल गारी

1:- बंसुरी प्रकाश - संपादकाचार्य -पृ0 पं0 गौरी शंकर द्विवेदी
2:- ' संगम '-पृ0 :2: डा0हरसहाय - वृन्दावन लाल वर्मा
3:- लोक गायनी -पृ0- 24- रामचरण हयारण "मित्र"
4:- बुन्देली लोक -पृ0 2व 43- गंगाप्रसिंह खरे निर्मोक

जहर भोजन में सने लासा खाओ न
प्राण जानके गमाओ न ।
ये सब व्यंजन ये बिन डारे
खासन ये ये प्राण सुन्दारे
मानो - मानो बैन हमारे,
एक तो रहे बैठे भार्य
दूसर बैरन भर्य भोजार्य
जो बिन देत नहीं सहुवार्य
सबे ऐसो सबक लगवाओ न
प्राण जान के गमाओ न । :।:

" विवाह में गायी जाने वाली बुन्देली गारी "

लासा लाका रंगा ये ओ कोसमानी
हम जानी के तुम जानी
तुमार्य अंखिना खटक भरे पानी
हम जानी के तुम जानी । : बारात के समय :

\+ + +

कोट नोंय पर्यंत नोंय सिर नोंय न जायें
गायी आजुल जू को जब नोंय जब सामन आये :अगवानी :

\+ + + +

आज वारी सियाज को चढ़त ये चढ़ाव
रम वारी के भोरारी ।। :चढ़ाव के समय :

\+ + + +

टि० बुन्देली गारी जो गावों में अधिक प्रचलित है
सब कोउ टूटे बखिया चिखिया
दूल्हा की अंखिना टूटे खसमरतिया
गोरी धीरोरखलिया ।

\+ + + +

।:- बरदौल गारी - डर प्रसाद प्रेमी हमीरपुर

अहीरी

1:- मइया आवेंइअर में दो आँचे हो माय
पैले आये नन्देउआ हो माँ
दूजे चिरन हमारहो माँ
मइया आये .....

2:- देवी दयाल भई मइया मठ पे
देवी के मठ पे पीपर को पेड़ौ
देवी छाँव भई मइया मठ पे

\+ + +

नोट - अहीरियों के अन्त में यह पंक्ति जोड़ दी जाती है
माय के भुवन छाँ देवर करना अटल छत्रि के बोलो हो माँ ।

लगुरिया देवी गीत

मारी मारी दे अहेरवा में लात
कि चुनरिया के चारों कोने फट गये हो माँ ।

\+ + + +

सोहर

आज मेरे लिखना पुतना चौकोर चंदना हो लाल
आज मेरे सब जग आये लीजी की नहि आये हो ।

\+ + + +

दादरा

श्रीर धरो राजा मधुर करो
पायेल मोरी बाजे
लाल मोरी जागे अम्मा को थोड़ा लिहाज करो
पायल मोरी बाजे ।

इस प्रकार बुन्देलखण्ड का लोक साहित्य जन मानस को आकाशित करने में कोर कसर नहीं रखता । बुन्देलखण्ड के सरस्वती पुत्रों में अनेकों कवि रत्न हैं, जिनकी सतत साधना का फल लोक साहित्य का विकास -

भण्डार है । वैसे तो इस भूमि पर ग्राम - ग्राम में कवियों ने अपनी बुन्देली वाणी से साहित्य को कुछ न कुछ प्रदान किया है फिर भी महा कवियों में स्व० छालीराम"व्यास " स्व० रसिकेन्द्रजी स्व० सुदेश जी कवि जगनिक, माधुराम माहोर, बंसुरी , डा० आन्दे,हरि रामचरण ब्यास मिश्र, सेवेन्द्रजी , अव-धेश जी निर्मोह जी , श्री सन्तोष दीक्षित आदि अनेको कवियों की रचनाओंने बुन्देलखण्ड के लोक साहित्य में अपना योग दान किया है ।

बुन्देली कहानियां : लोक कथायें :

लोक कथाओं का जन्म लोक सृष्टि के साथ हुआ है । विस्तृत बुन्देलखण्ड की बुन्देली लोक कथाओंकेमाध्यम से इस क्षेत्र की सम्पूर्ण झांकी का दर्शन सहज ही प्राप्त हो जाता है । जहाँ एक ओर वीरता पूर्ण कहानियों से मानव मन उत्तेजित हो उठता है, वहीं दूसरी ओर हास्य और विनोद के परि-वेश में आल्हादित हो जाता है । उसे अपने पूर्वजों की गौरवगाथा एक प्रेरणा देती है । बुन्देलखण्ड के ग्रामीण क्षेत्रों में तो कहानियों का इतना अधिक मह-त्व है कि सन्ध्या होते ही ग्रामीण जन समुदाय चौपाल , चकुतरों खेत - खलि-यानों की मेंडो पर या शीत कालीन रात्रि मेंरात्रि के भोजन से निवृत्त होकर कहानियां सुनने को बैठ जाता है ।

बुन्देलखण्ड में कहानी कहने वाले लम्बी - लम्बी कहानियों के प्रारम्भ में यह कहते सुने जाते हैं - " किस्सा सी छोटी, बातों सी मीठी, छड़ी - छड़ी का खिसराम जाने सीताराम । शक्कर का घोड़ा सक्कर पारे की लगाम घोड़ दौ दरयाव के बीच में चला जाये छमा छम छमा छम छम पार घोड़ा छलपार छाम, न छाम घोड़ा कौं खाय न घोड़ा छाम कौं खाय । चलने के बीच में , दौ लगाई छीच में, लड़ न आये रीति में, तब हर कटोरे बीच में, कट आ गये छल रीति में । इसियां सी सीधी , तकुआ सी टेढ़ी पकला सो कर्रो, पछ्यार सो कोरो, छाप भव कछरी सो छाप बीता होय, छड़े गुन होय । जरिया को काटो, अठारा छाप लांबो आधो छिरिया ने घर लओ । आधे पे अले तीन गांव - एक अजर एक खुजर एक में मानसाइ नखयां । जामें मानस नखयां छमें अले तीन कुम्हार- एक छुँटा, एक लूला एक के छाँधर नखयाँ-

जी के साथ नवमा छने रही तीन बेटियां - एक औंगू एक औगू एक के औठवें नवमा । जी में औठवें नवमा छने पुरायें तीन घाघर - एक अन्धो, एक कन्धो एक पुरोवें नवमा । जी न पुरोव नवमा वाये मेलो तीन बामन - एक अन्धो एक उनरों एक सो भूखें नवमा -

वीरतापूर्ण कहानियां -

बुन्देलखण्ड वीर भूमि रही है । यहां पर आत्मोत्सर्ग करके अपनी मातृभूमि की रक्षा करने वाले वीर युवक - युवतियां , नर - नारी , राजा - रानियों के किस्से सम्पूर्ण भारत में ख्याति प्राप्त कर चुके हैं । उन्हीं की वीरता की कथायें बुन्देलखण्ड की लोक कथाओं के रूप में प्रचलित हैं । कुछ कहानियां तो प्रकाशित हो गयी है कुछ की मानव जिह्वा पर उच्चरित हो कर अपने वीरों की गाथा की पुनरावृत्ति करती है । वीरता पूर्ण कहानियों से बुन्देलखण्ड का नाम लोग बड़ी श्रद्धा के साथ लेते हैं । महारानी लक्ष्मी बाई आल्हा-ऊदल, रानी दुर्गावती, मृगनयनी, महाराज छत्रसाल तथा अनेक राजा-रानी और राजकुमारी तथा राजकुमारियों की कहानियों का बुन्देलखण्ड में अम्बार सा लगा हुआ है । ये कहानियां यहां के जन मानस को प्रेरणा देती है कि उनकी बुन्देली वसुधा में कितने वीरों ने जन्म लिया ।

2:- सामाजिक कहानियां -

सामाजिक कहानियों के अन्तर्गत बुन्देलखण्ड में कई कहानियां प्रचलित है ।"छन्छनवाल "की कथा तो काफी ख्याति प्राप्त कर चुकी है । इस कथा में पति के छनछनवाल के नाम का विरोध करके उसकी पत्नी घर छोड़ कर चली गई । मार्ग में उसने देखा कि लक्ष्मी नाम की कन्या बीन रही है , अनवाल उस डांट रहा है और वह पश्चात्ताप करती हुई अपने पति से कहती है -

" कन्या बीनती लक्ष्मी देखी,
घर छोड़े अनवाल
अमर छते सो मर गये
: सुन : मोने छन्छनवाला "

इसी प्रकार"जाट ने पटवारी को जूते लगाये" । पटवारी अपने को चालाक समझता था उसने यह शर्त रखी कि जो नौकरी छोड़ेगा या छुड़वायेगा उसे 10 जूते लगवाना पड़ेंगे । जाट ने उसे काफी परेशान कर दिया और अन्त में जूते लगाये और सिद्ध कर दिया जो बन जाएन सौं बैठी समझे सो राज को दण्ड और जात की रोटी । कहता तो कहता पर सुनता बड़ा सावधान चाहये । न कहने वाले को दोष न सुनने वाले को दोष, दोष ताकौं जाने किस्सा रचके कही करी ।" (2:

इतनी लम्बी भूमिका का अर्थ यही लगाया जा सकता है कि कहने वाला श्रोताओं का ध्यान पूर्णतया आकर्षित करना चाहता है तथा यह आशा व्यक्त करता है कि श्रोता बीच बीच में हूंकार : हाँ : देता रहे और सावधानी से सुने । कहानी सच भी हो सकती है और काल्पनिक भी किन्तु इसका दायित्व कथा रचयिता को है । कहने वाले को नहीं । ऐसी परम्परा बुन्देलखण्ड के ग्रामों में देखने सुनने को मिलती है । यहाँ की कहानियों के साथ एक जनश्रुति भी सुनने को मिलती है कि जो व्यक्ति दिन में कहानियाँ कहता है उसके मामा मार्ग भूल जाते हैं । सम्भवतया यह बात इसलिये कही जाती है ताकि श्रोता - गण कर समय कहानियाँ सुनानेवाले से आग्रह न कर सके और दैनिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न न हो सके ।

बुन्देलखण्ड में इतनी अधिक लोक कथायें प्रचलित हैं जिनकी सही-सही गणना करना असम्भव है । यहाँ के प्रत्येक गांव में दो चार आदमी ही कई कहानियाँ सुनाते रहते हैं । छोटी - बड़ी सभी कहानियोंका यदि वर्गीकरण किया जाय तो उनका वर्गीकरण निम्नवत होगा -

1:- वीरतापूर्ण कहानियाँ

2:- सामाजिक कहानियाँ

3:- धार्मिक कहानियाँ

4:- ऐतिहासिक कहानियाँ

1:- चिन्तन भूमि की लोक कथायें - श्री चन्द्र अम्बाप्रसाद

2:- चिन्तनभूमि की लोक कथायें-पृ0 "ख" -श्री चन्द्र अम्बाप्रसाद

"आत्माराम एण्ड सन्स प्रकाशन दिल्ली "

5:- हास्य प्रद कहानियाँ

6:- चरित्र प्रधान कहानियाँ

7:- पशुओं की कहानियाँ

8:- विविध कहानियाँ

प्रत्येक व्यक्ति को चाहिये कि वह मात्र अपने को ही बुद्धि-मान न समझे । बुन्देलखण्ड में इस प्रकार की बहुत सी शिक्षा - प्रद कहानियाँ प्रचलित हैं । कुछ कहानियों के माध्यम से सामाजिक समस्याओं का निराकरण भी सम्भव हो सका है ।

3:- धार्मिक कहानियाँ :-

बुन्देलखण्ड में धार्मिक कहानियों का बहुत प्रचलन है । "लाला हरदौल" की धार्मिक कथा तो लोक प्रियता प्राप्त कर चुकी है । यहाँ के निवासी हरदौल को देवता मानकर उनकी पूजा करते हैं । हरदौल , ओर-छा के राजा जुझार सिंह के भाई थे । एक बार , शत्रुओं ने ओरछा - राज्य पर आक्रमण कर दिया था । जिससे जुझार सिंह को कुछ दिनों के लिये सेना सहित ओरछा से बाहर जाना पड़ा । बाहर जाने के पूर्व जुझार ने रानी की देख -भाल के लिये, अपने भाई हरदौल को ओरछा में ही रुक जाने को कहा । भाई की आज्ञा मानकर हरदौल ओरछा में निवास करने लगे । वह भाभी को अपनी माँ के समान समझते थे । एक दिन युद्ध में विजित होकर जुझारसिंह वापिस ओरछा लौटे । किसी के बहकाने पर उन्हें अपनी रानी के चरित्र पर संदेह गया । वह अपनी पत्नी का सम्बन्ध , हरदौल से होने की आशंका करने लगे । उन्होंने अपनी पत्नी से कहा कि वह भोजन में विष मिला कर अपने हाथों से हरदौल को खिलाये, तभी उसे सचरित्र समझा जायेगा । भाभी की मान - मर्यादा बनाये रखने के लिये हरदौल ने विष ग्रहण कर लिया , जिससे उसका प्राणान्त हो गया । एक दिन जुझार की बहिन अपनी पुत्री के विवाह में, अपने भाई से रीति के अनुसार भात माँगने ओरछा आयी । उसे अपने मृतक भाई हरदौल का स्मरण हो आया । वह सजल नेत्रों से अपने नि-र्दोष भाई हरदौल की प्रशंसा करने लगी , जिससे जुझार सिंह रुष्ट हो गया । उसने स्वयं भात देने से मनाकर दिया और बहिन से कहा कि वह हरदौल से जाकर भात माँग ले । रोती - गाती बहिन , हरदौल की समाधि पर जा

पहुँची और भात माँगा तथा विवाह में सम्मिलित होने का निमंत्रण दिया ।

ठीक शादी के दिन हरदौल भात लेकर अपनी बहिन के घर पहुँच गये । अपने भानिज दामाद के आग्रह पर वे प्रकट हुये और कुछ क्षणों में ही अन्तर्ध्यान हो गये । उसी समय से लोग , उन्हें देवता की तरह पूजते आ रहे हैं । विवाह में उन्हें आमन्त्रित भी किया जाता है । इस कथा को ओंस्ति-ख्द भी किया गया है । गीत के कुछ अंश अवलोकनीय हैं ।

भाभी - जहर भोजन में सनो , लाला खाओ न ,
प्राण जतन के गमाओ न ।।

\+ + +

हरदौल - कठलम होत हलाहल खाओ
हमैं तो खाओ मर जाओ
प्राण जायें पर शान नहीं जान दो ,
भोजो इनें जहर खान दो ।। :1:

बुन्देलखण्ड में त्योहारों तथा व्रतों से सम्बन्धित अनेकों धार्मिक कहानियाँ प्रचलित हैं । कार्तिक तथा अधिकमास के एक माह के व्रत में पूजा के समय नित्य स्त्रियों द्वारा कहानियाँ कहीं- सुनीं जाती हैं ।

4:- <u>ऐतिहासिक कहानियाँ</u> :-

बुन्देलखण्ड की ऐतिहासिक कहानियों में हेमकर्ण तथा आल्हा-ऊदल की कहानियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । हेमकर्ण ने राज्य की आशा से देवी को प्रसन्न करने के लिये विन्ध्यवासिनी के सम्मुख अपना सिर काट कर चढ़ा दिया था जिससे विन्ध्यवासिनी देवी प्रसन्न हो गयीं और हेमकर्ण को पुन: जीवित कर दिया तथा राज्य प्राप्त होने का वरदान दे दिया था। आल्हा - ऊदल की रण -कौशल तथा खण्ड काव्य के रूप में प्रचलित है । महा - रानी लक्ष्मी बाई , महारानी दुर्गावती तथा राजकुमारी हेमवती आदि की ऐतिहासिक कथायें भी लोक प्रिय हो चुकी हैं ।

1:- हरदौल गाथा पृ० 2 -हरप्रसाद "प्रेमी"

5:- हास्यप्रद कहानियाँ :-

मनोरंजन की दृष्टि से भी बुन्देलखण्ड में विभिन्न कहानियाँ प्रचलित हैं । भूत -प्रेत, राजा -रानी , सेठ-सेठानी आदि से सम्बन्धित सम्बन्धित विभिन्न कहानियों को सुनकर लोग अपना भरपूर मनोरंजन करते हैं । हास्य - हास्य कथायें भरपूर मनोरंजन करते हैं सुनकर छोटे बच्चे बड़े आह्लादित होते हैं । बच्चों को उनकी नानी और दादी अधिकतर हास्य प्रद कहानियाँ सुनाया करती हैं । गाँवों में सन्ध्या के समय चौपालों पर जमघट लग जाता है । कथक्कड़,लोगों को विभिन्न विषयक कहानियाँ सुनाया करता है । सास - बहू, देवर - भौजी, पति - पत्नी, सेठ - सिठानी आदि से सम्बन्धित कहानियों को सुनकर लोग आत्म विभोर हो उठते हैं । " कोरी की सगी", "ठन्ठनपाल" और "टिड्डा महाराज" की कहानियाँ लोक प्रियता प्राप्त कर चुकी हैं ।

6:- चरित्र प्रधान कहानियाँ :-

बुन्देलखण्ड में चरित्र - प्रधान कहानियाँ भी प्रचलित हैं । राजा - रानी से लेकर झोपड़ी में रहने वाले गरीब व्यक्ति तक की जीवन-झाँकी इन कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत की जाती है । उरई के "माहिल - मामा" की कहानी अत्यन्त लोक प्रियता प्राप्त कर चुकी है ।

7:- विविध कहानियाँ :-

बुन्देलखण्ड में प्रचलित विविध कहानियों में, पशु -पक्षियों तथा पेड़ों में पूर्व सृष्टा खेलते समय अविवाहित लड़कियों द्वारा कही - सुनी जाने वाली "ब "नौरता" की कथा अति उल्लेखनीय है ।

कहावतें

बुन्देलखण्ड के जन - जीवन में कहावतों का विशेष महत्व है । ये मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपना अस्तित्व जमाये रहती हैं । कहावतों का सम्बन्ध व्यक्ति के , जन्म से मृत्यु पर्यन्त रहता है । कृषकों के जीवन में भी कहावतों का विशिष्ट स्थान है । ये अनुभवी मुख की तरह , उनका सब

मार्गदर्शन करती हैं । कहावतें की किसानों को जलवृष्टि की पूर्व सूचना प्रदान करती हैं । और अच्छी नस्ल के पशुओं की पहचान कराती हैं । कहावतें ज्ञान वर्धन का कार्य करती हैं । तथा साहित्य कार की भाषा को लालित्य भी प्रदान करती हैं । व्यापारी वर्ग जहाँ कहावतों से लाभान्वित होता है वहीं राजनीतिज्ञ को भी अपनी समस्याओं के निराकरण में सहयोग मिलता है । ये व्यंग का भी माध्यम बनती हैं तथा इनके माध्यम से उपदेश और आशीर्वाद भी प्रदानकिया जाता है ।

बुन्देलखण्ड में कहावतों का एक विशाल कोष है । अन्य भाषाओं में भी यहाँ की कुछ कहावतें घुल - मिल गई हैं । महाराजा छत्रसाल के समय की प्रचलित कहावत अवलोकनीय है -

" साल तो भोपाल, और सब सलैया
गढ़ तो चित्रकोट गढ़, और सब गढ़ैया,
राजा तो छत्रसाल , और सब रजैया,
रानी तो कमलापत और सब रनैया ।।" :1:

1:- कृषि सम्बन्धी कहावतें :-

कृषि सम्बन्धी कहावतों के अन्तर्गत, बुन्देलखण्ड में घाघ , गिरधर और भड्डरी के नाम, उल्लेखनीय हैं । प्रमुख कहावतें निम्नवत् हैं -

1:- खेती खसम खेती ।

2:- बरसे न मघा, भरे न खेत,
परसे न भरता, भरे न पेट ।

3 3:- छोटा मुख और मोटा काम,
यही जेल की है पहिचान ।

4:- करिया बदरा बरजावै,
भूरे बदरा, पानी लावै ।

5:- करम हीन खेती करे,
जेल भरे या सूखा परे ।

1:-हिन्दुस्तानी कहावत कोष प्र पृ0180-स्व0 एम0डब्लू फेलमे :सम्पादक- कृष्णानन्द :

6:- उत्तम खेती, मध्यम बान,
निकृष्ट चाकरी, भीख निदान ।

7:- सावन छोड़ी, भादों गाय, माघ मांस में भैंस बिकाय,
घी से जाये या छत्तमें छाय ।

8:- शुक्रवार की बादली, रवे शनीचर छाय ,
घेला बोले भड्डरी, बिन बरसे न जाय ।

9:- से छछोपल्ला , बीमन लगी खिल्ला ।

10:- बैल बछिया, सांसे अछिया ।

11:- चढ़ते बरसे आड़ी, उतरत बरसे बन्ना,
किसना राजा ऊँड़ से, रवे अनन्द मङ्गल ।

12:- उलटे जो बादर चढ़े, बिछवा खड़ी नहाय,
छाछ कहे सुन भड्डरी, खड़ बरसे, खड़ जाये ।

13:- कांटा खुरा करील का, और खारी का छाम,
लोन खुरी है चून की, और सांसे का काम

14:- छोटे सींग और छोटी पूंछ,
घेला खड़ी मो से पूंछ ।

15:- पछुआ चले, खेती पले ।

16:- खिसकी गरमें, उत्तोड़ बरसे ।

2:- ग्रामीण कहावतें :-

ग्रामांचलों में प्रचलित कहावतें निम्नवत् हैं -

1:- सोने का गहुआ, पीतर की थैली ।

2:- सूनी घर, भिड़न को राज ।

3:- सूत न कपास, कोरी से लट्ठम - लट्ठा ।

4:- बाप बापन मे खाये न धान,
बांस निचोरे निकरे प्रान ।

5:- माछ - माछ की बारात, टपारो को छरे ।

6:- मन - मन भावे, मुंड़ी हिलावे ।

7:- तेली को तेल जरे, और मसालची के चौंध लगे ।

3:- नीति सम्बन्धी कहावतें :-

बुन्देलखण्ड में प्रचलित नीति सम्बन्धी कहावतें निम्नवत् हैं -

1:- मार के भग जाये और छा के पर रये ।

2:- जाको छाती न एक बार, उन सबसे रखयो हुसयार ।

3:- लाखन साग न भावो दही,
बखीर मीन न कातिक मही ।

4:- रये निरोगी, जो कम खाये ।
बिगरे काम, न जो गम खाये ।

5:- कपड़ा पहिनो तीन बार,
बुध, बृहस्पति, शुक्रवार ।

6:- दोनों बेर हमें मिले, तीन बेर जो खाये ,
सदा निरोगी जो रये, जो प्रातः उठ जाये ।

7:- जाको जोन सुभाव, जायेन जी से
नीम न मीठो होय, खाओ गुर - घी से ।

8:- तिरिया चरित जाने न कोई, खसम मार के सती होई ।

9:- जैसी बोये क्यार, पीछ तब तैसी दीखे ।

10:- प्रीत न जाने जात कुजात, नींद न जाने टूटी खाट,
भूंख न जाने छूंछो भात, प्यास न जाने झोंकी छाट ।

4:- व्यापार सम्बन्धी कहावतें :-

व्यापार से सम्बन्धित, बुन्देली कहावतें निम्नवत् हैं -

1:- मंगलवारी घरे दिवारी, हंसे किसान, रोय व्यापारी ।

2:- पूरो तोल , चाहे मंहगो मोल ।

3:- बैठो बनिया बाटई तोले ।

4:- बरसों राम कड़ा - कड़िया,
खाये किसान मरे बनिया ।

5:- शगुन - अपशगुन सम्बन्धी कहावतें :-

सम्बंधित कहावतें निम्नवत् हैं-

1:- एक नाक को छींका, जहां जाये तहां नींका ।

8:- तेरी मइया, धरम रखवारी ।

9:- मोरे पीछे पिसनारी, मैं राउर पीसन जाईं ।

10:- आ तेल मोय मार ।

11:- लोक कये लंक की, रमधन्ना कये मक की ।

12:- गरीब की सुगार्इ, सब की भौजार्इ ।

13:- खार्इ भली कि मार्इ ।

14:- माल-पूल के जाड़े-मोटे मल्ल उरे उधारे ।

15:- कहला केकोसे, कड़ ढोर नरस ।

16:- नेक पढ़ो सो घर से गओ,

मुलक पढ़ो सो घर से गओ ।

17:- कहानी की छूटी गइ, घास की मीठी गइ,

छड़ी- छड़ी को पिसराम, को जाने सीता राम ।

18:- छूकन सतुआ लाम रये ।

19:- काम के न दन्द के अढ़ार्इ सेर अन्न के ।

20:- गंगा सपरे पिसोरे का ।

21:- देवें गइ सो लेवें का ।

22:- ले पचरिया, दे पचरिया ।

23:- लीपीकपोती पोतरिया, आग पिराजो लोतरिया ।

24:- दुहेरगइया की दो लातें सहने परती ।

25:- आग लगा पानी को दोरस ।

26:- गुर खाये गुलगुलन को परहेज करें ।

27:- गुर दो सो, गो जा कर डारे, लेते कनक उधार,

का करें पिजर्इ नइया ।

28:- पाँव खुटिया, पेट को रजो मटिया ।

29:- भर भाँतरम में कन्धा डंगासी ।

30:- डंगल मे न घोरा भूखल में ।

31:- गंगू के गढ़ भर्इ, सेर-सेर डंगल गर्इ ।

32:- कुआ की माटी, कुअर्इ में लगल ।

2:- छींकत उठये, छींकत परिये, छींकत पर घर कबहुं न जइये ।

3:- नारि सुहागिन, जल भर ल्याये,

बड़ी मछरिया सम्मुख आये ।

4:- परवा गमन न कीजिये, जो सोने की होय ।

6:- रामचरित मानस की कहावतें :-

बुन्देलखण्ड में राम चरितमानस की चौपाइयें भी कहावतों के रूप में प्रचलित हैं । जो अवलोकनीय है -

1:- होई है वही जो राम रचि राखा ।

2:- जो करता करि हो मन भावी,

राम कृपा कछु दुर्लभ नाही ।

3:- का वर्षा जब कृषि सुखानी ।

4:- पराधीन सपनेहु सुख नाही ।

5:- पर उपदेश कुशल बहुतेरे ।

6:- धीरज धरम मित्र अरु नारी ,

आपत काल परखिये चारी ।

8:- तुलसी गाय -अकाज के देत काट में पाँय ।

8:- जेहि विधि राखे राम, तेहि विधि रहिये ।

7:- अन्य कहावतें :-

बुन्देलखण्ड क्षेत्र तथा व्यक्ति से सम्बन्धित कुछ प्रचलित कहावतें निम्नवत् हैं -

1:- आँखी गले की फाँसी

दतिया गले का हार

ललितपुर न छोड़ियो,

जौं लौं मिले उधार ।

2:- सौ अंडी एक बुन्देली झण्डी ।

3:- उरई के माहिल ।

4:- देखो तेरी कालपी आवन पूरा उजाड़ ।

---------- + ----------

भारतीय संस्कृति में बुन्देलखण्ड की संस्कृति का स्थान

" विन्ध्य भूमि की उपत्यकाओं में अवस्थित, ' उत्तर जम्बल-उत्तर नर्मदा, उत्तर जमुना उत्तर टौंस ' की सीमाओं में घिरा हुआ, वेत्रावमुक्ति, वेदि, बुन्देलखण्ड और विन्ध्यभूमि आदि संज्ञाओं से अभिहित, यह प्रचण्ड लेखिनी और तलवार के कौशल में समस्त भारत में ही नहीं अपितु विश्व में अपना विशिष्टतम स्थान रखता है । " :1:

आदि काल से ही भारतीय संस्कृति उदार और विशाल रही है । उसमें, नव जीवन प्रदान करने की पूर्ण क्षमता विद्यमान है । आत्मिक संस्कार में उसकी , अपनी एक विशिष्ट परम्परा है । एक समय था , जबकि विश्व के अन्य देश बर्बरता के पाश में आबद्ध थे, उस समय भारतीय संस्कृति का प्रचण्ड प्रभाकर , प्रखर प्रखरता लिये हुये, सम्पूर्ण विश्व को आलोकित कर रहा था । प्राचीनकाल से भारतीयों की सामाजिक और राजनीतिक वास्तविकतायें विश्व व्यापिनी रही हैं । उनमें सदा विश्व कल्याण की भावना निहित रही है और सदैव विश्व उत्थान के लिये साधनारत रहे हैं ।

भारतीय संस्कृति में धार्मिक सहिष्णुता का विशिष्ट गुण भी विद्यमान रहा है । आस्तिक और नास्तिक दोनों प्रवृत्तियों के लोग इस की गौरव - गरिमा को स्वीकार करते आये हैं । भारतीय संस्कृति में कल्याणमयी , कोमल और उदात्त भावनाओं का संचार आदिकाल से होता चला आ रहा है । महान आदर्शों से, अपने कलेवर को अलंकृत करने वाली भारतीय संस्कृति ने विश्व को समस्त संस्कृतियों का मार्ग दर्शन किया है। मालवीय जी की विचारधारा अवलोकनीय है -

"भारतीय संस्कृति की अद्वितीय विशेषता यह है कि , इसके तत्व - धर्म, दर्शन, कला और साहित्य आज भी निर्जीव में जीवन फूंक देने की असीम शक्ति संजोये हैं । " :2:

1:- बुन्देलखण्ड का काव्य वैभव - पृ० - 3:66 : अभिनव ज्योति : - मधुकान्त त्रिवेदी ।

2:- भारतीय संस्कृति की प्रमुख धारायें-पृ०-22-श्री मालवीय एवं त्रिपाठी ।

महान, आदर्शमयी और कल्याण कारी, भारतीय संस्कृति के भुवन में तथा उसके भाग्यखण्ड को उच्च स्तरीय बनाने में क्षेत्रीय संस्कृतियों का विशेष योगदान रहा है । बुन्देलखण्ड की संस्कृति का भारतीय संस्कृति में विशिष्ट स्थान है । सांस्कृतिक दृष्टि से बुन्देलखण्ड एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है । ऐतिहासिक युग के श्रीगणेश होने पर राष्ट्रीय इतिहास की पुनीत धाराओं के अविरल प्रवाह में बुन्देलखण्ड की संस्कृति ने अपनी सामर्थ्य से कहीं अधिक योगदान दिया । भारतीय संस्कृति के सभी क्षेत्रों पर यहाँ की संस्कृति ने अपनी अमिट छाप छोड़ दी है ।

साहित्य, भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि है और साहित्य भुवन में बुन्देलखण्ड का अद्वितीय स्थान रहा है । इस क्षेत्र का साहित्यिक योग सबसे अधिक है । महर्षि वेदव्यास , आदि कवि वाल्मीकि, आल्हाखण्ड के रचयिता जगनिक, भारतीय संस्कृति के उपासक गोस्वामी तुलसीदास, केशव, राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त आदि महान कवियों ने अपने साहित्य निधि सौंप कर भारतीय संस्कृति की गोद सदा के लिये हरी- भरी कर दी ।

बुन्देलखण्ड , आदिकाल से वीरों की जन्म भूमि रहा है । मातृ भूमि की रक्षा करने और देश की अखण्डता बनाये रखने के लिये यहाँ के वीरों ने प्राणोत्सर्ग किये । राममोहन शर्मा के उद्गार अवलोकनीय हैं -

बुन्देली भूमि को प्रणाम,
कण-कण में कीर्ति लिखी, कण-कण अंगारा,
वीरों ने धरती को, खून से संवारा,
दुश्मन से दो-दो हाथ, किये शान से ,
बुन्देली वीर लड़े, पूरे अरमान से,
राष्ट्र के स्वाभिमान में, युग के निर्माण में,
अर्पित है तन-मन-धन प्राण
बुन्देली भूमि को प्रणाम ।। :1:

1:- अभि नवज्योति - : रजत जयन्ती विशेषांक : - पृ०- 6:12 -
- राममोहन शर्मा "मोहन"

बुन्देलखण्ड दुर्गों का देश है । यहाँ की वीर वसुन्धरा, आज भी यहाँ के महापुरुषों और स्थानी लोगों के अतीत की गौरव - गाथा का स्मरण दिला देती है । स्वतंत्रता संग्राम की प्रथम दीप - शिखा, महारानी लक्ष्मीबाई, महाराज छत्रसाल, वीर आल्हा- ऊदल आदि अनेक वीर पुरुषों ने प्राणों का बलिदान करके भारतीय संस्कृति को गौरवान्वित किया है।

संगीत और नृत्यकला के साथ स्थापत्य कला क्षेत्र में भी बुन्देलखण्ड की संस्कृति मेनन्दीसी|अशोक के शिलालेख बरिया के समीप, सेंवड़े के सन्यस्थलों में भी प्राप्त हुआ था । यहाँ मन्दिरों, भवनों तथा तीर्थस्थलों का बाहुल्य है । खजुराहो की मूक प्रतिमायें न होती तो स्थापत्य कला के क्षेत्र में भारतीय संस्कृति इतनी समृद्ध-शाली न बन पाती । यह निर्विवाद सत्य है कि बुन्देलखण्ड की संस्कृति ने भारतीय संस्कृति को इतना विशाल, उदार और समृद्ध बनाने में पूर्ण योगदान दिया है । निःसन्देह बुन्देलखण्ड की संस्कृति का भारतीय संस्कृति में विशिष्ट स्थान है । भारतीय संस्कृति यदि विशाल काया है तो बुन्देलखण्ड की संस्कृति, उसकी आत्मा है ।

---------- + ----------

द्वितीय अध्याय

"बुन्देलखण्ड की भौगोलिक सीमायें एवं विभिन्न परिस्थितियाँ"

बुन्देलखण्ड की भौगोलिक सीमा - प्राचीन तथा अर्वाचीन

बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत राज्य एवं उनका संक्षिप्त परिचय

बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास

बुन्देलखण्ड की भौगोलिक परिस्थितियाँ

बुन्देलखण्ड की ऐतिहासिक परिस्थितियाँ

बुन्देलखण्ड की सामाजिक परिस्थितियाँ

बुन्देलखण्ड की राजनीतिक परिस्थितियाँ

बुन्देलखण्ड की आर्थिक परिस्थितियाँ

बुन्देलखण्ड की साहित्यिक परिस्थितियाँ

द्वितीय - अध्याय

"बुन्देलखण्ड की भौगोलिक सीमायें एवं विभिन्न परिस्थितियाँ"

1:-:क: बुन्देलखण्ड की भौगोलिक सीमा-प्राचीन तथा अर्वाचीन :-

प्राचीन काल में किसी स्थान की भौगोलिक सीमा का निर्धारण नदियों या पर्वतों के माध्यम से किया जाता था । बुन्देलखण्ड की सीमा निर्धारित करने में भी इसी पद्धति को अपनाया गया । बुन्देलखण्ड की प्राचीन भौगोलिक सीमा का निर्धारण मुंशी अजमेरी ने अपनी अग्रो - लिखित पंक्तियों द्वारा किया है , जो अवलोकनीय है ।

"यमुना उत्तर और नर्मदा दक्षिण अंचल,
पूरब में है टोंस, पश्चिमांचल में चम्बल ।।"

भारतके मध्य भाग में नर्मदा के उत्तर एवं यमुना के दक्षिण में विन्ध्याचल पर्वत श्रेणियों से समकीर्ण तथा यमुना की सहायक नदियों द्वारा सिंचित क्षेत्र को बुन्देलखण्ड कहलाता है । श्री निवास बालाजी हार्डीकर ने सीमा का - निर्धारण निम्नवत् किया है ।

"बुन्देलखण्ड देश के प्रायः बीच में स्थित है। यह उत्तर में यमुना , दक्षिण में मध्य प्रदेश और मालवा, पूर्व में कोल खण्ड तथा पश्चिम में ग्वालियर राज्य से घिरा हुआ है ।" :1:

दीवान प्रतिपाल सिंह ने बुन्देलखण्ड की स्थिति को मानचित्र में निम्न - रूप से दर्शाया है।2

मानचित्र पर बुन्देलखण्ड की स्थिति :-

23 से 45' एवं 26' - 50' उत्तरी तथा 77' - 32' और 82' से पूर्वीय रेखाओं के मध्य बुन्देलखण्ड की स्थिति मानी है ।

बुन्देलखण्ड में कई राजाओं ने राज्य किया है । उनका क्षेत्र कभी विस्तृत हुआ तो कभी कम हो गया जिससे भौगोलिक सीमा में भी-

---

1:- रानी लक्ष्मीबाई - पृ0 7 - श्री निवास बालाजी हार्डीकर
2: बुन्देलखण्ड का इतिहास भाग 1 - पृ.सं. 6 - दीवान प्रतिपाल सिंह

बुन्देलखण्ड

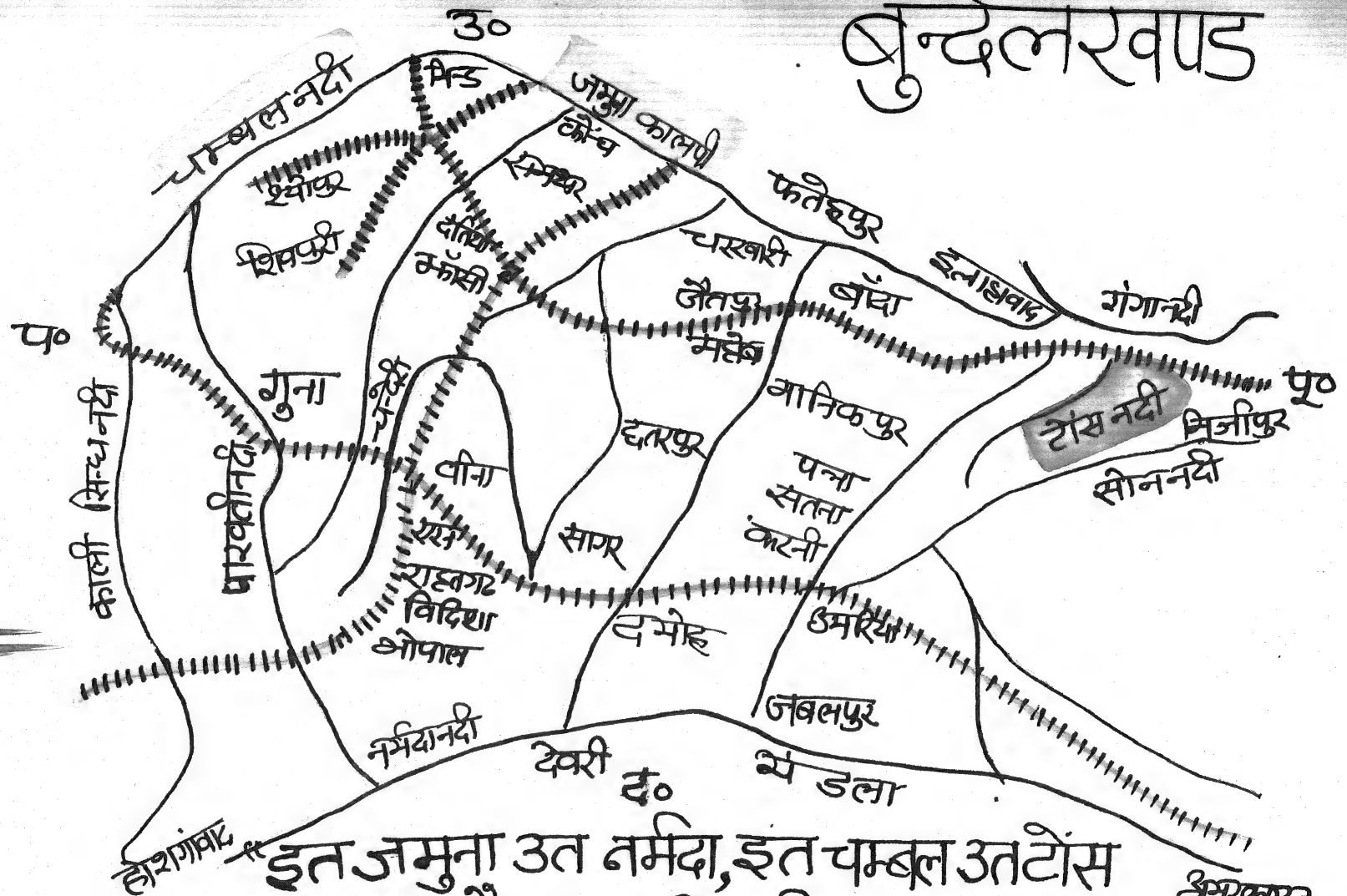

"इत जमुना उत नर्मदा, इत चम्बल उत टोंस
छत्रसाल सौं लरन की रही न काहू होंस"

"बुन्देलखण्ड की भौगोलिक सीमा निर्धारण मानचित्र"

बुन्देलखण्ड

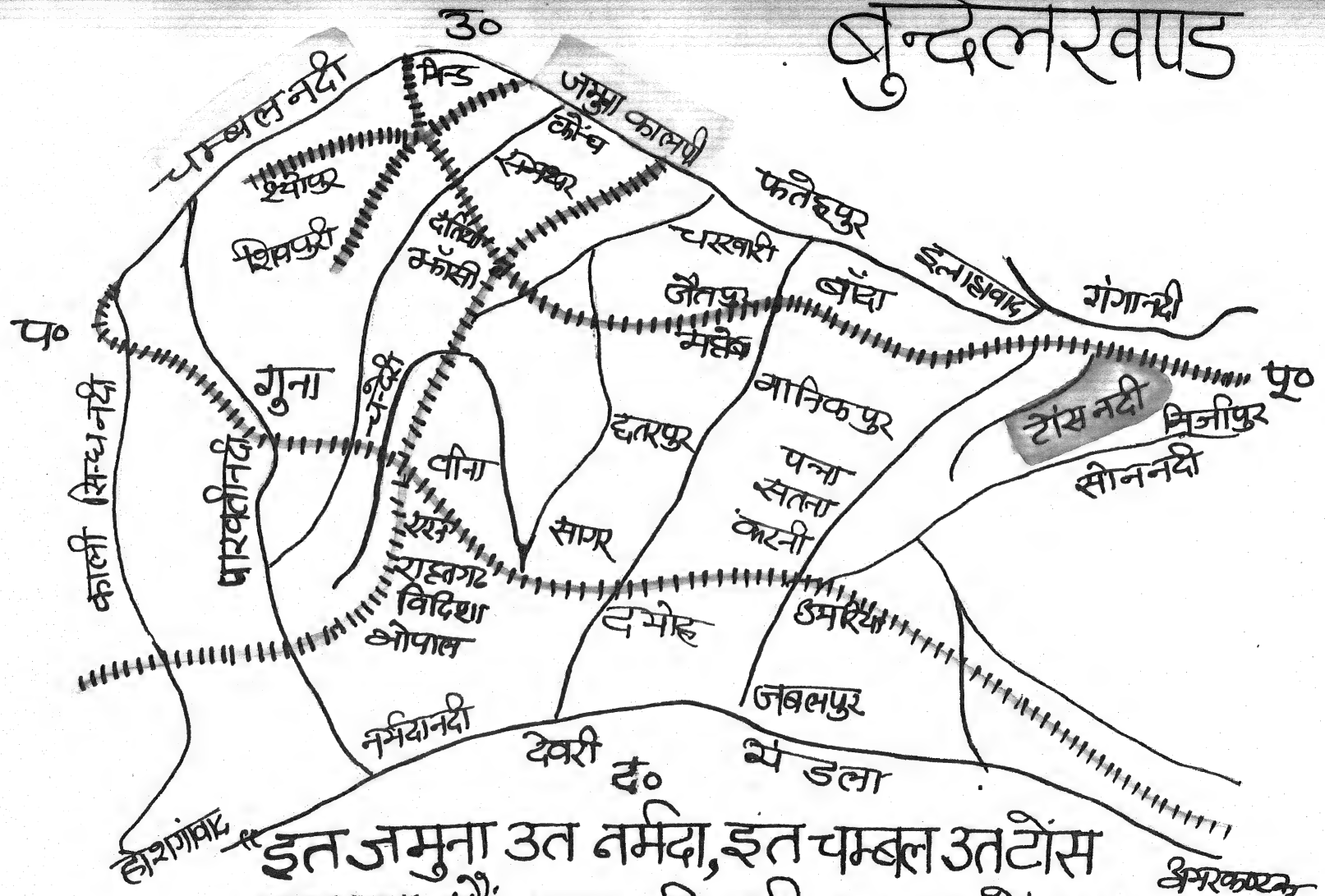

"इत जमुना उत नर्मदा, इत चम्बल उत टोंस
छत्रसाल सौं लरन की रही न काहू होंस"

"बुन्देलखण्ड की भौगोलिक सीमा निर्धारण मानचित्र"

सदमुकूल परिवर्तन आता रहा । अद्यतीय सीमा, प्राचीन काल की सीमा से बड़ी - बड़ी । बुन्देलखण्ड में सं० 1705 से 1788 तक छत्रसाल ने अपना साम्राज्य स्थापित किया । उनके समय में बुन्देलखण्ड की भौगोलिक सीमा का निर्धारण, अधोलिखित पंक्तियों के माध्यम से स्पष्ट समझा जा सकता है ।

"इत जमुना उत नर्मदा, इत चम्बल उत टौंस ,
छत्रसाल सों लरन की, रही न काहू हौंस ।"

बुन्देलखण्ड की भौगोलिक सीमा के सम्बन्ध में गोरेलाल तिवारी की एक कुण्डलिया अतिप्रचलित है जो निम्नवत्है ।

"बेतवा बही है औरछा
गढ़ा हुसंगाबाद,
लगभग है लागते
बपिया रेवा पार ।।"

बुन्देलखण्ड की सीमा निर्धारण के सम्बन्ध में दीवान प्रतिपाल सिंह ने कविता के माध्यम से अपने विचार प्रस्तुत किये हैं , जो अवलोकनीय है ।

"उत्तर सम्पतल भूमि, गंग जमुना सु सहित है
प्राची दिस केमूर, सोम, काशी सुसहित है ।
दक्षिण रेवा विन्ध्याचल तम शीतल कारी
पश्चिम में चम्बल चंचल सोहति मनहारी ,
तिनि बीच राजे गिर,वन,जल,सरिता सहित मनोहर
कीर्ति रचत बुन्देलखण्ड की बुन्देलखण्ड पर ।" :1:

1:- :ख : -बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत राज्य एवं उनका संक्षिप्त-परिचय

बुन्देलखण्ड को कई नामों से सम्बोधित किया जाता रहा है । सर्व प्रथम इसे जर्जन के नाम से सम्बोधित किया गया। तदोपरान्त जज्झ भेदि,जेजाकभुक्ति, बुन्देलि, बुन्देल,खण्ड ,विन्ध्येलखण्ड और वर्तमान समय में यह क्षेत्र "बुन्देलखण्ड" के नाम से पुकारा जाता है । यहाँ अनेकों राजाओं ने राज्य किया । सुविधानुसार उन्होंने राजधानियों में भी परिवर्तन किया ।

1:- बुन्देलखण्ड का इतिहास भाग -1 पृ० 6- दीवान प्रतिपाल सिंह

परिस्थितियोंका राज्य की सीमायें भी घटी - बढ़ी ।

चन्देल वंश के शासनकाल के पूर्व बुद्ध के समय सम्पूर्ण भारत सोलह राज्योंमें विभक्तथा । उन राज्यों में से तीन राज्य बुन्देलखण्ड के भू-भाग थे जो निम्नवत् हैं ।

1:- कन्नौज का पांचाल राज्य, जो ग्वालियर सेकेन तक फैला हुआ था ।

2:- कौशाम्बी का वत्स राज्य, जो केन से पूर्वी भाग में था तथा चेदि का कलचुरियों का राज्य और भी पूर्व की ओर था ।

प्राचीन काल में बुन्देलखण्ड के भूभागों में अनेक प्रान्त सम्मिलित थे । बुन्देलखण्ड में विशेष रूप से नौ राज्य थे जो निम्नवत् हैं ।

1:- बुन्देलखण्ड के नौ राज्य :-

1:- ओरछा 2:-दतिया 3:- समथर 4:- पन्ना 5:- चरखारी 6:- अजयगढ़ 7:- छिबारा 8:-बावनी तथा 9:- छतरपुर ।

इन राज्यों के अतिरिक्त बुन्देलखण्ड क्षेत्र में जागीरें, परगने, तहसीलें, जिले और अन्य प्रांतीय राज्यों के कुछ भाग सम्मिलित थे, जो निम्नवत् हैं ।

1:- जागीरें :-

सरीला, दुरवई, चिरगांव, टोडी - फतेहपुर , कोटरा, जिगनी, लुगासी, बीहट, तेरी, अलीपुरा, गोरिहार, गरौली, खनियाधाना, मेनुआ; सिर्द और चिलहरी ।

2:- परगना :-

आलमपुर : कन्धौर :

3:- तहसीलें :-

रीवा की 6: तहसीलें सम्मिलित थी । उपर, रघुराज - नगर, त्योंथर, मउगंज, त्योंटरी, बाघवांजं।

4:- बघेलखण्ड के राज्य :-

बरौधा, नागौद और मैहर ।

5:- बुन्देलखण्ड की जागीरें :-

सुहावल, कोठी, जसो, बानपुर, पहरा, सरास, मैलोंजा और कामता रजोला ।

6:- ग्वालियर सहित पाँच जिले :-

क:- ग्वालियर, भिण्ड, भाण्डेर, लहरा तथा मेहगाँव ।

ख:- ग्वालियर का दो तिहाई भाग : गिर्द, मालवा तथा पिछोर, कोला-रस, सीपरी, करेरा, पिछोर :

ग:- धंधाग्रह : जहरंग गढ़, धंधाग्रह, कुंवर गंज तथा मुंगावली ।

घ:- भिलसा :- भिलसा, बसोदा

च:- भोपाल की दो निजामतें :- निजामत भूपाल : उत्तर : : भोपाल नगर, सलिमसादक :

7:- संयुक्त प्रान्त के पाँच जिले :-

झाँसी, जालौन, बाँदा , हमीरपुर और ललितपुर ।

8:- मध्य प्रदेश के तीन जिले :-

सागर, दमोह तथा जबलपुर ।

बुन्देलखण्ड के इस विशाल राजनीतिक क्षेत्र को कम किया गया । राज्य पुन-र्गठन-आयोग ने राजनीतिक आधार पर बुन्देलखण्ड की राजनीतिक सीमा और राज्यों के अन्तर्गत केवल मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के भूभागों को लिया जो निम्नवत् हैं।

अ:- मध्य प्रदेश :-

टीकमगढ़, पन्ना, छतरपुर, सागर, दमोह, मुरैना, नर-सिंहपुर, भिण्ड, दतिया, ग्वालियर, शिवपुरी, गुना, विदिशा, राजगढ़ तथा होशंगाबाद ।

ब:- उत्तर प्रदेश :-

झाँसी, जालौन, बाँदा, हमीरपुर तथा ललितपुर ।

शासन का प्रमुख कार्यस्थल राज्य माना गया है । राज्यों के अधीन रियासतों की स्थापना कर दी जाती थी । बिना राज्य की अनुमति के रियासतें कोई नीति सम्बन्धी कार्य नहीं करती थी । रियासतों की देखभाल और राज्य की सुरक्षा की दृष्टि सामन्तों को राज्य की ओर से नियुक्त कर दिया जाता था। बुन्देलखण्ड के राज्यों और रियासतों में इसी परम्परा का पालन होता था । इस क्षेत्र में नौ राज्य थे , जिनकी देखभाल का दायित्व राजाओं के ऊपर था । प्रजापालन, सुरक्षा, शान्ति,न्याय आदि कार्य राज्य से संचालित होते थे । अधिक सेना धन का बाहुल्य और राज्य का क्षेत्र फल यह प्रकट करता था ,कि कौन सा राज्य बड़ा है और कौन सा छोटा । बुन्देलखण्ड में ओरछा, दतिया, समथर, पन्ना, चरखारी, अजयगढ़, छिमाचर, बघौना तथा छतरपुर, इन नौ राज्यों का उल्लेख मिलता है । इन राज्यों में किलों, भवनों और महलों का निर्माण करा दिया गया था। युद्ध संचालन किलों के अन्दर से होता था । सुरक्षा की दृष्टि से मजबूत किलों का निर्माण किया गया । किलों में सैनिकों का आवास, रसद तथा युद्ध सामग्री सुरक्षित रखी जाती थी । ये राज्य ऐसे स्थानों पर स्थित थे जहां सुगमता से शत्रु आक्रमण नहीं कर पाता था । जलवायु की दृष्टि से भी यह स्थान उत्तम समझे जाते थे ।

वर्तमान समय में इन राज्य स्थलों को जनपदों तथा तहसीलों और कस्बों का रूप प्रदान कर दिया गया है । इन नौ राज्यों में समथर,और चरखारी उत्तर प्रदेश की परिधि में आते हैं अन्य राज्य मध्यप्रदेश की सीमा में स्थित है । छतरपुर राज्य की स्थापना, छत्रसाल ने की थी । उन्हीं के नाम से इस नगर का नामकरण किया गया था । ओरछा में वीरसिंह, जुझारसिंह और विक्रमाजीत ने राज्य किया था । बुन्देलखण्ड के सभी राज्य वर्तमान समय के ऐतिहासिक नगर में परिवर्तित हो गये हैं किन्तु आज भी इन नगरों में राज्य के सभी उपकरण किसी न किसी रूप में परिलक्षित अवश्य होते हैं ।

1:- ग- बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास

इतिहास शब्द तीन अक्षरों से मिलकर बना है । इति, ह और आस । "इति" का अर्थ होता ऐसेता की "ह" का अर्थ है निश्चित रूप से और "आस" का अर्थ हुआ, होता था । इस प्रकार इतिहास का शाब्दिक अर्थ हुआ " जो निश्चितरूप से ऐसा ही था ।" इतिहास के अन्तर्गत अतीत की प्रमुख घटनाओं , विचारों तथा कृत्यों का क्रमबद्ध विवेचन किया जाता है ।

बुन्देलखण्ड में आर्यों के पूर्व आदिम असभ्य प्रस्तरकाल, ताम्रकालीय, वर्मी तथा कोलारियन काल और द्रविड़ काल रहा है । इतिहास विद्वानों के द्वारा दर्शाया गया काल वर्गीकरण निम्नवत् है ।

1:- आदिम असभ्य काल -8लाख से 4 लाख वर्ष पूर्व ।

2:--प्रस्तर काल------- 4लाख से छियासठ सौ वर्ष पूर्व ।

3:- ताम्रकालीय, वर्मी, कोलारियन काल - 6600 से 600 वर्ष पूर्व ।

या

नाग जाति का समय -66000से 5900 वर्ष पूर्व ।

4:- द्रविड़ काल - 5900 से 3600 वर्ष पूर्व तक ।

5:- आर्यकाल - 3600 वर्ष पूर्व से माना गया है ।

काल विभाजन को दृष्टि में रखते हुये, बुन्देल खण्ड का संक्षिप्त इतिहास निम्नवत् प्रस्तुत किया जा रहा है।

क:- बुन्देलखण्ड का प्रारम्भिक इतिहास :-

प्राचीन काल में बुन्देलखण्ड में असभ्य जाति के लोग निवास करते थे जिनमें कोल, भील, नाग तथा द्रविड़ आदि जातियां प्रमुख थी । इन जातियों के लोग विन्ध्याचल पर्वत के समीपस्थ वाले जंगलों में रहते थे । जंगली जानवरों का मांस तथा कन्दमूल फल इन लोगों का प्रिय भोजन था । मुण्डा, उनकी भाषा थी । इन लोगों को भूत - प्रेतों में पूर्ण आस्था थी । वे उनकी पूजा करते थे । द्रविड़ सभ्यता, आर्य सभ्यता की पुरातन थी , किन्तु आर्य लोग द्रविड़ों को दस्यु और दुराचरण मानते थे । द्रविड़ जाति के लोगों के हृदय में प्रकृति के प्रति गहन आस्था एवं अगाध स्नेह था । इसी भावना ने उन्हें बुन्देलखण्ड की प्राकृतिक सुन्दरता में निवास करने को प्रेरित किया था ।

यह लोग कई वर्षों तक बुंदेलखण्ड में निवास करते रहे के तदुपरान्त बुन्देलखण्ड की भूमि पर आर्यों का आगमन हुआ । आर्यों के आगमन के उपरान्त बुन्देल-खण्डकाक्रमशः विकास प्रारम्भ हो गया । आर्यों ने द्रविड़ जाति के अन्य लोगों को इस धरती - को त्याग देने के लिये विवश कर दिया ।

बुन्देल खण्ड , ईसा से पूर्व, चौथी शताब्दी में मौर्य सम्राटों के अधिकार में रहा । यहाँ गोंड़ जाति के बहुसंख्यक लोगों ने निवास करना प्रारम्भ कर दिया । वृन्दावन लाल वर्मा के अनुसार "पहले यहाँ गोंडों का राज्य था किन्तु उनके पश्चात् मण्डलेश्वर या सम्राट पाटिलपुत्र और पश्चात् प्रयाग के मौर्य हुये।।: डा० विन्ध्य के विचार से , दक्षिण भारत में जो गोंड , भर, खरवार आदि जंगली जातियाँ निवास करती थी , उन्हीं जातियों से चन्देल, राठौर और गहरवार आदि जातियों की उत्पत्ति हुई, जो अपने को सूर्यवंशी क्षत्री मानते थे । मौर्यवंश का संस्थापक , चन्द्र गुप्त मौर्य था । सर्व प्रथम, चन्द्र गुप्त ने मगध राज्य की स्थापना की तदन्तर बुन्देलखण्ड पर अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया । मौर्य सम्राटों के पतन के उपरान्त यह क्षेत्र कनिष्कों के अधीन हो गया । इसके उपरान्त गुप्त वंशीय सम्राटों ने इस भूभाग पर अपनी सत्ता जमा ली । इस काल में यह क्षेत्र "जेजाक भुक्ति " के नाम से सम्बोधित किया जाता रहा है । हर्षवर्धन काल में चीनी यात्री ह्वेनसांग ने बुन्देलखण्ड के लिये उक्त शब्द का प्रयोग किया था ।

हर्षवर्धन सम्पूर्ण भारत को एक शासन - सूत्र में बाँधने का पूर्ण प्रयत्न किया था । गुप्त सम्राटों के उपरान्त परिहारों ने सत्ता संभाल ली । राजपूत वंश का राजा रामचन्द्र हुआ । मो - गाँव छावनी से पूर्व तीन मील दूर यह मान्धिया नामक स्थान को उसने अपनी राजधानी चुनी थी ।

छः- चन्देलों का उदय :-

आठवीं शताब्दी के लगभग खजुराहो और मन्धिया गढ़ के निकट , चन्देलों का उदय हुआ था । "चन्देल अपने को चन्द्रवंश का वंशज मानते हैं , जिसके कारण वैष्णव सोम चन्देल कहलाये । उन्होंने कालिन्जर के -

---

।:-गढ़ कुण्डार पृ० । - वृन्दावन लाल वर्मा

दुर्ग को विजय किया और महोबा को अपनी राजधानी बना कर , वहीं से शासन करने लगे।" :1: चन्देलों के शासन काल में बुन्देलखण्ड आश्चर्य पूर्ण श्री और गौरव को प्राप्त हुआ । इस वंश के शासकों में अंग , गंड, विद्याधर तथा कीर्तिवर्मा राजाओं के नाम उल्लेखनीय हैं । परमाल इस वंश का अन्तिम राजा हुआ, जिसे प्राय: परमारदेव के नाम से सम्बोधित किया जाता था । सन् 1182 ई0 में पृथ्वीराज चौहान ने, परमाल को महुबा नदी के किनारे स्थित उसकी पश्चिमी चौकी पर परास्त कर दिया । चन्देल सेनायें हारा-हारी हो गई और चन्देलवंश का पूर्ण अस्त हो गया । कवि जगनिक ने आल्ह-खण्ड में इस युद्ध का विस्तृत वर्णन किया है ।

पृथ्वीराज चौहान की सत्ता अधिक दिनों तक स्थापित न रह सकी । सन् 1192 में शहाबुद्दीन गौरी ने पृथ्वीराज चौहान को परा-जित कर दिया और बुन्देलों को अपना सत्ता - केन्द्र बनाना चाहा किन्तु बुन्देलों का अधिकांश भाग खंगारों के हाथ में था ।

ग:- इस्लाम प्रवेश :-

इस्लाम धर्म का उदय, ऐतिहासिक चमत्कारों में से एक है । सन् 1293 में , मुहम्मद गौरी ने बुन्देलखण्ड क्षेत्र पर अपना साम्राज्य स्थापित किया किन्तु यहां के निवासियों ने मुस्लिम शासकों को अपना राजा नहीं माना और सैकड़ों वर्ष तक वे अपने अधिकारों के लिये लड़ते रहे कुतु-बुद्दीन एबक और उसके अनेक उत्तराधिकारियों ने यमुना के दक्षिणी किनारे पर बसे कई सरदारों को नष्ट करने के लिये सतत प्रयत्न किया जिससे जन-धन की काफी हानि हुई, किन्तु स्वराज्य के दीवाने लोग निरन्तर संघर्ष कर रहे थे, शक्ति संगठित करने में जुटे रहे । इस अराजकता काल में कुछ जातियों के लोगों ने भी इस क्षेत्र में प्रवेश पा लिया , जिनमें खरवारा तथा बुन्देलों का नाम उल्लेखनीय है ।

1288 में बुन्देलों ने खंगारों का पूर्ण अन्त कर दिया और सत्ता की बागडोर अपने हाथ में लेली । बुन्देलों के सबसे पहले राजा सोहन-

---

1:- भारत भूमि का इतिहास -पृ0 108- शिवनारायण सिंह राणा

पास हुये । उन्होंने 1299 तक बुन्देलखण्ड पर राज्य किया । उनकी मृत्यु के उपरान्त उनका पुत्र लक्ष्मेन्द्र राज्य का स्वामी बना । उसने 1326 तक यहाँ राज्य किया । बीच - बीच में बुन्देलखण्ड पर मुसलमानों के आक्रमण होते रहते थे और कुछ न कुछ भाग वे जीत भी लेते थे । 1378 में फिरोजशाह ने आक्रमण करके काफी क्षेत्र अपने अधिकार में ले लिया । 1400 ई० में तैमूर का आक्रमण हुआ । इसी क्रम में बुन्देलखण्ड की धरती पर हुमायूँ, महमूद खाँ, जलाल खाँ, आदि ने भी अपनी सत्ता स्थापित की । बुन्देलों ने कई वर्षों तक , यहाँ राज्य किया।वे सन् 1507 तक अपनी राजधानी कुण्डार को बनाये रहे । तदुपरान्त बुन्देला राजा रुद्र प्रताप ने ओरछा को अपनी राजधानी चुना । बुन्देले अपनी राज्य सत्ता को सुरक्षित रखने के लिये और सुकीर्ति की शान बनाये रखने के लिये एक लम्बी अवधि तक प्रयत्नशील और संघर्षरत बने रहे । "बुन्देलखण्ड में जो हिन्दुत्व शेष है उसकी रक्षा बुन्देलो ने की थी । " :1:

ख :- मुगलों का अधिकार :-

सन् 1526 में पानीपत का युद्ध हुआ, जिससे दिल्ली में सत्ता परिवर्तित हुई और यहाँ से इस्लाम की दूसरी जाति "मुगल" वंश की नींव पड़ी । इस परिवर्तन से राजपूतों का हिन्दूराज्य स्थापित करने का स्वप्न भंग हो गया । न्यून संख्यक राजपूतों की पुरानी रण नीतियों ने मुगलो के आगे घुटने टेक देने को विवश कर दिया । सन् 1528 में , बाबर ने चन्देरी पर आक्रमण करके चन्देरी के दुर्ग को अपने अधीन कर लिया । इस युद्ध में रा-जपूत बड़ी वीरता से लड़े किन्तु उन्हे पराजय का मुंह देखना पड़ा । हुमायूं ने कालीन्जर पर विजय प्राप्त की । सन् 1545 में शेरशाह सूरी ने कालिन्जर पर आक्रमण किया और उसे जीत लिया । बुन्देला शक्ति केन्द्र गढ़ मिढोना के अन्तर्गत कोंच, बुन्देलो के अधीन बना रहा । चम्पतराय एवं पहाड़सिंह के उपरान्त सन् 1700 ई० में छत्रसाल ने औरंगजेब को पराजित कर दिया । उन्होंने अपनी माँ के स्वर्णाभूषणों को बेच कर धन प्राप्त किया और सैन्य - संगठन करना प्रारम्भ कर दिया । शनैः शनैः एक दिन छत्रसाल सम्पूर्ण बुन्देल-खण्ड के महाराजा बन गये । उनके शासन काल में प्रजा सुखी व सन्तुष्ट थी ।

1:- गढ़कुण्डार - पृ० - 4 - वृन्दावन लाल वर्मा

छतरपुर बन्दों के सहारा बसाया हुआ नगर है । छत्रसाल की वीरता के सम्बन्ध में बाबा प्राण नाथ की अधोलिखित पंक्तियां अवलोकनीय हैं ।

छत्ता तेरे राज्य में, धक-धक, धरती होय,

जित-जित, घोड़ा मुख करे, तित-तित फत्ते होय"

सन् 1627 में ओरछा के राजा वीरसिंह बुन्देला की मृत्यु के उपरान्त उनका पुत्र जुझार सिंह ओरछा का राजा बना । उसने ओरछा का शासन अपने पुत्र विक्रमाजीत को सौंप दिया और स्वयं सम्राट शाहजहां की सेवा हेतु आगरा चला गया । कुछ समय के उपरान्त विक्रमाजीत ने निर्दयता पूर्वक जनता से मालगुजारी प्राप्त करना प्रारम्भ कर दिया । यह सूचना शाहजहां के पास पहुंची । उसने अविलम्ब राज्य की जांच के लिये आदेश दे दिये । जुझार सिंह ,ओरछा लौट आया और झगड़ा कर विद्रोह कर दिया । पहले तो वह जंगलों में छिपा रहा किन्तु एक दिन उसे शाहजहां की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी । वह अपने पुत्र सहित पांच वर्ष तक मुगल साम्राज्य की सेवा करता रहा। एक बार उसने गोंडवाने पर आक्रमण कर दिया , जिससे शाहजहां रुष्ट हो गया और उसने औरंगजेब से कह कर जुझार सिंह तथा उसके पुत्र को मरवा डाला । इन दोनों की मृत्यु 1635 में हुई । जुझारसिंह का विरोधी राजा देवीसिंह ओरछा का राजा बना । औरंगजेब की धार्मिक नीति से असंतुष्ट हो कर बुन्देलों के नेता चम्पतराय ने विद्रोह कर दिया, किन्तु उसका बुरी तरह से दमन कर दिया । उसकी मृत्यु के उपरान्त ही छत्रसाल ने कई बार मुगलों से युद्ध किये । छत्रसाल वीर और साहसी राजा था । एक दिन उसने मुगल साम्राज्य की नींव खोखली कर दी । छत्रसाल की राज्य - सीमा अधोलिखित पंक्तियों से प्रकट हो जाती है ।

"उत यमुना, उत नर्मदा, उत चम्बल, उत टोंस,

छत्रसाल सों लरन की , रही न काहू हौंस ।।"

सन् 1731 में छत्रसाल का देहावसान हो गया । तदोपरान्त , बुन्देल खण्ड के कुछ भू भाग पर पेशवा बाजीराव ने अपना अधिकार जमा लिया तथा मराठों की धाक जम गई ।

ङ. :- विदेशियों का आगमन और शासन :-

यहाँ पुर्तगाली, डच, अंग्रेज तथा फ्रान्सीसियों का आगमन हुआ । पुर्तगालियों के पतन के पश्चात डच जाति के लोग आये । अंग्रेजोंने डचों को पराजित कर दिया और सम्पूर्ण देश पर अपना अधिकार जमाना चाहा । योरोपीय जाति के फ्रान्सी बाद में आये । अंग्रेज और फ्रान्सीसी दोनों ही व्यापार करने के उद्देश्य से यहाँ आये थे किन्तु दोनों ही जातियों के लोगों ने सम्पूर्ण भारत में अपनी सत्ता जमानी चाही । दोनों जातियों में संघर्ष छिड़ गया किन्तु विजय भी अंग्रेजों को मिली । बुन्देलखण्ड कई छोटे - छोटे भागों में बट गया था । पेशवा, मराठा और बुन्देला इन भागों पर राज्य कर रहे थे । उनमें परस्पर घृणा द्वेष की भावना विद्यमान थी । 1807 ई०के लगभग लार्ड मिन्टों ने इन देशी राज्यों के साथ शान्ति नीति अपनाई, किन्तु आवश्यकतानुसार वह इन राज्यों के विरुद्ध कार्यवाही करने को भी तत्पर रहता था । "भारत में आते ही जब अंग्रेजों को मालूम हुआ, कि बुन्देलखण्ड में चारों ओर अव्यवस्था फैली हुई है और छोटे - छोटे राज्य आपस में लड़ रहे हैं तब उन्होंने शान्ति स्थापना एवं अपनी कम्पनी का आधिपत्य स्थापित करने के उद्देश्य से एक सेना भेज कर अराजकता का दमन किया और अजयगढ़ तथा कालिन्जर के दुर्ग पर अपना अधिकार कर लिया।" :1:

सन् 1819 में, अंग्रेजों ने पेशवा, सिन्धिया, होल्कर तथा भोसलों को जीतकर सम्पूर्ण देश में अपना शासन प्रतिस्थापित कर लिया और राजपूतों से मैत्री स्थापित कर ली । सन् 1843 में ग्वालियर के राजा जनकोजी राव सिन्धिया की मृत्यु के उपरान्त उनका दत्तक पुत्र जियाजीराव गद्दी पर बैठा । लार्ड एलिनबरा जनकोजी के मामा कृष्णराव को प्रधान मंत्री नियुक्त करना चाहता था , किन्तु रानी ने दौलतीबाला को प्रधान मंत्री का पद सौंप दिया , जिससे रुष्ट होकर एलिनबरा ने ग्वालियर पर आक्रमण कर दिया, जिससे ग्वालियर राज्य को अंग्रेजों से सन्धि करनी पड़ी । सन्1848 ई० में लार्ड डलहौजी भारत का गवर्नर जनरल बना । उसने अपहरण नीति -

---

1:-भारत भूमि का इतिहास-पृ० 127-128- शिवनारायण सिंहराना

द्वारा अपने साम्राज्य क्षेत्र की वृद्धि की।

इस नीति के अनुसार यह नियम पारित किया गया कि अंग्रेजों की बिना अनुमति के कोई भी राजा किसी बालक को गोद नहीं ले सकता और यदि वह गोद ले लेता है तो उसे राज्य का उत्तराधिकारी नहीं माना जायेगा । उत्तराधिकारी के अभाव में राज्य का विलय कम्पनी के राज्य में हो जाता था । राज्यों को तीन श्रेणियों में विभाजित कर दिया गया । 1:- स्वतंत्र राज्य, 2:- कम्पनी के आश्रित राज्य, 3:- कम्पनी के अधीन राज्य । पहली और दूसरी श्रेणी के राज्यों को गोद लेने का अधिकार मिल सकता था किन्तु तीसरी श्रेणी के राज्य इस अधिकार से पूर्णतया वंचित थे । झाँसी राज्य भी डलहौजी की नीति का शिकार बना । सन् 1853 में झाँसी के राजा गंगाधर राव का देहावसान हो गया । मृत्यु से पूर्व उन्होंने दामोदर-राव नाम के एक बालक को गोद लेकर था, किन्तु डलहौजी ने इस दत्तक पुत्र को उत्तराधिकारी घोषित नहीं किया और झाँसी का राज्य अंग्रेजी राज्य में सम्मिलित कर लिया । डलहौजी की नीतियों और अंग्रेजों के अत्याचारों से व्यथित होकर सन् 1857 में जनता ने क्रान्ति का रूप अपना लिया । इस स्वाधीनता संग्राम में बुन्देलखण्ड ने प्रशंसनीय भूमिका का निर्वाह किया । झाँसी के प्रांगण में जून 1857 में अंग्रेज विरोध की सेना ले रानी स्वतंत्रतार्थ लड़ती, जूझती रही और वीर गति को प्राप्त हुई । 2 अगस्त 1857 में ही मैनेजमेन्ट ऑफ इण्डिया एक्ट पारित हुआ , जिसमें कम्पनी का राज्य समाप्त घोषित कर दिया गया और बुन्देलखण्ड का शासन सीधे इंग्लैण्ड के सम्राट के अधीन हो गया । 15अगस्त 1947 को सम्पूर्ण भारत के साथ बुन्देलखण्ड को भी स्वतंत्रता मिली । 26 जनवरी को इस क्षेत्र को भी गणराज्य घोषित कर दिया गया । 26, जनवरी ,1950 से नया संविधान लागू किया । सम्पूर्ण भारत को विभिन्न राज्यों में विभक्त किया गया । वर्तमान समय में बुन्देलखण्ड दो प्रान्तों के अन्तर्गत आता है । जिसका एक बड़ा क्षेत्र मध्य प्रदेश में सम्मिलित है तथा इस क्षेत्र का कुछ भाग उत्तर प्रदेश के अधीनस्थ, पाँच जनपदों में बटा हुआ है । उत्तर प्रदेश के यह पाँच जनपद झाँसी , जालौन, हमीरपुर, बाँदा तथा ललितपुर है । स्वतंत्रता की प्राप्ति के उपरान्त यहाँ कांग्रेस दल का बहुमत रहा और प्रजातांत्रिक ढ सरकार सत्ता में आयी । सन् 1977 के -

चुनाव में कांग्रेस पराजित हुई और अनेक दलों के सम्मिश्रण से बनी जनता पार्टी ने सत्ता संभाल ली । जनता पार्टी आपसी कलह के कारण अधिक समय तक न टिक सकी और 1980 में पुनः चुनाव किया गया जिसमें राज्यों तथा केन्द्र में कांग्रेस को पुनः सत्ता मिली ।

2:- क:- बुन्देल खण्ड की भौगोलिक परिस्थितियां :-

किसी भी क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियां उस क्षेत्र पर अपना विशेष प्रभाव डालती हैं । इन परिस्थितियों का प्रभाव उस क्षेत्र के सामाजिक , आर्थिक, राजनीतिक आदि सभी पहलुओं पर पड़ता है । अमुक स्थान की जलवायु उस स्थान के निवासियों के जीवन को सबसे अधिक प्रभावित करती है । लोगों को अपना रहन -सहन इन्हीं परिस्थितियों के अनुकूल बनाना पड़ता है । मानव इन परिस्थितियों से सामंजस्य स्थापित कर लेता है ।

बुन्देल खण्ड , चारों ओर से नदियों से घिरा हुआ , क्षेत्र है । सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड का क्षेत्रफल 48310 वर्गमील के लगभग है । :1: यहां के अधिकांश भाग में पर्वत श्रेणियां फैली हुई हैं । इन पर्वतों में चार पहाड़ों का विशेष महत्व है । पहला पर्वत है विन्ध्याचल, जो दतिया राज्य के लहचूरा से पांच मील उत्तर की ओर सिन्धु नदी के तट पर ओले केशव गढ़ से प्रारम्भ होकर कालिन्जर, अजयगढ़, विन्ध्यवासिनी, सुरम महल तथा राम-महल की ओर फैला हुआ है । यहांसाल तथा धम कार पत्थर प्राप्त होते हैं जो कि आर्थिक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण सिद्ध हुये हैं । दूसरी पन्ना की पर्वत श्रेणियां हैं जो विन्ध्याचल पर्वत के दक्षिण से आरम्भ हो कर कहीं तक चली गई हैं । तीसरी भाण्डेर का पहाड़ है , जो पन्ना की पर्वत श्रेणियों से दक्षिण - पश्चिम की ओर स्थित है । इस पर्वत की ऊंचाई 2555 फुट है । यह लहर गांव की घाटी से प्रारम्भ होता है । चौथा, केमूर पर्वत है, जो विन्ध्याचल पर्वत की एक शाखा है और कहीं से होता हुआ जबलपुर और डमोह की ओर जाता है ।

1:- बुन्देलखण्ड की आत्मा -पृ० 48 - विष्णुदत्त शर्मा

"बस जमुना बस नर्मदा, बस चम्बल बस टोंस" यह कहावत प्रकट करती है कि सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड , जमुना, नर्मदा, चम्बल और टोंस नाम की नदियों से आवृत्त है । ऐसे इस क्षेत्र में प्रवाहित होने वाली नदियों में जमुना, टोंस, नर्मदा- केतना, चम्बल,सवजाव, अवान, केन, सिन्ध, पहुज, बेवाज, बागेन, सुन्दर और कुमारी, उर्मिल आदि नदियां उल्लेखनीय है ।

बुन्देलखण्ड की जलवायु शीतोष्ण है । पथरीली भूमि होने के कारण यहां ठ ठंडी गर्मी पड़ती है । लू - लपटों के थपेड़े यहां के निवासियों को झुलसा कर रख देते हैं । भीषण गर्मी यहां के निवासी कठिन परिश्रम करने के अभ्यस्त हो चुके हैं । शीतकाल में यहां कड़कती ठंड पड़ती है । समुद्र से परे होने के कारण बुन्देलखण्ड के तापमें विषमता पायी जाती है । मई और जून के महीनों में अत्यधिक गर्मी तथा दिसम्बर और जनवरी में काफी ठंड पड़ती है । गर्मियों के दिनों में भी बुन्देल खण्ड की रातें बारह बजे के उपरान्त शीतल हो जाती हैं ।

यहां की भौगोलिक परिस्थितियों ने यहां के निवासियों को कष्ट सहिष्णु तथा कठोर बना दिया है । परिस्थितियों का बुरा प्रभाव यहां की फसलों पर भी पड़ता है । नार, रोमीनार, पड़ुआ, राकड़ कोन,की मटिया तथा कछार मिट्टी में उत्पन्न होने वाली बुन्देलखण्ड की फसलों की उपज अच्छी नहीं कही जा सकती है । यहां पर उत्पन्न होने वाली फसलों में गेहूं, चना, ज्वार, बाजरा, धान, कोदों, कोदुन, कपास , उर्द, मूंग,अरहर, अलसी, आदि उल्लेखनीय हैं । बुन्देलखण्ड में खेती के योग्य भूमि की कमी है । राकर, कंकर और पथरीली भूमि यहां के किसानों को समुन्नत नहीं बनने देती है । कृषि की दृष्टि से बुन्देलखण्ड एक पिछड़ा क्षेत्र माना जाता है । कल - कारखानों का भी यहां अभाव है । विषम भौगोलिक परिस्थितियों और राजनीतिक संघर्षों ने इस क्षेत्र को पनपने नहीं दिया । खनिज पदार्थों के सुलभ होने के कारण ही यहां का कुछ विकास सम्भव हो सका है । जहां बुन्देलखण्ड की धरती से कलई, चूनाकंकरी, रंग- गेरू आदि उपलब्ध होते हैं वहीं इस क्षेत्र के भू गर्भ से लोहा, तांबा, हीरा- पन्ना आदि बहुमूल्य धातुयें भी प्राप्त होती हैं । इसे और विस्तृत जन खण्ड , यहां की -

प्राकृतिक सम्पदा माने जाते हैं ।

यहाँ की भौगोलिक स्थिति ने कुछ अनुकूल परिस्थितियों को जन्म दिया है । नदियों की अधिकता के कारण यह क्षेत्र प्रायः बाह्य आक्रमणों से सुरक्षित रहा है । खानों से प्राप्त खनिज पदार्थ तथा विभिन्न प्रकार के पत्थरों के आधार से यहाँ की कुछ आर्थिक स्थिति भी सुधरी है । यहाँ की शीतोष्ण जलवायु ने मानव जीवन को कर्मठ बना दिया । यहाँ लोगों का स्वास्थ्य प्रायः ठीक रहता है । वे कठिन परिश्रम करके पथरीली भूमि को कृषियोग्य भूमि बनाते चले जा रहे हैं किन्तु भूमि की कमी और पारिवारिक बटवारों ने कृषि भूमि के टुकड़े - टुकड़े कर दिये हैं । यहाँ सिंचाई के साधनों का अभाव है किन्तु इन साधनों में उत्तरोत्तर वृद्धि होती जा रही है और लोग केवल मानसून की कृपा पर निर्भर नहीं है।

यहाँ पर नदियों का बाहुल्य है, जिससे इस क्षेत्र में विभिन्न मन्दिर और तीर्थ स्थल बन गये हैं । यहाँ के लोगों में धार्मिक भावना ओत-प्रोत होती है । यहाँ, चित्रकूट, पन्नवा, ओरछा, झाँसी, मैहरशाह आदि विभिन्न तीर्थों का विशेष महत्व है । स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से खजुराहा, सागर देवगढ़ आदि स्थलों में उत्तम स्वास्थ्य भवनों का निर्माण हो चुका है ।

इस प्रकार बुन्देलखण्ड की भौगोलिक परिस्थितियाँ जहाँ एक ओर मानव को कष्ट सहिष्णु और कठोर बनाती हैं, वहीं दूसरी ओर उनके हृदय में धर्म, नीति, दया, ममता आदि मानवीय गुणों का संचार करती हैं । यदि यहाँ का आल्हा परमवीर था तो ईसुरी जैसे सहिष्णु लोगों के लिये आदर्श बन गये । ममता और निर्ममता , सरलता और कठोरता तथा शान्ति और संघर्ष के मध्य जीवन यापन करने वाले बुन्देलखण्ड के निवासियों ने यहाँ की भौगोलिक परिस्थितियों से तालमेल कर लिया है ।

ख :- बुन्देलखण्ड की ऐतिहासिक परिस्थितियाँ :-

मानव विश्व रूपी रंग मंच पर एक कलाकार के रूप में प्रकट होता है और अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक अभिनय करता है । वह अपने कृत कार्यों के आधार पर यश - अपयश का पात्र बन जाता है और एक दिन अपनी जीवन यात्रा समाप्त करके इस नश्वर संसार को त्याग देता है, किन्तु-

उसका नाम काल के साथ इतिहास के स्वर्णिम अक्षरों में सदा के लिये अंकित हो जाता है । इतिहास अक्षुण्ण गति से चलता है, वह मोड़ भी लेता है और समय तथा परिस्थितियों के अनुसार बदलता रहता है ।

बुन्देलखण्ड का भी अपना एक इतिहास है । इस धरती पर हिन्दू, मुसलमान, पठान, अंग्रेज आदि विभिन्न शासकों ने अपनी - अपनी सत्ता स्थापित की । अनेकों युद्ध हुये और शक्ति के सम्मुख निर्बलता टूटने टेकती रही । यहां जो कुछ भी घटा उसे यथार्थ रूप में इतिहासकारों ने अंकित करके आगे की पीढ़ी के लिये विरासत के रूप में सुरक्षित छोड़ दिया , जिसकी सहायता से अतीत की घटनाओं का क्रमबद्ध अध्ययन और विश्लेषण किया जा सका ।

बुन्देलखण्ड में जन जातियों से राज्य का प्रादुर्भाव हुआ था । आर्यों ने यहां शासन किया । सम्राट पार्टिन युद्ध ने इस धरती को सजाया और संवारा, पठिहारों ने यहां अपनी धाक जमाई, कुछ समय के लिये यह क्षेत्र, चन्देलों के हाथ की कठपुतली बन गया तदन्तर मुसलमान शासकों ने इसे अपने प्रभुत्व चंगुल में फांस लिया, छत्रसालों ने भी प्रभुत्व जमाया और एक दिन बुन्देले इस धरती के स्वामी बन गये । अवसर पाकर अंग्रेजों ने भी इस धरती को हड़पा और राज्य किया सन् 1947 की पुण्यवेला में बुन्देलखण्ड की पावन वसुन्धरा उन्मुक्त हो गयी । यही बुन्देलखण्ड का इतिहास है ।

इतिहास अपने पर्यावरण तथा परिस्थितियों की उपज होता है । वह अतीत की घटनाओं तथा तत्कालीन मानव जीवन का यथार्थ मूल्यांकन करता है । बिना किसी पक्षपात के , वस्तु स्थिति को सही रूप में अंकित करना ही इतिहासकार उचित कार का परम कर्तव्य रहा है । ऐतिहासिक परिस्थितियां सदैव एक सी नहीं रहतीं, वरन् उनमें परिवर्तन होना सम्भाव्य है । यह परिवर्तन,काल की गति के साथ चलता है और समय - समय पर नवीन तत्वों का भी इसमें समावेश होता रहता है।

इतिहास कारों को बुन्देलखण्ड का इतिहास प्रस्तुत करने में पूर्ण सफलता नहीं मिल सकी है । तिथियों तथा सन्नों का इतिहास कार , भेद - भाव नहीं है । सर्वप्रथम,बुन्देलखण्ड में आदिम जातियां थीं । पाषाण काल -

की संख्या में कोल, किरात, संथाल, मुण्डा आदि जातियाँ विन्ध्याचल पर्वत और बुन्देलखण्ड के जंगलों में निवास करती रहीं । इन जातियों ने सहस्त्रों वर्ष रहकर भी कोई उन्नति नहीं कर पायी । द्रविडों ने उन्हें पराजित किया और वेलोग दक्षिणी भारत की ओर चले गये, तत्पश्चात बुन्देलखण्ड में आर्य लोग आये जिन्होंने द्रविडों को मार भगाया और स्वयं यहाँ बस गये । शनैः शनैः आर्यों की संख्या में वृद्धि होती गई और यह भूमि आर्यों का स्थायी निवास स्थल बन गई । उनकी संख्या को वैदिक संख्या की संज्ञा प्रदान की गई । इसी युग में वेदों की रचना के गई, जिसका समय 2500 वर्ष पूर्व से 1200 वर्ष पूर्व तक माना जाता है । इस काल में राजनीतिक संगठन, "गृह", कुलपति "पिता" , कुलों का संगठन"ग्राम" जिसका प्रधान "ग्रामीण", ग्राम का बड़ा संगठन "विश", विशों का संगठन "जन" तथा प्रधान "गोप" माना जाता था । यही राजा होता था ।

राज्य के लिये "राष्ट्र" शब्द का प्रयोग किया जाता था । राजा को जन-नेता माना जाता था । वह महलों में रहता था और जन कल्याण करना उसका प्रमुख कार्य था । युद्ध काल में, सेना पतित्व भी उसी के अधीन था । वह शासकीय कार्यों का पूर्ण उत्तरदायी एवं न्यायकर्ता माना जाता था । राज्य के कर्मचारी ,सेनापति, पुरोहित तथा ग्रामीण होते थे । समिति और सभा का राजा पर नियन्त्रण रहता था । वे शान्ति प्रिय थे किन्तु अवसर आने पर युद्ध के लिय तैयार रहते थे । पैदल और रथ सेना का प्रचलन था । धनुष बाण, फरसा, खड्ग, कटार, भाला आदि प्रमुख अस्त्र माने जाते थे । युद्ध धर्म पर आधारित रहता था तथा शरणार्थियों को मुक्ति मिल जाती थी ।

बुन्देल खण्ड पर क्रमशः सम्राट चाटिलपुत्र, प्रधान के मौर्य, गुप्त सम्राट, राजपूत और चन्देल आदि आदि राजाओं ने राज्य किया । प्रत्येक के शासन काल में परिस्थितियाँ अपना प्रभाव जमाये रहीं । मौर्यों के शासन काल में अयोग्य उत्तराधिकारियों का होना तथा षड्यंत्र कारियों द्वारा विभिन्न षड्यंत्र रचाये जाना, कर्मचारियों के साथ अत्याचार ढाये जाना, ~~कर्मचारियों के अत्याचार~~ ~~उनके अन्त~~, तथा गुप्तचरों की अस्त-

अन्तिम दिन वर्षों ने इतिहास में एक नया मोड़ ला दिया, जिससे मौर्य शासन का पतन हुआ तत्पश्चात मुख्य सम्राटों ने बुन्देल खण्ड पर अपना आधिपत्य जमा कर , यहाँ के राजाओं को अपना सेवक बनने के लिये विवश किया जिससे आन्तरिक कलह और क्लेश बढ़ गया और राजपूतों ने मुगल साम्राज्य का धुरा-उखाड़ दिया । राजपूत वीर थे किन्तु फेर - बिखराना उनकी आदत थी । बुन्देलों ने पदार्पण के बाद अपने पैर बुन्देल खण्ड की धरती पर जमाये । उनका नाम , बुन्देलखण्ड के इतिहास में सम्मान लिखा गया । उन्होंने तत्-कालीन समाज की सुख -सुविधाओं तथा विकास पर विशेष ध्यान दिया । बुन्देलखण्ड की उन्नति का श्रेय बुन्देलों को ही मिला है ।

बुन्देलखण्ड में छोटे - छोटे राज्यों की स्थापना , आपसी कलह, विद्रोह,अशान्ति, सेना की कमी ,सुदृढ़ सैन्य संचालन का अभाव, द्रव्य की कमी तथा समय - समय पर होने वाले आक्रमण आदि ऐसी विभिन्न परि-स्थितियाँ रहीं हैं । जिसके कारण यहाँ किसी को स्थायी और सुदृढ़ शासन व्यवस्था कायम न हो सकी । बुन्देलखण्ड के राजाओं और क्षत्रियों को इस धरती के प्रति गहन आस्था थी । उन्होंने यथा सम्भवता की भलार्थ के कार्य किये किन्तु मुस्लिम और मुगल शासकों ने राज्य को चारों ओर से घेरना शुरू। निर्दयता पूर्वक , भोली - भाली जनता के साथ अत्याचार किये, जिससे जनता त्राहि-त्राहि कर उठी और हिन्दू धर्म सिसकने लगा । मन्दिरों का विनाश और मूर्तियों का खण्डन किया गया किन्तु हिन्दुओं ने न धर्म परिवर्तित किया और न वे नास्तिक बन सके । संकट के समय , विन्ध्यवासिनी देवी की आराधना और सैन्य संगठन करना उनका मुख्य कर्तव्य बन गया । यह बात निर्विवाद है कि अत्याचारी राजाओं को इतिहास कभी क्षमा नहीं करता । जो विजेता अपने पीछे उजड़े हुये नगरों और निर्दोष ग्रामीणजनों की लाशें छोड़ कर जाता है उसे भावी पीढ़ी आततायी और राक्षस समझ कर ही याद करती है ।

मुसलमान शासकों ने बुन्देलखण्ड के छोटे - छोटे राजाओं को एक -एक करके समाप्त किया । जब वे एक राजा का राज्य छीनते थे तो दूसरे राजा से भेंटी स्थापित कर लिया करते थे । यही स्थिति शासकों की -

भी रही । छत्रसाल ने बिखरे हुये राजवंशों को एकता के सूत्र में बाँधना चाहा किन्तु ऐतिहासिक परिस्थितियों ने उनका स्वप्न पूर्णतया साकार न होने दिया । कुछ राजाओं को पराजय से इतना कष्ट होता था कि वे आत्म हत्या कर लेते थे ।

इतिहास इस बात की पुष्टि करता है कि बुन्देलखण्ड में राजाओं की हार के अनेक कारण रहे हैं । विशेष रूप से , राजनीतिक एकता का अभाव, जनता का सुप्त होना, जनता का राजा को सहयोग न मिल पाना, बाह्य आक्रमण होना, भोग - विलास, अपूर्ण सैन्य संगठन तथा सुदृढ़ का अभाव बना रहना, स्वार्थपरता - छल- कपट और द्वेष भावना का बाहुल्य, और भौगोलिक विषमता आदि राजाओं को पराजित करने के मुख्य कारण हैं ।

ऐतिहासिक परिस्थितियों का मुख्य बुन्देलखण्ड की रण-नीति के साथ सदैव घूमता रहा है । द्वेष त्याग कर विषम परिस्थितियों का डट कर सामना न कर पाना और आपस में कलह होना, भोग विलास तथा मदिरापान में रत रहना ही यहाँ के राजाओं की पराजय के विशिष्ट कारण है ।

ग:- <u>बुन्देल खण्ड के सामाजिक परिस्थितियाँ :-</u>

बुन्देलखण्डके निवासियों के जीवन को यहाँ की भौगोलिक स्थिति,राजनीति और आर्थ व्यवस्था ने पूर्ण रूप से प्रभावित किया है । * राज्यों और रियासतों के राजाओं और सामन्तों के ठाम -धाम , प्रकृति , वेशभूषा और प्रवृत्तियों का पूर्ण प्रभाव समाज पर पड़ा जिससे तत्कालीन परि-स्थितियों के अनुकूल समाज के ढाँचे में परिवर्तन होता गया ।

गोंडों के शासन काल में यहाँ का समाज बहुत पिछड़ा हुआ है था । खेती योग्य भूमि का अभाव था । लोग पशुओं को पालते थे । मांस भक्षण करना उनकी प्रवृत्ति थी । शनैः शनैः राज्यों में परिवर्तन हुआ तदनुरूप समाज भी बदलता गया । धीरे - धीरे सामाजिक उत्थान होने लगा । यहाँ का समाज धर्म के प्रति सदैव आस्थावान और जागरूक रहा है । यहाँ की -

प्रकृति ने एक ओर समाज को कठोर जीवन व्यतीत करने को बाध्य किया है वहीं दूसरी ओर लोगों को वीरत्व और साहस भी प्रदान किया है । बुन्देल खण्ड, प्राचीन काल से ही रण और राजनीति का गढ़ रहा है जिसका प्रभाव यहाँ के समाज पर भी पड़ा है । धर्मपरायणता, कर्त्तव्यनिष्ठा, प्रेम और सद्भावना आदि मानवीय गुण यहाँ के जन -जीवन में विद्यमान रहे हैं ।

बुन्देल खण्ड में अधिकांश क्षत्रियों ने राज्य किया है । क्षत्रियों के पुरोहित, ब्राह्मणों का समाज और राज्य में बड़ा सम्मान किया जाता था । उनके बताये हुये सिद्धान्तों को अंगीकार किया जाता था । इन्हीं पुरोहितों ने यहाँ के समाज में धार्मिक प्रचार किया और लोगों के हृदय में धर्म के प्रति आस्था उत्पन्न कर दी, जिससे नदियों के तटों पर मन्दिरों और तीर्थों का निर्माण किया गया । लोग ईश्वर की आराधना करने लगे । व्रत, पूजा-पाठ आदि लोगों की दिनचर्या बन गई । न केवल जनता ही धर्म के प्रति आस्थावान बनी अपितु राजा - महाराजा भी धर्म परायण बन गये । बहुत से बुन्देले, विन्ध्यवासिनी देवी के अनन्य भक्त तथा सच्चे पुजारी रहे हैं । यहाँ की जनता ने सदैव अपने राजा को ईश्वर का रूप माना है और उनकी भावनाओं का समादर किया है ।

प्राचीनकाल में यहाँ की सामाजिक परिस्थितियों ने सम्पूर्ण समाज को दो भागों में विभक्त कर दिया था । एक ग्रामीण समाज और दूसरा नगरीय समाज । ग्रामीण समाज के लोग अशिक्षित , धर्मनिष्ठ, कर्मठ और वीर थे । वे झूठ नीति से परे रह कर सादगी से अपना जीवन व्यतीत करते थे । नगरीय समाज के लोग शिक्षित और चतुर थे । धार्मिक प्रवृत्ति , समाज के दोनों रूपों में विद्यमान थी । बलि पूजा, भूत प्रेतों में विश्वास , कर्मवाद, पुनर्जन्म तथा आत्मवादिता आदि बुन्देलखण्ड के समाज की मुख्य विशेषतायें रही हैं । ये विशेषतायें एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होती रहती हैं ।

विवाह के समय लोग बड़े उत्साह के साथ त्यौहारों और उत्सवों में भाग लेते हैं और मनोरंजन करते हैं । होली के त्यौहार में बुन्देलखण्ड के निवासियों का हर्ष और उल्लास चरम सीमा पार कर जाता है ।

यहाँ के समाज में जातिवाद की भावना प्रारम्भ से ही अत्यन्त झलकती रही है । ब्राह्मण जाति, सर्वोच्च जाति मानी जाती है । क्षत्रिय, वैश्य, कायस्थ, पिछड़ी जातियाँ और हरिजन सभी जातियों के लोग बुन्देलखण्ड के समाज में सम्मिलित हैं । जाति बन्धनों का कठोरता से पालन किया जाता है । रोटी -बेटी सम्बन्ध अपनी जाति और उपजाति में ही किया जा सकता है । विवाह को धार्मिक संस्कार माना जाता है ।

बुन्देलखण्ड के निवासी आर्थिक रूप से सुखी और सम्पन्न नहीं थे । निर्धनता के कारण उनका रहन - सहन का स्तर भी निम्न श्रेणी का रहा है । कृषकों की स्थिति बड़ी दयनीय रही है । कृषि के समुन्नत साधनों की कमी तथा भूमि के अभाव ने यहाँ के लोगों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ नहीं होने दिया । सूखे का भय बना रहता था । मुसलमान शासकों ने यहाँ के समाज के उत्थान का प्रयत्न कभी नहीं सीधे किया अपितु उन्हें आर्थिक आघात अवश्य पहुँचाया है ।

समाज में स्त्रियों की दशा बड़ी दयनीय थी । पर्दा प्रथा का कड़ाई के साथ पालन किया जाता था । स्त्रियाँ घर की चारदीवारी में बन्द रह कर अपना जीवन व्यतीत करती थी । अशिक्षा, यहाँ के समाज का एक घातक नासूर था । यहाँ के निवासी बड़े स्वाभिमानी थे । थोड़ी सी बात पर उन्हें क्रोध आ जाया करता था और वे प्रतिशोध की अग्नि में जलने लगते थे । बाल-विवाह प्रथा का भी प्रचलन था । अल्प आयु में सन्तानोत्पत्ति और अधिक सन्तान समाज का मार्ग केंद्र थी ।

बुन्देलखण्ड में सम्मिलित परिवारों का बाहुल्य रहा है । घर में सदस्यों की संख्या अधिक रहती थी और कृषि से उत्पन्न अनाज उनकी उदर पूर्ति भी नहीं कर पाता था जिससे वे ब्याज पर साहूकारों से ऋण लिया करते थे और ब्याज तथा दर-ब्याज देते-देते उनका पूरा जीवन व्यतीत हो जाया करता था । विवाहों में भी काफी धन का अपव्यय करना यहाँ के लोगों की रीति बन चुकी है थी । इन कारणों से लोग आर्थिक कठिनाई का अनुभव करते रहते थे ।

सामाजिक बन्धन और नियम काफी कठोर थे । किसी -

सामाजिक रूढ़ि को तोड़ने का सामान्य जनता साहस नहीं कर सकती थी । राज्य नियमों का उल्लंघन करने वाले को बड़े से बड़ा दण्ड भुगतना पड़ता था । जातिच्युत करना तथा हुक्का पानी बन्द कर देना सामाजिक दण्ड विधान के अन्तर्गत आता था ।

यहाँ के कुछ निवासी अन्य स्थानों भी थे । सम्पूर्ण समाज परम्पराओं में जकड़ा हुआ था । उन्मुक्त और स्वच्छन्द वातावरण का अभाव था । फिर भी यहाँ के निवासियों में स्थान सहृदयता , सच्चाई और आतिथ्य सत्कार की भावना विद्यमान थी । जैसे- जैसे राजा बदले , राज्य के नियमोपनियम एवं सामाजिक परिस्थितियाँ भी बदलती गई । वर्तमान समय में यहाँ का समाज शिक्षित और समुन्नत है । साधनों में वृद्धि होने के साथ-साथ समाज का भी उत्थान होता चला जा रहा है । ग्रामीण युवतियाँ भी अब धीरे - धीरे शिक्षा की ओर अग्रसरित हो रही हैं किन्तु अब भी बहुत से अभावों के कारण पूर्ण उन्नति नहीं हो सकी है ।

ख:- बुन्देलखण्ड की राजनीतिक परिस्थितियाँ :-

बुन्देल खण्ड प्राचीन काल से ही राजनीति का गढ़ रहा है । इस पृथ्वी पर राजनीति का जन्म आदि जातियों के निवास के समय ही हो चुका था जिसका परिवर्तित और परिष्कृत रूप आज भी देखने को मिल-ता है । प्राचीन काल में बुन्देलखण्ड में विभिन्न छोटे - छोटे राज्य और रजवाड़े थे । रियासतें भी अपना अस्तित्व बनाये हुये थीं । सामन्त और जागीरदार राजा के अधीन रह कर कार्य करते थे । अपने क्षेत्र की सुरक्षा का पूर्ण दायित्व भी इन्हीं का माना जाता था । प्रत्येक राजा राजनीतिक स्वतन्त्र-ता चाहता था जिसके लिये उसे युद्ध भी करने पड़ते थे । बड़े राज्यों के द्वारा छोटे छोटे राजाओं के सभी प्रकार से सहयोग मिला करता था किन्तु आपस में मनमुटाव हो जाने पर वे एक दूसरे के शत्रु बन जाया करते थे ।

बुन्देलखण्ड के राजाओं को सत्ता अति प्रिय थी । वे राज्य करने के लिये आतुर रहते थे । युद्धों का आधिक्य था । राज्याधिकारी सैन्य संगठन में विशेष ध्यान दिया करते थे । अपनी गद्दी को बचाने के प्रयत्न में उनका काफी समय नष्ट होता था जिससे वे प्रजा को अधिक सुख सुविधायें -

नहीं थे करते थे । प्रजा असन्तुष्ट बनी रहती थी । कभी- कभी प्रजा द्वारा आन्तरिक विद्रोह भी कर दिया जाता था । युद्ध के दुष्परिणामों और राज्य के द्वारा होने वाली अवहेलना से नागरिक भयभीत और त्रस्त रहते थे तथा उनकी सुरक्षा खतरे में बनी रहती थी । छल - कपट का बाहुल्य था । लोगों में स्वार्थ की भावना विद्यमान थी । राजाओं का मुख्य कर्तव्य अपने राज्य की सुरक्षा , सामन्तों पर नियन्त्रण तथा आन्तरिक विद्रोह का दमन करना था । निर्बल राजाओं पर शक्ति शाली राजा आक्रमण कोल दिया कर ते थे और उनका राज्य हड़प लेते थे ।

राजनीतिक परिस्थितियाँ राजाओं में कटुता उत्पन्न कर देती थी । राज्य विप्लव, उन्मेभले- युद्ध का भाव भी विस्मृत करा देती थी । मुसलमान शासकों के राज्यकाल में हिन्दू धर्म पीड़ित हो गया था । मुसलमानों ने अपने धर्म का प्रचार किया । हिन्दुओं की लड़कियों से जबरन विवाह किया । कुछ शासकों ने हिन्दू धर्म को समूल रूप से नष्ट करना चाहा और मन्दिरों का विध्वंस किया । कुछ चतुर मुसलमान शासकों ने किसी भी धर्म को नष्ट करने का विचार नहीं किया और उन्हें लोक प्रियता भी मिली ।

राजनीति नेकर बार करवट बदली । आज का राजा कल, का भिखारी बनने पर विवश हो गया । साम-दाम- दण्ड और भेद सभी नीतियों के अस्त्र-शस्त्र राजाओं के पास रहते थे । शत्रुओं से मिलकर छलना देना उन्होंनिसे सहज कार्य था । चन्देलों ने बुंगारों का विनाश इसी ढंग से किया था । जब किसी राजा को अपना पक्ष निर्बल प्रतीत होता था तो वह सन्धि कर लेता था और सशक्त होने पर फिर विद्रोह कर देता था जिससे राजाओं को अपनी सुरक्षा के लिये विशेष प्रबन्ध करने पड़ते थे । मजबूत किलों, भवनों और गढ़ियों का निर्माण किया जाता था । परिवार को शासन की सुदृढ़ इकाई माना जाता था । कई परिवार मिलकर गाँव में निवास करते थे ।

औरों के शासन काल में विषम राजनीतिक परिस्थितियाँ उठ खड़ी हुई । औरंग जेब कठोर थे । पूर्ण शासो और राज्य करो, उनकी नीति थी । जब वे पर सुदूरवर्ती राज्य पर आक्रमण करते थे तो अन्य राज्य को अपना हितैषी बना लेते थे । इसी नीति से उन्होंने सहस्रों वर्ष राज्य -

किया । जनता के साथ भी वे मृदुता का व्यवहार करते थे । विद्रोह का दमन करना उन्हें अच्छी तरह आता था ।

अभाव के कारण बुन्देलखण्ड के राजा लोग प्रजा पर मनमाना कर लगाया करते थे जिससे सामाजिक और राजनीतिक सत्ता को ठेस पहुँचती थी । उन्हें राजाओं से उचित न्याय की आशा कम रहती थी । अंग्रेजों के शासनकाल में यह कार्य न्याय पालिका को सौंप दिया गया । दण्ड संहिता में अमानुषिक दण्डों का परित्याग कर दिया गया । अंग्रेजों के उपरान्त बुन्देलखण्ड में गणतंत्र राज्य की स्थापना की गई । प्रजातान्त्रिक सरकार का गठन हुआ । प्रत्येक नागरिक, राज्य की एक इकाई बन गया । सत्ता में रहने वाला दल, विपक्षी दलों से सतर्क रहता है और त्रुटि पूर्ण कार्य कम कर पाता है जो दल राज्य के कार्योंको उचित प्रकार से नहीं कर पाता है ; जनता उसे शासनच्युत कर देती है । इस प्रकार , बुन्देलखण्ड क्षेत्र में राजनीतिक परिस्थितियां अपना प्रभाव डालती रही है । आज भी बुन्देलखण्ड की जनता इसे पृथक प्रान्त बनाने के लिये राजनीतिक क्रान्ति कर रही है ।

राजा को प्रजा का संरक्षक माना जाता था । राजद्रोही को मृत्यु दण्ड या देश निकाला दिया जाता था । विद्रोही राजा या सामन्त राज्य में अशान्ति उत्पन्न करते रहते थे, । डाकों और लूट पाट का बाहुल्य था । राज्यों में सैनिकों की प्राय: कमी बनी रहती थी । राज्यों की संख्या अधिक थी और युद्ध में काफी संख्या में सैनिक और मंत्रि को प्राप्त होते रहते थे । सैनिकों की कमी पड़ जाने पर जनता युद्धों में भाग लेती थी । स्त्रियों को भी अस्त्र- शस्त्र विद्या का ज्ञान कराया जाता था । उन्हें राज्य में सेवा करने का अवसर ही भी दिया जाता था ।

योद्धाओं को प्रेरित करने और उनका शौर्य जाग्रत करने में , लाल झण्डों का प्रदर्शन, नगाड़ों की ध्वनि, वीर रस की कविताये, पुरोहितों का आशीर्वाद और देवी-देवताओं का वरदान विशेष महत्व रखता था । कुछ राजाश्रित लोग अन्य राजाओं से निजी स्वार्थवश मिल जाते थे और अपने राज्य की गोपनीयता भंग कर देते थे जिसका पूरा लाभ शत्रुओं को मिल जाया करता था । कूट नीति का विशेष महत्व था । शत्रु का गला काट डालना या-

शिक्षण कराके उसे मार देना एक सहज बात मानी जाती थी । पारस्परिक कलह और स्वार्थपरता राज्य में अशान्ति बनाये रखती थी । किसी की आर्थिक नीति अनुचित थी तो कोई चिल्लाती था ।

ड॰:- बुन्देलखण्ड की आर्थिक परिस्थितियाँ :-

प्राचीन काल से ही बुन्देल खण्ड आर्थिक रूप से पिछड़ा क्षेत्र रहा है जिसका प्रमुख कारण यहाँ की भौगोलिक स्थिति है । इस भू भाग को नदियों ने चारों ओर से घेर रखा है । वर्षा मात्रायें बिखरी पड़ी है । कृषि योग्य भूमि कम है । अधिकतर कंकरीली - पथरीली भूमि यहाँ पायी जाती है । इसे पत्थरों का देश कहा गया है । आदिकाल से यह धरती रण-भूमि बनी रही है । सुखों को भूलने और सत्ता के प्रति सजग रहने वाले राजाओं का ध्यान यहाँ की आर्थिक उन्नति की ओर गया ही नहीं ।

कृषि योग्य भूमि का अभाव, सिंचाई के न्यून साधन, यहाँ की कृषि को समुन्नत शाली न बना सके । कठोर परिश्रम के बाद थोड़ा सा अनाज उत्पन्न करके कृषक भरण - पोषण करता आया है । युद्ध की विभीषिकाओं से यहाँ का निवासी सदैव आतंकित रहा है । यहाँ के निवासियों का स्थायी निवास न बन पाया जिससे, ~~एक स्थान का स्थायी निवास न बन~~ जिससे एक स्थान पर रह कर वे व्यापार न कर सके । व्यापारिक साधनों का पूर्णतया अभाव रहा , जिससे यहाँ का वाणिज्य भी न बढ़ सका । कृषि तथा व्यापार दोनों ही शिथिल रहे , जिससे आर्थिक रूप से यह क्षेत्र पिछड़ता गया ।

पथरीली भूमि, पानी का अभाव, अकाल, ओलावृष्टि आदि से रही सही फसलें भी चौपट हो जाया करती थी । यहाँ समा, कोदो किकार, ज्वार, बाजरा, चना और महुआ आदि की मुख्य रूप से खेती की जाती रही है । इस क्षेत्र के लिये एक प्रसिद्ध कहावत अवलोकनीय है ।

महुआ-मेवा, बेरकेवा, गुलगुल बड़ी मिठाई,
जो कहे ये चीजें चाखे चौथे, आगे करो लगाई ।।

इस कहावत इस क्षेत्र को एक धन खण्ड घोषित करती है जहाँ न कृषि है और न व्यापार । यहाँ का कृषक ऋण में जन्म लेता, ऋण में पलता और -

वन छोड़कर भर जाता है । गाँवों में लोग छोटे कुटीर उद्योग धन्धे अपना कर अपना जीवनोपार्जन करते हैं । लोग झाड़, सूप, टोकरा, दौरिया, पंखा आदि बनाकर सेवा करते हैं । यहाँ की शीतोष्ण जलवायु व्यावहारिक दृष्टि-कोण से उपयुक्त नहीं है । यहाँ का आर्थिक विकास चींटी की गति के समान हुआ है ।

बुन्देल खण्ड के निवासियों का जीवन आज भी आर्थिक रूप से अस्तव्यस्त है । यदि यहाँ खनिज सम्पदा और वन न होते तो लोगों का जीवन दूभर हो जाता । लोहा, हीरा, पन्ना आदि ने यहाँ की कुछ आर्थिक दशा सुधारी है । पत्थरों के व्यापार ने भी इस क्षेत्र का आर्थिक विकास किया है । मीलों लम्बी चौड़ी भूमि आज भी कृषि विहीन पड़ी हुई है । यहाँ विद्युत का संकट प्रायः बना रहता है ।

इस क्षेत्र में कभी भी आर्थिक क्रान्ति नहीं आयी जिसका प्रमुख कारण यह है कि यहाँ के राजाओं ने सारा समय सैन्य संगठन और युद्धों में निकाला । स्थायी शासन न होने के कारण इस क्षेत्र में प्रगति करने की बात किसी ने भी नहीं सोची ।

यहाँ के लोगों का जीवन असुरक्षित रहा है । लूटपाट और युद्ध के भय से व्यापारी भयभीत रहते थे और व्यापार वृद्धि को तैयार नहीं होते थे । वे आर्थिक रूप से सक्षम भी नहीं थे ।

अंग्रेजों ने इस क्षेत्र को और भी शोषण कर लिया । यहाँ की सम्पत्ति अपने देश को हस्तान्तरित कर दी । जमींदारों ने भी अत्याचार करके गरीब जनता को लूटा । जो गरीब था वह और भी निर्धन होता गया और धनी व्यक्ति, लेनदारी बन बैठा । धीरे - धीरे इस क्षेत्र की आर्थिक परिस्थितियों में परिवर्तन आया । लोगों ने पशुपालन प्रारम्भ कर दिया । वनों से प्राप्त लकड़ी का व्यापार बढ़ा । कपास की खेती की जाने लगी । गेहूँ, चना, उर्द, मूँग, अलसी, सरसों आदि की उन्नत फसलें भी उगाई जाने लगी ।

स्वतंत्रता के पश्चात इस क्षेत्र का आशातीत आर्थिक विकास हुआ । प्रादेशिक तथा केन्द्र सरकार ने अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न कर दीं । बाँध और नहरों का निर्माण किया गया । खेती बाड़ी के साधनों में वृद्धि -

की गई । भूमि को कृषि योग्य बनाया गया । सरकारी समितियों और सहकारिता पर विशेष बल दिया गया । भूमि हीनों को कृषि भूमि वितरित की गई । इन सब चीजों से यहाँ की आर्थिक स्थिति कुछ बदली है किन्तु अभी भी पर्याप्त साधनों की कमी है ।

व्यापारिक संस्थानों और कारखानों का भी निर्माण सम्पन्न हो रहा है । झेलार में नव निर्मित भारत हेवी इलेक्ट्रीकल द्वारा फोरगर कम्पनी, झाँसी का सूती मिल, दतिया और झाँसी के बिड़लाग्रुप आयुर्वेदिक दवाइयों का कारखाने, प्लास्टिक का कारखाना आदि यहाँ की आर्थिक उन्नति के प्रतीक है । चन्देरी की साड़ियाँ और रानीपुर का हेरीकोट ख्याति प्राप्त कर चुका है। झाँसी का प्रालैण्ड यहाँ की आर्थिक समुन्नति हेतु कार्य शील है ।

४:- बुन्देल खण्ड की साहित्यिक परिस्थितियाँ

"विन्ध्य भूमि का अतीत बड़ा गौरव पूर्ण रहा है । प्रकृति ने इस जनपद को बड़ी उदारता पूर्वक सजाया है । ऊँची - नीची पंक्तियाँ विन्ध्याचल पर्वत मालायें, सघन वन-कुन्ज, सरितायें आदि ऐसे उपक्रम हैं , जिनकी रमणीयता को देखकर, मानव हृदय अपने आप आनन्द विभोर हो उठता है । इस प्रदेश में , प्राकृतिक कवित्व सुख प्रदान करने की शक्ति विद्यमान है । " :1:

बुन्देलखण्ड की मनोहारी प्रकृति कवियों की जन्म दात्री रही है । यह वीरों की भूमि है । यहाँ युध्द विजीयताओं का साम्राज्य रहा है । वीरांगनाओं ने यहाँ सहस्र वर्षों तक राज्य किया । युध्द के नगाड़ों की ध्वनि में कवि की ओजस्वी वाणी मुखरित होती रही है, जो यहाँ के वीर योध्दाओं के अंग-प्रत्यंग में नव स्फूर्ति भरती रही है और उनके हृदय में चेतना लाती रही है । वीरों की अन्तरात्मा में मातृभूमि के प्रति असीम अनुराग उत्पन्न करने का श्रेय यहाँ के कवियों को ही है । प्रकृति और राजनीति दोनों की संगम स्थली में कवियों ने जन्म लिया । जहाँ युध्द हुये, तलवारें-

---

1:- बुन्देली प्रकाश -पृ० 10 -डा० बं० गौरी शंकर द्विवेदी

उनकी वहाँ पूजापाठ हुआ, आरती उतारी गई । इन प्रेरणाओं के स्रोत यहाँ के कविगण बने ।

राजाओं में धर्म के प्रति गहन आस्था उत्पन्न करने का कार्य कवियों द्वारा प्रणीत धर्म गीतों ने किया । धर्म स्थलों, तीर्थस्थलों और मन्दिरों के निर्माण में कवि प्रेरणा का हाथ था । यहाँ के बुन्देलों के विन्ध्य-वासिनी देवी के अनन्य भक्त थे । कवियों ने देवी देवताओं की आराधना से सम्बन्धित काव्य का सृजन करना प्रारम्भ कर दिया जिससे वे राज्य द्वारा पुरस्कृत तथा सम्मानित हुये । यहाँ के निवासी राष्ट्रभक्त थे । उनके हृदय में अपनी मातृभूमि के प्रति अगाध स्नेह विद्यमान था जिससे तत्कालीन कवियों ने राष्ट्रीय साहित्य का सृजन किया । बुन्देलखण्ड में विभिन्न जातियों और धर्मों के लोगों का निवास रहा जिससे यहाँ प्रत्येक धर्म से सम्बन्धित साहित्य की उद्भावना की गई । युग दृष्टा, और युग स्रष्टा कवियों ने समाज में साहित्यिक चेतना का प्रचार-प्रसार किया, जिससे लोग अपने धर्म के प्रति निष्ठावान और जागरूक रह सके ।

तत्कालीन राजाश्रित कवियों ने अपने राजा- महाराजाओं की प्रशंसा के लिये और उन्हें युद्ध के लिये प्रेरित करने के उद्देश्य से भी साहित्य का सृजन किया । कुछ कविगण तो स्वयं वीर और योद्धा थे । काव्य प्रतिभा यहाँ के कुछ राजाओं में भी विद्यमान थी । बुन्देलखण्ड की लोक प्रिय भाषा "बुन्देली" भी अपने लालित्य के कारण कवियों और साहित्यकारों की प्रेरणा के कारण कवियों को कारण स्रोत बनी । यह समृद्धशाली भाषा है । इसका एक विशाल क्षेत्र है तथा भाषा के सभी तत्वों का इसमें समिश्रण है । बुन्देली भाषा सहित काव्य के हर सृजन की अद्वितीय क्षमता रखती है । यहाँ के कवियों ने प्रकृति, सौन्दर्य, राष्ट्रीय, श्रृंगारिक तथा विवाहोत्सवों से सम्बन्धित सभी प्रकार के काव्य का निर्माण किया है ।

बुन्देलखण्ड की साहित्यिक परिस्थितियाँ सर्वथा कवियों के अनुकूल रही है और नित्य नये कवियों जन्म दिया है । यहाँ सामान्य व्यक्ति भी प्रेरित होकर कवि स्वयं बन जाता है । आदिकाल से कवियों और साहित्यकारों ने अपनी कर्म भूमि , बुन्देलखण्ड की पावन वसुन्धरा को बनाया । आदि कवि वाल्मीकि, जिन्होंने अष्टादश पुराण और महाभारत-

की रचना की, प्राचीन जनपद के अन्तर्गत अजीना ग्राम की पुण्य स्थली में जन्मे थे । केशवदास ने ओरछा में जन्म लिया था । महाकवि जायसी ने जिसनी को अपनी जन्म स्थली बनाया। गोस्वामी तुलसी दास ने राजापुर तथा अष्ट-छाप के कवि कुम्भन दास, चतुर्भुज दास ने जतनपुर, आचार्य केशव ने ओरछा , लाल कवि ने भड़, पद्माकर ने सागर, बिहारी ने ग्वालियर, कालिदास ने उरई, रामकुमारी चौहानने झाँसी तथा प्रेम में, नवेसिन में केशिन में वसन्त जगाने वाले सरस कवि पद्माकर भट्ट ने बाँदा जनपद में जन्म लिया था । इनके अतिरिक्त पंतुरी, प्रसादीरामव्यास , नाथूराम माहोर, गौरी शंकर द्विवेदी, रसिकेन्द्र, उदयेश, काशीनाथ,चौधरी, मैथलीशरण गुप्त, मुंशी अज-मेरी तथा सियारामशरण गुप्त और वृन्दावन लाल वर्मा आदि विभिन्न उच्च कोटि के कवियों और साहित्य कारों ने बुन्देलखण्ड की पुण्य स्थली में ही जन्म लिया ।

बुन्देल खण्डी साहित्य, लोगों को धार्मिक, वीर और कर्तव्य परायण बनाने की पूर्ण क्षमता रखता है । त्योहारों और अवसरों पर यहाँ के साहित्य का रसास्वादन करके मन प्रसन्न हो जाता है । जब पंतुरी की फागें रंग की फुहारों में खुलती है तो यहाँ का सम्पूर्ण वातावरण चन्द्र - मुखी रंग में खिल उठता है और अपरंग रंजिता ऋतुओं में आत्म सुख की अनु-भूति होने लगती है ।

बुन्देल खण्ड के साहित्य में फागें , गोटें, आरती, लेद, लेव, बिहारी, गारीं, सोहरे, दादरे, भजन, बिंदिया, गीत , आल्हा, पूआगीत आदि विशेष स्थान रखते हैं । बुन्देलखण्ड के ललित साहित्य के कुछ अंश अवलोकनीय हैं ।

ऐगर लेऊ लेओ, अहु फागें,
लाल सनम भर रागें ।

+ + +

आ गये घर नारी में चुकका ,
अन्ध जात में चुकका ।

+ + +

अनवा लेओ धुनरिया सऊँ ,

आज पिया से अड़ूँ । :1:

\+ + +

कवि ब्रह्मानन्द "मीत" ने अपनी रागों का रंग निम्नवत् उड़ेला है ।

"देखत में सांसड़ नीके लगें,

को हैं, काके, का, की के लगें ।

\+ + +

हांके रजो मेना - ब्यवहारे

ये सबे न जायें दर्द के मारे ।

दिलरी, लेद, लावनी के कुछ अंश भी अवलोकनीय हैं ।

गुबयाँ दिन - दिन मेहा बरसे

बरसें बीसीं, बर से दूर ,

जीवन कम - कम सरसे

सरसें ये जो जी, जिन जीवन मूर ।।

\+ + + +

दो बातें हंस के कर लेतीं, :दिलरी :

का दे देतीं, का ले लेतीं ।

\+ + +

चार दिना चन्दा उजियारो

का बिरिया जल कर लेतीं ।

"मीत" मिले मनखान दिखाये,

फिर चेतीं तो का चेतीं

दो बातें हंस के कर लेतीं ।

\+ + +

मोय लल पल बीती रैन : लेद :

पूरब में लाल चुनइया होय चली ।

\+ + +

लेना सखी , अब उठो बौंसा : लावनी :

1:- बंसुरी प्रकाश -संकलन -गोरीशंकर द्विवेदी

होम लगी रन की तैयारी । :2:

मैथली शरण गुप्त की यशोधरा और साकेत तथा वृन्दावन लाल वर्मा की मृगनयनी , झाँसी की रानी और गढ़ कुण्डार जैसे ऐतिहासिक उपन्यास विश्वख्याति प्राप्त कर चुके हैं । यह निर्विवाद सत्य है कि बुन्देलखण्ड में कवियों और लेखकों का प्रेरणा स्रोत यहाँ की प्रकृति , राजनीति और समाज रहा है ।

बुन्देलखण्ड का काव्य कौशल प्रकट करने वाली पंक्तियाँ अवलोकनीय हैं ।

राग में माधुरी आ गई, पंखुरी ने अनुराग की थाम रखा दी ।
काव्य कला अर वेशव ने, कविता की कला को सजोय रखा दी ।
राम लला की कला ने यहीं, अपना बल के है प्रताप दिखाया ।
जीवन धन्य हुआ "रसिकेन्द्र" का पावन भूमि में जन्म है पाया ।।

:2:

1:- श्री ब्रह्मानन्द मिश्र "मीत" के अप्रकाशित साहित्य से और

2:- बुन्देलखण्ड की पावन भूमि -रा0 रसिकेन्द्र जी ।

तृतीय अध्याय

वर्मा जी की सांस्कृतिक विचारधारायें एवं उनके उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय:-

क- (1) वृन्दावनलाल वर्मा का जीवन

(2) वर्मा जी की सांस्कृतिक विचारधारायें

ख- 1- ऐतिहासिक उपन्यास

गढ़ कुण्डार, विराटा की पद्मिनी, मृगनयनी, अचल, झाँसी की रानी, कचनार, टूटे काँटे, महारानी दुर्गावती, कुण्डलिनी, रामगढ़ की रानी, लोहे की दीवार, माधव जी सिंधिया, अहिल्या बाई, ललिता दिव्य, लोधी और कमल दिवस की मुस्कान, अब क्या हो ।

2- सामाजिक उपन्यास:

अकेला मेरा देश, लगन, प्रेम की भेंट, आर पार, कुण्डलीचक्र, मुरचाबन्द, संगम, कभी न कभी, आखेट ।

3- विविध उपन्यास

लोना, उदयगिरि, और ज्योति ।

तृतीय - अध्याय

" वर्मा जी की सांस्कृतिक विचार धारायें एवं उनके उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय "

क- :1: वर्मा जी का जीवन-परिचय ।

1- जन्म :

बुन्देली संस्कृति के अनन्य उपासक एवं उपन्यास सम्राट, वृन्दावनलाल वर्मा का जन्म पौष शुक्ल अष्टमी सम्वत 1945 वि० की पुण्य वेला में, बुन्देलखण्ड की वसुन्धरा के अंतर्गत मऊरानीपुर ग्राम कौलीय शाखी में सम्पन्न हुआ था ।

2- वंशावलि :

वर्मा जी आजन्म कायस्थ परिवार में पैदा हुए थे। उनकी वंशावलि निम्नवत है:

दीवान आनन्दराय"राव" :प्रपितामह :
कन्हैयालाल : पितामह:

अयोध्याप्रसाद:पिता: — बिहारीलाल:चाचा:

वृन्दावनलाल वर्मा — रामनाथ:चाचा:

सत्यदेव वर्मा :पुत्र:

सुभीकान्त :प्रपौत्र : — रमाकान्त : प्रपौत्र:

वर्मा जी के प्रपितामह दीवान आनन्दराय"राव" थे, उनके यहाँ वर्मा जी के पितामह कन्हैयालाल का जन्म हुआ था। कन्हैयालाल के दो सन्तानें थीं, एक वर्मा जी के पिता अयोध्या प्रसाद तथा दूसरे वर्मा जी के चाचा, बिहारी लाल ।

अयोध्या प्रसाद के दो पुत्र हुये-वृन्दावनलाल तथा रामनाथ और वर्मा जी के मात्र एक पुत्र है- सत्यदेव वर्मा, जिनके सुभीकान्त तथा रमाकान्त नाम के दो पुत्र हैं, जिनसे वर्मा जी की वंश की वृद्धि हो रही है ।

3- बाल्यावस्था :

वर्मा जी की बाल्यावस्था, मकरानीपुर एवं गरौठा क्षेत्र में ही व्यतीत हुई। प्रारम्भिक जीवन में ही वर्मा जी में बाल सुलभ चंचलतायें विद्यमान थी। निर्मल निर्झर या मात्र लंगोटा बाँधे गाय की पूँछ पकड़कर, उसके पीछे दौड़ने में उन्हें अत्यधिक आनन्द मिलता था। बचपन से उन्हें, परवारी से कहानियाँ सुनने, नाटक देखने, तथा चिड़ियों को गेंद से दौड़ने का शौक था। धीरे: धीरे: उनकी रुचि कबड्डी, फुटबाल और क्रिकेट खेलों की ओर बढ़ी। व्यायाम और तैरने में भी उन्हें आनन्द प्राप्त होता था। उन्हें बचपन में माँ से अत्यधिक स्नेह मिला। एक बार इन्होंने अपनी माँ के कुछ पैसे चोरी कर लिये थे। रात्रि में उन्हें स्वप्न दिखायी पड़ा कि उनकी माँ का देहावसान हो गया, यह से ही वे निश्चय कर लिये और कभी चोरी न करने का प्रण किया, जिसका निर्वाह उन्होंने जीवन भर किया।

4- शिक्षा :

पाँच वर्ष की अवस्था में, वर्मा जी का प्रारम्भिक शिक्षा का श्रीगणेश हुआ। बुन्देलखण्ड में प्रचलित रीति के अनुसार वर्मा जी को स्नान कराया गया और उन्हें नये वस्त्र पहिनाकर चौक चन्दन पर बैठाया गया। हवन, पूजन और विधान विधान के साथ पाटी पूजन किया गया। वर्मा जी के प्रथम गुरु, पं० विद्याधर दीक्षित ने उनका हाथ पकड़ कर पाटी पर "ओम नम: सिद्धम्: लिखवाया और वर्मा जी की शिक्षा प्रारम्भ हुई। पारिवारिक निर्धनता के कारण वर्मा जी की शिक्षा पर बड़ा दुष्प्रभाव पड़ा। कक्षा आठ तक वे ललितपुर में पढ़े। तदुपरान्त झाँसी में विद्यार्थ मेकडॉनेल हाईस्कूल से कक्षा नौ की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। कुटुम्बियों वर्मा जी के ऊपर आर्थिक संकटों के बादल मंडराने लगे और वर्मा जी की शिक्षा अवरुद्ध हो गयी। उनके पिता ने उच्च शिक्षा को निरर्थक न समझकर उन्हें नौकरी करने का परामर्श दिया, जिससे आर्थिकस्थिति सुदृढ़ हो सके, किन्तु

वर्मा जी की माँ की अभिलाषा थी कि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करें । कुछ समय के बाद माँ के प्रयत्न और प्रेरणा से उन्हें उच्च शिक्षा ग्रहण करने का सौभाग्य मिला। ग्वालियर जाकर उन्होंने स्नातक की उपाधि ली, तत्पश्चात आगरा विक्टर विद्यालय से उन्होंने कानून स्नातक परीक्षा भी उत्तीर्ण कर ली । इसी बीच उनकी माँ का स्वर्गवास हो गया, जिससे उन्हें अत्यधिक पीड़ा पहुँची, किन्तु उन्होंने अपनी माँ के स्वप्नों को साकार कर दिखाया। उन्होंने 16 अगस्त, 1916 से वकालत प्रारम्भ कर दी ।

5- पारिवारिक वातावरण :

वर्मा जी को पारिवारिक वातावरण बड़ा सरल मिला। घरवालों से उन्हें लाड़-प्यार और माँ से स्नेह- अनुराग सदैव मिलता रहा । पूर्वज, उनकी प्रेरणा के स्रोत बने रहे । पिता से उन्होंने अनुशासन का पाठ पढ़ा । बाबा से उनकी आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि की और जीवन संगिनी से प्रेम, श्रद्धा, विश्वास, साहस, उदारता आदि मानवीय निधियाँ पाकर वर्मा जी का जीवन कुन्दन की तरह निखर गया ।

6- दाम्पत्य-जीवन :

बारह वर्ष की अल्प आयु में, वर्मा जी का विवाह हो गया था। उनकी ससुराल तिलपुर के निकट पनारी ग्राम में थी । वर्मा जी का दाम्पत्य-जीवन बड़ा सुखद रहा । उनकी पत्नी से उनके मधुर सम्बन्ध रहे । वे अपनी पत्नी के व्यक्तित्व से काफी प्रभावित थे । उनका विचार था कि उन्हें जो " पत्नी मिली वह उनके जीवन और हार की दीप्ति और शोभा अनोखी । वे अपनी पत्नी को रक्षा करने वाली देवी, असाधारण साहसिक और सेवा करने में अद्वितीय नारी मानते थे"[1]। वर्मा जी को अपनी पत्नी के प्रति गहन आस्था थी । वे अपनी पत्नी को प्रेरणा-स्रोत मानते थे । उन्होंने यह अन्यथा कि वे थी मौन सम्बन्ध

अपनी कहानी -1 पृष्ठ संख्या-16 वृन्दावनलाल वर्मा

"वर्माजी का हिन्दी हस्तलेख"
(पत्र के बाँयी ओर)

3047
11/116

Sahitya Akademi
National Academy of Letters, New Delhi Telegram: Sahityakar Telephone: 40365
President: Jawaharlal Nehru Vice-President: S. Radhakrishnan Secretary: K. F. Krishnan

सा० अ० 725/4/13058 १३ जनवरी १९६०

श्री वृन्दावन लाल वर्मा,
मयूर प्रकाशन,
मानिक चौक, झांसी

आदरणीय वर्मा जी,

इस पत्र के साथ आपकी सेवा में स्पेनिश उपन्यास 'डान क्विगज़ोट' के हिन्दी अनुवाद की पांडुलिपि और उसके अंग्रेजी अनुवाद की पुस्तक इसलिए भिजवा रहा हूं कि कृपया इसे मूल से मिला कर आप अपनी अभिमत सम्मति यथासम्भव शीघ्र ही भेजने का कष्ट करें। यहां यह उल्लेखनीय है कि इसका अनुवाद सीधा अंग्रेजी की इसी पुस्तक से हुआ है। कृपया अनुवाद के सम्बन्ध में अपने स्पष्ट अभिमत से शीघ्र सूचित करें कि यह प्रामाणिक तथा प्रकाशनीय है अथवा नहीं। इस सम्बन्ध में यदि संशोधन की आवश्यकता हो तो भी कृपया स्पष्ट लिखने का कष्ट करें। यदि इसमें पर्याप्त संशोधन अपेक्षित हो तो कृपया यह सूचित करें कि आप इसमें कितना समय लेंगे। अनुवाद की भाषा आदि के सम्बन्ध में भी अपने विचार भेजने का कष्ट करें।

वर्माजी का हस्तलेख

आपकी ओर से उत्तर की प्रतीक्षा में,

सप्रणाम आपका,

(सोम चन्द्र सुमन)
प्रकाशन सहायक

संलग्न:
-यथोक्त-

प्रतिष्ठापित कर दिये थे किन्तु उनकी उदार और सहकारी पत्नीने सामान्य स्त्रियों की तरह उनका विरोध नहीं किया। वर्मा जी ने आत्मकथा में लिखा है कि " जिस प्रकार का " विवाह" मैंने 1944 में अपनी मौन-सन्तुष्टि के लिये किया था, केवल मेरे प्राणों की रक्षा के लिये मेरीपत्नी चुप रही । वह कितनी उदार थी, :1: इसका ज्ञान करना अत्यन्त कठिन है।

7- नौकरी और व्यवसाय :

सर्वप्रथम वर्मा जी ने अध्यापन नौकरि के पद पर, 12 रुपये मासिक वेतन पर कार्य किया । इस नौकरी में उन्हें रिश्वत मिलने लगी, किन्तु उनकी भावनाओं ने इनकार किया और वे विचारने लगे कि" मैं क्रान्तिकारी, "मुंशी जी" बन कर रिश्वत लेने लगा, और जीवन भर यही करता रहूँगा :2: । यह सोच कर शीघ्र उन्होंने यह नौकरीत्याग दी । तदुपरांत उन्होंने 25 रुपये मासिक वेतन पर वन विभाग में, लिपिक के पद पर कार्य किया, किन्तु इसपद से भी वे सन्तुष्ट नहीं रह सके । उन्होंने कानून स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण कीऔर 16 अगस्त, 1918 से वकालतप्रारम्भ कर दी । झाँसी की जिलाभक्षकारी बैंक के व्यवस्थापक के रूप में कार्य वर्मा जी ने समाज की सेवा की ।

8- साहित्यिक प्रेम :

वर्मा जी को, प्रारम्भिकजीवन से ही साहित्य में विशेष रुचि थी । बालकावस्थामें, वे रोचक कहानियाँ सुना करते थे । नाटक देखने का भी उन्हें अत्यधिक शौक था । ऐतिहासिकव्यक्तियों के अध्ययन में भी उन्हें रुचि थी । वे बचपन में ही लघु कथायें और नाटक लिखने लगे थे । माँ सरस्वती की असीम कृपा से, वे उच्चकोटि के साहित्यकार बन गये । ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना करके, हिन्दी साहित्य जगत को उन्होंने अमूल्य और अक्षय निधि सौंपी । घटनाओं का सूक्ष्म निरीक्षण एवं गूढ़ अध्ययन करने के उपरांत ही उन्होंने विभिन्न उपन्यासों

अपनी कहानी -1पृष्ठ संख्या- 267 वृन्दावनलाल वर्मा
-2पृष्ठ संख्या-

की रचना की, जिससे सजीवता और यथार्थ चित्रांकन करने में उन्हें अनुपम सिद्धि मिली और वे उपन्यास सम्राट की उपाधि से विभूषित किये गये। उनके विशाल साहित्य भण्डार का अवलोकन करके, आगरा विश्व विद्यालय ने उन्हें डी०लिट् की उपाधि प्रदान की। भारत सरकार के अतिरिक्त, उत्तरप्रदेश एवं मध्य प्रदेश सरकारों ने भी उन्हें, समय समय पर साहित्य- पुरस्कार प्रदान किये। उनकी साहित्यिक सेवाओं पर उन्हें डालमिया, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग और नागरी प्रचारिणी सभा काशी द्वारा भी सम्मान पुरस्कारों से अलंकृत किया गया। वर्मा जी की कृतियाँ निम्नवत है :-

-1- उपन्यास :

वर्मा जी ने ऐतिहासिक, सामाजिक तथा विविध विषयक उपन्यासों की रचना की। ऐतिहासिक उपन्यासों की श्रेणी में, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, भगवान की सिंहासन्या, मुखमयनी, मधुरानी दुर्गावती, कृष्णार, टूटे काँटे, गढ़ कुण्डार, विराटा की पद्मिनी, भुवन विक्रम, मुसाहिबजू, अहिल्याबाई, रामगढ़ की रानी, ललिताादित्य, सोती आग, कीचड़ और कमल तथा देवगढ़ की मुस्कान आदि उपन्यास उल्लेखनीय हैं। उनके सामाजिक उपन्यासों की श्रृंखला में अचल मेरा कोई, भगन, प्रेम की भेंट, कभी न कभी, आहुति, संगम, प्रत्यागत, कुण्डली चक्र, अब क्या होगा तथा अमरबेल आदि उल्लेखनीय विधायक हैं। विविध विषयक उपन्यासों के अंतर्गत, सोना, उदय-किरण तथा अमर ज्योतिनाथ उपन्यास आते हैं।

-2- कहानी संग्रह :

वर्मा जी ने सही पाँव, शरणागत, कलाकार का दण्ड, मेंहदी का प्यार, अंगूठी का दान, रहिम-समूह तथा सोती आत्माएँ लिखीहैं।

-3- नाटक :

वर्मा जी ने झाँसी की रानी, हंस मयूर, पूर्व की ओर, ललित विक्रम, राखी की लाज, बेबट लिखौने कीडाँ ग, नीलकण्ठ, बीरबल, फूलों की बोली, बाँस की फाँस, निस्तार, मंगलसूत्र तथा देखा-देखी नाटकों की रचना की है।

एकांकी :

वर्मा जी द्वारा रचित एकांकी नाटकों में बनेर, काश्मीर का काँटा, लो भारत पंजो लो, पीले हाथ, अहसदारशाह, समुद्र तथा तीन एकांकी इ. महत्वपूर्ण है।

-5- स्फुट :

वर्मा जी की स्फुट रचनाओं में, बुन्देलखण्ड के लोकगीत, गुप्त के गीतों में :जीवनी:, भारत पद है, अमरीकवाणी:आत्म कथा: , तथा 1857 के अमरवीर के आदि हैं।

9- देशभक्त :

जो वसुंधरा में जन्म लेकर, एक एक दिन अवश्यमेव पंचत्व को प्राप्त होता है किन्तु वे महापुरुष धन्य हैं, जिनका जीवन त्याग, तपस्या, बलिदान तथा मातृ भूमि की सेवा में समर्पित होता है। उन्हीं महापुरुषों की श्रेणी में महेश कुमारवमलाल वर्मा का नाम आता है, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन बुन्देलखण्ड की सेवा में व्यतीत किया और 23 फरवरी, 1969 की वेला में इस असार संसार से सदा के लिये विदा माँग ली । वे आज भी अमर हैं। इतिहास उन्हें कभी विस्मृत नहीं कर सकेगा ।

क- :2: वर्मा जी की सांस्कृतिक विचारधारायें :

वर्मा जी, आदि भारतीय मनीषियों की तरह उच्च आदर्शों एवं मान्यताओं पर अडिग रहने वाले व्यक्ति थे। वे सदा जीवन उच्च विचारों में विश्वास रखते थे । उनके हृदय में जन कल्याण एवं विश्व बन्धुत्व की भावनायें विद्यमान थी। बुन्देली भूमि पर जन्मे, वे एक ऐसे पुरुष रत्न थे, जिनका जीवन साहित्यिक साधना और जन सेवा में व्यतीत हुआ। सम्पूर्ण भारत को उन्होंने, एकता के रूप में आँका और वे जन साधारण के सर्वांगीण विकास के लिये सदैव प्रयत्नशील रहे। वर्मा जी भारतीय संस्कृति के पुजारी एवं बुन्देली संस्कृति के अनन्य भक्त थे।

उनका मत था कि " धन की गिनती को बढ़ाना और गरीबी की गिनतीको कम करना-विचारकों, राज नेताओं, वैज्ञानिकों, साहित्यकारों और कलाकारों का ध्येय होना चाहिये ।"जन जीवन को समृद्धशाली बनाने के लिये उन्होंने दस मंत्र दिये, जो निम्नवत :1: है।

/1/ " हर व्यक्तिको भरपेट खाना मिले । उसे अपने परिश्रम का पूरा पुरस्कार उपलब्ध हो। जब वह परिश्रम करने में असमर्थ और अशक्त हो जाये, तब उसके भरण-पोषण का प्रबन्ध किसी योजना के अन्तर्गत हो, जो उसे अपने पैर खड़ा कर दे ।

/2/ " हर एक के रहने के लिये मकान की सुविधा हो ।

/3/ "ओढ़ने-पहनने के लिये किसी को कपड़े की कमी न हो ।

/4/ " सब स्वस्थ और स्वच्छ जीवन बिता सकें ।

/5/ " हर एक के लिये कम से कम शिक्षा का उत्तम प्रबन्ध हो जिससे अपनी भाषा में पढ़ा सके और सहज-गम्य पुस्तकें पढ़ सके ।

/6/ "हर एक को, उसकी योग्यतानुसार मिलता रहे जिससे अपने समयको उपयोग मनोरंजन या किसी कला के अनुशीलन में लगा सके ।

/7/ "बच्चों के विकास और अनुशासन पर पूरा ध्यान दिया जाना चाहिये ।

/8/ "हरव्यक्ति को, जो जिज्ञासु हो, ज्ञान मिलने की व्यवस्था होनी चाहिये।

/9/ " समाज का ढाँचा ऐसा बनाना चाहिये और चलाना चाहिये जिसमें, जिसमें धर्म, जिसमें जातिभेद और कर्म एक दूसरे को आगे बढ़ाने बिना, चलाये रहें, निश्चिन्तता से साथ एक होकर रह सकें ।

/10/ " व्यक्तिके शरीर को प्रकृत एवं स्वस्थ सक्षिप्त एवं मन को संयमी बनाये रखने की योजनायें कार्यान्वित हों ।

:2:

गांधी जी की सांस्कृतिक विचारधारा अपनी प्रकार थी । संस्कृति के सम्बन्ध में उनके अपने मौलिक विचार थे। उनके विचार में- अहंकार और विद्वेष के परिस्थान में भी प्रकृतिस्थ और निवृत्तिका सामान्यतय आधारित हो सकता है ।उनका विचार था विश्वास और अध्यात्म का सम्बन्ध कोई छुपा सकता है कि, जबकि कारण और कर्म के अटूट सम्बन्धों को ध्यान में रखा जाये, उनका विचारों का परिस्थान

किया जाये तथा परम्पराओं एवं योगाभ्यास द्वारा दोनों को समन्वित ।
गांधीजी के विचारानुसार विज्ञानतथा अध्यात्म के दृष्टिकोण को समझते रहने के अ त
से विज्ञानकी उन्नतिके साथ ही भौतिक जगत में शान्ति स्थापित की जा सकती
है । समा जी ने अन्यविचार सूत्रस्थ में स्वतन्त्रहिते, जो निम्नवत है ।

:1: 000 श्रद्धा औरविश्वास की अपरिहार्य जरूरत है ।

:2: 000 प्रकृतिसे सायुज्य और परमात्मा के प्रति श्रद्धा एवं निष्ठा का
संयोग होना आवश्यक है ।

:3: तन और मन को स्वस्थ रखाया जाये।00 लोग प्रसन्न चित्त रहें और
सफलता-विफलता के क्षणों में सन्तुलन बनाये रखें ।

:4: दूसरों को नोचने-खसोटने कीप्रवृत्ति छोड़दीजानी चाहिये ।

:5: निःस्वार्थता,पुरुषार्थ और योग्य हीनता/ या अधिकता/ में सहयोग
रखाया जाये ।

:6: कोई लाभ पाकर " फूला न समाये,कोई हानि हो तो उससे अपने
को कुचल न डाले हैं ।

:7: क्रोध पर काबू रखने काप्रयत्न बहुत आवश्यक है ।

:8: "सिर मुड़ाकर" किसी लाभ-लोभ के पीछे परमात्मा,धर्म को भरोसा
देना है । सेतुकी आकांक्षा सफल होती की बहुत कमे,निराशा
आ टूटती है," सिर मुड़ाते ओले पड़ते हैं," क्रोध,मति-विभ्रम,बुद्धि
विनाश न जाने कितने दूत आ जुटते हैं ।
:1:

शील और विनम्रता, संस्कृति का निचोड़ मानने वाले समा जी ने, दुखी,
अपाहिज और रोगियों के प्रति अत्यन्त सहानुभूति करती । वे सभी धर्मों और
जातियों के प्रति उदार दृष्टिकोण अपनाते रहे । आपसी कलह और ईर्ष्या,द्वेष
उनसे कोसों दूर रही । उनका विचार था विविधताओं कोसमझने में तथा भारतीय
संस्कृति को ठेस पहुंचे और जीवन स्तर में कोई विशेष वृद्धि न हो,तो ऐसा
करना सर्वथा अनुचित है। भौगोलिक परिस्थितियों से अनुकूल रहन-सहन को वे
प्राथमिकता देते थे ।

वर्मा जी के अन्तर्मन में, अपनी मातृ-भूमि के प्रति गहन-आस्था एवं असीम अनुराग विद्यमान था। उनका विचार था कि" बिन्ध्याचल की कंकरीली माटी और लहरों के पानी से मेरी माटी बनी है । बेतवा के पानी ने उसमाटी को संजोकर आकार प्रकार दिया । बेतवा से मैं और बुन्देलखण्ड कभी अलग नहीं हो सकते।"[1]

वे मातृ-भूमि के लिये जिये और उसी के लिये प्रेरणा स्रोत बने रहे। उनका विचार था कि " मातृ-भूमि, तेरे जो प्रदेश हैं वे रोग,भय और भाव से रहित हों लोक और लोग तेरे लिये अपने प्राण और सब कुछ बलिदान करने को प्रस्तुत रहें।"[2] वर्माजी में ' ई अभिनवीय साहस विद्यमान था,उन्होंने लिखा है कि" मैं ' बुन्देलखण्ड का सैनिक पत्रकार हूँ,जिसपर बड़े-बड़े भूकम्पों तक का असर नहीं होता ।"[3]

नारी के प्रति वर्मा जी का दृष्टिकोण अत्यन्त उदार रहा है। नारी विद्या के क्षेत्र में हो,जिन्तु मर्यादित नारीजीवन ही उन्हें प्रिय था। उनका विचार था कि लक्ष्मी,नारी का अन्तःपुर है । मर्यादित नारी ही सीता-सावित्री बन कर परिवार,समाज और राष्ट्र का उत्थान कर सकती है तथा मां,बहिन,पुत्री और पत्नी के दायित्वों का निर्वाह कर सकती है। पाश्चात्य सभ्यता में ' पली अमर्यादित आधुनिकनारी के प्रति उनका तीखा व्यंग दृष्टव्य है," सिर उघाड़े,बालों का जूड़ा लटकाये,कन्धे तक नंगे बाँह किये ,सड़कों पर थिरकता चाल ढंग लोग क्या जाने। जरा बंधिया,चूड़ी बाँह में पड़े सब पता लगे ।"[4]

नारी की आर्थिक परतंत्रता पर उन्होंने चोट व्यंग्य किया। उन्होंने नारी वर्ग का मौन उत्थान चाहा और दहेज जैसी कुप्रथा का कटकर विरोध किया।

कर्तव्य पराधनता पर भी वर्मा जी ने विरोध जताया। उनका विचार था कि " यदि हमारे दायें हाथ में ' धर्म है,तो विजय बायें हाथ में बनी रहेगी।"[5]

वर्माजी ने अपनी धारणाओं को व्यक्त करते हुये बताया कि " मुझे केवल इतना सोचना है कि विवेक के साथ प्राचीन को जानों,पहिचानों और समझो,

---

अपनी कहानी	-1 पृष्ठ संख्या- 382	वृन्दावनलाल वर्मा
भूलन सिंहम	-2 पृष्ठ संख्या- 60	"
अपनी कहानी	-3 पृष्ठ संख्या- 217	"
जंगल में रा कोई	-4 पृष्ठ संख्या-14/15	"
भूलन सिंहम	-5 पृष्ठ संख्या-174	"

वर्तमान को भलीभाँति देखो, परखो और उसमें बलो और भूत तथा वर्तमान के सहायता से भविष्य को प्रबल बनाओ । भयंकर आँधियों के आगे कभी न झुको । जीवनकी लहरों परदृढ़ता के साथ आरूढ़ रहो। जो कुछ सीखा है, उसे पुरुषार्थ के साथ सत्य, शिव और सुन्दर की दृष्टि से कार्यान्वित करो ।

:1:

वर्मा जी के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय :-

अ - 1- ऐतिहासिक उपन्यास :

गढ़ कुण्डार :

सर्वप्रथम रचित, वर्मा जी का यह एक वृहत ऐतिहासिक उपन्यास है, जिसमें बुन्देला राजपूतों की संस्कृति का वर्णन किया गया है। उपन्यास की मूलकथा खजुराहो लोकनपाल बुन्देला की कन्या हेमवती तथा कुण्डार के राजा खरगत सिंह खंगार के पुत्र नागदेव की अनन्य प्रेम तथा पर्व बुन्देलों के छल से होने वाले खंगारों के विनाश की रोमांचकारी कहानी है। अन्य प्रसंगों एवं उपकथाओं में अन्निमदत्त-मानवती व तारा और दिवाकर के प्रेम सम्बन्धों, अर्जुन कुम्हार की स्वामी भक्ति, पंवार और पड़िहारों का परस्पर युद्ध, हेमवती का जाति अहंकार, धर्म पतित नाग का प्रतिशोध और हेमवती के हरण की योजना, अन्निमदत्त कालिंजरासन एवं उसका कारागृह, तारा कालिंजर प्रेम एवं दिवाकर के प्रतिनायकी प्रीति, वर्म वैद्य चिकित्सा, हकनवरीम की स्वामिनिष्ठा, महबजर्री बुन्देलि के राजाओं का आन्तरिक कलह एवं बुन्देलों द्वारा बुन्देलि को स्वतंत्र कराने के लिये प्राण-पण से जुट जाना, जातिवाद की प्रबल भावना, खंगारों की सुरा-प्रियता और तत्कालीन सांस्कृतिक विसंगतियों का यथार्थ और सजीव चित्रण, गढ़ कुण्डार में उपलब्ध है । बुन्देलखण्ड के प्रति असीम अनुराग रखने वाला, प्रमुख पात्र दिवाकर, वर्माजी काफी प्रतिरूप है ।

विराटा की पद्मिनी :

प्रस्तुत उपन्यास, एक ऐतिहासिक उपन्यास है, जिसमें दतियों के अपराजेय स्वाभिमान, त्याग, बलिदान और उनकी कर्तव्यनिष्ठा की कहानी है। कुमुद को मोक्ष देवी कारागार मान कर भुगते थे। उसने सतीत्व रक्षा हेतु जल समाधि ले ली थी।

भुवन विक्रम -1 पृष्ठ संख्या-174 वृन्दावनलाल वर्मा

उपन्यास में, मुसलमान शासकों की विलास प्रियता, सोमसिंह का पराक्रम एवं उनकी प्रकृति, कुन्दर सिंह का क्रोध, छोटी रानी का कपटपूर्ण व्यवहार एवं षड्यन्त्रकारी योजनायें, देवीसिंह की वीरता एवं अद्भुत पराक्रम, राम दयाल की अवसरवादिता तथा चापलूसी, गोमती का स्वाभिमान आदि विभिन्न घटनाओं का समावेश मिलता है। सम्पूर्ण उपन्यास रोचक एवं सरल बन पड़ा है ।

मुरादिजयू :

यह एक लघु ऐतिहासिक उपन्यास है, जिसमें सामान्य भारतीय संस्कृति को प्रकट किया गया है। उपन्यास में, दतिया राज्य के अंतर्गत टेकरा के मुरादिजयू दलीप सिंह की नैतिक उदारता की चरम सीमा का वर्णन किया गया है। जातिवाद से परे रहकर वे पूरन नाहर को भी गोदी लगाते थे । अपराध करने पर भी मुरादिजयू ने अपने सैनिकों को राज्य दण्ड से बचाने के लिये भरसक प्रयत्न किया। उनके सैनिक भी मुरादिजयू पर जान छिड़कते थे । चरवाहारीजाती का कवि- रघुराज, नारी वर्ग के लिये आदर्शोन्मुखप्रेरणा का स्रोत बना रहता है ।

कुमार :

प्रस्तुत उपन्यासएक ऐतिहासिकउपन्यासहै, जिसमें दलीपसिंह राजा का कलावती के साथ अटूट विवाह, राजा के चचेरे भाई मानसिंह की स्वार्थ परता और लोलुपता, कुमार का अनुपम त्याग और अतीव्र वीरता, दलीप सिंह का व्यवस्थाओं के आधारों के निर्माण की प्रस्तुति दी गयी है । देश में दासियों का लेना प्रतिबन्धित गया है । राज्य लिप्सा और लोलुपता एक भाई को किस हद तक गिरा सकती है, इस घटना का भी उल्लेखकियागया है। अन्तत: में महल के उपेक्षित लोगों की आध्यात्म भावनाओं को जागृत करने में पूर्ण सफल रहे हैं। दलीप का स्वास्थ्य ठीकहो जाना और उसकी स्मरण शक्ति पुन: लौट आना एक अप्रत्याशित घटना है। उसे अपनाराज्य मिल जाता है और कुमार के साथ सुखपूर्वक रहने लगताहै। मान सिंहऔर कलावतीके अपराधों को क्षमा करके, राजा दलीप सिंह, अपनी गरिमा बनाये रखते हैं । कुमार का अद्भुत पूर्व त्याग, अविस्मरणीय है ।

झाँसी की रानी :

यह वर्मा जी का एक लोकप्रिय उपन्यास है, जिसमें झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की जीवन-झाँकी प्रस्तुत की गयी है। रानीजी ने देश की स्वतन्त्रता के लिये अंग्रेजों से लड़ी-जूझीं और वीर गति को प्राप्त हुई। रानी ने प्रारम्भिक जीवन से ही अस्त्र-शस्त्र चलाना, घुड़सवारी करना, कुश्ती लड़ना, घुड़सवारी आदि का अभ्यास किया था, सुन्दर रानी बनकर झाँसी आने पर उन्होंने सुन्दर, मन्दर, काशी, मुक्ताकारिन, अखिराम्बु आदि वीर नारियों की एक फौज तैयार कर ली थी, जिसने युद्ध में अंग्रेजों के दाँत खट्टे किये। रानी में धार्मिक और आध्यात्मिक भावना विद्यमान थी। वे गीता के कर्मवादी सिद्धान्त को मानती थी। अपने पति राजा गंगाधर राव के मृत्योपरान्त भी उन्होंने हार नहीं मानी और डट कर अंग्रेजों से युद्ध करती रहीं। भले ही उन्हें, सफलता न मिली किन्तु उन्होंने अपने पराक्रम, देशप्रेम और वीर भावना से लोगों को देश के लिये संघर्षरत रहने की प्रेरणा अवश्य प्रदान की। उपन्यास में, खड़ी-बुन्देली का उपयोग बड़े भावपूर्ण स्थलों में अवश्य किया गया है। बुन्देली भाषा का सौन्दर्य भी उपन्यास में बढ़ा दिया है। उपन्यास में देशप्रेम, त्याग, बलिदान, करुणा, धर्मपरायणता, कर्तव्यनिष्ठा आदि भारतीय सांस्कृतिक तत्वों की झाँकी प्रस्तुत की गयी है।

मुसलमानी :

प्रस्तुत उपन्यास में मुसलमानी का पराक्रम, शिकारी प्रवृत्ति, संयम शिथिलता और कर्तव्य परायणता को दर्शाकर उसका चरित्र उभारा गया है। उपन्यास में मानसिंह तोमर के राज्य की उपलब्धियों, लाखी और मिर्जी कहानियाँ, कादर, लोदी, ग्यासुद्दीन के युद्ध, लाखी और अटल की प्रणय कथा, नर-नारियों की जीवन-शैली, बोधन-राजा की निर्मम हत्या, लाखी रानी और अटल का अन्तिम अभिलाष, सुमनोहिनी की ईर्ष्या, मान सिंह की कला-प्रियता एवं अनेक भावनाओं का निर्माण, नसीरुद्दीन द्वारा अपने पिता ग्यासुद्दीन को विष देकर मार डालना और गद्दी पर बैठजाना,

पारिवारिक, तत्कालीन सांस्कृतिक सजगता और शिक्षा जीवन मान्यता के समक्ष प्रस्तुत करना, सच्चा प्रकृति प्रेम, जन मंगल की भावना, सत्यनिष्ठा और उत्सवों का विशद रूप से वर्णन किया गया है। सम्पूर्ण उपन्यास सरल और रोचक है ।

रामगढ़ की रानी :

प्रस्तुत उपन्यास एकमात्र ऐतिहासिक उपन्यास है, जिसमें 'रामगढ़ की रानी अवन्ती बाई के त्याग-प्रेम, त्याग और बलिदान का वर्णन किया गया है। रानी में समन्वय की भावना, देश के प्रति सच्चा अनुराग, कुशल सैन्य संगठन तथा सेना के संचालन की अद्भुत क्षमता विद्यमान थी । वह शत्रु के दांत को भी ममता पूर्वक गले से लगाना जानती थी । रानी देश के लिये जन्मी, देश के लिये जीवित रही और देश के लिये ही प्राणोत्सर्ग करके शहीद हो गयी ।

दुर्गा बाई :

प्रस्तुत उपन्यास में 18वीं शताब्दी की सामाजिक राजनीति उजागरित हुई है। मुगल सम्राटों की विलास प्रियता, सुरा-प्रेम, आन्तरिक कलह और युद्ध विभीषिकाओं का सजीव चित्रण, उपन्यास में किया गया है। गोंडवाना की जनजातियों और उनके द्वारा किये जानेवाले अत्याचारों का मार्मिक उल्लेख है। रोमी और मोहन के माध्यम से जीवनी कहता, ग्रामीणों की समस्याओं, युद्ध विजय के उत्सवों, नृत्य-गान, शृंगारों और भी इस काव्य में प्रेम, भूल-प्रेतों की कल्पना, मुरलार्थ की लालसा, चिन्ता मन की छटपटाहट, भी इस द्वारा मुरलार्थ की प्रदत्त सहयोग, शृंगारों के प्रणों की रक्षा, मुरलार्थ की धार्मिक आस्था एवं त्याग, रोमी में अप्रत्याशित परिवर्तन तथा मुरलार्थ के अन्याय में महादेव शाह की विजयता आदि घटनाओं को उपन्यास में संजोया गया है ।

दुर्गावती :

प्रस्तुतउपन्यास में, वीरांगना महारानी दुर्गावती के शौर्य की कहानी, का मार्मिकशब्दों में वर्णन किया गया है। दुर्गावतीका हृदय-सौन्दर्य, प्रेम, त्याग और बलिदान की मंगल मूर्ति थी । वह शक्ति की प्रतिमा थी। शरीर पर पांच वर्षों तक उसने अपने गोंडवाने की तन-मन से रक्षा की थी । जाति भिन्न होने पर भी बेटी की इच्छानुसार उसके पिता ने उसका विवाह राजा दलपतिशाहसे कर दिया था पति की मृत्यु के पश्चात्‌ शासन सूत्र अपने हाथ में लिया और अकबर जैसे सम्राट

को भी भुलाती थी । वह अन्तिम समय तक शत्रुओं से लड़ती-जूझती रही। गोपाल जैसे पापियों को भी क्षमा कर देना उसकी महानता का परिचायक है। दुर्गावती ने जन कल्याण कारी योजनाओं कार्यान्वित किया । रानमैरी,प्रेमी प्रिय सहचरी को समादर देने वाली वीर नारी दुर्गावती," कार्य साधयेयं वा शरीरं पातयेयम् का सिद्धान्त को मान कर,अपने दायित्वों का निर्वाह करती पूर्व अपने देश की रक्षा के लिये मर मिटी किन्तु आज भी वह अमर है और सदा अमर रहेगी ।

भूषण विक्रम :

प्रस्तुत उपन्यास में वैदिक युग की कथा प्रस्तुत की गयी है । अयोध्या के राजा रोमक का भाई बन्धुकारियों द्वारा राज्य से निष्कासन ,आश्रम व्यवस्था,दास प्रथा भूषण का अनुशासित जीवन,शोण्य वशिष्ठ के उपदेश, शुद्र कपिंजल की समस्या, गौरी का प्रेम आदि महत्वपूर्ण प्रसंग है। उपन्यासमें अनैतिक कार्यों के प्रति उदासीनता एवं पराक्रम की भावना को प्रतिष्ठापित किया गया है। प्रजावत्सल रोमक को सत्कर्मों के द्वारा पुन: राज्य मिलना,मोक्ष,विमाली और धीरसिंधु के कार्य्य असफल होना और गौरी का भूषण के साथ विवाह सम्बन्ध स्थापित होना भी उपन्यास की महत्व पूर्ण घटनायें हैं । शत्रुओं और दासों के प्रति उदार दृष्टिकोण अपनाया गया है और अनुशासन परिपोषण किया गया है ।

माधव जी सिन्धिया :

प्रस्तुतउपन्यास में माधवजी सिन्धिया के देश प्रेम और उनकी सांस्कृतिक एकता की भावना पर विशेष बल दिया गया है । उन्हें एक आदर्श नायक का स्वरूप प्रदान किया गया है। उपन्यास में तत्कालीन समाज में व्याप्त कलेश व वैमनस्य की भावनाओं को उजागर किये,सामन्तवादी ढांचे का उल्लेख किया गया है। इसको दूर रखकर माधव जी सिन्धिया ने अपना जीवनपथ प्रशस्त किया। उपन्यास में तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों का भी उल्लेखनीय है, जिनमें दिल्ली की गद्दी पर अमीरों की अस्थायी हुकूमत,अंग्रेजों के घातक प्रयास,जाटों का संगठन,विद्रोह की कामुकता,निजामशाही,विदेशियों का आतंक,राजपूतों का आपसी कलह,मराठों की शक्तिशालिता,आदि उल्लेखनीय हैं। इन सब परिस्थितियों से लड़ते-जूझते हुये अपने देश और अपनी संस्कृतिकी रक्षा के लिये माधव जी सिन्धिया ने पूर्ण संकल्प किया था । उपन्यास में गन्ना बेगम की प्रणय कथा तथा उसका अनुपमपूर्व रूपाम नारी जाति को गौरवान्वित करता है ।

अब क्या हो :- प्रस्तुत उपन्यास एक ऐतिहासिक उपन्यास है, जो अभी तक प्रकाशित नहीं हो सका । यह उपन्यास अधूरा रह गया है, जो पृष्ठसंख्या 1 से प्रारम्भ होकर 180 तक ही लिखा जा सका । इस उपन्यास में मराठा छत्रपति शिवाजी के राज्यकाल को दर्शाया गया है। शिवाजी का सबसे बड़ा पुत्र शम्भू जी और शिवाजी, सुरा सुन्दरी, धन ही जीवन का सार समझने वाला पथभ्रष्टकारी पुरुष है, जिसकी कामुकता का शिकार अनेक युवतियाँ और नारी बनी। अतः इसके नष्ट होने का कोई साथ ही नहीं उन्होंने मृत्यु का आलिंगन कर लिया था । कवि कलश भी शम्भू जी का सहयोगी था, जो छत्रपति का शत्रु दिल्ली के मुगल बादशाह से मिल जाता है उपन्यास में छत्रपति शिवाजी के साथ भी सुखे जीवन सुख में उसकी हार, उसके द्वारा जनता के साथ लूटपाट एवं व्यभिचार शिवाजी की मृत्यु, राजा राम को शम्भू जी द्वारा कैद करना तथा सोयराबाई के षड्यंत्रों की हत्या आदि सभी घटनाएँ उपन्यास में क्रमबद्ध है। दुराचारी शम्भू जी और उसके मित्र कविकलश को औरंगजेब द्वारा कैद किया जाना तथा औरंगजेब द्वारा गर्म लोहे की छड़ों से उनकी आँखे फोड़वाया जाना और कविकलश की जीभ काट ली जाना, तदुपरान्त उन दोनों को मौत के घाट उतार दिया जाना इसकी प्रमुख घटनाएँ है।

अहिल्याबाई :

प्रस्तुत उपन्यास में अहिल्याबाई की सम्पूर्ण जीवन झाँकी प्रस्तुत कीगयी है। उनकी न्याय-प्रियता, कर्तव्य-परायणता, शांति-प्रेमिका, देश के प्रति समर्पण, जन-कल्याण, शौर्य, साहस, पराक्रम आदि का आद्योपान्त चित्रण उपन्यास में उपलब्ध है। मल्हार की दुष्ट प्रकृति को उजागर एवं उसे अन्य अपराधों से बचाने के लिये वे सदा प्रयत्नशील रही । उन्होंने गलत राजनीति कुशल तांबू की मनोवृत्ति बदल दी थी और उसे शूर-वीरता से महामानव बना दिया था। जन हित के कार्यों में तथा तीर्थ-भ्रमण करने में उन्हें आत्मसन्तोष मिलता था। उनकी धारणा में आती थुई सिन्धुरी उनकी परम शक्ति जन थीं । वे त्याग, तपस्या और न्यायकी देवी थीं ।

ललितादित्य :

यह प्रभाजी का ऐतिहासिक उपन्यास है, जिसमें कश्मीर के नरेश ललितादित्य की गौरवशाली गाथा, ऐश्वर्य और पराक्रम को दर्शाया गया है। उपन्यास में युद्ध अभियानों का बाहुल्य है। ललितादित्य ने अनवरत साल वर्षों तक युद्ध करके अनेक भू-भाग विजित किये और भारत को एकता के सूत्र में बाँधने का प्रयास किया। उपन्यास में ललितादित्य की कला-प्रियता का विशद अंकन किया गया है। वे जनहित के कार्यों और दायित्वों के निर्वाह में सदा तत्पर रहते थे ।

कीचड़ और कमल :

प्रस्तुतउपन्यास में महोबा और कालिंजर के भग्न मन्दिरों की अनुपम झाँकी प्रस्तुत की गयी है। प्रमिला के रूप में पुर सुन्दरी के जीवन में विविध घटनाओं को दर्शाया गया है। छेड़ती की प्रथा को हेय मानकर नायक और प्रमिला को दाम्पत्य बन्धन में बाँध कर उपन्यासकार ने एक आदर्श प्रतिष्ठापित किया है। रथयात्रा, शिकार, परिभ्रमण, देव दर्शन, देव नृत्य आदि से उपन्यास रोचक और सजीव बन पड़ा है ।

देवगढ़ की मुस्कान :

प्रस्तुत उपन्यास में देवगढ़, पूर्वर्ग, चन्देरी आदि के उत्कृष्ट मन्दिरों की झाँकी प्रस्तुत की गयी है। कुबेर दत्ता, नागदत्ता और शान्ती का नृत्यगान, शामराल का

शेखावाटी डाकुओं सिंह कालिकोट, प्रियम्वदा की उग्र प्रवृत्ति, कुन्दा और सिन्धी की ईमानदारी और राजा विजयपाल सिंह का न्यायप्रियतापूर्ण है । महारानी की अवसरवादिता, जैन मुनि रत्नगिरि के उपदेश भी कम महत्व नहीं रखते । उपन्यास में जातिवाद का खण्डन किया गया है । राज्य संचालन के अंतर्गत राजा के दायित्वों और कर्तव्यों का पूरा लेखाजोखा प्रस्तुत किया गया है । छोटे-छोटे राजाओं के कठपुतलियों और लूटपाट की प्रवृत्तियों को भी दर्शाया गया है ।

७T- 2- सामाजिक उपन्यास :

अचल मेरा कोई :

प्रस्तुत उपन्यास में सामाजिक वातावरण की झाँकी प्रस्तुत की गयी है। शिक्षित समुदाय नारी की स्वतन्त्रता की पक्ष धरता है किन्तु सहनारी को शंकालु दृष्टि से देखता है। वह अपनी इच्छाओं को काट कर रखने में असमर्थ रहता है । पुत्री को आत्म हत्या करने की पुकार मिल जाती है। उपन्यास में निर्धन का विवाह विवाह, एक सामाजिक प्रश्न है। देश के लिये सत्याग्रह करने की भावना भी उपन्यास में दर्शायी गयी है ।

लगन :

प्रस्तुत उपन्यास में खेत दोल न देने के कारण बापू की चिंता न करना और पति-पत्नी को नारकीय जीवन व्यतीत करने हेतु विवश करना, पुनर्विवाह का सम्मान लेना और अपनी जिद पर अड़े रहना आदि प्रमुखतः तथ्य हैं। देश सिंह का तूफानी, बेलवा नदी में तैरना और रामा जाजाराम अनुराग पहुँच जाना भी महत्वपूर्ण घटनायें हैं । अन्ततः अहेज के लोभी दिनेश को पश्चाताप करना पड़ता है और पति-पत्नी का मिलन हो जाता है ।

प्रेम की भेंट :

प्रस्तुत उपन्यास में, हीरज और सरजाती के अनुपम मूक वेदनामय प्रेम की झाँकी प्रस्तुत की गयी है। हीरज, सरजाती से मनही मन प्रेम करता था किन्तु सरजाती की माँ विधवा भाभी, हजारी चाहती थी कि हीरज का प्रेम मात्र उसे प्राप्त हो। तरह तरह के प्रयत्न करने पर जब वह असफल रही, तो विषपान करके अपनी जीवन लीला समाप्त करनी चाही किन्तु दुर्भाग्यवश विष मुनशीर को हीरज ने डाल दिया

और उसने सहयोगपूर्वक कर दम तोड़ी । उसके गम में सरस्वती भी अपना शिकंजा कसे बैठी । वह अन्तिम समय तक हीरा द्वारा लाई गयी "प्रेम की भेंट" बड़ी साड़ी को अपने सीने से लगाये रही ।

अमरबेल :

प्रस्तुत उपन्यास में अंजना और देवराज के द्वारा अफीम के अवैध व्यापार करके काला धन कमाने और जमींदारों तथा कारिन्दों के अत्याचारों को दर्शाया गया है। ग्रामोत्थान हेतु सरकारी समितियों के निर्माण, कृषि यन्त्रों की अनिवार्यता प्रौढ़ शिक्षा के महत्व छोटी के अन्धसाधनों की आवश्यकता और तस्करिता पर विशेष बल दिया गया है ।

गुण्डों की जड़ :

प्रस्तुत उपन्यास में सलिल सेन जैसे दार्शनिक युवक की मनोभावनायें दर्शायी गयी हैं। कुंजा और बेनू पर ढाये जाने वाले जमींदारों के अत्याचारों, भूषण की कामुकता तथा अर्चित की वर्गचेतना का उल्लेख मिलता है। वर्मा जी ने वधू पत्नी प्रथा को हेय माना है। उन्होंने भूषण का दूसरा विवाह रोककर केवल उसकी साली पूजा को टिकट से वंचित किया गया सलिल सलिल कुमारी को भी सोसिया ढाढ से मुक्ति दिलायी ।

प्रत्यागत :

प्रस्तुत उपन्यास में हिन्दू धर्म के कट्टरपन का उल्लेख किया गया है। मंगल की मौसाजियों द्वारा कलमा पढ़कर पानी पिलाये जाने और मुसलमान घोषित कर देने पर वह चाँदा नगर के पण्डितों के लिये चर्चा का विषय बन गया । वे विधर्मी को पुनः धर्म में लाने को तैयार न थे। जैसे तैसे प्रायश्चित कराने पर तैयार हुये किन्तु मंगल द्वारा पंचगव्य की अवहेलना करने पर बात बिगड़ गयी और समाज बढ़ गया । पूजा वर्मा आगे आया और भगवान के दर्शन कराके मंगल को समाज और धर्म में मिला दिया । वैसी प्रकोप दर्शाने के लिये पण्डित ने मन्दिर की मूर्ति उलट दी किन्तु अन्त में उन्हें ही अपने किये का भोगना पड़ा ।

संग्रह :

प्रस्तुत उपन्यास में विवाह के अवसरों पर होने वाले उपद्रवों और व्यंगों के दुष्परिणामों को दर्शाया गया है। इसी प्रकार छोटी छोटी बातों उग्र रूप धारण करलेताहै विन्याय हेतु अदालतों कीचौखटे पकड़नी पड़ती है। जाति के कारण रामचरण को समाज में सम्मान नहीं मिल सका,स्थान प्रवेश न मिलने और जाति भेद छुआ नीच की भावना से जानकी अपने ससुराल के सुख से वंचित रही । लालमन की अस्थुता,क्लेश के दिनों में रामचरण और केशव की सेवा और सम्पत के कुकृत्यों को भी उपन्यासमें दर्शाया गया है। अन्त में सम्पत ने अपनी पत्नी से क्षमा याचना कर ली थी।

छोटी कहानी :

प्रस्तुत उपन्यास में देवधू और लछमन जैसे मजदूरों की जीवन झाँकी प्रस्तुत की गयी है। सेठ की लोलुपता और लीला के द्वारा अपने वासनात्मक शोषण करने का उल्लेख किया गया है।लछमन और देवधू का सम्बन्ध भाई जैसा था। वे पगड़ी-बदल भाई बनजाते हैं। देवधू ने अपनी बहुरानी पर पानी फेर कर लीलाका विवाह लछमन से कराके एक आदर्श प्रतिष्ठापितकियाहै। सम्पूर्ण उपन्यास में मजदूरों की समस्याओं को दर्शाया गया है ।

आदत :

प्रस्तुत उपन्यासमें जीव की जीवन झाँकी प्रस्तुत की गयीहै। आस्थाखण्डा का-सटघाट जीव एक दिन घर से भागजाता है और कानपुर मेंसेठजक के साथ फल बेचकर,अध्यापक बनता है तथा पढ़ लिख कर अपना जीवन बना लेताहै। उ सकेपिता अंगद धार के बोझ को ढोने में अपने को असमर्थ पाकर, साधु बन जाते हैं। जीव की माँ मंगरी आजीवन,अभावों और कुण्ठाओं से भरा रहता है। प्रवेश में लौटने पर और उसके पिता का दायासेअपमान कराना,जीव के साथ बिना बहे उ के उसका विवाह हो जाना, साधुओं द्वारापिता से जीव की भेंट होना और अन्त में बिछुड़ा हुआ सारा परिवार मिल जाना, उपन्यास के सुखद अन्त को दर्शाता है,किन्तु अंगद को साधुओं का जीवन रुचिकर था,वह वापिस लौट जाताहै।

:33 :: शैक्षिक उपन्यास :

सोना :

प्रस्तुत उपन्यास में दीपावलि की रात्रि में स्त्रियों द्वारा कही जाने वाली लोक-कथा को उपन्यास का रूप प्रदान किया गया है। जहाँ रमा, धन में विश्वास रखती है, वहीं सोना चीलों को भगाकर लक्ष्मी को प्रसन्न रखना चाहती है किन्तु लक्ष्मी की कृपा रमा पर हुई। वह सब धन धान्य से पूरित हुई और सोना रानी होते हुये भी अतृप्त ही बनी रही। धुरन्धर के राज्य में होने वाले विविध मनोरंजनों की झाँकी भी उपन्यास में दर्शायी गयी है। राजकी के नृत्यगान, घुड़दौड़ कामेला, लोगों का भरपूर मनोरंजन करते हैं। सम्पूर्ण उपन्यास, कथाकुञ्ज द्वारा कही कहानी के रूप में है।

उदयकिरण :

प्रस्तुत उपन्यासमें ग्रामोत्थान की भावना परिलक्षितहोतीहै। आँकुओं में गाँवों की रक्षा करना प्रत्येक नर नारी का परम कर्तव्य दर्शाया गया है। सहकारी समितियाँ, सहकारी खेती, प्रौढ़ शिक्षा, शिविरों के माध्यम, समुन्नत बीज और स्वस्थ मनोरंजनों परक किया गयाहै। उदय सेवा किरण ने आँधीपाल ग्रामोत्थान के लिये प्रयत्न किया और अन्त में वेदान्तमय सूत्र में कहा जाते हैं। उदय ने पारिवारिक और सामाजिक कलह और अशान्ति को दूर करने का अनवरत प्रयत्न किया है।

अमर ज्योति :-

प्रस्तुत उपन्यास विशिष्ट श्रेणी के अंतर्गत आता है। यह एक ऐतिहासिक उपन्यास है। इस उपन्यास में देश-प्रेमी ग्राम-वासियों के युवक युवतियों को चीन के आक्रमण के समय सशस्त्र तैयार करके अपने देश की रक्षा करने की प्रेरणा प्रदान की गयी है। अमर और ज्योति ने इस कार्य का सम्पादन किया और लोगों में राष्ट्रीय भावना और देश सेवा के प्रति जागरूकता लाने का प्रयत्न किया। उपन्यास में विचार, कौतुक, व्यायाम, नृत्य संगीत, पिकनिक आदि द्वारा भरपूर मनोरंजन प्रस्तुत किया गया है। वर्तमान कालीन जनीवन समाज में उपन्यास का स्थान बन जाता है। उपन्यास में उन जाति विभिन्नता विचार में आज भी रहती है , अन्त में यह जाति अन्तर समाप्त होता है तथा अमर और ज्योति सदा के लिये एक दूसरे के हो जाते हैं ।

चतुर्थ अध्याय

"बुन्देलखण्ड क्षेत्र के भौगोलिक अवस्थाओं से बुन्देलखण्ड की संस्कृति की उपलब्धि"

भौगोलिक स्थल

प्राकृतिक स्थल-

पर्वत, नदियां, वृक्ष, उपवन आदि

नारी पात्र-

प्रकृति, वेश-भूषा, आचार-विचार

पुरुष पात्र-

प्रकृति, वेशभूषा, आचार-विचार

भाषा-

बुन्देली के शब्द, लोकोक्तियां, मुहावरे

स्थापत्य कला-

मन्दिर, भवन, गढ़

ललित कला-

चित्रकला, मूर्ति, गायन

बुन्देलखण्डी रागिनी, बुन्देली लोक गीत

बुन्देलखण्ड के रीति-रिवाज

बुन्देलखण्ड के मनोरंजन

: चतुर्थ - अध्याय :

वृन्दावनलाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यासों में बुन्देलखण्ड की संस्कृति की उपलब्धि

वर्मा जी के ऐतिहासिक उपन्यासों में, बुन्देलखण्ड की संस्कृति के विभिन्न तत्व मिलते हैं :-

/1/ ऐतिहासिक - स्थल :

गढ़ कुण्डार :- प्रस्तुत उपन्यास में दर्शाये गये बुन्देलखण्ड के ऐतिहासिक स्थल निम्नवत् हैं :-

:1: :2: :3: :4: :5: :6: :7:
महोबा, कुण्डार, देवगढ़, ओरछा, दिल्ली, जटोल का खेड़ा, चिरगांव
:8: :9: :10: :11: :12: :13: :14: :15:
देवगढ़, भरतपुरा, कालपी, ज्योना, माहोनी, एरच, चन्दूताट, कण्डाघाट,
:16: :17: :18: :19:
कालिंजर, कदेरा, बामौरा तथा भालेहा ।

विराट की पद्मिनी :- प्रस्तुत उपन्यास में दर्शाये गये ऐतिहासिक स्थल निम्नवत हैं :-

:20: :21: :22: :23: :24: :25: :26: :27:
धार, कालपी, रामनगर, विराटा, ओरछा, दिल्ली, ग्वालियर, मण्डेर,
:28: :29: :30:
बड़ागांव, चेलरा, तथा चन्देरी ।

कचनार :- इस उपन्यास में अछोलिघाट बुन्देलखण्ड के ऐतिहासिक स्थलों का वर्णन है :-

:31: :32: :33: :34: :35: :36: :37:
धमोनी, गढ़ा कोटा, गाडगढ़, आन्धर, ओटा, अरोंधिया, ग्वालियर,
:38: :39:
सागर, तथा मालथौन ग्राम ।

गढ़ कुण्डार
-1 पृष्ठ संख्या-1
-2 पृष्ठ संख्या-1
-3 पृष्ठ संख्या-9
-4 पृष्ठ संख्या-10
-5 पृष्ठ संख्या-90
-6 पृष्ठ संख्या-9
-7 पृष्ठ संख्या-10
-8 पृष्ठ संख्या-14
-9 पृष्ठ संख्या- 4
-10पृष्ठ संख्या-19
-11पृष्ठ संख्या-30
-12पृष्ठ संख्या-30
-13पृष्ठ संख्या-81
-14पृष्ठ संख्या-112
-15पृष्ठ संख्या-112
-16पृष्ठ संख्या-113
-17पृष्ठ संख्या-131

विराटा की पद्मिनी
-18 पृष्ठ०- 132
-19 पृष्ठ०- 132
-20 पृष्ठ०- 19
-21 पृष्ठ०- 19
-22 पृष्ठ०- 134
-23 पृष्ठ०- 59
-24 पृष्ठ०- 35
-25 पृष्ठ०- 134
-26 पृष्ठ०- 307
-27 पृष्ठ०- 134
-28 पृष्ठ०-249
-29 पृष्ठ०- 309
-30 पृष्ठ०- 307

कचनार
-31 पृष्ठ०- 1
-32 पृष्ठ०- 59
-33 पृष्ठ०- 59
-34 पृष्ठ०- 59
-35पृष्ठ०-90
-36पृष्ठ०-82
-37पृष्ठ०-72
-38पृष्ठ०-29
-39पृष्ठ०-90

-वृन्दावनलाल वर्मा

मुखपृष्ठ :-प्रस्तुत उपन्यास में प्रयुक्त बुन्देलखण्ड के ऐतिहासिक स्थलों का विवरण

निम्नवत् है :-

:1: :2: :3: :4: :5: :6: :7: :8:
दतिया, केरुआ, ग्वालियर,सेंधवा पिरवा, चरखारी, बड़ौनी,बन्दरगढ़,
:9: :10: :11:
गढ़, दमोनी, सदा समाप्त ।

झाँसी की रानी-लक्ष्मीबाई :- प्रस्तुत उपन्यास में वर्णित ऐतिहासिक स्थल

निम्नवत् हैं :-

:12: :13:
झाँसी ऐतिहासिक लक्ष्मीफाटक, बुन्देला फाटक, भण्डेरी फाटक,दतिया
:14: :15: :16: :17: :18: :19:
फाटक, ओरछा दरवाजा, सैयर फाटक,सागर खिड़की,बन्दरगढ़ फाटक,टकसाल,
:20: :21: :22:
कयासिल की टोरिया, बाण्डेरा फाटक, अन्धी की टोरिया, जीजाबाई
:23: :24: :24:
की टोरिया, बधीखाना, रानी महल, पचकुँया, लक्ष्मी की हवेली,कोली कुआँ
:25: :26: :27: :28:
बाँकर गढ़, बलिदान प्रसिद्ध हैं । इनके अतिरिक्त गढ़, राघवगढ़, दमोनी,
:29: :30: :31: :32: :33: :34: :35: :36:
आन्धुर,बाहरगढ़,कारी, भवनपुर, दतिया, ग्वालियर,लाखेरी,बन्दरी,
:37: :38: :39: :40: :41: :42: :43: :44: :45:
चरखारी, ओरछा, लुहारी, आँदा, धूँ, पहाड़गढ़, कोंच,पन्ना, पदमघाट,
:46: :47: :48:
खुरई, नौहरघाट तथा सिंधिया घाट का भी उपन्यासमें उल्लेख किया गया है ।

मुखपृष्ठ	-1 पृष्ठ संख्या- 4	-25 पृष्ठ संख्या- 410
	-2 पृष्ठ संख्या-4	-26 पृष्ठ संख्या- 410
	-3 पृष्ठ संख्या-4	-27 पृष्ठ संख्या- 411
	-4 पृष्ठ संख्या-5	-28 पृष्ठ संख्या-420
	-5 पृष्ठ संख्या-5	-29 पृष्ठ संख्या- 59
	-6 पृष्ठ संख्या-8	-30 पृष्ठ संख्या- 345
	-7 पृष्ठ संख्या-24	-31 पृष्ठ संख्या- 327
	-8 पृष्ठ संख्या-25	-32 पृष्ठ संख्या- 327
	-9 पृष्ठ संख्या-49	-33 पृष्ठ संख्या- 328
	-10पृष्ठ संख्या-50	-34 पृष्ठ संख्या- 328
	-11पृष्ठ संख्या-73	-35 पृष्ठ संख्या- 328
झाँसी की रानी	-12पृष्ठ संख्या-310	-36 पृष्ठ संख्या- 332
लक्ष्मीबाई	-13पृष्ठ संख्या-376	-37 पृष्ठ संख्या- 333
	-14पृष्ठ संख्या-376	-38 पृष्ठ संख्या- 335
	-15पृष्ठ संख्या-376	-39 पृष्ठसंख्या- 335
	-16पृष्ठ संख्या-381	-40 पृष्ठ संख्या- 337
	-17पृष्ठ संख्या-308	-41 पृष्ठ संख्या- 337
	-18पृष्ठ संख्या-308	-42 पृष्ठ संख्या- 345
	-19पृष्ठ संख्या-329	-43 पृष्ठ संख्या- 362
	-20पृष्ठ संख्या-307	-44 पृष्ठ संख्या- 441
	-21पृष्ठ संख्या-365	-45 पृष्ठ संख्या- 438
	-22पृष्ठ संख्या-376	-46 पृष्ठ संख्या- 436
	-23पृष्ठ संख्या-329	-47 पृष्ठ संख्या- 436
	-24पृष्ठ संख्या-405	-48 पृष्ठ संख्या- 436

-- वृन्दावनलाल वर्मा

मुण्डमाली :- प्रस्तुत उपन्यास में दर्शाये गये ऐतिहासिक स्थल निम्नवत हैं :-
:1: :2: :3: :4: :5: :6:
ग्वालियर, दार्जिलिंग, नरवर, चन्देरी, पुरानी चन्देरी, ओरछा,
:7: :8: :9: :10: :11:
मगरौनी, ज्योतिरूप की शिला, जोधर तालाब, देवगढ़, मोती झील,
:12: :13: :14: :15: :16:
मुरैना, आगरा, धनियारगढ़ी, चम्बल की घाटियाँ, मकरध्वज ताल तथा
:17:
टीला बाड़ा ।

:18: :19: :20:
टूटे काँटे :- प्रस्तुत उपन्यास में, काशी, झाँसी तथा ग्वालियर के मार्गों
का उल्लेख मिलता है ।

महारानी दुर्गावती :- प्रस्तुत उपन्यास में दर्शाये गये ऐतिहासिक स्थल
निम्नवत हैं :-
:21: :22: :23 :24: :25: :26:
गढ़ा कटंगा, सीता- सेवा, नर्मदा, हमीरपुर, बघवरु, रीवा,
:27: :28: :29: :30: :31: :32: :33: :34:
सिंगौरी, मान्डो, चुनार, बाँधो द्वारा, भेड़ा घाट, सागर, दमोह, सलैया,
:35: :36: :37: :38: :39: :40:
कुण्डार, ओरछा, नाव पहाड़ी, पन्ना, चन्देरी, चिरद डोंगरी, ।

राम शाह की रानी :- प्रस्तुत उपन्यास मेंप्रमुख ऐतिहासिक स्थल निम्नवत हैं:-
:41: :42: :43: :44: :45: :46: :47:
रीवा, दमोह, शाहगढ़, बानपुर, सिमोनी, सागर, नरसिंहपुर,
:48: :49:
रीवा तथा पन्ना ।

मुण्डमाली	-1 पृष्ठ संख्या- 3		-26 पृष्ठ संख्या- 30
	-2 पृष्ठ संख्या- 3		-27 पृष्ठ संख्या- 32
	-3 पृष्ठ संख्या- 93		-28 पृष्ठ संख्या- 35
	-4 पृष्ठ संख्या- 93		-29 पृष्ठ संख्या-112
	-5 पृष्ठ संख्या- 94		-30 पृष्ठ संख्या-150
	-6 पृष्ठ संख्या- 201		-31 पृष्ठ संख्या-180
	-7 पृष्ठ संख्या- 203		-32पृष्ठ संख्या-174
	-8 पृष्ठ संख्या- 288		-33पृष्ठ संख्या-193
	-9 पृष्ठ संख्या- 336		-34पृष्ठ संख्या-193
	-10पृष्ठ संख्या- 359		-35 पृष्ठ संख्या-201
	-11पृष्ठ संख्या- 409		-36 पृष्ठ संख्या-201
	-12पृष्ठ संख्या- 415		-37 पृष्ठसंख्या- 220
	-13पृष्ठ संख्या- 415		-38 पृष्ठ संख्या-279
	-14पृष्ठ संख्या- 418		-39 पृष्ठ संख्या-298
	-15पृष्ठ संख्या- 434		-40 पृष्ठ संख्या-301
	-16पृष्ठ संख्या- 436	रामशाह	-41 पृष्ठ संख्या- 57
	-17पृष्ठ संख्या- 437	की	-42 पृष्ठ संख्या- 9
टूटे काँटे	-18पृष्ठ संख्या- 71	रानी	-43 पृष्ठ संख्या- 90
	-19पृष्ठ संख्या- 71		-44 पृष्ठ संख्या-107
	-20पृष्ठ संख्या- 70		-45 पृष्ठ संख्या- 91
महारानी	-21पृष्ठ संख्या- 1		-46 पृष्ठ संख्या- 91
दुर्गावती	-22पृष्ठ संख्या- 27		-47 पृष्ठ संख्या- 98
	-23पृष्ठ संख्या- 30		-48 पृष्ठ संख्या-140
	-24पृष्ठ संख्या- 30		-49 पृष्ठ संख्या-123
	-25पृष्ठ संख्या- 30		

---- वृन्दावनलाल वर्मा

माधव जी सिन्धिया :- प्रस्तुत उपन्यास में अधोलिखित ऐतिहासिक स्थलों का उल्लेख किया गया है :-

:1: :2: :3: :4: :5:
ग्वालियर, मुरैना, भरौंच, मौठ तथा झाँसी ।

अहिल्याबाई :- इस उपन्यास में वर्णित ऐतिहासिक स्थल निम्नलिखित :-

:6: :7: :8:
टीकमगढ़, ओरछा , तथा चन्देरी ।

बीचड़ और कमल :- प्रस्तुत उपन्यास में वर्णित ऐतिहासिक स्थल निम्नवत् हैं:-

:9: :10: :11: :12: :13: :14:
छाछुराहो, कालिंजर, त्रिलोकलाल, अम्बनी, सीताकुण्ड, पारता गंगा,
:15: :16: :17: :18: :19: :20:
पाण्डवकुण्ड, कोटतीर्थ, मुगारा, कृष्णपतिकुण्ड, अमरगढ़, कुमुद कोल, रामकुण्ड
:21: :22: :23:
कुण्ड, कालपी तथा त्रिपुरी ।

देश द्रोही की मुस्कान :- प्रस्तुत उपन्यास में अधोलिखित,ऐतिहासिक स्थलों का उल्लेख मिलता है :-

:24: :25: :26: :27: :28: :29: :30:
चन्देरी, कूटी चन्देरी, मदौआ, देवगढ़, दूधई, त्रिपुरी, कालिंजर,
:31: :32: :33: :34:
विजय सागर, बरिलिया का पहाड़, गरकोण, चन्देरी, बटवरी सिंध की
:35: :36: :37: :38: :39:
गुफा, राहिल सागर ताल, छाछुराहो, मलयानीपुर तथा ग्वालियर ।

माधव जी सिन्धिया	-1 पृष्ठ संख्या-438		-21 पृष्ठ संख्या- 118
	-2 पृष्ठ संख्या-318		-22 पृष्ठ संख्या- 190
	-3 पृष्ठ संख्या-328		-23 पृष्ठ संख्या- 18
	-4 पृष्ठ संख्या-446	देशद्रोही की	-24 पृष्ठ संख्या- 1
	-5 पृष्ठ संख्या-446	मुस्कान	-25 पृष्ठ संख्या- 1
अहिल्याबाई	-6 पृष्ठ संख्या- 22		-26 पृष्ठ संख्या- 5
	-7 पृष्ठ संख्या- 22		-27 पृष्ठ संख्या- 5
	-8 पृष्ठ संख्या- 98		-28 पृष्ठ संख्या- 8
बीचड़ और कमल	-9 पृष्ठ संख्या- 1		-29 पृष्ठ संख्या- 46
	-10पृष्ठ संख्या- 21		-30 पृष्ठसंख्या- 162
	-11पृष्ठ संख्या- 17		-31 पृष्ठ संख्या- 73
	-12पृष्ठ संख्या- 18		-32 पृष्ठ संख्या- 77
	-13पृष्ठ संख्या- 101		-33 पृष्ठ संख्या- 82
	-14पृष्ठ संख्या- 101		-34 पृष्ठ संख्या- 82
	-15पृष्ठ संख्या- 101		-35 पृष्ठ संख्या- 98
	-16पृष्ठ संख्या- 102		-36 पृष्ठ संख्या- 108
	-17पृष्ठ संख्या- 102		-37 पृष्ठ संख्या- 131
	-18पृष्ठ संख्या- 149		-38 पृष्ठ संख्या- 162
	-19पृष्ठ संख्या- 80		-39 पृष्ठ संख्या- 192
	-20पृष्ठ संख्या- 101		

---- वृन्दावनलाल वर्मा

/2/ प्राकृतिक - पक्ष :

/2/:क: -पक्ष

गढ़ कुण्डार :- प्रस्तुत उपन्यासमें अधोलिखित पर्वतों का उल्लेख मिलता है:-

:1: विन्ध्य-मलोत्तर की पर्वतमालाएँ, मलोत्तर का बड़ा पठार :2:, मारोल के पर्वत :3:, कुण्डार और पुटरा के पठार :4:, सेंहरी की पहाड़ियाँ :5: तथा बरुआ का पठार :6: ।

खिरहाट की पटमिमनी :- प्रस्तुत उपन्यास में, पाथर :7:, गुलाबगढ़ :8:, मालोन :9: और भरौली :10: की पहाड़ियों का उल्लेख मिलता है ।

मुक्ताबिल्व :- प्रस्तुत उपन्यासमें विन्ध्याचल :11: पर्वत तथा उल्लू की टौरिया :12: का उल्लेख मिलता है ।

अकबार :- प्रस्तुत उपन्यास में छमोनी के पठार :13: का उल्लेख मिलता है ।

झाँसी की रानी -लक्ष्मीबाई :- प्रस्तुत उपन्यास में, आर पठार :14:, बेमासिन की टौरिया :15:, मऊ की टौरिया :16:, पिमाहा :17:, की टौरिया :18:, गुमक का पठार :19: तथा गुमक पर की पहाड़ियों का उल्लेख मिलता है ।

मृगनयनी :- प्रस्तुत उपन्यास में अधोलिखित पर्वत विद्यमान हैं :-

विन्ध्याचल :20: पर्वत, आलिवर :21:, पेंकिले की पहाड़ी :22:, पारिजात के उत्तर पूर्वतथा उत्तर-पश्चिम की पहाड़ियाँ तथा रायगढ़ का पठार ।

गढ़ कुण्डार	-1 पृष्ठ संख्या- 9	अकबार	-12 पृष्ठ संख्या- 22
	-2 पृष्ठ संख्या-62	झाँसी की रानी-लक्ष्मीबाई	-13 पृष्ठ संख्या-361
	-3 पृष्ठ संख्या- 91		-14 पृष्ठ संख्या-242
	-4 पृष्ठ संख्या-156		-15 पृष्ठ संख्या-381
	-5 पृष्ठ संख्या-156		-16 पृष्ठ संख्या-392
	-6 पृष्ठ संख्या-206		-17 पृष्ठ संख्या-423
खिरहाट की पटमिमनी	-7 पृष्ठ संख्या-328		-18 पृष्ठ संख्या-392
	-8 पृष्ठ संख्या-183	मृगनयनी	-19 पृष्ठ संख्या- 69
	-9 पृष्ठ संख्या-188		-20 पृष्ठ संख्या-379
मुक्ताबिल्व	-10 पृष्ठ संख्या- 28		-21 पृष्ठ संख्या-227
	-11 पृष्ठ संख्या-41		-22 पृष्ठ संख्या-290

------ कृष्णात्मकता शर्मा

महारानी दुर्गावती :- प्रस्तुत उपन्यास में वर्णित पर्वत निम्नवत् है :-
:1: :2: :3:
मनियाँ गढ़ की पहाड़ी, कालिन्जर पर्वत, संग्रामपुर का पहाड़, :4: :5: :6:
भाण्डेर पर्वत, सेलिया परहर की टेकरियाँ, मोजरमर का पहाड़, एकदिल :7: :8: :9: :10:
मनियाखाल पहाड़, लाल पहाड़ी, भीम कुण्डी पहाड़ी, केमर पर्वत श्रेणियाँ, :11: :12: :13:
[illegible] की पहाड़ियाँ, सिंगोरगढ़ की पहाड़ियाँ, खैरा पर्वत श्रेणियाँ, :14: :15: :16:
अमोटा पर्वत, गुरहू पहाड़ तथा सिलिया पहाड़ी ।

माधव जी सिन्धिया :- प्रस्तुत उपन्यास में भाण्डेर का दुर्गविजी कार्यालय :17:
तथा अन्यपहाड़ियाँ और [illegible] सेकरा पहाड़ी का उल्लेख किया गया है । :18:

अधिष्ठाताओं :- प्रस्तुत उपन्यास में, [illegible] तथा अन्य पर्वतों का :19: :20:
उल्लेख किया गया है ।

कीचड़ और कमल :- प्रस्तुत उपन्यास में कालिंजर के और पास स्थित पर्वतों :21:
का उल्लेख मिलता है ।

सेवगढ़ की मुकाम :- प्रस्तुत उपन्यास में, जिन पर्वतों का उल्लेख मिलता है, वे निम्नवत हैं :-
:22: :23: :24:
[illegible] का सिकरवारी पर्वत, सेवगढ़ पर्वत, तथा सिन्धियाचल पर्वत ।

महारानी दुर्गावती	-1 पृष्ठ संख्या- 1	माधवजी सिन्धिया	-17पृ०सं०-304
	-2 पृष्ठ संख्या-115		-18पृ०सं०-303
	-3 पृष्ठ संख्या-163	अधिष्ठाताओं	-19पृ०सं०- 10
	-4 पृष्ठ संख्या-170		-20पृ०सं०- 29
	-5 पृष्ठ संख्या- 85	कीचड़ और कमल	-21पृ०सं०- 82
	-6 पृष्ठ संख्या- 170	सेवगढ़ की मुकाम	-22पृ०सं०- 1
	-7 पृष्ठ संख्या-192		-23पृ०सं०-195
	-8 पृष्ठ संख्या-220		-24पृ०सं०-250
	-9 पृष्ठ संख्या-243		
	-10पृष्ठ संख्या-292		
	-11पृष्ठ संख्या-300	--- [illegible] शर्मा	
	-12पृष्ठ संख्या-303		
	-13पृष्ठ संख्या-324		
	-14पृष्ठ संख्या-325		
	-15पृष्ठ संख्या-324		
	-16पृष्ठ संख्या-324		

22/:4: - नदियाँ

मधु कुलकार :- प्रस्तुत उपन्यास में :1: :2: :3: :4: बेतवा, सिन्ध, केन तथा पहुज नदियों का उल्लेख मिलता है ।

शिवराज की पद्मिनी :- प्रस्तुत उपन्यास में, :5/1: :5/2: :6: :7: :8: :9: बेतवा, यमुना, [illegible], सिन्ध, पहुज तथा कुमारी नदियों का उल्लेख किया गया है ।

कथनार :- प्रस्तुत उपन्यास में :10: :11: अमान तथा नर्मदा नदियों का उल्लेख मिलता है।

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई :- इस उपन्यास में :12: :13: :14: :15: पहुज, नर्मदा, यमुना और सिन्ध नदियों का उल्लेख किया गया है

मृगनयनी :- प्रस्तुत उपन्यास में जिन नदियों का उल्लेख किया गया है वे निम्नवत् हैं :-

:16: :17: :18: :19: :20:
नाक, बेतवा, [illegible], यमुना और सिन्ध ।

टूटे काँटे :- प्रस्तुत उपन्यास में :21: :22: नर्मदा और यमुना नदियों का उल्लेख किया गया है ।

महारानी दुर्गावती :- प्रस्तुत उपन्यास में जिन नदियों का उल्लेख किया गया है, वे निम्नवत् हैं :-

:23: :24: :25: :26: :27: :28: :29: :30:
केन, नर्मदा, शिप्रा, [illegible], [illegible]- [illegible], [illegible], गौर तथा [illegible] ।

मधु कुलकार	-1 पृष्ठ संख्या- 126	मृगनयनी	-16 पृष्ठ संख्या- 3
	-2 पृष्ठ संख्या- 126		-17 पृष्ठ संख्या- 94
	-3 पृष्ठ संख्या- 26		-18 पृष्ठ संख्या-147
	-4 पृष्ठ संख्या- 126		-19 पृष्ठ संख्या-147
शिवराज की पद्मिनी	-5 पृष्ठ संख्या- 132		-20 पृष्ठ संख्या-209
	-6 पृष्ठ संख्या- 94	टूटे काँटे	-21 पृष्ठ संख्या- 8
	-7 पृष्ठ संख्या- 68		-22 पृष्ठ संख्या- 88
	-8 पृष्ठ संख्या- 132	महारानी दुर्गावती	-23 पृष्ठ संख्या- 1
	-9 पृष्ठ संख्या- 1		-24 पृष्ठ संख्या- 35
	-9 पृष्ठ संख्या- 69		-25 पृष्ठ संख्या-170
कथनार	-10 पृष्ठ संख्या- 2		-26 पृष्ठ संख्या-~~[illegible]~~ 170
	-11 पृष्ठ संख्या- 89		-27 पृष्ठ संख्या-248
झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई	-12 पृष्ठ संख्या- 328		-28 पृष्ठ संख्या-240
	-13 पृष्ठ संख्या- 328		-29 पृष्ठ संख्या-244
	-14 पृष्ठ संख्या- 433		-30 पृष्ठ संख्या-324
	-15 पृष्ठ संख्या- 431		

---- गुप्ताजनलाल शर्मा

रामचन्द्र की रानी :- प्रस्तुत उपन्यास में :1: नर्मदा, :2: सोन, तथा :3: करमैन नदी का उल्लेख मिलता है ।

सोती आग :- प्रस्तुत उपन्यास में :4: यमुनानदी का उल्लेख मिलता है।

माधव की शिष्याएं :- प्रस्तुत उपन्यास में छः नदियों का उल्लेख मिलता है :-
:5: :6: :7: :8: :9:
चम्बल, यमुना, नर्मदा, माँड तथा कुमारी नदी ।

अविस्मरणीय आर्य :- प्रस्तुत उपन्यास में :10: नर्मदा, तथा :11: चम्बल नदियों का उल्लेख मिलता है ।

कीचड़ और कमल :- प्रस्तुत उपन्यास में :12: :13: :14: यमुना, नर्मदा, तथा कुमार नदियों का उल्लेख मिलता है ।

देवगढ़ की मुसकान :- प्रस्तुत उपन्यास में :15: :16: :17: :18: :19: सेमरा, चम्बल, सिन्ध तथा सुहनदी नदियों का उल्लेख मिलता है ।

रामचन्द्र की रानी	-1 पृष्ठ संख्या-	19
	-2 पृष्ठ संख्या-	128
	-3 पृष्ठ संख्या-	3
सोती आग	-4 पृष्ठ संख्या-	51
माधवजी शिष्याएं	-5 पृष्ठ संख्या-	315
	-6 पृष्ठ संख्या	103
	-7 पृष्ठ संख्या-	271
	-8 पृष्ठ संख्या-	316
	-9 पृष्ठ संख्या-	403
अविस्मरणीय	-10 पृष्ठ संख्या-	1
	-11 पृष्ठ संख्या-	32
कीचड़ और कमल	-12 पृष्ठ संख्या-	190
	-13 पृष्ठ संख्या-	169
	-14 पृष्ठ संख्या-	173
देवगढ़ की मुसकान	-15 पृष्ठ संख्या-	6
	-16 पृष्ठ संख्या-	162
	-17 पृष्ठ संख्या-	162
	-18 पृष्ठ संख्या-	

---- सम्पादन क्रमा

/2/:ग: - वृक्ष

गढ़ कुण्डार :- प्रस्तुत उपन्यास में जिन वृक्षों का उल्लेख मिलता है, वे निम्नलिखित :-

:1: :2: :3: :4: :5: :6: :7: :8: :9: :10:
करधई, आसन, रैंजरा, मेंगड़, अर्जुन, बेर, कांकेर, मकोय, नीम, आम
:11: :12: :13: :14: :15:
जामुन, ऊमर, सीताफल करौंदीलता तरेरी ।

विराटा की पद्मिनी :- प्रस्तुत उपन्यास में महुआ, करधई, मकोय, :16: :17: :18: :19: :20:
धौंसल, आम के वृक्षों का उल्लेख मिलता है।

मुसाहिब्बू :- प्रस्तुत उपन्यास में :21: :22: :23: अँडूला, करौंदी तथा तरेरी आम के वृक्षों का उल्लेख किया गया है ।

कचनार :- प्रस्तुत उपन्यास में दर्शाये गये वृक्ष निम्नवत् हैं :-

:24: :25: :26: :27: :28: :29: :30: :31: :32:
करधई, कठजर, तेंदू, अचार, गाज, महुआ, सागौन, नीम, कोहा,
:33: :34: :35: :36: :37: :38: :39: :40: :41: :42:
आँवला, आँक, करंज, धौंसल, अमलतास, नीम मकोय, रैंजरा, करेंगोर, पलाश,
:43: :44: :45:
बेल, अनार तथा करौंदी ।

रानी दुर्गावती :- प्रस्तुत उपन्यास में :46: :47: :48: धमोनी, पलाशी तथा टेसू, के वृक्षों का उल्लेख किया गया है ।

गढ़ कुण्डार	-1 पृष्ठ संख्या- 208		-25 पृष्ठ संख्या- 7
	-2 पृष्ठ संख्या- 208		-26 पृष्ठ संख्या- 7
	-3 पृष्ठ संख्या- 208		-27 पृष्ठ संख्या- 7
	-4 पृष्ठ संख्या- 208		-28 पृष्ठ संख्या- 7
	-5 पृष्ठ संख्या- 208		-29 पृष्ठ संख्या- 7
	-6 पृष्ठ संख्या- 208		-30 पृष्ठ संख्या- 7
	-7 पृष्ठ संख्या-208		-31 पृष्ठ संख्या- 18
	-8 पृष्ठ संख्या- 208		-32 पृष्ठ संख्या- 44
	-9 पृष्ठ संख्या- 302		-33 पृष्ठ संख्या- 44
	-10 पृष्ठ संख्या- 163		-34 पृष्ठ संख्या- 76
	-11 पृष्ठ संख्या- 92		-35 पृष्ठ संख्या- 87
	-12 पृष्ठ संख्या- 92		-36 पृष्ठ संख्या-188
	-13 पृष्ठ संख्या- 212		-37 पृष्ठ संख्या-110
	-14 पृष्ठ संख्या- 302		-38 पृष्ठ संख्या-110
	-15 पृष्ठ संख्या- 212		-39 पृष्ठ संख्या-245
विराटा की	-16 पृष्ठ संख्या- 135		-40 पृष्ठ संख्या-245
पद्मिनी	-17 पृष्ठ संख्या- 136		-41 पृष्ठ संख्या-243
	-18 पृष्ठ संख्या- 312		-42 पृष्ठ संख्या- 22
	-19 पृष्ठ संख्या- 312		-43 पृष्ठ संख्या- 44
	-20 पृष्ठ संख्या- 346		-44 पृष्ठ संख्या- 7
मुसाहिब्बू	-21 पृष्ठ संख्या- 41		-45 पृष्ठ संख्या-245
	-22 पृष्ठ संख्या- 41	रानी की	रानी-46 पृष्ठ संख्या-370
	-23 पृष्ठ संख्या- 41	रानीबाई	-47 पृष्ठ संख्या-346
कचनार	-24 पृष्ठ संख्या- 7		-48 पृष्ठ संख्या- 88

----- वृन्दावनलाल वर्मा

मृगनयनी :- प्रस्तुत उपन्यास में जिन वृक्षों का उल्लेख किया गया है, वे निम्नवत् हैं :-

:1: :2: :3: :4: :5: :6: :7: :8: :9:
नीम, साल, अमलतास, अचार, करंज, पेलवा, आम, साजु, खिरनी,
:10: :11: :12: :13:
बहुली, करौंदी, बरगद तथा पलाश ।

टूटे काँटे :- प्रस्तुत उपन्यास में :14: नीम, :15: पलाश, :16: बबूल, :17: करील तथा :18: करौंदी के वृक्षों का उल्लेख मिलता है ।

महारानी दुर्गावती :- इस उपन्यास में :19: साल, :20: आम, :21: महुआ और :22: बरगद नाम के वृक्षों का उल्लेख मिलता है।

रामगढ़ की रानी :- प्रस्तुत उपन्यास में :23: महुआ, :24: तथा नीम के वृक्षों का उल्लेख मिलता है ।

भारत की सिंहिका :- प्रस्तुत उपन्यास में :25: नीम, :26: कनेरा, :27: महुआ, :28: करील, :29: पलाश ~~:30: :31:~~ :32: बरगद मेंहदी, :33: बर और कनेरा तथा चमेली के वृक्षों का उल्लेख किया गया है।

अहिल्याबाई :- प्रस्तुत उपन्यास में :34: आम, :35: इमली, :36: पीपल, :37: बरगद तथा :38: पलाश के वृक्षों का उल्लेख मिलता है।

कीचड़ और कमल :- प्रस्तुत उपन्यास में :39: खजूर, :40: नीम, :41: महुआ, :42: पलाश तथा :43: बट वृक्षों को उल्लेखित किया है ।

मृगनयनी	-1 पृष्ठ संख्या- 32	रामगढ़ की रानी	-23 पृष्ठ संख्या- 142
	-2 पृष्ठ संख्या- 46		-24 पृष्ठ संख्या-142
	-3 पृष्ठ संख्या- 46	भारत की सिंहिका	-25 पृष्ठ संख्या- 316
	-4 पृष्ठ संख्या- 46		-26 पृष्ठ संख्या-316
	-5 पृष्ठ संख्या- 46		-27 पृष्ठ संख्या-316
	-6 पृष्ठ संख्या-188		-28 पृष्ठ संख्या- 80
	-7 पृष्ठ संख्या-313		-29 पृष्ठ संख्या-316
	-8 पृष्ठ संख्या-314		-30 पृष्ठ संख्या-504
	-9 पृष्ठ संख्या-377		-31 पृष्ठ संख्या-387
	-10 पृष्ठ संख्या-392		-32 पृष्ठ संख्या-387
	-11 पृष्ठ संख्या-292		-33 पृष्ठ संख्या-212
	-12 पृष्ठ संख्या- 85	अहिल्याबाई	-34 पृष्ठ संख्या- 94
	-13 पृष्ठ संख्या-150		-35 पृष्ठ संख्या- 94
टूटे काँटे	-14 पृष्ठ संख्या- 81		-36 पृष्ठ संख्या- 94
	-15 पृष्ठ संख्या- 81		-37 पृष्ठ संख्या- 94
	-16 पृष्ठ संख्या- 298		-38 पृष्ठ संख्या- 33
	-17 पृष्ठ संख्या- 81	कीचड़ और	-39 पृष्ठ संख्या- 17
	-18 पृष्ठ संख्या- 1		-40 पृष्ठ संख्या- 17
महारानी	-19 पृष्ठ संख्या- 11		-41 पृष्ठ संख्या- 17
दुर्गावती	-20 पृष्ठ संख्या- 14		-42 पृष्ठ संख्या- 17
	-21 पृष्ठ संख्या- 14		-43 पृष्ठ संख्या-119
	-22 पृष्ठ संख्या-325		

---- वृन्दावनलाल वर्मा

देवगढ़ की दुकान :- प्रस्तुत उपन्यास में :1: मंजूआ, :2: चमारी, :3: [illegible] :4: [illegible] को दर्शाया गया है।

/2/:उ: - उपवन :

मुगलिया बू :- प्रस्तुत उपन्यास में :5: [illegible] का उल्लेख किया गया है।

[illegible] की रानी-लक्ष्मीबाई :- प्रस्तुत उपन्यास में [illegible] उपवन निम्नलिखित हैं -

झाँसी के किले का उद्यान, :6: बैजदी बाग, :7: [illegible] :8: [illegible] का बाग, :9: [illegible] :10: [illegible] का बाग।

रामगढ़ की रानी :- प्रस्तुत उपन्यास में :11: [illegible] का उल्लेख किया गया है।

कीचड़ और कमल - प्रस्तुत उपन्यास में :12: [illegible] को दर्शाया गया है।

देवगढ़ की मुस्कान :- प्रस्तुत उपन्यास में :13: देवगढ़ के समीपस्थ कुछ कुंजों तथा :14: [illegible] में स्थित [illegible] के समीपवर्ती कुंजों का उल्लेख किया गया है।

देवगढ़ की दुकान	-1 पृष्ठ संख्या-	2
	-2 पृष्ठ संख्या-	17
	-3 पृष्ठ संख्या-	42
	-4 पृष्ठ संख्या-	2
मुगलिया बू	-5 पृष्ठ संख्या-	25
झाँसी की रानी	-6 पृष्ठ संख्या-	115
लक्ष्मीबाई	-7 पृष्ठ संख्या-	9
	-8 पृष्ठ संख्या-	431
	-9 पृष्ठ संख्या-	259
	-10 पृष्ठ संख्या-	412
रामगढ़ की रानी	-11 पृष्ठ संख्या-	58
कीचड़ और कमल	-12 पृष्ठ संख्या-	1
देवगढ़ की मुस्कान	-13 पृष्ठ संख्या-	23
	-14 पृष्ठ संख्या-	73

---- मुगलिया बू

: नारी - पात्र :

प्रस्तुत शीर्षक के अन्तर्गत हमने इस उपन्यास की नारी पात्रों की प्रकृति, स्वभाव और आचार-विचार का उल्लेख किया है, जो निम्नवत् है :-

:क: - प्रकृति :

मधु कुलकर्णी :- प्रस्तुत उपन्यास की नारी पात्रों में सबसे अधिक महत्व मधु कुलकर्णी को दिया गया है। :1: क्योंकि वह प्रकृति की गुड़िया है। सरल स्वभाव, सहज और अत्यन्त प्रकृति की नारी है। :2: वह महान प्रतिभा की है तथा अपने सिद्ध करने में अनुरक्त रहती है। :3: :4: मानवती मौकेली तथा की गुड़िया थी।

विद्यावती की पत्नी :- प्रस्तुत उपन्यास में अमर एक ऐसी गुड़िया है, जो विवाहित :5: है अथवा होनेवाली होती। :6: उसकी प्रकृति में आत्मिकता विद्यमान है। :7: :8: :9: निडर, अभिमानी तथा भाग्यवादी, स्वाभाव की नारी है। :10: गुप्त चिन्ता और प्रकट प्रकाशक ने उसे मेरुदण्ड बाँधने की तरह बना रखा है। :11: :12: :13: :14: छोटी रानी कौन, उम्र, तथा रूप से विलासिता प्रकृति की नारी है। :15: बड़ी रानी निडर स्वभाव की नारी है। अत्यन्त प्रयत्न के बाद :16: उनके स्वभाव के विपरीत है तथा वे पिघलती नहीं और कभी साथ नहीं देतीं।

कुलाधिकारी :- प्रस्तुत उपन्यास में :17: :18: अरुणाचली वाली डॉक्टर, और सहज दृढ़ स्वभाव :19: वाली नारी की तथा सुन्दरा बतर की। उनके मेरों में कर्मशता, गले में चित्र और कौटों पर, भौंहों वाली रेखाएँ। :20: मेरा की सौगन्ध पर विश्वास कर लेना :21: उनकी प्रकृति के अनुकूल था।

मधुकुलकर्णी	-1 पृष्ठ संख्या- 225	मुसाफिर जू	-17 पृष्ठ संख्या- 8
	-2 पृष्ठ संख्या- 339		-18 पृष्ठ संख्या-36
	-3 पृष्ठ संख्या- 162		-19पृष्ठ संख्या-22
	-4 पृष्ठ संख्या- 256		-20 पृष्ठ संख्या-38
विद्यावती की पत्नी	-5 पृष्ठ संख्या- 202		-21पृष्ठ संख्या-63
	-6 पृष्ठ संख्या-62/63		
	-7 पृष्ठ संख्या- 64		
	-8 पृष्ठ संख्या- 217		---- सुन्दरा लाल शर्मा
	-9 पृष्ठ संख्या- 65		
	-10पृष्ठ संख्या- 61		
	-11पृष्ठ संख्या- 80		
	-12पृष्ठ संख्या- 132		
	-13पृष्ठ संख्या- 80		
	-14पृष्ठ संख्या- 140		
	-15पृष्ठ संख्या- 78		
	-16पृष्ठ संख्या- 128		

अभिनय :- प्रस्तुत उपन्यास में अभिनय एक [illegible] प्रकृति की युवती
:1: :2:
के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह करती है। वह [illegible] है और
:3:
अभिलाषा उसके स्वभाव में [illegible] है। वह किसी बात के प्रति [illegible]
:4:
करती। कंचनपुरी के रूप में भूमि [illegible] करते हुये, उसमें [illegible]
[illegible] का अंकुरण हो जाता और उसकी आकांक्षा [illegible] प्रकुपित हो जाता
:5:
[illegible] गया है।

:6:
[illegible] प्रकृति की नारी है। [illegible] के कारण
:7:
[illegible] उसे स्वभाव से अनुकूल था। [illegible] की सुख [illegible] भाव की नारी थी।
:8:
वह [illegible] में और [illegible] करती थी। मेरा का अभाव [illegible] के कारण,
:9:
उसकी प्रकृति में था।

[illegible] की रानी [illegible] :- प्रस्तुत उपन्यास में [illegible] की रानी [illegible]
:10: :11:
का [illegible] में धन, [illegible] [illegible] तथा [illegible] थी। वह [illegible] और उग्र
:12:
स्वभाव की भी थी किन्तु विवाह के उपरांत उस का स्वभाव गम्भीरता
:13: :14: :15:
और क्रोध में ढल गया था [illegible] और धार्मिक वृत्ति बन गयी थी।

उसका स्वभाव था कि वे जहाँ भी जाती उसके चरित्र का सारी
:16: :17:
[illegible] करती। [illegible] काली नारी [illegible] प्रकृति की
की नारी थी वह [illegible] को शान्ति से सारा जीवन बिताकर
:18: :19:
[illegible] । [illegible] मुक्ति [illegible] उत्तर देने वाली किन्तु कुछ

कथानक -1 पृष्ठ संख्या- 29 -12 पृष्ठ संख्या- 34
-2 पृष्ठ संख्या- 27 -13 पृष्ठ संख्या- 77
-3 पृष्ठ संख्या-34 -14 पृष्ठ संख्या- 462
-4 पृष्ठ संख्या- 25 -15 पृष्ठ संख्या-489 28
-5 पृष्ठ संख्या-164 -16 पृष्ठ संख्या- 28471
-6 पृष्ठ संख्या- 69 -17 पृष्ठ संख्या-478270
-7 पृष्ठ संख्या-109 -18 पृष्ठ संख्या-278322
-8 पृष्ठ संख्या-139 -19 पृष्ठ संख्या-388 97
-9 पृष्ठ संख्या-263
[illegible] की रानी-10 पृष्ठ संख्या- 33
-11 पृष्ठ संख्या- 38 ---- [illegible] वर्मा

:1: :2: :3:
चुलबुली प्रकृति की नारी थी। सुन्दर संयमनिष्ठ, सुन्दर आकर्षक तथा
:4: :5:
सुन्दर अवश्य किन्तु देशभक्ति से ओत-प्रोत थी । मोती आर्य में आकर्षी
:6:
गम्भीरता का चुकीथी । किन्तु अन्तर्मन में आकर्षण की कमी न थी ।
:7: :8:
छोटी, गर्वीली तथा उसी प्रकृति की नारी थी। अधिकांश चू का स्वभाव
:9:
था कि वह धर्म की आज्ञा को सर्वोपरि मानती थी ।

मृगनयनी :- प्रस्तुत उपन्यास में मृगनयनी एक सीधी सादी प्रकृति की युवती
:10:
है । कभी कभी, वह भय की अवस्था और निर्भयता के बीच के अन्तर में पड़
:11: :12: :13: :14:
जाती है। उसकी मनोभावनायें उच्ची है किन्तुहठी और त्याग करने की प्रवृत्ति
:15: :16:
उसमें विद्यमान है। वह संयमी,सरल,सुन्दर तथा विनम्र गुणों से युक्त है ।
:17: :18:
मृगनयनी जैसे हुये भी जाति स्वाभिमान उसके स्वभाव में सदा निहित पाता
:19: :20:
है। लाखी कार्य त्याग करने की अभ्यास है। उसके स्वभाव में जाति स्वाभिमान
:21: :22:
विद्यमान है। वह बहादुर एवं कष्ट सहिष्णु है तथा किसी वस्तु को सीखने
:23: :24: :25: :26:
की लगन उसमें विद्यमान है। विरानी चुकु प्रकारहित तथा निर्भय प्रकृति की
:27:
युवती है। सुमन मोहिनी प्रचण्ड स्वभाव वाली नारी है। मोतियाबाई से
:28: :29: :30:
वह परिचित रहती है तथा ईर्ष्यालु भी है। त्याग करना उसके स्वभाव के अनुकूल है
:31: :32:
तथा वह नीच प्रकृति की नारी है। नायकिन की प्रकृति कुटिल है।

झाँसी की रानी -1 पृष्ठ संख्या- 101
का मोक्षार्थ -2 पृष्ठ संख्या- 454
-3 पृष्ठ संख्या- 140
-4 पृष्ठ संख्या- 14
-5 पृष्ठ संख्या- 239
-6 पृष्ठ संख्या- 70
-7 पृष्ठ संख्या- 53
-8 पृष्ठ संख्या- 464
-9 पृष्ठ संख्या- 99
मृगनयनी -10पृष्ठ संख्या- 234
-11पृष्ठ संख्या- 141
-12पृष्ठ संख्या- 134
-13पृष्ठ संख्या- 188
-14पृष्ठ संख्या- 8
-15पृष्ठ संख्या- 230
-16पृष्ठ संख्या- 238
-17पृष्ठ संख्या- 23
-18पृष्ठ संख्या- 91
-19पृष्ठ संख्या- 194
-20पृष्ठ संख्या- 91
-21 पृष्ठ संख्या- 168
-22 पृष्ठ संख्या- 200
-23 पृष्ठ संख्या- 23
-24 पृष्ठ संख्या- 87
-25 पृष्ठ संख्या- 87
-26 पृष्ठ संख्या- 110
-27 पृष्ठ संख्या- 232
-28 पृष्ठ संख्या- 234
-29 पृष्ठ संख्या- 287
-30 पृष्ठ संख्या- 233
-31 पृष्ठ संख्या- 840
-32 पृष्ठ संख्या- 274

--- वृन्दावनलाल वर्मा

टूटे काँटे :- प्रस्तुत उपन्यास में, :1: रौनी प्रचण्ड तथा भ्रकुटि स्वभाव :2: वाली नारी है। :3: वह उसकी प्रकृति कीचे और बात बात पर उसका क्रोध भड़क उठता है। :4: नाखिया :5: जैसे की प्रकृति उसमें विद्यमान है। मूरवार्थ उत्थान :6: नहीं प्रकृति वाली नारी है। :7: खुशामद पसन्द करना उसकी प्रकृति के विपरीत है। :8: वह भावुक, :9: मनशील, :10: अपनी :11: धुन की पक्की है तथा उसमें भक्तिभावना विद्यमान है।

महारानी दुर्गावती :- प्रस्तुत उपन्यास में महारानी दुर्गावती स्वाभिमानिनी नारी है :12: :13: वह धार्मिक है तथा :14: उसमें आत्मसत्ता और निष्काम कर्म भावना विद्यमान है। :15: :16: राम :17: जैसी :18: धार्मिक, :19: सत्यवादी, स्वाभिमानी तथा लगनशील प्रकृति की नारी है।

माधव की सिप्रिया :- प्रस्तुत उपन्यास में :20: सारदार्थ ने :21: मतवाली, ईर्ष्यालु :22: क्रोधी, :23: और हठी प्रकृति की नारी की भूमिका का निर्वाह किया है। :24: मुमताजी बेगम एक ऐसी सुचरित्र नारी है। वह अपने हृदय के आन्तरिक रहस्यों को तथा स्वभाव की कटुताओं को कभी किसी से प्रकट नहीं होने :25: देती। :26: सन्ना बेगम विश्वधर्म में आस्था रखने वाली, एक रमणी है। वह

टूटे काँटे	-1 पृष्ठ संख्या- 279	माधव की सिप्रिया	-20 पृष्ठ संख्या- 42
	-2 पृष्ठ संख्या- 4		-21 पृष्ठ संख्या- 42
	-3 पृष्ठ संख्या- 334		-22 पृष्ठ संख्या- 43
	-4 पृष्ठ संख्या- 10		-23 पृष्ठ संख्या- 46
	-5 पृष्ठ संख्या- 353		-24 पृष्ठ संख्या- 62
	-6 पृष्ठ संख्या- 279		-25 पृष्ठ संख्या- 96
	-7 पृष्ठ संख्या- 35		-26 पृष्ठ संख्या- 77
	-8 पृष्ठ संख्या- 137		
	-9 पृष्ठ संख्या- 134		
	-10 पृष्ठ संख्या- 134		---- वृन्दावनलाल वर्मा
	-11 पृष्ठ संख्या- 388		
महारानी दुर्गावती	-12 पृष्ठ संख्या- 75		
	-13 पृष्ठ संख्या- 249		
	-14 पृष्ठ संख्या- 52		
	-15 पृष्ठ संख्या- 28		
	-16 पृष्ठ संख्या- 24		
	-17 पृष्ठ संख्या- 24		
	-18 पृष्ठ संख्या- 24		
	-19 पृष्ठ संख्या- 137		

कवि हृदय है और जब गीत गाती है तो अपनी मुक्ति विचार देती है। :1:
दूसरों की बात सुनने की उस विशिष्ट मात्र की अभ्यस्त नहीं है। उसका :2:
वेगम का स्वभाव व अत्यन्त सुलभ है। वह एक निडर नारी है। गौरिका :3: :4:
आर्य प्रचण्ड प्रकृति की नारी है। स्वभाव के ऊपर उसका नाम मात्र :5:
का नियंत्रण था। वह सुकाव- छिपाव की अभ्यस्त नहीं है। :7:

अधिव्याजार्य :- प्रस्तुत उपन्यास में रानी अधिव्याजार्य एक ऐसी नारी
है, जिन्हें किसी अभिमान नहीं था तथा दूसरे से तुलना करके अपने को :8:
बड़ा समझने की उनकी प्रकृति थी। पाठन-पूजन, कथावार्ता, स्वाध्याय, :9:
दान-पुण्य आदि उनकी धार्मिक प्रकृति को दर्शाते हैं। वे सब के साथ :10:
सहानुभूति और मृदुलता का व्यवहार करतीथीतथा न्यायप्रियऔर :11:
पुरुषार्थी नारी थी। आनन्दी में रूप का आकर्षण और वाणी का :12: :13:
समन्वयविद्यमान था। वह चतुर और साहसिक नारी थी। सिन्दूरी :14: :15: :16: :17:
बुद्ध संकल्प वाली सशक्त, विनम्र सुशीली थी। रूपादेवी, चिड़चिड़े, :18: :19:
क्रोधी और लालची स्वभाव की नारी थी।

माधव जी विन्ध्या -1 पृष्ठ संख्या- 72
-2 पृष्ठ संख्या-341
-3 पृष्ठ संख्या-414
-4 पृष्ठ संख्या-145
-5 पृष्ठ संख्या-156
-6 पृष्ठ संख्या-158
-7 पृष्ठ संख्या-165

अधिव्याजार्य -8 पृष्ठ संख्या- 61
-9 पृष्ठ संख्या- 18
-10पृष्ठ संख्या- 9
-11पृष्ठ संख्या- 4
-12पृष्ठ संख्या- 33
-13पृष्ठ संख्या- 8
-14पृष्ठ संख्या- 39
-15पृष्ठ संख्या- 56
-16पृष्ठ संख्या-112
-17पृष्ठ संख्या-116
-18पृष्ठ संख्या-126
-19पृष्ठ संख्या-116

---- कृष्णानन्दन शर्मा

कीचड़ और कमल :- प्रस्तुत उपन्यास कीर्तिमालिका प्रतिभा स्वाभिमानी, आत्मनिर्भर
:2:
स्वनिष्ठा, तथा विरक्ति और आकांक्षा के द्वन्द्व में पड़ने वाली नारी है। वह
:3: :4: :5:
अपनी धुन की पक्की है। उसकी प्रकृति में लोक-लज्जा, धनाकांक्षी लोभ और
:6: :7:
विलासशीलता विद्यमान है। निर्लज्जतापूर्वक वार्तालाप करने वाली, प्रतिभा
:8: :9:
मातृ भूमि की सेवा के लिये सदा उत्साहित रहती है। पद्मावती आत्मसंयमी
:10: :11:
और वैराग्यवत नारी है। रणनीतियों में उसकी निपुणता रुचि है। सोना
:12:
लज्जाशील बालिका है। वह फूल-प्रेमी में भाग्यशील रहती है। सोना की माँ
:13:
सदैव सन्तुष्ट रहती थी तथा कमलोचना, उसकी प्रकृति के अनुकूल था।
:14: :15:
देवगढ़ की मुस्कान :-प्रस्तुत उपन्यास में प्रियम्वदा सरली, प्रौढ़ी और
:16: :17:
चिड़चिड़े स्वभाव की नारी है। वह स्वार्थ और कड़े स्वर में बोलती थी।
उसके जीवन में कोमलता विद्यमान थी, जो उसके स्वभाव के कठोरता को
:18: :19:
दबाये रखती थी। वह पति की सेवा-सुश्रूषा करने तथा उत्साहित होकर,
:20: :21:
किसी कार्य को करने की अभ्यस्त थी। सिन्धी स्वाभिमानी, सच्चरित्र,
:22: :23: :24:
निडर, भोली तथा कल्पनामयी प्रकृति की युवती थी। निर्भयता के साथक
:25: :26:
वार्तालाप करना और भजन गाना, उसकी प्रकृति के अनुकूल था। भुवनमोहिनी,
:27:
जन्मभावनाओं का समादर करने वाली नारी है। वह सुसभ्य मैत्रिकर्तव्य विमुख
:28:
हो जाती थी।

कीचड़ और कमल	-1 पृष्ठ संख्या-103		देवगढ़ की मुस्कान	-16 पृष्ठ संख्या- 14	
	-2 पृष्ठ संख्या-160			-17 पृष्ठ संख्या- 17	
	-3 पृष्ठ संख्या- 16			-18 पृष्ठ संख्या- 18	
	-4 पृष्ठ संख्या- 295			-19 पृष्ठ संख्या- 41	
	-5 पृष्ठ संख्या-89			-20 पृष्ठ संख्या- 16	
	-6 पृष्ठ संख्या-98			-21 पृष्ठ संख्या- 93	
	-7 पृष्ठ संख्या-14			-22 पृष्ठ संख्या-225	
	-8 पृष्ठ संख्या-280			-23 पृष्ठ संख्या-225	
	-9 पृष्ठ संख्या-215			-24 पृष्ठ संख्या- 4	
	-10पृष्ठ संख्या-207			-25पृष्ठ संख्या- 11	
	-11पृष्ठ संख्या-195			-26पृष्ठ संख्या- 2	
	-12पृष्ठ संख्या-120			-27 पृष्ठ संख्या-105	
	-13पृष्ठ संख्या-102			-28 पृष्ठ संख्या-126	
देवगढ़ की मुस्कान	-14पृष्ठ संख्या- 56				
	-15पृष्ठ संख्या- 69				

--- कृष्णकमलाल शर्मा

भुवन विक्रम :- प्रस्तुत उपन्यास में विमाता विलासिनी संकोच वाली :1: , वर्तमान की दुनिया देने के स्वभाव वाली :2:, तथा क्रोधी स्वभाव :3: की युक्ती थी। ममता स्थिर मति की :4: गौरवशालिनी रानी थी । गौरी, भोली-भाली :5: युक्ती थी किन्तु बाद में वह दृढ़ :6: और दूरदर्शिता का परिचय :7: देती है ।

रामशाह की रानी :- प्रस्तुत उपन्यास में रामशाह की रानी अवन्तीबाई, :8: उग्र तथा हठी प्रकृति की नारी थी । वे अपूर्व संकेत, चतुरता और अवाधुर्वी :9: रखती थी ।

भोली आस :- प्रस्तुत उपन्यास में रहीमुन विलासोकीयू विनय :10: दृढ़वाली :11: स्त्री थी। रावनाम महत्वाकांक्षी :12: और लालची :13: थी तथा देवकी की प्रकृति में :14: कुलटता विद्यमान थी ।

भुवन विक्रम	-1	पृष्ठ संख्या- 3
	-2	पृष्ठ संख्या- 5
	-3	पृष्ठ संख्या- 8
	-4	पृष्ठ संख्या-103
	-5	पृष्ठ संख्या-122
	-6	पृष्ठ संख्या-295
	-7	पृष्ठ संख्या-296
रामशाह की रानी	-8	पृष्ठ संख्या- 76/78
	-9	पृष्ठ संख्या- 69
भोली आस	-10	पृष्ठ संख्या- 2
	-11	पृष्ठ संख्या- 14
	-12	पृष्ठ संख्या- 2
	-13	पृष्ठ संख्या- 4
	-14	पृष्ठ संख्या- 78

------ वृन्दावनलाल वर्मा

अन्य कथा को :-प्रस्तुत उपन्यासमें जानकीबाई, सोयराबाई, पद्मकुंवर और अहिल्याबाई मराठा कन्या के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। जानकीबाई एक नर्तकी के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह करती है। वह चाटुकार प्रकृतिकी है।[11] सोयराबाई छत्रपति शिवाजी की पत्नी थी। अपने पति का आदर-सत्कार करना, उनकी प्रकृति में आता था।[2] उनके पुत्र संभा में पति के प्रति श्रद्धा और भक्ति विद्यमान थी।[3] सोयराबाई की प्रकृतिकी उसके बड़ी विशेषता थी कि उसमें कठोरपन उपस्थित था, जो कभी कभी उग्र रूप धारण करता था।[4] पद्मकुंवर प्रतिष्ठा नारी थी। वह सुकोमली और देवरूपवाली थी।[6] मराठा कन्या अपने वचन की पक्की थी। वह अपने अस्तित्व की रक्षा और स्वतन्त्रता करने के लिये प्राणोत्सर्ग करके अमर हो जाती थी।[7]

अहिल्या चित्र :-प्रस्तुत उपन्यास में उमाबाई, रुक्मिणिका के नाम विशेष उल्लेखनीय है। उमाबाई, अहिल्याचित्र की रानी है। वह राष्ट्रवादी[18] तथा परिपूर्ण धर्म का पालन करनेवाली नारी है।[19] रुक्मिणिका वाणिज प्रकृति की नारी थी। किसी काम को तत्परता से करने उसकी स्वभाव थी।[10] बाय मैडम छोर आदि सब प्रकृतियाँ नारी के रूप में परिवर्तित की जाती है और भगवान की कृपा पाने के लिये भजन पूजन करने लगती है।[31]

अन्य कथाओं
-1 पृष्ठ संख्या- 4
-2 पृष्ठ संख्या- 68
-3 पृष्ठ संख्या- 83
-4 पृष्ठ संख्या- 84
-5 पृष्ठ संख्या-141
-6 पृष्ठ संख्या-145
-7 पृष्ठ संख्या- 53

अहिल्याचित्र
-8 पृष्ठ संख्या-399
-9 पृष्ठ संख्या-399
-10 पृष्ठ संख्या- 20
-11 पृष्ठ संख्या-195 ------ वृन्दावनलाल वर्मा

ख - वेश - भूषा

गजु कुण्डार :- प्रस्तुत उपन्यास के नारी पात्रों की वेश-भूषा का उल्लेख करते करते हुये लिखा है कि तारा, पैरों में पतली कोर के चांदी के बोझटी तथा पैजने, हाथों में सोने के कड़े, पटेले और दो-दो कांच की चूड़ियां पहिनती थी। वह रंग के गुलाबी रंग की धोती पहिना करती थी, जिसका लम्बा कछोटा मार लेती थी। माथे पर रोरी की बोटी सी "बूंदकी" लगाये रहती थी :1: ।

मानवती गले में मोतियों की माला पहिनती थी। वह रंग-बिरंगे फूलों की माला से अपने वेश भूषि रहती थी । शरीर पर कहीं कहीं थोड़े से स्वर्णाभूषण तथा पैरों में सोने के पतले पैजने पहिनाकरतीथी । माथे पर बेसर की ओर निकाले रहती थी :2: ।

सिराहा की पद्मिनी :- प्रस्तुत उपन्यासकी नारी पात्रों में कुमुद तथा मोमती मेजपनी चूड़िका का निजाहि किया है। कुमुद पीली धोती पहिनती थी :3: । आधे खुले सिर से लटकतीघुंघ बालों की लट :4: , कमरी में हीरे की चमकती अंगूठी :5: , पैरों पैजनी :6: , भौंहों के मध्य सिन्दूर और भाल का गहरा टीका :7: , उसकी वेशभूषा को सुसज्जित करता था। मोमती प्रायः धोती धारण करती थी :8: ।

मुसाफिरखाना :- प्रस्तुत उपन्यास में घरवारी बाली के आभूषणों में, रत्नजटित कर्ण :9: बहुरियां, सोने की जड़ाऊ बहुरियां :10: , नथ :11: , अंगूठियां :12: तथा अन्य बहुमूल्य आभूषणों का उल्लेख मिलता है। :13: सुहाग के प्रतीक चूड़ियां :14: , पैर पैजने :15: , कुछ सोने के तथा अधिकतर चांदी के आभूषणों को धारण करने का उल्लेख किया गया है :16: ।

गजु कुण्डार	-1 पृष्ठ संख्या- 62	मुसाफिर खा	-9 पृष्ठ संख्या- 19
	-2 पृष्ठ संख्या- 172		-10 पृष्ठ संख्या- 21
सिराहा की पद्मिनी	-3 पृष्ठ संख्या- 230		-11 पृष्ठ संख्या- 31
	-4 पृष्ठ संख्या- 230		-12 पृष्ठ संख्या- 31
	-5 पृष्ठ संख्या- 11		-13 पृष्ठ संख्या- 8
	-6 पृष्ठ संख्या- 63		-14 पृष्ठ संख्या- 18
	-7 पृष्ठ संख्या- 159		-15 पृष्ठ संख्या- 18
	-8 पृष्ठ संख्या- 59		-16 पृष्ठ संख्या- 23

----- कृष्णदत्तनारायण शर्मा

कजरार :- प्रस्तुत उपन्यास में कजरार ,[1] [2] [3] [4] ललिता,कजरावती और मन्ना चारों साड़ी पहिनती थी और घूंघट डाला करती थी । कजरार की उत्कृष्ट वेशभूषा के अंतर्गत रंगीन झीनी साड़ी और रंग बिरंगी साड़ी का उल्लेख मिलता है ।[5] वह प्राय: साधारण वस्त्र और बहुत कम आभूषण धारण करती थी[6]। कजरारी के रूप में वह भगवा रंग की कौपीन धारण करने लगी थी ।[7] कजरावती की वेशभूषा में रेशमीरंगीन वस्त्र[8] साड़ी[9] स्वर्णाभूषण ,धारण करने का उल्लेख मिलता है। मन्ना झीनी पहिनती थी तथा काले के लौंड़े और घुंघरू धारण करतीथी ।[10] कजरार ने पुरुष वेशभूषा के अतिरिक्त राजा की आज्ञा केअनुसार राजसी रंगबिरंगी पहिनना प्रारम्भ कर दिया था ।[11] झाँसी की रानी :- प्रस्तुत उपन्यास में लक्ष्मीबाई कीवेशभूषा केअंतर्गत , रंगीन रेशमी साड़ी, स्वर्णाभूषण,मानिक मोतियों के हार का उल्लेख मिलता है।[12] वैधव्य के उपरांतवे नौ मोतियों की माला,हाथ में एक हीरे की अंगूठी पहिने रहती थी तथा श्वेत साड़ी पर मोटा श्वेत दुशाला ओढ़ती थी ।[13] पुरुषवादी के समय वे मर्दाने वेशमें रहा करती थी तथा सिर पर लोहे का कुला ऊपर से नाका,जिसका एक छोर पीछे फहराता हुआ, कंधों के ऊपर लटा हुआ अंगरखा पेजामा, अंगरखोंऔर पेजामे पर कसी हुई पेटी रहती थी तथा दोनों हाथों में पिस्तौलेंऔर परतलों में तलवारें लगी रहती थी ।[14] मन्दिर जाते समय वे कभी घुंघरू वेशभूषा में रहती[15]

कजरार -1 पृष्ठ संख्या-23
-2 पृष्ठ संख्या-28
-3 पृष्ठ संख्या- 3
-4 पृष्ठ संख्या-36
-5 पृष्ठ संख्या-174
-6 पृष्ठ संख्या-68
-7 पृष्ठ संख्या490
-8पृष्ठ संख्या-69
-9 पृष्ठ संख्या-127
-10पृष्ठ संख्या-161
-11पृष्ठ संख्या-313
-12पृष्ठ संख्या-357
झाँसी की -13पृष्ठ संख्या- 37
रानी -14पृष्ठ संख्या-137
-15पृष्ठ संख्या-214

--- वृन्दावनलाल वर्मा

थी तथा लम्बी साड़ी और सुन्दर लाल घाघरा बाँधती थी।[1] युद्ध के समय, रानी अपने पिताके की लालकुर्ती, मर्दाना पोशाक धारण करतीथी । वे गले में मोतियों और हीरों की माला तोड़े के कुले पर कन्देरीका बरसारी लाल लाल, सोने के दस्ताने और भुजबन्ध[2] तथा गले में लम्बी कण्ठीहीरों का दमकता हुआ कण्ठा[3] धारण करती थी । अलकारिन रंग-बिरंगे कपड़े में रहती थी। वह चाँदी के जेवर धारण करती थी तथा उसके सब ठाठ मौलव जाता कुमेलखण्डी रहते थे । उसके पैर के पैजने से लेकर सिर की पाटनीपटाम्बिनी० तक सब आभूषण स्थानिकअत्योहारों पर वह चाँदी के जेवरों से लदी रहती थी[4] तथा माँग पर सिन्दूर की बिन्दी लगाया करतीथी[5] । मन्दिर जाते समय वह लाल-गुलाबी रंगीन वस्त्र धारण करतीथी[6] । काँच के मोतियों का कण्ठा भी उसे प्रिय था[7] । कोटी, अंगे वस्त्र और घोड़े में आभूषण धारण करती थी[8] । मोती आदि आभूषण कम पहिनती थी और घुंघरों से सदा लदी रहतीथी[9] ।

मृगनयनी :- प्रस्तुत उपन्यास में मृगनयनी और माधो के वेशभूषा वर्णन हुये बताया गया है कि उन दोनों ने घोड़ी को सिर से लपेट रखा था । घुटनों तक मोटे लहँगे का कपड़ा । बरोस अँगुली से ढके हुये, पीठ से लगे हुये पैर उघाड़े । गले में मूँगी और काँच के छोटे-बड़े दानों की माला । कलाइयों पर काँच कीचोक की मोटी चूड़ियाँ । पैरों में काँसे का पीतल तक का बड़ा नथनी[10] । घुटनेहियों कीचक-चुकार कारकलेखा करते हुये बताया गया है कि

---

[1] मृगनयनी -1 पृष्ठ संख्या- 320
-2 पृष्ठ संख्या- 480
-3 पृष्ठ संख्या- 290
-4 पृष्ठ संख्या- 97
-5 पृष्ठ संख्या- 151
-6 पृष्ठसंख्या- 330
-7 पृष्ठ संख्या- 424
-8 पृष्ठ संख्या- 45
-9 पृष्ठ संख्या- 69
मृगनयनी -10पृष्ठ संख्या- 45

-- वृन्दावनलाल वर्मा

" उनके सबके केश लम्बे थे । :1: स्त्रियाँ चिकड़ों-मुकड़ोंदार घाघरा,ओढ़नी कोर नथ ओढ़ती थी ।उनके पैरों पर केवल चोली कसे हुए कानों में कसे की बालियाँ और नाक में पीतल के बड़े बड़े नथ तथा गले में काँच के रंग-बिरंगे मुरियों की मालायें ।" :2: बिन्नी सुन्दर चोली तथा सुन्दर पेजामा धारण करती थी । लाली और बिन्नी" मोटी छींट के लहंगे,रंगबिरंगी मोटे कपड़े की चोलियाँ, मोटी-मोटी लाल ओढ़नी भी धारण करती थी :3: " विचार के उपरांत बिन्नी रेशमी वस्त्र तथा स्वर्ण और मोतियों के आभूषण धारण करने लगी थी। :4: किन्तु आर्थिकावस्था वाली चाँदी कोकाँगोरिया को वह रानी बनने पर भी धारण किये रही । :5:

भुवन विक्रम :- प्रस्तुत उपन्यास में बिन्नी की वेश-भूषा के सम्बन्ध में बताया गया है कि वह आर्य नारी कोकेश भूषा से भिन्न वेश-भूषा में रहती थी । :6: रत्न-जड़ित सोने की करधोनी,घाघरा, बारीक ओढ़नी ,मणिमाणिकों का हार पहिनती थी :7: तथा केश खुले में लाल रेशमी फीते बाँधती थी :8: । विशिष्ट अवसरों पर बिन्नी सिर पर मणि मुक्ताओं और फूलों की मालाओं,माणिक मोतियों के हार, सोने के भुजबन्ध, स्वर्ण सोने की चूड़ियाँ,बहुमूल्य बड़े बड़े लंबकों वाली बाली, सोने की चौड़ी करधोनी, पैरों में घुन-घुन करने वाला आभूषण तथा अनेक प्रकाशमान सामग्री से अपनी वेशभूषा को सुसज्जित करती थी :9: । :10: गोरी पहले मोटे कपड़ों के वस्त्र तथा लाल रंगकी ओढ़नी धारण करती थी किन्तु बेबेतरिकके रेखती की भूमिका का निर्वाह करते समय वह कंचुकी व साड़ी धारण करने लगी थी :11: । :12: अम्बिका, रंगीन कंचुकी और :13:

मृगनयनी -1 पृष्ठ संख्या-86
-2 पृष्ठ संख्या-107
-3 पृष्ठ संख्या-163
-4 पृष्ठ संख्या-291
-5 पृष्ठ संख्या-296
भुवन विक्रम -6 पृष्ठ संख्या- 3
-7 पृष्ठ संख्या- 31
-8 पृष्ठ संख्या- 32
-9 पृष्ठ संख्या- 28
-10पृष्ठ संख्या-294
-11पृष्ठ संख्या-178
-12पृष्ठ संख्या-109
-13पृष्ठ संख्या-296 ----- वृन्दावनलाल वर्मा

मोटी रंगीन झोली पहिनती बुंदेलखण्ड की साधारण नारियों की वेशभूषा का प्रतिनिधित्व करती है।[1]

राम गढ़ की रानी :- प्रस्तुत उपन्यास में रानी अवन्तीबाई की वेश-भूषा का उल्लेख मिलता है। वे युद्ध के समय मूँगिया रंगकी घोड़ी वर्दी पहिनती थी। अचकन, पेजामा तथा साफा भी उनकी वेशभूषा को सुसज्जित करते थे।[2]

सोती आग :- प्रस्तुत उपन्यास में रहीमुन मियाँ तथा शकलम के बुर्का ओढ़ने का उल्लेख मिलता है।[3] बुन्देलखण्ड में मुस्लिम परिवार की नारियाँ प्रायः बुर्का ओढ़ती थी।

माधव की सिन्धिया :- प्रस्तुत उपन्यास में नारी पात्रों की वेशभूषा का वर्णन निम्नवत् मिलता है :-

- गन्धा बेगम लाल रंग का रेशमी पेजामा, नीले रंगकी कंचुकी और धानी रंगका दुपट्टा ओढ़ती थी।[4] कभी कभी " उसे पुरुष वेश और नारी भूषा का सम्मेलन करना पड़ता था।[5] उसकी वेश भूषा में उसका पुरुषत्व, भद्दापन जैसे उभरता और ढलता तथा सौन्दर्य, न्यौछावरी देने लगता था।[6] उम्दा बेगम दुशाला ओढ़ती थी।[7] [illegible] रामचन्द्र की पत्नी मोटे वस्त्र धारण करती थी तथा गहनों से शृंगार चिह्न उनके शरीर अथवा विद्यमान रहते थे।[8] जिनका बुन्देलखण्ड में विशेष महत्व है।

मुक्त विहग	-1 पृष्ठ संख्या- 38
रामगढ़ की रानी	-2 पृष्ठ संख्या- 114
सोती आग	-3 पृष्ठ संख्या 1 तथा 140
माधव की सिन्धिया	-4 पृष्ठ संख्या- 72
	-5 पृष्ठ संख्या- 209
	-6 पृष्ठ संख्या- 206
	-7 पृष्ठ संख्या-140
	-8 पृष्ठ संख्या- 276

---- वृन्दावनलाल वर्मा

अभिव्यक्तार्थ :- प्रस्तुत उपन्यास में आनन्दी गहरे लाल रंग का घेरदार में
लगुड़ा हुआ काली बुंदकियों वाला सिलवटोंदार लहंगा, ओढ़नी, कन्चुकी,
अलगती रंग का कुर्ता, जिस पर छोटे छोटे रंगीन कपड़े के चोकोर टुकड़े सिले
थे, पहनती थी। गले में मोटे काँच के मोतियों की माला भी धारण करती
थी :1: । सिन्दूरी अपने माथे पर सिन्दूर की बड़ी" टिपकी" लगाती थी तथा
घेरदार लहंगा, कन्चुकी के ऊपर रंग-बिरंगी चुनी और ओढ़नी धारण किया
करती थी :2: ।

कीचड़ और कमल :- प्रस्तुत उपन्यास की नायिका पुनिया की वेशभूषा का
उल्लेख इन शब्दों में किया है जिसमें " छोटी, मोटे रंगों की चूनिका वाली,
जिसपर छोटे छोटे बूटों के छपके और किनारी चमकदार अस्तरी की,
कन्चुकी पहनी थी। कलाइयों पर रबर के गहने और गले में भी आभूषण।
कमीज लगाये- छोटी छूटों के बहुत नीचे तक, तहदार घाघरे का घूट
थोड़े निकला हुआ और फूल माला से सजाया हुआ ।:: मेरी कीचड़ी कुंचकी
:: करछनी" :3: धारण करती थी ।" :4: पैजनी भी पहिनती थी । मन्दिर में
सुर सुन्दरी के रूप में नृत्य करने से पूर्व वह अम्बरा की वेशभूषा में अपने को
सुसज्जित कर लेती थी :5: । वह केशों को पाँच चोटियों में गूँथती थी तथा-

---

अभिव्यक्तार्थ -1 पृष्ठ संख्या- 33

-2 पृष्ठ संख्या- 40

कीचड़ और कमल -3 पृष्ठ संख्या- 24

-4 पृष्ठ संख्या- 25

-5 पृष्ठ संख्या- 38

----- पुष्पाकान्त वर्मा

उसकी रेशमी रंग-बिरंगी चमकदार साड़ी, भिन्न भिन्न रंगों की मोती जड़ी कन्चुकी, केसरिया रंग का बिल्कुल नीचेतक छूटता, नीला आवरण और गले के एवं हाथों के आभूषणों से उसकी वेशभूषा निखार उठती थी ।:1:

महारानियाँ, पद्मावती, आभूषणों और मुक्ताहार से सजी रहती थी । वह बहुमूल्य और आकर्षक वस्त्र धारण करती थी ।:2: कभी कभी वह वस्त्रों से सुसज्जित होकर पूरा वेश में रहा करती थी ।:3:

महारानी दुर्गावती :- प्रस्तुत उपन्यास में दुर्गावती साड़ी धारण करती है, जिसका कभी कभी कछोटा लगा लिया करती है ।:4: उसकी वेशभूषा को, दुशाला ओढ़े, जवाहरात, मोतियों के आभूषण, सोने की चूड़ियाँ और पुष्प सुसज्जित किया करते थे।:5: शिकार के समय वह मूँगिया रंग के, शिकारी वस्त्र धारण करती है।:6: युद्ध काल में उसकी वेशभूषा के अंतर्गत सिर पर एक वेशकिमती साफा सोने तथा मोर पंख के आकार की विभिन्न रंगों वाली रत्न जटित कलगी मूँगिया रंगके कपड़े, लोहे का कवच आदि धारण करने का उल्लेख मिलता है।:7: उपन्यास की अन्य नारी पात्र, राम प्यारी साड़ी तथा मूँगिये रंगके वस्त्र धारण करती है।:8: वह दुशाला भी ओढ़ती थी।:9:

वेशभूषा की मुस्कान :- प्रस्तुत उपन्यास में नारी पात्रों की वेश-भूषा निम्नवत अंकित है :-

प्रियम्वदा, मन्दोदरी कौशिकलाल बहुमूल्य साड़ी, बहुमूल्य मोतियों और सोने का हार, सोने की चूड़ियाँ और चाँदीकी पैजनियाँ पहिनती थी ।:11:

चौथा और कमा	-1 पृष्ठ संख्या- 59
	-2 पृष्ठ संख्या- 93
	-3 पृष्ठ संख्या- 214
महारानी दुर्गावती	-4 पृष्ठ संख्या- 157
	-5 पृष्ठ संख्या- 29
	-6 पृष्ठ संख्या- 179
	-7 पृष्ठ संख्या- 157
	-8 पृष्ठ संख्या-306
	-9 पृष्ठ संख्या- 57
	-10पृष्ठ संख्या- 29
वेशभूषा की मुस्कान	-11पृष्ठ संख्या- 35

---- वृन्दावनलाल वर्मा

मालवती और कुंवर दरसा चन्देरी के बहुमूल्य चमकदार रेशमी वस्त्र धारण करती थी [1]। जिनकी साधारण रेखा भूषा में रहती थी [2]। वे जिनकी की धूलीकोटी रंगीनओढ़नी का उल्लेख मिलता है [3]। वह माथे पर सिन्दूर का टीका लगाये रहती थी तथा केशों में फूल खोंसे रहती थी [4]। बुन्देलखण्ड में बनी चन्देरी की साड़ियाँ काफी ख्याति प्राप्त कर चुकी हैं।

ग - आचार- विचार :

गढ़ कुण्डार:- प्रस्तुत उपन्यास की नारी देवकली सुकीर्ति की रक्षा-रक्षा की अभिलाषी है [5] तथा अपने कर्तव्य पालन करने में तत्पर रहती है [6]। उसे जाति का विशेष स्वाभिमान है वह कुँवर राजकुमार के विवाह प्रस्ताव को ठुकराती हुई कहती है कि" मैं क्षत्रीय कन्या हूँ। बुन्देला हूँ। आप कुँवरहैं। जाइये [7]।" उसका पुत्र विजयसिंह कि शत्रु को" यदि बल से नहीं मार सकते तो छल से मारो [8]।"

सारा उपदेश देने में कुशल तथा उपदेश ग्रहण करने में अतिविनम्र नारी है [9]। वह स्वार्थ की सिद्धि के लिये सेवा, त्याग और प्रसन्नता को प्रतिष्ठित करने वाली युवती है [10]। वह कठिन व्रत साधना करती है और पति की आज्ञा न करके अपने विचार व्यक्त करती है कि :" देवता की जो इच्छा होगी, सो होगा [11]।" वह छल-कपट से सदा दूर रहती है [12]।

मालवती अस्त्र-शस्त्र की विद्या को सीखने और अभ्यास करने में सदा रत रहती है [13]। उसका विचार है कि" मुझे तो एकदेशता का शक है।

देशगढ़ की मुस्कान
-1 पृष्ठ संख्या- 83
-2 पृष्ठ संख्या- 84
-3 पृष्ठ संख्या- 83
-4 पृष्ठ संख्या- 86

गढ़ कुण्डार
-5 पृष्ठ संख्या-191
-6 पृष्ठ संख्या-191
-7 पृष्ठ संख्या-336
-8 पृष्ठ संख्या-424
-9 पृष्ठ संख्या-162
-10पृष्ठ संख्या-162
-11पृष्ठ संख्या-241
-12पृष्ठ संख्या-162
-13पृष्ठ संख्या-177 --- वृन्दावनलाल वर्मा

अनेक देवताओं के पूजन के लिये मैंने जन्म नहीं लिया :1: । उसका कथन है कि आवश्यकता पड़ने पर स्त्रियाँ प्राण विसर्जन भी कर सकती हैं :2: । रानी दूर-दर्शी प्रवृत्ति की नारी है। उनका विश्वास है कि" स्त्रियों को लोग अज्ञान कहा करते हैं, परन्तु हम लोगों से कोई भेद नहीं छिपा सकता :3: ।" वे अपने परिवार को सुखी-सम्पन्न देखने की सदा आकांक्षा करती हैं :4: ।

विराटा कीपद्मिनी :- प्रस्तुत उपन्यास में कुमुद, मोमती, छोटीरानी तथा बड़ी रानी ने अपनी भूमिका का यथोचित निर्वाह किया है। कुमुद देवी की पुजारिन है :5: । वह दुर्गा जी के भण्डारे को ही सबसे बड़ा काम मानती है :6: । उसका विचार है कि" मानव को जो दुःख होता है, उसका मूल उसका ही अपना भ्रम है :7: । वह भारतीय जीवन व्यतीत करती है तथा विपत्ति में सदा धैर्य रखती है :8: । वह राजपद और राजमद को हेय समझती है :9: । वह भाभी को प्रकट मानती है :10: तथा नारी की लाज बचाने के लिये प्राणोत्सर्ग कर देती है :11: । मोमती गुप्त चिन्ता में डूबी रहने वाली युवती है :12: । वह भाग्यवादी नारी है :13: । किन्तु कभी-कभी उतावली कर बैठती है :14: । उसे राज्य से कोई लोभ नहीं है। वह स्पष्ट कहती है कि" मैं राज्यपाट की भिखारिणी नहीं हूँ :15: ।" उसे चरित्र

नोट कुमार -1 पृष्ठ संख्या- 178
-2 पृष्ठ संख्या- 178
-3 पृष्ठ संख्या- 174
-4 पृष्ठ संख्या- 175

विराटा की पद्मिनी -5 पृष्ठ संख्या- 62
-6 पृष्ठ संख्या- 202
-7 पृष्ठ संख्या- 226
-8 पृष्ठ संख्या- 202
-9 पृष्ठ संख्या- 219
-10पृष्ठ संख्या- 298
-11पृष्ठ संख्या- 385
-12पृष्ठ संख्या- 61
-13पृष्ठ संख्या- 65
-14पृष्ठ संख्या- 166
-15पृष्ठ संख्या- 240 ---- वृन्दावनलाल वर्मा

जाति का विशेष अभिमान है :1: छोटी रानी राज्यसिंहासन को अपना अधिकार समझती है :2: । उसमें राज्य लिप्सा का आधिक्य है :3: । पूरे की मौत मरना उसे स्वीकार नहीं है :4: । वह रानी पैर में तो रहती थी किन्तु एकप्रचण्ड पुरुष के रूप में अपना जीवन व्यतीत करती है :5: । :6: छोटीरानी प्रजावत्सल थी । वे एक बार अपने मनोरथ में विफल होने पर पुन: चेष्टा नहीं करती थी :7: । वे किसी कार्य को सोच-विचार कर करती थी :8: ।

सुनाथिबबू :- प्रस्तुत उपन्यास में विशेष रूप से घरबारी वाली तथा सुभद्रा ने नारी पात्रों की भूमिका का निर्वाह किया है । घरबारी वाली पतिव्रता नारी थी तथा उन्हें अन्धपूर्ण पर विश्वास था :9: । वे अपना अपमान या उपहास सहन नहीं कर पाती थी :10: । उनकी स्वाभाविक दयुता चालाकी को उजागर किया करती थी :11: । सुभद्रा को अपने जीवन से विशेष लगाव नहीं था । वह चाहती थी कि, भगवान उसकी सुन ले। :12: उसे आभूषणों और रूपों से कोई प्रयोजन न था । :13: उसे ईश्वर के न्याय पर विश्वास था :14: तथा वह सुखासुख को विशेष रूप से मानती थी :15: ।

कनार :- प्रस्तुत उपन्यास में कनार एक आदर्श आचारी-विचारी वाली नारी की भूमिका का निर्वाह करती है। उसे गौड़ कन्या होने का गर्व है। वह आभूषणों के प्रति उत्सुक नहीं रहती है तथा कुत्तों की छाल

विराज की बहिनभी

-1 पृष्ठ संख्या- 64
-2 पृष्ठ संख्या- 35
-3 पृष्ठ संख्या- 45
-4 पृष्ठ संख्या- 82
-5 पृष्ठ संख्या-119
-6 पृष्ठ संख्या- 45
-7 पृष्ठ संख्या- 78
-8 पृष्ठ संख्या-140

सुनाथिबबू

-9 पृष्ठ संख्या- 15
-10पृष्ठ संख्या- 35
-11पृष्ठ संख्या- 38
-12पृष्ठ संख्या- 17
-13पृष्ठ संख्या- 21
-14पृष्ठ संख्या- 61
-15पृष्ठ संख्या- 43

--- सुन्दरलाल शर्मा

मे शरीर को कस कर जीवन-यापन करने को भी तत्पर रहती है।[1] वह पत्नी की बात को [illegible] तलवार मानती है तथा अपना नारीत्व नष्ट नहीं होने देती।[2] वह भजन-पूजन:[illegible], पूजापाठ और योगाभ्यास में भी रुचि रखती है[3] और सन्यास और तपस्या से अपना लोक-परलोक सुधारने को आतुर हो जाती है।[4] वह पुरुष को चरित्र को भी नारी चरित्र की तरह एक गूढ़ पहेली मानती है।[5] अपनी अक्ल का लाभ उठाने वाली अपनी कला से आगे रूठने टेकने वाली तथा भाग्य को ही श्रेष्ठ मानकर चलने वाली नारी है।[6] लगता कार्लियार है कि वृन्दा के उपरांत कोई किसी को याद नहीं करता। पटा हुआ और [illegible] पर पट [illegible] दिये गये।[7] मन्त्रा सामने सोमने में विशेष रुचि रखती है।[8] जासूसी करके वह अवसर का लाभ उठाना भी जानती है।[9]

रानी की रानी :- रानी [illegible], [illegible] से ही अन्न-वस्त्र चलाने, घुड़सवारी करने, मछली पिंजरे तोड़ने का अभ्यास करती थी।[10] उन्हें अपने "[illegible]" नाम से अभिहित थी।[11] पूजापाठ तथा [illegible] में उन्हें आस्था थी।[12] वे [illegible] को, [illegible] के समान मानती थी।[13] उनका विश्वास था कि " पुरुषों को पुरुषार्थ सिखाने के लिये स्त्रियों को मल्लयुद्ध, कुश्ती आदि सीखना चाहिये।[14] वे दृढ़ थी और उनका विचार था कि " स्त्रियों अगर दृढ़ता का अवलम्ब लेंगे, तो फिर संसार

कथनार
-1 पृष्ठ संख्या- 25
-2 पृष्ठ संख्या- 26
-3 पृष्ठ संख्या- 27
-4 पृष्ठ संख्या-164
-5 पृष्ठ संख्या-181
-6 पृष्ठ संख्या-218
-7 पृष्ठ संख्या-128
-8 पृष्ठ संख्या-203
-9 पृष्ठ संख्या-159
-10पृ०संख्या- 37

रानी की रानी
-11पृष्ठ संख्या- 24
-12पृष्ठ संख्या- 28
-13पृष्ठ संख्या- 27
-14पृष्ठ संख्या- 64
-15पृष्ठ संख्या- 65
-16पृष्ठ

---- वृन्दावनलाल वर्मा

मैं ऐसा पुरुष ही हो नहीं सकता, जो उन्हें लूट ले।" :1: उन्हें कटु व्यंग भी प्रिय था। :2: उनमें समन्वय की भावना विद्यमान थी तथा " :3: उनका आचार-विचार आश्चर्य उत्पन्न करने वाली परिपक्वता का प्रतीक :4: होता था। अन्य नारी पात्र सुन्दर, आत्मबलिदान हेतु प्राणोत्सर्ग तक करने के लिये तत्पर बनी रहती थी। :5: अधिकांश पु.पात्र की आज्ञा को सर्वोपरि मानती हैं। :6: सुखी, ऐश्वर्य-शाली नारी थी वह मुख्य कुशल कला के माध्यम से शत्रुओं का भेद ले लेती थी और जासूसी कार्य सम्पन्न करती थी। :7:

मृगनयनी :- प्रस्तुत उपन्यास में नारी पात्रों के आचार-विचारों का उल्लेख करते हुये लिखा है कि राजा रानी अहीर जाति की युवती है, :8: उसे अपनी जाति का अभिमान है। परन्तु उसे अच्छा नहीं :9: लगता। वह लज्जा संकोच से परे रहा करती है। :10: जंगली जानवरों का :11: शिकार करना उसे अधिक था। सुमनोहिनी कटु व्यंग करने वाली :12: स्त्री थी। वह मोतिया :13: रंग से सदा दुखी रहा करती थी। :14: मृगनयनी, मनोरंजन कर जंगली जानवरों का शिकार करती थी। :15: उसे घर में घिरी रहने वाली स्त्रियाँ आजीवन पसन्द न था। उसमें वह साहस था और बड़े जंगल के नाम पर ग्वालियर के किले में कैद होने में संकोच करती थी। कभी कभी वह भय की लज्जा और निर्भयता के बल के मध्य में पड़ जाया करती थी तो कभी तर्क-वितर्क

टिप्पणी की रचना	-1 पृष्ठ संख्या- 79
	-2 पृष्ठ संख्या- 79
	-3 पृष्ठ संख्या- 101
	-4 पृष्ठ संख्या- 83
	-5 पृष्ठ संख्या-140
	-6 पृष्ठ संख्या- 99
	-7 पृष्ठ संख्या- 238
मृगनयनी	-8 पृष्ठ संख्या- 23
	-9 पृष्ठ संख्या- 45
	-10पृष्ठ संख्या- 23
	-11पृष्ठ संख्या- 43
	-12पृष्ठ संख्या-233
	-13पृष्ठ संख्या-234
	-14पृष्ठ संख्या- 17
	-15पृष्ठ संख्या- 16
	-16पृष्ठ संख्या- 92
	-17पृष्ठ संख्या-141 ---- वृन्दावनलाल वर्मा

:1:
करने लगती । संयम-नियम से रहना उसे पसन्द :2: था ।

टूटे काँटे :- प्रस्तुत उपन्यास के नारी पात्रों के अंतर्गत रोमी, नूरजहाँ, शोभनिनतथा मालती के नाम उल्लेखनीयहैं ।

रोमी एक ग्रामीण महिला है। वह घर गृहस्थी के कामों में व्यस्त :3: रहती थी । किसी से दबती नहीं थी :4: तथा जाल-फूल के प्रति :5: गहरी करने की भी अभ्यस्त थी । वह बात बात में गाली :6: दिया करती थी :7: भाग्य के लिखे को समझौती समझती थी । उसका काम था जिसेरी जीभ :8: :9: :10: छुरी है पर आराम नहीं । वह निकट तथा उसली नारी थी किन्तु :11: मेंगाजल की तरह उज्ज्वल थी। वह अहिल्या और सावित्री की तरह जीवन :12: व्यतीत करने की अभिलाषा रखती है। नूरजहाँ में दोहरी भूमिका का :13: निर्वाह किया है। "नूरजहाँ के रूप में वह नृत्यगान किया करती थी । और अपने रूप सौन्दर्य से सेनानायकों और बादशाहों को लुभाकर उनसे :14: बहुमूल्य उपहार प्राप्त किया करती थी । उसे अपने मुख और रूप :15: :16: पर गर्व और विश्वास था । वह भाग्यवादी नारी थी । :17: सरला की भूमिका उसने सुशील नारी के रूप में निभाई है। वह सबके साथ निर्वाह :18: करती थी । उसके अन्तर्मन में भाव, विनय, भक्ति और संगीत का समावेश :19: हो चुका था । भजन और गान में उसे अटूट श्रद्धा थी। श्रीकृष्ण के प्रति

मृगनयनी -1 पृष्ठ संख्या- 182
-2 पृष्ठ संख्या- 230
टूटे काँटे -3 पृष्ठ संख्या- 9
-4 पृष्ठ संख्या- 10
-5 पृष्ठ संख्या- 38
-6 पृष्ठ संख्या- 361
-7 पृष्ठ संख्या- 161
-8 पृष्ठ संख्या- 347
-9 पृष्ठ संख्या- 348
-10पृष्ठ संख्या- 334
-11पृष्ठ संख्या- 342
-12पृष्ठ संख्या- 130
-13पृष्ठ संख्या- 32
-14पृष्ठ संख्या- 105
-15पृष्ठ संख्या- 133
-16पृष्ठ संख्या- 133
-17पृष्ठ संख्या- 347
-18पृष्ठ संख्या- 347
-19पृष्ठ संख्या- 284

----- वृन्दावनलाल वर्मा

:1:
गहन भावित भावना उसमें विद्यमान थी । उसका कथन है कि " जहाँ
:2:
मन पछतावे, वहाँ मन्दिर है। घोड़ियन का और कविया प्रवृत्ति की नारी
:3: :4: :5:
थी । सुजान को मानना ,आनीमें देना, दूध उसके आहार विचार में
सम्मिलित था। महारानी संयम प्रिय थी, अनुशासन को वह आवश्यक
:6:
मानती थी ।

महारानी दुर्गावती :- प्रस्तुत उपन्यास में दुर्गावती तथा राम प्यारी के
:7:
नाम उल्लेखनीय हैं। दुर्गावती देवी कीश्वरम भक्त थी । वह कलाओं
:8:
विचारों में प्रवीण थी । कर्तव्य परायण होने के साथ निष्काम कर्म
:9: :10:
में उसे पूर्ण विश्वास था । राजकीयकार्यों में भी वह रुचि रखती थी।
:11:
वह विचार शीलता थी तथा देवी की पूजा में भविष्य में सफल विचारी
:12: :13:
बनने की अभिलाषा रखती थी। उसका तेज और साहस अडिग था ।
:14:
वह जाति वाद का विरोध किया करतीथी तथा उसका कथन था कि
:15:
" नीच से आचरणीय करना हमारी संस्कृति के विरुद्ध है।" वह अपने पिता
:16:
के वचनों,लाज और प्रतिष्ठा का विशेष ध्यान रखतीथी । वह हिन्दू
:17:
नारी के कर्तव्यों का पूर्णरूप से पालन करती थी ।
:18:
राम प्यारी कुशल नीति और विवेक नारी थी। वह एक
:19:
उच्चकोटि की विचारक थी तथा दुर्गावती की कृपा को ही सर्वोच्च मानती
:20:
थी ।

पूरे करे
-1 पृष्ठ संख्या-322
-2 पृष्ठ संख्या-349
-3 पृष्ठ संख्या-252
-4 पृष्ठ संख्या-214
-5 पृष्ठ संख्या-211
-6 पृष्ठ संख्या- 63
महारानी दुर्गावती -7 पृष्ठ संख्या- 18
-8 पृष्ठ संख्या- 9
-9 पृष्ठ संख्या- 28
-10 पृ० संख्या- 30
-11 पृष्ठ संख्या- 57
-12पृष्ठ संख्या- 39
-13पृष्ठ संख्या-330
-14पृष्ठ संख्या- 68
-15पृष्ठ संख्या-290
-16पृष्ठ संख्या-155
-17पृष्ठ संख्या-165
-18पृष्ठ संख्या- 6
-19पृष्ठ संख्या- 24
-20पृष्ठ संख्या- 61 ---- वृन्दावनलाल वर्मा

रामगढ़ की रानी :- प्रस्तुत उपन्यास के नारी पात्रों के अन्तर्गत रामगढ़ की रानी अवन्तीबाई का नाम उल्लेखनीय है। वे धार्मिक विचारों वाली नारी थी। उन्हें उपवास-व्रत और भजन पूजन में आस्था थी :1: । पति की सेवा-पूजा तन्मयता के साथ करती थी :2: । क्रोध आने पर वे आपे से बाहर हो जाती थी :3: । वे महान जीवन के लिये त्याग-और तपस्या को आवश्यक मानती थी :4: । आमोद-प्रमोद का बाहुल्य, उन्हें अत्यधिक प्रतीत होता था। :5: उनका सम्पूर्ण जीवन एक पराक्रमी नारी के रूप में व्यतीत हुआ। :6: उन्होंने अंग्रेजों से अपने देश को मुक्तकराने का भागीरथ प्रयत्न किया। उनका संदेश था कि" देश की रक्षा के लिये या तो अमर बनो, या जेल में बन्द हो जाओ। :7: वे पराधीनता को जीवन समझती थी तथा विचार होना और सबको मुक्त होकर रहना उन्हें अधिक लगता था :8: । वे देशभक्त थी तथा उनका दृढ़ निश्चय था कि" देश में एक भी बूंद रक्त, बच सकेगा, उन चिंगारियों से लड़ूंगी, न चैन लूंगी, न चैन लेने दूंगी। :9: वे क्रान्तिकारी योजनायें बनाती थी तथा राजाओं के छक्के छुड़ा देती थी :10: । उन्होंने देश के लिये प्राणोत्सर्ग करके बुन्देलखण्डी नारी धर्म को गौरवान्वित किया :11: ।

रामगढ़ की रानी :-

-1 पृष्ठ संख्या- 24
-2 पृष्ठ संख्या- 59
-3 पृष्ठ संख्या- 78
-4 पृष्ठ संख्या- 31
-5 पृष्ठ संख्या- 31
-6 पृष्ठ संख्या- 52
-7 पृष्ठ संख्या- 83
-8 पृष्ठ संख्या- 61
-9 पृष्ठ संख्या-118
-10 पृष्ठ संख्या- 45
-11 पृष्ठ संख्या-114

---- वृन्दावनलाल वर्मा

भुक्त चिह्न :- प्रस्तुत उपन्यास की जिम्मेदारी भविष्य को सम्मान की
---------- :1: :2:
चुनौती देने वाली कठिन और संकोच वाली से घिरे रहने वाली नारी थी
:3:
क्रोध आने पर वह गालियाँ देने लगती थी । प्रतिहिंसा की भावना ने
:4:
उसे संकीर्ण बना दिया था । वह " लड़के की तरह तीखी व चीजोर
:5: :6:
मुकाबली थी तथा प्रेम को बाधक न मानकर साधक मानती थी । रथ
:7: :8:
चलाना व घुड़सवारी करना, उसे बहुत प्रिय था। वह नित्य ताश खेलना
:9:
की पूजा किया करती थी । भविष्य कार्यक्रमों में भाग लेने में उसे
:10: :11:
संकोच नहीं होता था । भूत-प्रेतों में उसे विश्वास था । उसके मन
:12: :13:
में कातरता विद्यमान थी । गोरी भोलीभाली , ऊँचे चरित्र और
:14: :15:
बड़े धुन तथा लगन वाली युवतीथी । वह दूरदर्शी भी थी। रानी
:16:
भवानी एक गौरव शालिनी नारी थी । वे शैव को मनुष्य का सच्चा
:17:
साथी मानती थी । उनका विचार था विनयमी और सच्चे आचरण
:18:
वाला को अजेय होता है। वह अपने स्वास्थ्य की चिन्ता न करने वाले
:19:
व्यक्ति को पापी मानती थी । अम्बिका,एक बालुनी प्रकृति को
:20:
पूजती थी । वह नित्यप्रति पूजा ग्रहण करतीथी तथा गायें चराते समय
:21:
गीत गाती रहती थी । " भूख लगना तथा हँसते-हँसाते रहने में
:22:
उसे विशेषआनन्द आता था ।

भुक्त चिह्न

-1 पृष्ठ संख्या- 5
-2 पृष्ठ संख्या- 3
-3 पृष्ठ संख्या- 8
-4 पृष्ठ संख्या- 49
-5 पृष्ठ संख्या- 34
-6 पृष्ठ संख्या- 32
-7 पृष्ठ संख्या- 3
-8 पृष्ठ संख्या- 8
-9 पृष्ठ संख्या- 28
-10पृष्ठ संख्या-307
-11पृष्ठ संख्या-195
-12पृष्ठ संख्या-245
-13पृष्ठ संख्या- 39
-14पृष्ठ संख्या-277
-15पृष्ठ संख्या- 298
-16पृष्ठ संख्या- 23
-17पृष्ठ संख्या- 55
-18पृष्ठ संख्या- 83
-19पृष्ठ संख्या- 83
-20पृष्ठ संख्या- 38
-21पृष्ठ संख्या- 39
-22पृष्ठ संख्या-110 --- पुष्पाञ्जलि वर्मा

अहिल्याबाई :- प्रस्तुत उपन्यास में अहिल्याबाई, सिन्धूरी और आनन्दी के नामों का उल्लेख मिलता है।अहिल्याबाई :1: मातृहृदया रानीथी । उनमें गंगा की सी ओजस्वी पवित्रता विद्यमान थी :2: । वे नित्य सूर्योदय से पूर्व उठती थी तथा स्नान,पूजन,स्वाध्याय, कथावार्ता दान-पुण्य आदि क्रिया करतीथी :3: । उनमें अभिमान, मिथ्याभाव को नहीं था :4: । वे सहज-सुलभ और शान-शौकत मेंदूर रहती थी :5: । सीधे भोजन करना :6: ,उन्हें रुचिकर था तथा वे क्रोध को पाप का मूल समझतीथी :7: । वे सारे भारत की जनता को एक समान समझती थी :8: । जनहित का उन्हें विशेष ध्यान रहता था । उन्होंने सैकड़ों मन्दिरों,घाटों, कुओं धर्मशालाओं और अन्य पुलों का निर्माण कराया था :9: । आनन्दी, दुःसाहसिक कार्यों को करने की अभिलाषा रखती थी :10: । मृत्यमाध में उसे रुचि थी । उसमें रूप का आकर्षण और शक्ति का आतंक समन्वित था :11: । सिन्धूरी एक दृढ़ संकल्प वाली युवती थी :12: । उस चरित्रवान थी तथा सेवा के साथ साथ उसमें विवेक भी विद्यमान था :13: । शिक्षित भाषा के अभाव होकर उसने आम्बी भाषा के सम्मुख अपनी जीभ काट कर रख दी थी :14: । उसमें विमर्शशीलता विद्यमान थी :15: ।

अहिल्याबाई

-1 पृष्ठ संख्या- 2
-2 पृष्ठ संख्या- 9
-3 पृष्ठ संख्या-18
-4 पृष्ठ संख्या-61
-5 पृष्ठ संख्या-132
-6 पृष्ठ संख्या-156
-7 पृष्ठ संख्या-130
-8 पृष्ठ संख्या-132
-9 पृष्ठ संख्या- 21
-10पृष्ठ संख्या- 46
-11पृष्ठ संख्या- 33
-12पृष्ठ संख्या- 39
-13पृष्ठ संख्या- 96
-14पृष्ठ संख्या-110
-15पृष्ठ संख्या- 40
-16पृष्ठ संख्या-124

---- वृन्दावनलाल वर्मा

सोती आग :- प्रस्तुत उपन्यास के नारी पात्रों में रहीमुन निशा कोकीन, शकरन तथा अमजद खाँ की बेगम जैसे नामों का उल्लेखनीयता है ।

:1:

रहीमुन निशा सूक्ष्म बुद्धि वाली नारी थी । वह अपने मन और यौवन का सौदा करके मन वांछित लाभ प्राप्त कर लिया करती थी । बड़ों से नाते नारी बनाये रखने को चिपटकर मनती थी । :2: ज्योतिष्का, रमन व गन्दे-साथीओं से उसे, विश्वास था । वह उन सलाहमशवरानुसार उपयोग किया करती थी । :3: वह एक विश्वासघाती भी थी। उसके मन का रहस्य कोई नहीं समझ पाता था । :4: उसकी दृष्टि में शराबी महल, शासन के प्रसंग रहस्य और षड्यंत्र-कारी योजनायें अधिकमहत्व रखती थी । :5: शराबम, लाज-संकोच वाली युवती थी । :6: उसमें, मद के साथ महत्वकांक्षा छुपी थी। :7: वह धरम की बेगमों का जीवन हेय समझती थी । :8: वह हिन्दू नारी देवकी को अपनी बहिन के समान समझती थी तथा "बहुत" कीमत्ता को स्वीकार करती थी । :9: अमजद खाँ की बेगम, गृह स्वामिनी समझ जीवन व्यतीत किया करती थी । :10: उसकी आकांक्षायें उम्र के साथ दुगनी जा रही थी । :11: बेटी के सुख के सामने उसे जमाल की कोई चिन्ता नहीं रहती थी। :12:

सोती आग

-1 पृष्ठ संख्या- 14
-2 पृष्ठ संख्या- 3
-3 पृष्ठ संख्या- 14
-4 पृष्ठ संख्या- 14
-5 पृष्ठ संख्या- 139
-6 पृष्ठ संख्या- 4
-7 पृष्ठ संख्या- 2
-8 पृष्ठ संख्या- 11
-9 पृष्ठ संख्या- 90
-10 पृष्ठ संख्या- 2
-11 पृष्ठ संख्या- 2
-12 पृष्ठ संख्या- 6

------- कुन्दनलाल वर्मा

देवन्धु की मुस्कान :- प्रस्तुतउपन्यास में नारी पात्रों के आधार-विचारों का वर्णन निम्नप्रकारकिया गया है ।

जिनकी कौन्य निष्ठ युवती थी । वह अपने घर आसन कार्य करती :1: थी । महुआ बीनकर धनोपार्जन करतीथी । ग्रामीण देवीदेवताओं के :2: भजन गीत गाना , उसे विशेष प्रिय था । वह भिक्षा या दान लेना घोर :4: :5: हेय समझती थी । वह सचरित्र और प्रत्युत्पन्न देने वाली नारीथी ।

:6: प्रियम्वदा आस्तिक थी और नित्य पूजापाठ किया करतीथी । आभूषण :7: उसे अतिप्रिय थे । उसमें, छोटे बड़े और कंठ-सीस की मेखलाकना न :8: :9: थी। उसकी वाणी में स्नेहापन था, किन्तु उसकामन बड़ा कोमल था ।

:10: वह धनि कोसेवा में रत रहती थी ।

आसन्ती नृत्यगान के करो धनोपार्जन करती थी। नागदत्ताऔर :11: कुबेरदत्ता भी नृत्यगान की कला में प्रवीण थी । भुवनादेवी मे' :12: महत्वकांक्षा कीतृष्णा सदैव बनी रहतीथी । वसन्तसेना,नारी थी । उसमें अभिमान राज्य को मुख्य था बनाने रखने और मर्यादन की कामना :13: रहती थी । उनका विचार था कि" योगियों में अब संसार की शान्ति :14: निर्भर रहती है । "

देवमः की मुस्कान

-1 पृष्ठ संख्या- 11
-2 पृष्ठ संख्या- 3
-3 पृष्ठ संख्या- 11
-4 पृष्ठ संख्या- 22
-5 पृष्ठ संख्या- 93
-6 पृष्ठ संख्या- 14
-7 पृष्ठ संख्या- 16
-8 पृष्ठ संख्या- 19
-9 पृष्ठ संख्या- 18
-10पृष्ठ संख्या- 41
-11पृष्ठ संख्या- 24
-12पृष्ठ संख्या-115
-13पृष्ठ संख्या-118
-14पृष्ठ संख्या-117

--- कुन्दनलाल शर्मा

ललिता विलास:- कलावती ललितादित्य की उन रानीयों में से थी, जो अपने पति के चरण पखार कर, उनकी आरतीकिया करती थी [1]। वह मंदिरा पान करने को हेय दृष्टि से देखती है और अपने पति से भजन-पूजन का प्रश्न करती हैकि" क्या वह परलोक को भुलाती है।" वह अपने पति के लिये सर्वस्व न्योछावर करने को तत्पर रहतीहै। वहअपनी भावनायें व्यक्त करते हुये कहती है कि" मेरे मन में तो केवल यह इच्छा बराबर है कि आप अमर रहें। आपकी आत्मा सदा प्रसन्न रहे तथा आपका मनोबल पुष्ट रहे। " [3] लंगीस समारोहों में उसे विशेषज्ञ रुचि थी [4]। चक्रमदिका में ललितादित्य की प्रेमिका के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह किया। वह बहुत बड़ी आकार और सुन्दरी थी [5]। जीवन के सुख भोगने के उपरांत उसमें कुछ वैराग्य का उत्पन्न हो जाता है और वह अपने विचार इन शब्दों में व्यक्त करतीहै कि" भजन-पूजन में रुचिहै। भगवान की कृपा से ही सब कुछ होता है।" [6] वह राजा ललितादित्य से कहतीहै कि" यदि आप उचित समझें तो यहाँ से कुछ दूरी पर एक मन्दिर भगवान शंकर महादेव का बनवा दें, मैं वहाँ भजन पूजन किया करूँगी।"[7] "कथा-लिखया देवदासियाँ थी, जो अपने पतियों का निर्माणकरती है ।

ललितादित्य
-1 पृष्ठ संख्या- 19
-2 पृष्ठ संख्या-345
-3 पृष्ठ संख्या-399
-4 पृष्ठ संख्या- 25
-5 पृष्ठ संख्या- 20
-6 पृष्ठ संख्या-195
7 पृष्ठ संख्या-354

---- वृन्दावनलाल वर्मा

अब क्या हो :- प्रस्तुत उपन्यास में भानभानू अपने रूप सौन्दर्य और नृत्य कला द्वारा शम्भू जी का भरपूर मनोरंजन किया करती थी । जब शम्भू जी को साहूकारी प्रवृत्ति से परिचित थी और यह करती थी " मैंने हजारों को लिये" [1] तथा उनका कथन था कि यदि मैं शिवाजी के समर्थ शम्भू जी के साथ होती, तो उन्हें अकाल शिवलोक न जाने देती । सोयराबाई के आचार विचार में सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे राजपूती बालती थी , वे चाहती थि महाराज शिवाजी अपने छोटे बेटे शम्भू जी को राज्य न देकर भतीजे की कोख से जन्मे पुत्र राजाराम को ही दे दें । [2] वैसे वे चरित्रवान थी, क्योंकि जब व्यक्ति शिवाजी उनके रनवास में जाते थे तो वे मान्यार्थिन [illegible] करके उनके चरण स्पर्श करना नहीं भूलती थी । [4] यह बाई अपने पति के अत्याचारों और अधिकारों पर ध्यानकेंद्रित अपने चरित्र द्वारा मान्य करती थी । [3] मराठा युवती ने एक महान नारी की भूमिका का निर्वाह किया है । जब शम्भू जी से स्पष्ट कहती है कि "मराठा विधि के अनुसार विवाह के बिना मैं अपने देह न छूने दूंगी , मैं ऐसी मराठे घर की कन्या हूं । तब अपने सतीत्व की बचाने के लिये आत्म हत्या कर लेती है। [6]

अब क्यारी

-1 पृष्ठ संख्या- 4
-2 पृष्ठ संख्या- 12
-3 पृष्ठ संख्या- 98
-4 पृष्ठ संख्या- 68
-5 पृष्ठ संख्या-141
-6 पृष्ठ संख्या- 55 ------- पृथ्वीवल्लभ शर्मा

कीचड़ और कमल :- प्रस्तुत उपन्यास में नारी पात्रों के अंतर्गत प्रमिला और पद्मावती का उल्लेख मिलता है।[1] प्रमिला चतुर उद्योगशील नारी थी। [2] उसमें उसे नृत्य सीखाने में रुचि थी। तदनन्तर वह लिखने-पढ़ने के साथ-साथ गायन और नृत्य कला में भी दक्ष होती चली गयी।[3] सुर सुन्दरी बनने का उसने संकल्प लिया था।[4] सुर सुन्दरी के रूप में वह " लचीला, लजीला और उत्तेजक नृत्य किया करती थी।"[5] उसकी भावना में विरक्ति नहीं थी।[6] वह अपनी कलाकारुदर्शन व्यापार सावधानी, चतुरता और चतुराई के साथ करती थी।[7] उसे अपने रूप-सौन्दर्य का अभिमान था।[8] उसे भगवान शंकर के चरणों में आत्म सम्मोह मिलता था।[9] पद्मावती देश-प्रेम की भावना से ओत-प्रोत थी।[10] वह अभिलाषाकांक्षी थी। राजा को उसके संगीत से मधुरता मिलता था।[11] वह देखने में माया का रूप थी किन्तु रण भूमि में चण्डी बनकर अपना शौर्य दिखलाती थी।[12] उसका विचार था कि " स्त्री अबला नहीं है, जो किसी के उपरांत शत्रुओं के सामने प्रस्तुत हो जाये।"[13]

माधव जी सिन्धिया :- प्रस्तुत उपन्यास में नारी पात्रों के अंतर्गत गन्धर्वसेन उषा सेन, तारा आर्य गोपिकाबाई और मुक्ताबाई सेन के नाम उल्लेखनीय हैं।[14] गन्धर्व सेन को शायरी करने, गीत गाने, तथा कविता करने में रुचि थी।[15]

कीचड़ और कमल
-1 पृष्ठ संख्या- 7
-2 पृष्ठ संख्या- 4
-3 पृष्ठ संख्या- 15
-4 पृष्ठ संख्या- 16
-5 पृष्ठ संख्या- 61
-6 पृष्ठ संख्या- 106
-7 पृष्ठ संख्या- 111
-8 पृष्ठ संख्या- 93
-9 पृष्ठ संख्या- 140
-10 पृष्ठ संख्या- 207
-11 पृष्ठ संख्या- 202
-12 पृष्ठ संख्या- 298
-13 पृष्ठ संख्या- 211

माधव जी सिन्धिया
-14 पृष्ठ संख्या- 71
-15 पृष्ठ संख्या- 398 ------ वृन्दावनलाल वर्मा

उसमें त्याग की भावना विद्यमान थी । वह मुसलमानसे हुये भी हिन्दू धर्म में आस्था रखती थी तथा कृष्ण-कन्हैया के गीत-भजन उसे प्रिय लगते थे ।:1: उच्चाकेन्द्र पुरुषों के स्वभाव का अभिनय करते करते पुरुषों जैसे स्वभाव की होगयी थी । उसकी आँखों में कठोरता और चतुराई में निर्भीकता आ गयीथी ।:2: तारावाई कुटुम्ब-भार में भी शिक्षित हुआ थी महत्वाकांक्षी और धैर्यवान थी ।:3: उसका स्वभाव परिवर्तनशील था ।:4: और वे बात बात पर बल उठने लगती थी ।:5: गोपिकाबाई खण्डवाली नारी थी । उसका नारीत्व कुण्ठित होचुका था जिससे वे क्रोधपूर्ण और प्रहारवादिता हो गयी थी ।:6: मुसलमानी बेगम, दुश्चरित्रनारी थी ।:7: वह अपने आन्तरिक रहस्यों और अपने स्वभाव की क्रूरता को किसी से प्रकट नहीं होने देतीथी ।:8:

: पुरुष - पात्र :

प्रस्तुत शोधपत्र के अंतर्गत वर्मा जी के ऐतिहासिक उपन्यासों में वर्णित पुरुष पात्रों की प्रकृति, वेश-भूषा और आचार-विचार का उल्लेख किया जा रहा है ।

: क - प्रकृति :

गढ़ कुण्डार :- प्रस्तुत उपन्यासों के पुरुषपात्रों कीप्रकृति में दृढ़ता निर्भय उदार और मृदुभाषी चित्रित है।:9: उनकी प्रकृति में रोष कोप तथा वह विद्यमान है।:10: अलौन बहादुर, खिलजी और दिलीप भाव के विरुद्ध प्रकृति का चित्रित था ।:11:

मानव की निर्भिकता -1 पृष्ठ संख्या- 77
-2 पृष्ठ संख्या- 283
-3 पृष्ठ संख्या- 42
-4 पृष्ठ संख्या-191
-5 पृष्ठ संख्या- 48
-6 पृष्ठ संख्या-157
-7 पृष्ठ संख्या- 64
-8 पृष्ठ संख्या- 96

गढ़ कुण्डार -9 पृष्ठ संख्या- 1
-10पृष्ठ संख्या- 129
-11पृष्ठ संख्या- 18

----वृन्दावनलाल वर्मा

नाग, उदार, सहज प्रकृति, सरल, कुछ स्वाभिमानी और उदार प्रकृति का व्यक्ति था किन्तु कुरता उसके स्वभाव में नहीं था :1: अभिमानता रसिक, सजग, स्वाभिमान और शील प्रकृति का, वह मनस्वी और उन्मादक प्रेम का उपासक था :2: । वह चन्द्रमा विराट और शान्त स्वभाव का व्यक्ति था :3: । मोहनलाल कविता व्यक्ति था :4: । विरक्त रसिक और दुःख प्रकृति का व्यक्ति था :5: । वह विराट और विद्वान व्यक्ति था :6: । मोहनलाल की प्रकृति में जाति स्वाभिमान का आधिक्य था :7: । पुरुषराम उत्साही प्रकृति का व्यक्ति था :8: । विरजन के स्वभाव में समस्त प्रकार की भावना विद्यमान थी :9: । :10: विजाकर रही और लालसी प्रकृति का व्यक्ति था :11: । विराट की पत्नी - प्रस्तुत उपन्यास के पुरुष पात्रों में, मोहन सिंह सबसे :12: बड़े :13: और निष्ठुर प्रकृति का व्यक्ति है :14: । भेजद आगा हैदर आगा, भजन और दाऊमल पुरुष हैं :15: । :16: कुन्दर सिंह :17: लज्जाशील विनीत परन्तु दृढ़ भाव युक्त स्वभाव का युवक है :18: । कभी कभी उसके स्वभाव में 'विद्रोहिता' आ जाती है :19: । जनार्दन शुद्ध, मधुपूर्ण स्वभाव का व्यक्ति है :20: । :21: वह कायर भी है और सदा सम्मान किसी वस्तु को टालते रहने का उसका स्वभाव है :22: । राजा नायक सिंह मानसिक रूप से अस्वस्थ रहते थे, जिसके कारण बात बात पर उनकी खीज बढ़ जाया करती थी :23: ।

गद्य कथन	-1 पृष्ठ संख्या- 21	विराट की पत्नी	-16 पृष्ठ संख्या- 41
	-2 पृष्ठ संख्या- 22		-17 पृष्ठ संख्या- 7
	-3 पृष्ठ संख्या- 27		-18 पृष्ठ संख्या- 29
	-4 पृष्ठ संख्या-134		-19 पृष्ठ संख्या-108
	-5 पृष्ठ संख्या-160		-20 पृष्ठ संख्या- 20
	-6 पृष्ठ संख्या-168		-21 पृष्ठ संख्या- 45
	-7 पृष्ठ संख्या-172		-22 पृष्ठ संख्या- 40
	-8 पृष्ठ संख्या-193		-23 पृष्ठ संख्या- 2
	-9 पृष्ठ संख्या-320		
	-10पृष्ठ संख्या-104		---- कुन्दनलाल शर्मा
	-11पृष्ठ संख्या-369		
विराट की पत्नी	-12पृष्ठ संख्या- 1		
	-13पृष्ठ संख्या-109		
	-14पृष्ठ संख्या- 68		
	-15पृष्ठ संख्या- 2		

:1: :2:
राम दयाल नीच प्रवृत्ति का व्यक्ति था। उसमें एक कामुकता तथा कायरपन
:3: :4: :5:
विद्यमान था । परधनि एक लोभी था उसकी प्रकृति धार्मिक थी ।

मुसाहिब खाँ :- प्रस्तुत उपन्यास के कुछ पात्रों में, मुसाहिब खाँ दलेलसिंह,
:6:
उदार, विलासिन, हठी, सबल विचारशील और सबसा प्रकृति व्यक्ति है। वे
:7:
अपने स्वभाव के कारण ही दरिद्र हो गये थे। वे कभी कभी विचलित
:8:
अवश्य होजाते थे किन्तु घबराहट उनकी प्रकृति में न थी । राजा विजय
:9: :10:
बहादुर हठी और क्रोधी स्वभाव के व्यक्ति थे । राव सिंह चतुर और
:11: :12:
साहसी तथा रघु स्वामी के आस्थावान था ।

काशी की रानी लक्ष्मीबाई :- प्रस्तुत उपन्यास के राजा गंगाधरराव,
:13: :14: :15: :16:
सुलक्षणी, कठोर, क्रोधी , तथा सबकी स्वभाव के व्यक्ति है।
:17: :18: :19:
रघुनाथ रंगीले , प्रतापनारायण सिंह हठी , दुर्योधन और एकनेत्र रसिक
:20:
तथा श्री बहादुर रंगीन तबियत व्यक्ति था ।

मृगनयनी :- प्रस्तुत उपन्यास में राजा मान सिंह उच्चकोटि के संगीतकार
:21:
के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह करते हैं । उनका स्वभाव कुशल
:22:
व्यक्तियों को खोज निकालने की अभिलाषा रखता था । वे रसिया स्वभाव
:23:
के कुशल थे। ख्वाजुद्दीन अधीर, उदात्त, कामुक और कपटी स्वभाव का
:24: :25: :26:
व्यक्ति था। नसीर उद्दीन की कामुक प्रकृति थी। विजयराम हठी,

शिवाजी वीरविनोदी	-1 पृष्ठ संख्या- 32	मृगनयनी	-21 पृष्ठ संख्या- 97
	-2 पृष्ठ संख्या 49		-22 पृष्ठ संख्या-157
	-3 पृष्ठ संख्या-102		-23पृष्ठ संख्या- 279
	-4 पृष्ठ संख्या- 18		-24 पृष्ठ संख्या- 61
	-5 पृष्ठ संख्या- 85		-25 पृष्ठ संख्या-313
मुसा साहब	-6 पृष्ठ संख्या- 6		-26 पृष्ठ संख्या-100
	-7 पृष्ठ संख्या- 78		
	-8 पृष्ठ संख्या- 28		---- वृन्दावनलाल वर्मा
	-9 पृष्ठ संख्या- 76		
	-10पृष्ठ संख्या- 81		
	-11पृष्ठ संख्या- 82		
	-12पृष्ठ संख्या- 7		
काशी की रानी	-13पृष्ठ संख्या- 13		
	-14पृष्ठ संख्या- 32		
	-15पृष्ठ संख्या- 48		
	-16पृष्ठ संख्या-118		
	-17पृष्ठ संख्या- 4		
	-18पृष्ठ संख्या-119		
	-19पृष्ठ संख्या- 42		
	-20पृष्ठ संख्या-113		

:1: :2: :3:
निहालसिंह सहसा प्रवृत्ति , राजसिंह राज्य लिप्सी, मोहन पुजारी रसिक
:4:
और लोभी प्रकृति का व्यक्ति था । उसकी प्रकृति चाटुकारिता से
:5:
परिपूर्ण थी ।

कमनार :- प्रस्तुत उपन्यास में दर्शाये गये पुरुष पात्रों में, सोने लाल, गरम
:6:
मिजाज का पुरुष है। मान सिंह घमंडी, हठ और कायी प्रकृति का व्यक्ति
:7: :8:
है। दलेल सिंह तलवारबाजी और कुश्ती मिजाजके राजा है। उनके क्रोधी मिजाज
:9:
के आगे किसी की चलती नहीं चलती थी। मदन्त चतुर और घन्टोंके पुरी कार्यमें
:10:
प्रकृति का व्यक्ति था ।

टूटे काँटे :- प्रस्तुत उपन्यास के पुरुष पात्रों में मोहनलाल, तोता मजुराती,
पिरदूलानन्द, सादत खाँ, चिन्तामन, मुहम्मद शाह निजाम और नादिरशाह
की प्रकृति का उल्लेख मिलता है ।

:11:
मोहनलाल मनमौजी, भक्त तथा परिश्रमी व्यक्ति था। वह किसी
:12: :13:
की भेद नहीं समझता था। जाति अभिमान उसकी प्रकृति में विद्यमान था।
:14: :15:
तोता मर्यादित पुरुष था । मजुराती किसानीय मिजाज का पुरुष था ।
:16: :17: :18:
पिरदूलानन्द की शान्त प्रकृति थी। सादत खाँ कपटी, चिन्तामन कायर
:19: :20:
तथा मोहम्मद शाह अय्याश और रंगीली प्रकृति का व्यक्ति था। निजाम
:21:
की प्रकृति अस्थिर पूर्ण थी । नादिर शाह दूरदर्शी व्यक्ति के रूप में
:22:
अपनी भूमिका का निर्वाह करता है ।

मृगनयनी -1 पृष्ठ संख्या- 157
-2 पृष्ठ संख्या- 93
-3 पृष्ठ संख्या- 19
-4 पृष्ठ संख्या- 197
-5 पृष्ठ संख्या- 191

कमनार -6 पृष्ठ संख्या- 3
-7 पृष्ठ संख्या- 181
-8 पृष्ठ संख्या- 21
-9 पृष्ठ संख्या- 61
-10 पृष्ठ संख्या- 83

टूटे काँटे -11 पृष्ठ संख्या- 388
-12 पृष्ठ संख्या- 275
-13 पृष्ठ संख्या- 80

टूटे काँटे -14 पृष्ठ संख्या- 164
-15 पृष्ठ संख्या- 354
-16 पृष्ठ संख्या- 91
-17 पृष्ठ संख्या- 114
-18 पृष्ठ संख्या- 225
-19 पृष्ठ संख्या- 97
-20 पृष्ठ संख्या- 45
-21 पृष्ठ संख्या- 114
-22 पृष्ठ संख्या- 156

--- वृन्दावनलाल वर्मा

महारानी दुर्गावती :- प्रस्तुत उपन्यास में [illegible] सिंह स्वाभिमानी, [illegible]
शूरवीर तथा साहसी प्रकृति के थे। कीर्तिवास अपने वचनों के पक्के थे। लाल
अदलना उनकी प्रकृति में न था। कीर्तिसिंह के दीवान काँधया थे। किन्तु वह
विश्वस्त और आज्ञाकारी अवश्य था। मुकन्दी चाटुकार सुंदर सिंह और,
लड़ाकू, निर्लज्ज, तथा लोलुप प्रकृति का व्यक्ति था। चन्द्र सिंह "आज्ञाकार
तथा दीवान आधार सिंह साहसी [illegible] एवं [illegible] व्यक्ति था।

रामशाह की रानी :- प्रस्तुत उपन्यास में सुजेवार [illegible] सिंह की [illegible],
आकर्षक व्यक्तित्व वाले व दृढ़ प्रकृति पुरुष के रूप में दर्शाया गया है।
जगत सिंह [illegible] मरयूसलाह सिंह उत्साही तथा शूरवीर, [illegible] सिंह
स्वाभिमानी तथा [illegible], [illegible] जीत [illegible] तथा धार्मिक और [illegible] प्रकार
[illegible], [illegible] तथा [illegible] प्रकृति के पुरुष थे। [illegible] और
[illegible] था।

भुवन विक्रम :- [illegible] में [illegible] पुरुष पात्रों की प्रकृति के अंतर्गत
भुवन विक्रम क्रोधी [illegible] से दूर रहने वाले स्वभाव का पुरुष था।

[illegible] सिंह [illegible] सहायक और [illegible] रखा तथा अन्दर [illegible] उदार
प्रकृति का व्यक्ति था। [illegible] वीर, [illegible] और [illegible]

महारानी दुर्गावती	-1 पृष्ठ संख्या -2	रामशाह की रानी	-14पृ०सं०-71
	-2 पृष्ठ संख्या- 33		-15पृ०सं०-35
	-3 पृष्ठ संख्या-194		-16पृ०सं०-107
	-4 पृष्ठ संख्या-217		-17पृ०सं०- 2
	-5 पृष्ठ संख्या-112		-18पृ०सं०- 4
	-6 पृष्ठ संख्या-112		-19पृ०सं०-27
	-7 पृष्ठ संख्या-141		-20पृ०सं०- 3
	-8 पृष्ठ संख्या-112		-21पृ०सं०-32
	-9 पृष्ठ संख्या-138		-22पृ०सं०-56
	-10पृष्ठ संख्या-117		-23पृ०सं०-88
	-11पृष्ठ संख्या-166	भुवन विक्रम	-24पृ०सं०- 3
	-12पृष्ठ संख्या-199		-25पृ०सं०-197
	-13पृष्ठ संख्या-168		-26पृ०सं०-44

---- कुन्दनलाल वर्मा

:1:
प्रकृतिकायुवक था । कलक चंचल मनवाला, कुतार्कबुद्धि तथा अध्यवसायी
:2: :3: :4: :5:
युवक था । नील कृपणबुद्धि वाला तथा हठी व्यक्ति था । नौकर धार्मिक
:6:
तथा, दानी प्रकृति का व्यक्ति था ।वह विलासीन था तथा अपनी प्रकृति का
:7: :8:
छिपाकोना कर रखता था ।कपिंजल स्वाभिमानी पुरुष था।मेघ हठी,क्रोधी
:9: :10:
तथा चिंतक प्रकृति का व्यक्ति था । धीर वायु कायरता,दूरदर्शी और गहनी
:11:
बुद्धि का युवक था ।

:12: :13:
अंधकन्यावार्ष :- प्रस्तुत उपन्यास में कलकार होगी ,दुःसाहसी तथा हठी

प्रकृति के व्यक्ति के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह करता है। कलक मनमत
:14: :15: :16:
मनमत कायरता और और था । देशानुरा कृपणकारी व्यवहार का पुरुष था ।
:17:
भारमल विलासीन,वासना और नशे तथा जैसे व्यवहार वाला व्यक्ति था
:18:
तथा बुद्धि शिव पर निर्भर व्यक्ति था ।

:19: :20:
मोती आग :- प्रस्तुत उपन्यास में आजमखां नशे ,गुलाब खां साहसी,रोशन
---:21: :22: :23:
उद्दौला हठी,कुतुबखां क्रोधी तथा अमीर "हण्डी" और कायरता प्रकृति
:24: :25:
वाला था। कुतुबखां वाराह के व्यवहार में विदूषिकापन विद्यमान था ।

कमरुद्दीन आलसी,चारुशी-बुद्धि था और उसके व्यवहार कायरतापन से
:26:
ओत प्रोत हुआ था ।

मुख्य चित्रण	-1 पृष्ठ संख्या-43	मोतीआग	-19 पृष्ठ संख्या- 1
	-2 पृष्ठ संख्या-44		-20 पृष्ठ संख्या- 28
	-3 पृष्ठ संख्या-24		-21पृष्ठ संख्या-16
	-4 पृष्ठ संख्या-220		-22पृष्ठ संख्या-59
	-5 पृष्ठ संख्या-18		-23 पृष्ठ संख्या-28
	-6 पृष्ठ संख्या-79		-24 पृष्ठ संख्या-29
	-7 पृष्ठ संख्या-52		-25 पृष्ठ संख्या-82
	-8 पृष्ठ संख्या - 6		-26 पृष्ठ संख्या-75
	-9 पृष्ठ संख्या- 9		
	-10पृष्ठ संख्या-267	---	पृष्ठालम्बन वर्ग
	-11पृष्ठ संख्या-29		
अंधकन्यावार्ष	-12पृष्ठ संख्या-11		
	-13पृष्ठ संख्या-78		
	-14पृष्ठ संख्या-39		
	-15पृष्ठ संख्या-94		
	-16पृष्ठ संख्या- 8		
	-17पृष्ठ संख्या-19		
	-18पृष्ठ संख्या-35		

देशमुख की मुस्कान :-प्रस्तुत उपन्यास में मुख्य पात्रों में राजा विजयपाल
:1: :2: :3:
सिंह को हर्षवर्धन,आश्रमिक, और मंत्री प्रभृति के मुख्य के रूप में प्रदर्शित
:4:
गया है। अन्तर्मन होने के कारण इनके स्वभाव में कुछ अन्तर आ गया था ।
:5: :6: :7:
सिंह, और मुख्य अन्तर और सिंह तथा अन्तराल स्वभाव का व्यक्तियों
:8: :9: :10:
और अन्तर व्यक्ति था। अमोलक विलासी और मुग्ध राजा था ।
:11:
मुनिरत्नगिरि शान्त प्रिय योगी है ।

कीचड़ और कमल :- प्रस्तुत उपन्यास में प्रदर्शित गया है विराजा मध्यदेश
वर्ष का " स्वभाव ऐसा था कि वे शत्रुओं के लिये यमराज से भी अधिक
कठोर थे,कलाकारों के बड़े प्रेमी,स्त्रियों के प्रतिकूलसिद्धान्त,प्रजा की आवश्यकता
:12:
के लिये अपना सर्वस्व आहुत करने को तत्पर रहते थे।" अंगद,चतुर,मुक्तबुद्धि
:13: :14:
वाला व काव्य रसिक प्रवृत्ति व्यक्ति था। सामान्य रूप से वह अन्ते
:15:
स्वभाव वाले व्यक्तियों में गिना जाता था,उसमें अपने गम्भीर पट
:16:
को हँसी में छोड़ देने की क्षमता विद्यमान थी। आचार्य राम देव
:17:
विचारक,विचारक और दूरदर्शी प्रवृत्ति के व्यक्ति थे । महाकवि शर्मा
:18:
चतुर कवियों और कलात्मक स्वभाव का व्यक्ति था । वह मिलनसारी,
मुखिर,आत्मी और प्रसन्न तो था ही व्यवहारी होने केकारण अमलमति
:19: :20
भी कहलाने लगा था ... वाले-संकोची स्वभाव का युवक था ।

देशमुख की मुस्कान :
-1 पृष्ठ संख्या- 49
-2 पृष्ठ संख्या- 78
-3 पृष्ठ संख्या- 46
-4 पृष्ठ संख्या-107
-5 पृष्ठ संख्या- 33
-6 पृष्ठ संख्या- 12
-7 पृष्ठ संख्या-145
-8 पृष्ठ संख्या- 20
-9 पृष्ठ संख्या- 93
-10पृष्ठ संख्या-151
-11पृष्ठ संख्या-132

कीचड़ और कमल
-12पृष्ठ संख्या-179
-13पृष्ठ संख्या-124
-14पृष्ठ संख्या- 22
-15पृष्ठ संख्या- 78
-16पृष्ठ संख्या-107
-17पृष्ठ संख्या-142
-18पृष्ठ संख्या-100
-19पृष्ठ संख्या-224
-20पृष्ठ संख्या- 22 ----- मुख्यपात्रों की

माधव की सिद्धियाँ :- प्रस्तुत उपन्यास में शिवाजुद्दीन की उदात्त प्रकृति
:1:
थी । वह अदूरदर्शी, भ्रष्टाचारी घमण्डी और बड़ी व्यक्ति था । दूसरा
:2:
और कार्यवाहन भी उसके स्वभाव में विद्यमान था । उसकी षड्यन्त्रकारी
:3:
प्रकृति भी थी। राजा साहू मनमौजी सवाईजयसिंह शिवुशिंहा, गाजीउद्दीन
:4: :5: :6:
बदरबन्धी और कन्धल, मुहम्मदशाह अधुत रंगीन तबियत का था ।
:7:
उड़ाकाशाह, सफदरजंग, विकट अभिमानी, माधव की बन्ध सुन्दरी नग्न
:8: :9: :10:
तथा शिवारशीन कन्धु शिवाल अन्धु गाजी, दत्ताबहादुर, मल्हार प्रकाशी
:11: :12:
और संयमी , राव चन्द्र मनोहर मूर्ख शिवानी कृष्ण,धर्मात्मा और
:13:
स्वार्थी, सोकर स्वार्थिशोधी तथा शिवशानी, माधवराव पेशवा दूरदर्शी
:14:
कुटिलमान,वीर, तु तथा क्रोधी, दुर्जन वेग कमयानी,कपटी,क्रूर,योग्य
:15:
और कायर, मुक अकीबत, अन्य व्यवसायी, आलमगीर कामुक, अन्धाली
:16: :17: :18:
कामुक औरंगजेब क्रोधी ,रघुनाथ राव महत्वाकांक्षी और अभिमानी,जानोजीराव
:19: :20:
सहयोगी, दूरदर्शी तथा शिवानी मनोज कुटिल,कायर, शिक्षिशवारी तथा
:21: :22: :23: :24:
मल्हारराव भी कायर प्रकृति का व्यक्ति था । माधव की सिद्धियाँ
:25:
के स्वभाव अन्तिम निष्कर्ष का अभाव था ।
:26:

माधव की सिद्धियाँ

-1 पृष्ठ संख्या-302
-2 पृष्ठ संख्या-300
-3 पृष्ठ संख्या-423
-4 पृष्ठ संख्या-186
-5पृष्ठ संख्या- 1
66 पृष्ठ संख्या- 1
-7 पृष्ठ संख्या- 14
-8 पृष्ठ संख्या- 18
-9 पृष्ठ संख्या- 21
-10पृष्ठ संख्या- 5
-11पृष्ठ संख्या- 8
-12पृष्ठ संख्या- 11
-13पृष्ठ संख्या- 8
-14पृष्ठ संख्या-386
-15पृष्ठ संख्या-352
-16 पृष्ठ संख्या- 436
-17 पृष्ठ संख्या- 18
-18 पृष्ठ संख्या- 67
-19 पृष्ठ संख्या- 99
-20 पृष्ठ संख्या- 59
-21 पृष्ठ संख्या- 42
-22 पृष्ठ संख्या- 45
-23 पृष्ठ संख्या-118
-24 पृष्ठ संख्या-282
-25 पृष्ठ संख्या- 48
-26 पृष्ठ संख्या-526

--- वृन्दावनलाल वर्मा

अब कथा को :-

प्रस्तुत उपन्यास में छत्रपति शिवाजी उदारचरित एक चरित्रनायक , अत्यन्त महिमामयी पुरुषों, कुल सेवा-परायण, एवं उत्साह के सच्चे सेवक :1: थे :2: वे अहंकारी नहीं थे। उनमें गुरु भक्ति विद्यमान थी :3: । साधु की संगति का बहुत प्रेमी था :4: । निरभिमान की भावना उसके मन में खटकती थी :5: । प्रतिशोध की भावना उसमें विद्यमान थी :6: । तथा उसे चाटुकारी प्रिय थी :7: । कठिन समय किसी भी कार्य को करनेमें साहसी स्वभाव था :8: । मराठा मुख्य बात का धनी और निडर था :9: । शिवाजी वीरों की आत्मिक प्रकृति का व्यक्ति था :10: । रामदास शान्त प्रकृति का व्यक्ति था :11: ।

अब था को

-1 पृष्ठ संख्या- 28
-2 पृष्ठ संख्या- 50
-3 पृष्ठ संख्या- 99
-4 पृष्ठ संख्या- 44
-5 पृष्ठ संख्या- 6
-6 पृष्ठ संख्या- 11
-7 पृष्ठ संख्या- 8
-8 पृष्ठ संख्या- 3
-9 पृष्ठ संख्या- 9
-10 पृष्ठ संख्या- 28
-11 पृष्ठ संख्या-140

--- कृष्णानन्दन शर्मा

: ख - वेश- भूषा

गृह कुण्डार:- प्रस्तुत उपन्यास में अभिव्यक्त विकास के अनुरूपिये रंग के [illegible] और [illegible], [illegible] आदि शब्दों से सुसज्जित रहता था। भाल पर रोली का तिलक तथा कंठ में मोती की माला भी धारण करता था :1: कभी कभी वह " रंगीन साफा, कुसुम्भ मोथ छोली, नीला रेशमी अंगरखा आसमानी रंग का रेशमी कमरबन्ध तथा जरीदार जूते धारण किया करता था :2: । सामेल, मणि कटिलोरियों मोतियाला साफा, रोली का तिलक तथा विकासी वेश भूषा में सुसज्जित रहता था :3: । राजधर अंगरखा पहिनता था :4: । [illegible] की [illegible] मुसलेशाभूषा थी। कुरमत पैंड, [illegible], राजधर और [illegible] रंग-बिरंगे [illegible] तथा [illegible] सुसज्जित रहते थे :5: । उपकारकी वेशभूषा बुन्देलखण्ड के राजाओं में प्रचलित थी :6: ।

चित्रांकी पद्मिनी :- प्रस्तुत उपन्यास में कुण्डार सिंह की वेश भूषा में मोती की माला, कोरे की अंगूठी तथा पीले [illegible] दर्शाये गये हैं :7: :8: । [illegible] सिंह तथा [illegible] अंग्रेजियों की वेशभूषा के अन्तर्गत केसरिया बाने का उल्लेख मिलता है :9: । देवी सिंह के विवाह के समय की वेशभूषा [illegible] गयी है, जिसके [illegible] तथा [illegible] का उल्लेख मिलता है :10: ।

ग. कुण्डार	-1 पृष्ठ संख्या- 12
	-2 पृष्ठ संख्या-171
	-3 पृष्ठ संख्या- 12
	-4 पृष्ठ संख्या-248
	-5 पृष्ठ संख्या-160
	-6 पृष्ठ संख्या-465
चित्रांकी पद्मिनी	-7 पृष्ठ संख्या- 11
	-8 पृष्ठ संख्या-389
	-9 पृष्ठ संख्या-358
	-10 पृष्ठ संख्या- 29 ---- वृन्दावनलाल वर्मा

मुसाहिबजू :- प्रस्तुत उपन्यास में मुसाहिब जू कलीपसिंह को बहुमूल्य :1: साफा तथा सतरंग-भड़कदार पोशाक धारण करते हुये दर्शाया गया है। वे :2: सोने की मुन्दड़ भी पहिनते थे। अन्य सैनिक मूँछिये रंग के वस्त्र तथा :3: बुन्देलखण्डी रूमाल पूले धारण करते थे। कुन्दी बारहबसहन साधारण :4: था।

कलवार :- प्रस्तुत उपन्यास में अंतर्गत शिकारियों की वेशभूषा में मूँछिये रंग की वेशभूषा का उल्लेख मिलता है। सोनेचाँदी शिकारके रंग मूँछिये रंग का आकर्षक साफा :5: पहिनते थे। जंगल के जंगलों में रहने वाले मुसाहिबों की वेशभूषा मौरछा रंग का साफा तथा बाकी सैनिकों की पोशाक का :6: उल्लेख मिलता है। निशानबेध द्वारा बाँधी पगड़ी और लम्बा अंगरखा :7: धारण करने का उल्लेख मिलता है।

बाँदी की रानी लक्ष्मीबाई:- प्रस्तुत उपन्यास में दर्शायी गयी पुरुष पात्रों की वेशभूषा :8: निम्नवत है। गंगाधरराव का पूरा वेश मोरपंख का :9: शिरपेच और पूली पेंच तथा पेशवा बाजीराव की छाप और मोतियों :10: का कण्ठा धारण करते थे तथा शिरपेच लगाते थे। आनन्दराव दिवाकरी :11: पगड़ी तथा तीन धारीदार सिर पर शिकारी टोपी धारण किये रहता था।

मूलखाँ :- प्रस्तुत उपन्यास के पुरुष पात्रों की वेशभूषा निम्नवत में दर्शायी गयी है।

राजा आनन्दसिंह साफे पर पगड़ी लगाते थे। शिकार के समय मूँछिये रंग के वस्त्र धारण करते थे तथा सामान्य रूप से सिर पर पट्टियाँ वेशभूषा रंग-बिरंगा मुँडासा, जिसपर जड़ाऊ कलगी और मखमली पगड़ी

मुसाहिबजू	-1 पृष्ठ संख्या- 6	बाँदी की रानी लक्ष्मीबाई	-9 पृष्ठ संख्या-71
	-2 पृष्ठ संख्या-78		-10पृष्ठ संख्या-17
	-3 पृष्ठ संख्या- 7		-11पृष्ठ संख्या-17
	-4 पृष्ठ संख्या-26		-12पृष्ठ संख्या-193
	-5 पृष्ठ संख्या-21		-13पृष्ठ संख्या-90
कलवार	-6 पृष्ठ संख्या-43		
	-7 पृष्ठ संख्या-78		
	-8 पृष्ठ संख्या-95	--- कुन्दाकलवार सर्मा	

रखती थी, आँखों में। गले में सोने का रत्नजटित हार पहिनते थे।[1] औरंगजेब पुजारी मोटी, छोटी, समीदार मोटा अंगरखा, मोटे कपड़े की छोटी सफेद पगड़ी धारण करता था।[2] अटल ने मूँगिया रंग का कुर्ता तथा सेलखिया रंग का धोती पहिना।[3] [4] नट सपने केश और फटी-पुरानी मैली धोतियाँ पहिनते थे।[5] निहाल सिंह मूँगिया रंग की पोशाक धारण करता था।[6]

टूटे फाँसे :- प्रस्तुत उपन्यास में वहाँ पुरुष पात्रों की वेशभूषा विवरण है।

मोहनलाल, मुंशीजी, मेनी समीदार अंगरखी, मेनी कर्ब हेटोपाली पाजर, तथा फटे जूते धारण करता था।[7] तथा छुटन्नू धोती पहिनता था।[8] सेठ अपने केशपर्यंत वह सेठजी की वेशभूषा में रहने लगा था।[9] रंगीन साफा भी बाँधता था।[10] सोना अंगरखा पहनता था। त्रिभुवनलाल अर्द्ध-नग्नावस्था में रहता था तथा शरीर में भस्म, माथे पर त्रिपुण्ड, गले में रुद्राक्ष तथा व्याघ्र की धारण करता था।[11] मराठा सिपाही तथा सरदार अपने रंग बिरंगे कपड़े तथा बहुमूल्य आभूषण धारण करते थे।[12] कुछ मराठा ऊँचा पैजामा तथा धोती भी धारण करते थे।[13] कम्पट लोग फटे पैजामे, जूते तथा साफे धारण करते थे, औरंगीलाल कपड़ेदार होते थे।[14]

मुन्नाबाई -1 पृष्ठ संख्या- 165
-2 पृष्ठ संख्या- 371
-3 पृष्ठ संख्या- 174
-4 पृष्ठ संख्या- 433
-5 पृष्ठ संख्या- 86
-6 पृष्ठ संख्या- 171

टूटे फाँसे -7 पृष्ठ संख्या- 1
-8 पृष्ठ संख्या- 118
-9 पृष्ठ संख्या- 79
-10 पृष्ठ संख्या- 7
-11 पृष्ठ संख्या- 90
-12 पृष्ठ संख्या- 21
-13 पृष्ठ संख्या- 52
-14 पृष्ठ संख्या- 195

----- कृष्णलाल वर्मा

महारानी दुर्गावती :- प्रस्तुत उपन्यास दलपति सिंह की वेशभूषा मेंसिर पर कलगीदार केसरिया रंग का साफा, कन्धे पर धनुष, पीठ पर तरकस का :1: :2: उल्लेख मिलता है। कीमती सिंकमोटा दुशाला ओढ़ते थे। तथा कुंवर सिंह :3: जो गोंडवानन्द के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह करता है, वह कोपीन :4: :5: गेरुये रंग के वस्त्र तथा मोटे धारण करता था। वह गले में मोतियों का :6: कण्ठा भी पहना करता था।

राम गढ़ की रानी :- प्रस्तुत उपन्यास में पुरुष पात्रों की वेश भूषा :7: के अंतर्गत अवधपति की पगड़ी, वेश भूषा तथा रामगढ़ के सैनिकों का मुंगिया रंग की वर्दी, जोधीदार जम्बूकों तथा लाचारों से सुसज्जित वेशभूषा का :8: उल्लेख मिलता है।

भुक्त शिक्षक :- प्रस्तुत उपन्यास में पुरुषपात्रों की वेशभूषा का उल्लेख निम्नवत् है :-

:9: :10:
भुक्त, सीमे केसरी और सोलियों से जड़ा हुआ कुर्ता, कंधुक, कोट :11: पूरे, सलय, चार इंच में नूंज की रानी जीते कोपेल रंग की कोलीजोर लेकर :12: रंगलीला कण्डी तथा पैरों में जूते तथा आसमानी रंग की कोपीन धारण :13: करते थे। राजा सोलह रेशमी धोती, कुर्ता, रेशमी उत्तरीय, कमर में

महारानी दुर्गावती -1 पृष्ठ संख्या- 23
-2 पृष्ठ संख्या- 29
-3 पृष्ठ संख्या-312
-4 पृष्ठ संख्या-309
-5 पृष्ठ संख्या-312
-6 पृष्ठ संख्या-113

रामगढ़ की रानी -7पृष्ठ संख्या- 73
-8 पृष्ठ संख्या-114

भुक्त शिक्षक -9 पृष्ठ संख्या- 83
-10पृष्ठ संख्या- 90
-11पृष्ठ संख्या- 84
-12पृष्ठ संख्या- 9
-13पृष्ठ संख्या- 15

----- सुन्दरलाल शर्मा

तलवार, जो चाँदी रेशमी फीते में :1: बनी लटकती रहती थी, कुछ मोतियों की माला, सोने के भुजबन्ध और कड़े :2: धारण करते थे। अमावस्या में मूँगे का हार, चाँदी के भुजबन्ध धारण करते थे :3: । पैरों में कुछ पंचिमे कुछ से जूते :4: पहने थे। कटिबंध पटे पुराने कपड़े धारण करता था। :5: तथा रेशमी पेटा में :6: वह मेखेरंग की कोपीन और धोती धारण करने लगा था :7: । गले में मोतियों का हार पहनता था :8: । वह सिर पर रंगीन रूमाल, नीचे तक लटकने वाली केशकूट हार कुंडल, पैरों में सुतल और चप्पल भी धारण करता :9: था । श्रेष्ठी और महाव्यापारी सोने के कड़े, कटक, मुक्ताहार, करधनी, अंगूठी कुछ चादर तथा किरण, पगड़ी या सैंदुये की छाल की कटी :10: धारण करते थे। :11: धोती, कोपीन, कटि में मुंज तथा जाड़ाक पहिनते थे। पैर, सिर पर छत्र जूट, कमर में मेखेरंग की करधनी, गले में रूमाल, पैरों में जाड़ाक तथा शरीर में :12: कभी उत्तरीय धारण करते थे। दीर्घबाहु वारसी साले पुरुष धोती, कमरबन्ध, रंग बिरंगा कंचुक लाल कोपेय का साफा, तथा पाव-मास पैरों वाला-सिरवा तथा -क- भूमिया रंग का कुंडला पहिनता था :13: । वारातियों की वेशभूषा में लोहे के कलों के आभूषण कंचुक, रंगीन रेशमी वस्त्र, भिन्नाम टोप रंगीन रेशमी उत्तरीय, कटि में पेटे तथा कबूतर पूलों :14: का कलेवा मिलता है ।

अनुक्रम चित्रम

-1 पृष्ठ संख्या- 17
-2 पृष्ठ संख्या- 18
-3 पृष्ठ संख्या- 18
-4 पृष्ठ संख्या- 17
-5 पृष्ठ संख्या- 31
-6 पृष्ठ संख्या- 48
-7 पृष्ठ संख्या- 75
-8 पृष्ठ संख्या- 12
-9 पृष्ठ संख्या- 34
-10 पृष्ठ संख्या- 54
-11 पृष्ठ संख्या- 43
-12 पृष्ठ संख्या- 9
-13 पृष्ठ संख्या- 28
-14 पृष्ठ संख्या-291

------ सुन्दरलाल वर्मा

अश्विन्यालार्य :- प्रस्तुत उपन्यासमें बहादुर सिंह की वेशभूषा में लाल, छोटी लम्बी, काठियावाड़ कुरन्तु धोती, लम्बी मोजोंवाले जूतों, तलवार, ढाल आदि का उल्लेख मिलता है। [1] भीखा जी उद्भव माथे पर चमकता त्रिपुण्ड लगाते थे तथा पगड़ी बाँधते थे। [2]

लोसी आम :- प्रस्तुतउपन्यास के मुख्य पात्रों की वेश भूषा भिन्नता है।

गुलाब खाँ बढ़िया मलमली पोशाक धारण करता था। [3] जब वह चोरी-छिपे हरम की बेगमों के पास जाता था, तब नारियों की वेशभूषा में रहता था और बुर्का ओढ़ता था। [4] रोशन उद्दौला, बहुमूल्य वस्त्रों और हीरे जवाहरातों से लदा रहता था। [5] वह दरबारी का दमकता हुआ सूर्य भी धारण करता था। [6] कभी कभी माथे में आम के पंखाकीतरह ऊँची और पैनी सूर्य कलगीलगाये रहता था। [7] निजाम लम्बा चौड़ा रंग-बिरंगा जाँघिया धारण करता था। [8] बीजाम राजा शम्भू कर्ण को दरबारी लिबास में उतारता गया है। [9]

देवन्तु कीमुल्लाम :- प्रस्तुत उपन्यासमें, कुरा और सिद्धू साधारण वेशभूषा में उतारे गये हैं। [10] काठमलिंह, मुँहमें रंगे वस्त्र, माथा और गले में मोतियों की माला धारण करता था। [11] राजा सिद्धवाल प्रायः अपना वेश बदलते रहते थे कभी कोई रूप, कभी कोई। [12] कपड़ों के नीचे कालिंदर जाहूरा और उसि

अश्विन्यालार्य -1 पृष्ठ संख्या-31
-2 पृष्ठ संख्या-11
लोसी आम -3 पृष्ठ संख्या-27
-4 पृष्ठ संख्या- 8
-5 पृष्ठ संख्या-12
-6पृष्ठ संख्या-109
-7 पृष्ठ संख्या- 16
-8 पृष्ठ संख्या- 18
-9 पृष्ठ संख्या- 96
देवन्तु कीमुल्लाम -10पृष्ठ संख्या- 84
-11पृष्ठ संख्या- 77
-12पृष्ठ संख्या- 7 ------ पृष्ठसंख्या उपर्

में कण्ठा पिये रहते थे [1]। वे लाकर भी धारण किया करते थे। [2] जब वे राजसी वेशभूषा में रहते थे तो वस्त्राभूषणों से सुसज्जित रहते थे। [3] सुखमय शिखरनिशे रंग के जरकशीर लाकर धारण करता था। [4] सुखमयाता के रूप में उसने साधिकों की वेशभूषा अपनायी थी, जिसमें सहमरे मेले रंग कापोलासखा घुघटा, कांच के मुरियों कीमाला जिसके मध्य किसी जानवर की खुरी का एक अद्वासकेत मुरियाहुआ होता था, धारण करता था। माथे पर सिन्दूर टीकों में कज्जल और कण्ठा तथा लंगोटी। [5]

कीचड़ और कमल :- इस उपन्यासमें मुख्य पात्रों कीवेशभूषा के अतिरिक्त, जिसेजा रूप से लाखड़ की वेशभूषा का उल्लेखकियागया है। अवकुर्ता कण्ठी, धोती और लंगोट धारण करता था। [6] कभी कभी सहसाधा आवरणमें रहा करताथा। [7] गले में रेशम का कण्ठा भी धारण करता था। [8] विन्ध्यरेखा में उस, कानों में कुण्डल, रंग विरंगा रेशमी जरतारीका कुर्ता, पीले रंग का रेशमी चमकीला फेटा, रेशमीलाल रंग कीजरतारी की अद्धम्मू धोती और मखूट धारण करता था। [9] सदानन्द मेले रंग के वस्त्र धारण करने लगा था। [10]

वेशभूषा की मुख्यान
-1 पृष्ठ संख्या-51
-2 पृष्ठ संख्या-43
-3 पृष्ठ संख्या-105
-4 पृष्ठ संख्या-77
-5 पृष्ठ संख्या-111

कीचड़ और कमल
-6 पृष्ठ संख्या-98
-7 पृष्ठ संख्या-107
-8 पृष्ठ संख्या-8
-9 पृष्ठ संख्या-59
-10 पृष्ठ संख्या-221

——— वृन्दावनलाल वर्मा

मानव की लिप्सा :-प्रस्तुत उपन्यास में-राजकुमारी,ग्राम कार्यकुशल :1: लगाते थे तथा मोटा अन्न उत्तरीय तथा धोती धारण करते थे। कभी :2: कभी वे मोटी धोती,मोटा अंगरखा तथा साफी पगड़ी पहिनते थे।जमादारसिंह, की वेशभूषा के अंतर्गत केसरिया रंग का रेशमी साफा,सिलवर मोतियों की :3: माला पड़ी रहती थी,का उल्लेख मिलता है तथा मराठा सैनिक घुटनों तक का कमीज पहिनता पूरी बाहों काअंगरखा, कमर में पेटा और सिर :4: में पगड़ी धारण करते थे । :5: तथा सिपाही खाकी के कपड़े पहिनते थे । :6: मालवती लिप्सा चूड़ी तथा धोती धारण करते थे ।

: ग - आचार-विचार :

मधु कुमार :- प्रस्तुत उपन्यास में :7: अभिमन्यु को शेर मराठा प्रिय था । :8: वह मालवा था से ही मारु-प्यार में लिप्त चुका था । वह अच्छा शिकारी :9: था । :10: युद्ध होने पर छुरी कटार तलवार से लेना जानता था । वह अपमान सहन करने का अभ्यस्त नहीं था । :11: वह :12: अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करता था। :13: तथा मनुष्य के स्वभाव का बड़ा पारखी था । वह राजनीति में :14: दूसरों या योगियों की सलाह को आवश्यक नहीं मानता था तथा उसे एकान्त सेवन भी रुचिकर था । :15: :16: :17: नागदेव को शिकार करना, राजकार्य सुनना,मधु पान परिहास करना, अपनी जाति को :18: संगठित करना तथा सुरा को शक्ति देवता का प्रसादमानकर उसका सेवन करना रुचिकर था । वह अदम्य उत्साही :19: युवक था । :20: उसका विचार था स्त्रियों की प्रकृति को समझना कठिन है। :21: वह प्रेम रोगसे व्यथित रहता था । उसका कथन था कि युद्ध और प्रेम में :22: :23: सदैव विजयपाना मुख्य कार्य है। विजयदेवता साधुकारी करता था । वह :24: मिलता का यह सीमा तक सीमित करता था । वह रसिक था तथा मानो

मानव की लिप्सा	-1 पृष्ठ- 274	-13 पृष्ठ संख्या- 24
	-2 पृष्ठ- 322	-14 पृष्ठ संख्या-417
	-3 पृष्ठ- 73	-15 पृष्ठ संख्या-249
	-4 पृष्ठ- 175	-16 पृष्ठ संख्या- 14
	-5 पृष्ठ- 172	-17 पृष्ठ संख्या- 21
	-6 पृष्ठ- 359	-18 पृष्ठ संख्या- 21
मधु कुमार	-7 पृष्ठ- 202	-19 पृष्ठ संख्या-121
	-8 पृष्ठ- 290	-20 पृष्ठ संख्या-205
		-21 पृष्ठ संख्या-111
		-22 पृष्ठ संख्या-105
		-23 पृष्ठ संख्या- 22
		-24 पृष्ठ संख्या- 24

:1:
का शोकीन था। पाण्डित्य प्रदर्शन उसे प्रिय था। अर्जुन,कर्ज़में अडिग
:2: :3: :4:
रहने वाला, अडिग बोलने वाला,विश्वस्त सेवक था। वह विद्या विद्यार्थी
:5: :6:
में रत रहता था । सेने के साथ सेवा सर्वाय करने वाला, वह एक विचारशी
:7: :8: :9:
व्यक्ति था । विचारक एक विद्यार्थ प्रेमी तथा सादगी, युक्त था। वह अपने
:10:
को पृथ्वी के पृष्ठि-कोट के समान समझने वाला व्यक्ति था । वह अपने पिता
:11:
से वह देखा है कि वेद आपकी देवी पूर्व देवर आत्मा भगवान की; और वह
कार्य को नहींकरता था,जिसमें उसकीआत्माको कष्ट पहुंचता हो। उसका विचार
:12:
था कि" शरीर नाशवान है::: परन्तु आत्मा अमर । गोपीचन्द मन्त्रित्व
:13:
की पराकाष्ठा को कविमायन में' समझने वाला व्यक्तिथा । मन्त्रि और
:14:
आपस में स्थापित रखना उसकी राजनीति थी । सर्वेन्द्र की पुस्तकों के अध्ययन
:15: :16:
में विशेष रुचि थी । उसे अपने शारीर काफी भरोसा था । वह विन्ध्यवासिनी
:17:
देवी का सच्चा उपासक था । पुण्यवान अवश्य उसकाथी किन्तु अधूरकर्मी
:18: :19:
व्यक्ति था । वह विनाआदरा के कोई काम नहीं करता था । उसका कथन
:20:
था कि " युद्ध में क्षत्रिय की मृत्यु स्वर्ग का सुख कार है ।" वह दरबार
:21:
प्रयोग के पक्ष में था नहि विरुद्ध प्रयोग के । और अभिमान की महत्ता को
:22: :23:
स्वीकार करता है। वह धन को मल का ढेर मानता है। सुरमत एक जगह पर
:24: :25:
स्थिर नहीं रहते थे ।स्वामी की सुयोग्य कीसमीक्षा के पक्षधर थे ।तथा
:26: :27:
लोगों की आलोचना में' विश्वासरखते थे। धरी उपदेश स्वामी शर्मा था ।

गद्य सुन्दर

-1 पृष्ठ संख्या-160
-2 पृष्ठ संख्या- 17
-3 पृष्ठ संख्या- 20
-4 पृष्ठ संख्या- 26
-5 पृष्ठ संख्या-137
-6 पृष्ठ संख्या- 57
-7 पृष्ठ संख्या- 71
-8 पृष्ठ संख्या- 351
-9 पृष्ठ संख्या-369
-10पृष्ठ संख्या-381
-11पृष्ठ संख्या-449
-12पृष्ठ संख्या-492
-13पृष्ठ संख्या-127
-14पृष्ठ संख्या-131
-15पृष्ठ संख्या-202
-16पृष्ठ संख्या- 48
-17पृष्ठ संख्या-383
-18पृष्ठ संख्या-212
-19पृष्ठ संख्या-191
-20 पृष्ठ संख्या- 329
-21 पृष्ठ संख्या- 415
-22 पृष्ठ संख्या- 129
-23 पृष्ठ संख्या- 415
-24 पृष्ठ संख्या- 129
-25 पृष्ठ संख्या- 141
-26 पृष्ठ संख्या- 182
-27 पृष्ठ संख्या- 94

------ सुन्दरलाल शर्मा

:1:
वह बंधु, हथियार और धर्म के बल पर अपना मार्ग प्रशस्त करता है। विनम्र
:2:
भावभक्त प्रिय था। वह साथियों में सहयोग लाने का पक्षधारी है।

विराट की पद्मिनी :- प्रस्तुत उपन्यास के मुख्य पात्रों के आचार-विचार निम्नवत् है :-

:4:
राजानायक सिंहरोग प्रौढ़ है। उन्होंने नदी में स्नान किया करते हैं,
:5:
किन्तु रण स्थली में पात्रों की तरह से अपना जौहर दिखाते हैं। उनमें
धार्मिक भावना का आधुल्य था। मरने से पूर्व उन्होंने अपनी अलौकिक माया
:6:
पावन नदी यमुना की रज में समाप्त करने की पक्का व्यक्त कीथी। जनार्दन
:7:
भाग्य की सत्ता को स्वीकार करता था। उसका दाय सरलता से नहीं
:8: :9:
समझ का सकता था। वह व्यवहार का मुख था। नारवति सिंहपुरा-पाठ
:10: :11:
करता था। उसका देशप्रेम को परख कर स्वीकार करने का प्रोत्साहित होता था।
:12: :13:
उसमें जाति गर्व विद्यमान था। लोकल सिंहोलाय वास करने का अभ्यस्त था।
:14:
उसके मन में कभी पूर्व आग भिन्न-वायु के अन्तर को नहीं पहिचानती थी।
:15:
उसका कथन था कि " तुम्हारे आपस में सब बराबर हैं।" जहाँ पौरुष का सम्मान
:16:
नहीं होता था, वहाँ वह नहीं रहता था। उसे अपनी तलवार की मोक का
:17: :18:
अभिमान था। वह साहसिक था, जो न रण कौशल्य से डरता था, न मर की।

मधु कुण्डार	-1 पृष्ठ संख्या-	116
	-2 पृष्ठ संख्या-	66
	-3 पृष्ठ संख्या-	74
विराटा की पद्मिनी	-4 पृष्ठ संख्या-	1
	-5 पृष्ठ संख्या-	29
	-6 पृष्ठ संख्या-	94
	-7 पृष्ठ संख्या-	128
	-8 पृष्ठ संख्या-	45
	-9 पृष्ठ संख्या-	69
	-10 पृ० संख्या-	85
	-11 पृष्ठ संख्या-	161
	-12 पृष्ठ संख्या-	159
	-13 पृष्ठ संख्या-	20
	-14 पृष्ठ संख्या-	13
	-15 पृष्ठ संख्या-	28
	-16 पृष्ठ संख्या-	99
	-17 पृष्ठ संख्या-	2
	-18 पृष्ठ संख्या-	73

------ वृन्दावनलाल वर्मा

:1:
सैयद आगाहैदर एक शिक्षाशास्त्र बरसाती था । सुन्दर शिक्षार्थ की रक्षा और
:2:
कर्तव्य पालन की व्यवस्था को स्वीकार करता है। उसे शिक्षालय की आवश्यकता कम
:3: :4:
थी किन्तु उपेक्षा भी नहीं थी। देशीशिक्षा और शिक्षास के पक्ष में नहीं था।
:5: :6:
वह और था तथा उन युवकों को धार्म व्यवस्था था । उसका कथन था कि
:7:
शिक्षालयों से ही शिक्षास उत्पन्न होकुछ :राजकाज व्यवस्थाभी सुख था।
:8:
वह किसी भीशास को बुरा बुरा कर कहता था । वह अपनी वाक्पटुता और
:9:
चतुरार्य से किसी को अप्रसन्न नहीं होने देताथा । स्वामीकार्य पालन करने
:10:
में दक्ष था । अतीमवर्मा रक्षकी की साथ शिक्षास है और छोटी रानी को
:11:
अपनी धर्म की बहिन मानने लगताहै। उसहिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं के
:12:
विरुद्ध कोई कार्य नहीं करता था।

मुताखिरू :- प्रस्तुत उपन्यास के मुख्य पात्रों आचार-विचार निम्नवत् है:-
:13:
मुताखिरू शिकारमें रुचि रखते थे । वे घर आये हुये सैनिकों को
:14:
भोजन कराने की व्यवस्था करते थे। समय समय पर अपने सैनिकों को पुरस्कृत करते
:15: :16:
रहते थे। उनमें अन्धविश्वास विद्यमान थी । उनकाजीवन सैनिकों से ही
:17: :18: :19:
सार्थक था । वे स्वामीभक्त व्यक्ति थे। उनकी एक पत्नीरखाम्बित सैनिकथा ।
:20:
वह सेवना को अपना धर्म मानता था तथा जीवन की क्षण भंगुरता को
:21:
स्वीकार सहज करता था । स्वामी के लिये अपनी छाती पर गोली

शिराटा की पहिचानी	-1 पृष्ठ संख्या-49	
	-2 पृष्ठ संख्या-227	
	-3 पृष्ठ संख्या- 44	
	-4 पृष्ठ संख्या-216	
	-5 पृष्ठ संख्या- 34	
	-6 पृष्ठ संख्या- 33	
	-7 पृष्ठ संख्या-128	
	-8 पृष्ठ संख्या- 23	
	-9 पृष्ठ संख्या- 32	
	-10पृष्ठ संख्या-173	
	-11पृष्ठ संख्या- 94	
	-12पृष्ठ संख्या-190	
मुताखिरू	-13पृष्ठ संख्या- 6	
	-14पृष्ठ संख्या- 5	
	-15पृष्ठ संख्या- 7	
	-16पृष्ठ संख्या- 72	
	-17पृष्ठ संख्या- 13	
	-18पृष्ठ संख्या- 89	
	-19पृष्ठ संख्या- 20	
	-20पृष्ठ संख्या- 32	
	-21पृष्ठ संख्या- 18	---- सुन्दरलाल शर्मा

:1:
ओढ़ने को भी अपना धर्म समझता था। रामसिंहपुर था जिसने को छोटी
:2:
बुद्धि का व्यक्ति कहता था। कुन्दी लेनदेन करता था किन्तु वह अपनी
:3:
सम्पत्ति कोड्रक्ट नहीं होने देताथा। राजा विजयबहादुर अपने पद के
:4:
आगे किसी की नहीं मानते थे। वे प्रजा का विशेष ध्यान रखते थे।
इनके व्यवहार उसी नयी राम चरित मानस चौपाईयों इनकीयत मनोभावना
को प्रकट करती है कि" जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी, सो नृप अवस नरक
:5:
अधिकारी।"

कथनार :-प्रस्तुत उपन्यास के मुख्य पात्रों के आचार-विचार निम्नवत् है:-

मान सिंह लोहुए प्रवृत्ति का व्यक्ति था। वह नारी सौन्दर्य
:6:
की कामुकता की दृष्टि से आकृष्ट है। उसका विचार है किसी जन्म लेताहै,
:7:
वह एकदिन अवश्य मृत्यु कोप्राप्तहोता है। उसका कथन था किराजा करे सो
:8: :9:
न्याय और काला चढ़े सो दाग।" वह शिक्षा विचार के पक्ष में रहता है
:10:
और शिक्षा रानी अवन्तीके साथ पुनर्विवाह कर लेताहै। उसे नीच जाति में
:11:
जन्म लेने का अभिमान है। राजा मनोज सिंहका विचार है किस्त्रियों की
:12:
प्रवृत्ति समझना कठिन है। उनकी दृष्टि में पत्नी को दण्ड न देना,धर्म को
:13:
पतित करना है। वे जिसे प्रेम करते है उसके चरित्र पर शंका करना,मूर्खता
:14:
समझते है। वे अपराधी मान सिंहको क्षमादान देकर सदाचारी प्रति-स्थापित

मुद्रांकित सू -1 पृष्ठसंख्या- 7
-2 पृष्ठ संख्या-73
-3 पृष्ठ संख्या-21
-4 पृष्ठ संख्या-84
-5 पृष्ठ संख्या-99

कथनार -6 पृष्ठ संख्या-14
-7 पृष्ठ संख्या-38
-8 पृष्ठ संख्या-67
-9 पृष्ठ संख्या-134
-10पृष्ठ संख्या-199
-11पृष्ठ संख्या-371
-12पृष्ठ संख्या- 27
-13पृष्ठ संख्या- 74
-14पृष्ठ संख्या-341 ------ कुन्दनलाल वर्मा

करते हैं। उन्हें महादेव, बड़े देव, कोहादेव और सामदेव की संज्ञा मानता था।[2]
उपन्यास का शिखर देशिराजा को, आयु होने पर सत्कर्म बदलने के लिये संन्यास
ले लेना चाहिये।[3] उसकी दृष्टि में[4] मोक्ष सबसे बढ़कर है। वह राजाओं और धर्म
का अस्तित्व सहन नहीं कर पाता।[5] मन्टोलेपुरी युक्तियुक्त कोई तथ्य
धर्मों को दासता मानते हैं।[6]

शैली की रानी स्वरीकार्य :- इस उपन्यास के मुख्य पात्रों का आचार-विचार
निम्नवत् है :-

राजा भैरवसिंह राज्य आदित्यवीर अभिलाषाओं के रसिक हैं।[7] नाटकों
में उन्हें विशेषरुचि थी।[8] वे पर्याप्त अभिनय करते थे।[9] राजा पुरातन पंथी थे
और पर्दा प्रथा के प्रबल पोषक थे।[10] भीड़-भैरवियों, दासियों के संगी-मनोरंजन
और आमोद-प्रमोद में उनका समय व्यतीतहोता था।[11] वे जनता के सुख का
ध्यान रखते थे।[12] उनका द्वेष सम-सुसम नहीं देखता था।[13] वे शिल्पों को
नहीं सताते थे और न किसी कोमल-सम्पत्ति पर अधिकार करते थे।[14] पूर्णवायु
स्वार्थपरता में आकर देशद्रोही बन जाता है।[15] बालायुक्त स्वाभिमानी पुरुष
है।[16] पूर्वोक्तरुचि उदार विचारों वाला, राष्ट्रीय भावनाओं में ओत-प्रोत था।[17]
साहस ज्योतिषी और तांत्रिक का था उसका कथन था कि लोकाचार
समय समयपर बदलते रहते हैं।[18] वह धर्म को विश्वास कीआड़ मानता है।[19]

उपन्यास	-1 पृष्ठ संख्या-371	
	-2 पृष्ठ संख्या- 62	
	-3 पृष्ठ संख्या- 84	
	-4 पृष्ठ संख्या-148	
	-5 पृष्ठ संख्या-196	
	-6 पृष्ठ संख्या-222	
शैली कीरानी स्वरीकार्य	-7 पृष्ठ संख्या- 8	
	-8 पृष्ठ संख्या- 8	
	-9 पृष्ठ संख्या- 9	
	-10पृष्ठ संख्या- 24	
	-11पृष्ठ संख्या- 33	
	-12पृष्ठ संख्या-123	
	-13पृष्ठ संख्या- 82	
	-14पृष्ठ संख्या-103	
	-15पृष्ठ संख्या-409	
	-16पृष्ठ संख्या- 27	
	-17पृष्ठ संख्या- 42	
	-18पृष्ठ संख्या- 49	
	-19पृष्ठ संख्या- 49	---- कृष्णलाल वर्मा

प्रकाशचन्द्र सिंह राजपेय है।वे अपनेपन के आगे किसी कीमतों छुपते हैं। :1: इनके नाम से बना पट स्मारक यह बात की पुष्टि करवाये। कल्याण गार्डन साहित्यिक, स्वदेश प्रेमी, कर्तव्य पुरायण तथा भारत की सुन्दरता की दृष्टि से देखने वाला :2: थीम था । तथा उसाधर सिंहजपने स्वामीऔर अपनी आँखों के लिये प्राणोत्सर्ग करने के लिये प्रतिज्ञा :3: उपस्थ रहता था ।

मृगनयनी :- प्रस्तुत उपन्यास के मुख्य पात्रों के आचार-विचार निम्नवत् हैं:-

राजाभान सिंह की ओर का विशेष :4: रोष था । वह सभ्यता को ऋण मानते थे तथा कर्म कोप्रमुखा और धार्म सुख की व्यर्थ समझते थे। :5: राज्य को सुव्यवस्थित रखने का प्रयत्न किया करते थे। :6: वे संगीत प्रिय थे और संगीत को पत्थरों में कुम्हलाना :7: चाहते थे। उनका विचार था कि नारी कामोरस,सौन्दर्य महत्व उनकी निर्बलता मेरी है। :8: न्यायुद्दीन और कामुकता तथा मदिरापान करने का :9: अभ्यास था । :10: वह निकम्मा अवश्य नहीं था।नसीरुद्दीन भी बड़ा :11: कामुक था । उसे नमाज आदि से विशेष लगाव न था। वह अपनी वासना की पूर्ति के लिये नग्न मूर्तियों के साथ :12: व्यभिचार किया करता था ।

:13: विजय एक सरल संगीत कार था ।वह शारीरिक बल को महत्वपूर्ण समझता :14: था । उसका विचार था कि काम करना मानव का :15: धर्म है। बीनाराजन

झाँसी की रानी	-1 पृष्ठ संख्या- 119	
लक्ष्मीबाई	-2 पृष्ठ संख्या- 87	
	-3 पृष्ठ संख्या- 189	
मृगनयनी	-4 पृष्ठ संख्या- 40	
	-5 पृष्ठ संख्या- 42	
	-6 पृष्ठ संख्या- 180	
	-7 पृष्ठ संख्या- 103	
	-8 पृष्ठ संख्या- 384	
	-9 पृष्ठ संख्या- 61	
	-10पृष्ठ संख्या- 84	
	-11पृष्ठ संख्या- 313	
	-12पृष्ठ संख्या- 367	
	-13पृष्ठ संख्या-103	
	-14पृष्ठ संख्या-139	
	-15पृष्ठ संख्या-430	---- वृन्दावनलाल वर्मा

:1: :2:
इसे सहिष्णु था तथा जीव हिंसा को सब पाप समझता था । :3: कृष्ण की पूजा करता था , :4: तथा आध्यात्मिक- भावना
से ओत-प्रोत था। :5: उसका जन्म था किन्तु :6: भगवान के भजन की महत्ता को स्वीकार करता है। :7: राजा को भगवान का अवतार मानता था । :8: कार्तिक का पोषक था।
:9: तथा कट्टर धर्म पन्थी व्यक्ति था । :10: अतः कठोर संयमी जीवन व्यतीत करता था । :11: दिवाकर, परिजन के इसे प्रिय था । :12: वह अपनी पत्नि को अतिशयवरता था ।

दूसरे कवि :- प्रस्तुत प्रबन्धकाव्य के मुख्य पात्रों के आचार-विचार निम्नवत् है :-

:13: मोदनकाव्य वेश्या का संसार की सबसे बड़ी वस्तु मानता था । :14: शकुन- अपशकुन में विश्वास करता था । इसे राम के द्वारा विभिन्न :15: घेरों पर विश्वास था विपरित करके कहीं भी कथा देंगे। स्त्री पर दोष :16: :17: लगाना नीच कर्म मानता था । सुखों के विरुद्ध था तथा काम के पक्षपात :18: :19: रहने को नीच कर पक्ष करताथा । उसके आवश्यकों कीमीमा छोटी थी । :20: वह के रस को विलासी रूप में पीना मानता था । स्त्रियों को मान-मर्यादा :21: प्रधान अपना कर्तव्य मानता था ।

:22: सोता कृषि कार्य को सहयता के साथ करता था । वह सनातनता

मुक्तावली

-1 पृष्ठ संख्या-	103	दूसरे कवि	- 13 पृष्ठ संख्या-	229
-2 पृष्ठ संख्या-	99		-14 पृष्ठ संख्या -	2
-3 पृष्ठ संख्या-	20		-15 पृष्ठ संख्या-	15
-4 पृष्ठ संख्या-			-16 पृष्ठ संख्या-	19
-5 पृष्ठ संख्या-	29		-17 पृष्ठ संख्या-	81
-6 पृष्ठ संख्या-	28		-18 पृष्ठ संख्या-	23
-7 पृष्ठ संख्या-	182		-19 पृष्ठ संख्या-	81
-8 पृष्ठ संख्या-	197		-20 पृष्ठ संख्या-	195
-9 पृष्ठ संख्या-	371		-21 पृष्ठ संख्या	176
-10 पृष्ठ संख्या-	12		-22 पृष्ठ संख्या-	6
-11 पृष्ठ संख्या-	105			
-12 पृष्ठ संख्या-	12			

---- मुक्तावलीसे समाप्त

के कारण सुधार भी करना ठीक नहीं समझता :1: । वे मर्यादित कार्यों से अधिक समय अपने का प्रयत्न अवश्यकरता है:2:।दूसरों की आवश्यकता लेना पाप समझता है:3:। विद्यार्थियों को,घर आदि का लेखकरते है तथा विद्यार्थी पर बहुत अनुशासन रखते है :4: । व्यवस्था करना, आसन करना तथा आशीर्वाद और वरदान देना उनका नित्य कार्यहै:5:। सादा वेश और सरल प्रिय व्यक्ति था :6: । प्रेयसी को प्रेम देकर वह प्रसन्न रखता था :7: । सेना में कुछ पदका अभिलाषी था :8: । प्रतिशोध भावना उसमें विद्यमान थी :9: । सुसम्पन्न शासकों सुरा- सुन्दरी प्रिय थी :10: । उन्हें किसी कविकविता कहानियाँ सुनने का व्यसन था :11: ,उन्हें संगीत से प्रेम था तथा वे संगीत के पारखी भी थे :12: । बहुमराठी कभी इधर की उधर नहीं करता था तथा विश्वासीय व्यक्ति था :13: । वह मराठा था और उसका कथन था कि" मराठे न तो कभी उपकार को भूलते हैं और न अपकार को :14: । " औरंगजेब उन व्यक्तियों में से था,जो किसी भी विपत्ति के समय होने के पहिले ही आक्रम शंकेत को पुरुषार्थ और बुद्धि द्वारा अपना वश मान लेते हैं :15: । नागिरदास एक असाधारण सेना नायक था :16: । वह विश्वासपात्र का उत्तर,विश्वासघात में देना जानता था :17: । बाजीराव अपनी प्रेयसी के सौन्दर्य,सौष्ठव और प्रेम से प्रेरणा लेने वाला पुरुष था :18: । परिचारिकाओं से परामर्श करने आवश्यकता अनुसार उसे अच्छी तरह आता था :19: ।

टूटे फाटे

-1 पृष्ठ संख्या- 269
-2 पृष्ठ संख्या- 184
-3 पृष्ठ संख्या- 342
-4 पृष्ठ संख्या- 90
-5 पृष्ठ संख्या- 91
-6 पृष्ठ संख्या- 104
-7 पृष्ठ संख्या- 101
-8 पृष्ठ संख्या- 108
-9 पृष्ठ संख्या- 45
-10पृष्ठ संख्या- 53
-11पृष्ठ संख्या- 35
-12 पृष्ठ संख्या- 81
-13पृष्ठ संख्या- 81
-14पृष्ठ संख्या- 334
-15पृष्ठ संख्या- 51
-16पृष्ठ संख्या- 140
-17पृष्ठ संख्या- 135
-18पृष्ठ संख्या- 60
-19पृष्ठ संख्या- 367 ---- कुल्लाहनमान समर्

महारानी दुर्गावती :- प्रस्तुत उपन्यासके मुख्य पात्रों में सेनापति बाज बिहारी प्रवृत्ति के व्यक्ति थे[1]। घुड़सवारी में उन्हें विशेष रुचि थी[2]। वे सच्ची बुद्धि के राजा थे तथा शूरवीर और साहसी थे[3]। उनका आचार विचार[4] बुन्देलों के प्रति अत्यधिक उदार था[5]। जाति का स्वाभिमान उनमें विद्यमान था[6]। वे युद्ध से मुख नहीं मोड़ते थे[7]। कीर्तिसिंह राजसी ठाठ-बाट से रहते थे तथा बहादुर शान में रहकर महोबे के मानों को लाने का उसे विशेष शौक था[8]। घोड़ी की सवारी, उन्हें रुचिकर थी[9]। वे अपनी बेटी कीर्तिबाई के लिये बड़े से बड़ा त्याग करने को तत्पर रहते थे[10]। वे साहसी थे। उन्होंने शूरवीरों को ललकारते हुये कहा था कि " जब तक हमारे तन में एक साँस भी शेष रहेगी, युद्ध करते रहेंगे[11]। वे अपने प्रण का पूर्ण निर्वाह करते थे[12]। सुन्दर सिंह, धीर और बुद्धिमान व्यक्ति था। सैन्य-संगठन करने और अधिकारों के निर्माण करनेमें दक्ष था[13]। शस्त्र चलाने की कला में भी, वह माहिर था[14]। लोग उसे नीच, विश्वासघाती और निकृष्ट प्रवृत्ति के पुरुष के रूप में आँकते थे[15]। सुन्दर सिंह का विचार था कि " बल का उत्तर बल है और छल का उत्तर छल[16]। आधार सिंह राज्यका न्यायाधीश, प्रधान सेनापति और दीवान था[17]। उसमें व्यवहारिकता विद्यमान थी। वह शिष्टाचारी भी था[18]। वह एक साहसी योद्धा[19] और स्वाभिमानी व्यक्ति था[20]। मनु में स्वाभ

महारानी दुर्गावती
-1 पृष्ठ संख्या-2
-2 पृष्ठ संख्या-41
-3 पृष्ठ संख्या-181
-4 पृष्ठ संख्या-194
-5 पृष्ठ संख्या-128
-6 पृष्ठ संख्या-128
-7 पृष्ठ संख्या-153
-8 पृष्ठ संख्या- 30
-9 पृष्ठ संख्या- 79
-10 पृष्ठ संख्या-104
11- पृष्ठ संख्या- 211
12- पृष्ठ संख्या- 217
13- पृष्ठ संख्या- 119
14- पृष्ठ संख्या- 133
15- पृष्ठ संख्या- 222
16- पृष्ठ संख्या- 207
17- पृष्ठ संख्या- 168
18- पृष्ठ संख्या- 177
19- पृष्ठ संख्या- 191
20- पृष्ठ संख्या- 331

--- वृन्दावनलाल वर्मा

और जनिवाम की भावना विद्यमान थी[11]।

राजगढ़ की रानी :- प्रस्तुतउपन्यास के मुख्य पात्रों में सूबेदार जगदेव सिंह देशभक्त सिपाही था। वह अपने कर्तव्य के पालन हेतु सजग और तत्पर रहाकरता था[12]।वायु प्रसाद परिश्रमी और धीर व्यक्ति थे। वे देश-धर्म के लिये प्राणोत्सर्ग करने को तैयार रहते थे[13]। जगत सिंह देशभक्त था और धर्म के परिस्थान को निकृष्ट और हेय समझता था[14]। राजा विक्रमादित्य सिंह मानसिक रूप से कुछ अस्वस्थ रहते थे। वे छोटी नदी में स्नान करते थे। पाठ पूजा भी खूब किया करते थे[15]। वे देवी माँ के परमभक्त थे[16]। उनका विचार था कि " धन परदेशियों को अपनी धरती पर से हटाना बहुत जरूरी है।"[17]

रचिरलाल में, देश-प्रेम की भावना का आधुन्य था। उनका विचार था कि आध्यात्मिक तथा भौतिक कर्तव्यों का समन्वय परम आवश्यक है[18]। गिरधारी रावरी में रुचि रखता था[19]। युद्धसामग्रीऔर सत्र करने में अति उत्साहशाली सिंह कोला को जो अब पीछे नहीं हटता था[20]। वह खेती जो जमार, चीज सब खेती" कर लेने वालों में से था। वह जमर से नफ़ा रखता था तथा अन्दर से कृष्णाक्रोश रखता था[21]।

महारानीदुर्गावती	1- पृष्ठ संख्या-	28।
राम झूठी रानी	2- पृष्ठ संख्या-	71
	3- पृष्ठ संख्या-	57
	4- पृष्ठ संख्या-	16
	5- पृष्ठ संख्या-	3
	6- पृष्ठ संख्या-	21
	7- पृष्ठ संख्या-	28
	8- पृष्ठ संख्या-	49
	9- पृष्ठ संख्या-	50
	10-पृष्ठ संख्या-	38
	11-पृष्ठ संख्या-	37
	12-पृष्ठ संख्या-	49 ----- वृन्दावनलाल वर्मा

भुवन सिंहम :- प्रस्तुत उपन्यास के मुख्य पात्रों में भुवन व्यवसाय करने में अत्यधिक रुचि रखता था[1]। अपने शरीर को शक्ति-शाली बनाये रखने में, उसे विश्वास था[2]। पहले वह जुआ खेलता था[3] किन्तु आश्रम में प्रवेश करने के उपरांत, गुरु के उपदेश सुनना, अध्ययन करना, सत्-शास्त्र संग्रह करना, स्वाध्याय एवं ने चिंतन करना और खेलना-कूदना उसकी दिनचर्या बन गये- गयी थी[4]। उसका कथन था कि" यदि मुक्तात्मा मेरे पास आये, मैं ने, तो विनय, आँखें उठा में नहीं मिलाऊँ।"[5] आत्मिक गम्भीर रहा करता था[6]। वह कर्म-शील तथा ज्ञानी युवक था[7]। खेल, परिश्रम-खेलना करने में मुख तथा अपने शोषण देखने में सुख था[8]। उपवन, विद्यालय और खेतों का पाठ किया करता था[9]। सौम्य, वह महान ऋषि थे। वे आश्रम में रहकर शिष्यों को विद्यादान किया करते थे। वे अपने शिष्यों के शोध विचार- व मूल्यों को परिष्कार करने में विश्वास रखते थे[10]। वे शास्त्रों की अनुचित बातों को नहीं मानते थे[11]। अधिक धनों को वे उचित नहीं समझते थे[12]। चोर, अधर्मी, अत्याचारी, तथा साधु भी उनकी दृष्टि में, मूढ़ थे, नहीं परिश्रम करने वाले गरीब व्यक्ति[13]। मेम, मंत्रों और साधु-टोनों में पारंगत था[14]। वह सूर्य को सेव-दृष्टि से देखता था[15]। सोम का विचार

भुवन सिंहम
-1 पृष्ठ संख्या- 4
-2 पृष्ठ संख्या- 25
-3 पृष्ठ संख्या- 54
-4 पृष्ठ संख्या- 103
-5 पृष्ठ संख्या- 61
-6 पृष्ठ संख्या- 104
-7 पृष्ठसंख्या- 248
-8 पृष्ठ संख्या- 43
-9 पृष्ठ संख्या- 44
-10 पृष्ठ संख्या-43
-11पृष्ठ संख्या- 47
-12पृष्ठ संख्या- 89
-13पृष्ठ संख्या-114
-14पृष्ठ संख्या- 30
-15पृष्ठ संख्या- 11 ----वृन्दावनलाल वर्मा

है शिशिरोष लक्षण करने की शक्ति,संस्कृति और सभ्यता की कसौटी है।[1]

कपिल,योगाभ्यासी था तथा अपने को छोटा था,निश्चित मात्र समझता था।[2] [3] राजा रोमक कार्यालय व्यवस्था का पालन करने वाले,वस्तुतः है विरुद्ध तथा दास प्रथा को हेय समझने वाले,राजा थे।[4] [5] वे अपने सिद्धान्तों को दूसरों के प्रति व्यक्ति पर तो उतार दो जाते थे, पर स्वयं के साथ में उनके व्यवहार करने की लगन, उनमें न थी।[6] वे अपने व्यवहारों की त्रुटियों के प्रतिक्रियाशील रहते थे।[7] [8]

अविस्मरणीय :- मजदूर लाड़े-कुमार में विमुग्ध हुआ युवक था। वह विलासी था तथा उसके पैर उठाने का अभ्यस्त था।[9] [10] खुद-घाट करते,वह मन संग्रहित करता था।[11] वह "पिटी-पिटाई लीकों पर नहीं चलता था।[12] भोजन जन्म-सिद्ध,विद्या जानता था। चोरी करने की उसे आदत थी।[13] [14] मनुष्य सिंह समान लूटे सिंह,प्रारम्भ में डाँटे डालता था। वह राजमीरों से अर्थ-कुमार्ग कर बहुत लेता था।[15] खेत-खलोट को भी अनोपार्जन का प्रमुख और सरल साधन मानता था।[16] अविस्मरणीय के सान्निध्य में आकर वह प्रायश्चित्त करता है तथा नर्मदा तट पर प्रार्थना,उपासना और भगवत भजन करने लगता है। वह अपने को पापी मानता है और पापों से मुक्ति पाने के लिये सत्कर्म करना प्रारम्भ कर देता है।[17]

भुवन विक्रम
1- पृष्ठसंख्या- 61
2- पृष्ठ संख्या-67
3- पृष्ठ संख्या-277
4- पृष्ठसंख्या- 272
5- पृष्ठ संख्या-91
6- पृष्ठ संख्या-26
7- पृष्ठ संख्या-49
8- पृष्ठ संख्या-49

अविस्मरणीय
9- पृष्ठ संख्या-173
10-पृष्ठ संख्या-11
11-पृष्ठ संख्या-60
12-पृष्ठ संख्या-84
13-पृष्ठ संख्या-37
14-पृष्ठ संख्या-120
15-पृष्ठ संख्या-96
16-पृष्ठ संख्या-86
17-पृष्ठ संख्या-102

---- वृन्दावनलाल वर्मा

सोती आग :- आदम था जैसे शांति रखता था, किन्तु क्रोध आने पर वह भड़क उठता था [1]। वह सोनी को अभिशाप मानता था [2]। मुगल अपने को नाशीब समझने वाला मुल्क था [3]। जमाने विलास में रहकर वह धर्म की सेनाओं की अनुपम काम वासना को हेय मानता था। रोशन उद्दौला वह सुशीला अवार था [4]। वह राजपूतों का परम भक्त था [5]। वह खजाने की मोहा, धन में काबिल, समाजसुधर और वातावरण भी था [6]। किसी बात को नाटकीय ढंग से प्रस्तुतकरने में सिद्ध-हस्त था [7]। मुहम्मदशाह को भोग विलास प्रिय था [8]। दीवान राजा सुमेरमल का विचार था कि जो होनहार है, वह होकर ही रहता है [9]। वामनोदन्मत्त रमल, ज्योतिष, गण्डा-तावीजों के बल में सुख था [10]।

देवगढ़ की मुसलमान :- प्रस्तुत उपन्यास में सहायिक भी पुरुष पात्रों में राजा विजयपाल सिंह अहंकार और क्रोध से दूर रहने वाले तथा मोह और भय को सबसे अधिक निकृष्ट समझने वाले पुरुष थे [11]। उनका आचरण सह था और वे नित्य उपयोग की क्रियायें किया करते थे [12]। वे संयम-नियम और धन सेवा में प्रवृत्त रहकर शासन की कल्याणकारी योजनाओं को तुरंत प्रदान करते रहते थे [13]। राजा होते हुये भी वे सादगी मेंनाम करते स्वयं अपने वस्त्र धोते थे [14]। [15] [16]।

सोती आग	1- पृष्ठ संख्या- 98	
	2- पृष्ठ संख्या- 6	
	3- पृष्ठ संख्या- 7	
	4- पृष्ठ संख्या- 11	
	5- पृष्ठ संख्या- 15	
	6- पृष्ठ संख्या- 16	
	7- पृष्ठ संख्या- 65	
	8- पृष्ठ संख्या- 28	
	9- पृष्ठ संख्या- 61	
	10-पृष्ठ संख्या- 14	
देवगढ़ की मुसलमान	11-पृष्ठ संख्या- 42	
	12-पृष्ठसंख्या-252	
	13-पृष्ठ संख्या- 46	
	14-पृष्ठ संख्या- 46	
	15-पृष्ठ संख्या- 50	
	16-पृष्ठ संख्या- 75	------ मुन्नाजलाल वर्मा

युद्धों का विवरण और यात्राओं की मनोरंजक कथायें सुनने तथा विचार देखने में उन्हें विशेष रुचि थी[1]। वे घोरे पूजा-पाठी न थे, अपितु बड़े योद्धा भी थे[2]। उन्हें छोटकों-टोनों में विश्वास नहीं था[3]। वे प्रजावत्सल, अनुशासनी और सैन्यशील पुरुष थे[4]। युद्ध और शिकार करने की बड़े शौक कर लेखा करते थे और अपना पेट पालते थे[5]। वे दोनों कठोर परिश्रमी थे तथा सच्चे, न्यायप्रिय और धार्मिक पुरुष थे[6]।

राव राजा बहुमुखी प्रतिभा सिंह राष्ट्रप्रेमी व्यक्ति थे[7]। वह अपने राज्य अवस्थितियों विस्तार का भावना था तथा उसे प्राप्त करता था[8]। जिससे उसका व्यक्तित्व राजमान रहे। महिमा, राजनीति में चतुर और युद्ध की क्रियाओं में निपुण व्यक्ति था[9]। अनवरत अवसरवादी व्यक्तित्व था। वह सुरक्षा और मैत्रीपूर्ण नीतियों को मानता था[10]। शीघ्र सुनने में उसे विशेष आनन्द आता था[11]। चन्दा, सोना-चाँदी और धन-धर्म जाता लेपित था[12]। पुरुष सिंह, गोंडों के राज्य-स्थापन की कामना किया करता था[13]। उसे मंत्रों में विशेष आस्था थी[14]। भूषण जाता, जबकि उसने "भारत-मंत्र" के आधार राजा के निर्माण का प्रयत्न किया था, जिससे वह आकर रहा[15]। राजा ने उसे क्षमा कर दिया, जिससे वह राजभक्त बन गया था। उसने युवाओं की भावना का भी परिस्थान कर दिया था[16]।

देशभक्त की मुस्कान

1- पृष्ठ संख्या- 47
2- पृष्ठ संख्या- 200
3- पृष्ठ संख्या- 183
4- पृष्ठ संख्या- 139
5- पृष्ठ संख्या- 134
6- पृष्ठ संख्या- 50
7- पृष्ठ संख्या-
8- पृष्ठ संख्या- 174
9- पृष्ठ संख्या- 869
10- पृष्ठ संख्या- 46
11- पृष्ठ संख्या- 15
12- पृष्ठ संख्या- 56
13- पृष्ठ संख्या- 123
14- पृष्ठ संख्या- 108
15- पृष्ठ संख्या- 109
16- पृष्ठ संख्या- 122
17- पृष्ठ संख्या- 126

--- वृन्दावनलाल वर्मा

कीचड़ और कमल :- प्रस्तुत उपन्यास में राजा महमेश वर्मा जन कल्याण के कार्यों में विशेष रुचि रखते थे।:1: उनका पराक्रम,रणकौशल और शौर्य विख्यात था।:2: वे किसी कार्य को तत्परता के साथ सम्पन्न करते थे।:3: वे सर्वगुण सम्पन्न व्यक्ति थे तथा कला के सभी अंगों को जानते थे। अद्भुत वीर और अत्यन्त चतुर सेनानायक थे तथा प्रजा को प्रसन्नता के साथ पालते थे।:4: आचार्य रामदेव विद्वान के बड़े ज्ञानी,शास्त्रों के जानकार तथा साहित्य तत्वों के अधिकारी थे।:5: वे बात करते करते विचार मग्न हो जाते थे।:6: विद्यमला को वे दुर्गा के चरणों में पहुँचने का साधन मानते थे।:7: उनका विचार था कि श्रद्धा और विश्वास के साथ जब ध्यानकेन्द्रित होता है सभी सुख प्राप्त होता है।:8: साहस सुखी का धनी था तथा मूर्खिता और गवारों में सुधारता हेतु और परिश्रम करता था।:9: उसमें सहनशक्ति थी:10: तथा शिष्टाचार करने में तत्पर रहता था।:11: सन्तु घर से जंगल में निकल जाता है और साधु बन जाता है तथा अपना अनामय नाम रख लेता है। वह मौनव्रत धारण करता था:12: तथा सभी नारियों को अपनी बहिन के समान समझता था।:13: अंग, रमकार,विमकार तथा सुकार था।:14: वह जाति

कीचड़ और कमल

1- पृष्ठ संख्या- 114
2- पृष्ठ संख्या- 121
3- पृष्ठ संख्या- 113
4- पृष्ठ संख्या- 122
5- पृष्ठ संख्या- 129
6- पृष्ठ संख्या- 131
7- पृष्ठ संख्या- 132
8- पृष्ठ संख्या- 133
9- पृष्ठ संख्या- 8
10-पृष्ठ संख्या- 106
11-पृष्ठ संख्या- 21
12-पृष्ठ संख्या- 225
13-पृष्ठ संख्या- 260
14-पृष्ठ संख्या- 18 ------- वृन्दावनलाल वर्मा

के मेलभाव को नहीं मानता था [1]। वह अपने गुरु रामसेवक को अपने पिता तुल्य समझता था [2]। वह षड्यन्त्रों में भी सहयोग देता था [3]। [4] सुन्दर मेहतोनी और षड्यन्त्रकारी युवक था [5]।

माधव की शिक्षा :- समझदारी के अंतर्गत विद्याकुशलता पूर्ण, सम्पूर्ण और पूर्ण व्यवहार करने का कायल था [6]। उसमें अधिकारों की भूख धन लोभ और शारीरिक निर्बलता के साथ युद्ध का साहस भी था [7]। वह स्त्रीत्व को अपने पुरुषत्व पर आरोपित करने वाला तथा अपने शरीर को सजाने-संवारने वाला पुरुष था [8]। वह स्वार्थपरता, झूठ खसोट और हत्या करने-कराने से नहीं झिझकता था [9]। लेकिन रंग में साहस और पुरुषार्थ था, परन्तु आतुरता और मुसीबतों के आगे किसी की नहीं सुनता था [10]।

स्वाधीन नारी छल-नीच और छोटे बड़े के भेदभाव को नहीं मानता था [11]। माधव की बन्धु सुन्दरी भैरवाग की भावना विद्यमान थी [12]। लेकिन विभिन्न युवक युवतियों को सुरता जीवनरता मानता था [13]। सुरबाला हिन्दू के कर्तव्यों को नहीं भूलते थे [14]।

रघुनाथ राय ने भूत और भविष्य को बड़ी प्रखरता के साथ संयुक्त कर दिया था कि उनके समक्ष वर्तमान प्रस्तुत ही न रहता था [15]। बराबर निर्भीक बनता का क्षीण विश्वास होते हुये भी किसी भी

शीर्षक और कथन	1- पृष्ठ संख्या-	50
	2- पृष्ठ संख्या-	56
	3- पृष्ठ संख्या-	292
	4- पृष्ठ संख्या-	289
	5- पृष्ठ संख्या-	171
माधव की शिक्षिया	6- पृष्ठ संख्या-	292
	7- पृष्ठ संख्या-	300
	8- पृष्ठ संख्या-	3
	9- पृष्ठ संख्या-	18
	10-पृष्ठ संख्या-	31
	11-पृष्ठ संख्या-	230
	12-पृष्ठ संख्या-	9
	13-पृष्ठ संख्या-	12
	14-पृष्ठ संख्या-	216
	15-पृष्ठ संख्या-	115

---- सुन्दरलाल शर्मा

महत्वाकांक्षा की प्रचण्ड आँधी में उड़ने लगते थे।[11] भाव सदैव कोमल होने पर भी कार्य -क्षेत्र करता रहता था।[12] उसका विचार था जिजिविषा दूर है परन्तु मौरोचित मृत्यु अनिवार्य पास है।[13] महीप अपने उद्देश्य के अवाध अनुशीलन का अभिलाषी था।[14] वह अपनी महीयता और महत्वाकांक्षा में दृढ़ रहता था।[15] नायक की जिज्ञिषा छन्दों रूप चतुरार्थ में विलास रचाते थे।[16] स्वराज्य के आदर्श को वे आगे बढ़ाने को तत्पर थे।[17] वे अपने को मात्र सेवक मानते थे[18] तथा भारत की अखण्डता की कामना करते थे।[19] वे भारत की शक्ति का एकीकरण करने के पक्षपाती थे, ताकि भारतीय संस्कृति रक्षा हो सके।[10]

शिवाजीवित्र :- प्रस्तुत उपन्यास में शिवाजी अधिधर्म के निर्माण के लिये कटिबद्ध रहता है।[20] उसका विचार है कि" क्षत्रिय का धर्म तलवार उठाये रखने का है।[11] उसका कथन था कि" अपने शत्रुओं का दमन करना सच्चा उद्देश्य है।[12] शत्रुता अभिलषित था। उसे अपने राजा के चरणों से अपूर्व शक्ति प्राप्त होती थी।[13] शिवाजीवित्र विनय और शील को सुन्दरता आभाभूषण मानते थे।[14] वे मंदिरगमन करते थे। उनका विचार था कि मंदिर पराक्रम भले ही नहीं बढ़ाती है किन्तुव्यक्तियों को मन्त्र या प्रमन्त्र अवश्य कर देती है।[15] वे कर्तव्य-भावना से ओत-प्रोत थे तथा धर्म के प्रति उदार थे। उनका विचार था कि " शक्ति का संयम और कर्तव्य का पालन करो। अपने धर्म को न भूलो।"[16] उन्होंने विश्वविजयप्राप्त कीर्ति ।

नायक की जिज्ञिषा	1- पृष्ठ संख्या- 281	11-पृष्ठ संख्या- 54शिवाजीवित्र
	2- पृष्ठ संख्या- 223	12-पृष्ठ संख्या- 55
	3- पृष्ठ संख्या- 249	13-पृष्ठ संख्या- 67
	4- पृष्ठ संख्या- 55	14-पृष्ठ संख्या- 6
	5- पृष्ठ संख्या- 279	15-पृष्ठ संख्या-395
	6- पृष्ठ संख्या- 12	16-पृष्ठ संख्या-501
	7- पृष्ठ संख्या- 43	
	8- पृष्ठ संख्या- 44	
	9- पृष्ठ संख्या- 271	
	10-पृष्ठ संख्या- 403	

---- वृन्दावनलाल वर्मा

अब क्या हो :- प्रस्तुत उपन्यास में छत्रपति शिवाजी की अहंकार और वाहवाहिता दृष्टव्य न थी । वे अपने राजाज्ञियों कवीन्द्रकलश से कहा करते थे कि मुझे," अन्धदाता मत कहो । अन्न दाता तो भगवान है।:1: शिवाजी ने आठ विवाह मौज विलास के लिये नहीं किये थे बल्कि वे सामन्त,सरदारों की कन्याओं से विवाहकिया था ,जिससे अटूट राजनैतिक सम्बन्ध हो और राष्ट्रसंगठन हो सके ।:2: उनका कथन था कि " अहंकार नष्ट करो, मानव का सबसे बड़ा शत्रु यही है ।:3: वे शिक्षा और संस्कृति के प्रसार को राज्य का सबसे बड़ा कर्तव्य मानते थे ।:4: मृत्यु से पूर्व उन्होंने योगक्रिया अपनायी थी और योगियों जैसा उनका स्वर्गारोहण था ।:5: माता जी,भाऊजी प्रभु , मोरोपन्त पिंगले,और आण्णाजी दत्तो राजनीति और सहयोगकारी व्यक्ति थे ।:6: शम्भू जी एक ऐसा युवक था जो" अपनी कुण्ठित आकांक्षा की पूर्ति करने की राशि में" मदिरा से प्रारम्भ करता था और फिर वेश्याओं के द्वारा अपने मनों को शेष भूख मे का प्रयत्न करता था ।:7: वह अपनी आलोचना नहीं सुन सकता था । उसके अन्दर प्रतिहिंसा की लहरें तत्कालीन राजनीति से प्रेरित हुई थी।:8: वह शौर कामुक था,उसकी कई प्रेयसियाँ थी, उसे नित्य नई युवती की आवश्यकता पड़ती थी ।:9: वह जागीर प्रथा का पोषक था।:10: कविकलश सुरा-सुन्दरी का अभ्यस्त था। शम्भू जी की तरह शौर कामुक था,जिसे मौत के घाट उतार दिया गया था ।:11:

अब क्या हो

-1 पृष्ठ संख्या- 60
-2 पृष्ठ संख्या- 64
-3 पृष्ठ संख्या- 81
-4 पृष्ठ संख्या-101
-5 पृष्ठ संख्या-103
-6 पृष्ठ संख्या-104
-7 पृष्ठ संख्या- 7
-8 पृष्ठ संख्या- 13
-9 पृष्ठ संख्या- 20
-10पृष्ठ संख्या- 91
-11पृष्ठ संख्या-151 ------ सुन्दरलाल शर्मा

/3/

: भाषा :

वर्मा जी के ऐतिहासिक उपन्यासों में बुन्देलखण्डी भाषा के शब्द लोकोक्तियों एवं सूक्तियों का प्रयोग किया गया है, जिनका विवरण प्रस्तुत शीर्षक में दिया जा रहा है ।

: बुन्देलखण्डी भाषा के शब्द :

गढ़ कुण्डार :- प्रस्तुत उपन्यास में बुन्देली भाषा के ऐतिहासिक शब्दों को प्रयुक्त किया गया है :-

" मोरे, :1:, ओं:2:, टोरे:3:, सूंसना:4:, ज्वार:5:, भिन्न-भिन्न:6:, टरना:7:, कोल:8:, भोर:9:, सुन्न-सुन्न:10:, कोदर्व:11:, सुवार:12:, खटका, दिया:14:, चूल:15:, दिठार्थ:16:, सकेलना बिखरना:17:, गढ़ी:18:, बस्ती:19: छार-छार,:20:, दिखना:21:, मनोरना:22:, खटर्थ:23:, पोंछना:24:, नोना:25:, उरिन:26:, भूंड:27:, अगवानाकरव:28:, टोर:29:, सुन्नरर्थ:30:, घोर:31:, रामधुनार्थ:32:, दर्शन:33:, सुंदर:34:, दिखर्थ:35:, सुनीता:36: बिखरा:37:, पोखना:38:, भोर:39:, सूखा:40:, ओला:41:, अनुन्धो:42:, धंसना:43:, काकायू:44:, पोम,:45:, मदिया:46:, सुनार्थ:47:, पाँस:48: गढ़ाना:49:, लपरना:50:, बिटिया:51:, बधोयू:52:, बिराजना:53:, बरसे:54:

गढ़ कुण्डार	1-पृष्ठ संख्या- 17		26-पृष्ठ संख्या- 49
	2-पृष्ठ संख्या- 17	27से	28-पृष्ठ संख्या- 57
	3-पृष्ठ संख्या- 17		29-पृष्ठ संख्या- 62
	4-पृष्ठ संख्या- 17	30से	32-पृष्ठ संख्या- 70
	5-पृष्ठ संख्या- 17	34से	36-पृष्ठ संख्या- 71
	6-पृष्ठ संख्या- 17	37से	40-पृष्ठ संख्या- 72
7 से	11-पृष्ठसंख्या- 17	41से	42-पृष्ठ संख्या- 73
12 से	13-पृष्ठ संख्या-19		43-पृष्ठ संख्या- 78
14 से	15-पृष्ठ संख्या-20		44-पृष्ठ संख्या- 79
	16-पृष्ठ संख्या-26		45-पृष्ठ संख्या- 93
	17-पृष्ठ संख्या-29	46से	48-पृष्ठ संख्या- 93
18 से	20-पृष्ठ संख्या-33	49से	50-पृष्ठ संख्या- 94
	21-पृष्ठ संख्या-40		51-पृष्ठ संख्या- 95
	22-पृष्ठ संख्या-23		52-पृष्ठ संख्या- 98
	23-पृष्ठ संख्या-44		53-पृष्ठ संख्या-101
	24-पृष्ठ संख्या-44		54- पृष्ठसंख्या- 104
	25- पृष्ठ संख्या-49		

मोहा:1:, बेटा-बेटी:2:, भाला:3:, सवाद:4:, दोस:5:, पुराना:6:, टन्टा:7:, सुनी:8:, चिलेया-बन्दोस:9:, भेल:10:, जोधा:11:, बेहाली:12:, बारीक:13:, अकारस:14:, मकरा:15:, चिकुलना:16:, धूम:17:, बाद:18:, चिकारना:19:, अवसर्थ:20:, सुर्ख:21:, बोल-चिरिया:22:, टोटो:23:, चिन्दू:24:, टक्का:25:, खटिया:26:, खलोली:27:, बीहन:28:, डोबर:29:, चिखाना:30:, खाँध:31:, चिहला:32:, सवानी:33:, नाचिला:34:, चिलगास:35:, डाँग:36:, नचिकन:37:, मुख:38:, बनीमान्स:39:, टोरिया:40:, खुरवा:41:, भुन्सरा:42:, गधा:43:, बालागन:44: सवा दस के च दस :45:"

चिराटा की बहिनी :- प्र.सुखसम्भास में बताये गये बुन्देलीभाषा के शब्द निम्नवत् हैं :-

" बाबाजू:46:, दस के दस:47:, बनिया:48:, बोल:49:, गटकना:50:

गद्य खण्डार	1- पृष्ठ संख्या- 104			31- पृष्ठ संख्या- 208	
2 से	3- पृष्ठ संख्या- 104			32- पृष्ठ संख्या- 224	
	4- पृष्ठ संख्या- 105			33- पृष्ठ संख्या- 227	
	5- पृष्ठ संख्या- 116			34- पृष्ठ संख्या- 284	
	6- पृष्ठ संख्या- 117			35- पृष्ठ संख्या- 298	
	7- पृष्ठ संख्या- 118			36- पृष्ठ संख्या- 328	
	8- पृष्ठ संख्या- 137			37- पृष्ठ संख्या- 328	
	9- पृष्ठ संख्या- 134			38- पृष्ठ संख्या- 328	
	10-पृष्ठ संख्या- 137			39- पृष्ठ संख्या- 328	
	11-पृष्ठ संख्या- 138			40- पृष्ठ संख्या- 389	
	12-पृष्ठ संख्या- 138			41- पृष्ठ संख्या- 396	
	13-पृष्ठ संख्या- 139			42- पृष्ठ संख्या- 464	
	14-पृष्ठ संख्या- 140			43- पृष्ठ संख्या- 463	
15 से	16-पृष्ठ संख्या- 140			44- पृष्ठ संख्या- 442	
	17-पृष्ठ संख्या- 144	चिराटा की बहिनी		45- पृष्ठ संख्या- 473	
18 से	18-पृष्ठ संख्या- 144			46- पृष्ठ संख्या- 13	
	20-पृष्ठ संख्या- 191			47- पृष्ठ संख्या- 13	
	21-पृष्ठ संख्या- 147			48- पृष्ठ संख्या- 13	
	22-पृष्ठ संख्या- 191			49- पृष्ठ संख्या- 13	
	23-पृष्ठ संख्या- 161			50- पृष्ठ संख्या- 13	
	24-पृष्ठ संख्या- 163				
	25-पृष्ठ संख्या- 163				
	26-पृष्ठ संख्या- 166				
	27-पृष्ठ संख्या- 180				
	28-पृष्ठ संख्या- 183				
	29-पृष्ठ संख्या- 200				
	30-पृष्ठ संख्या- 203				

---- बुन्दाबनदास वर्मा

सुक्का:1:, बो बल्ला:2:, सुवार:3:, छिछन्ना:4:, बबर-बबर:5:, नाचत 6:, खिलाना:7:, मोरोर्ड:8:, भन्ना:9:, आसमुवाय:10:, कन्नमक :11:, अरकाव:12:, सुटिया:13:, टोरिया:14:,सुनीता:15:, सुमरी:16:,आसना:17:, लोखना:18:, सिन्दूर:19:,सद्दा:20:, कक्कोसू:21:, कन्न:22:, मांग-सूंग:23:, नाचत:24:, बन्दाना:25:, सेत-सेत:26:, आड़े :27:, खिरधा:28:,भरका:29:, कारबाँस:30:, खिरधार्थ:31:, सुटन्ना:32:, दाकसू:33:, बल्ली:34:, टिटकरी:35:, बल्ली:36:, खिरत:37:, कमर :38:, खिकरत:39:, कालिंग-बरी:40:, पेलक पेल:41:, बर्ती:42,:4 मोरव:43:, सटो-सुमरी:44: सुला-बालो:45:, मोड़िया:46:, खिगरत:47:, मोर:48:, मीनत:49:, कबरते:50:,कबाल:51:, खिलोरा:52:, टेकोना:53:, छठोली:54:,सुकनाना+55:

खिराटा की पहिमनी

1- पृष्ठ संख्या- 13
2- पृष्ठ संख्या- 17
3- पृष्ठ संख्या- 17
4- पृष्ठ संख्या- 21
5- पृष्ठ संख्या- 23
6- पृष्ठ संख्या- 27
7- पृष्ठ संख्या- 29
8- पृष्ठ संख्या- 30
9- पृष्ठ संख्या- 38
10-पृष्ठ संख्या- 46
11-पृष्ठ संख्या- 47
12-पृष्ठ संख्या- 59
13-पृष्ठ संख्या-60
14-पृष्ठ संख्या- 60
15- पृ० संख्या- 62
16-पृष्ठ संख्या- 63
17- पृ संख्या- 63
18-पृष्ठ संख्या- 66
19-पृष्ठ संख्या- 70
20-पृष्ठ संख्या- 71
21- पृ० संख्या- 71
22-पृष्ठ संख्या- 74
23-पृष्ठ संख्या- 83
24- पृ० संख्या- 91
25- पृ० संख्या-112
26-पृष्ठ संख्या-112
27-पृष्ठ संख्या-129
28-पृष्ठ संख्या-[illegible]133
29- पृष्ठ संख्या- 139
30- पृष्ठ संख्या- 135
31- पृष्ठ संख्या- 135
32- पृष्ठ संख्या- 136
33- पृष्ठ संख्या- 136
34- पृष्ठ संख्या- 137
35- पृष्ठ संख्या- 137
36- पृष्ठ संख्या- 137
37- पृष्ठ संख्या- 137
38- पृष्ठ संख्या- 137
39- पृष्ठ संख्या- 137
40- पृष्ठ संख्या- 137
41- पृष्ठ संख्या- 137
42- पृष्ठ संख्या- 137
43- पृष्ठ संख्या- 137
44- पृष्ठ संख्या- 147
45- पृष्ठ संख्या- 147
46- पृष्ठ संख्या- 147
47- पृष्ठ संख्या- 152
48- पृष्ठ संख्या- 152
49- पृष्ठ संख्या- 153
50- पृष्ठ संख्या- 153
51- पृष्ठ संख्या- 154
52- पृष्ठ संख्या- 162
53- पृष्ठ संख्या- 272
54- पृष्ठ संख्या- 279
55 पृष्ठ संख्या- 302

--- सुन्दरलाल वर्मा

मुहाविरा :- प्रस्तुत उपन्यास में प्रयुक्त किये गये बुन्देली शब्दों में "सड़का:1:, टोर:2:,भोर:3:, काकाबू :4:, बब्बा:5:, खटिया:6:, खेत:7:, खाटू:8:, मटका:9:, दिखावना:10:, खुटका:11:, बहुरिया:12:, कक्का:13:, मासे:14:, सरकना:15:, मूँदना:16:, भूमिया:17:, भरका:18:,ढेला:19:, दिखना:20:, हेराव:21:, काँसा:22:, अटाला:23:, तिलमिली:24:, औसान :25:, :26: झौरी-भौरी,सुहारना: 27:, दिखावार:28:, सदा धूप- खुटके:29:" उल्लेखनीय है।

कथनार :- प्रस्तुत उपन्यास में अनेक बुन्देली भाषा के शब्दों का उल्लेख मिलता है यथा :-

" मुँहबाबू:30:, मलबना:31:, तिसोला:32:, सुनीता:33:, सूवर,34:, उपका:35:, टोरिया:36:, भरका:37:, सुनार्थ:38:, गठरिया:39:,दिखरा :40:, खुरमा- खुटखुटा:41:, औसना:42:,मसहरी:43:, अटरिया:44:, बहुरिया:45:, सकर:46:, उकम:47:, मासोन:48:, उलेरी की:49:,औसना:50:

मुहाविरा	1- पृष्ठ संख्या- 1			26-पृष्ठ संख्या- 50
	2- पृष्ठ संख्या- 1			27-पृष्ठ संख्या- 61
	3- पृष्ठ संख्या- 1			28-पृष्ठ संख्या- 72
	4- पृष्ठ संख्या- 1			29-पृष्ठ संख्या- 91
	5- पृष्ठ संख्या- 6		कथनार	30-पृष्ठ संख्या- 1
	6- पृष्ठ संख्या- 7			31-पृष्ठ संख्या- 6
	7- पृष्ठ संख्या- 8			32-पृष्ठ संख्या- 7
	8- पृष्ठ संख्या- 8			33-पृष्ठ संख्या- 7
	9-पृष्ठ संख्या- 9			34-पृष्ठ संख्या- 7
	10-पृष्ठ संख्या- 11			35-पृष्ठ संख्या- 7
	11-पृष्ठ संख्या- 13			36-पृष्ठ संख्या- 7
	12-पृष्ठ संख्या- 15			37-पृष्ठ संख्या- 7
	13-पृष्ठ संख्या- 17			38-पृष्ठ संख्या- 10
	14-पृष्ठ संख्या- 20			39-पृष्ठ संख्या- 10
	15-पृष्ठ संख्या- 25			40-पृष्ठ संख्या- 12
	16-पृष्ठ संख्या- 35			41-पृष्ठ संख्या- 12
	17-पृष्ठ संख्या- 28			42-पृष्ठ संख्या- 15
	18-पृष्ठ संख्या- 28			43-पृष्ठ संख्या- 18
	19-पृष्ठ संख्या- 28			44-पृष्ठ संख्या- 18
	20-पृष्ठ संख्या- 30			45-पृष्ठ संख्या- 20
	21-पृष्ठ संख्या- 32			46-पृष्ठ संख्या- 28
	22-पृष्ठ संख्या- 26			47-पृष्ठ संख्या- 36
	23-पृष्ठ संख्या- 27			48-पृष्ठ संख्या- 37
	24-पृष्ठ संख्या- 37			49-पृष्ठ संख्या- 38
	25-पृष्ठ संख्या- 41			50-पृष्ठ संख्या- 38

---- वृन्दावनलाल वर्मा

[illegible]:1:, [illegible]:2:, [illegible]:3:, [illegible]:4:, [illegible]:5:, [illegible]:6:, [illegible]:7:, [illegible]:8:, [illegible]:9:, [illegible]:10:, [illegible]:11:, [illegible]:12:, [illegible]:13:, [illegible]:14:, [illegible]:15:, [illegible]:16:, [illegible]:17:, [illegible]:18:, [illegible]:19:, [illegible]:20:, [illegible]:21:, [illegible]:22:, [illegible]:23:, [illegible]:24:: [illegible]:25:, [illegible]:26:, [illegible]:27:, [illegible]:28:, [illegible]:29:, [illegible]:30:, [illegible]:31:, [illegible]:32:, [illegible]:33:, [illegible]:34:, [illegible]:35:, [illegible]:36:, [illegible]:37:, [illegible]:38:, [illegible]:39:, [illegible]:40: [illegible] [illegible] :41:"

झाँसी की रानी का मीमांसा :- प्रस्तुत उपन्यास में समालोचित किये गये बुन्देली भाषा के शब्द निम्नवत् हैं :-

" लोहू:42:, भम्मू:43:, औसान:44:, [illegible]:45:, [illegible]:46:, [illegible]:47:, [illegible]:48:, [illegible]:49:, [illegible]:50:, [illegible]:51:

अनुक्रम	1- पृष्ठ संख्या- 38		27- पृष्ठ संख्या- 210
	2- पृष्ठ संख्या- 39		28-पृष्ठ संख्या- 226
	3- पृष्ठ संख्या-40		29- पृष्ठ संख्या- 238
	4- पृष्ठ संख्या- 43		30- पृष्ठ संख्या- 238
	5- पृष्ठ संख्या- 45		31- पृष्ठ संख्या- 238
	6- पृष्ठ संख्या- 45		32- पृष्ठ संख्या- 239
	7- पृष्ठ संख्या- 48		33- पृष्ठ संख्या- 243
	8- पृष्ठ संख्या- 48		34- पृष्ठ संख्या- 264
	9- पृष्ठ संख्या- 48		35- पृष्ठ संख्या- 264
	10-पृष्ठ संख्या- 51		36- पृष्ठ संख्या- 267
	11-पृष्ठ संख्या- 52		37- पृष्ठ संख्या- 297
	12-पृष्ठ संख्या- 53		38- पृष्ठ संख्या- 298
	13-पृष्ठ संख्या- 53		39- पृष्ठ संख्या- 311
	14-पृष्ठ संख्या- 55		40- पृष्ठ संख्या- 318
	15-पृष्ठ संख्या- 56		41- पृष्ठ संख्या- 341
	16-पृष्ठ संख्या- 60	झाँसी की	42- पृष्ठ संख्या- 16
	17-पृष्ठ संख्या- 64	रानी	43- पृष्ठ संख्या- 6
	18-पृष्ठ संख्या- 70	का मीमांसा	44- पृष्ठ संख्या- 5
	19-पृष्ठ संख्या- 77		45- पृष्ठ संख्या- 18
	20-पृष्ठ संख्या- 87		46- पृष्ठ संख्या- 20
	21-पृष्ठ संख्या- 88		47- पृष्ठ संख्या- 22
	22-पृष्ठ संख्या- 88		48- पृष्ठ संख्या- 22
	23-पृष्ठ संख्या-130		49- पृष्ठ संख्या- 29
	24-पृष्ठ संख्या-165		50- पृष्ठ संख्या- 32
	25-पृष्ठ संख्या-179		51- पृष्ठ संख्या- 33
	26-पृष्ठ संख्या-202		

---- वृन्दावनलाल वर्मा

सेवनार:1:, सुनीता:2:, छटका:3:, अरुणा:4:, मूंदना:5:, रोरा:6:, उबुलिया:7:, पोखरा:8:, उल्हा:9:, टोरिया:10:, डाली:11:, बोहुत-बीती:12:; अरुना:13:, मुनव्या:14:, मोय:15/1:, मोरे:16:, दुरिया:17:, चढ़िया:18:, रहिरा:19:, दूरनवाली:20:, दूरी:21:, अरहट्टा:22:, छुटका:23:, बौरा:24:, घाट:25:, सिहयार्क 26:, गायत्री:27:, दुखमे:28:, बती:29:, गगन:30:, पोंधाना:31:, ओस:32:, अवला:33, सेंधरी:34:, कुमा:35:, सिखा:36:, चीन्हना:37:, मुन्ना:38:, आशा:39:, धाती:40:; जीजो:41:, सिखरा:42:, उड़ो:43:, परनाम:44:, सुरसिया :45:, नदिया:46:, मतार्द:47:, अलाहा:48:, धनिया:49:, चतुरिया:50:, लेना:51:, चाउल:52:, चान्दार:53:, दूंना:54:, कुमनाना:55:, उठता:56:, खिरोरी:57:, मूंड:58:, पेड़ा:59:, घरे की घरे:60:,

---

डाली की रानी
म.नीयार्द

1- पृष्ठ संख्या- 42
2- पृष्ठ संख्या- 42
3- पृष्ठ संख्या- 51
4- पृष्ठ संख्या- 52
5- पृष्ठ संख्या- 52
6- पृष्ठ संख्या- 55
7- पृष्ठ संख्या- 57
8- पृष्ठ संख्या- 61
9- पृष्ठ संख्या- 77
10-पृष्ठ संख्या- 80
11-पृष्ठ संख्या- 95
12-पृष्ठ संख्या- 95
13-पृष्ठ संख्या- 95
14-पृष्ठ संख्या- 97
15- पृ० संख्या- 99
16-पृष्ठ संख्या- 99
17-पृष्ठ संख्या- 99
18-पृष्ठ संख्या- 99
19-पृष्ठ संख्या- 99
20-पृष्ठ संख्या-100
21-पृष्ठ संख्या-100
22-पृष्ठ संख्या-101
23-पृष्ठ संख्या-104
24-पृष्ठ संख्या-141
25-पृष्ठ संख्या-149
26-पृष्ठ संख्या-149
27-पृष्ठ संख्या-149
28-पृष्ठ संख्या-149
29-पृष्ठ संख्या-149
30-पृष्ठ संख्या-149
31- पृष्ठसंख्या- 149
32- पृष्ठ संख्या-149
33- पृष्ठ संख्या-150
34- पृष्ठ संख्या-150
35- पृष्ठ संख्या-150
36- पृष्ठ संख्या-150
37- पृष्ठ संख्या-150
38- पृष्ठ संख्या-152
39- पृष्ठ संख्या-150
40- पृष्ठ संख्या-150
41-पृपृष्ठ संख्या-151
42- पृष्ठ संख्या-151
43- पृष्ठ संख्या-151
44- पृष्ठ संख्या-151
45- पृष्ठ संख्या-151
46- पृष्ठ संख्या-151
47- पृष्ठ संख्या-151
48- पृष्ठ संख्या-151
49- पृष्ठ संख्या-152
50- पृष्ठ संख्या-152
51- पृष्ठ संख्या-152
52- पृष्ठ संख्या-152
53- पृष्ठ संख्या-152
54- पृष्ठ संख्या-152
55- पृष्ठ संख्या-152
56- पृष्ठ संख्या-153
57- पृष्ठ संख्या-171
588- पृष्ठ संख्या-264
59- पृष्ठ संख्या-278
60- पृष्ठ संख्या-264

कृष्णलाल वर्मा 8—

अक्षधारी:1:, चिन्तधारी:2:, ठेवा:3:, ठोर :4:, बाँसे:5:, चूरक:6:, बरमेसरी:7:, मोराम:8:, धूला:9:, उबका:10:, तथा चिंचूरना:11:

मृगनयनी :- प्रस्तुत उपन्यास में बुन्देली भाषा का विशद शब्द समूह प्रयोग किया गया है :-

टटिया:12:, मटकिया:13:, ठिठौना :14:, छकना:15:, ठठौली:16: चिमटना:17:, भौंरी:18:, छका:19:, चून:20:, आँसे:21:, भचूटा:22:, आजरा:23:, चिचुका:24:,भदूना:25:, मोछमा:26:, चिनर-चिनर:27:, भोगमान:28:, रार:29:, लतुरी:30:, टोरिया:31:, मूरख:32:, मनदबार्ध :33:, भाँय-भाँय:34:, छमालिन:35:, मेल-मेल:36:, छन्दारी:37:, ठठौली:38:, चूहेरू:39:, मचाटा:40:, चिलकना:41:, चूनी:42:, मीकेना:43:, छवार:44:, अक्षम:45:, भचूआ :46:, चूरा:47:, बाच-बाच:48:, छट्ठी,49:, ऊपासू:50:, छकाम:51:, मलेलना:52:, चुरचिनी:53:, आड़ी-ओटे:54:,

---

आँखी की रानी	1- पृष्ठ संख्या- 279	28- पृष्ठ संख्या- 28
रूपमीआर्ध	2- पृष्ठ संख्या- 289	29- पृष्ठ संख्या- 28
	3- पृष्ठ संख्या- 300	30-पृष्ठ संख्या- 32
	4- पृष्ठ संख्या- 329	31-पृष्ठ संख्या- 33
	5- पृष्ठ संख्या- 330	32- पृष्ठ संख्या- 81
	6- पृष्ठ संख्या- 348	33- पृष्ठ संख्या- 55
	7- पृष्ठ संख्या- 348	34- पृष्ठ संख्या- 58
	8- पृष्ठ संख्या- 396	35- पृष्ठ संख्या- 62
	9- पृष्ठ संख्या- 406	36- पृष्ठ संख्या-109
	10-पृष्ठ संख्या- 421	37- पृष्ठ संख्या-105
	11-पृष्ठ संख्या- 491	38- पृष्ठ संख्या- 77
मृगनयनी	12-पृष्ठ संख्या- 4	39- पृष्ठ संख्या- 59
	13-पृष्ठ संख्या- 4	40- पृष्ठ संख्या- 72
	14-पृष्ठ संख्या- 5	41- पृष्ठ संख्या- 82
	15-पृष्ठ संख्या- 6	42- पृष्ठ संख्या- 86
	16-पृष्ठ संख्या- 7	43- पृष्ठ संख्या- 93
	17-पृष्ठ संख्या- 7	44- पृष्ठ संख्या-114
	18-पृष्ठ संख्या- 7	45- पृष्ठ संख्या-127
	19-पृष्ठ संख्या- 7	46- पृष्ठ संख्या-131
	20-पृष्ठ संख्या- 8	47- पृष्ठ संख्या-141
	21-पृष्ठसंख्या- 12	48- पृष्ठ संख्या-143
	22-पृष्ठ संख्या- 13	49- पृष्ठ संख्या-143
	23-पृष्ठ संख्या- 14	50- पृष्ठ संख्या-149
	24-पृष्ठ संख्या- 17	51- पृष्ठ संख्या-158
	25-पृष्ठ संख्या- 20	52- पृष्ठ संख्या-161
	26-पृष्ठ संख्या- 26	53- पृष्ठ संख्या-163
	27-पृष्ठ संख्या- 27	54- पृष्ठ संख्या-176

---- वृन्दावनलाल वर्मा

रमतुला:1:, छिमा:2:, छा:3:, छमेला:4:, छला:5:, छिमा:6:, छाना:7:, छन्टा:8:, भेछ:9:, छिटमे :10:, मोछारी:11:, छोंसे:12:, छोंसे:13:, छमे:14:, सिमछिया:15:, मिछछाना:16:, छरी:17:, छी:18:, छिरछिराना:19:, छुनार्थ:20:, छिरधा:21:, छपाछ:22:, छछरी:23:, भेछ:24:, छिछुल्ना:25:, छुंछाछछछ,छुछान:26:, छेगरछी:27:, छछर:28:, टस मेमछ :29:, छछा रोरा :30: "

छूटे कोटि :- प्रस्तुत उपन्यास में प्रयोग में लाये छत्तीसगढ़ी भाषा के शब्द निम्नवत् हैं:-

छछारा:31:, छूँमा:32:, छुछाड़ी:33:, भेछ:34:, ज्यारी:35:, सिछ-स्योछार:36:, छिरोरी:37:, करछ:38:, छिरधा:39:, छोर:40:, करमेछे:41:, छिछमाना:42:, छन्ना मेछिम:43:, पे छुन्न:44:, छाछ-छुन्न:45:, छर्छाना:46:, मछेंमा:47:, छछोरी:48:, छिछर-छिछर:49:, छरम:50:,

---

मुखपृष्ठ	1- पृष्ठ संख्या- 176			26- पृष्ठ संख्या- 348	
	2- पृष्ठ संख्या- 176			27- पृष्ठ संख्या- 371	
	3- पृष्ठ संख्या- 179			28- पृष्ठ संख्या- 425	
	4- पृष्ठ संख्या- 189			29- पृष्ठ संख्या- 435	
	5- पृष्ठ संख्या- 190			30- पृष्ठ संख्या- 443	
	6- पृष्ठ संख्या- 194		छूटे कोटि	31- पृष्ठ संख्या- 2	
	7- पृष्ठ संख्या- 207			32- पृष्ठ संख्या- 2	
	8- पृष्ठ संख्या- 212			33- पृष्ठ संख्या- 4	
	9- पृष्ठ संख्या- 218			34- पृष्ठ संख्या- 7	
	10-पृष्ठ संख्या- 233			35- पृष्ठ संख्या- 8	
	11-पृष्ठ संख्या- 239			36- पृष्ठ संख्या- 12	
	12-पृष्ठ संख्या- 241			37- पृष्ठ संख्या- 15	
	13-पृष्ठ संख्या- 241			38- पृष्ठ संख्या- 17	
	14-पृष्ठ संख्या- 250			39- पृष्ठ संख्या- 17	
	15-पृष्ठ संख्या- 253			40- पृष्ठ संख्या- 19	
	16-पृष्ठ संख्या- 253			41- पृष्ठ संख्या- 20	
	17-पृष्ठ संख्या- 264			42- पृष्ठ संख्या- 38	
	18-पृष्ठ संख्या- 269			43- पृष्ठ संख्या- 39	
	19-पृष्ठ संख्या- 277			44- पृष्ठ संख्या- 39	
	20-पृष्ठ संख्या- 279			45- पृष्ठ संख्या- 73	
	21-पृष्ठ संख्या- 292			46- पृष्ठ संख्या- 76	
	22-पृष्ठ संख्या- 296			47- पृष्ठ संख्या- 77	
	23-पृष्ठ संख्या- 343			48- पृष्ठ संख्या- 79	
	24-पृष्ठ संख्या- 344			49- पृष्ठ संख्या- पृष्ठ 92	
	25-पृष्ठ संख्या- 364			50- पृष्ठ संख्या- 95	

------ पुन्नालाल शर्मा

राद:1:, सुधर:2:, चिरव:3:, चिलारना:4:, उबर:5:, ज्यासू:6:, औलाम:7:, अरीचा: 8:, चिटिया: 9:, चिमार्ध :10:, टीकाटीक:11:, नेहुरना:12:, सेल-मेल:13:, मुटल्ला:14:, पालाकनी:15:, सही अराकोरी:16:"

महारानी दुर्गावती :- प्रस्तुत उपन्यास में प्रयोग्य गये बुन्देली भाषा के शब्दों का समूह निम्नवत है :-

" भोर:17:, चुकड़:18:, सोरना:19:, छूंता:20:, छिछिया:21:, चिमार्ध:22:, मुलेमुया:23:, अनुंदी:24:, चिरवया:25:, चिरकना:26:, मूंदना:27:, उकास:28:, सगाती:29:, आंसरे:30:, कटोटा:31:, मुनीला:32:, छूंना:33:, अन्ना:34:, छनव:35:, अटाना:36:, औभना:37:, औंसे:38:, उबरा:39:, चिराजना:40:, पाल:41:, चुम्ब:42:, चूना:43:, छूंट:44:, अनी:45:, औंस:46:, औंसन:47:, मधुर:48:, निखोरा:49:, उबटा:50:,

---

टूटे फाटे

1- पृष्ठ संख्या- 117
2- पृष्ठसंख्या- 119
3- पृष्ठ संख्या- 133
4- पृष्ठ संख्या- 156
5- पृष्ठ संख्या- 162
6- पृष्ठ संख्या- 162
7- पृष्ठ संख्या- 173
8- पृष्ठ संख्या- 214
9- पृष्ठ संख्या- 217
10-पृष्ठ संख्या- 247
11-पृष्ठ संख्या- 268
12-पृष्ठ संख्या- 302
13-पृष्ठ संख्या- 309
14-पृष्ठ संख्या- 229
15-पृष्ठ संख्या- 349
16-पृष्ठ संख्या- 337

महारानी दुर्गावती

17-पृष्ठ संख्या- 2
18-पृष्ठ संख्या- 3
19-पृष्ठ संख्या- 3
20-पृष्ठ संख्या- 3
21-पृष्ठ संख्या- 13
22-पृष्ठ संख्या- 6
23-पृष्ठ संख्या- 15
24-पृष्ठ संख्या- 19
25- पृष्ठसंख्या- 20
26-पृष्ठ संख्या- 20
27- पृष्ठ संख्या- 22
28- पृष्ठ संख्या- 22
29- पृष्ठ संख्या- 38
30- पृष्ठ संख्या- 54
31-पृष्ठ संख्या- 56
32- पृष्ठ संख्या- 65
33- पृष्ठ संख्या- 67
34- पृष्ठ संख्या- 65
35- पृष्ठ संख्या- 67
36- पृष्ठ संख्या- 67
37- पृष्ठ संख्या- 73
38- पृष्ठ संख्या- 79
39- पृष्ठ संख्या- 80
40- पृष्ठ संख्या- 85
41- पृष्ठ संख्या- 87
42- पृष्ठ संख्या- 91
43- पृष्ठ संख्या- 91
44- पृष्ठ संख्या-94
45- पृष्ठ संख्या- 99
46- पृष्ठ संख्या-102
47- पृष्ठ संख्या-112
48- पृष्ठ संख्या-124
49- पृष्ठ संख्या-128
50- पृष्ठ संख्या-149

---- वृन्दावनलाल वर्मा

माचका:1:, बेला:2:, बेल:3:, बोलना:4:, बरोबा:5:, बिरोरी:6:, बिन्नियाँ:7:, बुरिया:8:, बरम-बुन्ना:9:, बसाँखिया:10:"बनेलानीयाँ ।

भुवन विक्रम :- प्रस्तुत उपन्यास में जिन बुन्देली भाषा के शब्दों का प्रयोग किया गया है, वे निम्नवत् हैं:-

उमगना:11:, बुड़िया:12:, बकरा:13:, मुआ:14:, बुलावना:15:, अखेटा:16:, बखियाना:17:, बुड़िया:18:, दिन:19:, ब्यारि:20:, आवना:21:, बिबुकना:22:, बेल:23:, बलाइर:24:, बेंहुआ:25:, भसुआ :26:, उसक:27:, भौंधरी:28:, भौंगराम:29:, रोरा:30:, उल्टा:31:, टठरी:32:, पटना:33:, बिनर-बिनर:34:, बिरानियाना:35:, तिलमिली::36:, रोरी:37:, पुरी:38:, छाँवना:39:, छप्पा:40:, छीमना:41:, बेल-बेल:42:, मुरी:43:, छप्पाना:44:, पकना:45:, छीनि:46:, बिचना:47:, खुरखुरी:48:,बेखारे :49:, छपका:50:, बिलाना:51: तथा निबकियाँ :52: "

महारानी दुर्गावती	1-पृष्ठसंख्या- 169	27-पृष्ठ संख्या- 50
	2-पृष्ठसंख्या- 178	28-पृष्ठ संख्या- 50
	3-पृष्ठसंख्या- 197	29-पृष्ठ संख्या- 50
	4-पृष्ठसंख्या- 227	30-पृष्ठ संख्या- 53
	5-पृष्ठसंख्या- 229	31-पृष्ठ संख्या- 57
	6-पृष्ठ संख्या-227	32-पृष्ठ संख्या- 63
	7-पृष्ठ संख्या-228	33- पृ ष्ठ संख्या- 67
	8-पृष्ठसंख्या- 244	34-पृष्ठ संख्या- 72
	9-पृष्ठसंख्या- 278	35-पृष्ठ संख्या- 79
	10-पृष्ठसंख्या-334	36-पृष्ठ संख्या- 79
भुवन विक्रम	11-पृष्ठसंख्या- 1	37- पृष्ठ संख्या- 85
	12-पृष्ठ संख्या- 1	38-पृष्ठ संख्या- 93
	13-पृष्ठ संख्या- 1	39पृष्ठ संख्या-114
	14-पृष्ठ संख्या- 1	40-पृष्ठ संख्या-117
	15-पृष्ठ संख्या- 6	41-पृष्ठ संख्या-117
	16-पृष्ठ संख्या- 6	42-पृ ष्ठ संख्या-117
	17-पृष्ठ संख्या- 14	43-पृष्ठ संख्या-189
	18-पृष्ठ संख्या- 14	44पृष्ठ संख्या-208
	19पृष्ठ संख्या- 15	45-पृष्ठ संख्या-223
	20-पृष्ठ संख्या- 15	46-पृ ष्ठ संख्या-223
	21-पृष्ठ संख्या- 15	47-पृष्ठ संख्या-223
	22-पृष्ठ संख्या- 21	48-पृष्ठ संख्या-233
	23-पृष्ठ संख्या- 27	49-पृष्ठ संख्या-249
	24-पृष्ठ संख्या-28	50-पृष्ठ संख्या-249
	25-पृष्ठ संख्या- 34	51-पृष्ठ संख्या-[illegible] 266
	26-पृष्ठ संख्या- 34	52-पृष्ठ संख्या-[illegible] 291

---- वृन्दावनलाल वर्मा

रामसू की रानी :- प्रस्तुत उपन्यास में प्रयुक्त बुन्देलीभाषा के शब्दों में जिझौसना:1:, अरीजा:2:, टिकस:3:, अवसर:4:, उकसाना:5:, आधार:6:, दुरदार:7:, दिन:8:, भोर:9:, देस-देस:10:, उंडिन:11: तथा सूंघना:12: उल्लेखनीय हैं ।"

लोसी आग :- प्रस्तुत उपन्यास में अनेक बुन्देली भाषा के शब्द प्रयुक्त किये गये हैं, जिनमें आखर :13:, मसोसना:14:, बखियाना:15:, सुख:16:, छल:17:, दुन्ध:18:, अन्न:19:, मायका:20:, जिन्ना:21:, मोहरा:22: खड़-खड़:23:, लपोटना:24:, बुकोला:25:, जिरजिराना:26:, मुरिया:27:, रोरा:28:, काटिया:29:, अन:30:, अमुंदी:31:, टन्दा:32:, छीना-झपटी:33:, टपरा:34:, लाखसोरू:35:, छोर:36:, चोखे:37:, तथा मलहरी:38: उल्लेखनीय है ।

माधव की सिन्धिया:- प्रस्तुत उपन्यास में बुन्देलीभाषा के आंचलिक शब्दों का प्रयोग किया गया है :-

"टटके:39:, मेहनत :40:, भरका:41:, छतोली:42:, कविताखला:43:

रामसू की रानी	1- पृष्ठ संख्या- 2		23- पृष्ठ संख्या- 45
	2- पृष्ठ संख्या-11		24-पृष्ठ संख्या- 49
	3- पृष्ठ संख्या-13		25- पृष्ठ संख्या- 53
	4- पृष्ठ संख्या- 4		26-पृष्ठ संख्या- 53
	5- पृष्ठ संख्या- 20		27-पृष्ठ संख्या- 53
	6- पृष्ठ संख्या- 57		28- पृष्ठ संख्या- 54
	7- पृष्ठ संख्या- 37		29- पृष्ठ संख्या- 69
	8- पृष्ठ संख्या- 40		30- पृष्ठ संख्या- 78
	9- पृष्ठ संख्या- 48		31- पृष्ठ संख्या- 83
	00-पृष्ठ संख्या- 61		32- पृष्ठ संख्या-100
	11-पृष्ठ संख्या- 98		33-पृष्ठ संख्या-101
	12-पृष्ठ संख्या- 98		34- पृष्ठ संख्या-114
लोसी आग	13-पृष्ठ संख्या- 1		35-पृष्ठ संख्या-114
	14-पृष्ठ संख्या- 2		36- पृष्ठ संख्या-118
	15-पृष्ठ संख्या- 6		37- पृष्ठ संख्या-127
	16-पृष्ठ संख्या- 14		38- पृष्ठ संख्या-133
	17-पृष्ठ संख्या- 21	माधव की	39- पृष्ठ संख्या-139
	18-पृष्ठ संख्या- 23	सिन्धिया	40- पृष्ठ संख्या- 68
	19-पृष्ठ संख्या- 31		41-पृष्ठ संख्या-128
	20-पृष्ठ संख्या- 35		42- पृष्ठ संख्या- 223
	21-पृष्ठ संख्या- 38		43- पृष्ठ संख्या- 31
	22-पृष्ठ संख्या- 41		

------ वृन्दावनलाल वर्मा

सिंदरिया:1:, सिंधुरना:2:, सेंधा:3:, मुंडाला:4:, घुरघुराना:5:, डांग:6:,डोर:7:, गुंबना:8:, खुटा:9:, सिमसिलाना:10:, सेंध:11:, सीम:12:, टटोलना:13:, कुआ:14:, टोरिया:15:, सेंध :16:, "

अभिव्याजार्थ :- प्रस्तुत उपन्यास में प्रयोग में बुन्देली भाषा के शब्दों में-

सेल:17:, खिलाना:18:, सरकना:19:, डोका:20:, चकला:21:, खिराकना:22:, सिंधुरन:23:, उमगना:24:, ज्यादी:25:, भरका:26:, गुरिया:27:, डंगरिया:28:, कुलीला:29:, सनोना:30:, टोटा:31:, मनोती:32:, चौखे:33:, लकरोड़े:34:, तथा ठठोली :35:,प्रमुख हैं ।

क्रम क्या है :- प्रस्तुत उपन्यास अपूर्व आकर्षित ऐतिहासिक उपन्यास है, जिसमें प्रयुक्त बुन्देली भाषा के शब्दों में - रीसीलसब; बाँधी:36:,खिसट:37:, बाँका:38:, दुन:39:, खुसकुन:40:, सिंधुरना:41:, ठठरी:42:, औंसुरी:43: घुरघोरी:44:, और का-का खिसती,लगाव:45:, सेंधा:46:,घुसल:47:, हैं ।

गाडरवारी सिन्धिया	1- पृष्ठ संख्या- 147		25- पृष्ठ संख्या- 23	
	2- पृष्ठ संख्या- 385		26- पृष्ठ संख्या- 29	
	3- पृष्ठ संख्या- 304		27- पृष्ठ संख्या- 33	
	4- पृष्ठ संख्या- 244		28- पृष्ठ संख्या- 39	
	5- पृष्ठ संख्या- 188		29- पृष्ठ संख्या- 42	
	6- पृष्ठ संख्या- 80		30- पृष्ठ संख्या- 48	
	7- पृष्ठ संख्या- 133		31- पृष्ठ संख्या- 56	
	8- पृष्ठ संख्या- 248		32- पृष्ठ संख्या- 73	
	9- पृष्ठ संख्या-324		33- पृष्ठ संख्या-122	
	10-पृष्ठ संख्या- 302		34- पृष्ठ संख्या-122	
	11-पृष्ठ संख्या- 23		35- पृष्ठ संख्या-166	
	12-पृष्ठसंख्या- 327	अभिव्याजार्थ	36- पृष्ठ संख्या- 4	
	13-पृष्ठ संख्या- 405	हैं	37- पृष्ठ संख्या- 4	
	14- पृष्ठ संख्या-320		38- पृष्ठ संख्या- 6	
	15- पृष्ठ संख्या- 35		39- पृष्ठ संख्या- 7	
	16- पृष्ठ संख्या-448		40- पृष्ठ संख्या- 13	
अभिव्याजार्थ	17- पृष्ठ संख्या- 2		41- पृष्ठ संख्या- 16	
	18- पृष्ठ संख्या- 2		42- पृष्ठ संख्या- 18	
	19- पृष्ठ संख्या- 3		43- पृष्ठ संख्या- 22	
	20- पृष्ठ संख्या- 3		44- पृष्ठसंख्या-	
	21- पृष्ठ संख्या- 11		45- पृष्ठ संख्या-147	
	22-पृष्ठ संख्या- 12		46- पृष्ठ संख्या- 1	
	23- पृष्ठ संख्या- 18		47- पृष्ठ संख्या- 44	
	24- पृष्ठसंख्या- 18			

---- कुन्दनलाल वर्मा

कीचड़ और कमल :- प्रस्तुत उपन्यास में बुन्देली भाषा के शब्द निम्नवत प्रयुक्त हुये हैं :-

कालिख:1:, करम:2:, भोर:3:, बिसुरना:4:, कचोटे:5:, अहाना:6:, रोरी:7:, आसू:8:, बाँह:9:, रार:10:, आजरा:11:, बकना:12:, महोलना:13:, सुटम्मू:14:, पेटा:15:, भौंसिखिया:16:, पेलकूदट:17:, सीन:18:, खटिया:19:, पैंड़े :20:, चिराखना:21:, नखिनी:22:, पियाखाली:23:, उखड़ा:24:, अर्थ:25:, ओड़े-ओटे:26:, गठरियाँ:27:, सुल्लियाँ:28:, जीजा:29:, बाल:30:, बरोटे:31:, निखाना:32:, पेटा:33:, सुराख:34:, अधून:35:, धरम:36:, पोसना:37:, बाबू:38:, उधार:39:, बरकाव:40:, रिश्ता:41:, परवाना:42:, तथा खिसना:43:।"

कीचड़ और कमल
1- पृष्ठ संख्या- 2
2- पृष्ठ संख्या- 3
3- पृष्ठ संख्या- 6
4- पृष्ठ संख्या- 7
5- पृष्ठ संख्या-17
6- पृष्ठ संख्या-17
7- पृष्ठ संख्या-19
8- पृष्ठ संख्या-23
9- पृष्ठ संख्या-28
10-पृष्ठ संख्या-33
11-पृष्ठ संख्या-44
12-पृष्ठ संख्या-39
13-पृष्ठ संख्या-48
14-पृष्ठ संख्या-59
15-पृष्ठ संख्या-59
16-पृष्ठ संख्या-66
17-पृष्ठ संख्या-68
18-पृष्ठ संख्या-68
19-पृष्ठ संख्या-84
20-पृष्ठ संख्या-87
21-पृष्ठ संख्या-46
22-पृष्ठ संख्या-89
23- पृष्ठसंख्या- 91
24- पृष्ठ संख्या-97
25- पृष्ठसंख्या- 98
26- पृष्ठ संख्या-102
27- पृष्ठ संख्या-106
28- पृष्ठ संख्या-114
29- पृष्ठ संख्या-126
30-पृष्ठ संख्या-130
31- पृष्ठ संख्या-133
32- पृष्ठ संख्या-133
33- पृष्ठ संख्या-137
34- पृष्ठ संख्या-162
35- पृष्ठसंख्या- 167
36- पृष्ठ संख्या-174
37- पृष्ठ संख्या-176
38- पृष्ठ संख्या-176
39- पृष्ठ संख्या-177
40- पृष्ठ संख्या-184
41- पृष्ठ संख्या-233
42- पृष्ठ संख्या-249
43- पृष्ठ संख्या- 11

—— घनश्यामदास वर्मा

देशज की मुस्कान :- प्रस्तुत उपन्यास में प्रयुक्त बुन्देली भाषा के शब्द निम्नवत् हैं :-

चिरमार्ई:1:, मवया:2:, मडुआ :3:, ओरा:4:, डोर:5:, खड़ाक-खड़ाक:6:, अंधेर:7:, टटिया:8:, खटिया:9:, चिराजना:10:, फलौंगार:11:, गुरिया:12:, भोर:13:, बीजना:14:, रोर:15:, कुनीला:16:, ज्यादू:17:, [illegible]-[illegible]:18:, सीरा:19:, अंधोरना:20:, चिमुरना:21:, कलकोंचू:22:, चिटिया:23:, [illegible], मुन्न:24:, भम्भाना:25:, टपरा:26:, बर्धमारा:27:, दसारा:28:, रिन:29:, फलती:30:, आंखना:31:, मेना:32:, सखियाय:33:, छौना:34:, पुरखा:35:, चितकना:36:, दाह:37:, तथा बीजना:38: "

देशज की मुस्कान

1- पृष्ठ संख्या- 1
2- पृष्ठ संख्या- 5
3- पृष्ठ संख्या- 5
4- पृष्ठ संख्या- 5
5- पृष्ठ संख्या- 5
6- पृष्ठ संख्या- 5
7- पृष्ठ संख्या- 5
8- पृष्ठ संख्या- 7
9- पृष्ठ संख्या-10
10-पृष्ठ संख्या-11
11-पृष्ठ संख्या-13
12-पृष्ठ संख्या-13
14-पृष्ठ संख्या-16
15-पृष्ठ संख्या-16
16-पृष्ठ संख्या-24
17-पृष्ठ संख्या-28
18-पृष्ठ संख्या-28
19-पृष्ठ संख्या-28
20-पृष्ठ संख्या-30
21-पृष्ठ संख्या-31
22-पृष्ठ संख्या-38
23-पृष्ठ संख्या-44
24-पृष्ठ संख्या- 55
25-पृष्ठ संख्या-56
26- पृष्ठ संख्या- 59
27- पृष्ठ संख्या- 59
28- पृष्ठ संख्या- 63
29- पृष्ठ संख्या- 63
30- पृष्ठ संख्या- 66
31- पृष्ठ संख्या- 67
32- पृष्ठ संख्या-200
33- पृष्ठ संख्या- 70
34- पृष्ठ संख्या- 74
35- पृष्ठ संख्या-100
36- पृष्ठ संख्या-100
37- पृष्ठ संख्या-121
38- पृष्ठ संख्या- 126

--- सुन्दरलाल शर्मा

: लोकोक्तियाँ :

यह कुन्दार :- प्रस्तुत उपन्यास में प्रयुक्तबुन्देली लोकोक्तियाँ निम्नवत हैं :-

नाव बड़े सर्पन छोटे :1:

मंगल की मंगल है । :2:

अपने प्राण बचाने वेखिये चिमट । :3:

मारसेल और पुष्कार लेख ।। :4:।

छोटे मों बड़ी बात :5:

लरके को ओखरे बाँधि तो दोन माँसा को मास देर जनम देनि :6:

मेरी बला से । :7:

सुन निरे बीजर हो । :8:

रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी । :9:

ऐसे नाचिनाच, ऐसे नाचिनाच । :10:

नहरा ऐसा तो भले शरीर है। :11:

रमाना होगी जहसा पानी । :12:

मर गेओ, खसूसा फूटो-फोने ऐसी, फोने जानी । :13:

बड़े भुरु हो । :14:

अपनी-अपनी हपानी, अपना-अपना राग :15:

पलार ऐसे पलार । :16:

निम्बाम्बे के पेड़ में गड़ गये । :17:

भाड़ मारो कोड़ी और राम रूठे काँधी को । :18:

जो उनको मन्दिन । :19:

जिसकी लाठी उसकी भैंस । :20:

जो जागेगा, सो पायेगा :21:।

यह कुन्दार 1- पृष्ठ संख्या- 17
2- पृष्ठ संख्या- 25
3- पृष्ठ संख्या- 70
4- पृष्ठ संख्या- 70
5- पृष्ठ संख्या- 71
6- पृष्ठ संख्या- 75
7- पृष्ठ संख्या- 113
8- पृष्ठ संख्या- 131
9- पृष्ठ संख्या- 132
10- पृष्ठ संख्या- 132
11- पृष्ठ संख्या- 140
12- पृष्ठ संख्या- 150
13- पृष्ठ संख्या- 151
14- पृष्ठ संख्या- 200
15- पृष्ठ संख्या- 211
16- पृष्ठ संख्या- 234
17- पृष्ठ संख्या- 234
18- पृष्ठ संख्या- 282
19- पृष्ठ संख्या- 320
20- पृष्ठ संख्या- 320
21- पृष्ठ संख्या- 444

---- कुन्दनलाल शर्मा

चिराटा की पहिचानी :- प्रस्तुत उपन्यास में लोकोक्तियाँ निम्नवत् समाविष्ट हुई हैं :-

रोज रोज मरने से तो एक दिन मर जाना अच्छा है । :1:

आपके पास रोग की दवा है, पर मौतकी दवा किसके पास है :2:

होगा, जिस दिन का दुख रोयें । :3:

मर्द बहुत्ता मया, ज्यों-ज्यों दवा की। :4:

राजा और सर्प न्याय, थोड़ा पड़े तो दाग । :5:

जो होनी है, उसे कोई नहीं रोक सकता । :6:

अपनी अपनी सकसते हैं । :7:

साधु का साधु पिता के समान होता है । :8:

दिल्ली अब अभी दूर है । :9:

पहले मारे सो ठाकुर और पीछे मारे सो चिल्लड़ी। :10:

आगे नाथ न पीछे पगहा । :11:

मुहावरे :- प्रस्तुत उपन्यास में प्रयोगित कुछ लोकोक्तियाँ निम्नवत् हैं:-

घर में घुसे दुमहली ढाहते हैं । :12:

साँप मरे और लाठी न टूटे । :13:

सोनी छोल भी जाये और कपड़ों पर रंग न गिरे । :14:

सब अटक पड़ती है, सब सेठ जी और साधु जी और,

सब अटक निकल जाती है, तब बनिया- बक्काल । :15:

मारे लूटे और पत्थरों से कूटे । :16:

यह न समझना कि मैं कोरा बनिया हूँ । :17:

बड़ा नाम है, बड़ा काम है । :18:

कराह-कराही, मगर-जोश सब साथ लगे हुये हैं । :19:

घर घर करनी, की कहाँ तथा :20:

जैसे कुम्हारी भोंस मारे जाये, अब तिवारियों की गति बिगड़ी :21:

चिराटा की पहिचानी
1- पृष्ठ संख्या- 14
2- पृष्ठ संख्या- 27
3- पृष्ठ संख्या- 28
4- पृष्ठ संख्या- 46
5- पृष्ठ संख्या- 48
6- पृष्ठ संख्या- 48
7- पृष्ठ संख्या-150
8- पृष्ठ संख्या-156
9- पृष्ठ संख्या-177
10-पृष्ठ संख्या-190

मुहावरे
11-पृष्ठ संख्या- 269
12-पृष्ठ संख्या- 37
13- पृ० संख्या- 39
14-पृष्ठ संख्या- 39
15-पृष्ठ संख्या- 49
16-पृष्ठ संख्या- 60
17-पृष्ठ संख्या- 63
18-पृष्ठ संख्या- 75
19-पृष्ठ संख्या- 79
20-पृष्ठ संख्या- 80

कलार:- प्रस्तुत उपन्यास में दर्शायी गयी लोकोक्तियाँ निम्नवत् हैं :-

जहाँ मिली दो, वहीं रहे सो । :1:

ऊँट पर चढ़ते ही, सब भसकने लगते हैं । :2:

राजा करे सो न्याय, गाजा पड़े सो वाद । :3:

रमता जोगी, बहता पानी । :4:

जो बकता, वह लिखता । :5:

दरि को भये, सो दरि को खोई । :6:

घर के नाँव न घूस के, बाबी पूछन जावें । :7:

जिन खोजा, तिन पाइया । :8:

मेरी जातें, मेरा ही भला । :9:

बड़ी सो, घाने को बटधर्मी है । :10:

जाई, जमत रहे, गंगा-मूँगर की । :11:

अपनी अपनी डफली, अपना अपना राग । :12:

घूस का खाया मला फूँक-फूँक कर पीता है । :13:

झाँसी कोरानी रूमीवार्ड :- प्रस्तुत उपन्यास में अधोलिखित लोकोक्तियों का निर्वाह किया गया है :-

सब घर ठेली के चट्टे- बट्टे हैं। :14:

अन्धाधुन्ध कर आये, जो ठाकुर बनकर जम गये । :15:

न्यारे के, न्यारा करता है। :16:

अगर रही ओढ़ी, जोम- जगाम ओढ़ी । :17:

जितना ओढ़ना, उतना पीना । :18:

कलार
1- पृष्ठ संख्या- 1
2- पृष्ठ संख्या- 6
3- पृष्ठ संख्या- 67
4- पृष्ठ संख्या- 76
5- पृष्ठ संख्या- 82
6- पृष्ठ संख्या- 84
7- पृष्ठ संख्या- 86
8- पृष्ठ संख्या- 88
9- पृष्ठ संख्या-129
10-पृष्ठ संख्या-153
11-पृष्ठ संख्या-290
12-पृष्ठ संख्या-293
13-पृष्ठ संख्या-321

झाँसी कोरानी रूमीवार्ड
14- पृष्ठ संख्या- 139
15- पृष्ठ संख्या- 152
16- पृष्ठ संख्या- 159
17- पृष्ठ संख्या- 159
18- पृष्ठ संख्या- 171

—— कृष्णकुमार शर्मा

अपना, अपना ही है । :1:

सुख कहाँ के दुख के सूखे हो । :2:

देखने के पास कुछ और, खाने के कुछ और । :3:

अपनी अपनी डगली, अपना-अपना रौग । :4:

बेर न अपनी जन्म है, बेर न ऐसे अपना । :5:

मुगनयनी :- प्रस्तुत उपन्यास में प्रदर्शित नयी लोकोक्तियों का विवरण निम्नवत् है :-

पंडुर न लिखा, अपकने लगा भटा-मूसल की । :6:

नमाज़ छुटाने गये और रोजे गले पड़े । :7:

मन-मन डोरी, मन-मन मोर । :8:

नया को नया को नया । :9:

न रहेगा बाँस न बजेगी, बांसुरी । :10:

अपनी मोहिनियाँ नहीं देखी है । :11:

बेसर्म, सुरर्म की छोंक्त । :12:

पानी के पेट पर सिन्दूर की लिखाई । :13:

जहाँ रपटा भोज, जहाँ मनु रोटी । :14:

पक पक के सौ-सौ दूध पर ओले । :15:

उधर मुंदता हूँ तो बाघ्नी है और उधर खाइता मुँहाली गुफा है। :16:

जब ओढ़नी ओढ़ें, तो घर घोरना ओढ़ें । :17:

सूरे के भी कभी न कभी दिन फिरते हैं । :18:

ये जिस दोस की मूली हैं । :19:

अन्धारा घना बाले तो बाँधे । :20:

उपन्यास 1- पृष्ठ संख्या- 172
2- पृष्ठ संख्या- 300
3- पृष्ठ संख्या- 303
4- पृष्ठ संख्या- 436
5- पृष्ठ संख्या- 196

मुगनयनी 6- पृष्ठ संख्या- 30
7- पृष्ठ संख्या- 62
8- पृष्ठ संख्या- 62
9- पृष्ठ संख्या- 68
10- पृष्ठ संख्या- 74
11- पृष्ठ संख्या- 111
12- पृष्ठ संख्या- 49
13- पृष्ठ संख्या- 189
14- पृष्ठ संख्या- 189
15- पृष्ठ संख्या- 250
16- पृष्ठ संख्या- 263
17- पृष्ठ संख्या- 264
18- पृष्ठ संख्या- 282
19- पृष्ठ संख्या- 307
20- पृष्ठ संख्या- 334

---- मुन्नालाल शर्मा

चित्त भी मेरा, पट्ट भी मेरा । :1:

बाल भाल में' मूलम बन्ध । :2:

सूल न कपास, कोरी से लट्ठम-लट्ठा । :3:

टूटे काटे :- प्रस्तुत उपन्यास में' अशोभित लोकोक्तियों का उल्लेख निम्नवत:-

छाती जलाये वनस्पितियों की । :4:

आँखों के अन्धे नाम नेनसुख । । :5:

आगे करेंगे, अपनी छाती के घाव । :6:

खाट मरा सब खाम्मिये, जब तेरहवीं को खाय। :7:

सूखो नवाजो- नाती पोतों फलो । :8:

सुनिको आम खाने से काम या पेड़ गिनने से । :9:

जब ओखली में सिर दिया,तो मूसल काहे की क्या:10:

कहाँ राम-राम कहाँ टेटें। :11:

बनवास में ,उस बाँध से । :12:

लातों की देवी बातों से थोड़े ही मानती है । :13:

महारानी दुर्गावती :- प्रस्तुत उपन्यास में उपर्युक्त नयी लोकोक्तियाँ निम्नवत् है:-

ऐसे जीवन से राम बचाये । :14:

आगे की रामबाणे । :15:

साँप मरे, लाठी न टूटे । :16:

जीती ताकि जिसार है, आगे की सुधि लेय । :17:

बाँधे लगे को छोड़ता कौन है । :18:

बासी रोटीमें' आँसा जिसका । :19:

दुर्गावती	1- पृष्ठ संख्या- 378	महारानी दुर्गावती	14- पृष्ठ संख्या-13
	2- पृष्ठ संख्या- 394		15- पृष्ठ संख्या-44
	3- पृष्ठ संख्या- 446		16- पृष्ठ संख्या-108
टूटे काटे	4- पृष्ठ संख्या- 98		17- पृ० संख्या-128
	5- पृष्ठ संख्या- 184		18- पृ०संख्या-167
	6- पृष्ठ संख्या- 18		19- पृ०संख्या-167
	7- पृष्ठ संख्या- 76		
	8- पृष्ठ संख्या- 211		
	9- पृष्ठ संख्या- 246		
	10-पृष्ठ संख्या- 246		
	11-पृष्ठ संख्या- 351		
	12-पृष्ठ संख्या- 362		
	13-पृष्ठ संख्या- 361		

---- वृन्दावनलाल वर्मा

प्रजा साधु की न मर्ज,भरतहु की मर्जी । :1:

खीस गये, तो पो आरत । :2:

जब सब्बी प्रसन्न होती है,तो इधर धार कर देती है । :3:

देखि लहे अवार, चीज सब देती दीखे । :4:

लाभ दीखे लरच दीखे, छीजे चहुंदर दरनि दीखे,

बिरी भाग जागे,तो भाग जागे नहीं तो आव भाग दी है। :5:

अटक बाजता बना देती है। :6:

कहां कंकड पत्थर और कहां भगवान की मूर्ति । :7:

जल का उपचार जल और छल का उपचार छल । :8:

भगवान और भाग्य पर साधु निर्भर । :9:

यह प्रति यह साधुन प्रति साधुन्द । :10:

भुवन चिह्न :-प्रस्तुत उपन्यास में उपयोगी गयी लोकोक्तियां निम्नवत् हैं :-

दाल भात में मूसलचन्द । :11:

बैठे से बेगार भली । :12:

परमात्मा सुन्दे सूनों भर-भर सूप दे । :13:

जहां मिली दो, वहीं रहे सो । :14:

कहने के कोसने से दोष नहीं बरसा । :15:

पर कान से सुनी, दूसरे से निकाली । :16:

जिस जिस का रोना रोये जिये । :17:

टंटा छूटा, किसी तरह छूटा । :18:

कौन अपनी आंख उखाड़े । :19:

उधर जाता हूं तो खाई,उधर जाता हूं तो कुआं । :20:

महारानी दुर्गावती	1- पृष्ठ संख्या- 176	भुवनविक्रम	11-पृष्ठ संख्या- 20
	2- पृष्ठ संख्या- 196		12-पृष्ठ संख्या- 23
	3- पृष्ठ संख्या- 233		13-पृष्ठ संख्या- 83
	4- पृष्ठ संख्या- 269		14-पृष्ठ संख्या-106
	5- पृष्ठ संख्या- 269		15-पृष्ठ संख्या-156
	6- पृष्ठ संख्या- 204		16-पृष्ठ संख्या-124
	7- पृष्ठ संख्या- 204		17-पृष्ठ संख्या-177
	8- पृष्ठ संख्या- 207		18-पृष्ठ संख्या-239
	9- पृष्ठ संख्या- 236		19-पृष्ठ संख्या- 57
	10-पृष्ठ संख्या- 268		20-पृष्ठ संख्या-263

--- वृन्दावनलाल वर्मा

रामचन्द्र की रानी :- प्रस्तुत उपन्यास में प्रयुक्त की गयी लोकोक्तियाँ निम्नवत् है :-

सब घर की खेती के चट्टे चट्टे है । :1:

ये तो जीती मुख की बातें हैं । :2:

सब खेती बयार जोये,सब खेती पीठ करतो । :3:

खेर जो कुछ हुआ, जो हुआ । :4:

लोलीआन :- प्रस्तुत उपन्यास में प्रयोगी गयी लोकोक्तियाँ निम्नवत् है :-

दूसरों मुन्ने करती रहो । :5:

खुदा खेर करे । :6:

खुदे के भी दिन फिरतेहैं । :7:

जहाँ राजा भोज,जहाँ गंगू तेली । :8:

जो होनहार है,वह होकर ही रहता है। :9:

किसी कोखता, किसीके सिर पर टूट पड़ी । :10:

खेला करोगे, खेला करोगे । :11:

किसी के भाग्य से छींका । :12:

साँप मरे और लाठी न टूटे । :13:

नाहक की लिन्हिया :- प्रस्तुत उपन्यास में आलोचित लोकोक्तियों का प्रयोग निम्नवत है :-

काला अक्षर,भैंस बराबर । :14:

भागे भूत की लंगोटी भली । :15:

सुन कोन से दूध के धुले हो । :16:

रामचन्द्र की रानी	1-पृष्ठ संख्या- 24	10- पृष्ठ संख्या- 103
	2-पृष्ठ संख्या- 30	11- पृष्ठ संख्या- 105
	3-पृष्ठ संख्या- 37	12- पृष्ठ संख्या- 123
	4-पृष्ठ संख्या-122	13- पृष्ठ संख्या- 126
लोली आन	5- पृ० संख्या- 4 नाहक की लिन्हिया	14- पृष्ठ संख्या 27
	6- पृ० संख्या- 18	15- पृष्ठ संख्या- 111
	7-पृष्ठ संख्या- 19	16- पृष्ठ संख्या- 163
	8-पृष्ठ संख्या- 46	
	9-पृष्ठ संख्या- 81	

---- सुन्दरलाल शर्मा

कन्धुल का बेटा मक्खी चूस । :1:

सुन आये- बड़े पन्थ । :2:

लठिया गये सो सुन । :3:

सूम मरो, चुल्लू भर पानी में । :4:

डारिये न छिन्नम, छिरारिये न राम-नाम । :5:

भूखा क्या खाये पेट भर खाना । :6:

देशज्ञ की मुस्कान :- प्रस्तुत उपन्यास में प्रयुक्त हुई लोकोक्तियों का विवरण निम्नवत् है :-

खाम पेय मन्मेरी खाय,टूटे पलकियाखीसे जाये । :7:

जैसा सत्यानाश वैसा सवा सत्यानाश । :8:

अक्षिप्तार्थ :-प्रस्तुत उपन्यास में प्रयोगित मयी लोकोक्तियां निम्नवत् हैं :-

जिसकी लाठ उसकी भैंस । :9:

अन्धा मला ऐसे-सो भला । :10:

लीक और कमल :- प्रस्तुत उपन्यास में जिन लोकोक्तियों को प्रयुक्तकिया गया है,वे निम्नवत् हैं :-

अपने काम से काम । :11:

भय का भूत । :12:

रमताजोगी, बहता पानी । :13:

तेरा भला हो बाबे । :14:

मालवती निम्बिया	1-पृष्ठ संख्या- 68	अक्षिप्तार्थ	9- पृष्ठसंख्या- 1
	2-पृष्ठ संख्या-199		10-पृष्ठ संख्या-43
	3-पृष्ठ संख्या-199	लीक और कमल	11-पृष्ठ संख्या-100
	4-पृष्ठ संख्या-213		12-पृष्ठ संख्या-134
	5-पृष्ठ संख्या-238		13-पृष्ठ संख्या-223
	6-पृष्ठ संख्या-298		14-पृष्ठ संख्या-283
देशज्ञ कीमुस्कान	7-पृष्ठ संख्या- 17		
	8-पृष्ठ संख्या- 78		

---- वृन्दावनलाल वर्मा

अब क्या हो :- प्रस्तुत उपन्यास में उपर्युक्त नयी लोकोक्तियाँ निम्नवत् हैं:-

मराठा-उपकार और अपकार को कभी नहीं भूलता । :1:

शिवाजी कौन था,शाह जाय मंत्रि की है, :2:

नीम न मीठा होय,काटो गुड़ घी से ।

कुत्ते की पूंछ सीधी पुंगी में बारह वर्ष रखो,

परन्तु जब उसे बाहर निकालोगे,तो टेढ़ी की टेढ़ी । :3:

साँप को दूध पिलाने से उसका विष तो कम नहीं होता । :4:

भाग्य पर सब की विजय । :5:

: सूक्तियाँ :

गद्य सृजन :- प्रस्तुत उपन्यास में प्रमुख सूक्तियाँ निम्नवत हैं :-

बेटे बिना वंश के परिवार निर्जन्मा बेटे की बिना

राजनीति के रण-निःसार । :6:

विजय,विजय को जन्म देती है,पराजय-पराजय को । :7:

सभ्यता की साधनों के भले या बुरे की कसौटी है,

न कि भले या बुरे साधनों का प्रयोग सभ्यता की कसौटी। :8:

छल तो बल कायरता है । :9:

कीचड़ में पाँव डालने से पहले उसकी गहराई समझ ली जाती है।:10:

शिवाजी की पत्नियाँ :- प्रस्तुत उपन्यास में' उपर्युक्त द्वारा वर्णित सूक्तियाँ

निम्नवत् हैं:-

अग्नि न तो रण की मृत्यु से डरता है और न रण की मृत्यु से। :11:

विश्वास करने से विश्वास उत्पन्न होता है। :12:

दृढ़ निश्चय के साथ जो काम किया जाता है,

वह कभी असफल नहीं होता है । -

अब क्यों	1-पृष्ठ संख्या-19		8- पृष्ठ संख्या- 424
	2-पृष्ठ संख्या-33		9- पृष्ठ संख्या- 419
	3-पृष्ठ संख्या-90		10-पृष्ठ संख्या- 273
	4-पृष्ठ संख्या-91	शिवाजी की पत्नियाँ	11- पृष्ठ संख्या- 73
	5-पृष्ठ संख्या-111		12- पृष्ठ संख्या- 128
गद्य सृजन	6-पृष्ठ संख्या-142		13- पृष्ठ संख्या- 140
	7-पृष्ठ संख्या-338		

--- वृन्दावनलाल वर्मा

चतुर मंत्री के लिये समय से बढ़ कर और कोई चीज :1:
मूल्यवान नहीं हो सकती ।

स्त्रियाँ बाल काटती हैं, सिर नहीं काटती। :2:

धर्म की रक्षा करना कर्तव्य है, कर्तव्य का पालन करना धर्म है। :3:

मुताबिक :- प्रस्तुत उपन्यास में अग्रलिखित सूक्तियाँ उपलब्ध हुई हैं :-

आकर्षण और आत्म रक्षा का तो अत्यन्त सम्बन्ध है । :4:

न कोई दिन मीठे होते हैं और न कोई खट्टे,
अपनी मन की स्थिति पर निर्भर है । :5:

कथनार :- प्रस्तुत उपन्यास में अग्रलिखित सूक्तियों का निर्माण किया गया है:-

जन्म लेने की पहली क्रिया का नाम मरण या मृत्यु है । :6:

अन्तः स्थित की स्थिरावस्था और सूक्ष्मतम संचित महाशक्ति
की परमावस्था है । :7:

जीवन की खिड़की में की परमावस्था की आँखें निरन्तरावस्था है। :8:

परलोक से बढ़ कर कोई सुख नहीं, और पर पीड़ा से
बढ़ कर कोई पाप नहीं । :9:

मन का नियन्त्रण करने से जीवन माया का सपना नहीं रहता । :10:

अर्थ, काम, धर्म और मोक्ष का उपभोग अवश्य करो परन्तु
चमत्कार कि आपस में इनमें कोई खटपट न हो । :11:

न्याय का संयोग क्रोध के साथ नहीं हो सकता,
क्या उसका संग लोभ के साथ सम्भव है । :12:

स्थिरता की परिभाषा	1-पृष्ठ संख्या-	144
	2-पृष्ठ संख्या-	149
	3-पृष्ठ संख्या-	220
मुताबिक	4-पृष्ठ संख्या-	19
	5-पृष्ठ संख्या-	20
कथनार	6-पृष्ठ संख्या-	219
	7-पृष्ठ संख्या-	219
	8-पृष्ठ संख्या-	223
	9-पृष्ठ संख्या-	268
	10-पृष्ठसंख्या-	264
	11-पृष्ठसंख्या-	307
	12-पृष्ठसंख्या-	366

------ वृन्दावनलाल वर्मा

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई :-प्रस्तुत उपन्यास में प्रयुक्त की गयी सूक्तियाँ निम्नवत् है :-

एक आभा-सा दूसरे में नहीं पड़ा। :1:

फूलों के दासानुदासियाँ रहती ,तो वे माथियों पर आ जाते हैं। :2:

स्त्रियाँ मुद्दत का अवसर देखने तो फिर संसार में ऐसा दुख कोई भी नहीं जो सकता,जो उन्हें छू ले । :3:

फूलों से सम्बन्ध बनाये रखो,परन्तु मिट्टी से नाता तोड़कर नहीं। :4:

अपने आदर्श को कभी न भूलना, प्रयत्न की पगडी और पक्की सीढ़ीयें। :5:

बुन्देलखण्ड के रजवाड़े छोटे छोटे दीपक है,उनमें तेल है,परन्तु लौ नहीं। :6:

नींव के पत्थर भवन को नहीं देख पाते,परन्तु भवन खड़ा होता है, उन्हीं के भरोसे जो नींव में गड़े होते हैं । :7:

पुरुष से वह डर और कोई साधु नहीं । :8:

मुक्तावली :- प्रस्तुत उपन्यास में प्रकाशित सूक्तियाँ कालिदास नीचे लिखा रहते :-

लोक और समाज के भेद से छोटे,बड़े और बड़े,छोटे हो जाते हैं । :9:

सिंह और राजपूत कहीं भी जाकर अपने साहस से राज्य को बना लेते हैं । :10:

चित्रकारी और कारीगर, निर्माण कला के राजमार्ग और व्याकरण है। :11:

जीवन को कल्याणमय और सुन्दर बनाने से मृत्यु भी सुख बनजाती है। :12:

सौन्दर्य की चिरायता-सीधे,सच्चे साधु पुरुष जैसी चिरायतायें है । :13:

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई	1-पृष्ठ संख्या-18	मुक्तावली	9-पृष्ठ संख्या-32
	2-पृष्ठ संख्या-44		10-पृष्ठ संख्या-96
	3-पृष्ठ संख्या-87		11-पृष्ठसंख्या- 314
	4-पृष्ठ संख्या-88		12-पृष्ठसंख्या-314
	5-पृष्ठ संख्या-137		13-पृष्ठ संख्या-314
	6-पृष्ठ संख्या-137		
	7-पृष्ठसंख्या- 473		
	8-पृष्ठ संख्या-474		

---- वृन्दावनलाल वर्मा

समय पर सहायता जो कर्तव्यों संकुचित कर दे और वह कर्तव्य
क्या जो कला का अंग-भंग हो जाने दे । :1:

अनवरत प्रयत्न का नाम ही जीवन है । :2:

विजय की अमूर्त क्रिया को, अनादि विश्व का साम्राज्य व्यक्त करता है। :3:

सही का गौरव, सौन्दर्य, महत्व निखरता मेरे । :4:

रक्षा कालाक्षम, भगवान का भरोसा और भुजाओं का बल है । :5:

कलाभ्रष्ट होजाये और योगी पतित हो जाये, तो भी उनमें
अनुभव का कुछ अंश तो रहता ही है । :6:

संकल्प कर्तव्य है और भावना, कला । :7:

दूसरे कवि :- प्रस्तुत उपन्यास में अतीतिलिखित सूक्तियों का उल्लेख मिलता है:-

जहाँ मन को पवित्र कर दो, वहीं मन्दिर है :8:

कोई महल बनाता है, कोई मन्दिर को सजाता है
पर मन को सजाये बिना काम नहीं चल सकता । :9:

महारानी दुर्गावती :-प्रस्तुत उपन्यास में अतीतिलिखित सूक्तियाँ प्रयुक्त
की गयी हैं :-

अकेले पराक्रम जैसा भी क्या, भाग्य उनमें उभरता है और वे
भाग्य से खिलते हैं । :10:

छोटों की अवमुल्यन, क्या पाप है विनाश की बुद्धियाँ । :11:

उत्साह के वेग को सन्तुलन की जड़ में लायें । :12:

उद्देश्य की सफलता चाहते रहानी है और सब थोड़े । :13:

मृगनयनी 1-पृष्ठ संख्या- 323
2-पृष्ठ संख्या- 355
3-पृष्ठ संख्या- 384
4-पृष्ठ संख्या- 384
5-पृष्ठ संख्या- 415
6-पृष्ठ संख्या- 438
7-पृष्ठ संख्या- 449

दूसरे कवि 8- पृष्ठ संख्या-286
9- पृष्ठ संख्या-349

महारानी दुर्गावती 10-पृष्ठ संख्या- 18
11-पृष्ठ संख्या- 28
12-पृष्ठ संख्या- 30
13-पृष्ठ संख्या-128

---- वृन्दावनलाल वर्मा

आत्म सुधरने पर फैलती है । :1:

सम्मान उसी को जो अपनी तलवार की धार से दमियाये । :2:

राज्यके लिये पहली शिक्षा है,अनुशासन । :3:

कर्तव्य पालन भी योग का ही अंग है । :4:

नीच के प्रतिशोध करना हमारी संस्कृतिके विरुद्ध है । :5:

आवाजकी तो प्रकृतिमें ही है । :6:

काम और क्रोध के आवेग को सहो,आकांक्षा

और आशा के बन्धन में न फंसो । :7:

एक एक बूंदी एक-एक करोड़ मुल्य की है । :8:

भुवन विक्रम :- प्रस्तुत उपन्यास में पात्रोंकी सूक्तियां निम्नवत् हैं :-

:9:

यदि पुरुषार्थ मेरे हाथ में है,तो हाथ में विजय क्यों नहीं। :10:

चित्तोड़ पतन करने की शक्ति संस्कृति और सभ्यता की कसौटी है ।

संयमीऔर सच्चे आचरण वाला ही अजेय योद्धा है । :11:

अहंकार एक अंधः पतन का द्वार है । :12:

सत्तासे सत्य बड़ा होता है । :13:

दरिद्रता और विवशित परमात्मा की देनी और कसौटी है।" :14:

विद्यार्थी जीवन वासनाओं के संयमन का समय नहीं है । :15:

अन्तिम अवस्था तो अपनी आत्मा की होनीचाहे । :16:

ज्ञान और कर्म का सामंजस्य जीवन का पर्याय बनजो । :17:

कर्म और काम को एकाकार होगो कि एकदूसरे से टकराते न फिरें । :18:

महाराणी दुर्गावती 1- पृष्ठ संख्या-189
2- पृष्ठ संख्या-234
3- पृष्ठ संख्या-242
4- पृष्ठ संख्या-245
5- पृष्ठ संख्या-290
6- पृष्ठ संख्या-297
7- पृष्ठसंख्या- 299
8- पृष्ठ संख्या-319

भुवन विक्रम 9- पृष्ठ संख्या-20
10-पृष्ठ संख्या-61
11-पृष्ठ संख्या-82
12-पृष्ठसंख्या- 74
13-पृष्ठ संख्या-98
14-पृष्ठ संख्या-116
15-पृष्ठ संख्या-137
16-पृष्ठ संख्या-157
17-पृष्ठ संख्या-185
18-पृष्ठ संख्या-271

---- वृन्दावनलाल वर्मा

लोरी आम :- प्रस्तुत उपन्यास में प्रयुक्त सूक्तियाँ निम्नवत् हैं :-

पद और सम्पत्ति की, सत्ता और अधिकार की,
लोलुपता दलबन्दी की कलुषी होती है । :1:

मानव प्रकृति की दुरवस्थायें उसके अन्तर्मन में
निहित रहती है। सभ्यता, संस्कृति और शील-संकोच
केवलमेव उनकी रोक थाम के लिये रहते हैं । :2:

मानव की विभिन्नता :- प्रस्तुत उपन्यास में अरोलिखित सूक्तियों का समावेश किया गया है :-

ऊपर चढ़ने के लिये प्रयत्न करना पड़ता है, गिरना पड़ता है,
परन्तु नीचे फिसलने के लिये तो कोई रोकथाम है ही नहीं:3:

राजनीतिमें' नाम, दाम, दण्ड और भेद का स्थान बराबर-बराबर है।:4:

अधिकारार्थ :- प्रस्तुतउपन्यास में' अरोलिखित सूक्तियों का निर्वाह हुआ है:-

पिट्ठी-पिट्ठार्थ लोगों पर चलने वालों का भाग्य छोटा होता है,
:5:

कवि, शेर और जूत लोगों इन लोगों को छोड़कर अपना भाग्य बनाते हैं।

सदा, निष्ठा एवं विवेक का रथ पर चलोगे, तब
चमत्कार पूर्ण होती है । :6:

शीघ्र और उमल :- प्रस्तुत उपन्यास में प्रयुक्त सूक्तियाँ निम्नवत हैं:-

सुन्दरियों का जीवन, कला की अनुभूतियों का कोष होता है । :7:

मदिरा-सुरता छोटे हों चाहे बड़े, चमक-दमक का तो मुख
उनमें एक सा ही होता है । :8:

लोरीआम 1- पृष्ठ संख्या- 131
2- पृष्ठ संख्या- 131
3- पृष्ठ संख्या- 46
4- पृष्ठ संख्या- 194
अधिकारार्थ 5- पृष्ठ संख्या- 83
6- पृष्ठ संख्या- 109
शीघ्र और उमल 7- पृष्ठ संख्या- 71
8- पृष्ठ संख्या- 131

---- सुन्दरलाल शर्मा

देशमुख श्रीमुखलाल :- प्रस्तुतउपन्यास में जिन सूक्तियों का उल्लेख किया गया है, वे निम्नवत् हैं :-

अहिंसा, वीरों का आभूषण है और कायरों का दोष । :1:

मानव का सबसे बड़ा शत्रु अहंकार है, :2:

लोभ से ही सब शत्रु पराजित होजाते। :3:

पाप का मूल क्रोध ही है । :4:

अब क्या हो :-प्रस्तुत उपन्यास में राजनीतिक सूक्तियों का विवरण निम्नवत् है :- विद्या और संस्कृति का प्रसार ,

राज्य का सबसे बड़ा कर्तव्य है । :5:

किसी वस्तु को छोटाकर या निर्बल न समझो । :6:

अन्त तक धैर्य और शौर्य के साथ, कठिनाईयों का और शत्रुओं का सामना करते रहो । :7:

देशमुख श्री मुखलाल 1- पृष्ठ संख्या- 52
2- पृष्ठ संख्या-234
3- पृष्ठसंख्या- 234

अब क्या हो 4- पृष्ठ संख्या-101
5- पृष्ठ संख्या- 89
6- पृष्ठ संख्या- 89

---- मुन्नालाल शर्मा

/6/ : स्थापत्य कला :

वर्मा जी ने अपने ऐतिहासिक उपन्यासों में बुन्देलखण्ड की स्थापत्य कला की दर्शाया है, जिसके अंतर्गत मन्दिरों, भवनों और गढ़ों का उल्लेख किया गया है:-

: मन्दिर :

गढ़ कुण्डार :- प्रस्तुत उपन्यास में कुण्डार की बस्ती के मध्य बने विभिन्न
:1: :2: :3:
लघु मन्दिर तथा महादेव जीका पंचमुखी मन्दिर देवल गांव का दुर्गा व
:4: :5: :6:
शिव मन्दिर, मंदिर भैरव का मन्दिर, महादेव जी का मन्दिर, देवरा
:7:
व देवगढ़ गांव कालिंजरी तथा दुर्गा जी का मन्दिर, बरौल जीगढ़ी में बना
:8:
देवी जी का मन्दिर एवं कुण्डार के समीपस्थ तालाब के उत्तरी सिरे पर
:9:
एक ऊँची पहाड़ी के नीचे स्थित प्रसिद्ध सिद्धपहाड़िनी देवी के मन्दिर
का उल्लेख मिलता है ।

चित्राटा की पहिमनी :- प्रस्तुत उपन्यास में चरखर गांव के मध्य स्थित
:10:
दुर्गा जी का मन्दिर, चित्राटा गढ़ के पूर्व में नदी के मध्यस्थ टापू पर
:11:
बना दुर्गा देवी का मन्दिर, भण्डेर का सोन सलैया मन्दिर तथा
:12:
तालोन, भरोली के मध्य स्थित प्राचीन महादेव जी के मन्दिरों का वर्णन
प्राप्त होता है ।

:13
मुसाहिब गढ़ :- प्रस्तुत उपन्यास में, बड़ूनू की टेकरिया पर स्थित मन्दिर
का उल्लेख मिलता है।

गढ़ कुण्डार	1- पृष्ठ संख्या- 139	चित्राटा की पहिमनी	10-पृष्ठ संख्या-69
	2- पृष्ठ संख्या- 139		11-पृष्ठ संख्या-39
	3- पृष्ठ संख्या- 9		12-पृष्ठ संख्या-187-188
	4- पृष्ठ संख्या- 9	मुसाहिब गढ़	13-पृष्ठ संख्या-40
	5- पृष्ठ संख्या- 10		
	6- पृष्ठ संख्या- 10		
	7- पृष्ठ संख्या- 9		
	8- पृष्ठ संख्या- 139		
	9- पृष्ठ संख्या- 469		

---- वृन्दावनलाल वर्मा

जयनार :- प्रस्तुत उपन्यास में झाँसी का शिवालय तथा महादेव जी के
:1:
पंचरत्नमन्दिर का उल्लेख मिलता है ।

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई :- प्रस्तुत उपन्यास में जिन मन्दिरों का
उल्लेख किया गया है, वे निम्नवत् हैं :-

मन्दिरों में झाँसी नगर में, लक्ष्मी फाटक के बाहर स्थित महालक्ष्मी
:2:
कामन्दिर, मनोरा बाजार में स्थित मनोरा मन्दिर, बड़े बाजार में स्थित
:3:
मुरली मनोहर कामन्दिर, बड़े गणेश फाटक के बाहर स्थित बिहारी जी का
:4:
मन्दिर, लोहन बाग के पूर्व में स्थित गुसाइयों का मन्दिर, झाँसी के किले
:5: :6:
में स्थित महादेव तथा गणपति का मन्दिर ।
:7: :8:

मुक्तमणी :- प्रस्तुत उपन्यास में वर्णित भये मन्दिरों के अंतर्गत -

दतिया गढ़ि में स्थित राधाकृष्ण का मन्दिर, ग्वालियर में स्थित
:9:
:10: :11: :12: :13:
कर्ण मन्दिर, मान मन्दिर तेल मन्दिर सहस्रार मन्दिरतथा लाल-बाबू का
:14: :15:
मन्दिर, देवगढ़ का विष्णु मन्दिर तथा सब मरवर के देव,देवीतथा
:16:
जैन सम्प्रदायों के मन्दिर उल्लेखनीय हैं ।

महारानी दुर्गावती :-प्रस्तुत उपन्यास में अधोलिखित मन्दिरों का उल्लेख
किया गया है:-

:17:
महोबा में स्थित मनियादेवीका मन्दिर, दुर्गा देवीका मन्दिर,चंदेल
:18: :19: :20:
चंदेलशिव नीलकण्ठ महादेव और भैरव शक्ति के मन्दिर, बावना मठ मन्दिर,

---

जयनार	1-पृष्ठ संख्या- 188			11-पृष्ठ संख्या-288
झाँसी की	2-पृष्ठ संख्या- 3			12-पृष्ठ संख्या-390
रानी	3-पृष्ठ संख्या- 62			13-पृष्ठ संख्या-382
लक्ष्मीबाई	4-पृष्ठ संख्या- 149			14-पृष्ठ संख्या-393
	5- पृ० संख्या- 299			15-पृष्ठ संख्या-352
	6-पृष्ठ संख्या-387			16-पृष्ठ संख्या-436
	7-पृष्ठ संख्या- 50		महारानी	17-पृष्ठ संख्या-1/27
	8-पृष्ठ संख्या- 59		दुर्गावती	18-पृष्ठ संख्या-28
मुक्तमणी	9-पृष्ठ संख्या- 5			19-पृष्ठ संख्या-28
	10-पृष्ठ संख्या- 286			20-पृष्ठ संख्या-38

---- सुन्दरलाल शर्मा

:1: भैरव देव का मन्दिर, हनुमान जी का मन्दिर :2:, चौरासी में स्थित नरसिंह भगवान का मन्दिर :3:, मेड़ाघाट में स्थित प्राचीन मन्दिर :4:, खटा गांव के शक्तिमय मन्दिर :5:, मुक्तेश्वर मठ मन्दिर :6:, माण्डी के मन्दिर :7: तथा पंचगांव के मन्दिर :8:।

माधव जी सिन्धिया :- प्रस्तुत उपन्यास में भाटेर के सोन सरोवर पर स्थित मन्दिर का उल्लेख किया गया है :9:।

अहिल्याबाई :- प्रस्तुत उपन्यास में स्थित महादेव :10:, उग्र भैरव :11: तथा औरछा के चतुर्भुज राम के मन्दिरों का उल्लेख मिलता है :12:।

कीचड़ और कमल :- प्रस्तुत उपन्यास में वर्णित मंदिरों का विवरण निम्नवत् है :-

:13: जाखुराजी के मन्दिर, :14: उजारी मन्दिर, चौंसठ योगिनियों के मन्दिर :15:, :16: मार्तण्डेश्वर में स्थित नीलकण्ठ महादेव जी के मन्दिर, रुद्रमहालय मन्दिर :17:, :18: मदन मन्दिर, :19: जनार्दन मन्दिर, :20: शिवनाथ तथा देवी जगदम्बा का मन्दिर :21:, :22: ओंकारेश्वर महादेव का मन्दिर, :23: भगवान श्री राम और लक्ष्मण जी का मन्दिर :24:।

महारानी दुर्गावती	1- पृष्ठ संख्या-120	कीचड़ और कमल	13-पृष्ठ- 4
	2- पृष्ठ संख्या-160		14-पृष्ठ-10
	3- पृष्ठ संख्या-155		15-पृष्ठ-20
	4- पृष्ठ संख्या-170		16-पृष्ठ-23
	5- पृष्ठ संख्या-284		17-पृष्ठ-198
	6- पृष्ठ संख्या-252		18-पृष्ठ-198
	7- पृष्ठ संख्या-278		19-पृष्ठ- 31
	8- पृष्ठ संख्या-277		20-पृष्ठ- 37
माधवजी सिन्धिया	9- पृष्ठ संख्या-304		21-पृष्ठ- 37
	10-पृष्ठ संख्या- 5		22-पृष्ठ- 42
	11-पृष्ठ संख्या- 20		23-पृष्ठ- 64
	12-पृष्ठ संख्या- 22		24-पृष्ठ- 64

---- पुष्पराजलाल शर्मा

देवगढ़ की दुकान :- प्रस्तुत उपन्यास में वर्णित मन्दिरों में - देवगढ़ में स्थित :1: विष्णु मन्दिर, दुर्गा देवी का मन्दिर :2:, जैन मन्दिर :3:, जैन मन्दिर :4: तथा देवगढ़ से ढेढ़ कोस दूर स्थित केदारनाथ का मन्दिर :5:, मखोड़ा में स्थित दुर्गा जी, शिवजी, मन्दिर :6: देवी तथा जैन मन्दिर, सुवर्ण ग्राम में स्थित शैव, जैन तथा :7: वैष्णवों के मन्दिर, रानीपुर :8: कालेजी जी का मन्दिर और जैन मन्दिर तथा गढ़ के समीप स्थित :9: केदारनाथ का लोक प्रिय मन्दिर विशेष उल्लेखनीय है।

: ग ढ ग :

गढ़ कुण्डार :- प्रस्तुत उपन्यास में :10: कुण्डार के भव्य किले का उल्लेख मिलता है।

मुक्ताबिया गढ़ :- प्रस्तुत उपन्यास में :11: दतिया के किले का उल्लेख मिलता है ।

उदनार:- प्रस्तुत उपन्यास में :12: अलीगढ़ का किला एवं :13: सोंकर गढ़ का उल्लेख मिलता है ।

महारानी दुर्गावती:- प्रस्तुत उपन्यास में :14: :15: :16: :17: :18: :19: :20: :21: :22: :23: :24: :25: निम्नलिखित भवनों का उल्लेख किया गया है :-

देवगढ़ की दुकान	1- पृष्ठ संख्या- 23	महारानी दुर्गावती	14-पृष्ठ संख्या- 1
	2- पृष्ठ संख्या- 83		15-पृष्ठ संख्या- 1
	3- पृष्ठ संख्या- 99		16-पृष्ठ संख्या-20
	4- पृष्ठ संख्या- 83		17-पृष्ठ संख्या-20
	5- पृष्ठ संख्या-189		18-पृष्ठ संख्या-38
	6- पृष्ठ संख्या-102 तथा 108		19-पृष्ठ संख्या-183
	7- पृष्ठ संख्या-150		20-पृष्ठ संख्या-167
	8- पृष्ठ संख्या-162		21-पृष्ठ संख्या-183
	9- पृष्ठ संख्या-169		22-पृष्ठ संख्या-185
गढ़ कुण्डार	10-पृष्ठ संख्या- 13		23-पृष्ठ संख्या-241
मुक्ताबियगढ़	11-पृष्ठ संख्या- 37		24-पृष्ठ संख्या-251
उदनार	12-पृष्ठ संख्या- 2		25-पृष्ठ संख्या-275
	13-पृष्ठ संख्या- 119		

--- वृन्दावनलाल वर्मा

:1: :2: :3:
चित्रशाला कमारसे:1: लाम्बी और पाटन का किलाखण्ड ।

मुगलखानी :- प्रस्तुत प्रबन्धाव में प्रदर्शित गये भवन निम्नवत् हैं :-

:4: :5: :6:
अम्बेरीका जिला, नरवर का जिला, मांडू का जिला, ग्वालियर

:7: :8: :9: :10:
का जिला तथा किले के मध्यस्थ बना चित्रशाला भवन, कर्णमहल, सुवरी महल,

:11: :12: :13: :14:
रानी महल, पुस्तकालय भवन, सभा-भवन तथा मुगलखानी की चित्रशालाएं ।

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई :- प्रस्तुत प्रबन्धाव में प्रदर्शित गये भवन निम्न

वत् हैं :-

:15: :16:
झांसी कालिका, किले केन्द्रस्थ स्थित राजमहल, महल के पार्श्व में

:17: :18: :19: :20:
नाट्यशाला, छोटी तुला के समीपस्थ बना महल, रंग महल, दतिया जिला,

:21: :22: :23:
पर्वतवती शाला महल, लक्ष्मीबाई की हवेली, पेशवा दरबार की हवेली, ओरछा

:24: :25: :26:
जिला, दतिया शाला रानी महल, इलाहाबाद का जिला, राजगढ़ का

:27: :28: :29: :30:
जिला, अशोकनगर का जिला, महाकोटा का जिला, कालपी का जिला,

:31: :32: :33:
गोलीनेर स्थित सहरी की हवेली तथा चित्रशाला पुस्तकालय भवन- नरवर

:34: :35: :36:
सुवरी, अंबेरा तथा ग्वालियर कालिका ।

महारानी दुर्गावती	1- पृष्ठ संख्या- 275	19- पृष्ठ संख्या-78
	2- पृष्ठ संख्या- 277	20- पृष्ठ संख्या-99
	3- पृष्ठ संख्या- 306	21- पृष्ठ संख्या-111
मुगलखानी	4- पृष्ठ संख्या- 94	22- पृष्ठ संख्या-111
	5- पृष्ठ संख्या- 93	23- पृष्ठ संख्या-115
	6- पृष्ठ संख्या- 155	24-पृष्ठ संख्या-125
	7- पृष्ठ संख्या- 1	25- पृष्ठ संख्या-165
	8- पृष्ठ संख्या- 193	26- पृष्ठ संख्या-204
	9- पृष्ठ संख्या- 234	27- पृष्ठ संख्या-319
	10-पृष्ठ संख्या- 362	28- पृष्ठ संख्या- 328
	11-पृष्ठ संख्या- 362	29- पृष्ठ संख्या-328
	12-पृष्ठ संख्या- 362	30- पृष्ठ संख्या-433
	13-पृष्ठ संख्या- 377	31- पृष्ठ संख्या-420
	14-पृष्ठ संख्या- 391	32- पृष्ठ संख्या-414
झांसी की रानी लक्ष्मीबाई	15-पृष्ठ संख्या- 59	33- पृष्ठ संख्या-451
	16-पृष्ठ संख्या- 59	34- पृष्ठ संख्या-456
	17-पृष्ठ संख्या- 59	35- पृष्ठ संख्या-492
	18-पृष्ठ संख्या- 59	36- पृष्ठ संख्या-492

----- वृन्दावनलाल वर्मा

अहिल्याबाई :- प्रस्तुत उपन्यास में :1: विन्ध्याचल के किले का उल्लेख मिलता है।

जीवन और कला :- प्रस्तुत उपन्यास में :2: कालिंजर के दुर्ग एवं महा मंत्री :3: बहुमावती के भवन का उल्लेख मिलता है।

देवगढ़ की मुस्कान :- प्रस्तुत उपन्यास में :4: बड़ी मसोदा कालिंजरा राजस्थान :5: देवगढ़का दुर्ग तथा नरवर के :6: किले का उल्लेख किया गया है ।

: गढ़ :

गढ़ कुण्डार :- प्रस्तुत उपन्यास में :7: :8: :9: :10: निम्नलिखित गढ़ मिलते हैं :-
कुण्डार गढ़, भरतपुरा की गढ़ी, अरोल की गढ़ी तथा देवराजाग में स्थित गढ़ गढ़ी ।

चित्रलेखा की पद्मिनी :- प्रस्तुत उपन्यास में :11: चित्रलेखा तथा :12: राजनगर के गढ़ी का उल्लेख किया गया है ।

कलाकार :13:
मुक्तिदेवगढ़ :- प्रस्तुत उपन्यास में कलौंजी के गढ़ का उल्लेख मिलता है।

जुआरिकुल :14: :15:
देवगढ़ :- प्रस्तुत उपन्यास में जुआरिकुल की गढ़ी तथा भरत गढ़ का उल्लेख मिलता है ।

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई :- प्रस्तुत उपन्यास में :16: गढ़ का गढ़, :17: मेंढ़ाखेरा की गढ़ी तथा :18: आमाखानी की गढ़ी, का उल्लेख मिलता है।

अहिल्याबाई	1- पृष्ठ संख्या- 125			10- पृष्ठ संख्या- 42	
जीवन और	2- पृष्ठ संख्या- 80	चित्रलेखा की		11- पृष्ठ संख्या- 60	
कला	3- पृष्ठ संख्या- 141	पद्मिनी		12- पृष्ठ संख्या- 132	
देवगढ़ की	4- पृष्ठ संख्या- 43	कलाकार		13- पृष्ठ संख्या- 99	
मुस्कान	5- पृष्ठ संख्या- 83	मुक्तिदेवगढ़		14- पृष्ठ संख्या- 26	
	6- पृष्ठ संख्या- 193			15- पृष्ठ संख्या- 8	
		झाँसी की		16- पृष्ठ संख्या- 338	
गढ़ कुण्डार	7- पृष्ठ संख्या- 11	रानी लक्ष्मी		17- पृष्ठ संख्या- 337	
	8- पृष्ठ संख्या- 8	बाई		18- पृष्ठ संख्या- 319	
	9- पृष्ठ संख्या- 45				

------ कुण्डाकलाकार धर्म

मृगनयनी :- प्रस्तुत उपन्यास में पार्वती :1: तथा नरवर :2: गढ़ का उल्लेख किया गया है ।

महारानी दुर्गावती :- प्रस्तुत उपन्यास में मन्दिरगढ़ :3: रायसेनगढ़ :4:, सिंगौरगढ़ :5: अमानगढ़ :6: चौरागढ़ :7:, चुनारगढ़ :8:, रोहतगढ़ :9:, सरियागढ़ :10:, देवगढ़ :11: चन्देरगढ़ :12:, रायगढ़ :13:, तथा गढ़ाकोटा :14: गढ़ का उल्लेख किया गया है ।

कीचड़ और कमल :- प्रस्तुत उपन्यास में ' कालिंजर के जिरात :15: गढ़ का उल्लेख किया गया है ।

देवगढ़ की मुसकान :-प्रस्तुत उपन्यास में देवगढ़ :16: का उल्लेख मिलता है ।

मृगनयनी	1- पृष्ठ संख्या-408		9- पृष्ठ संख्या- 117
	2- पृष्ठ संख्या- 93		10-पृष्ठ संख्या- 241
महारानी दुर्गावती	3- पृष्ठ संख्या- 1		11-पृष्ठ संख्या- 241
	4- पृष्ठ संख्या- 31		12-पृष्ठ संख्या-266
	5- पृष्ठ संख्या- 32		13-पृष्ठ संख्या- 283
	6- पृष्ठ संख्या- 33		14-पृष्ठ संख्या- 283
	7- पृष्ठ संख्या- 38	कीचड़ और कमल	15-पृष्ठ संख्या- 41
	8- पृष्ठ संख्या-113		16- पृष्ठ संख्या- 80

---- वृन्दावनलाल वर्मा

/1/ : शिल्प- कला :

प्रस्तुत में भी बुन्देलखण्ड के जन-जीवन में शिल्पकला का विशेष महत्व रहा है, जिसके विभिन्न रूपों को वर्मा जी ने अपने ऐतिहासिक उपन्यासों के माध्यम से व्यक्त किया है, जिनका उल्लेख प्रस्तुतशीर्षक के अंतर्गत किया जा रहा है ।

/अ/ चित्र-कला :

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई :- प्रस्तुत उपन्यास में, मुख्यतः झाँसी, बुन्देलखण्ड के उच्चकोटि के चित्रकारों का प्रतिनिधित्व करता है ।[1]

मृगनयनी :- प्रस्तुत उपन्यास के अंतर्गत ग्वालियर के राज महल में सुशिक्षित राजा मानसिंह, रानी मृगनयनी, बीजूनी तथा आन्तोरसा के विभिन्न चित्र, यहाँ के जन-जीवन में व्याप्त चित्र कला को प्रतिबिम्बित करते हैं। जब कुम्हारने तथा चित्रकला चित्रों से प्रेरित होकर मृगनयनी एक उच्च कोटि की चित्रकार बन जाती है ।[2]

महारानी दुर्गावती :- प्रस्तुत उपन्यास में, राम खेरी के व्यापार व्यवसायों तथा दुर्गावती देवी के भव्य चित्रों का निर्माण, नीलकण्ठ और भैरव देव के मन्दिरों के आंतरिक भाग में बने विभिन्न चित्रों तथा विभिन्न नक्काशीदार वस्तुओं के माध्यम से बुन्देलखण्ड की उत्कृष्ट कला को उजागर किया है ।[3]

झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई 1- पृष्ठ संख्या- 8

मृगनयनी 2- पृष्ठ संख्या- 193,392

महारानी दुर्गावती 3- पृष्ठ संख्या- 23,24,30,119

---- कुन्दनलाल वर्मा

छीछड़ और कमल :- प्रस्तुत उपन्यास में 'लाछड़' के भवन की दीवालों पर निर्मित लहरंगी चित्रों मन्दिरों की भित्तियों पर बने देवी-देवताओं, अप्सराओं और गन्धर्वों के क्रीड़ा-चित्रों तथा यक्ष-यक्षियों के विविध मुद्राओं में बने हुये विभिन्न चित्रों के माध्यम से बुन्देलखण्ड की चित्रकला को उजागर गया है ।[1]

देवगढ़ की मुस्कान :- प्रस्तुत उपन्यास में उजागरी गयी चित्रकला के अंतर्गत, देवगढ़ के मन्दिरों के प्रस्तर फलकों पर निर्मित वाल्मीकि रामायण के विविध कोमलतम प्रसंगों से संबंधित मनोरम चित्र, जहाँ की उत्कृष्ट चित्रकला को उद्घोषित करते हैं ।[2]

ग/ नृत्य :

कलगार :- प्रस्तुत उपन्यास में 'लटकी, धूंधा, करमा, गट-नृत्य एवं लाठ्ठ नृत्यों का उल्लेख किया गया है ।[3]

काँसी की रानी :- प्रस्तुत उपन्यास में कत्थक नृत्य तथा दुर्गाजी के रंग मंचीय नृत्यों उजागर गया है ।[4]

मुनमुनी :- प्रस्तुत उपन्यास में होली के अवसर पर नर-नारियों द्वारा किये जाने वाले नृत्यों एवं लाठ्ठ नृत्य का उल्लेख किया गया है ।[5]

टूटे काँटे :- प्रस्तुत उपन्यास में नृत्यांग के द्वारा प्रस्तुत किये जाने वाले मनमोहक नृत्य का उल्लेख किया गया है ।[6]

छीछड़ और कमल 1- पृष्ठ संख्या- 23
देवगढ़ की मुस्कान 2- पृष्ठ संख्या-109
कलगार 3- पृष्ठ संख्या- 77 तथा 187
काँसी की रानी 4- पृष्ठ संख्या-169 तथा 317
मुनमुनी 5- पृष्ठ संख्या- 11 तथा 278
टूटे काँटे 6- पृष्ठ संख्या-148

---- वृन्दावनलाल वर्मा

महारानी दुर्गावती :- प्रस्तुत उपन्यास में करमा, सैला तथा पेंडुला आदि लोक नृत्यों का उल्लेख किया गया है। इन नृत्यों में लोक नर-नारी पैरों में घुंघरू, कमर में रंगीन धोती, पीठ पर तेंदू की छाल, सिर पर मोर मुकुट या नील कण्ठ के पंख लगाकर नृत्य करते हैं। स्त्रियाँ, चांदी, मूंगे और कौड़ियों के गहने पहन कर करमा नृत्य करती हैं। नृत्य में, सूप के पैसरों का भी प्रयोग किया जाता है। इन नृत्यों में ढोल, मृदंग, मंजीरे, बांसे तथा सींग बाजे का भी प्रयोग करते हैं।[1]

लोकटू और कमल :-प्रस्तुतउपन्यास में स्त्रियों तथा पुरुषों के सजीले, लचीले एवं उद्दीपक नृत्य प्रदर्शनों का उल्लेख किया गया है। मन्दिर में प्रतिमा सुर-सुन्दरी का अभिनय, गान, नृत्य पूरी रात, भक्तिमा लेकर प्रस्तुत करती है।[2]

देवन्तु की मुस्कान :- प्रस्तुतउपन्यासमें नागवंशा तथा कुबेर वंशा के व्यापार उत्सवों में किये जाने वाले रंग मंचीय नृत्यकला का उल्लेख किया गया है।[3]

जब तक थी:-प्रस्तुत उपन्यास में बस्ती के युवतियों को पैरों में बांधकर घाघरा नृत्य करने का विशेष उल्लेख मिलता है।[4]

(ख) गायन :

मधु कुंजार :- प्रस्तुत उपन्यास में, स्त्रियों द्वारा, वाद्य-यंत्रों के स्वर में स्वर मिलाकर गाये जाने वाले गीतगायन का उल्लेख मिलता है।[5]

महारानी दुर्गावती	1- पृष्ठ संख्या- 1,6,9,164
लोकटू और कमल	2- पृष्ठ संख्या- 21
देवन्तु की मुस्कान	3- पृष्ठ संख्या- 223
जब तक थी	4- पृष्ठ संख्या- 5
मधु कुंजार	5- पृष्ठ संख्या- 370

---- मुन्नालाल शर्मा

मुलाकिबमु :- प्रस्तुत उपन्यास में किसी गायिका कामायन और मीराबाई लीलकीर की गायकी का उल्लेख किया गया है । :1:

उपनार :- प्रस्तुत उपन्यास में विवाह के अवसर पर सामूहिक रूप से स्त्रियों द्वारा गाये जाने वाले गीतों का उल्लेख मिलता है । :2:

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई :-प्रस्तुत उपन्यासमें विवाहिक गीतों,नृत्यगीतों नृत्य तथा लोकगीतों का उल्लेख किया गया है । :3:

मृगनयनी :- प्रस्तुत उपन्यास में होली के अवसर पर गाये जाने वाले रसिये, फागों और गीतों का उल्लेख किया गया है। बिन्धताण्डव ग्रोत तथा वेणु की प्रसिद्ध गायकी को भी प्रदर्शित गया है । :4:

टूटे काँटे :-प्रस्तुत उपन्यास में मूरजाई तथा सखाजिनों द्वारा प्रस्तुतकिये जाने वाले नृत्यगानों,प्रणयगीतों तथा तन्मयता के साथ गाये जाने वाले भजनों का उल्लेख किया गया है । :5:

महारानी दुर्गावती :-प्रस्तुत उपन्यास में विवाह तथा उत्सवों में नर-नारियों द्वारा सम्पन्न होने वाले सामूहिक नृत्य-गानों ,शास्त्रीय संगीत की लयों पर गाये जाने वाले लोकप्रिय गीतों का उल्लेख किया गयाहै। :6:

रामचन्द्र हीरानी :-प्रस्तुत उपन्यास में होली के अवसर पर गाये जाने वाले लोकगीतों का उल्लेख किया गया है । :7:

मुलाकिबमु 1- पृष्ठ संख्या- 26
उपनार 2- पृष्ठ संख्या- 9
झाँसीकीरानी 3- पृष्ठसंख्या- 42
मृगनयनी 4- पृष्ठ संख्या- 11,21,296 तथा 303
टूटे काँटे 5- पृष्ठ संख्या- 32
महारानी दुर्गावती 6- पृष्ठ संख्या- 153,181 तथा 183
रामचन्द्र हीरानी 7- पृष्ठ संख्या- 7

---- पृष्ठसंख्या सहित

लोरी आग :- प्रस्तुत उपन्यास में अवरंग तथा सदा रंग के ख्याल तराने बताये गये हैं । :1:

कीचड़ और कमल :-प्रस्तुत उपन्यास में सुर-सुन्दरी प्रतिमा तथा महान्तजी के मुख्यगानका उल्लेख किया गया है । :2:

देवगढ़ की मुस्कान :-प्रस्तुत उपन्यास में कुमारवसंतासथा गायकवसंता के मधुर गायन को बताया गया है । उपन्यास में तिलकी ठुमरी गाये जाने वाले देवी जी के सामूहिक गीत भजनों का भी उल्लेख किया गया है । :3:

अब क्या हो :-प्रस्तुत उपन्यास में हिन्दी गीत गजल तथा शास्त्रीय संगीत :4: का उल्लेख मिलता है । :5:

:6: - मुख्य-मुख्य राग-रागिनी :

मधु कुम्हार :- प्रस्तुत उपन्यास में गौर तथा दीपक रागों का उल्लेख मिलता है। :6:

काशी की रानी लक्ष्मीबाई :-प्रस्तुत उपन्यास में आठ अंगों सहित कुंज वन तथा होरी रागों को बताया गया है । :7:

महारानी दुर्गावती :- प्रस्तुत उपन्यास में कुकुभ राग का उल्लेख किया गया है। :8:

टूटे काँटे :- प्रस्तुत उपन्यास में विहाग राग तथा राग काफी, रागिनी का उल्लेख मिलता है । :9:

मृगनयनी :- प्रस्तुतउपन्यास में कुकुभ, होरी विहाग, प्रबन्ध, कजरी, टोड़ी, राग टोड़ी, अलाप, तराना, मूजरी, मालमूजरी, बहुलमूजरी तथा मंगल मूजरी आदि राग-रागनियों का उल्लेख किया गया है । :10:

लोरीआग	1- पृष्ठ संख्या- 14	मधु कुम्हार	6- पृष्ठ संख्या- 470
कीचड़औरकमल	2- पृष्ठ संख्या- 61	काशी की रानी लक्ष्मीबाई	7- पृष्ठ संख्या- 73 तथा 72
देवगढ़ की मुस्कान	3- पृष्ठ संख्या-223	महारानी दुर्गावती	8- पृष्ठ संख्या- 229
अब क्या हो	4- पृष्ठ संख्या- 9	टूटे काँटे	9- पृष्ठ संख्या- 139/38
	5- पृष्ठ संख्या- 44	मृगनयनी	10-पृष्ठ संख्या- 304,301 332;384 381,430

----- सुन्दरलाल शर्मा

माधव की तिलिस्मा :- प्रस्तुत उपन्यास में भीम पलासी राग का उल्लेख किया गया है :1:

कीचड़ और कमल :- प्रस्तुत उपन्यास में' झुमरा, सिंदूरलाल, अब, बसंतारा तथा अटलाल का उल्लेख मिलता है :2:

देवगढ़ की मुसकान :- प्रस्तुत उपन्यास में गीत राग का उल्लेख किया गया है। :3:

अ/ कुमाऊँखण्ड के गीत :

गढ़ कुमाऊँ :- प्रस्तुत उपन्यास में आंचलिक गीत की दो पंक्तियाँ दर्शायी गयी है :-

" अन्न फूली डारो ,
सिलुवा ने अर्थ पारो ।" :4:

सिंहासन की परछाईयाँ :- प्रस्तुत उपन्यास में आंचलिक गीत का उल्लेख मिलता है :-

" मलिनियाँ, फुलवा ल्याओ नन्दन वन के ,
ओढ़ी- नोखी छतिया उपर बहार,
यहाँ जीरा- केसुरा लगाई फुलवार ।

" मलिनियाँ, फुलवा ल्याओ नन्दन वन के ,
ओटो की ये मालिन्ह लगे छले केश,
फुलवा लीने कमल के देश।

" मलिनियाँ- फुलवा ल्याओ नन्दन वन के ,
लीन-लीन फुलवा लगाई बड़ी रात,
उठ गये फुलवा, रह गयी बास । :5:

" मलिनियाँ- फुलवा ल्याओ नन्दन वन के।

माधव की तिलिस्मा 1- पृष्ठ संख्या-309
कीचड़ और कमल 2- पृष्ठ संख्या-110
देवगढ़ की मुसकान 3- पृष्ठ संख्या-256
गढ़ कुमाऊँ 4- पृष्ठ संख्या-137
सिंहासन की परछाईयाँ 5- पृष्ठ संख्या-339 ---- वृन्दावनलाल वर्मा

कजनार :- प्रस्तुत उपन्यास में लगे तथा त्योहारिक गीतों का उल्लेख किया गया है। त्योहारिक गीत की दो पंक्तियां निम्नवत्‌ हैं :-

" कजनार की कली, केला की कली,
केला फूल फीकली, हुन्दा सोडल लटरिया ।" :1:

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई :- प्रस्तुत उपन्यास में फागों, पंवारिक गीतों तथा रायसों का उल्लेख मिलता है । रानी द्वारा गाये रायसे की पंक्तियां निम्नवत्‌ हैं :-

" जो भाँतो को लटी सबै,
सिंधि लाय लाखन भार ।" :2:

मृगनयनी :- प्रस्तुत उपन्यास में प्रचलित गीत बुन्देलखण्ड के गीत निम्नवत्‌ हैं :-

(क) होरी :-

/1/ उरझो न श्याम कली मानो,
पट मेरे चुनरिया छिन तानो ।
छैल राधा को राज दुरो है,
गोकुल की गुजरिया भल जानो।
उरझो न श्याम कली मानो ।" :3:
:: :: :: ::

/2/ मान होरी खेल री, राधा मान होरी खेल री,
प्रेम प्रीति की गांठ पड़ी है, जो मन भावो सो खेल री।
राधा मान होरी ----------।" :4:

/3/ लाडुली मान न करिये, होरी के दिनन में,
कौन सिधारो आम ------
अरक दिना को खेल छाडि दे, फेरी हो औरे लाम,
लाडुली, मान न करिये ।" :5:

कजनार 1- पृष्ठ संख्या- 13
झांसी की रानी लक्ष्मीबाई 2- पृष्ठ संख्या-154
मृगनयनी 3- पृष्ठ संख्या-332
4- पृष्ठ संख्या-338
5- पृष्ठ संख्या-378 ------ वृन्दावनलाल वर्मा

(ख) श्रृंगारिक गीत :-

"आज घड़ी में पिय के जगाये,
आज मेरे प्रिय मोरे घर आये,
उमंगन में नींद कहां, जिन नैनन में आय समाये ।" :1:

महारानी दुर्गावती :- प्रस्तुत उपन्यास में बुन्देलखण्डी लोकगीतों तथा भजनों का उल्लेख किया गया है । :2:

रानमहू की रानी :- प्रस्तुत उपन्यास में महारानी की पंक्तियां निम्नवत्हैं:-

"मूंद मुख डांडन को पुकारो को पुकारे हार्दे,:::::
:: मारन कर लक्ष्मन हेग बहुत को कालिका।" :3:

शीशगढ़ और कमल :- प्रस्तुत उपन्यास में विवाह की रूढ़ि सम्बन्धी गीतों का उल्लेख किया गया है तथा युद्ध के वीभत्स चित्रों को निम्नवत् उकेरा गया है :-

" कहूं रुण्ड परे, कहूं मुण्ड परे ,
कहूं रक्त की धार,पुकार रही ।" :4:

देवमहू की मुस्कान :-प्रस्तुतउपन्यास में प्रयोग गये बुन्देलखण्ड के गीत निम्नवत् हैं :-

/क/ मइया को जगाऊं,चिड़ैयन में भाग भाग,
सोने की थाली में भोजन जमाऊं,मइया को खिवाऊं आऊं ।
सोने के भगुआ,गंगाजल पानी,मइया को पिवा आऊं ।
बरना मचाती है लीकरा लगाऊं,मइया को रचा आऊं।
सुवन आरती लेवा खिलाऊं,मइया को सुला आऊं ।" :5:

मृगनयनी	1- पृष्ठ संख्या- 11	
महारानी दुर्गावती	2- पृष्ठ संख्या- 9	
रानमहू की रानी	3- पृष्ठ संख्या- 98	
शीशगढ़ और कमल	4- पृष्ठ संख्या-203	
देवमहू की मुस्कान	5- पृष्ठ संख्या- 2	----- वृन्दावनलाल वर्मा

/ख/ मार्ग, ईश्वरदत्त मोरे आँगने आँवे, सिंदूर दे में मइया लागो,

जहा देखि मइया अंगना में आँवे, उहा देखि मुसकानी ।

--सिंदूर दे----

सूता देख मइया आँगन में आँवे, पूता देख मुसकानी ,

--सिंदूर दे----

हमरे यहाँ आँवे आज आद भवानी, उहाँ देखिका डारो ।

--सिंदूर दे----

चन्दन पटली चौका मार्ई डारें, ऐ का सूता पसारें सोड पाँव,

--सिंदूर दे----

अगर तो मंदि में मइया बाँधो पलिया, जो मोरे सुफल रमाये।

--सिंदूर दे----

लाली अंगुरिया, लाली अंगुरिया, लागति अइसा फहराये।

--सिंदूर दे-----

रहो ऐ सुम सब सुख में मगन ।

--सिंदूर दे----:+:

/ङ/ बुन्देलखण्ड के रीति रिवाज:-

जगनिक ने अपने ऐतिहासिक उपन्यासों में बुन्देलखण्ड के विभिन्न रीति-रिवाजों का उल्लेख किया है, जिनका विवरण प्रस्तुत शीर्षक के अंतर्गत किया जा रहा है :-

गढ़ कुण्डार :- प्रस्तुत उपन्यास में, शरीफा के अवसर पर अंकिया पाँति किया

---:1:---

जाना, विवाहों अवसर पर करना, रनवासों में स्त्रियों की प्रथा पायी

:2:

जाना, सगाई के समय वर को पान, मालिया आदि भेंट करना, विवाह

:3:

में बारातियों को पान-बुन्देटा अर्पित करना तथा घोड़िका नृत्य के पूर्व

वर का जाकर लकड़ी मारने की रीतियों को दर्शाया गया है ।

देखए जीवनकाम 1- पृष्ठ संख्या- 36

गढ़ कुण्डार 2- पृष्ठ संख्या- 93

3- पृष्ठ संख्या- 196

4- पृष्ठ संख्या- 283 ----- वृन्दावनलाल वर्मा

विराटा की पद्मिनी :- प्रस्तुत उपन्यास में दिये गये रीति रिवाज निम्नवत् हैं :-

मदर लोहारिन के बिन पत विराटा जन समुदायद्वारा सीधे गलियों में सामूहिक स्नान करना,सती प्रथा[:1:] और घोडर प्रथा का पालन करना[:2:] और राजा की सवारी के सामने दूसरे को भी पालकी से नीचे उतरना पड़ता था।

मुसाहिब बु :- प्रस्तुत उपन्यास में बताये गये रीति-रिवाजों में राज्य दण्ड-रीति के अंतर्गत,अपेक्षा को सूली पर चढ़ा देना या उसकीसम्पत्ति जब्त करके उसे देश से निकाल देने का दण्ड दिया जाना[:3:],घरानों में राय मशवरा लेना और राजा कीसवारी निकलना आदि प्रमुख रीति-रिवाज हैं[:4:] ।

उमराव :- प्रस्तुत उपन्यास में बताये गये रीति-रिवाजों के अंतर्गत,बेटियों में सदार के साथ भांवर डालने की रीति[:5:],विवाहमें वर-वधू दोनों के घर नकली बेटम की रीति[:6:],मृत्योपरांत घर में सूतक मनाने का रिवाज[:7:] तथा राय गोड़ो में पुनर्विवाह या विधवा विवाह न करने की रीति का उल्लेख किया गया है[:8:] । पर्दा प्रथा पर भी प्रकाश डाला गया है ।

झांसी की रानी :- प्रस्तुत उपन्यास में रीति-रिवाजों के अंतर्गत "समाज में बालदान की रीति[:9:],विवाह के पूर्व वर-वधू को उबटन लगाने की प्रथा[:10:], ससुराल में वधू का नया नाम रखने की रीति[:11:] ,घर -घर में राखी

विराटा की पद्मिनी	1- पृष्ठ संख्या- 45	
	2- पृष्ठ संख्या-347	
मुसाहिब	3- पृष्ठ संख्या- 79	
	4- पृष्ठसंख्या- 5	
उमराव	5- पृष्ठ संख्या- 2	
	6- पृष्ठ संख्या- 17	
	7- पृष्ठ संख्या- 125	
	8- पृष्ठ संख्या- 18	
झांसी कीरानी	9- पृष्ठ संख्या- 37	
	10- पृ० संख्या- 20	
	11-पृष्ठ संख्या- 74	------ पुन्नालालशर्मा

कराने का रिवाज, स्त्रियों द्वारा अपने पति का नाम न लेने का रिवाज, ऐसा उपन्यासिके लोगों के द्वारा अनेक आचरण करने की प्रथा[11], नीची जाति के लोगों द्वारा बनाया भोजन ऊँची जाति के द्वारा ग्रहण न करने की प्रथा, दरबार में घण्टी बाँधने कार्यवाही[12], मृतक के घर घेरा करने की रीति[13], घोड़े से गाय या बछिया मर जाने पर मारने वाले के द्वारा दण्ड देने की रीति[14] तथा देवदासी प्रथा का उल्लेख मिलता है ।

मुण्डमणी :- प्रस्तुत उपन्यासमें, मुसरों में कन्यावस्था भय में विवाह न होना[15], विवाह उच्च कन्या का भी ग्रह माना जाना[16], विवाहमें भोजन करने की रीति कायम किया जाना, नई दुलहिन के हाथ से भोजन परोसा जाना[17], शीघ्र-विवाह की रीती देखना[18], सती प्रथा[19] और बोहर ग्रह कायम किया जाना[20], देवदासी द्वारा देवताओं के चरण स्पर्श किया जाना तथा नाच कन्याओं द्वारा देवों में रासलीला आचरण करने की रीति[21] का उल्लेख किया गया है ।

टूटे काँटे :- प्रस्तुत उपन्यासमें अनेक ऐसे रीति-रिवाजों के अनेक-रूप से निकलते समय यदि किसी को छींक आ जाये, तो पुनः घर से बाहर निकलना, मृत्यु के उपरांत मृतक के परिवारजनों द्वारा उसकी आत्मा की शान्ति के लिये दान पुण्य करना, ब्राह्मणों को भोज कराना[22] तथा भिन्न जातियों में शादीयाँ किये जाने का उल्लेख किया गया है ।[23]

रीति की टीपें :- 1- पृष्ठ संख्या- 41
2- पृष्ठ संख्या-111
3- पृष्ठ संख्या-1036
4- पृष्ठ संख्या-332
मुण्डमणी 5- पृष्ठ संख्या- 6
6- पृष्ठ संख्या-187
7- पृष्ठ संख्या-393
8- पृष्ठ संख्या- 18
9- पृष्ठ संख्या- 69
10-पृष्ठ संख्या-239
11-पृष्ठ संख्या-291
टूटे काँटे 12-पृष्ठ संख्या- 73
13-पृष्ठ संख्या-213 ------ वृन्दावनलाल वर्मा

महारानी दुर्गावती :- प्रस्तुत उपन्यास में ऐतिहासिक रीति-रिवाजों का उल्लेख किया गया है :-

गोंड़ जाति की स्त्रियों द्वारा पर्दा करने की रीति,[1] गोंड़ों द्वारा अतिथिसत्कार की जाने पर ही अपनी कन्या का विवाह करने की रीति,[2] रानियों और पटरानियों का पालकी में बैठकर महल से बाहर निकलने का रिवाज, देवर द्वारा भाभी के चरण स्पर्श करने का रिवाज,[3] पुत्र जन्मोत्सव धूमधाम से मनाने की रीति, राजाओं की सभा में राजकुमारी के पिता के द्वारा नीलकण्ठ पक्षी उड़ाया जाना और वरपक्षी पिताओं के सिर पर बैठ जाये, उसी से राज कुमारियों विवाह कर देने की रीति,[4] वर वधू पर धूले चावल, पुष्प बरसाने और पानी में घुली हुई हल्दी वर वधू पर छड़कने का रिवाज, खाट बांध कर भांवर डाले जाने की रीति, मृतक की तेरहवी के दिन ब्राह्मण भोजन कराने की प्रथा, नाग पूजा और नौ नागा की पूजा करने की रीति, स्त्रियों द्वारा एक मास का कार्तिक पूजा-स्नान करने की रीति, विधवा विवाह, पुनर्विवाह सगाई प्रथा, बराबरे के लिए राजाओं सवारी निकलने का रिवाज, गोंड़ों द्वारा खेतों में गायों को जोतने की प्रथा[5] पति राजा की मृत्यु के एक वर्ष के उपरांत उसके पुत्र का राज तिलक करने की रीति।"

मुक्त पिंजरा :- प्रस्तुत उपन्यास में दास-प्रथा,[6] स्वयंवर प्रथा[7] तथा पुत्रों द्वारा पूजा लेने के रिवाज[8] को अपनाया गया है।

महारानी दुर्गावती
1- पृष्ठ संख्या-4
2- पृष्ठ संख्या-7
3- पृष्ठ संख्या-161
4- पृष्ठ संख्या- 36
5- पृष्ठ संख्या-256

मुक्त पिंजरा
6- पृष्ठ संख्या- 5
7- पृष्ठ संख्या-261
8- पृष्ठ संख्या-53 ---- वृन्दावनलाल वर्मा

रामचन्द्र की रानी :- प्रस्तुत उपन्यास में :1: अरीथा, तथा अंगे या खिरिया बोली :2: लेने की रीति बतायी गयी है, जिसमें पहलवाले बांस में मुट्ठ बांध कर रख का लटका दिखाया गया है, जो पूरब बांस परचूकर मुट्ठ उतारता है, उसे खिरिया मारती चोटती है, उस समय वे गीत गाती हैं, वही खिरिया बोली कहते हैं ।

सीताराम :- प्रस्तुत उपन्यास में बतायी गयी रीति रिवाजों में मुसलमानों में एक की मां से जन्मे लड़के लड़कियों को छोड़कर अन्य किसी भी रिश्तेदार के लड़के लड़कियों में निकाह होने की रीति, एवं पंचमी तक बुन्देलखण्ड में :3: बोली लेने जाने की रीति तथा माथे से छुवाकर पान खाने की :4: रीतिका उल्लेख किया है।

माधव की शिक्षायें :- प्रस्तुत उपन्यास में मु.प्र में मरने-मारने पर उतारू मु.प्र को जाने वाले खिलाड़ी द्वारा अपने घोड़े के पैर में चांदी का कड़ा डालने की :5: रीति, :6: हरना देने की रीति, :7: गोद लेने की रीति, तथा सेनिकों द्वारा रण भूमि में जाने से पूर्व दाय और मुर्ख दाती से रगड़ने :8: की रीति का उल्लेख किया गया है।

अहिल्याबाई :- प्रस्तुतउपन्यासमें :9: अरथ और अरीथा की रीति तथा बरातों में :10: खेवाओं के जाने और मुत्यकरने के रिवाज का उल्लेख किया गया है ।

जीवन और कला :- प्रस्तुतउपन्यासमें :11: विद्यारम्भ के समयहवन पूजन करने की रीति, देवताओं के प्रातःकालीन दर्शनों को शुभ मानना तथा उन्हें :12: मंगलमूर्ति मानने की रीति, सुर सुन्दरियोंद्वारा वर्षा न करने का :13: रिवाज, देवी देवताओं के :14: द्वारा पेंड़ भरकर लाखदान प्रदान करने की रीति, अक्ष तृतीया के दिन :15: खेत में कलश मूंठ डालने की रीति, मु.प्र मलेनसर राजा को पुष्प दान आदि :16: चढ़ाने की रीति तथा मृतक के शव से बदला लेने के लिये "बोहती की रीति :17: बतायी है।

रामचन्द्र की रानी 1- पृष्ठ०-11, 2- पृष्ठ०-29
सीताराम 3- पृष्ठ०-12 4- पृष्ठ०- 9
माधव की शिक्षायें 5- पृष्ठ०- 7 6- पृष्ठ०-17 7-पृष्ठ०-113 8-पृष्ठ०-240
अहिल्याबाई 9- पृष्ठ०-77 10-पृष्ठ०-49
जीवन और कला 11- पृष्ठ०-14 12-पृष्ठ०-68 13पृष्ठ०- 68 ,14-पृष्ठ०-87
15- पृष्ठ०+26 16-पृष्ठ०-137 17-पृष्ठ०-39

----- वृन्दावनलाल वर्मा

देवमू जीमुलाम :- प्रस्तुत उपन्यास में उठायि गये रीति-रिवाजों में उपरोक्त राज घरानों में स्त्रियों द्वारा घेरों में स्वर्णाभूषण धारण करने की रीति,:1: वेश्याओं के मन्दिरों में औरतों को तथा हिन्दुओं के मन्दिरों में अछूतों को प्रवेश न करने देने की रीति,:2: विधवाओं के अवसर पर रथयात्रा निकालने का रिवाज देवी देवताओं को प्रसन्न करने के लिये बलि चढ़ाने की प्रथा,:3: पुत्री द्वारा:4: प्रथा के कारण उपवास न करने की रीति:5: का उल्लेख मिलता है ।

अब क्या हो :- प्रस्तुत उपन्यास में पत्नियों की मृत्यु के उपरांत उनकी क्रिया कर्म न करना और न तेरहवीं आदि का आयोजन करना,:6: राजा के रनिवास में जाने पर रानियों द्वारा उनके पद पखारना और नाम्यापर्ण करने की रीति:7: का उल्लेख है ।

/9/ कुम्भेलाण्ड के मनोरंजन :

जर्मा जी ने कुम्भेलाण्ड में प्रचलित मनोरंजन के विविध साधनों को अपने ऐतिहासिक उपन्यासों में उठाया है,जो निम्नवत् हैं :-

गढ़ कुण्डार :- प्रस्तुत उपन्यास में उठायि गये मनोरंजन के साधनों में महोत्सवों द्वारा प्राप्त मनोरंजन,:8: दूतों के आगमन की रीति,:9: शिकार खेलना,:10: तथा मेर-मराठों:11: का उल्लेख मिलता है ।

खिराटा की पद्मिनी :- प्रस्तुत उपन्यास में भजन-कीर्तन,रामायण गान तथा नाटकों से प्राप्तहोने वाले मनोरंजनों तथा युद्ध में विजय पाने के उपरांत मनाये जाने वाले आनन्दोत्सवों:12: का उल्लेख किया गया है ।:13:

देवमू की मुस्कान	1- पृष्ठ संख्या-35	गढ़ कुण्डार	8-पृष्ठ संख्या- 469
	2- पृष्ठ संख्या-97		9-पृष्ठ संख्या-/202
	3- पृष्ठ संख्या-102		10-पृ0 संख्या- 87
	4- पृष्ठ संख्या-110		11-पृ0 संख्या- 202
	5- पृष्ठ संख्या-249	खिराटा की	12-पृ0 संख्या- 97
अब क्या हो	6- पृष्ठ संख्या- 19	पद्मिनी	13पृ0 संख्या- 102
	7- पृष्ठ संख्या- 68		

------ कुम्भाराजवास वर्मा

:1: :2:

मुताबिक :- प्रस्तुत उपन्यास में ' शिकार खेलना, बराबर में दरबार लगना

:3:

रनिवास में उत्सव मनाना, आदि प्रकृत है ।

:4:

उपचार :- प्रस्तुत उपन्यास में चित्रशालाओं में गाये जाने वाले गीतों तथा

:5:

कथा, जुआ और सारुल नृत्यों से प्राप्त मनोरंजनों का उल्लेख मिलता है ।

मुगलानी :- प्रस्तुत उपन्यास में बताया गया है कि मुगलसाम्राज्य में ' होलीका

त्योहार -पांच दिन तक उल्लासपूर्वक मनाया जाता रहा है । यहां लोग रंग

:6: :7:

गुलाल तथा कीच-चिखाल से खेलते हैं। होली में रसियें भी गाये जाते हैं।

:8:

गायन वादन, चित्रकारी तथा साहित्य भी मनोरंजन के साधन माने जाते हैं ।

:9:

नट नृत्य और उनके खेल तमाशों तथा कलाबाजियों को देखकर लोग भरपूर

मनोरंजन करते हैं । सभी पुरुषों का मल्लयुद्ध तथा पशु युद्ध भी मनोरंजन

:10: :11:

के साधन हैं ।कौमुदी महोत्सव तथा वसन्तोत्सव का भी उल्लेख मिलता है ।

झांसी की रानी :- प्रस्तुत उपन्यास में ' नाटकों को देखना तथा अभिनयों

:12:

करना, नृत्य गान से प्राप्त मनोरंजन, सिन्धुरोत्सव/बरदी-दु-दु/ उल्लास पूर्वक

:13:

मनाना, पुत्र जन्म में 'विधिवत्प्रकार से उत्सवमनाना तथा भरपूर मनोरंजन

:14:

प्राप्त करने का उल्लेख मिलता है ।

टूटे कांटे :- प्रस्तुत उपन्यास में मुख्य में विजय प्राप्ति के उपरांत नृत्य गानों

:15:

साथ सैनिकों द्वारा मनाये जाने वाले उत्सव, स्त्रियों द्वारा सज्जा के साथ

:16: :17:

रसिये गाना, बराबर का उत्सव हंस गान के साथ मनाना तथा सवारी निकालना,

---

मुताबिक	1-पृष्ठसंख्या- 1	2- पृष्ठ संख्या- 5	3- पृष्ठ संख्या- 32
उपचार	4-पृष्ठ संख्या-9	5- पृष्ठ संख्या-79/1[illegible]	
मुगलानी	6-पृष्ठ संख्या-3/4	8- पृष्ठ संख्या-18	9-पृष्ठ संख्या- 95
6-/	9क-पृष्ठ संख्या-107	10-पृष्ठ संख्या-219	[illegible]
	11-पृष्ठसंख्या- 301		
झांसी कीरानी	12-पृष्ठ संख्या- 11	[illegible]	14-पृष्ठ संख्या-95
	13-पृष्ठ संख्या-110		
टूटे कांटे	15-पृष्ठ संख्या-31	16-पृष्ठ संख्या-38	17-पृष्ठसंख्या-87

---- वृन्दावनलाल वर्मा

तथा मन्दिरों में भजन, कृष्णलीला के रास-गीत और गोपीनृत्य से प्राप्त मनोरंजन उल्लेखनीय हैं ।[1]

महारानी दुर्गावती :- प्रस्तुत उपन्यास में महारानी को मनोरंजन के लक्षण निम्नवत् हैं :-

मेलाएँ[2], उत्सवों तथा त्योहारों में आमन्त्रित होना[3], शिकार खेलना[4], पोलो खेलना[5], चित्रकारी करना[6], भजन कीर्तन तथा कथावार्ता सुनना[7], देवालयों में मुख्य प्रवचन करना[8], तीर्थ यात्राएँ प्रेमपूर्वक करना तथा करना[9], खेल और गेंदुआ, गीत नृत्यों द्वारा सुख के हेतु खेलों का प्रदर्शन करना[10] ।

रामचन्द्र की रानी :- प्रस्तुत उपन्यास में चिरिया या ठने की होली[11], कवि सम्मेलन[12], संगीत समारोह[13] और नौटंकी का उल्लेख मिलता है ।

कीचड़ और कमल :- प्रस्तुत उपन्यास में कार्तिकपूर्णिमा चतुरदशी के मेले में होने वाले विभिन्न समारोह[14], नाट्य अभिनय[15], पर्वतीय नृत्य[16] तथा संगीत समारोहों[17] का उल्लेख मिलता है ।

देवचन्द्र की मुस्कान :- प्रस्तुत उपन्यास में ऐतिहासिक मनोरंजनों का उल्लेख किया गया है :-

चित्रावदरानी का मेला और उत्सव[19], रथ यात्रा, गायन वादन तथा रास-विलास के प्रसंग[20], कहानियाँ लोक गीत और लेखकी प्रतियोगिता[21] ।

अब क्या हो :-प्रस्तुत उपन्यास में गीत सुनना[22], शिकार खेलना[23] तथा परिभ्रमण[24] का उल्लेख मिलता है ।

वर्मा जी के उपन्यासों में बुन्देली संस्कृति का समग्र रूप प्रकट हो जाता है प्रकृति हो या मानव जीवन, कला हो या भाषा, रीतियाँ हों या मनोरंजन, सभी बुन्देलखण्ड की विशेषता के अनूठे चित्र अवसर सामने आ-रच आते हैं ।

छूटे कारि 1/297/ महारानी दुर्गावती 2/1/ 3/205/ 5/1 तथा 5/ 5/150/ 6/6/7/324/ 8/8/ 9/245/ 10/9/
रामचन्द्र की रानी 11-/29/ 12-/46/ 13/31/
कीचड़ और कमल 14-/40/ 15-/42/ 16/119/ 17/138/ 18/186/
देवचन्द्र की मुस्कान 19-/95/ 20-/165/ 21/95/ 22/73/ उपन्यास
अब क्या हो 23-/22/ 24-/5/

---- वृन्दावनलाल वर्मा

पाँचवाँ अध्याय

"वृन्दावनलाल वर्मा के सामाजिक उपन्यासों में बुन्देलखण्ड की संस्कृति का चित्रण"

प्राकृतिक स्वरूप-

पर्वत, नदियाँ, वृक्ष, उपवन, आदि

नारी वर्ग-

प्रकृति, वेश-भूषा, आचार-विचार

पुरुष वर्ग- ग

प्रकृति, वेश-भूषा, आचार-विचार

भाषा-

बुन्देलखण्डी भाषा, के शब्द, लोकोक्तियाँ, सूक्तियाँ

स्थापत्य कला-

मन्दिर, भवन, गढ़

संगीतकला-

चित्रकला, वृत्त, गायन, राग-रागिनी, बुन्देली लोक गीत

बुन्देलखण्ड के रीति-रिवाज

बुन्देलखण्ड के मनोरंजन

: पंचम - अध्याय :

: वर्मा जी के सामाजिक उपन्यासों में बुन्देलखण्ड की संस्कृति का चित्रण :

1-प्राकृतिक दृश्य :- वर्मा जी के सामाजिक उपन्यासों में बुन्देलखण्ड के प्राकृतिक स्थलों की सुन्दरता को चित्रांकित कीगयी है। वर्मा जी ने इस धरती की अनन्त पर्वतमालाओं, तथा वेगवती सरिताओं, विभिन्न प्रकारकि घनी वृक्ष श्रेणियों तथा मनोरम वन-उपवनों की मनोहारी अभिव्यक्तिकरने में पूर्ण सफलता प्राप्त की है।

अ- पर्वत :

:1:
लगन:- प्रस्तुत उपन्यास में पलोथर के पहाड़ का उल्लेख मिलता है।

:2: :3:
संगम :- इस उपन्यासमें बरुआ सागर का पहाड़,केमासिन पर्वत, गोरा-मढ़िया
:4: :5:
की पहाड़ियाँ, खजोरा का पहाड़,तथा तिलच्छा की पहाड़ियों का वर्णन
:6:
किया गया है।

:7:
कुण्डली चक्र :- इस उपन्यास में अलीपुरा रियासत की पहाड़ी, फाटा-मालवेद
:8: :9: :10:
की पहाड़ियाँ, सिवाई-गोरा की पहाड़ियाँ, सिंदरी-फाटा की पहाड़ियाँ तथा
:11:
पहरई और सिंगराजनके पर्वतोंका उल्लेख मिलता है।

प्रेम की भेंट :- इस उपन्यास में लालबेट के धनुषाकार पर्वत का वर्णन
:12:
किया गया है।

:13:
सोना :- प्रस्तुत उपन्यास में देवगढ़ की पहाड़ियों तथा घाटी के पहाड़ का
:14:
उल्लेख किया गया है।

अमरबेल :- प्रस्तुत उपन्यासमें सुहाना और आँगुर्दन ग्राम की पहाड़ियों का
:15:
उल्लेख किया गया है।

उदय किरण :- प्रस्तुत उपन्यासमें आजर और कुंवरपुरा ग्राम की पहाड़ियों
:16:
का वर्णन किया गया है।

लगन	-1 पृष्ठसंख्या- 5	वृन्दावनलाल वर्मा
संगम	-2 पृष्ठ संख्या-13	"
	-3 पृष्ठसंख्या- 91	"
	-4 पृष्ठ संख्या-122	"
	-5 पृष्ठसंख्या-147	"
	-6 पृष्ठसंख्या-182	"
कुण्डली चक्र	-7 पृष्ठ संख्या-3	
	-8 पृष्ठ संख्या-25	

:9:-पृष्ठ०-27, :10:-पृष्ठ०-127, :11:-पृष्ठ०-194, :12:-प्रेम की भेंट-पृष्ठ०-10
सोना-:13:-पृष्ठ०-27, :14:-पृष्ठ०-165, :15:-पृष्ठ०-10 /अमरबेल/ वृन्दावनलाल वर्मा
उदयकिरण-:16:-पृष्ठ०-5

क- नदियाँ :

:1:
लगन :- प्रस्तुत उपन्यास में रेवा नदी का उल्लेख मिलता है ।

:2: :3:
संगम :- इस उपन्यास में रेवा और महुआ का वर्णन किया गया है ।

:4:
प्रत्यागमन:- प्रस्तुत उपन्यास में रेवा नदी का उल्लेख मिलता है ।

:5:
कुण्डली चक्र :- इस उपन्यास में सुहागर्द नदी का वर्णन मिलता है ।

:6:
कड़ी न कड़ी :- प्रस्तुत उपन्यास में सुखानी नदी रेवा का वर्णन मिलता है।

:7:
आदत :- इस उपन्यास में कुमरद नदी पर प्रकाश डाला गया है।

:8: :9:
सोना :- इस उपन्यास में रेवा और नारायणी नदी का

:10:
अमरबेल:- इसमें सरिता नाम की नदी का उल्लेख मिलता है ।
अमरज्योति :- प्रस्तुत उपन्यास में यमुना नदी का उल्लेख किया गया है। :10/1:

ख- वृक्ष :

:11: :12: :13: :14: :15: :16:
लगन में कदम्ब, रेवा, करौंदी, पीपल, कोचा, कदम्ब, आम, नीम

:17: :18:
महुआ, पलाश, करौंदी, जामुन, कुण्डली चक्र में, महुआ, उमर, पीपल और नीम,

:19: :20: :21: :22:
कड़ी न कड़ी में कदम्ब, महुआ और रेवा, आदत में, नीम, अपने मेरा कोई

:23: :24: :25:
में महुआ, आम करौंदी और नीम, सोना में, महुआ, करौंदी, नीम, करौंदी

:26: :27: :28:
पलाश और कचनार, उच्च शिखर में नीम, करौंदी और करोंदी, अमरबेल

:29: :30: :31: :32: :33: :34: :35:
में कदम्ब, आम, जामुन, महुआ, करौंदी, करोंदी, रेवा, शिरीष, आम, पलाश नीम

:36: :37: :38: :39: :40:
[illegible], सोना, करीराम, आम, पीपल कदम्ब करौंदी, नाम से वृक्षों का
:
उल्लेख मिलता है ।

लगन- 1-पृ० सं० -:1:, सं म-2-पृ० सं० -5:, :-पृ० सं० +92:, प्रत्यागमन-4-पृ० सं० T-71:
कुण्डली चक्र-5-पृ० सं०-67, कड़ी न कड़ी-6- पृ० सं० 'क्या-48, आदत-7-पृ० सं०-1
सोना-8-पृ० सं०-27, 9-पृ० सं०-166, 10-अमरबेल-पृ० सं० -3, 10/1-अमरज्योति - पृ० सं० 2, 11-कदम-पृ० सं०-6, 12-:10:
13-:20:, 14-:23:, संगम-15-:13:, 16-:56:, 17-:8:, कुण्डली चक्र-18-:8:,
कड़ी न कड़ी-19-:27, 27-:37:, 21-:38:, कदम्ब आदत-22-:1:, अपने मेरा कोई-
23-:13, सोना-24-:18:, 25-:9:, 26-:5:, 27-:65:, उच्च शिखर-28-:177:
अमरबेल-29-:4:, 37-:9:, 31-:42:, 32-:131, 33-:132:, 34-:189:
35-:183:, 36-:232:, 37-:423:, 38-:279:, 39-:364:, 40-:318:-----

--- सुमित्रानन्दन शर्मा

८- उपसंहार :

:1:
लैला :- प्रस्तुत उपन्यास में अस्तासागर के सहन आम्र वृक्षों तथा मकरानीपुर के समीप वाले आम के एक विशाल मनोरम बाग का उल्लेख मिलता है ।
:2:
कुण्डली चक्र - प्रस्तुत उपन्यास में हरिद्वाहली की मनोहर पुष्प वाटिका का वर्णन किया गया है ।
:3:
:4:
कड़ी न कड़ी :- कलंकन्यास में एक काशी के बगीचे का उल्लेख मिलता है।
:5:
सोना :- प्रस्तुत उपन्यास में हुंगरिया गाँव के अनूप सिंह का आम, देवगढ़ की गढ़ी के मध्य स्थित पुष्प-वाटिका तथा देवगढ़ के राजा सुरेन्द्रसिंह के एक प्रसिद्ध बाग का उल्लेख मिलता है ।
:6:
:7:
:8:
अमर बेल :- प्रस्तुत उपन्यास में महुओं के कुओं की कुंज, तथा आम, जामुन और केला आम के कुओं की सहन कुंजों पर प्रकाश डाला गया है ।
:9:

लैला	-1 पृष्ठ संख्या-13	कुण्डलीचक्र तथा
	-2 पृष्ठ संख्या-14	"
कुण्डली चक्र	-3 पृष्ठ संख्या-27	"
कड़ी न कड़ी	-4 पृष्ठ संख्या- 4	"
सोना	-5 पृष्ठ संख्या-156	"
	-6 पृष्ठ संख्या-221	"
	-7 पृष्ठ संख्या-227	"
अमर बेल	-8 पृष्ठ संख्या-131	"
	-9 पृष्ठ संख्या-279	

2- नारी पात्र :

वर्मा जी के सामाजिक उपन्यासों में नारी पात्रों की प्रकृति, वेश-भूषा और भाषा-विचार निम्नवत अंकित हैं :-

अ- प्रकृति :

लगन :- प्रस्तुत उपन्यास की नायिका रामा :1: शान्त तथा सुशील आदर्श और सहनशील प्रकृति की नारी है। :2: :3:

प्रत्यागत :- इस उपन्यास में सोमवती धार्मिक और कुसुमी आदर्श प्रकृति वाली नारी है। :5:

संगम :- प्रस्तुत उपन्यास में, मानकी असहनशील और राजरानी क्रोधी स्वभाव वाली नारी की भूमिका का निर्वाह करती है। :6: :7: सहानुभूति प्रदर्शन करना राधा देवी की प्रकृति के अनुकूल था। :8:

कुण्डली चक्र :- इस उपन्यास की सुमती रतन मनोरमा तथा पूना की माँ कुशिल स्वभाव की नारी है। :9: :10:

आहुत :- प्रस्तुत उपन्यास की मंजरी सात्विक और मेना आधुनिकता के प्रति विशेष लगाव रखने वाले स्वभाव की नारी है। :11: :12:

प्रेम की भेंट :- इस उपन्यास की सरयूती स्वाभिमानी और त्यागशील स्वभाव वाली है। :13: :14:

अमर मेरा कोष :- इस प्रस्तुत उपन्यास की कुन्ती समालोचक तथा कुछ मन्द प्रकृति की नारी है। विद्या समालोचक प्रकृति की थी किन्तु उसकी प्रकृति में आसक्तता विद्यमान थी। :15: :16:

लगन	-1 पृष्ठसंख्या-16	पृष्ठसंख्या वर्मा
	-2 पृष्ठसंख्या-16	"
	-3 पृष्ठसंख्या-18	"
प्रत्यागत	-4 पृष्ठसंख्या-87	"
	-5 पृष्ठ संख्या- 4	"
संगम	-6 पृष्ठसंख्या-50	"
	-7 पृष्ठसंख्या-52	"
	-8 पृष्ठसंख्या-64	"
कुण्डली चक्र	-9 पृष्ठ संख्या-7	"
	-10पृष्ठसंख्या-98	"
आहुत	-11पृष्ठ संख्या-3	"
	-12पृष्ठ संख्या-68	"
प्रेम की भेंट	-13पृष्ठसंख्या-3	"
	-14पृष्ठ संख्या-62	"
अमर मेरा कोष	-15पृष्ठ संख्या-101	"
	-16पृष्ठ संख्या-36	

अमर ज्योति :

प्रस्तुत उपन्यासमें नारी पात्रों के अंतर्गत ज्योति ने विशेष भूमिका निभायी है। वह संकोचीऔर शील प्रकृति की युवती है।

अमर ज्योति -। पृष्ठ संख्या- 28 --- वृन्दावनलाल वर्मा

सोना :- प्रस्तुत उपन्यास में सोना और रमा की चित्तौरावस्था की
:1: :2: :3:
स्वाधु प्रकृति कारणेश मिलता है। अंत में सोनाकी सरली और चिंतनी
:4:
स्थान रमा की उसी प्रकृति बन जाती है ।

अमरबेल :- प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ढाकरों से होने वाले स्वाभाव
:5: :6:
की सुखती है। राय दुलारी दयालुप्रकृति वाली नारी थी ।

उदय किरण :- प्रस्तुत उपन्यास की सुखती किरण एक ऐसे स्वाभाव
की नारी थी,जो किसी का पूर्ण समर्थन करती थीऔरयदि किसी
कारण वश उसका मन बदल गया,तो उसी का अंत कर विरोध करने
:7:
लगती थी। उसके स्वाभाव में निश्चयता नहीं थी ।

व- वेश भूषा :

लगन :- प्रस्तुत उपन्यास की नारी रमा थोती पहनती थीऔर ससुराल
में लम्बा घूँघट काढ़े रहती थी :8:।

रंगिया :- प्रस्तुत उपन्यास में रामकी की वेश-भूषा के अंतर्गत साड़ी,का
:9:
उल्लेख मिलता है वह घूँघट काढ़ती थी ।

प्रकाशवन्त:- प्रस्तुत उपन्यास की नारी,सौम्यती थोतीका लम्बा घूँघट
:10: :11:
काढ़ती थी तथा गुलाबी रंग की चादर ओढ़ना और दोनों हाथों में
:12:
काँच की चूड़ियाँ पहनना उसकी वेश भूषा में सम्मिलित था ।

कुण्डली चक्र :- प्रस्तुत उपन्यास में पूना की माँ घूँघट युक्त थोती धारण
:13:
करती थी तथा रत्नकुमारी का बुन्देलखण्डी वेश-भूषा में रहने का
:14:
उल्लेख मिलता है ।

आवरण :- प्रस्तुत उपन्यासकी नारी,गेरुआ आवरण धारण किये रहती
:15: :16:
थी तथा वेश थोतीपहना करती थी ।

सोना	-1 पृष्ठ संख्या-19	कुण्डलीचक्र शर्मा
	-2 पृष्ठ संख्या-41	-
	-3 पृष्ठ संख्या-108	-
	-4 पृष्ठ संख्या-176	-
अमरबेल	-5 पृष्ठ संख्या-148	-
	-6 पृष्ठ संख्या-204	-
उदय किरण	-7 पृष्ठ संख्या-17	-
	-8 पृष्ठ संख्या-26	-
	-9 पृष्ठ संख्या-30	-
प्रकाशवन्त	-10 पृष्ठ संख्या-70	-
	-11 पृष्ठ संख्या-154	-
	-12 पृष्ठ संख्या- 139	-
कुण्डली चक्र	-13 पृष्ठ संख्या-98	-
	-14 पृष्ठ संख्या- 3	-
आवरण	-15 पृष्ठ संख्या-23	-
	-16 पृष्ठ संख्या-143	-

:1:
अल मेरा कोर्ट:- प्रस्तुत उपन्यास में कस्ती प्रायः उपयुक्त वेश भूषा में रहती थी
:2:
वह कई कीमती रंगीन रेशमी साड़ी तथा कभी कभी धोती धारण करती थी ।
:3: :4:
निशा स्वच्छ मनोहर साड़ी तथा धोती धारण करती थी ।

अमर बेल :- प्रस्तुत उपन्यास में अंजना, बहुमूल्य रंग बिरंगी, चमचमाती साड़ी, विभिन्न
आकृतियों से सुसज्जित रंगीन चोली पहनती थी। उसकी अर्द्धनग्न पीठ पर को,
:5:
छूते लहराते हुये बाल उसकी वेश भूषा को निखार देते थे । वे रंग मंच पर
:6:
नृत्य के समय उसकी वेश भूषा में और भी चमक दमक परिलक्षित होती थी । राज
:7:
दुलारी सादा वेश भूषा में रहती थी, उन्हें चटकीली साड़ी पसन्द नहीं थी ।

सोना :- रानी बनने के उपरांत सोना रेशमी, जरतारी कीमती हुई बहुमूल्य साड़ी
:8:
धारण करती थी। वह विभिन्न प्रकार के स्वर्ण भूषणों तथा हीरों से
:9:
जड़ी रंगीन चोली भी उसकी वेश भूषा को सुसज्जित करती थी ।

म- आचार-विचार :

लगन :- प्रस्तुत उपन्यास की नायिका राधा मर्यादित जीवन में आस्था रखती थी
:10:
वह घर के छोटे-बड़ों की आज्ञा को सर्वोपरि मानती थी । रंगीनपन और
:11:
सजावट का उसके जीवन में कोई महत्व नहीं रहता है। भगवान की पूजा करना और
:12: :13:
मनौती मनाना तथा पति को देवता मानना, उसका आदर्श था । अन्य नारी
:14:
पात्र शुभ्रता-शीलता से परे रहती थी तथा उसे अपनी जाति कार्यिकोष
:15:
स्वाभिमान था ।
:16:
संगम :- प्रस्तुत उपन्यास में, चारुशीला अपने शील प्रवृत्ति वाली युवती थी। वह
:17:
अन्यायपूर्ण विषम परिस्थितियों से मुक्ति पाने के लिये आत्महत्या को उचित
:18: :19:
मानने वाली, कष्ट का अभाव, परहित से देने वाली नारी थी । उसका विचार था

अल मेराकोर्ट - 1-:25:, 2-:22:, 3-:8:, 4-:29:
अमरबेल :- 5-:18:, 6-:108:, 7-:449:,
सोना 8-:49:, 9-:90 :,
लगन 10-:19:, 11-:18:, 12-:33:, 13-:55:, 14-:28:, 15-:26:
संगम 16-:98:, 17-:51:, 18-:69:, 19-:66:, 20-:1877

---सुन्दरलाल वर्मा

कि "पुजारी को मात्र पूजा का अधिकार है, न कि प्रतिमा की आलोचना का ।":1:
रमण अपमान को सहन करने वाली अपने क्रोध को पी जाने वाली सहनशीली
कृष्णा न होने वाली अपनी जाति के प्रति आस्थावान नारी थी।:2: मैना एक:3: :4:
भोली-भाली बाल विधवा युवती थी। वह आत्मवादी थी तथा
धर्म के प्रति आस्थावान थी ।:5: वह दूसरों की सेवा के लिये अपने प्राणों की
बाजी लगा देती थी ।:6: राय रानी में कृष्णा विद्यमान थी से अपनी वधू के
साथ मृदुता पूर्ण व्यवहार नहीं करती थी ।:7:

प्रभावशाली :- प्रस्तुत उपन्यास की नारी पात्र, सोमवती, अपने पति के मनमन्दिर
की मात्र पुजारिन तथा उनकी कृपा कटाक्ष की भिखारिणी समझती थी ।:8:
वह अपने सास-ससुर को महापुरुषमानती थी तथा धर्मपत्नी के दायित्वों:9:
का पूर्ण निर्वाह करती थी ।:10: पूर्ण रानी भगवान की कृपा से ही मन-वांछित फल
प्राप्त करने की अभिलाषा रखती थी ।:11: वह सात्विक जीवन व्यतीत करती थी
और देवता को पतित पावन तथा मैना माँ को पापियों का उद्धारक मानती थी।:12:
वे व्याख्यानों के माध्यम पर कार्यकरने की सच्ची भावना का समादर करती थी ।:13:

कुण्ठित पात्र :- प्रस्तुत उपन्यास भैरवनकुमारी, अपने भाव अभिलाषाओं का पालन
करने वाली,:14: कर्तव्य परायण,:15: तथा अपने गौरव की रक्षा करने वाली थी।:16:
युवती थी ।पूना का विचार था कि अभावों का यदि इस संसार में कोई
नहीं, तो उपन्यास में अवश्य कोई है ।:17: भगवान की दीपुर देव का आत्मवादी
करना, एक भारी पाप मानती थी।:18: पूना की माँ धार्मिक प्रवृत्ति की स्त्री
नारी थी। उनका कथन था कि पुरुषों की महत्ता को ईश्वर भी नहीं
समझ सकता है ।:19:

संदर्भ 1-:187:,2-:66:,3-:67:,4-:91:,5-:163:,6-:190:,7-:52:
प्रभावशाली 8-: 51:,9-:71:,10:80:,11-:41:,12-:125:,13-:155:,14-:195:
कुण्ठित पात्र 15-: 2:,16-:42:17-:192:,18-:197:,19-:163:

-- कृष्णकान्त शर्मा

कभी न कभी :- प्रस्तुत उपन्यास में नायिका सीता का दृढ़ विश्वास है कि नारियाँ भोग :1: से निर्मित नहीं होती, जो कुसमय में अपने सतीत्व की रक्षा भी न कर सकें।

आदत :- प्रस्तुत उपन्यास में, मेहरी कार्तिक स्नान करने वाली सदा भजन पूजन :2: से मुक्ति फल प्राप्ति की कामना करने वाली धार्मिक विचारों की नारी थी। :3: सबल तथा एक विवेकशील युवती थी। उसे कानूनों में विशेष आस्था नहीं थी, :4: वह बड़े व के लोभी पुरुषों का और अपमान करके, उन्हें संकेत करती है।

प्रेम की चोट :- प्रस्तुत उपन्यास की सरस्वती एक स्वाभिमानी युवती थी। :6: उसे ऊषा का साथ विनोद कचिकर न था। वह विधवा सहकारी के जीवन :7: की छटपटाहट भरम सोचा पार कर जाती है। वह लोकलाज त्याग कर दीपक से प्रणय याचना करने लगती है। उसका विचार था कि यदि उसे प्रेम में अल्प सा मिलेगी तो :8: वह आत्मघात कर लेगी और यही उद्देश्य से उसने शरीर में विष विलाया था। :9:

उषा किरण :- प्रस्तुत उपन्यास की नारी पात्र, किरण निडर और कर्मशील युवती :10: है। सिनेमा से अधिक उसे रंगमंचीय नाटकों में रुचि है। :11: :12: घरों के निर्माण कार्य करने तथा अन्धुओं को भौंस के घाट उतार देने की उसमें क्षमता है। :13: मन की पत्नी का विचार है कि विवाहादि सम्बन्धों में बच्चों की सहमति अवश्य ले लेनी चाहिये। :14: वह अपना क्रोध की नहीं घातीघोर वह कर उपकरणेषु प्रस्तुतता हेतु सदैव तत्पर रहती थी। :15:

कभी न कभी :- 1-:126:,2-:
आदत 2-:3:,3-:107:,4-:150:,5-:198:,6-:
प्रेम की चोट 6-:10:,7-:33:, 8-:67:,9-:93:
उषा किरण 10-:17:,11-:146:,12-:175:,13-:115:,14-:191:
15-:88:

---- सुन्दरलाल शर्मा

अमर मेरा कोई :- प्रस्तुत उपन्यास की, मुन्नी का विचार है कि आदिवासियों की नारी आत्मिकी अपंगु बना रही है, जिसे अविलम्ब दूर करना चाहिये । :1: पुरुषों से सम्मुख नृत्य-गान करने में उसे कोई संकोच नहीं होता। :2: वह पुरुषों को मात देकर उन्हें स्त्री की श्रेष्ठता की पक्षपातीछाती, :3: शिक्षा उन पुरुषों को निकृष्ट समझती है, जो नारी के अक्ष 'प्यार कासाधन या पैर की जूती मानते हैं । :4: वह प्रेम कोपगडंडियों से परिचित है और उसकी व्याख्या करने की क्षमतारखतीहै। :5: बुआ जी स्त्रियों के नाक-नाने की कटु आलोचकहैं । :6: कमला पंचम की बलीका विचार है कि यदि अर्थ नम्र, कैलाश परस्त युवतियाँ, छुरपी लेकर होलों पर कामकरना प्रारम्भ करें, तो यह देश सुधर जायेगा । :7:

सोना :- प्रस्तुत उपन्यास कीसोना सुन्दर व कोमलहृदया-युवतियों को ही जीवन का सच्चा सुख मानती है और उसकोइच्छाओं में उत्तरोत्तर वृद्धि होती जाती है। :8: वह धारती छाती विपत्ति के सागर उसकोसदैव पूजा होती रहे। :9: अन्त में वह स्वीकार करतीहै कि स्त्री कोअपनी उपासना कठिन परिश्रम की है। :10: अन्धनारी पाप तथा छाया व की अपेक्षा कर्म में अधिकविश्वास रखतीछाती। :11: वह राम से बढ़कर छाम को मानती छाती । :12: उसने अपना लक्ष्य कभी नहीं छिपाया । :13:

अमर प्रेम :-प्रस्तुत उपन्यास कीअन्जना एक कैलाश परास युवती छाती । :14: वह पराक्रम को ही जीवन का सार-सत्य मानतीछाती । :15: जीवन कीआपदाओं का सामना करना उसका :16: वह चाहती छाती कि राजनीतिक अस्थिरतायें होते हुये भी सांस्कृतिक एकता होनी चाहिये। :17: राजदुलारी मन की पूर्ण कोमलता को स्वीकार करतीहै। :18: वह सरकारी साधनों से, :19: ही देश के चौमुखी विकास कीकामना करतीहै। छाट वालीकाविचार छाप विलाँद को मानती भूले नहीं किन्तु उसे प्रति अक्षय उत्साह देना चाहिये । :20:

अमर मेरा कोई	-1 पृष्ठ संख्या-64	उपन्यास पंक्तियाँ
	-2 पृष्ठ संख्या-20	-
	-3 पृष्ठ संख्या-113	-
	-4 पृष्ठ संख्या-196	-
	-5 पृष्ठ संख्या-128	-
	-6 पृष्ठ संख्या-163	-
	-7 पृष्ठ संख्या- 15	-
सोना	-8 पृष्ठ संख्या- 70	-
	-9 पृष्ठ संख्या-73	-
	-10 पृष्ठ संख्या-243	-
	-11 पृष्ठ संख्या- 39	-
	-12 पृष्ठ संख्या-113	-
	-13 पृष्ठ संख्या-190	-
अमर प्रेम	-14 पृष्ठ संख्या- 18	-
	-15 पृष्ठ संख्या-170	-
	-16 पृष्ठ संख्या-148	-
	-17 पृष्ठ संख्या- 65	-
	-18 पृष्ठ संख्या- 91	-
	-19 पृष्ठ संख्या-239	-
	-20 पृष्ठ संख्या-117	-

अमर ज्योति :-

प्रस्तुत उपन्यासमें ज्योति एक शिक्षित युवती के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह करती है । वह नित्य संगीत का अभ्यास किया करती है।[1] सतत वह राष्ट्रीय भावना में ओत-प्रोत है।[2] वह सफल शिक्षिका के रूप में अपने दायित्व को निभाती है और स्वयं संघर्ष और कष्टों को झेलती हुई अमर की पत्नि के रूप में प्राप्त कर लेती है, जिससे उसे सान्त्वना प्राप्त होती है और वह कह उठती है कि" अमर आज मेरे सदा के लिये अपनी हो गयी ।"[3]

अमर ज्योति -1 पृष्ठ संख्या- 27

-2 पृष्ठ संख्या- 234

-3 पृष्ठ संख्या- 239

---- वृन्दावनलाल वर्मा

3- मुख्य पात्र :

अ- प्रकृति :- वर्मा जी के उपन्यासों में अभिव्यक्त पात्रों की प्रकृति ।

:1:
गबन :- देवसिंह स्वच्छन्द और कार्यनिष्ठ था किन्तु अपनी आकांक्षा के
:3: :4:
और उसी प्रकृति का व्यक्ति था । अन्यथा में जेवाली धुन का पक्का, पन्ना लोलुप
:6:
था और लोभी स्वार्थपरक मुख्य था ।
:7: :8:
प्रत्यागत :- प्रस्तुत उपन्यास में रंगा उर्फ टीकाराम मृदु, भक्त बिहारी वर्मा
:9: :10:
कट्टर धार्मिक, हरीराम मृदु और देव सिंह वाक्पटु प्रिय स्वार्थपरक का व्यक्ति
:11:
था ।

:12:
संगम :- प्रस्तुत उपन्यास में ललन दुस्साहसी और निडर स्वार्थपरक वाला था
:13: :14:
ही प्रकृति का व्यक्ति था । राम चरण कीप्रकृति स्वार्थ, निष्ठुर और हठीली
:15: :16:
थानीराम गरम स्वभाव वाला था सुभाष कविता देवास लोभी और
:18:
नन्दराम ही प्रकृति का पुरुष था।

:19: :20:
प्रेम की चोट :- प्रस्तुत उपन्यास में धीरज स्वाभिमानी और मृदु प्रकृति था
:21: :22:
कमोद दुराचारी और धैर्यवान स्वभाव का व्यक्ति था।
:23: :24:
कुण्डली चक्र :-प्रस्तुत उपन्यास में ललित सहजऔर कोमल मुखवाला कुटिल, कपटी, लोलुप
:25: :26:
स्वार्थी और पामर प्रकृति का था किशोरलाल रसिक प्रकृति का व्यक्ति था।
:27:
अचल मेरा कौन :- प्रस्तुत उपन्यास के पात्रों में अचल मृदु और दयालु था सुखदेव
:28:---------
पंडित और प्रोफेसर की जाने वाले स्वभाव का मुख्य था ।

गबन	-1 पृष्ठ संख्या-5		प्रेम की चोट	-19 पृष्ठ संख्या-7	
	-2 पृष्ठ संख्या-2			-20 पृष्ठ संख्या-83	
	-3 पृष्ठ संख्या-5			-21 पृष्ठ संख्या-5	
	-4 पृष्ठ संख्या-13			-22 पृष्ठ संख्या-87	
	-5 पृष्ठ संख्या-23		कुण्डली चक्र	-23 पृष्ठ संख्या-	
	-6 पृष्ठ संख्या-79			-24 पृष्ठ संख्या-3	
प्रत्यागत	-7 पृष्ठ संख्या-6			-25 पृष्ठ संख्या-136	
	-8 पृष्ठ संख्या-2			-26 पृष्ठ संख्या-71	
	-9 पृष्ठ संख्या-5		अचल मेरा कौन	-27 पृष्ठ संख्या-59	
	-10 पृष्ठ संख्या-18			-28 पृष्ठ संख्या-60	
	-11 पृष्ठ संख्या-54			-29 पृष्ठ संख्या-190	
संगम	-12 पृष्ठ संख्या-5				
	-13 पृष्ठ संख्या-2				
	-14 पृष्ठ संख्या-15				
	-15 पृष्ठ संख्या-17				
	-16 पृष्ठ संख्या-19				
	-17 पृष्ठ संख्या-21				
	-18 पृष्ठ संख्या-43				

----- कृष्णलाल वर्मा

अमरज्योति" :

प्रस्तुत उपन्यास में अमर, अमीराम, बरीदास, राम टहल तथा दयाली राम के नाम उल्लेखनीय है। अमर देशभक्त,संगीत में विशेष रुचि रखने वाला युवक है।:1: बरीदास संगीत कलाकार के प्रतीकों में विशेष रुचि रखता था।:2: अमीराम एक दृढ़ कर्मठ और आस्थावादी प्रकृति का व्यक्ति था।:3: वह देश का सेवक भी था।:4: राम टहल की प्रकृति जातिवाद के संकीर्ण दायरे से अलग थी तथा सटोरेलाल अमर वादी प्रकृतिका व्यक्ति था।:5: :6:

अमर ज्योति -1 पृष्ठ संख्या- 1
-2 पृष्ठ संख्या- 3
-3 पृष्ठ संख्या- 6
-4 पृष्ठ संख्या- 34
-5 पृष्ठ संख्या- 36
-6 पृष्ठ संख्या- 21

--- पुन्नालाल वर्मा

सोना :- प्रस्तुत उपन्यास का नायक सिंह जैसा-मुखर, धुरन्धर सिंह सिंहासनी और सम्पन्न
:3:
आडम्बरवादी प्रकृति का मुखर था ।

अमरबेल :- प्रस्तुत उपन्यास का नायक स्वाभिमानी, दानी सिंह जैसा, धीर, निडर,
:4: :5: :6: :7: :8: :9:
और सघन कुन्दीलाल कायस्थ, टहलराम सिद्धान्तवादी तथा देवराज मनमौजी प्रकृति
का मुखर था।

:10:
उदय किरण :- प्रस्तुत उपन्यास में, उदय वासुनी और व मो' था वादी प्रकृति
:11:
का व्यक्ति था ।

:12:
आहत :- प्रस्तुतउपन्यास में दीप आशावादी और पुष्पा तथा अंगद स्वाभिमानी
:13: :14:
विचार का मुखर था । सदाफल भीप्रकृति सात्विक और दयालु थी ।

ब- वेशभूषा :

कुमौली वेशभूषा प्राय: साधारण एवं प्राचीन परम्परा से सम्बद्ध है।
वर्मा जी के प्राय: सभी कुमौली पात्र साधारण ग्रामीण वेश भूषा धारण
करते हैं ।

:15:
लगन :- कन्या लगन वाले तथा रंगीन साफा बांधता था। उसे लखियादार
:16:
साफा और उज्जवल वस्त्र धारण करना अधिक भाता था। वेशभूषा प्राय: सादा
:17: :18:
वस्त्रों में रहता था। विवाह के समयउसने भड़कीले वस्त्र धारण किये थे।चादरयुक्त
:19:
जाघिया और मोटी झोती पहनते थे।

:20:
परम्परा :- प्रस्तुत उपन्यास में वेश भूषा केलगभग सभी पात्र धारण करता था
:21:
तथा पं० नाथ विद्यापती प्राय: वेशभूषा धारण किये रहते थे।

संगम :- संगम की वेशभूषा के अंतर्गत धुटनू धोती, ऊँचा साफा, चादर और
:22: :23:
मजबूत जूतों का उल्लेख मिलता है। नन्दराम, धोती, कुर्ता और साफा तथा
:24:
रामदरण गेरुये रंगके वस्त्र धारणकरता था ।
:25:
आहत :- कथा उपन्यासमें दीप आशावादी था में कुर्ता, कोट धारण करता था।
:26:
अंगद की आदि वेशभूषा में लंगोटीऔर धोतीका उल्लेख मिलता है।

सोना	-1 पृष्ठ संख्या-23		-13 पृष्ठ संख्या-7
	-2 पृष्ठ संख्या-28	लगन	-14 पृष्ठ संख्या-113
	-3 पृष्ठ संख्या-237		-15 पृष्ठ संख्या-14
अमरबेल	-4 पृष्ठसंख्या-7		-16 पृष्ठ संख्या-15
	-5 पृष्ठ संख्या-37		-17 पृष्ठ संख्या-20
	-6 पृष्ठ संख्या-39		-18 पृष्ठ संख्या-29
	-7 पृष्ठ संख्या-43		-19-पृष्ठ संख्या-42
	-8 पृष्ठ संख्या-50	प्रस्थान	-20 पृष्ठ संख्या-136
	-9 पृष्ठ संख्या-60		-21 पृष्ठ संख्या-143
उदयकिरण	-10 पृष्ठसंख्या-12	संगम	-22 पृष्ठ संख्या- 9
	-11 पृष्ठसंख्या-30		-23 पृष्ठ संख्या-25
आहत	-12 पृष्ठ संख्या-16		-24 पृष्ठ संख्या-113
		आहत	-25 पृष्ठ संख्या-29
			-26 पृष्ठ संख्या-173

------- कुन्दनलाल वर्मा

कुण्डली चक्र :- प्रस्तुत उपन्यास में अंकित सादे और स्वच्छ वस्त्र पहने
:2:
की वेशभूषा में, मेली चोली, अंगरखी और साफे का उल्लेख कि साथ। उ.
:3:
में पुरुष वेशभूषा जामा और पगड़ी को दिखाया गया है।

सोना :- प्रस्तुत उपन्यास में रामदीन जमींदार मेली पटी अंगरखी, मोटी धोती
:4:
और पुराना साफा धारण करता है। पुरुषों सिंह छड़ छड़ी, खास रीके
:5: :6:
वस्त्र सदा धारण करते थे। बचपन बचपन में मोटे वस्त्र पहनता था। बाद
:8:7:
में वह मेले रंगे वस्त्र पहनने लगा था।

उदय किरण :- प्रस्तुत उपन्यास में परम्परे वेशभूषा के अंतर्गत मोटे कपड़े
:8:
का कुर्ता धोती पहन धारण करने का उल्लेख मिलता है।

अमर बेल :- प्रस्तुत उपन्यास के कमाती वेशभूषा में छोटों तक का जाकिया
:9:
आधी बाँह वाली कमीज सदा देशी जूतों का उल्लेख मिलता है। दूसरा दीला
:10:
मटमैला रंग का पैजामा, आधी कमीज और पगड़ी धारण करता था, कभी
:11:
कभी व. मोटी धोती का कुर्ता और पैजामा भी पहनता था। आवश्यक धोती
:12:
कुर्ता और कभी रंगीमामा बीपतालून धारण करता था।

8- आचार -विचार :

:13:
लगन :- किन्तु अपनी आवश्यकताओं में मौलिक था। सामाजिक बन्धनों और रीति
:14:
रिवाजों को तोड़ने में वह संकोच नहीं करता था। वैसिंह प्रकृति का
:15: :16:
युवक था। वह अपनी लगन का पक्का था। वह धैर्य से काम करता था।
:17:
वाद दूरदर्शी विचारों का व्यक्ति था। बेताली में प्रतिशोध की भावना
:18: :19:
विद्यमान थी। वह पुनर्विवाह का पक्ष-धारी था। पन्ना अवसर वादी युवक था
:20:
किन्तु अपनी अति पशुत चेष्टा के कारण प्रेमे को अपमानित होना पड़ा।

कुण्डली चक्र	-1 पृष्ठ संख्या- 4		-11 पृष्ठ संख्या-80
	-2 पृष्ठ संख्या-129		-12 पृष्ठ संख्या-33
	-3 पृष्ठ संख्या-187	लगन	-13 पृष्ठ संख्या- 2
सोना	44 पृष्ठ संख्या-49		-14 पृष्ठ संख्या- 8
	-5 पृष्ठ संख्या-50		-15 पृष्ठ संख्या- 9
	-6 पृष्ठ संख्या-18		-16 पृष्ठ संख्या-34
	-7 पृष्ठ संख्या-142		-17 पृष्ठ संख्या-13
उदय किरण	-8 पृष्ठ संख्या-3		-18 पृष्ठ संख्या-13
अमर बेल	-9 पृष्ठसंख्या-8		-19 पृष्ठ संख्या-23
	-10पृष्ठ संख्या-47		-20 पृष्ठ संख्या-63

---- कुण्डलीचक्र अमर

प्रस्थान :- प्रस्तुत उपन्यास के पात्र मंगल की दृष्टि में अत्यंत :1: अविस्मरणीय है। वह रामदास और अपनी माँ के प्रतिसम्मान की भावना रखता है :2: । टीकाराम बहुत आर्थिक व्यक्ति है। रामायण का प्रेमी और विद्यार्थी को वे हेय दृष्टि से देखते हैं। वे वेश्याओं को स्वीकार करते हैं। मंगल विद्यार्थी पूजापाठ में संलग्न रहते हैं। :3: :4: :5: लाखगढ़ी के आलोचक को वे साधु मानते हैं। :6: पीताराम, के सभी पात्र प्रार्थनाओं के साथ जीवनाई, :7: प्रयत्न करते हैं। वेलसिंह :8: वाक युद्धों में पटु हैं तथा पं० रामसहाय के जीवन में कोरे आचार-विचारों का :9: समावेश था। हरीराम स्वार्थी :10: व्यक्ति और कर्तव्य परायण, :11: व्यापारी और :12: आर्थिक साधुरामजवाहर वाली, :13: तथा रघुवंश दलना बहुत :14: व्यक्तियों के जीवनने वाला व्यक्ति था।

संघर्ष :- प्रस्तुत उपन्यास का पात्र सम्पत्ति, धन और धर्म का लोभी है। :15: विधवा नवयौवनाओं के मध्य रहकर धर्म-नीति की चिन्ता करने का वह अभ्यस्त है। :16: विद्यार्थी लाख दुराचारी को मानने वाले व्यक्ति हैं। :17: हरीराम ऐसे के आर्थिक व्यवहार करने वाले व्यक्तियों में है। :18: मंगल एक देशभक्त था जो कृषकों और :19: विधवाओं के साथ कोई दुर्व्यवहार नहीं करता था। पं० सुखराम, साधुओं से द्वेष करने के :20: अधिकार मानता था। :21: विधवा को समाज का सबसे बड़ा पाप मानने वाला, वेश्या :22: रोगियों और आवारागर्दों सेवा को अपना धर्म मानता था। :23: रामदास अत्याचारी और साहूकार पुरुष था। :24: वेश्याओं सेवा को धर्म मानता था तथा लक्ष्मी का :25: अभ्यस्त था। राम कुमारसिंह, व्यापारियों की विधवा से धर्म आचार को ऐसा मर्यादा कोटि में और ग्लानि से दूर रखते हैं।

प्रस्थान	-1 पृष्ठ संख्या-16	मंगल	-15 पृष्ठसंख्या- 71
	-2 पृष्ठ संख्या45		-16 पृष्ठसंख्या- 17
	-3 पृष्ठसंख्या- 13		-17 पृष्ठ संख्या-28
	-4 पृष्ठ संख्या-80		-18 पृष्ठ संख्या- 3
	-5 पृष्ठ संख्या-88		-19-पृष्ठ संख्या-28
	-6 पृष्ठ संख्या-9		-20 पृष्ठ संख्या-30
	-7 पृष्ठ संख्या-54		-21 पृष्ठ संख्या-164
	-8 पृष्ठ संख्या-228 54		-22 पृष्ठ संख्या-55
	-9 पृष्ठ संख्या-126		-23 पृष्ठ संख्या-21
	-10पृष्ठ संख्या-93 17		-24 पृष्ठ संख्या-59
	-11पृष्ठ संख्या94 93		-25 पृष्ठसंख्या-60
	-12पृष्ठ संख्या-95		
	-13पृष्ठ संख्या-106		----- कृष्णरामलाल वर्मा
	-14पृष्ठ संख्या99		

प्रेम की कोटि :- प्रस्तुत उपन्यास का पात्र धीरज एक भावुक और स्वाभिमानी युवक है।:1: वह प्रेम की गम्भीरता को पहचानता है और उसे गम्भीर रखना उसे प्रिय लगता है।:2: वह मनुष्य के चरित्र की जटिलता को स्वीकार करता है और अपने विचार व्यक्त करता है कि मानव-चरित्र सरल में नहीं समझा जा सकता है।:3: कम्मोद दूरदर्शी युवक है।:4: वह अपनी मान-मर्यादा के लिये प्राणों को भी खतरे में डालने वाली धनी आदमी को तैयार रहता है।:5:

कुण्ठा की कटि :- प्रस्तुत उपन्यास के पात्र मनिक का विचार था कि संसार में निर्धन और असहाय व्यक्ति सुखों को जीने का कोई अधिकार नहीं।:6: उनका विनाश आवश्यक है।:7: वह दान प्रथा का विरोधी है तथा धर्म ग्रन्थों को सरकारी युग भ्रम- कीमांस मात्र मानता है।:8: वह व्यक्ति और विश्व को अभावग्रस्त मानता था और लोगों के विनाश की कल्पना करता था।:9: अधिक वैज्ञानिक ग्रन्थों में आस्था रखता था।:10: उसका विचार था कि विन्दुओं को सत्यम् शिवम् सुन्दरम् सच्चिदानन्द की चिन्ता करने में पूर्ण समर्थ।:11: मनुष्य अनुचित आस्था उठाने में निष्ठ-हस्त था।:12: वह अपनी तदबीर को भाग्य से अधिक महत्व मानता था।:13: विचारों में अनुकूलता का अभाव था। युवतियों से मिलने जुलने का उसे विशेष शौक था।:14: लाल सिंह लोक-लाज से भयभीत रहता था।:15:

आदत :- शौच का विचार था किसी वाले गरीबों से घृणा करते हैं। वह विना द्वेष के विचार करके वह युवकों का मार्गदर्शन करता है।:16: सत्यम धर्म-ईमान आस्था अधिक था। वह लोगों की महत्ता को स्वीकार करता था तथा भजन-पूजन में आस्था रखता था।:17:

प्रेम की कोटि -1 पृष्ठ संख्या- 7
-2 पृष्ठ संख्या-63
-3 पृष्ठ संख्या-87
-4 पृष्ठ संख्या- 5
-5 पृष्ठ संख्या-97

कुण्ठा की कटि -6 पृष्ठ संख्या- 1
-7 पृष्ठ संख्या- 2
-8 पृष्ठ संख्या- 5
-9 पृष्ठ संख्या-13
-10 पृष्ठ संख्या- 3
-11 पृष्ठ संख्या-24
-12 पृष्ठ संख्या-53
-13 पृष्ठ संख्या -71
-14 पृष्ठ संख्या- 120
-15 पृष्ठ संख्या-118

आदत -16 पृष्ठ संख्या-198
-17 पृष्ठ संख्या-203

--- कुन्दनलाल शर्मा

सोना :-प्रस्तुत उपन्यास में राजा सुरेन्द्र सिंह का शिकार था शिकारियों को
:1:
बहलाने के लिए मनोरंजनों और क्रीड़ाओं का विशेष आयोजन रखता है। उन्हीं
:2: :3:
सभी को प्रसन्न करने के लिये अनेक उपाय किये। वे पर उपभोगी व्यक्ति थे।
अतः, किसी न किसी स्वांग को रचकर गणिकाओं को हँसाया करता था।
:4:
यही उसकी दिनचर्या बन गयी थी। सम्पत्ति को खर्चों को मामले में विशेष
:5:
रुचि था। सोना के माता को जाति के खानदान, परिवार अभिमानित और
:6:
कुल की आदर की विशेष चिन्ता रहती थी। राजनीति, शिष्ट होने पर भी
:7:
किसी बात को प्रकट करने की अच्छा समझता था।

कथानक :- देवदू का पूर्वजीवन में के प्रति उदार दृष्टिकोण नहीं था।
:8:
उसका साथी सहमन, किसी कार्य को सच्ची लगन से करता था और प्रत्येक स्थान
:9:
पर अन्य का प्रोत्साहन उसे अनुचितप्रतीत होता था। हीरालाल जन सेवी व्यक्ति
था और मौत में अनुपस्थित दिखाया गया।

उद्देश्य चित्रण :- प्रस्तुत उपन्यास का मुख्य उद्देश्य, पारस्परिक सम्बन्धों को
:10: :11:
मृदु बनाने का प्रयास था। यह कृति को गोकरी में उत्तम मानता था।

समाज एक सुन्दर सुखा व्यक्ति था। वह किसी के कार्यों में दोष देने को बुरा
:12: :13:
मानता था। परमोदे केवल में आदर रखता था तथा परम आदमी
:14: :15:
व्यक्ति को हेय दृष्टि से देखता था। दूसरे शिष्ट धर्म-धर्म का पोषक था।
:16: :17:
सदा कोई न से दोनों-भावों को बुरा समझते थे। राजेश्वर देशभक्त और
:18:
अनुभवी आदर्शवादी व्यक्ति था।

सोना :- -1 पृष्ठ संख्या-29
-2 पृष्ठ संख्या-78
-3 पृष्ठ संख्या-240
-4 पृष्ठ संख्या-69
-5 पृष्ठ संख्या-53 --- पृष्ठ संख्या नहीं
-6 पृष्ठ संख्या-15
-7 पृष्ठ संख्या-21
कथानक कथा -8 पृष्ठ संख्या-125
-9 पृष्ठ संख्या-132
उद्देश्य चित्रण -10पृष्ठ संख्या- 41
-11पृष्ठ संख्या-39
-12पृष्ठ संख्या-13
-13पृष्ठ संख्या-8
-14पृष्ठ संख्या-57
-15पृष्ठ संख्या-166
-16पृष्ठ संख्या- 61
-17पृष्ठ संख्या- 84
-18पृष्ठ संख्या- 8

अमर ज्योति :- प्रस्तुत उपन्यास में अमर का विचार है कि मैं जो देश की सेवा में अपना जीवन बिताना चाहता है। सौभाग्य हमारे मन को प्रसन्न बनाता है।[1] वह सौभाग्य की चिंता के साथ रहा मन भी बनाने के लिये प्रयत्नशील रहता है।[2] वह ज्योति के लिये अपना सब कुछ बलिदान करने के लिये तैयार हो जाता है और अपने त्यागी रूप को प्रस्तुत करता है।[3] सुन्दर एक अभिलाषित युवक है, जो अपने विवाहकीजात सुनकर चकित हो जाता है और अनुभव कर रहने लगता है। उसे समय समय पर छूटे चाहिये क्योंकि सगाई होने वाली है।[4] कमीराम बिना दहेज के लिये अपने बेटे का विवाह नहीं करना चाहता। वह बात चारुमुख के पिता रूप से दहेज लगाकर परेशान रूप में दहेज की माँग करता है।[5] राम दास जाति बन्धन की दहेज प्रथा अनावश्यक मानता है और इन बन्धनों का विरोध करता है।[6]

अमर ज्योति -1 पृष्ठ संख्या - 25
-2 पृष्ठ संख्या- 12
-3 पृष्ठ संख्या- 34
-4 पृष्ठ संख्या- 3
-5पृष्ठ संख्या- 67
-6 पृष्ठ संख्या-36

----- वृन्दावनलाल वर्मा

अब मेरा कौन :- अब वासनाओं के सम्मुख आत्मता का अनुभव
----------:20:
वह देश प्रेमी था। और आदमी कोमलता को स्वीकार करता था। मुझे
:3: :22:
किसी का सम्पर्क है, एक रसता उसे कोई लगती थी। शिवाराम कोई व्याख्यान
:24:
में शिवाय नहीं रखते थे। क्रोध नहीं लगने लगी, पंचम सत्याग्रह कोशिश को स्वीकार
:9:
:6: :7:
करता था। शिष्यों, साथियों के मूल्य को सुरक्षित मानता था।

अमर शेष :- देवराज एक शिवाय प्रिय पुरुष है, जिसे कलाओं में शिक्षा रुचि है
--------:8:
और वह उनका समादर करता है। उच्च समाज सेवी पुरुष है। गरीबों का खून
:9:
चूसकर स्वयं मोटा होना, अपराध समझता है। व्यवहार बुद्धिमत्ता अपना उत्तम सीखा
करने वालाव्यक्ति है। वह साथ मरे, साथी न टूटे, के सिद्धान्त को चरितार्थ
:10: :11:
करता है। काली सिंह एक सुधारवादी व्यक्ति है, जो आत्म और और व्यक्ति है।

अब मेरा कौन -1 पृष्ठ संख्या-2
-2 पृष्ठ संख्या-12
-3 पृष्ठ संख्या-26
-4 पृष्ठ संख्या -177
-5 पृष्ठ संख्या-19
-6 पृष्ठ संख्या-41
-7 पृष्ठ संख्या-119

अमर शेष -8 पृष्ठ संख्या-7
-9 पृष्ठ संख्या-47
-10 पृष्ठ संख्या-115
-11 पृष्ठ संख्या-37

[illegible] ---[illegible]

बुन्देलखण्ड

बुन्देलखण्ड, मध्यप्रदेश

4- भाषा :

प्रस्तुत की है उपन्यासों में प्रयुक्त बुन्देलखण्डी भाषा के शब्दों, लोकोक्तियों व सूक्तियों का विवरण निम्नवत है ।

अ- बुन्देलखण्डी भाषा के शब्द:

:1: :2: :3: :4: :5: :6: :7: :8: :9: :10:
लगन :- बाती, टोरिया, टोर, बेड़ा, खिरखिरे, अरजना, अमाना, टोर, उलना, मैरा
---- :11: :12: :13: :14: :15: :16: :17: :18:
सुख उपजा, मारा, कुनीता, अवधारा लोहना, टी, खिलना, सिरेरा, जगर के
:19: :20: :21: :22: :23: :24: :25: :26: :27: :28:
बार, खटोला, बरोसरी, गिरावी, सुधार, अरजन, खिरा, फिकर, रार, उबसाना
:29: :30: :31: :32: :33: :34: :35: :36: :37: :38:
मरवाहोली, पिया, अस्तिकार, उठोली, पाती, बराम, पहुन्न, सुनना, टोर, अयानी
:39: :40: :41: :42: :43: :44: :45: :46: :47: :48:
डोड़-छुटी, खिलना, किसी मा, आना, उचका, माना, गरब, टंटा, अटक, मायका
:49: :50: :51: :52: :53: :54: :55: :56: :57: :58:
आयल, मूंदना, मानता, खिराजना, पोर, पुरकी, रेकना, उसारा, चीखना, ऊरेड़ा
:59: :60: :61: :62:
अब, पुरवा, उठाना, बरक ।

लगन	-1 पृष्ठ संख्या-1	- 32- पृष्ठ संख्या- 34
	-2 पृष्ठ संख्या-1	- 33 पृष्ठ संख्या- 36
	-3 पृष्ठ संख्या-2	- 34 पृष्ठ संख्या- 37
	-4 पृष्ठ संख्या-6	-35 पृष्ठ संख्या- 38
	-5 पृष्ठ संख्या-6	- 36 पृष्ठ संख्या- 38
	-6 पृष्ठ संख्या-6	- 37 पृष्ठ संख्या- 45
	-7 पृष्ठ संख्या-6	- 38 पृष्ठ संख्या-45
	-8 पृष्ठ संख्या-7	- 39 पृष्ठ संख्या- 42
	-9 पृष्ठ संख्या-8	-40 पृष्ठ संख्या- 47
	-10 पृष्ठ संख्या-8	- 41 पृष्ठ संख्या- 48
	-11 पृष्ठ संख्या-8	- 42 पृष्ठ संख्या- 50
	-12 पृष्ठ संख्या-9	-43 पृष्ठ संख्या- 51
	-13 पृष्ठ संख्या-9	- 44 पृष्ठ संख्या- 51
	-14 पृष्ठ संख्या-9	- 45 पृष्ठ संख्या- 52
	-15 पृष्ठ संख्या-9	-46 पृष्ठ संख्या- 52
	-16 पृष्ठ संख्या-10	- 47 पृष्ठ संख्या- 52
	-17 पृष्ठ संख्या-11	- 48 पृष्ठ संख्या- 53
	-18 पृष्ठ संख्या-15	-449 पृष्ठ संख्या- 55
	-19 पृष्ठ संख्या-15	- 50 पृष्ठ संख्या- 57
	-20 पृष्ठ संख्या-16	-51 पृष्ठ संख्या- 63
	-21 पृष्ठ संख्या-23	-52 पृष्ठ संख्या- 63
	-22 पृष्ठ संख्या-23	-53 पृष्ठ संख्या- 64
	-23 पृष्ठ संख्या-26	-54 पृष्ठ संख्या- 65
	-24 पृष्ठ संख्या-28	-55 पृष्ठ संख्या- 66
	-25 पृष्ठ संख्या-30	-56 पृष्ठ संख्या- 66
	-26 पृष्ठ संख्या-30	-57 पृष्ठ संख्या- 67
	-27 पृष्ठ संख्या-32	-58 पृष्ठ संख्या- 69
	-28 पृष्ठ संख्या-32	-59 पृष्ठ संख्या- 70
	-29 पृष्ठ संख्या-32	-60 पृष्ठ संख्या- 75
	-30 पृष्ठ संख्या-34	-61 पृष्ठ संख्या- 76
	-31 पृष्ठ संख्या-33	-62 पृष्ठ संख्या- 45

----- पृष्ठ संख्या समाप्त

:1: :2: :3: :4: :5: :6 :7:
कुण्डली चक्र :- चक्र , गरज , कतीसा, ठिठकना, ठिठार्ई, ठिम, डोजाचू,
:8: :9: :10: :11: :12: :13: :14: :15: :16: :17:
ऊर्दे, टोरिया, ध्यान, ठिकोना, पनेया, ठोरस, आनों, अरकाना, ध्यानें, काहु
:18: :19: :20: :21: :22: :23: :24: :25:
मुसर्दे, नवसर, पुकारना, ठिकास, उगाडी, ठिल्ली, पौनरव, समाई, वह अटा-सटा
:26: :27: :28: :29: :30: :31: :32: :33: :34:
मेरा, ठठोली, ध्यानी, ठाटिया, ध्यौस, चौन्हना, मुंडी, नाठि, रुस्ता,
:35: :36: :37: :38: :39: :40: :41: :42: :43:
ठिकाना, नाठिते, ध्याने, अरमाना, ठिटिया, ठिरठार , औनान, सायत, वलिहुर
:44:
वानी ।

कुण्डली चक्र

-1 पृष्ठ संख्या- 4
-2 पृष्ठ संख्या- 9
-3 पृष्ठ संख्या-14
-4 पृष्ठ संख्या-15
-5 पृष्ठ संख्या-19
-6 पृष्ठ संख्या-19
-7 पृष्ठ संख्या-30
-8 पृष्ठ संख्या-32
-9 पृष्ठ संख्या- 34
-10पृष्ठ संख्या-34
-11पृष्ठ संख्या-49
-12पृष्ठ संख्या-51
-13पृष्ठ संख्या-51
-14 पृष्ठसंख्या-51
-15 पृष्ठसंख्या-51
-16 पृष्ठसंख्या-51
-17 पृष्ठसंख्या-51
-18 पृष्ठसंख्या-51
-19 पृष्ठ संख्या51
-20 पृष्ठसंख्या-63
-21 पृष्ठसंख्या-69
-22 पृष्ठ संख्या-84
-23 पृष्ठसंख्या-88
-24 पृष्ठ संख्या-88
-25 पृष्ठ संख्या-93
-26 पृष्ठ संख्या-97
-27 पृष्ठ संख्या-97
-28 पृष्ठ संख्या-97
-29 पृष्ठ संख्या-108
-30 पृष्ठ संख्या-110
-31 पृष्ठ संख्या-113
-32 पृष्ठ संख्या-114
-33 पृष्ठ संख्या-137
-34 पृष्ठ संख्या-147
-35 पृष्ठ संख्या-152
-36 पृष्ठ संख्या-160
-37 पृष्ठ संख्या-160
-38 पृष्ठ संख्या-203
-39 पृष्ठ संख्या-204
-40 पृष्ठ संख्या-204
-41 पृष्ठ संख्या-204
-42 पृष्ठ संख्या-204
-43 पृष्ठ संख्या-209
-44 पृष्ठ संख्या-214

--- कुन्दनलाल वर्मा

:1: :2: :3: :4: :5: :6: :7: :8:
प्रेम की रोट :- छान-छप्पर, डोर, पतंग, माँझे, चक्र, चक्का, ब्याल अंधिया-कटिया
:9: :10: :11: :12: :13: :14: :15: :16: :17: :18:
चीखना, मुँह, रोजी, अंगूठी, शिशियाना, सुरीला, छिल-छिल, छेड़ा टोकना, फुहड़
:19: :20: :21: :22: :23: :24: :25: :26: :27: :28:
ढंगा, ठिठकना, बाँधना, खाटिया, सबल, रोल, मला, मेल-मेल, टोपना, मलाना,
:29: :30: :31: :32: :33: :34: :35: :36: :37: :38:
छलना, लौंजना, उदास, लाला, मार झाड़-पुछार, सिंदूर, उनसार, सम्म, टपल,
:39: :40: :41: :42: :43: :44:
सयानी- समानी, छौंजना, छोड़ना, मोंहरी, उल्ला बोली ।

:45: :46: :47: :48: :49: :50: :51:
उड़ी नकरी :- फसुआ, निशाच, कटपरा, लस्सा, पाल्हा, ठूँठ, सिराना, लहूका
:52: :53: :54: :55: :56: :57: :58:
पुलाना, भड़िया, सयानी, टोपना, रारा, दोर- ढंगर, रूमियाँ, घराड़े, मलसी,
:59: :60: :61: :62:
रोपूँ, खिलमना, दार सरार मंडया ।

:63: :64: :65: :66: :67: :68: :69:
अजमेरा कोर्ट :- छठ के छठ, उमगना, रारा, सुरीला, सयानी, घाट, खिलना,
:70: :71: :72: :73: :74: :75: :76: :77: :78:
दोरा, दुकेन, शिखर-शिखर, मेल, करीकोरी, चिरोरी, भाखारी, तुलकियाँ, अलाना,
:79: :80: :81: :82: :83: :84: :85: :86: :87:
सिराना, सुनार, साफी, खेमवार, खिलाना, उकास, टैया, खीचने, ठूँठ-ठकोरे सरार
:88:
कराव ।

प्रेम की रोट
-1 पृष्ठ संख्या-1
-2 पृष्ठ संख्या-3
-3 पृष्ठ संख्या-3
-4 पृष्ठ संख्या-5
-5 पृष्ठ संख्या-5
-6 पृष्ठ संख्या-6
-7 पृष्ठ संख्या-7
-8 पृष्ठ संख्या-8
-9 पृष्ठ संख्या-8
-10 पृष्ठ संख्या-14
-11 पृष्ठ संख्या-18
-12 पृष्ठ संख्या-23
-13 पृष्ठ संख्या-24
-14 पृष्ठ संख्या-25
-15 पृष्ठ संख्या-29
-16 पृष्ठ संख्या-31
-17 पृष्ठ संख्या-31
-18 पृष्ठ संख्या-33
-19 पृष्ठ संख्या-36
-20 पृष्ठ संख्या-38
-21 पृष्ठ संख्या-40
-22 पृष्ठ संख्या-40
-23 पृष्ठ संख्या-41
-24 पृष्ठ संख्या-44
-25 पृष्ठ संख्या-44
-26 पृष्ठ संख्या-46
-27 पृष्ठ संख्या-48
-28 पृष्ठ संख्या-50
-29 पृष्ठ संख्या-55
-30 पृष्ठ संख्या-55
-31 पृष्ठ संख्या-56
-32 पृष्ठ संख्या-57
-33 पृष्ठ संख्या-64
-35 पृष्ठ संख्या-67
-36 पृष्ठ संख्या-73
-37 पृष्ठ संख्या-76
-38 पृष्ठ संख्या-75
-39 पृष्ठ संख्या-77
-40 पृष्ठ संख्या-78
-41 पृष्ठ संख्या-80
-42 पृष्ठ संख्या-99
-43 पृष्ठ संख्या-106
-44 पृष्ठ संख्या-111
-45-पृष्ठ संख्या-1
-46 पृष्ठ संख्या-4
-47 पृष्ठ संख्या-5
-48 पृष्ठ संख्या-10
-49-पृष्ठ संख्या-18
-50 पृष्ठ संख्या-22
-51 पृष्ठ संख्या-23
-52 पृष्ठ संख्या-26
-53 पृष्ठ संख्या-30
-54 पृष्ठ संख्या-38
-55 पृष्ठ संख्या-41
-56 पृष्ठ संख्या-50
-57 पृष्ठ संख्या-54
-58 पृष्ठ संख्या-57
-59 पृष्ठ संख्या-58
-60 पृष्ठ संख्या-872
-61 पृष्ठ संख्या-121
-62 पृष्ठ संख्या-129
-63 पृष्ठ संख्या-10
-64 पृष्ठ संख्या-11
-65 पृष्ठ संख्या-12
-66 पृष्ठ संख्या-15
-67 पृष्ठ संख्या-17
-68 पृष्ठ संख्या-21
-69 पृष्ठ संख्या-23
-70 पृष्ठ संख्या-24
-71 पृष्ठसं०-29
-72 पृष्ठसं०-39
-73 पृष्ठ संख्या
-74 पृष्ठसं०-47
-75 पृष्ठसं०-48
-76 पृष्ठसं०-60
-77 पृष्ठसं०-75
-78 पृष्ठसं०-81
-79 पृष्ठसं०-98
-80 पृष्ठ संख्या
-81पृष्ठसं०-109
-82पृष्ठसं०-132
-83पृष्ठसं०-155
-84पृष्ठसं०-164
-85पृष्ठसं०-193
-86पृष्ठसं०-248
-87पृष्ठसं०-251
-88पृष्ठसं०-254

अजमेरा कोर्ट

-- वृन्दावनलाल वर्मा

:1: :2: :3: :4: :5: :6: :7: :8:
संगम :- कटकें, सनेत, कायेयु, जिसेखाँ, न्योला-बैंकारी, छछोली, बेलनार, जहार,
:9: :10: :11: :12: :13: :14: :15: :16: :17:
खिलाना, कक्का, नक्का, टोरिया, सुनीला, फरा, पालागना, बार्ड, उलाड़,
:18: :19: :20: :21: :22: :23: :24: :25:
निकाल, खिन्नू, दाँता- खिट खिट, खिन्न, मड़ियोरी, अन्धाना, कुर, खिलाना
:26: :27: :28: :29: :30: :31: :32: :33:
कर्ब, लिपना- पूलना, बैंगना, मुन्नारे, मोटारी, जीवना, जहारी सुआ भारका
:34: :35: :36: :37: :38: :39: :40:
पुष्पागल :- छछोली, भाँसिल, गड़पना; चीन्हना, आगी, मूँदना, निकुरना, खिरा-
:41: :42: :43: :44: :45:
जना, तोरा, बेलनार, निहोरा, सुआ अलिकाल ।
:46:
अमर बेल :- कौंच-बटिया, अचार्य, बैंना, पैंताना, निकलना, पीपा, चीकट,
:47: :48: :49:
गर्ब-गुजरी, घुमरा, छपका, घूमने, कुता, भारका, पक्का, बेल-फूट, खिलाना,
:50: :51: :52: :53: :54: :55:
मकारना, जोबन, पुकारी, चुटीली, खिराना, बीमना, निकला, ठोर, कलर,
:56: :57: :58: :59: :60: :61: :62:
निहोरा, रिस, छपन, खिसियाना, छछोली, छता, जहार, ब्याजु, अटकोर,

संगम
- 1 पृष्ठ संख्या-2
-2 पृष्ठ संख्या-3
-3 पृष्ठ संख्या- 9
-4 पृष्ठ संख्या- 9
-5 पृष्ठ संख्या-10
-6 पृष्ठ संख्या-11
-7 पृष्ठसंख्या-23
-8 पृष्ठ संख्या-24
-9 पृष्ठ संख्या-28
-10 पृष्ठसंख्या-29
-11 पृष्ठसंख्या-40
-12 पृष्ठसंख्या-41
-13 पृष्ठसंख्या-42
-14 पृष्ठ संख्या-50
-15 पृष्ठ संख्या-51
-16 पृष्ठ संख्या-52
-17पृष्ठ संख्या- 63
-18 पृष्ठ संख्या-65
-19 पृष्ठ संख्या-66
-20 पृष्ठ संख्या-67
-21 पृष्ठ संख्या-79
-22 पृष्ठ संख्या-80
-23 पृष्ठ संख्या-80
-24 पृष्ठ संख्या-80
-25 पृष्ठ संख्या-80
-26 पृष्ठ संख्या-80
-27 पृष्ठ संख्या-80
-28 पृष्ठ संख्या-80
-29 पृष्ठ संख्या-80
-30 पृष्ठ संख्या-80
-31 पृष्ठसंख्या- 93
-32 पृष्ठ संख्या-118
-33 पृष्ठ संख्या-147

पुष्पागल
-34 पृष्ठ संख्या-7
-35 पृष्ठ संख्या-12
-36 पृष्ठ संख्या-13
-37 पृष्ठ संख्या-57
-38 पृष्ठ संख्या-60
-39 पृष्ठ संख्या-69
-40 पृष्ठ संख्या-72
-41 पृष्ठ संख्या-97
-42 पृष्ठ संख्या-103
-43 पृष्ठ संख्या-109
-44 पृष्ठ संख्या-128
-45 पृष्ठ संख्या-143

अमरबेल
-46 पृष्ठ संख्या-2
-47 पृष्ठ संख्या-7
-48 पृष्ठ संख्या-8
-49 पृष्ठ संख्या-10
-50 पृष्ठ संख्या-11
-51 पृष्ठ संख्या-12
-52 पृष्ठ संख्या-13
-53 पृष्ठ संख्या-15
-54 पृष्ठ संख्या-17
-55 पृष्ठ संख्या-21
-56 पृष्ठ संख्या-23
-57 पृष्ठ संख्या-24
-58 पृष्ठ संख्या-27
-59 पृष्ठ संख्या-31
-60 पृष्ठ संख्या-36
-61 पृष्ठ संख्या-37
-62 पृष्ठ संख्या-40

---- वृन्दावनलाल वर्मा

:1: :2: :3: :4: :5: :6: :7: :8: :9:
टपरा, फरेरू, अखोटी, उमारा, चिलमना, चिलमना, सुभीला, बैलना, मुंड-झौंसा, [illegible],

:10: :11: :12: :13: :14: :15: :16:
भौनिया, अंगोरिया, चिरौरी, भौमान, मूंड उपटाना, निर्यो, चिल-चिलाना, चिलान,

:17: :18: :19: :20: :21:
चिलकारी दर्बजारा, मौसना, मुंडलचियारे, चिरथी, टीपना, कौसना-चिल्लपना, पौंत,

:22: :23: :24: :25: :26:: 27: :28: :29:
चिल्मा, झौंटा चिलेना, मुड्या, [illegible], अरार्थ, [illegible]-कटोरन, मुन्स, नेक, जमराज, [illegible],

:30: :31: :32: :33: :34: :35: :36: :37: :38: :39:
रोरा, [illegible], [illegible], परमेश्वरी, दी कूका, चिमूरना, टहलुआ, [illegible], जनी, पुरखा

:40: :41:
चिठौना, भुखरियाँ, झौंटना, ।

:42: :43: :44: :45: :46: :47: :48: :49:
आखत :- भौंसना, [illegible], करतब, कार्तिक, [illegible], [illegible]-[illegible], चिरौरी, [illegible],

------:50: :51: :52: :53: :54:: 55: :56: :57: :58:
[illegible], रोरा, [illegible], चिरौना, [illegible], भुगतना, [illegible], उकास, [illegible], [illegible],

:59: :60: :61: :62: :63:
[illegible], [illegible], [illegible], [illegible]-[illegible] तथा [illegible] ।

अपर ज्योति - बड़े-मोर[64], भरकों[65], पेड़[66], मौसनी[67], [illegible][68], [illegible][69], नामी गिरामी[70], तथा [illegible][71] ।

अमर बेल

-1 पृष्ठ संख्या- 43
-2 पृष्ठ संख्या- 56
-3 पृष्ठ संख्या- 57
-4 पृष्ठ संख्या-69
-5 पृष्ठ संख्या- 80
-6 पृष्ठ संख्या-102
-7 पृष्ठ संख्या-104
-8 पृष्ठ संख्या-116
-9 पृष्ठ संख्या-119
-10पृष्ठ संख्या-121
-11पृष्ठ संख्या-122
-12पृष्ठ संख्या-128
-13पृष्ठ संख्या-131
-14पृष्ठ संख्या-132
-15पृष्ठ संख्या- 137
-16पृष्ठ संख्या-137
-17पृष्ठ संख्या-145
-18पृष्ठ संख्या-152
-19पृष्ठ संख्या-157
-20पृष्ठ संख्या- 158
-21पृष्ठ संख्या-162
-22पृष्ठ संख्या-180
-23पृष्ठ संख्या-184
-24पृष्ठ संख्या -185
-25पृष्ठ संख्या-190
-26पृष्ठ संख्या-198
-27पृष्ठ संख्या-200
-28पृष्ठ संख्या-233
-29पृष्ठ संख्या-242
-30पृष्ठ संख्या-247
-31पृष्ठ संख्या- 261
-32पृष्ठ संख्या-275
-33पृष्ठ संख्या-279
-34 पृष्ठ संख्या-282
-35 पृष्ठ संख्या-
-36 पृष्ठ संख्या-298
-37 पृष्ठ संख्या-303
-38 पृष्ठ संख्या-328
-39 पृष्ठ संख्या-362
-40 पृष्ठ संख्या-364
-41 पृष्ठ संख्या-476

आखत
-42 पृष्ठ संख्या- 1
-43 पृष्ठ संख्या- 8
-44 पृष्ठ संख्या- 8
-45 पृष्ठ संख्या- 10
-46 पृष्ठ संख्या- 14
-47 पृष्ठ संख्या- 15
-48 पृष्ठ संख्या- 27
-49 पृष्ठ संख्या- 33
-50 पृष्ठ संख्या- 34
-51 पृष्ठ संख्या- 35
-52 पृष्ठ संख्या- 41
-53 पृष्ठ संख्या- 44
-54 पृष्ठ संख्या- 47
-55 पृष्ठ संख्या- 56
-56 पृष्ठ संख्या- 68
-57 पृष्ठ संख्या-109
-58 पृष्ठ संख्या-115
-59 पृष्ठ संख्या-142
-60 पृष्ठ संख्या-173
-61 पृष्ठ संख्या-188
-62 पृष्ठ संख्या-193
-63 पृष्ठ संख्या-203

अपर ज्योति -
-64 " - 1
-65 " - 2
-66 " - 20
-67 " - 142

---- वृन्दावनलाल वर्मा

68-पृ.सं.-255
69- " -52
70- " -65
71- " -51

:1: :2: :3: :4: :5: :6: :7: :8:
उदय किरण :- झाँर्य, पेल्लो, ठिहुरना, बेगरा, ढोर, ढूँढ, कौड़ा, सुलगना,
:9: :10: :11: :12: :13: :14: :15: :16: :17: :18:
भाँसना, कारखा, सुबीता, रपट, पुरा, गेल बीहना, बल्ली, खिसाना, बेला,
:19: :20: :21: :22: :23: :24: :25: :26: :27: :28:
रिन, निहोरा, खिसान, मन्सा, खिम्मा, भाग, खिटिया, आलू, बाँधता, खुण,
:29: :30: :31: :32: :33: :34: :35:
ढोर, डँगर, मनाना, खिसारना, निष्टाउ, मधना- मनाना, ऊपर-पट्टी, पुरौत
:36: :37: :38: :39: :40: :41: :42: :43: :44:
खिरौरी, ढूँढी, अड़गा, परसोरी, गढ़े, घाट, खिसबया, पुरखौती, खौंखिया, कटोटा,
:45: :46: :47: :48: :49: :50: :51: :52: :53: :54:
पोसना, धुआ, ठठ, मसखरा, सुराज, लिसना, सैया, भुन्नारे, मलारा, खिलम,
:55:
कहा अराटी ।
:56: :57: :58: :59: :60: :61: :62:
सोना : अथार्थ, मोड़े- मकोरे, पुँडरी, ढोर, उमकना, गुरिया, मस्ता, मिठियाना,
-+63+------ :64: :65: :66: :67: :68: : :69:
नकना, भुड़ुरना, ढूढ़र, चौंके, सयानी, खियाव, कलकी, गासना, मलखिया, आखरा,
:70: :71: :72: :73: :74: :75: :76:
आना, रेतुला, मनारना, चमना, अमुन, मसखरी, खौंखिया, काटिया, पुरखा,
:77: :78: :79: :80: :81: :82: :83: :84: :85:
दुहारना, टखनी, खिरौरी, टोटी, मेखला, मुरवै, हेटा, बेड़िनी, तटोली,

---

उदय किरण
-1 पृष्ठ संख्या- 1
-2 पृष्ठ संख्या- 1
-3 पृष्ठ संख्या- 2
-4 पृष्ठ संख्या- 3
-5 पृष्ठ संख्या- 3
-6 पृष्ठ संख्या- 4
-7 पृष्ठ संख्या-34
-8 पृष्ठ संख्या- 4
-9 पृष्ठ संख्या- 5
-10 पृष्ठ संख्या- 5
-11 पृष्ठ संख्या- 6
-12 पृष्ठ संख्या-10
-13 पृष्ठ संख्या-10
-14 पृष्ठ संख्या -11
-15 पृष्ठ संख्या-12
-16 पृष्ठ संख्या-12
-17 पृष्ठ संख्या-15
-18 पृष्ठ संख्या-16
-19 पृष्ठ संख्या-21
-20 पृष्ठ संख्या-24
-21 पृष्ठ संख्या25
-22 पृष्ठ संख्या-28
-23 पृष्ठ संख्या-28
-24 पृष्ठ संख्या-30
-25 पृष्ठ संख्या-32
-26 पृष्ठ संख्या-33
-27 पृष्ठ संख्या-35
-28 पृष्ठ संख्या-51
-29 पृष्ठ संख्या-51
-30 पृष्ठ संख्या-55
-31 पृष्ठ संख्या-58
-32 पृष्ठ संख्या-58
-33 पृष्ठ संख्या-59
-34 पृष्ठ संख्या-59
-35 पृष्ठ संख्या-62
-36 पृष्ठ संख्या-62
-37 पृष्ठ संख्या-64
-38 पृष्ठ संख्या-65
-39 पृष्ठ संख्या-74
-40 पृष्ठ संख्या-84
-41 पृष्ठ संख्या-85
-42 पृष्ठ संख्या-97
-43 पृष्ठ संख्या-99
-44 पृष्ठ संख्या-107
-45 पृष्ठ संख्या-110
-46 पृष्ठ संख्या-115
-47 पृष्ठ संख्या-116
-48 पृष्ठ संख्या-120
-49 पृष्ठ संख्या-128
-50 पृष्ठ संख्या-132
-51 पृष्ठ संख्या-132
-52 पृष्ठ संख्या-132
-53 पृष्ठ संख्या 133
-54 पृष्ठ संख्या-144
-55 पृष्ठ संख्या-171

सोना
-56 पृष्ठ संख्या- 1
-57 पृष्ठ संख्या- 3
-58 पृष्ठ संख्या- 5
-59 पृष्ठ संख्या- 7
-60 पृष्ठ संख्या- 8
-61 पृष्ठ संख्या- 10
-62 पृष्ठ संख्या- 12
-63 पृष्ठ संख्या- 13
-64 पृष्ठ संख्या- 14
-65 पृष्ठ संख्या- 18
-66 पृष्ठ संख्या- 19
-67 पृष्ठ संख्या- 20
-68 पृष्ठ संख्या- 23
-69 पृष्ठ संख्या- 24
-70 पृष्ठ संख्या-26
-71 पृष्ठ संख्या- 27
-72 पृष्ठ संख्या- 28
-73 पृष्ठ संख्या- 29
-74 पृष्ठ संख्या- 32
-75 पृष्ठ संख्या- 36
-76 पृष्ठ संख्या- 38
-77 पृष्ठ संख्या- 41
-78 पृष्ठ संख्या- 41
-79 पृष्ठ संख्या- 43
-80 पृष्ठ संख्या- 45
-81 पृष्ठ संख्या- 46
-82 पृष्ठ संख्या- 49
-83 पृष्ठ संख्या- 51
-84 पृष्ठ संख्या- 53
-85 पृष्ठ संख्या- 54

:1: :2: :3: :4: :5: शब्द शब्द:6: शब्द:7: शब्द:8:
चूक, चुहार, भाग्यानना, जरी, चिपर-चमिपर, खयाल, चिन्तवार, चिलान, रार,
शब्द:9: :10: :शब्द: :11: :शब्द: शब्द:12: :13: :14: :15: :16:
लीकना, ठठ, ठाव, चिलाना, चूँदा, कपरोटी, औरना, कमीनि, टाँचना, चुटियाना,
:17: :18: :19: :20: :21: :22: :23: /24:
डाढ़ा-ठोटी, चिन्तनें, चूँड़, चिलास, चिलन, सकेलना, चिलसना, कपरी, सकोला,
:25: :26: :27: :28: :29: :30: :31: :32: :33:
चिलना, चिरना, चून लोटियाँ, चीड़, चिराखना, उकास, भारका सत्तारुखेला ।

ख - लोकोक्तियाँ :- वृन्दावनलाल वर्मा के सामाजिक उपन्यासों में, समाविष्ट बुन्देलखण्ड की प्रचलित लोकोक्तियाँ उपलब्ध हैं ।

लगन :- लगन में प्रयुक्त लोकोक्तियों में जब अपना ही दाम खोटा तो परखैया को क्या
-----:34: :35:
दोष दें ।" हमारे लेखे में तो सब मर गये" " हो जाये तो लेना और न हो पाये
:36: :37: :38:
तो लेना। जो भाग्य में बदा होगा सो होगा ही, क्यों हैं सब रार्ध-रत्ती सब और
:39:
पूरी पट जाये तो गही समा जाऊँ ।" उल्लेखनीय है ।

सोना
-1 पृष्ठ संख्या- 53
-2 पृष्ठ संख्या- 58
-3 पृष्ठ संख्या- 60
-4 पृष्ठ संख्या- 62
-5 पृष्ठ संख्या- 65
-6 पृष्ठ संख्या- 67
-7 पृष्ठ संख्या- 70
-8 पृष्ठ संख्या- 78
-9 पृष्ठ संख्या- 81
-10 पृष्ठ संख्या- 87
-11 पृष्ठ संख्या- 89
-12 पृष्ठ संख्या- 91
-13 पृष्ठ संख्या-93
-14 पृष्ठ संख्या- 98
-15 पृष्ठ संख्या- 100
-16 पृष्ठ संख्या-101
-17 पृष्ठ संख्या- 103
-18 पृष्ठ संख्या- 108
-19 पृष्ठ संख्या- 110
-20 पृष्ठ संख्या- 133
-21 पृष्ठ संख्या- 134
-22 पृष्ठ संख्या- 135
-23 पृष्ठ संख्या- 138
-24 पृष्ठ संख्या- 147
-25 पृष्ठ संख्या- 182
-26 पृष्ठ संख्या- 113
-27 पृष्ठ संख्या- 116
-28 पृष्ठ संख्या- 117
-29 पृष्ठ संख्या- 119
-30 पृष्ठ संख्या- 121
-31 पृष्ठ संख्या- 182
-32 पृष्ठ संख्या- 187
-33 पृष्ठ संख्या- 203

लगन
-34 पृष्ठ संख्या- 70
-35 पृष्ठ संख्या- 35
-36 पृष्ठ संख्या- 62
-37 पृष्ठ संख्या- 29
-38 पृष्ठ संख्या- 52
-39 पृष्ठ संख्या- 29

---- वृन्दावनलाल वर्मा

संगम :- संगम में प्रयुक्त लोकोक्तियों के अंतर्गत, डूबते को तिनके का सहारा, आप-आप :1: :2: :3: :4: दादों को बुलायेगी, मनमानी घर जानी करना, नई बहू का पालागना, जैसी करनी :5: :6: :7: वैसी भरनी, उन्होंने बुरे घर जायना दिया है, आटा दाल का भाव मालूम होना :8: :9: :10: तेले को तेला, घर की मुर्गी दाल बराबर है, न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी, :11: :12: घर में भूंजी भाँग नहीं, किसी दानों दम और दम भार कहाँ मिल सकते है, बनाया :13: बुना तीर लौटाया नहीं जा सकता है, मोटे घर में आग ज्यादे नाच घरो :14: :15: :16: जोगीपुर, पाँचों घी में, बलबाँध दे उस बाँध दे, जब भगवान देते है, तब छप्पड़ :17: :18: :19: फाड़ कर देते है, भोगमान तो भुगतनी ही पड़ती है, जैसा जोड़ा तैसा छोड़ा, :20: :21: :22: जहाँ दड़दा गये-वहीं धन जाये, जानबूझ लाखों पाये, को किसका बटाये, कुछ :23: :24: दाल में काला है और बना बनाया खेल बिगड़ गया आदि उल्लेखनीय है ।

प्रत्यागत :- प्रस्तुत उपन्यासमें प्रयुक्त की गयी लोकोक्तियों में, " टूटी झोपड़ी ----:25:--- :26: :27: नंगा सर, कर में ऊँटा मुँह में टर, जलती आग में घी डालना, निखम्मा लड़का :28: :29: :29: कपूत से कम नहीं होता, वहीं जायेंगे, जहाँ सींग समायेंगे, सब उगलीं घट की नहीं :30: :31: :32: होती, हरि को भाये सो हरि को होई, गवाँर की अक्ल चोटी में होती है :33: :34: :35: पूँ-बाँध केहू छोड़े, कुछ हरि चर्चा होने दो, यह तो बाँये हाथ का खेल है, उधर

संगम
-1 पृष्ठ संख्या- 43
-2 पृष्ठ संख्या- 45
-3 पृष्ठ संख्या- 57
-4 पृष्ठ संख्या- 51
-5 पृष्ठ संख्या- 52
-6 पृष्ठ संख्या- 53
-7 पृष्ठ संख्या- 66
-8 पृष्ठ संख्या- 67
-9 पृष्ठ संख्या- 88
-10 पृष्ठ संख्या- 90
-11 पृष्ठ संख्या- 94
-12 पृष्ठ संख्या- 103
-13 पृष्ठ संख्या- 106
-14 पृष्ठ संख्या- 122
-15 पृष्ठ संख्या- 157
-16 पृष्ठ संख्या- 129
-17 पृष्ठ संख्या- 150
-18 पृष्ठ संख्या- 161
-19 पृष्ठ संख्या- 162
-20 पृष्ठ संख्या- 162
-21 पृष्ठ संख्या- 175
-22 पृष्ठ संख्या- 181
-23 पृष्ठ संख्या- 197
-24 पृष्ठ संख्या- 203

प्रत्यागत
-25 पृष्ठ संख्या- 11
-26 पृष्ठ संख्या- 12
-27 पृष्ठ संख्या- 14
-28 पृष्ठ संख्या- 19
-29 पृष्ठ संख्या- 36
-30 पृष्ठ संख्या- 38
-31 पृष्ठ संख्या- 56
-32 पृष्ठ संख्या- 57
-33 पृष्ठ संख्या- 67

-- वृन्दावनलाल वर्मा

:1:
जाओ तो आर्य, उधर जाओ तो भूँका, जाओ देखो मक्खी मुँह में नहीं आती ।
:3:
उधरसे अन्त न होय निबाहू, जैसी करते आयी सदा सो पाती है, मुझे कौन
:5: :6: :7:
लड़की-लड़के के आराधना, ऐसे जीवन को सौ बार धिक्कार, अविद्या देवराज,मैं-मैं
:8: :9:
की मची रहना, मर जाये ऐसा लड़का जो साधु को जाड़ने में जिसे लज्जा नहीं आवत
:10:
एक "अकाक" आदि का उल्लेख उपलब्ध है ।

कुण्डली चक्र :- कुण्डली चक्र में, निम्न लिखित लोकोक्ति में का प्रयोग किया गया
है । :-

:11:
दूसरों को तो कौड़ी का और अपने को करोड़ का आदमीसमझने से लेकर,
:12: :13:
दुनिया से अदुनिया पर खिसक पड़ना, एक दिन पिंजरा खोल-बोलेगा, आर्य रोटी
:14: :15: :16:
नहीं पचती, मंगल के साथ जंगल की सही, आती पर जोता भूँका, अपना मुँह
:17: :18:
अंगूठा चाटते की रहना, आधी दुनिया क्यों बाहरके कमरे में, इनके मारे नाकों में
:19: :20: :21:
दम है, काला मुँह कर के चले जाओ, जहाँ सींग समाये, दो घोड़ों की सवारी
:22: :23:
अच्छे नहीं होती, भाग्य में जो होता है,वही देखकर रहता है , जब तक साँस
:24: :25:
तब तक आस, सदा कभी कभी मर्द से बुरी हो जाओगे, तम तो बुद्धियों की तरह
:26: :27: :28: :29:
रोना ले बैठे, आज की बात में लीक्षा करूँगा, नाक का कान, लड़ी का गाँठ जमाना

प्रस्तावना -1 पृष्ठ संख्या- 87
-2 पृष्ठ संख्या- 92
-3 पृष्ठ संख्या- 93
-4 पृष्ठ संख्या- 94
-5 पृष्ठ संख्या- 112
-6 पृष्ठ संख्या- 129
-7 पृष्ठ संख्या- 132
-8 पृष्ठ संख्या- 133
-9 पृष्ठ संख्या- 133
-10पृष्ठ संख्या- 139
कुण्डली चक्र -11पृष्ठ संख्या- 14
-12पृष्ठ संख्या- 24
-13पृष्ठ संख्या- 28
-14पृष्ठ संख्या- 36
-15पृष्ठ संख्या- 49
-16पृष्ठ संख्या- 50
-17पृष्ठ संख्या- 63
-18पृष्ठ संख्या- 73
-19पृष्ठ संख्या- 76
-20पृष्ठ संख्या- 77
-21पृष्ठ संख्या- 77
-22पृष्ठ संख्या- 89
-23पृष्ठ संख्या- 111
-24पृष्ठ संख्या- 111
-25पृष्ठ संख्या- 123
-26पृष्ठ संख्या- 133
-27पृष्ठ संख्या- 134
-28पृष्ठ संख्या- 137
-29पृष्ठ संख्या- 147

--- कुण्डलीचक्र शर्मा

:1: :2:
ये सब बेकार पहेलियाँ हैं, जहाँ की आबस्त जिन्दगी है, रोज खोजते हैं, रोज पीते
:3: :4: :5:
हैं, बहुकर के रोने में दिव्य मुस्कानों का सार, आर्य पुत्र कभी कोई नहीं छोड़ता,
:6: :7:
जो जैसा होगा, वैसा पायेगा, मान न मान मैं तेरा महमान सच्चा जन्म आना तो
:8:
भला। सब लोकोक्तियों का अम्बार सा लगा हुआ है ।

:9:
प्रेम की भेंट :- प्रस्तुत उपन्यास में, घर के सूने पने अच्छे परदेश का बहुत बुरा
---------- :10: :11:
आगे भगवान के हाथ में है, शक्ति-जैसा की आरती पूजा, जब शक्ति बेमतलब की
:12: :13: :14:
भी नहीं देता है, मेरी खातिर सच्चा यहाँ आओ तो डूबा, यहाँ जाकि तो आर्य

आदि लोकोक्तियों का उल्लेख है ।

कभी न कभी :- प्रस्तुत उपन्यास में प्रयुक्त लोकोक्तियों के अंतर्गत पहेलियाँ भी
-:15:------ :16: :17:
गयी हैं, जो ईश्वर चित देगा, पेट के लिये सब सहना पड़ता है, हम को मिलकर
:18: :19:
संसार में दो ही के बराबर हैं, पीठ की मार सभी जा सकती है, पर पेट की मार,
:20:
घर की भड़ियाली अब हमारे शक्ति-पेर की है, सड़के- सड़कियों का ख्याल मुर्दियों
:21: :22: :23:
का खेल नहीं, पढ़ो या पिंजरा खाली करो, मन की है मन की, उकेशानीयसे ।

कुण्डली चक्र	-1 पृष्ठ संख्या-	149
	-2 पृष्ठ संख्या-	152
	-3 पृष्ठ संख्या-	154
	-4 पृष्ठ संख्या-	156
	-5 पृष्ठ संख्या-	168
	-6 पृष्ठ संख्या-	173
	-7 पृष्ठ संख्या-	187
	-8 पृष्ठ संख्या-	212
प्रेम की भेंट	-9 पृष्ठ संख्या-	1
	-10पृष्ठ संख्या-	24
	-11पृष्ठ संख्या-	45
	-12पृष्ठ संख्या-	90
	-13पृष्ठ संख्या-	107
	-14पृष्ठ संख्या-	109
कभी न कभी	-15पृष्ठ संख्या-	2
	-16पृष्ठ संख्या-	6
	-17पृष्ठ संख्या-	8
	-18पृष्ठ संख्या-	25
	-19पृष्ठ संख्या-	29
	-20पृष्ठ संख्या-	30
	-21पृष्ठ संख्या-	40
	-22पृष्ठ संख्या-	54
	-23पृष्ठ संख्या-	86

---- सुन्दरलाल शर्मा

अथ मेरा कोर्ट :- सोना में प्रयुक्त लोकोक्तियों में " :1:
:2: :3:
से लेकर सधि गये और लाली न टूटे चोटी कायलीना पड़ी तब का खाना, दास में
:4: :5: :6: :7:
डाला है, काका कभी सफेद हुआ है। एकदिल हजार आपत , से सिक पेर की बात,
:8: :9: :10:
पिये मोबर मलोरा, पेट की आसी मले को आ जायेगी, दोस करते सधि खोना,
:11: :12:
साक बिन लोग न प्रीतिस,खून लगाकर शहीद बनने को आ गये, अक्की आर पड़ेगा
:13: :14:
मालूम आटा दाल का भाव, मन के लड्डू खाने हैं तो जी भर के खाओ, का करे -
:15:
तो आज कर- आज करे,तो कल,/घर में परलय होयगी, बहुरि करेगा कब्ब, बिना
:16: :17:
गुड-मीठी के घर की लक्ष्मी फीकी है, घर फूंक तमाशा देखना, बिना चरित्र न
:18: :19:
जाने कोई, कमबख्ती जब स आती है,तब ऊंट चढ़े को कुत्ते काटते हैं, लोटा पचाड़
:20: :21: :22:
निकली खुशियां, न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी, सब ज्ञान बारिस पसेरी, सब
:23: :24:
तो कुछ कुल्हाड़ी के हेट भर हैं, सब तो मसान की राम-राम सत्य सरीखी बात है,
:25:
लोग की आकी पुराना का भाग तो जमाना कर रहाहै, क्या कहये लाकर चली थी
:26: :27: :28:
भगवान के घर से,तमसमस हाथों को पूर देखाये. जिस चक्की का पिसा खाते हो,
:29:
सदा मुत न कपास कोरी से लट्टम-लट्टा आदि उल्लेखनीय है ।

अथ मेरा कोर्ट -1 पृष्ठ संख्या- 12
-2 पृष्ठ संख्या- 15
-3 पृष्ठ संख्या- 35
-4 पृष्ठ संख्या- 49
-5 पृष्ठ संख्या-53
-6 पृष्ठ संख्या- 55
-7 पृष्ठ संख्या- 65
-8 पृष्ठ संख्या- 70
-9 पृष्ठ संख्या- 73
-10पृष्ठ संख्या- 78
-11पृष्ठ संख्या- 87
-12पृष्ठ संख्या- 93
-13पृष्ठ संख्या- 95
-14पृष्ठ संख्या- 99
-15पृष्ठ संख्या- 109
-16 पृष्ठसंख्या- 118
-17पृष्ठ संख्या- 122
-18पृष्ठ संख्या- 158
-19पृष्ठ संख्या- 162
-20पृष्ठ संख्या- 184
-21पृष्ठ संख्या- 185
-22पृष्ठ संख्या- 196
-23पृष्ठ संख्या- 220
-24पृष्ठ संख्या- 222
-25पृष्ठ संख्या- 222
-26पृष्ठ संख्या-228
-27पृष्ठ संख्या- 232
-28 पृ० संख्या- 340
-29पृष्ठ संख्या- 120

- - छन्दाकलाल वर्मा

सोना :- सामान्य रूप से प्रचलित लोकोक्तियों के साथ वर्मा जी ने "सोना" में विशेष रूप से उन लोकोक्तियों को प्रयुक्त किया, जो कृषक जीवन के लिये महत्वपूर्ण सिद्ध होती हैं। लोकोक्तियों का क्रम -"यह भी दो-एक पंक्तियां और लगे हाथ में मूसल पटकने,[1]" से प्रारम्भ होकर, कुंवर के मोह में मेहू की पूड़ी[2], बड़ा नाम बड़ी दाल[3], आगे की रामखाने[4], भगवान जब देते हैं तब छप्पर फाड़ कर देते हैं[5], दूध के धुले कौंगी[6], राजा-राजा को है और किसान-किसान[7], अपना अपना भाग्य[8], ओहो! ऐसे अनुज रहे जो, जैसे नर्म बहू[9], छोटी दुकान-नीचा पकवान[10], तुम्हारे लिये तो आये दाँत काटोल है[11], एक पन्थ दो काज[12], छोटा मुँह ऐसा कान- बड़ी बेल की है पहिचान[13], लम्बा मुँह और छोटे कान- बड़ी बेल की है पहिचान[14], बेल किसानजाको कन्ता- खेरा है जिन ऐसो बन्धा[15], छोटा सींग और छोटी पूंछ- ऐसे को तो नो है पूँछ[16], बेल सीधे बजरा- बाम दीखे अंगरा[17], बहू सिंगा जिन सीखो मोल- बूढ़ों में आदमी रमता खोल[18], मत कोई देख मुसकरा आदम- आसम मारिसे आरे[19], पायन, बगल के चिल्ले को छुटका कर चूर-चूर करते किसना,[20] गरीब की तीन-तरकारु[21], किसनी, जान बड़ी मालोंपाले[22], अपने गोर नाँदी[23], किसने जाँदी[24], आये-आये पहाड़ मरीसे किसा जाते हैं[25], ऐसे ऐसे बड़ भये, जिनि [illegible] है किसरीहि नाँदी[26], सुखेला पहुँचे घर गोद को [illegible] साथ कहना पड़ता है[27], आँख के अन्धे नाम नैन-सुख[28], अपनी जाँघ अपने दाँतों से उघाड़ना लाखों मरना[29], तुम्हारे लिये तब हम आम आदम के पसेरी है[30], अब लगा है महा- मूसल को बरसने, का न अपना कर सके[31] पर समाप्तकोता है।[32]

सोना	-1 पृष्ठ संख्या- 1	-20 पृष्ठ संख्या- 113	
	-2 पृष्ठ संख्या- 19	-21 पृष्ठ संख्या- 123	
	-3 पृष्ठ संख्या- 20	-22 पृष्ठ संख्या- 129	
	-4 पृष्ठ संख्या- 37	-23 पृष्ठ संख्या- 140	
	-5 पृष्ठ संख्या- 40	-24 पृष्ठ संख्या- 162	
	-6 पृष्ठ संख्या- 40	-25 पृष्ठ संख्या- 183	
	-7 पृष्ठ संख्या- 41	-26 पृष्ठ संख्या- 183	
	-8 पृष्ठ संख्या- 51	-27 पृष्ठ संख्या- 203	
	-9 पृष्ठ संख्या- 54	-28 पृष्ठ संख्या- 225	
	-10 पृष्ठ संख्या- 63	-29 पृष्ठ संख्या- 242	
	-11 पृष्ठ संख्या- 64	-30 पृष्ठ संख्या- 245	
	-12 पृष्ठ संख्या- 76	-31 पृष्ठ संख्या- 247	
	-13 पृष्ठ संख्या- 89	-32 पृष्ठ संख्या- 248	
	-14 पृष्ठ संख्या- 89		
	-15 पृष्ठ संख्या- 89	--- सुन्दरलाल वर्मा	
	-16 पृष्ठ संख्या- 89		
	-17 पृष्ठ संख्या- 98		
	-18 पृष्ठ संख्या- 90		

अमर बेल :- अमरबेल में प्रयुक्त लोकोक्तियों का नीचे नक्शा से नक्शा कर देने

:1: :2:
पर गोंडी बुजुर्ग लाड़ी को जाती है से लेकर मुक्त नहीं बदलना है, नदी-नाव का

:3: :4: :5:
संयोग, सारा गुड़ गोबर कर दिया, लोक बाग सो पंडा का पंडाल लगा डालते है,

:6: :7: :8:
दाल में काला है, ओम करतेकधि जलता है, अत्याचार की नाव में छ मोल डालना,

:9: :10: :11:
जो कुछ देने से मरे तो तिल न दीजिये ताजे, नाखों में दम आना, घाटी पहुंचना,

:12: :13:
एक पन्थ दो काज, अगल के पिछले को देख कर घूर घूर करते फिरना, न रहेगा बांस

:14: :15:
न बजेगी बांसुरी, बिना ओम परमाणु के देखा भी नहीं पसीजते, गांव को मारो

:16: :17:
नहीं तो गांव उसके फिर भी तोड़ दो, गाय बाबली दौड़ीहै, दाम की बछिया

:18: :19: :20:
से काम नहीं चलता, बाल की खाल निकालना, ओम घाटे चमड़ा नहीं दुबली, सब

:21:
एक से ईकोर्ड [illegible] नाक वाला कोई [illegible] बांध आना, गो की दृष्टि भोजन को

:22: :23: :24:
ओटन लगे कपास, सब गुड़ गोबर हो गया, अगला न लड़की है तो गरीबी न है,

:25: :26:
बांस के पेड़ पर तो गये नहीं है रोज बुआ जोड़ना रोज पानी पीना, छट्टी

:27: :28: :29:
आते गले पड़ना, अकबरी भगवान तीसे है, नंगा क्या नहाये और क्या निचोड़े,

:30: :31: :32:
बांस फैलते मगर नहीं [illegible], कल की कल से [illegible], मरी बछिया बाम्हन को, भाग्य

:33: :34:
पर किसी का वश नहीं, दोनों बांध लड्डू नहीं खाये जा सकते, भूमि अपने की

:35: :36:
लाठी और लंगड़े की बैसाखी है, अपनी अलगबिखड़ी पकाना, सांप-छछूंदर की

अमरबेल

-1 पृष्ठ संख्या- 14
-2 पृष्ठ संख्या- 15
-3 पृष्ठ संख्या- 20
-4 पृष्ठ संख्या- 25
-5 पृष्ठ संख्या- 26
-6 पृष्ठ संख्या- 34
-7 पृष्ठ संख्या- 45
-8 पृष्ठ संख्या- 61
-9 पृष्ठ संख्या- 62
-10 पृष्ठ संख्या- 69
-11 पृष्ठ संख्या- 70
-12 पृष्ठ संख्या- 75
-13 पृष्ठ संख्या- 97
-14 पृष्ठ संख्या-109
-15 पृष्ठ संख्या-116
-16 पृष्ठ संख्या-117
-17 पृष्ठ संख्या-123
-18 पृष्ठ संख्या-131
-19 पृष्ठ संख्या-140
-20 पृष्ठ संख्या-149
-21 पृष्ठ संख्या- 149
-22 पृष्ठ संख्या- 157
-23 पृष्ठ संख्या- 175
-24 पृष्ठ संख्या- 181
-25 पृष्ठ संख्या- 181
-26 पृष्ठ संख्या- 182
-27 पृष्ठ संख्या- 187
-28 पृष्ठ संख्या- 196
-29 पृष्ठ संख्या- 207
-30 पृष्ठ संख्या- 219
-31 पृष्ठ संख्या- 248
-32 पृष्ठ संख्या- 268
-33 पृष्ठ संख्या- 268
-34 पृष्ठ संख्या- 271
-35 पृष्ठ संख्या- 272
-36 पृष्ठ संख्या- 274

--- [illegible]

:1: :2: :3:
नहि की रखोरि, की प्यार है की प्यार, लाल छूटा नहीं मगर उतराने लगे,
:4:
बहुप्यार की अधिकता रहे, दानीवर आप- ऐसा कोई मददगार मिल जाये न जाये,
:5:
जो अमजाने सहज ही लाखों में चितदेय, आम खाने से मतलब या गुठलियाँ गिनने
:6: :7: :8:
में, तब लाभ आर्थिक कमोरी नहीं तोली जाती, साँप मरे और लाठी न टूटे,
:9: :10: :11:
जो प्रेमा करेगा वो पायेगा, सब फलो-फूलो, दमड़ी की कुनकुन टका की रंगाई,
घर जमाकरलोगा है ।

उदय किरण :- प्रस्तुत उपन्यास में निम्नलिखित लोकोक्तियों का समावेश हुआ है
---------- :12: :13: :14:
अन्धा भला जो भला, कम प्रधान विजय कर राहा, आँखे मले पड़ी, उल्टा चोरी,
:15: :16:
मध्यम मान, अधम चाकरी भीख निदान, उगली पकड़ कार्यहुआ पकड़ना, पूरखों
:17: :18: :19:
की नाक कटाना, जो हुआ हुआ, सो हुआ, अपनी खिचड़ी अलगपकाना, आदत
:20: :21: :22:
देखा के पोलाना कोड़ना, राम भरोसे जो रहे, घर्तस घर दरियाय, लोभे में सुगन्ध
:23: :24: :25:
को बारह, खरिये न खिलाल, खिलारिये न राय, जीव जीवों खरोच की न लोकों ।
अमरज्योति :- प्रस्तुत उपन्यास में बड़ेभोर[26], भरका[27], पेंड़[28], मीसना[29], जुहारे[30], ~~कुके~~[31], नाभी गिरामी[32], तथा चिनोजी[33] शब्दों का प्रयोग किया गया है।

अमर बेल
-1 पृष्ठ संख्या- 328
-2 पृष्ठ संख्या- 341
-3 पृष्ठ संख्या- 361
-4 पृष्ठ संख्या- 365
-5 पृष्ठ संख्या- 379
-6 पृष्ठ संख्या- 380
-7 पृष्ठ संख्या- 390
-8 पृष्ठ संख्या- 418
-9 पृष्ठ संख्या- 462
-10 पृष्ठ संख्या- 448
-11 पृष्ठ संख्या- 455

उदय किरण
-12 पृष्ठ संख्या- 12
-13 पृष्ठ संख्या- 178
-14 पृष्ठ संख्या- 24
-15 पृष्ठ संख्या- 3
-16 पृष्ठ संख्या- 40
-17 पृष्ठ संख्या- 60
-18 पृष्ठ संख्या- 9
-19 पृष्ठ संख्या- 97
-20 पृष्ठ संख्या- 110
-21 पृष्ठ संख्या- 148
-22 पृष्ठ संख्या- 158
-23 पृष्ठ संख्या- 182
-24 पृष्ठ संख्या- 162
-25 पृष्ठ संख्या- 66

अमरज्योति - 26 पृष्ठ संख्या - 1
27 " - 2
28 " - 20
29 " - 142
30 " - 255
31 " - 52
32 " - 65
33 " - 51

— वृन्दावनलाल वर्मा

ग- सूक्तियाँ :

संगम :- लोग अपने पापों से मुक्ति पाने के लिए संगम में आते हैं, फिर उसे पापी बनाते हैं। :1:

शिवरात्रि आदि में तो पदार्थ भी शुद्ध हो जाते हैं। पुजारी को केवल पूजा का अधिकार है, प्रतिमा के शरीर-सुख की आलोचना नहीं है। :2:

प्रयागराज :- यात्रा तो कष्टकर है, उसमें जाते जाने दो। लोकाचार यहाँ बेहतरीन बहुत है। गंगा जी में पापी स्नान करते ही अपने पापों से मुक्त हो जाता है, परन्तु गंगा जी को पापमय कुछ भी नहीं। :3:

कभी न कभी :- हर जगह व्यर्थ ही धन का प्रलोभनकर्ता में काफी शक्ति होती है। :4:

धन बिना धर्म तो संसार में कुछ है नहीं। :5:

अथ मेरा कोर्ट :- जीवन का केवल पुष्टि होती है। मृत्यु तो सूक्ष्मतम आन्तरिक भावों और भावनाओं की भाषा है, जिसे सुख शिखर और पतन कहती हो, वे उस भाषा के शब्द हैं। तारुण्य लीला, निष्कर्ष मनुष्यता यदि विवेकित का दूसरा नाम है, तो उसका लीलाधर नाम ठीक है। :6: किन्तु जाने किसकी भी व्यवस्था हो जाये, उसका जीवन क्रम अपने पुराने कलेवर में सीमित या अलगाव हो सकता। :7: साधारण असाधारण बने सकती है, असाधारण साधारण नहीं। :8:

अथ मेरा कोर्ट :- मैं संगीत की प्रेरणा के भीतर का जीवन मनुष्यता, और आत्मा की स्फूर्ति समाज का संगीत, शिक्षा की ये सभी रोजगार वाले भाव की मोहिनियाँ। :9: मनुष्य की प्रकृति के भीतर कोलाहल व्यापक है, उनका दमन नहीं हो सकता। उनके रस विकृत लोक मेरा बल सकते हैं। काव्य संगीत और चित्रकारी सीमाओं अधिमें-अधिमें हैं। सीमों का उद्गम स्थान एकही है। सभी के लिये उसका द्वार भी राज्यकोर सनातन है। :10: :11: :12: :13: :14: :15: :16: :17:

संगम -1 पृष्ठ संख्या- 29
-2 पृष्ठ संख्या-128
-3 पृष्ठ संख्या-147
प्रयागराज -4 पृष्ठ संख्या-161
-5 पृष्ठ संख्या-125
कभी न कभी -6 पृष्ठ संख्या-125
-7 पृष्ठ संख्या-132
अथ मेरा कोर्ट-8 पृष्ठ संख्या- 84
-9 पृष्ठ संख्या-106
-10पृष्ठ संख्या-124
-11पृष्ठ संख्या-172
-12पृष्ठ संख्या-129
अथ मेरा कोर्ट -13 पृष्ठ संख्या- 172
-14 पृष्ठ संख्या- 211
-15 पृष्ठ संख्या- 223
-16 पृष्ठ संख्या- 249
-17 पृष्ठ संख्या- 258

--- पुस्तकालय सार

कुण्डली छठ :- प्रकृति के नियम अटल और अमिट हैं, बिना किसी विरोध दिन रात एक गति में चलने वाले हैं, इसमें उन नियमों के विरुद्ध परिस्थितियों में :1: आनन्द का आरोप कर रखा है, यही ये सभी जीव काम की भटकती है। प्रकृति के सन्देश में सन्तुष्ट नहीं है, संगीत है, मारना नहीं है, पर जाना है। :2: दुष्टों का दमन और दुर्बलों की रक्षा प्रकृति के सौन्दर्य का आदेश है। :3: सत्ता की सत्ता मनुष्य की सबसे :4: :5: सुन्दर सृष्टि होती है। स्वार्थ तो सब जगह है, परोपकार की सृष्टि की जिस ने चीज है। ज्ञान-रहित अतीत कालीन विश्व युद्ध के फीके मस्तक की संकुचित मुस्कराहट संसार की एक दुःखद दुर्घटना है। :6: किसानों को कोई डर है तो बस गरीबी और लाचारी में गरीबों को अपने विषु के लिये रोक कर सकते हैं। :7: :8: आनन्द मनुष्य का योग्य ही पर अधिकार प्रकृति के नियम के विरुद्ध है।

अमर बेल :- बुद्धिमानियों की मान ने कि हम पुरातन और नूतन का समन्वय :9: समझदारी के साथ करें, जो होता आया है, वह होता रहता है और होता रहेगा, :10: सिर्फ रूप अलग रहता है, यदि प्राचीन में कुछ अच्छा है, तो उसे प्राचीन होने के :11: :12: कारण, उसे नष्ट न होना चाहिये, क्रान्ति लकीरों जीतीजा नहीं पहिचानती, भूखी नंगी जनता अरसेजिया होकर आग और तलवार का रूप धारण कर लेती है, :13: सिर्फ सद्भावनाओं की परवाह नहीं करती, जहाँ मन एक होता है, वहाँ मन अलग अलग :14: :15: नहीं रहते, विरक्त के और रखने के साथ आया तो क्या आया, जहाँ दृढ़ :16: संकल्प होता है, वहाँ सफलता की राह निकल ही आती है। पुराना हिंसा की जगह :17: :18: है, रखने मने हुये गन्दे घाँसों से मोजीजन का ख्याल नहीं किया जा सकता। :19: परिवारका निर्माण भौतिक वस्तुओं से होता है, व्यक्ति परिवारनहीं बनाते। काम करने वाले, सिद्धान्तों की खिल्लियाँ उड़ते और सिद्धान्तों की खिल्लियाँ करने वाले, :20: काम नहीं करते।

कुण्डली छ	-1 पृष्ठ संख्या- 24	-11 पृष्ठ संख्या- 61
	-2 पृष्ठ संख्या-27	-12 पृष्ठ संख्या- 67
	-3 पृष्ठ संख्या-28	-13 पृष्ठ संख्या- 71
	-4 पृष्ठ संख्या-39	-14 पृष्ठ संख्या- 96
	-5 पृष्ठ संख्या-33	-15 पृष्ठ संख्या-128
	-6पृष्ठ संख्या-156	-16 पृष्ठ संख्या-138
	-7पृष्ठ संख्या-210	-17 पृष्ठ संख्या-200
	-8 पृष्ठ संख्या-123	-18 पृष्ठ संख्या-201
अमर बेल	-9 पृष्ठ संख्या- 1	-19 पृष्ठ संख्या-203
	-10पृष्ठ संख्या- 8	-20 पृष्ठ संख्या-206

--- कुण्डलीलाल वर्मा

अभिव्यक्ति :

बुन्देलखण्ड के लोकप्रिय कलाकारों ने सत्य, सुन्दरता द्वारा लोकहित कला की ओर उपासना करके अमर वरदान प्राप्त किया। सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में स्थित शिवालय, आकर्षक और कलात्मक नगर-पुरानी मन्दिर, राजा-महलों और गुफाओं में ढाल कर अपने कर्तव्यपरायण करने वाली मूर्तियों, कलाओं की सजीवता का सुन्दर परिचायक है। जिन्हें वर्मा जी ने अपने सामाजिक उपन्यासों में जोड़कर जनमानस के समक्ष प्रस्तुत किया है।[32]

क- मन्दिर

लगन :- प्रस्तुत उपन्यास में हनुमान जी की मूर्ति और सती शिला का उल्लेख
---- :1:
मिलता है।

संगम :- संगम में स्थित ग्राम में प्रति स्थापित एक मन्दिर एवं ग्राम गोरामझरिया
---- :2:
की पहाड़ी पर स्थित एक प्राचीनतम मन्दिर का चित्रण किया गया है।

पुरुषार्थ :-बाँदा नगर में प्रसिद्ध नाम बिहारी जी के मन्दिर का उल्लेख, पुरुषार्थ
---- :4:
उपन्यास में मिलता है।

कुण्डली चक्र :- पाटन पहाड़ी पर स्थित सिद्धबाबा का प्राचीन मन्दिर एवं माता
---- :5:
के मन्दिर का उल्लेख कुण्डली चक्र में मिलता है।

प्रेम की भेंट :- इस प्रस्तुत उपन्यास में लालमेंहट के मन्दिर का उल्लेख मिलता है।
---- :7:

सोना :- वर्मा जी के " सोना" उपन्यास में देवगढ़ के किले के मध्य स्थित जैन,
---- :8:
बौद्ध, एवं वैष्णव मन्दिरों का उल्लेख मिलता है। इन मन्दिरों की प्राचीनता के
भी चर्चा मध्यप्रदेश, साथ ही बारहवी शताब्दी में निर्मित विष्णु मन्दिर पर
भी प्रकाश डाला गया है। पहली मांझ के पहाड़ पर स्थित प्रसिद्ध नीलकण्ठ :9:
महादेव जी का मन्दिर भी उल्लेखनीय है। कालिंजर, खजुराहो, ग्वालियर और :10:
मधोगढ़ में स्थित प्रसिद्ध कलात्मक प्राचीन मन्दिरों पर भी दृष्टिपात किया गया है।

लगन	-1 पृष्ठ संख्या- 1	प्रेम की भेंट	-7 पृष्ठ संख्या- 7
संगम	-2 पृष्ठ संख्या-15	सोना	-8 पृष्ठ संख्या-27
	-3 पृष्ठ संख्या-122		-9 पृष्ठ संख्या-167
पुरुषार्थ	-4 पृष्ठ संख्या- 7		-10पृष्ठ संख्या-160
कुण्डली चक्र	-5 पृष्ठ संख्या-35		
	-6 पृष्ठ संख्या-163		

--- वृन्दावनलाल वर्मा

अमर बेल :- अमर बेल में आगर्दुल ग्राम के मनोरम तालाब के किनारे शिवलोकेश बेल और ये पास मन्दिरों पर प्रकाश डाला गया है।:1:

ख - भाग :

संगम :- प्रस्तुत उपन्यासों झाँसी का ऐतिहासिक, विचार सिंधे का उल्लेख मिलता है।:2:

कुण्डली चक्र :- महाराज छत्रसाल के विशाल भारत मण्डल का उल्लेख कुण्डली चक्र में उपलब्ध है।:3:

सोना :- "सोना" में देवगढ़ का किला तथा देवगढ़ की ही गढ़ी मैनिपिंस मंडल पर प्रकाश डाला गया है।:4::5:

अमर बेल :- प्रस्तुत उपन्यास में गाडरवारा का पहाड़ी किला, गाडरवारा का ही भाग मंडल तथा सुदामापुरी बेतवाराज की घटनाओं का उल्लेख मिलता है।:6:

उदय किरण :- उदय किरण में बुंदेलखण्ड ग्राम केशानीरवारवाल डूंगर सिंह की घटनाओं का उल्लेख किया गया है।:7:

ग - गढ़ :

संगम :- प्रस्तुत उपन्यास में जबलपुर का गढ़ तथा टिमरनी ग्राम औरंगजेब का उल्लेख मिल किया गया है।:8::9:

सोना :- राजा के महल के नाम से प्रसिद्ध देवगढ़ की गढ़ी, और तुगरिया ग्राम की गढ़ी का उल्लेख सोना में किया गया है।:10::11:

अमर बेल	-1 पृष्ठ संख्या- 80	
संगम	-2 पृष्ठ संख्या- 91	
कुण्डली चक्र	-3 पृष्ठ संख्या- 27	
सोना	-4 पृष्ठ संख्या- 27	
	-5 पृष्ठ संख्या- 28	
अमर बेल	-6 पृष्ठ संख्या- 37	
उदय किरण	-7 पृष्ठ संख्या- 72	
संगम	-8 पृष्ठ संख्या- 13	
	-9 पृष्ठ संख्या- 2	
सोना	-10 पृष्ठ संख्या- 27	
	-11 पृष्ठ संख्या-180	---- कुन्दनलाल शर्मा

/6/ ललित कला :

सुन्दरलाल शर्मा जी के सामाजिक उपन्यासों में,ललित-कलाओं का सौन्दर्य एवं महत्व को आत्मसात कर लेता है। जहाँ व सरकार की सतत लापरवाही का आभास हमारे द्वारा निर्मित मंदिरों, धर्मशालाओं में होता है,वहीं पिछले पेशे में उन-जैसे हुनरमंदों और उनवाले कलाओं की बदहाल स्थिति में हुनरी-शिल्पी मूल्य धरोहरों आदि को सुरक्षित कर लेती है, साथ ही मानव के अमिट प्रभाव से मुक्त होकर वह दर्शकों के मध्य अपने को विस्मृत करलेती है। साहित्य के परिवेश में अलौकिक आनन्द का अनुभव करती हुई आत्मा एवं पुनः सांसारिक धरातल पर विचरित होने लगती है,तो लोकलीला कर्मों एवं स्फूर्ति का संचार कर देते हैं। ललित कलाओं की यह प्रक्रिया उपन्यास में आदिकाल से चली आ रही है, जिसका यथार्थोन्मुख आधारभूत रूप शर्मा जी के उपन्यासों में परिलक्षित होता है ।

:अ: चित्रकला :- शर्मा जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से चित्रकला का उल्लेख किया,जो अवलोकनीय है :-

लगन :- "लगन" में विवाह के अवसर पर भवनों की भित्तियों पर चित्रित,हाथी :1: लोगों, देवी-देवताओं और फूल-पत्तियों के रंग चित्रों का उल्लेख मिलता है।

अमर मेरा कोच :- प्रस्तुत उपन्यास में अमर के द्वारा उपन्यास में नारी पात्र एवं कुन्ती और सुभाष द्वारा निर्मित पेन्सिल चित्रों का उल्लेख प्राप्त होता है। इन :2: चित्रों में नारी की भिन्न-मुद्राओं में उसके अंगों का प्रदर्शन किया गया है।

:ब: मूल्य :- सुन्दरलाल शर्मा ने अपने कुछ सामाजिक उपन्यासों में मूल्यांकन की मूल्यकला को प्रदर्शित करते हुये विभिन्न प्रकार के मूल्यों पर प्रकाश डाला है।

अमर मेरा कोच :- प्रस्तुत उपन्यास के अंतर्गत शर्मा जी ने मूल्यकला के सम्बन्ध में अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है साथ पात्र विशेष के माध्यम से विशेषतः नव-युवकों में व्यक्त करते हैं। " अभिनिश्चित लालसाओं की मूल्यकला अत्यन्त प्राचीन

लगन -1 पृष्ठ संख्या- 11

अमर मेरा कोच -2 पृष्ठ संख्या-233

--- सुन्दरलाल शर्मा

भाषा है, जिसके शब्द, हाव-भाव, संगीत और लय हैं। फिर इस भाषा का व्याकरण जन मन और उसमें पैर की थिरकती आजादी मर्यादित, समन्वित जनमन या लोकमानस की मुक्तकला ने अलग की गया और उसको उद्दीपन या आत्मिक तृप्ति का रूप दिया गया। लोकनृत्य के नाम लेकर मार्कण्डेय कोला है- दशहरा, दिवाली, होली इत्यादि त्योहारों पर अपना पूरा अस्तित्व रख पाता है।"[1]

" असल मेरा कोई " उपन्यास में कालिकाजी सहारा इस जिन्दगी लेकभूता में लोक मुद्राओं के साथ देव पूजा नृत्य का उल्लेख किया है। अपने आराध्यदेव की उपासना हेतु कथित नृत्य सहारा की जाती है।[2] अन्यत्र स्थल पर अन्यक नृत्य का भी उल्लेख किया गया है, जिसमें कुछ पुरुष कालिका विशेषतम नृत्य का भी सम्मिलित रहता है। अन्यक नृत्य में स्त्री व पुरुष दोनों भाग लेते हैं।[3]

कुन्दनिकाण्ड में होली, दीपावली आदि त्योहारों के अवसर पर नर-नारियों द्वारा लोक नृत्य प्रस्तुत किया जाता है। ढोल, मजीरा, झुंझरू और मृदंग के साथ लोक नृत्य जातावरण में रस घोल देता है।[4]

कोला :- प्रस्तुतउपन्यास में रास-रासकानृत्य का उल्लेख किया है। जनमुख व मंडल में स्त्रियाँ तथा पुरुष सामूहिक रूप में भाग लेते हैं। नृत्य के साथक वाद्य यंत्रों का भी प्रयोगकिया जाता है। कुछ लोग जनमुख को व्यवसाय के रूप में अपनाते हैं। जनमुख में भाग लेने वाली स्त्रियों को प्रायः लोग वेश्याएँ कहते हैं।[5]

अमर बेल :- अमर बेल में लोक नृत्य तथा दीपावली में वर्षा के दिन मोर नृत्य आदि में सहारा धाँधर नृत्य का उल्लेख किया गया है।[6]

असल मेरा कोई -1 पृष्ठ संख्या- 83
-2 पृष्ठ संख्या- 21
-3 पृष्ठ संख्या- 27
-4 पृष्ठ संख्या-111
कोला -5 पृष्ठ संख्या- 33
अमर बेल -6 पृष्ठ संख्या-107

--- कुन्दनलाल वर्मा

संगम :- वर्मा जी के सामाजिक उपन्यासों में गायन पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है।

संगम :- प्रस्तुत उपन्यास में गायन गीत अथवा धुन गीतों की विशेषता पद्धति में गाने का उल्लेख किया गया है।

कुण्डली चक्र :- प्रस्तुत उपन्यास में, छायावाद की अस्पष्टता, हिन्दी गजलों तथा प्रबन्ध और ख्याल की गायकी का उल्लेख मिलता है।

कभी न कभी :- प्रस्तुत उपन्यास में, मालवे, काफी, भैरवी, जौनपुरी तथा अहरी" मालवा के "राग" उल्लेखनीय है।

सोना :- प्रस्तुत उपन्यास में राई गायन के गायन, ध्रुपद व ख्याल, काफी, पहाड़ी मालव मालवा के भजन प्रार्थनाएं तथा मुजरों का उल्लेख किया गया है।

अमर बेल :- प्रस्तुत उपन्यासमें ध्रुव पद, ठुमार, ख्याल, ठुमरी और टप्पा का उल्लेख मिलता है।

:4: राग-रागिनी :

कुण्डली चक्र :- प्रस्तुत उपन्यास में आसावरी, दरबारी तथा कान्हड़ा रागों का उल्लेख है।

कभी न कभी :- प्रस्तुत उपन्यास काम-राग तथा सितारे, चौसठ को दर्शाया गया है।

अमर बेल और :- प्रस्तुत उपन्यास में भैरवी, टोड़ी, तथा राग ताल का उल्लेख किया गया है।

सोना :- प्रस्तुत उपन्यास में ध्रुव पद व ख्याल का उल्लेख मिलता है।

अमर बेल :- प्रस्तुतउपन्यास में ताल विशिष्ट ध्रुव ताल, ध्रुपद, ठुमार, ख्याल, टप्पा आदि का उल्लेख किया गया है।

अमरज्योति :- प्रस्तुत उपन्यासमें असावरी, भैरवी, विहाग, दरबारी, कान्हड़ा, बागेश्री, धुपदपमार

(पृष्ठ संख्या गया है)

संगम	-1 पृष्ठ संख्या- 69	अमरबेल	-11 पृष्ठ संख्या- 414
	-2 पृष्ठ संख्या- 9	कुण्डली चक्र	-12 पृष्ठ संख्या- 10
	-3 पृष्ठ संख्या- 19		-13 पृष्ठ संख्या- 25
कभी न कभी	-4 पृष्ठ संख्या- 92	कभी न कभी	-14 पृष्ठ संख्या- 92
	-5 पृष्ठ संख्या- 32		-15 पृष्ठ संख्या- 99
सोना	-6 पृष्ठ संख्या- 53	अमरबेल और	-16 पृष्ठ संख्या- 3
	-7 पृष्ठ संख्या- 54		-17 पृष्ठ संख्या- 5
	-8 पृष्ठ संख्या- 88		-18 पृष्ठ संख्या- 43
	-9 पृष्ठ संख्या-117	सोना	-19 पृष्ठ संख्या- 53
	-10 पृष्ठ संख्या- 88	अमरबेल	-20 पृष्ठ संख्या- 414

--- प्रस्तुतउपन्यास वर्मा

अमरज्योति — 21 - पृ.स - 32
— 22 पृ.सं. — 45
— 23 " — 46
— 24 " — 40

:ग: बुन्देलखण्डी गीत :

संग्रह :- प्रस्तुत उपन्यास में तीन प्रकार के बुन्देलखण्डी लोक गीतों को संयोजित गया है। प्रथम श्रेणी के अंतर्गत विवाह के अवसर पर उस समय गाया जाता है, जबकि बारातमण्डप के द्वार पर पहुँच जाती है और वर का टीका/द्वारचार"/ सम्पन्न हो रहा होता है, उसी समय, बुन्देलखण्ड की महिलायें मंगलगीत के रूप में गा उठती हैं :-

वैवाहिक मंगल गीत

" मीठे मीठे बरसल नेते, सब साजन आयें ,
मीठो हमारे सब नेते, सब साजन आयें .[1]

दिवाली के नीचे अंतर्गत टेसू गीत आता है। यह गीत दशहरे के पूर्व लड़कों द्वारा टेसू-झाँझी सम्बन्धी रूपों में गाया जाता है ।

टेसू गीत :

" टेसू [illegible]
टेसू टमाम है,
सींग लाये हिरन के ।
बाटी लागी जोग की ।
है जोगी [illegible] की ।"[2]

तृतीय गीत में अंतर्गत दशहरे के कुछ दिन पूर्व की बालिकाओं द्वारा गुड़ियों के मुकटा गीत प्रस्तुत किया जाता है ।

मुकटा गीत :

" दियारा पू की गुंजरि मड़ावती, मारे मुकटा .
गोदा के पै मेरा तो अन्धार , मारे मुकटा!
.: ::: :::: ::::: ::::::
खेल लो बेटी खेल लो मायें बाकुल बारात।
अब दूर बैठो,बेटी ,मामरे, साल न कौलम देय ।।

संग्रह -1 पृष्ठ संख्या- 18

संग्रह -2 पृष्ठ संख्या- 30 --- कुन्दनलाल वर्मा

:: ::: :::: ::::::

" अब चिलमनी मार्ई आय को मेरे सुरज कहँ जायँ ।
कहँ न होय आये चन्दा,
उग धर होयँ लिखना पुरवा।।
नारन होय देवै गलियाँ ,
नगद न होय कोसे जिरना ।।
लिख के मू लिखी के वाने चन्दा अंगो ओ भुलाने ।। :1:

आवत :- प्रस्तुत उपन्यास में कार्तिक के समय स्त्रियों द्वारा गाये जाने वाले
लोक गीत का उल्लेख मिलता है :-

" भई न चिरज की भोर, सखी री मैं तो भई न चिरज की भोर,
चकवे मोर कदम पर बैठल, घेरल चारों ओर,सखी री मे तो---
कहु कहु पंख मिरे सजनी के, जीवत नन्द किशोर,सखी री मे तो-- :2:
उन पंखन को मुकुट बनावें,पहनत सुगल किशोर ,सखी री मे तो----

इसी प्रकार देवीगीत का भी उल्लेख मिलता है ।

" देवी महारानी की जय जय बोलो,
दुर्गा महारानी की,जय जय बोलो,
गंगा जी को नीर मैया, कैसे चढ़ाऊँ,
मइरी मे डारी है कुठार ।
माठी के चावल मैया, कैसे चढ़ाऊँ ,
मंदिरा मे डारे हैं कुठार।
मैया को दूध मैया कैसे चढ़ाऊँ ,
कुरा मे डारी है कुठार ।
पूरी कचौरीमैया कैसे चढ़ाऊँ , :3:
मदिरा मे डारी है, कुठार ।

कभी न कभी :- प्रस्तुत उपन्यास में बुन्देलखण्ड में गाये जाने वाले, गीत है, जिनमें मराठा
मेहमान गाने,नाचने,मेले एवं अन्य गीतों आदिका उल्लेख मिलता है। गीतों की
कुछ पंक्तियाँ निम्नवत हैं :-

1- लम्बिल कांकरी के मो कोस मदा मेहेन, :4:
उग मेहन में मेन बंद, जिन मेहन में मेन।।

2- मुख मोर मोर मुस्कवाल बात । :5:

3- मैं कभी आरी रेन,राजा! तुम्हारे लिये,
लोंगन कोस-कोस जिरिया लगाई,
मेरे आरी परोसी तुम्हारे लिये ।" :6:

संगम -1 पृष्ठ संख्या- 80 आवत -2 पृष्ठसंख्या- 90
-3 पृष्ठ संख्या-92
-4 पृष्ठ संख्या-92 कभी न कभी -4 पृष्ठ संख्या-92
-5 पृष्ठ संख्या-93 -5 पृष्ठ संख्या-93
-6 पृष्ठ संख्या-94 -6 पृष्ठ संख्या-94
-7

------ कृष्णकुमार वर्मा

अमर बेल :-अमर बेल में वर्मा जी ने बुन्देलखण्ड में ऐसों के ओले समय स्त्रियों द्वारा गाये जाने वाले लोक गीतों, खेत के गीतों तथा दीपावली में गोप ग्वाल आदियों के द्वारा ढोल मजीरों के साथ नृत्य करते हुये गाये जाने वाले गीतों का उल्लेख है। गोपियों द्वारा दीर्घ काल से पढ़वा के दिन लोकलाल गाये जाने वाला गीत अमर बेल में उपलब्ध है।"

" मधुकर आ महाराज हैं रानी सुंदरि मोय,
अवधपुरी से औरते ल्यावें अवध गोरन ।।

जल अम्मन करि जल मज्जन, रैन दिवारी होय ।
इन्द्रलाल धू मेखिये- देवर सुन्दारों होय ।।

पहले लाल पीछे धरो, फेर लाल को होय ।
नृसिंह देव धू मेखिये, देवर सुन्दारो होय।।

खेल खोर्य खीरस खनी, करन करों को पास।
लीखो नृसिंह देव मे, जब देखो सुन्दरलाल ।।[1]

अन्धगीत की पंक्तियों में -

" सिरिया जनम दिन देव दिवाला ।।[2]

तथा दोहा- " जाको जब देखो अदब, सो तब देखो पास।
राजक काज देखे चले, सो सुराज कराय ।।[3]

भी अमर बेल में उपलब्ध हैं ।

उदय किरण :- उदय किरण में विभिन्न प्रकार के गीतों को प्रतिबिम्बित किया गया है। गीत की भाषा में बहुधा द्वारा अपनी आस को उलाहना देना, स्त्रियों द्वारा चक्की पीसते समय गाये गाने वालागीत, जागरण गीत और अन्य तुलीया में गाये जाने वाले अपनी गीतों को प्रस्तुत किया गया है। आल्हा कीर्तन और मालवे भजनों पर ध्यान आकर्षित किया गया है। एक लोकगीत निम्न प्रकार है:-

" बहू सास को सम्बोधित करते हुये गाती है -

1-" कलेजी दुखेना सास की ।
जिस उरवाये सुमने चन्दन पलंगवा
मोरी भोली सास की।

अमर बेल -1 पृष्ठ संख्या- 122
-2 पृष्ठ संख्या- 181
-3 पृष्ठ संख्या- 336 ---- वृन्दावनलाल वर्मा

हँस हँस नैनन संग दुलैया के जाऊँ,
लाऊँ भर गंगा जल भोजन कराऊँ,
हँस हँस देवर संग हार गोंद जाऊँ।
जटाऊँ कलशो मिलि, गट्टा धर लाऊँ।।
सब की सो काम करूँ, हँस हँस काम करूँ,
कड़ी मजमल मे लाल की ।।1।।

बुन्देली गीतों में प्राचीन स्त्रियों द्वारा गाये जाने वाला यह गीत निम्नवत है-

" सूरज चढ़ आयो सीस पै अग्नि दोपहरी होय,
काहे पैठे सेज पै पूत काम करै कछू होय ।
गोंद पै लाओ गोदी खिलाओ, गोंद धरे आओ,
आँगन कौं जाओ, पाँव धुलाओ, अनाज धर लाओ।" ।।2।।

बागेश्वर बुन्देलखण्डी लोक गीत के अंतर्गत प्रस्तुत गीत उदय-किरण में उद्धृत है-

" जागो जागो सुरज के गीत, रजनी बीत गयी,
भई सिरना की मलिन सैया,
अंधेरा की चन्द हुलैया ,
सुआ के दीपक बाये सुँदैया,
नई किरन के भये है भुन्सारे। रजनी बीत गई,-----
कुटुम्ब को प्रेम टूट न पावे,
मन में रोम रोम भर जावे,
घर घर में आनन्द सुहावे,
मिल -जुल होय कलाद की। रजनी बीत गई ,-------।" ।।3।।

और अन्त में उदय-किरण में बुन्देलखण्ड की महिलाओं द्वारा अक्ष तृतीया के पूर्व पर गाये जाने वाले अक्षती गीत की एक पंक्ति मिलती है :--

"आई अक्षतीय महारानी,
गोसन पै चले की ।
गोसन पसीना होय देख,
फिर रव न मोहरों काट देख, ।।4।।
कयाल करा दै नन्द रानी ।

उदय-किरण -1 पृष्ठ संख्या- 94
-2 पृष्ठ संख्या-110
-3 पृष्ठ संख्या-132
-4 पृष्ठ संख्या-176 ------ वृन्दावनलाल वर्मा

/7/ बुन्देलखण्ड के रीति-रिवाज :

डा० वृन्दावनलाल वर्मा के सामाजिक एवं ऐतिहासिक उपन्यासों में बुन्देलखण्ड के रीति रिवाजों की अभिव्यक्ति है। पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक आदि सभी प्रकार के रीति रिवाजों पर दृष्टिपात करने से बुन्देलखण्ड की संस्कृति का एक विशिष्ट रूप उभर कर सामने आ जाता है। बुन्देलखण्ड के सभी अंचलों में प्रचलित रीति-रिवाजों को अपने उपन्यासों में सम्मिलित करके वर्मा जी ने यहाँ के जनमानस की सच्ची प्रस्तुति की है।

लग्न :- "लग्न" में वर्मा जी ने दहेज प्रथा का उल्लेख किया है :1: तथा कुछ परम्परित एवं पिछड़ी जातियों में कराव या हरीचा की रीति पर प्रकाश डाला है :2:, इस रीति के अनुसार कुछ छोटी जातियों में किसी विशेषकारण उत्पन्न होने पर लड़की के भाग जाने की स्थिति में उसकी बिरादरी के अन्तरीय लड़के के साथ कर दी जाती है। इस प्रकार पुनर्विवाह की रीति का अनुसरण किया जाता है। पहले पति " छोड़-छट्टी" लिखा दी जाती है :3:।

अन्य रीतियों के अंतर्गत, किसी भी व्यक्ति द्वारा समाज या जाति विरोधी कार्य करने पर जाति के पंचों द्वारा निर्णीत दण्ड देने की रीति का उल्लेख मिलता है। इस प्रकार के दोषी व्यक्तियों का जाति में हुक्का-पानी बन्द कर दिया जाता है :4:। त्योहारों में सामूहिक रूप से उत्सव मनाने और भोज सम्मिलित भोज की रीति भी बुन्देलखण्ड में परिलक्षित होती है :5:।

प्रायश्चित्त :- प्रायश्चित्त में धर्म सम्बन्धी रीति के अंतर्गत प्रदर्शित किया गया है कि यदि कोई व्यक्ति धर्म या जाति के नियमों के विरुद्ध कार्य करता है, तो उसे धर्म और जातिच्युत कर दिया जाता है, किन्तु व्रत-त्यौहार, दान, उपवास, दान-पुण्य तीर्थ भ्रमण और पंचगव्य ग्रहण करने पर और भोज देकर प्रायश्चित्त पर, उसे पुनः धर्म और जातिमें सम्मिलित कर लिया जाता है :6:।

लग्न
-1 पृष्ठ संख्या- 3
-2 पृष्ठ संख्या-13
-3 पृष्ठ संख्या- 9
-4 पृष्ठ संख्या-46
-5 पृष्ठ संख्या-14

बुन्देली प्रायश्चित्त -6 पृष्ठ संख्या- 93

---- वृन्दावनलाल वर्मा

कुण्डली छ :- प्रस्तुत उपन्यासमें कुछ ऐसे रीति-रिवाजों का उल्लेख मिलता है, जिनकी प्राचीन काल से मान्यता चली आ रही है। गायकड़े को दूध पिलाने देवता का कार्य की अपनता की कामना होती है और यो अच्छा शकुन माना जाता है। :1: बाबा में तो व्यक्तियों का एक साथ प्रस्थान करना अशकुन है। :2: अन्य रीतियों में दर्शाया गया है कि वहनोर्ध्वक्षेत्र आयु में छोटा होने पर भी लाने की अपेक्षा समाज में उच्च स्थान प्राप्त करता है। :3: इसके पद पूज्य और स्पर्शनीयहोते हैं। :4: वैवाहिक रीतियों के अंतर्गत,घोड़ा चढ़ी की रीति,विवाह/दाखत/ के समय कन्यापक्ष की ओर से स्त्रियों द्वारा गारी गाना। :5: विवाह में टीके-भांवर आदि के समय"रंगुला" नामक कुमेली वाद्ययंत्र का अनिवार्य रूप से बजाया जाना, विशेष उल्लेखनीय है :6: एक रीति के अंतर्गत बतलाया गया है कि उच्च जातियों में विधुर होने पर पुरुष का पुनर्विवाह मान्य है,जबकि विधवा विवाह को सामाजिक मान्यता प्राप्त नहीं है। :7:

अंत्येष्टि संस्कार सम्बन्धी रीति के अनुसार प्रेतात्मा या मृतक आत्मा के मोक्ष हेतु पीपल के वृक्ष पर एकछिद्र युक्त मिट्टी कपाल"सिकरी" लटकाना, जिस पर चार बत्तियों वाला दीप रखना और इसके अन्दर मेंढ़ और पैसा आदि डालना पड़ता है,ताकि मृतक की आत्मा को शान्ति मिले और मोक्ष प्राप्त होसके। :8:

संगम :- "संगम" के माध्यम से वहेंग प्रथा पर गम्भीर दृष्टि डालते हुये, विवाह :9: सम्बन्धी रीतियों पर सम्यक् दृष्टि डाली गयीहै। विवाह सम्बन्ध, सगोत्रियों में भी होना, विवाह में मुहूर्त शोधन करने, :10: टीका फिर चढ़ाना,सदुपरान्त कन्ही रसोईकी दावत,सत्यवचात, भांवर डालने की रीति को प्रदर्शित किया गया है। :11: विवाह के अन्यरीति रिवाजों में दूल्हे का पालकीमें बैठकर बारात में आना, कन्ही :12: पंगत में अपनीअपनी जाति के अनुसार स्थान ग्रहण करना , :13: पंगत केबाद भोजन

कुण्डली छ

-1 पृष्ठ संख्या- 26
-2 पृष्ठ संख्या- 171
-3 पृष्ठ संख्या- 62
-4 पृष्ठ संख्या- 87
-5 पृष्ठ संख्या- 80
-6 पृष्ठ संख्या- 87
-7 पृष्ठ संख्या- 102
-8 पृष्ठ संख्या- 171

संगम

-9 पृष्ठ संख्या- 6
-10पृष्ठ संख्या- 7
-11पृष्ठ संख्या-15
-12पृष्ठ संख्या-21
-13पृष्ठ संख्या-23

--- वृन्दावनलाल वर्मा

:1: प्रारम्भ करने के पूर्व वर द्वारा नेग माँगना, बिना नौका किये वधू की विदा न :2: करना, नई वधू से ससुराल में एक मास तक कोई कार्य न कराना तथा लगभग एक मास के बाद छिछोरी-कला की संज्ञा में वधू के द्वारा भोजन परोसे जाने की :3: रीति का उल्लेख मिलता है।

अन्य रीतियों में, वधिन के द्वारा भाई के राखी बाँधने के अतिरिक्त ब्राह्मणों द्वारा सामान्य व्यक्तियों को राखी बाँधना और मिष्ठान्न नारियल के साथ आशीर्वाद प्रदान करना, प्रत्युत्तर में ब्राह्मणों को दक्षिणादि देने की रीति :4: पर भी प्रकाश डाला गया है। बरातरे के अवसर पर बुन्देलखण्ड में वधुएँ द्वारा देवु और कुँवारी कन्याओं द्वारा मुहटा खोलने की रीति का भी उल्लेख :5: मिलता है। स्त्रियाँ मुहटा के भिन्न-भिन्न भी बनाया करती हैं।

अन्त्येष्टि संस्कार के सम्बन्ध में परिवार के सदस्यों द्वारा सूतक मनाने की रीति पर भी शर्मा जी ने दृष्टिपात किया है। विधवाएँ जिनमें दाढ़ी, मूँछ और :6: सिर के बाल बराबर मुण्डता को प्रदर्शित किया गया है। एक स्थल पर बुन्देलखण्ड की प्राचीनतम रीति का उल्लेख किया गया है, जिसमें बताया गया है कि यदि किसी गाँव में अकेली पड़ जाती थी तो उस गाँव के अन्तर्गत आने वाले प्रत्येकगाँव :7: में एक-साल कागज भेजा जाता था ताकि लोग सतर्क हो सके।

प्रेम की भेंट :- प्रस्तुत उपन्यास में विवाह के पूर्व वर-वधू की आम सभाओं के :8: मिलान करने की रीति का उल्लेख किया गया है। पर्दाप्रथा पर भी प्रकाश डाला गया है।

:9: कभी न कभी :- प्रस्तुत उपन्यास में टीपना मिलाने तथा पंचायत के लिये गाँव :10: भेजे जाने का उल्लेख मिलता है।

अमरज्योति :- प्रस्तुत उपन्यास में दहेज प्रथा[11], जातिप्रथा[12], तथा विवाह के पूर्व लड़की को गोद भरने की रीति को भी दर्शाया गया है[13]।

संगम	-1 पृष्ठ संख्या- 22	प्रेम की भेंट	-8 पृष्ठ संख्या- 199
	-2 पृष्ठ संख्या- 28	कभी न कभी	-9 पृष्ठ संख्या- 31
	-3 पृष्ठ संख्या- 30		-10 पृष्ठ संख्या- 90
	-4 पृष्ठ संख्या- 70		
	-5 पृष्ठ संख्या- 79		--- वृन्दावनलाल वर्मा
	-6 पृष्ठ संख्या- 156	अमरज्योति	- 11 - पृ.सं. 67
	-7 पृष्ठ संख्या- 180		-12 - पृ.सं. - 73
			-13 - पृ.सं. - 85

अब मेरा कोई :- प्रस्तुत उपन्यास में पर्दाप्रथा :1: ,डोली के अवसर पर स्त्रियाँ द्वारा नृत्य करने :2: विवाह में पलवाद, आतिशबाजी, भाँड़ नृत्य आदि की रीति का :3: उल्लेख किया गया है। जीजा-साली में छेड़-मजाक करने की पुरानी रीति को :4: भी दर्शाया गया है।

सोना:- सोना में वर्मा जी ने बुन्देलखण्ड के विभिन्न रीति-रिवाजों को प्रस्तुत किया है। विवाह सम्बन्धी रीति-रिवाजों में, टीपना मिलाने की रीति का :5: अनुसरण करते हुये, विवाह कीअन्य रीतियों का भी उल्लेख किया है, जिनमें वर पक्ष द्वारा कन्या को वस्त्र, आभूषण आदि :6: ,:7: देना बरात में सभी वाद्य यंत्रों के साथ बुन्देलखण्डी बाजा, रंगे कीअनिवार्यता, वर का भाँवरों के लिये पालकी में आना, किन्तु वधू का टीका घोड़े पर किया जाना आदि प्रमुख रीति रिवाज के :8: इसके अतिरिक्त अन्य रीति रिवाजों को भी दर्शाया गया है। कन्या विदा के समय कन्या द्वारा अपने माता, पिता, भाई बहिनों तथा भाभियों के साथ रो-रो कर भेंट करना, गाँव के निवासियों द्वारा कन्या की डोली के साथ पैदल चलकर गाँव की सीमा तक भेजना। :9: कन्या की विदा डोली में ही होना और डोली कहारों द्वारा उठाई जाना आदि रीति-रिवाजों का भी उल्लेख :10: मिलता है। गाँव की प्रथा के अनुसार यदि मायके से कोई भी लड़की ले निकले आता है,तो रीति के अनुसार लड़की उसे देखकर रोने लगती है,चाहे आगन्तुक रिश्तेदार भले ही न हो, किन्तु गाँव का निवासी होना चाहिये :11: ।

अन्यसामाजिक रीति रिवाजों में पंडित-पुरोहितों को "पालागन" कहकर आदर समर्पित करना, :12: कुँवार मास के पितृ-पक्ष में कनागतों में चील-कौओं को भोजन :13: खिलाना, दशहरे में जवारों का जुलूस निकालना और उसी दिन प्रातःकाल :14: नीलकंठ पक्षी और मछलियों के दर्शन करना, और दर्शनों को शुभ मानना।

अब मेरा कोई -1 पृष्ठ संख्या- 120
-2 पृष्ठ संख्या- 119
-3 पृष्ठ संख्या- 132
-4 पृष्ठ संख्या- 210

सोना -5 पृष्ठ संख्या- 18
-6 पृष्ठ संख्या- 24
-7 पृष्ठ संख्या- 25
-8 पृष्ठ संख्या- 52
-9 पृष्ठ संख्या- 24
-10 पृष्ठ संख्या- 25
-11 पृष्ठ संख्या- 41
-12 पृष्ठ संख्या- 18
-13 पृष्ठ संख्या- 77
-14 पृष्ठ संख्या- 100

---- वृन्दावनलाल वर्मा

अन्धरीति-रिवाजों में जैसी जाति की कन्याओं के विवाह में दाम-ग्रहण :1: का रिवाज, अरास में जातिबाजी फुसवाद और विशाल दाखा जैसे कोरीति तथा जाति विरोधी कार्य करने पर जातिदण्ड के रूप में बिरादरी भोज दिये जाने, आदि :2: रिवाजों का भी उल्लेख मिलता है। :3:

उदयकिरण :- उदय किरण में, पर्दा प्रथा की प्रचलित विधायताओं। दुंगर सिंह, कुरीति को स्पष्ट करते हुये अपने विचार व्यक्त करते हैं कि" हमारे घर की स्त्रियाँ तो कार्य क्षेत्र में नहीं जा सकती हैं। यहाँ पर्दे का रिवाज चला आ रहा है। :4:

आवरा :- प्रस्तुत उपन्यास में, स्त्रियों द्वारा कार्तिक मास का व्रत करके पूर्णिमा के दिन ब्राह्मण-भोज कराने की रीति का उल्लेख मिलता है। :5: इसके अतिरिक्त अन्धेष्टि के रीति-रिवाज तथा सोलहवाँ :6: बहेज प्रथा का उल्लेख भी मिलता है। :7:

/8/ बुन्देलखण्ड के मनोरंजन :

अनवरत, अटूट परिश्रम लेता मानव अपने जीवन में नीरसता का अनुभव करने लगता है, तब विभिन्न प्रकार के मनोरंजन ही उसे विश्राम, हर्ष और उल्लास प्रदान करते, उसके हृदय में नव-स्फूर्ति का संचार करते हैं। बालक, वृद्ध, युवक, युवतियाँ सभी मनोरंजन से अपने जीवन की कटुता को क्षीण करके, आनन्दित और आल्हादित होते हैं।

वर्मा जी ने अपने विभिन्न आंचलिक उपन्यासों में बुन्देलखण्ड के विविध मनोरंजनों की झाँकी प्रस्तुत की है।

लगन :- वर्मा जी ने "लगन" का क्षेत्र बुन्देलखण्ड के ग्रामीण अंचलों को चुना है, जिसमें गाँव के विविध मनोरंजनों की झाँकी प्रस्तुत की गयी है। यहाँ के निवासी, :8: :9: :10: :11: :12: गीत-गायन, भजन कीर्तन, नदी में तैरना, तैर-बाजी, त्योहारों में उत्सव मनाना, :13: युवा-युवतियों द्वारा मनोरंजक वार्ता करना, मल्लयुद्ध करना तथा प्राकृतिक उपादानों के माध्यम से अपना यथोचित मनोरंजन करते हैं। प्राकृतिक दृश्यों से उनका

अमल बेल	-1 पृष्ठ संख्या- 56	लगन	-8 पृष्ठ संख्या- 5
	-2 पृष्ठ संख्या- 207		-9 पृष्ठ संख्या- 21
	-3 पृष्ठ संख्या- 250		-10 पृष्ठ संख्या- 9
उदय-किरण	-4 पृष्ठ संख्या- 166		-11 पृष्ठ संख्या- 24
आवरा	-5 पृष्ठ संख्या- 32		-12 पृष्ठ संख्या- 14
	-6 पृष्ठ संख्या- 164		-13 पृष्ठ संख्या- 21
	-7 पृष्ठ संख्या- 188		-14 पृष्ठ संख्या- [illegible]

---- वृन्दावनलाल वर्मा

लोगों की श्रद्धा को अवसुन मानकर न देखना, भवानी कोप्रसन्न करने के लिये
:1:
पशु बलियों को मनोहरे खिलाना- आदि उल्लेखनीय है :2:।

अमर बेल :- प्रस्तुत उपन्यास में रीति रिवाजों की भयंकरता प्रदर्शित करने के लिये
यहाँ तक कहा गया है कि" रीति रिवाज तो देवताओं की तरह पूजनीय पूजनीय होते
:3:
हैं, जिनसे जन मानस की आस्था जुड़ी होती है। प्रस्तुत उपन्यास में दीपावली जैसे
प्रसिद्ध पर्व त्योहार से सम्बन्धित रीति रिवाजों का विस्तृत रूप से उल्लेख किया
गया है। दीपावली में अमावस्या के दिन बुन्देलखण्ड के कृषक अपने खेतों से
कोई कार्य नहीं लेते और न उस दिन खेत में जीवारोपण करते हैं। अपने खेतों
को श्रृंगारकर उनकी चोटी पर लाल रंग के ठप्पे लगाते हैं। गो-वर्धन और दोज-
पूजन भी विशिष्ट गोबर की प्रतिमाओं के पूजन के साथ सम्पन्न होता है। मौन
व्रत धारियों का समूह अपनी विशिष्ट परम्परा का अनुसरण करता हुआ तपस्या
के साथ निकलता है। मोनिये दीपावली के अवसर पर परवा के दिन मौन
धारण करते हैं और यह क्रम अनुसरण बारह वर्षों तक चलता रहता है। उसदिन
वे मोनिये दूध, पानी और रात्रि के अतिरिक्त कुछ ग्रहण नहीं करते। उनकी आस्था
रहती है कि रिवाज के दिन भगवान कृष्ण अपने सखा, ग्वालबालों के साथ गाँवों,
कूँओं, बाँवड़ी जाते वृन्दावन के आसपास के गाँवों का चक्कर काट आते थे, तब
अपना मौनव्रत भंग करते थे। उसी आस्था को अपने मन में संजोये हुये मोनिये नाचते-
कूदते हुये, कई गाँवों का परिक्रमा करते हैं। चाँदी के कण्ठे, हाथ की, लाल और
मजीरों की ध्वनि सम्पूर्ण वातावरण में उल्लास का भर देती है। लोग कहते हैं, कि कोई विरला बारह वर्षों तक व्रत को धारण कर लिया करता
है। आठ वर्ष के उपरांत मथुरा-वृन्दावन में जाकर मोनिये अपने चाँदी के कण्ठों
को यमुना में प्रवाहित कर देते हैं। मौनव्रत धारियों को नगर-त्योहारों भी
:4:
मिलती है।

लोना -1 पृष्ठ संख्या- 29
-2 पृष्ठ संख्या- 33
अमरबेल -3 पृष्ठ संख्या- 56
-4 पृष्ठ संख्या- 121 ---- वृन्दावनलाल वर्मा

निःशुल्क और भरपूर मनोरंजन हो जाता है। नदी, नाले, घाट, पर्वत, वृक्षावलि और
चौरि आदिस्थान का मनोरम दृश्य, उन्हें प्रेरणास्पद, स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करके,
प्रकृतिके प्रति, उनके हृदय में, असीम अनुराग उत्पन्न कर देता है। :1: मनचले युवकों का
मनोरंजन ग्रामीण सुन्दर स्वस्थ युवतियों के दर्शन और उनकी मधु मुस्कान और
वाक्‌विलास से हो जाता करता है। :2:

संगम :- प्रस्तुत उपन्यास में चित्रकूटके अवसर पर नौटंकी का आयोजन दिखाजाता है
सम्पूर्ण वर्णिक-नगरिकों को मनमुग्धकारक, नृत्य और सभी प्रकार के गीतों की लय,
मात्रा को आकर्षित कर देतीहै। कहीं कहीं पर नर्तकियों द्वारा नृत्य का आयोजन
भी मधुर कण्ठ और घुंघरुओं व की रुन-झुन के साथ मानव को आत्मतुष्टि प्रदान
करता है। :3: रामायण का पाठ त्योहार भाई बहिनों के वार्षिक वर्ष उल्लास में
वृद्धि करके अपनी पावनता को प्रकट करता है। :4: बुन्देलखण्ड में दशहरे का त्योहार
भी उत्साहोल्लास के साथ मनाया जाताहै। लोग रामलीला कार्यायोजन करके
मनोरंजन के साथ धार्मिकता भौतिकता से आध्यात्मिक की ओर उन्मुख होने लगते हैं
तथा दशहरे में बुन्देलखण्ड की विशिष्ट, अनुपरम्परा के अनुसार अधिकांशित
कन्याओं "द्वारा" नारे सुआटा" की प्रतिध्वनि गुंजरित हो उठती है, वहीं बालकों
"द्वारा " टेसू टमन के, सींग लगायें हिरन के" आदि गीतों का प्रसारण भी
जन मानस को आकर्षित कर देता है। :5: गाँव के युवक टोलियां बनाकर जब
कबड्डी खेलते हैं तो उत्साह के साथ खिलाड़ियों का भरपूर मनोरंजन होता है
और दर्शकों को भी सुखानुभूति होती है। :6:

प्रस्थान:- प्रस्थान में दर्शाया गयाहै कि रामायण के सुन्दरकाण्ड पाठ, जो साथ
सज्जा युक्त पण्डाल में मण्डित मंच में उल्लास पर्व हुआ है, साथ सम्पन्न होता था।
:7:
राम नवमी त्योहार में लोग उल्लास मनातेहैं। :8: जवारों का जलूस और मेले- बाजार

संगम -1 पृष्ठ संख्या- 24
-2 पृष्ठ संख्या- 22
संगम -3 पृष्ठ संख्या- 17
-4 पृष्ठ संख्या- 69
-5 पृष्ठ संख्या- 79/80
-6 पृष्ठ संख्या- 80
प्रस्थान -7 पृष्ठ संख्या- 4
-8 पृष्ठ संख्या- 6 ---- वृन्दावनलाल वर्मा

लोगों का यथोचित मनोरंजन हो जाता है। मंगलवार, शनिवार और त्योहारों में कीर्तन मण्डलियों द्वारा भजन-कीर्तन का आयोजन होता है, जिससे जन समुदाय आत्म-विभोर हो उठता है।[1] विभिन्न स्थानों पर रामलीला का आयोजन बड़ी धूमधाम के साथ होता है। श्रमुख यज्ञ की लीला तो काफी हर्ष के साथ सम्पन्न होती है। बाहर से पात्र बुलाये जाते हैं और लीला का रसास्वादन करते स्त्री-पुरुष, बालक-वृद्ध सभी हर्षमग्न हो जाते हैं।[2]

कुण्डली चक्र :- प्रस्तुत उपन्यास में गायन, वादन व नृत्य द्वारा प्राप्त यथोचित मनोरंजन का उल्लेख मिलता है।[3] विभिन्न राग-रागनियों में गाये जाने वाले गीत, मन-मानसमें आनन्द से परिपूरित कर देते हैं। कुछ लोग पर्यटन द्वारा विभिन्न प्राकृतिक एवं ऐतिहासिक स्थानों के दर्शन करके मनोरंजन प्राप्त करते हैं। सैर सपाटा करके उनके जीवन में नवीन आनन्द एवं उल्लास जागृत हो जाता है।[4]

लोग राम लीला के आयोजन के द्वारा अपनी धार्मिक वृत्ति और आस्तिकता का प्रतिपादन करते हुये एक सप्ताह तक मनोरंजन करते हैं।[5]

प्रेम की भेंट :- प्रेम की भेंट में लोग समय निकाल कर अथवा अवकाश के समय में काव्यग्रन्थों अथवा कहानियों की पुस्तकों का रुचिपूर्वक अध्ययन करते हैं।[6] वे लोक-धर्म, काव्य-वास्तविक और किस्से- कहानियों के गायन से भरपूर मनोरंजन प्राप्तकरते हैं।[7]

औरछा और बालाजी- उत्सव में मेलों का आयोजन किया जाता है। लोग नदी में स्नान करते हैंऔर भगवान के मन्दिर में जाकर भक्तिपूर्वक दर्शन करते हैं। सदुपरान्त मेले में लोग सभाओं, पिंडोरी, सरकस आदि विभिन्न शोओं द्वारा, अपना मनोरंजन होता है।[8]

प्रस्तावना -1 पृष्ठ संख्या- 5
-2 पृष्ठ संख्या-104
कुण्डली चक्र -3 पृष्ठ संख्या- 24
-4 पृष्ठ संख्या- 33
-5 पृष्ठ संख्या- 33
प्रेम की भेंट -6 पृष्ठ संख्या- 38
-7 पृष्ठ संख्या- 11
-8 पृष्ठ संख्या- 2

---- पुष्पाकलाल वर्मा

कभी न कभी :- प्रस्तुत उपन्यास में मनोरंजन के प्रमुख साधन, सिनेमा का उल्लेख किया गया है। गाँव के लोग भी अब सिनेमा को मनोरंजन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान देने लगे हैं :1: । गाँव के मेलों द्वारा भी उन्हें काफी आनन्द की उपलब्धि हो जाती है :2:। मेलों के तमाशे और गाँव के स्वाँग उनके जीवन में नव रस का संचार करने में पूर्ण सक्षम हैं :3: ।

असल मेरा कौन :- प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने प्रदर्शित किया है कि कुमायूँ अंचल में किसी नेता अथवा महापुरुष के स्वागत समारोहों में जनता सम्मिलित रूप से उत्सव मनाती है :4: ।

भोज आयोजन, एक विशिष्ट उत्सव को जन्म देता है, जिसमें सम्मान नृत्य, गायन, वादन, मन को प्रफुल्लित कर देता है :5:। उत्सवों के प्रारम्भ में लघु बालिकाओं के मनोहारी वेश भूषण, नृत्य होते हैं, जिनको देखकर दर्शक, रसास्वादन करते हैं :6:। युवतियों द्वारा विभिन्न मुद्राओं में सम्पन्न होने वाले नृत्य भी उल्लेखनीय हैं। दीपावली और होली के त्योहारों पर लोग मदों से मस्त घूमता उल्लासमय होकर अपना नृत्य अभिनय करते हैं :7:। विवाह में नर-नारियों के मनोरंजन हेतु मनोरंजक स्वाँग का आयोजन की जाती है, जहाँ शिव, होली और रानी लेख कर प्रसिद्धि लोग अपना मनोरंजन करते हैं :8: । सिनेमा, दर्शकगणों के लोग घण्टे अन्धकारमय वातावरण में बैठाकर उनके मन-मानस में मनोरंजन भर देता है :9:।

सोना:- प्रस्तुत उपन्यास में मनोरंजनों की एक लम्बी सूची प्रस्तुत की गयी है। गाँव में सम्पन्न होने की आड़ पर नर नारी, बालक-बालिकायें एकत्र हो जाती हैं। वे अन्ताक्षरी द्वारा मनोरंजक किस्से कहानियाँ सुना करते हैं और अन्य विनोद के साथ अपना स्वस्थ मनोरंजन करते हैं। त्योहारों में स्त्रियाँ आपस में बैठकर कहानियाँ कहती हैं, सुनती हैं और हर्षित होती हैं :10: ।

कभी न कभी -1 पृष्ठ संख्या- 52
-2 पृष्ठ संख्या- 21
-3 पृष्ठ संख्या- 26

असल मेरा कौन -4 पृष्ठ संख्या- 7
-5 पृष्ठ संख्या- 31
-6 पृष्ठ संख्या- 31
-7 पृष्ठ संख्या- 45
-8 पृष्ठ संख्या-183
-9 पृष्ठ संख्या-131

सोना -10 पृष्ठ संख्या- 4 ---- कुमारी कमला शर्मा

भांड-भगतियों के नृत्य देखकर भी लोग आह्लादित होते हैं। राई नाच के नृत्य-गान में स्त्री-पुरुष सम्मिलित रूप से भाग लेते हैं,जो देखते ही बनता है।[1] राजा महाराजाओं के दरबार में विभिन्न प्रकार के मनोरंजनों का समय समयपर आयोजन होता रहता था।[2] देशमुख के राजा सुरन्दर सिंह मुर्गों,तीतर-बटेरों,मेढ़ो-बकरों, भैंसों,सांड-बैल में,भेड़ों आदि की पारस्परिक युद्ध करवा के अपना और जनता का भरपूर मनोरंजन करते थे। पंखों के पेंच,कबूतरियों की दौड़,कन्दु पालना, कबूतरों का घुमक्कड़ के साथ विवाह करना, चरवर,रीछ,मंकलाना आदि भी पर्याप्त मनोरंजन के साधनों को उपन्यास में उजागर किया है।[3] मुख्य नर्तकियों,रासधारियों की मुख्यता ,जहाँ एकओर असीम आनन्द प्रदान करती है,वहीं सामान्य क्रीड़ायें मिट्टी-डंडा,कबड्डी,गोलियाँ खेलना और आपसी हँसी-मजाक लोगों का भरपूर मनोरंजन करते हैं।[4]

देवरानी पकावरानी में दुर्गा ग्राम में आयोजित मेले में बहुसंख्यक नर-नारी अपनी चप्पलों को निःशुल्क करके खुले पैरों में घूम उठते हैं।[5] नव दुर्गों और दशहरे में जवारों का मेला, लोगों के हृदय में उल्लास भर देता है। यह प्रदर्शनी भी ग्रामीण जीवन को प्रेरणास्पद मनोरंजन भेंट करती है।[6]

अमर बेल : - अमर बेल में प्रदर्शित मनोरंजनों के अंतर्गत,दंगलों,पर्वतों का परिभ्रमण करना, शिकार खेलना, सभा नृत्य गायन प्रमुख है।[7] दीपावली के अवसर पर मौनव्रतधारियों द्वारा बाँध नृत्य प्रदर्शन बुन्देलखण्ड के महत्वपूर्ण लोकनृत्य की परिपाटी को दोहराते हैं। मोनिये, " कमर में बड़े-बड़े घुंघरू बाँध कर, बाँहों में

लोना -1 पृष्ठ संख्या- 53
-2 पृष्ठ संख्या- 53
-3 पृष्ठ संख्या- 87
-4 पृष्ठ संख्या- 87
-5 पृष्ठ संख्या- 29
-6 पृष्ठ संख्या- 88
-7 पृष्ठ संख्या- 93
अमर बेल -8 पृष्ठ संख्या- 16
-9 पृष्ठ संख्या-120 ---- पुरुषोत्तमलाल वर्मा

में मोटा काला घोल कर, गले में घंघरिया, घुंघरू, हाथों में बांधा-दण्ड धारण किये, सिर पर मोर पंख बांधे, ढोलक की ताल पर लोक गीत के साथ जब उछल कूद कर नृत्य करते हैं-तो बड़ा लुभावना दृश्य बन पड़ता है और भरपूर मनोरंजन होता है।:1: इसके अतिरिक्त, कबड्डी गुल्ली-डण्डा और गोटों द्वारा भी लोगों का मनोरंजन होता है।:2: :3: बरातों में फुलवाड़ लूटना और रंगीन आतिशबाजी का आयोजन भी मनोरंजन करता है।:4: अखबार, पत्रिकाएं और पत्रिकाएं पढ़ना-सुनना भी मनोरंजन के साधन हैं।:5:

उदय किरण :- प्रस्तुत उपन्यास में राम लीला,:6: कृष्ण-लीला,:7: नाटक, भजन-कीर्तन, आल्हागायन,:8: लोक गीतों और लोक नृत्यों द्वारा प्राप्त मनोरंजनों का उल्लेख मिलता है।:9: फिल्मी रिकार्डों के द्वारा सिनेमा जगत के कोकिल कण्ठी गीतों को सुनकर प्रायः लोग आनन्दित होते हैं।:10:

नव रात्रि के पर्व पर श्रद्धा और उल्लास के साथ माताके भजनों का आयोजन किया जाता है।:11:

आरसी :- प्रस्तुत उपन्यास में, मुगल द्वारा पत्नियों का शिकार करना,:12: गवरज्य मेर लगाटी,:13: राजनीतिक चर्चायें,:14: पाना-जाना,:15: कबड्डी, आँख मिचोली, सेराकी, कागज की नाव से खेलना,:16: गुल्ली-डण्डा खेलना, राम लीला करना,:17: त्यौहार रखना,:18: लोक गीत गाना, गणेश चौथ का उत्सव मनाना तथा चंदा इकट्ठा कर मनोरंजन प्राप्त करने का उल्लेख मिलता है।:19:

अमरज्योति :- प्रस्तुत उपन्यास में पिकनिक,[20] सांस्कृतिक कार्यक्रम,[21] चांदमारी,[22] शिकार[23] और रक्षाबंधन का उल्लेख मिलता है।

अमर जेल	-1 पृष्ठ संख्या-127	- 16 पृष्ठ संख्या- 40
	-2 पृष्ठ संख्या- 27	- 17 पृष्ठ संख्या- 43
	-3 पृष्ठ संख्या- 31	- 18 पृष्ठ संख्या- 50
	-4 पृष्ठ संख्या-207	-19 पृष्ठ संख्या- 73
	-5 पृष्ठ संख्या-177	
उदय किरण	-6 पृष्ठ संख्या-148	
	-7 पृष्ठ संख्या- 42	--- वृन्दावनलाल वर्मा
	-8 पृष्ठ संख्या-104	
	-9 पृष्ठ संख्या-109	
	-10पृष्ठ संख्या- 75	
	-11पृष्ठ संख्या-109	
आरसी	-12 पृष्ठ संख्या- 3	
	-13पृष्ठ संख्या- 12	
	-14पृष्ठ संख्या- 13	
	-15पृष्ठ संख्या- 29	

अमरज्योति — 20 - पृष्ठ सं. - 8
21 — " — 8
22 — " 10
23 — " — 60

पंचम अध्याय

'फणीश्वरनाथ रेणु' के उपन्यासों में अभिव्यक्त बुन्देलखण्ड की सामान्य सांस्कृतिक विशेषताएँ

- आध्यात्म भावना
- आस्तिकता
- धर्म परायणता
- अंधविश्वास
- श्रद्धा-भक्ति
- कर्मकाण्ड एवं पुनर्जन्म
- पारस्परिक स्नेह भावना
- त्यौहार
- सम्मान की भावना
- आत्मनिर्भरता
- पारिवारिक व्यक्तियों परस्पर सम्बन्ध
- शिक्षा-प्रणाली
- कर्तव्य-भावना
- पारिवारिक
- भोजन वस्त्र एवं प्रसाधन सामग्री
- व्यायाम, अखाड़ा आदि

षष्ठ अध्याय

" वर्माजी के उपन्यासों में उपलब्ध बुन्देलखण्ड की सामान्य सांस्कृतिक-विशेषतायें "

"मनुष्य ने जो धर्म का विकास किया , दर्शन शास्त्र के रूप में जो चिन्तन किया , साहित्य संगीत और कला का जो सृजन किया , सामूहिक जीवन को चिरकर और सुखी बनाने के लिये जिन प्रथाओं और संस्कारों को विकसित किया , उन सब का समावेश हम संस्कृति में करते हैं ।" :1:

इस प्रकार , संस्कृति में विभिन्न विशेषताओं का समावेश होना अनिवार्य है । इन विशेषताओं के आधार पर प्रत्येक मनुष्य अपनी संस्कृति से कुछ न कुछ ग्रहण करता रहता है । टायलर का विचार है कि " संस्कृति विषय एक सम्मुच्चय है, जिसमें ज्ञान , विश्वास , कला, आदर्श, विधि और वे क्षमतायें और आदतें सम्मिलित रहती हैं , जिन्हें एक मनुष्य समाज का सदस्य होने के नाते प्राप्त करता है । " :2:

भारतीय संस्कृति का सृजन करने में , क्षेत्रीय संस्कृतियों का भी विशेष योगदान रहा है । भारतीय संस्कृति का विराट रूप उनके सहयोग का सुपरिणाम है । भारतीय संस्कृति उदधि के समान है । इसमें से सभी तत्व और विशेषतायें उपलब्ध हैं जिनका उल्लेख मोलिनवोस्की ने संस्कृति के व्यापक रूप को दर्शाते हुये बताया है । "इसमें भौतिक निपुणतायें , श्रेष्ठतायें , कलात्मक प्रक्रिया, विचार, आदतें और विशेषतायें सम्मिलित रहती हैं । अतः संस्कृति का सम्बन्ध और धर्म से लेकर सामाजिक संस्थाओं की रीति - रिवाजों तक मानव जीवन की समस्त महत्वपूर्ण विचार प्रणालियों से है । " :3: संस्कृति से ही व्यक्ति शारिरिक , मानसिक , आध्यात्मिक तथा नैतिक संस्कारों को प्राप्त करता है ।

बुन्देलखण्ड की संस्कृति अपनी अद्भुत सांस्कृतिक विशेषताओं के कारण सदैव सजग, आदर्शमयी और चेतनापूर्ण रही है । वर्मा जी ने अपने उपन्यासों-

---

1:- डा० सत्यकेतु विद्यालंकार-भारतीय संस्कृति और उसका इतिहास -पृ०-20

2:- E. V. Tylor - Primitive culture - P-1

3:- Encyclopaedia of Social Sciences vol. III P-621

के माध्यम से इस अंचल की संस्कृति की सामान्य सांस्कृतिक विशेषताओं को उजागर किया है । आध्यात्मभावना से लेकर रहन - सहन और खान - पान तक की समस्त विशेषताओं का उल्लेख बुन्देलखण्ड की संस्कृति में मिल जाता है, जो निम्नवत् है ।

1:- आध्यात्मभावना

मानव, अपनी बुद्धि और विवेक से जब संसार की क्षणभंगुरता के बारे में भली - भाँति समझ लेता है , तब वह संयोग से समाधि की ओर उन्मुख होने लगता है । उसकी आत्मा , परमात्मा से साक्षात्कार करने के लिये व्याकुल हो उठती है । वह ईश्वर की सत्ता को स्वीकार कर लेता है और तभी उस में आध्यात्म भावना का प्रादुर्भाव होने लगता है । जन्म - जन्मान्तरों तक यही शाश्वत नियम चलता रहता है । जन - जीवन में आध्यात्म भावना आदिकाल से विद्यमान रही है । उसकी अनिवार्यता और महत्ता को भौतिक वादी पाश्चात्य विद्वानों ने भी स्वीकार किया है । संस्कृति में उसका विशेष स्थान है । " मानव के भोजन तथा अन्य रक्षात्मक साधन, जीवनगत आवश्यकताओं के मनुष्य कोण से जितने सत्य हैं , उतनी ही उसकी आध्यात्मिक आवश्यकता की सत्यता असंदिग्ध है । " :1:

बुन्देलखण्ड की सामान्य सांस्कृतिक विशेषताओं में लोक - परलोक , जीवन - मृत्यु , नश्वर - संसार , मुक्ति , चिरशान्ति , ध्यान , ईश्वर की सर्वसत्ता आदि विभिन्न आध्यात्मिक तत्वों को वर्मा जी ने अपने विविध उपन्यासों के पात्रों की मनोभावनाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया है जिनका उल्लेख निम्नवत् है ।

1:- गढ़ कुण्डार :-

प्रस्तुत उपन्यास में विभिन्न स्थलों पर आध्यात्म भावना दर्शायी गई है । उपन्यास का पुरुष पात्र दिखाकर अपने विचार व्यक्त करता है कि वह जैसे इस संसार में आया था वैसे ही एक दिन इस संसार को त्याग देगा किन्तु :2: आत्माओं के संयोग को वह चिर स्थायी मानता है । उसकी मनोभावनायें हैं कि " प्रकृति और पुरुष , पुरुष और सुगन्ध , वर्ण और सुवर्ण , मेघ और ज्योति ,

---

1:- The Evolution of culture, ED 1959. P-9- Lesli. A. White

2:- गढ़कुंडार - पृ.सं. 330 - वृन्दावन लाल वर्मा

आशा और पुरुषार्थ , स्नेह और मृदुलता, मोह और प्रीति , देह नाशवान् है । रूपान्तरगामी , परन्तु आत्मा अमर ।" ।।। विजावर अपनी प्रेयसी तारा से कहता है कि "तारा ! हमारा संयोग अखण्ड और अनन्त है । यमराज धर्म हमारी देहों के संयोग का निषेध कर सकता है , परन्तु आत्माओं का निषेध नहीं कर सकता ।" :2: उपन्यास के एक अन्य पात्र स्वामी जी का कथन है कि " गृह कलह में पड़ कर मैं अपना लोक- परलोक नहीं बिगाड़ूँगा ।" :3: इन विचार - धाराओं में आध्यात्म भावना परिलक्षित होती है ।

2:- विराटा की पद्मिनी :-

उपन्यास में अनेक स्थलों पर आध्यात्मभावनापरिलक्षित हुई है । राजा मायक सिंह देशाचलान से पूर्व बुन्देलखण्ड के धार्मिक स्थल "पंचनद" : जो जालौन जनपद में विद्यमान है , जहाँ यमुना , चंबल , सिन्धु , पहुंज तथा कुंवारी पाँच नदियाँ मिलती है : :4: वहाँ जाकर यमुना से अपनी भवलोक यात्रा समाप्त करने की अभिलाषा व्यक्त करते हैं :5: तथा यमुना की रज में लोग उनके अस्थि - पुष्पों का विसर्जन करना चाहते हैं । :6: उनकी इन अभि-लाषाओं के पृष्ठ में मोक्ष की कामना निहित है तथा उनके विचार अध्यात्मवादी हैं । लोचन सिंह की मनोभावना है कि " भीगे हुये कफन से और भी जल्दी - मुक्ति मिलेगी ।" :7: लक्खन सिंह का एक सिपाही आशा व्यक्त करता है कि " बैतरिया वाला हम अवश्य पहनेंगे । मौत से हमारा ब्याह होगा ।" :8: ये भावनायें आध्यात्म की ओर उन्मुख करती हैं । कुमुद के सहारा गाये जाने -

---

1:- मदकुण्डार - पृ. सं. 892 - वृन्दावन लाल वर्मा

2:- वही - " 503 - वही

3:- वही - " 141 - वही

4:- विराटा की पद्मिनी - पृ. सं. - 68 - वृन्दावन लाल वर्मा

5:- वही - - " - 54 - वही

6:- वही - - " - 55 - वही

7:- वही - - " -274 - वही

8:- वही - - " -349 - वही

वाले गीत में जीवन की क्षण भंगुरता का आभास मिलता है । गीत की दो पंक्तियाँ विशेषरूप से अवलोकनीय हैं ।

"बीन - बीन फूलवा बड़ी रस

उड़ गये फूलवा रह गई वास ।" :1:

3:- कबनार :-

प्रस्तुत उपन्यास में विभिन्न पात्रों के माध्यम से आध्यात्म - भावना दर्शायी गई है:1: और उसे माया का रूप प्रदान किया है । कबनार का विचार है कि राम भजन सार है , उससे ही सांसारिक जंजाल से मुक्ति मिल सकती है । :3: ईश्वर की आराधना के अतिरिक्त उसे कुछ प्रिय नहीं लगता । महन्त अपनी मनोभावनायें व्यक्त करते हुये कहता है कि " सोना - चाँदी चमकदार कंकड़ - पत्थर हैं , उससे बढ़कर मोक्ष है ।" :4: जंगल पूरी लोक - परलोक में तपस्या के बल पर माया को जीतने की कामना करती है । :5: सुमन्त के विचार से पूजन में दृढ़ता आने पर शून्य में ध्यान लगा कर अनन्त प्रकाश के अनादि और अनन्तजन्मदाता के दर्शन हो जाते हैं ।" :6: क्रोध , मोह , वासना , विकार के परित्याग को ही वह परम आवश्यक मानते हैं ।

4:- झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई :-

प्रस्तुत उपन्यास में विभिन्न स्थलों पर आध्यात्म भावना परिलक्षित होती है । लक्ष्मी बाई के बचपन का नाम मनुबाई छबीली था । मनु में शैशवकाल में ही आध्यात्म भावना विद्यमान थी । वह अपनी सखी सहेलियों से कहती है कि " ये फूल कहाँ से आये , कहाँ जायेंगे ! ये क्या मिट्टी से बढ़ कर हैं "+ + फूलों से नाता जनाये रखो , किन्तु मिट्टी से सम्बन्ध तोड़ कर नहीं87

1:- विराटा की पद्मिनी - पृष्ठ सं॰ 356 - वृन्दावन लाल वर्मा

2:- कबनार - " 84 - वही

3:- वही - " 137 - वही

4:- वही - " 148 - वही

5:- वही - " 187 - वही

6:- वही - " 219 - वही

7:- झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई- पृष्ठ सं॰ 168 - वृन्दावन लाल वर्मा

युद्ध के समय शहीद आत्माओं के सम्बन्ध में रानी अपने विचार व्यक्त करती है कि " उनकी आत्मा तो हरी - भरी है । ये उनके चढ़ाये फूल हैं जो बल युद्ध में बलिदान हो गये हैं । " :1: जीवन के अन्तिम क्षणों में भी वे बल महावाक्य का स्मरण करती रहीं जिसमें आध्यात्म की भावना निहित है । " नैनं छिन्द-न्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।" :2: आत्मा की अमरता तथा क्षणभंगुर जीवन के सम्बन्ध में अपनी मनोभावनाओं को व्यक्त करते हुये रानी कहती है कि "एक दिन सब को मरना है परन्तु भगवान का ध्यान करते - करते मरना यह जन्म भर की अच्छी कमाई से प्राप्त होता है ।" :3: इन विचारों में आध्यात्म भावना परिलक्षित होती है । उनका कथन है कि " आत्मा अमर है।" :4:

5:- मृगनयनी :-

प्रस्तुत उपन्यास के अन्तर्गत प्रकाण्ड पण्डित द्वारा मोक्ष का सरल मार्ग दर्शाया गया है । उसका विचार है कि " ध्यान और मन को एकाग्र करके किसी भी मार्ग को ग्रहण कर लेने से मनुष्य मोक्ष पा सकता है । " :5: शिव ताण्डव स्तोत्र द्वारा अनादि शिव की महत्ता प्रतिपादित की गई है । " जैसे सूखे काठ में अग्नि विद्यमान है , इसी प्रकार शिव शक्ति जड़ और चेतन में निहित है । + + विश्व की समूची क्रिया को अनादि शिव का ताण्डव व्यक्त करता है ।" :6: बोधन पुजारी भी परमात्मा की सर्वसत्ता स्वीकार - करते हैं । जल्लाद के हाथों मरनेके पूर्व वे सोचते हैं कि " वह सब में रम रहा है, मेरे और जल्लाद के भीतर वही है । जल्लाद की तलवार और मेरे सिर में वही है । सब में वही है । " :7: मृगनयनी राजा मानसिंह से कहती है कि " मेरे प्राण नाथ , अन्त के अन्त के सामने टूट जायेंगे ।" :8:

1:- झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई-पृष्ठ सं.- 420 ; वृन्दावन लाल वर्मा
2:- वही - " - 247 - वही
3:- वही - " - 416 - वही
4:- वही - " - 416 - वही
5:- मृगनयनी - " - 35 - वृन्दावन लाल वर्मा
6:- वही - " - 383 - वही
7:- वही - " - 374 - वही
8:- वही - " - 407 - वही

अतः भी वह नारवर संसार छोड़ने के लिये सहर्ष तैयार हो जाता है । मरते समय उसकी पत्नी साक्षी ने कहा थाकि वह दूसरा विवाह करले, किन्तु अतः का दृढ़ निश्चय , इस प्रकार है कि " मैं ब्याह करूँगा उसी के साथ , जहाँ जहाँ वह गई है और मैं भी जा रहा हूँ ।" :1: इन सब विचारों में आध्यात्म भावना परिलक्षित होती है ।

6:- टूटे काँटे :-

प्रस्तुत उपन्यास में नरवार्य की मनोभावनाओं में आध्यात्म दर्शन होते हैं । उसका कथन है कि " कोई महल सजाता है , कोई मन्दिर को सजाता है , पर मन को सजाये बिना काम नहीं चल सकता । " :2: + + + " जहाँ मन को पक्का कर लो वहीं मन्दिर है ।" :3: उपन्यास में विशुद्धानन्द के माध्यम से योग की महत्ता को प्रतिपादित किया गया है । वे कहते हैं कि " विश्वास है कि मुझको योग द्वारा ही दर्शन मिलेगा ।" :4: प्रेत आत्माओं की शान्ति के विविध उपायों पर भी दृष्टावलोकन किया गया है । भजन , पूजन , जप- व्रत , जन्म - मरण, दान - पुण्य , धूप - हवन , दान - क्रिया आदि का उल्लेख आध्यात्म की ओर उन्मुख करता है । :5:

7:- महारानी दुर्गावती :-

प्रस्तुत उपन्यास में महान्त गोपा नन्द देव गुरु के आध्यात्मिक उपदेशों से सांसारिक विरक्ति उत्पन्न हो जाती है । वे माया मोह को त्याग कर आध्यात्मवादी बनने लगते हैं । वे अपने गुरु के इन उपदेशों का सदैव स्मरण करते रहते हैं कि " मनुष्य को चाहिये कि काम क्रोध के आवेग को सहकर , आकांक्षा और आशा के बन्धन में न फँसे तथा परमात्मा के प्रकाश की खोज में रहे । " :6: कर्मों का सम्बन्ध भी आध्यात्म से सम्बद्ध है । सुकर्मों से स्वर्ग

1:- मृगनयनी - पृष्ठ सं॰ - 432 - वृन्दावन लाल वर्मा

2:- टूटे काँटे - " - 386 - वही

3:- वही - " - 349 - वही

4:- वही - " - 92 - वही

5:- वही - " - 120 - वही

6:- महारानी दुर्गावती -पृष्ठ सं॰ - 299- वही

की प्राप्ति सम्भव है । सन्तान द्वारा महान कर्तव्य करने पर स्वर्ग में निवास करने वाले पूर्वज भी हर्षित होते रहते हैं । बलवति के कार्य की सराहना करते हुये दुर्गावती कहती है कि " आपके इस पुण्य कार्य से हमारे पुरखे स्वर्ग में भी नाच उठेंगे ।" :1:

8:- भुवन विक्रम :-

प्रस्तुत उपन्यासमें अद्वैत वाद पर सम्यक रूप से प्रकाश डाला गया है तथा आत्मा और परमात्मा के बारे में बताया गया है । लोग का कथन है कि " परमात्मा एक है । न दूसरा , न तीसरा , न चौथा । उसी के कारण अनेक नाम है । उसी में अपनी श्रद्धा के अनुसार परमात्मा को देखकर आज का कार्य आरम्भ करो । ":2: कपिंजल ने उन ब्राह्मणों का उल्लेख किया है जो इस संसार को निस्सार मानते हैं । " ऐसे ब्राह्मण भीहैं जो धन - सम्पदा को घास के तिनके के समान समझते हैं ।" :3: औद्दालक ऋषि ने योग के मार्गों को बताया है । उनका कथन है कि " योग के दो मार्ग हैं।एक अंधकार का दूसरा प्रकाश का बाधाओं वाला अंधकार का । इस पर चल कर मनुष्य कठिनाइयों की प्राप्ति कर सकता है, परन्तु अन्त में गड्ढे में जा गिरता है प्रकाश वाला मार्ग निरन्तर आगे बढ़ता रहता है ।" :4: उन्होंने निर्भय होकर जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा व प्रदान करते हुये घोषित किया है कि " दृढ़ संकल्प की साधना काम धेनु गाय है । निःस्वार्थ भाव ही उसे दोह पाता है । मन को हीन और क्षीण मत होने दो । वायु और अन्तरिक्ष किसी से डरते हैं ! मोह, सत्य और शौर्य किसी से भय खाते हैं !" :5:

9:- रामगढ़ की रानी :-

प्रस्तुत उपन्यास में भौतिक और आध्यात्मिक कर्मों का समन्वयात्मक रूप प्रस्तुत किया गया है । शंकर लाल का कथन है कि " वह पुरुष किस -

---

1:- दुर्गावती पृष्ठ सं. - 181 - वृन्दावनलाल वर्मा
2:- भुवन विक्रम - पृष्ठ सं. - 60 - वृन्दावन लाल वर्मा

3:- वही - " - 7 - वही

4:- वही - " - 69 - वही

5:- वही - " - 45 - वही

~~6:- महारानी दुर्गावती - पृ.सं. - 131 - वृन्दावन लाल वर्मा~~

काम का जो अपने आध्यात्मिक और भौतिक- दोनों - कर्त्तव्यों का समन्वय न कर सके । :1: सूबेदार बलदेवसिंहारी ने इस नश्वर संसार के बारे में विचार व्यक्त करते हुये बताया कि " यह संसार तो मायाजाल है । आज हम यहाँ खड़े हैं , कल न जाने कहाँ हों । भगवान की लीला नहीं होती है , लीला ही सब चलता है ।" :2:

10:- कीचड़ और कमल :-

प्रस्तुत उपन्यास में विभिन्न स्थलों पर आध्यात्मिक चर्चायें की गई हैं जिनमें लोगों की आध्यात्म भावना मुखरित हो उठी है । मानव को एक साधारण जीव माना गया है तथा ईश्वर का साक्षात्कार करने और प्राप्त करने के अनेकों साधन बताये गये हैं , जिनमें वैष्णव , तान्त्रिक , कापालिक , कौल , शैव तथा शाक्त आदि उल्लेखनीय हैं । :3: मन्त्र- योग , राजयोग , हठयोग और भक्ति योगों की महत्ता को प्रतिपादित किया गया है । ईश्वर को अखण्ड और अनन्त ज्योति का रूप प्रदान किया गया है तथा बताया गया है कि " बिना किसी भौतिक साधन या आश्रय के भूमि से ऊपर उठ जाना और केवल अपने योगाभ्यास से भौतिक पदार्थों को पृथ्वी पर से उठा देना, इन्हें मैं अपनी सिद्धियाँ बतलाई । " :4: चित्त की एकाग्रता पर भी बल दिया गया है तथा बताया गया है कि " सबसे ऊपर है , अपनी आत्मा को निर्लिप्त रखना ।" :5: मृग-धारा में स्नान करके , लोगों का पिता अपने पितरों का तरण - तारण करता है । 383 राम देव ने सौन्दर्य को आध्यात्म से सम्बद्ध किया है । " सुन्दरता , आध्यात्मिक है, ठोस है - शरीर की इन्द्रियों द्वारा उसका अनुभाव धर्म और सौन्दर्य और कष्ट भी हमें परम प्रभु के निकट पहुँचाते हैं । " :7: साकार -

---

1:- रामगढ़ की रानी - पृष्ठ सं. - 49 - वृन्दावन लाल वर्मा

2:- वही - " - 105 - वही

3:- कीचड़ और कमल - " - 226 - वही

4:- वही - " - 232 - वही

5:- वही - " - 219 - वही

6:- वही - " - 102 - वही

7:- वही - " - 132 - वही

और निराकार का समन्वय भी उपन्यास में अवलोकनीय है । " निराकार अखण्ड, अनन्त ज्योति स्वरूप के साक्षात्कार के लिये मूर्तिमन्त आराध्य देवता में आत्मसात होने पर निराकार का अपने भीतर दर्शन होने लगता है ।" :1:

10:- देवगढ़ की मुस्कान :-

प्रस्तुत उपन्यास में दर्शायी गई "प्रशान्त मूर्तियाँ, स्तम्भ, तोरण, अलंकृत दीवारें और अन्य अलंकरण चमत्कार पूर्ण हैं । ये सब अपनी मूक और सजीव प्रेरणा द्वारा भिन्न भिन्न विचार मुद्राओं में आध्यात्मिक जीवन की शक्तियों का उद्घाटन करते हैं ।":2: बताया ही गया "देवगढ़ + + क्षेत्र के भाग में पग - पग पर अनुपम कला की कृतियाँ, जीवन कला की अपूर्व दृश्यावलियाँ अनन्त आनन्दमयी शक्ति की ओर संकेत करती हैं ।" :3: राजा विक्रम पाल सहयोग की साधना करते हैं । मुनि रत्नगिरि योगाभ्यासी हैं । वे नारत्व को नारायण की सीढ़ी मानते हैं तथा "देव" उसी को मानते हैं जिसने " अहंकार , राग - द्वेष, क्रोध - मोह इत्यादि सदा - सर्वदा के लिये दूर कर दिया हो ।" :4:

11:- अचल मेरा कोई :-

प्रस्तुत उपन्यास में नृत्य को रहस्यमयी आध्यात्मिकता से सम्बद्ध किया है । " कत्थक नृत्य से ऊपर उठ कर शान्ति निकेतन नृत्य का प्रकार है । + + + इन सब का एक मात्र और अन्तिम फल विमल मनोहरता, रहस्यवादी आध्यात्मिकता और जीवन का एक विशाल वरदान हो जाता है ।" :5: उपन्यास में शारीरिक सौन्दर्य की क्षण भंगुरता को भी दर्शाया गया है । दुन्नी के द्वारा गाये जाने वाले कबीर के पद के माध्यम से आध्यात्म की झाँकी प्रस्तुत की गई है । "चादर झीनी भई झीनी " :6: प्राचीन ऋषियों ने जहाँ विचार को सन्तान-

---

1:- कीचड़ और कमल - पृष्ठ सं॰ 234 - वृन्दावन लाल वर्मा
2:- देवगढ़ की मुस्कान - " . 261 - वही
3:- वही - " .261 - वही
4:- वही - " . 256 - वही
5:- अचल मेरा कोई - " . 95 - वही
6:- वही - " . 26 - वही

उत्पन्न करने , शारीरिक सुख पाने तथा काम वासना शान्त करने का साधन माना है उसके के साथ " उन्होंने आध्यात्मिक क्रियाओं की व्यवस्था की थी , जिसको किसी ने रामनाम का रूप दिया , किसी ने परसेवा , उपवास, मनन , तीर्थ सेवन इत्यादि का ।" :1:

12:- लगन :-

वर्मा जी के प्रस्तुत लघु सामाजिक उपन्यास में नायक देवसिंह आध्यात्म भावना से ओत - प्रोत होकर , अपने विचार व्यक्त करता है कि " मेरे लिये संसार और मैं संसार के लिये कुछ नहीं हूं ।" :2: + + " जागते हुये भी सदा एक स्वप्न देखता हूं । मरने के उपरान्त भी उसी एक स्वप्न में लीन हो जाऊंगा । " :3: रामा का निश्चय है कि " रंगीन कपड़े और सजावट मेरे लिये कुछ भी नहीं ।" :4: उसकी इस भावना से विरक्ति का आभास मिलता है ।

13:- प्रेम की भेंट :-

प्रस्तुत उपन्यास में शोरव के विचारों में आध्यात्म भावना परिलक्षित होती है । वह कहता है कि " मेरा संसार में कोम मेरा है ! + + एक दिन पिंजड़े की कील खोल कर चट से चल दूंगा । " :5: उसमें नैराश्य भाव जाग्रत हो चुके हैं , वह कहता है कि " मैं सौन्दर्य के लिये नहीं बनाया गया और न मेरे लिये सौन्दर्य है" :6:

14:- अमर बेल :-

प्रस्तुत उपन्यास में आध्यात्म के विकास के लिये विज्ञान की-

1:- अचल मेरा कोई - पृष्ठ सं. - 187 - वृन्दावन लाल वर्मा

2:- लगन — **** - 55 - वही

3:- वही — ***** - 59 - वही

4:- वही - **** - 18 - वही

5:- प्रेम की भेंट - ** - 47 - वही

6:- वही - * * - 47 - वही

अनिवार्यता पर बल दिया गया है तथा विज्ञान के लिये आध्यात्म का निर्देशन माना गया है । :1:

15:- कुण्डली चक्र :-

प्रस्तुत उपन्यासमें इस कथन में आध्यात्म भावना की झलक मिलती है कि " अनाथों का इस संसार में कोई नहीं है किन्तु इस संसार में उनकी रक्षा हेतु अवश्य मेरा कोई है ।" :2:

16:- संगम :-

प्रस्तुत उपन्यास में नश्वर संसार , परमात्मा की सर्वज्ञता :3: एवं जीवन की क्षण भंगुरता पर प्रकाश डाला गया है । लालमन मृत्यु के पूर्व इस मायावी संसार के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुये कहता है कि " मुझे इस संसार में किसी के साथ स्नेह नहीं है । " :4:

17:- सोना :-

प्रस्तुत उपन्यास में देवगढ़ के राजा सुन्दर सिंह ने विभिन्न मन्दिरों के निर्माण का संकल्प कर लिया था । सोना उनकी सहयोगी थी । "हीरे - मोतियों के मिलने से पहले सोना मन्दिर बनवाने के लिये उत्कण्ठित हो गई थी क्यों कि आशा थी कि इस प्रलोभन से यह लोक और शायद वह लोक भी - बन जायेगा ।" :5:

मानव बिना आध्यात्म से सम्बन्ध जोड़े , नश्वर जीवन पर न तो विजय प्राप्त कर सकता है और न आत्म ज्ञान प्राप्त करके शान्ति का अनुभव कर सकता है । त्यागी पुरुषों का जीवन राजाओं की तुलना में श्रेष्ठ- कर माना गया है क्यों कि वे मायावी संसार में न फंस कर आध्यात्म की ओर उन्मुख हो जाते हैं । महर्षि अरविन्द तथा डा० मोतवानी ने " आध्यात्मिकता

1:- अमर लेख - पृष्ठ सं. - 477- वृन्दावन लाल वर्मा

2:- कुण्डली चक्र - " " - 196- वही

3:- संगम - " " - 104- वही

4:- वही - " " - 201- वही

5:- सोना - " " - 160- वही

को भारतीय मनीषा की कुन्जी माना है ।" :1:

2:- आस्तिकता :-

आदि काल से ही लोगों में धर्म की भावना का प्रादुर्भाव हो चुका था , जिससे वे ईश्वर के प्रति आस्थावान बने तथा उनमें अनादि शक्ति के प्रति विश्वास जागृत हुआ । ग्राट पलेन ने "आदिम युग के "क्योकूब" की मृत्यु के उपरान्त उसके शव या पूजा में ईश्वर विश्वास के बीज छुपे हैं ।" :2: शनैः शनैः भगवान के प्रति लोगों का विश्वास बढ़ता गया । वे आस्तिकता की ओर उन्मुख होने लगे । मन्दिरों द्वारा सांस्कृतिक नीति- विधियों पर नियन्त्रण रखा जाने लगा । नास्तिक या ईश्वर विरोधी कार्यों को घृणित दृष्टि से देखा जाने लगा । प्राचीन काल में लोगों ने अनेक देवी - देवताओं की कल्पना की । शिवरात्रि सम्बन्धी गीतों में दुर्गा की रूप रेखा मिलती है जिसने सूर्य की शक्ति और संकटों से रक्षा की । :3: जनजीवन में एक ओर इन देवी - देवताओं सम्बन्धी विश्वासों की छाप पड़ रही है थी और दूसरी ओर इतिहास और पुराण सम्बन्धी पर आधारा बन रही थी । :4:

संस्कृति को मन्दिरों से संरक्षण मिलने लगा और सांस्कृतिक चेतना मन्दिरों तथा पुरोहितों में केन्द्रित हो गई । युद्ध की विभीषिकाओं एवं मृत्यु तथा रोग से दुखित मानव ईश्वर की पूजा- अर्चा करने में तल्लीन हो गया ।

1:-(a)फाउन्डेशन आफ इण्डियन कल्चर -पृष्ठ सं.-138 महर्षि अरविन्द

(b)- इण्डियन ए सिन्थेसिस आफ कल्चर-पृष्ठ सं. 174-डा० केवल मोतवानी

2:- Evolution of the Idia of God. (द्रष्टव्य)

3:- सा मा मन्त्रयतु जगन्मोहिनी कर्म सूत्रेषु पुष्टाम् ।

दुर्गा देवी शरणम् प्रपद्ये सुतरसि तरसे नमः ।

- ऋग्वेद: सिन 10,127

4:- कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अन्तर्गत इन विषयों के ग्रन्थों को रखा गया है । पुराण , इतिहास , धर्मसूत्र आख्यायिका, उदाहरण धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्र ।

लोगों को अटूट विश्वास था कि आराधना और पूजा से ही कष्ट निवारण सम्भव है । बुन्देलखण्ड में विन्ध्यवासिनी दुर्गा - देवी के लोग अनन्य भक्त जन थे ।

लैटिन भाषा में संस्कृति "कल्चर" शब्द की व्युत्पत्ति "कोलर" से निष्पन्न "कुलटुरा" शब्द से मानी जाती है , जिसका अर्थ है पूजा करना । कल्चर में यह शब्द उस समय प्रयुक्त हुआ जबकि मानव निरुद्देश्य घुमना त्याग कर कृषि में संलग्न हो गया था और "प्रकृति की शक्तियों से त्राण पाने के लिये उस ने पूजा आरम्भ कर दी थी जो कि सुन्दर और प्रिय गति विधियों पर आधारित थी ।" :1:

बुन्देलखण्ड की संस्कृति में आस्तिकता का गुण प्राचीन काल से उपलब्ध रहा है । इस क्षेत्र में पग - पग पर बने मन्दिर और तीर्थ स्थल लोगों की आस्तिकता के प्रतीक हैं । वर्मा जी ने यहाँ की संस्कृति में आस्तिकता का सूक्ष्म रूप से अवलोकन किया है , जिसे उन्होंने अपने विविध उपन्यासों के माध्यम से जन मानस के सम्मुख उपस्थित कर दिया है , जिसका उल्लेख निम्नवत् है ।

1:- गढ़ कुण्डार :-

प्रस्तुत उपन्यास में एक बुन्देला अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुये कहता है कि " उसके कुटुम्ब की रक्षा अग्नि देवता करते हैं ।" :2: तारा व्यारा वर प्राप्ति हेतु अलाव्य व्रत - पूजा पाठ करना , शक्तिश्वर देव की तन्मयता के साथ उपासना करना , नित्य दूध - पत्र एवं जल चढ़ाने का उल्लेख मिलता है । :3: बुन्देलों ने विन्ध्यवासिनी देवी का अपने रक्त से अभिषेक किया था जिससे वे विजित हुये, उसी समय से बुन्देलों की कुल घाटी पर "विन्ध्य दो दुनिया: " लिखा जाने लगा । अर्थात देवी को अपनी कुलदेव करते हुये चढ़ाने वाला बुन्देला दुर्ग 'कुण्डार' का स्वामी हुआ ।" :4: छत्रसेन्द्र का विचार था कि -- बुन्देलों की विन्ध्यवासिनी ने अन्याय पीड़ित बुन्देलों की-

---

1:- General Anthropology 1938 - P-4 - Boas & others.

2:- गढ़कुण्डार - पृष्ठ सं.- 163 - वृन्दावन लाल वर्मा

3:- वही - " - 383 - वही

4:- वही - " - 508 - वही

रक्षा के लिये अवतार लिया है ।

2:- विराटा की पद्मिनी :-

प्रस्तुत उपन्यास में दुर्गा के भक्त नरपति सिंह दाँगी की पूजा को लोग देवी का अवतार मान कर पूजते थे । जय अम्बा और दुर्गा मैया की जय - जयकार करता हुआ विशाल जन समुदाय नारियल , मिष्ठान , फूल - फूल आदि से पूजार्चा करता था जो कि उनकी गहन आस्तिकता का प्रतीक है । गोमती कहती है कि "देवी ! मैं किसी से नहीं डरती, परन्तु शिवसाधिनी दुर्गा का आदर किस तरह हृदय से दूर किया जा सकता है ।" :1: कुमुद देवी जी की प्रतिमा के सम्मुख अपनी मनोभावनायें व्यक्त करते हुये कहती है कि " भक्त के कटे हुये सिर पर ही दुर्गा का अधिकार है , अन्यथा नहीं । वरदान दीजिये या सिंहे लीजिये ।" :2: देवी के दर्शनार्थ लोग मन्दिरों में जाया करते थे । एक बुन्देलखण्डी ग्रामीण कृषक के विचार देवी जी के सम्बन्ध में आस्तिक भावना प्रकाशित हैं । " "हमारे एक देश के कुलदेवियन खरस सो विनती के लाने कालेई - परो थे हैं । तुम जो कछु माँगो सो सोउ मिल जेहे । + + + उनको कछु आद - अन्त ओरक है । " :3: जब दुर्गा जी के दर्शनों का कष्टक है , और सुंदर सिंह से विचार - विमर्श कर रहा है । कुमुद तथा नरपति सम्मानता के साथ देवी जी का भजन गाते हैं जिसकी कुछ पंक्तियाँ अवलोकनीय हैं ।

मलिनियाँ फूलवा ल्याओ नन्दन वन के ।
छँटी-छँटी कलियाँ, डगर पसार
जहाँ सीता लंगुरा , लगाई फुलवार ।।
मलिनियाँ ..:4: ..... ।

3:- मुलाहिजा :-

प्रस्तुत उपन्यास में मन - तन आस्तिकता के दर्शन होते हैं ।

1:- विराटा की पद्मिनी - पृष्ठ सं॰ - 64 - वृन्दावन लाल वर्मा
2 वही - " " - 90 - वही
3:- वही - " " - 137 - वही
4:- वही - " " - 356 - वही

लोगों का विश्वास है कि घोर आपत्ति आने पर ईश्वर ही रक्षा करता है तथा प्रजा आदि देता है । राजा के न्याय से सन्तुष्ट न होकर लोग ईश्वरीय न्याय की आशा करते हैं । ईश्वर का स्मरण करना उनका परम कर्त्तव्य बन जाता है । उपन्यास में बस्तिया के समीप एक विशाल मन्दिर का निर्माण कराना धन - जीवन और राजा की आस्तिकता का प्रतीक है । "उड़नू की टोरिया का भीम गौरव , विशाल सौन्दर्य , एकान्त भक्ति और विकट प्रयास का मानो सार्थ-कत्व है -- मानव हृदय के पराक्रम और विलास का समन्वय , कल्पना के मोह और त्याग का सम्मिलन । " :1: उपन्यास में गंगाजल की महत्ता को भी दर्शा-या गया है ।

4:- कहनार :-

प्रस्तुत उपन्यास में विभिन्न स्थलों पर आस्तिकता के दर्शन उपलब्ध हैं । कहनार द्वारा पूजा - पाठ तथा धार्मिक पुस्तकों का मनन- चि-न्तन करना आस्तिकता के प्रतीक है । गौड़ जाति के लोग भी बड़े आस्तिक प्रवृत्ति के होते हैं वे "बड़ेदेव" के उपासक होते हैं तथा "उनकी मिथ्या सौगन्ध कभी नहीं खा सकते हैं । " :2: भवानी और गौड़ बाबा की वे श्रद्धा के साथ पूजा करते है । अक्षतीज के दिन लोग तन्मयता के साथ पूजा करते हैं । महादेव जी का उनके हृदय में विशेष स्थान रहता है । वे कामना करते है कि मृत्यो - परान्त उन्हें महादेवी जी का धाम प्राप्त हो जाये । :3: स्वास्थ्य रक्षा , प्रेतबाधा से मुक्ति तथा धन धान्य लिये वे देवी - देवताओं की तन्मयता के साथ पूजा करते हैं । दान - पुण्य करने और देवता को प्रसन्न करने के लिये वे पशुबलि देते हैं । देवी - देवताओं की आलोचना करने वाला उनके शत्रु के समान होता है ।

5:- झाँसी की रानी - लक्ष्मीबाई :-

रानी लक्ष्मीबाई द्वारा नियमित पूजा - आराधना करना , दर्शनार्थ नित्य मुरली मनोहर के मन्दिर में जाना , धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन

1:- मुलाखिज़ - पृष्ठ सं॰ - 41 - वृन्दावन लाल वर्मा
2:- कहनार - " " - 82 - वही
3:- वही - " " - 103 - वही

करना तथा धार्मिक स्थलों और तीर्थों का परिभ्रमण करना आस्तिकता के द्योतक हैं । विष्णुस्नान, व्रत - पाठ , देव दर्शन , गंगाजल सेवन , भजन , कथावार्ता श्रवण, मद्भागवत् गीता और पुराण आदि का अध्ययन इसी भावना के पोषक हैं । यह भावना रानी में प्रारम्भिक जीवन से ही विद्यमान थी । जालीराम का कथन है कि वह आस्तिका है । + + पूजा पाठ मन लगा कर करती है ।" :1: रानी की दिनचर्या का अवलोकन करने से उनकी आस्तिकता का स्पष्ट रूप सामने आ जाता है । "वह नित्य प्रातः काल चार बजे स्नान करके आठ बजे तक महादेव का पूजन करती थी उसी समय ब्राह्मणों भजन - गायन सुनाते थे । + + भूखों को खिला कर तथा दान - धर्म करके भोजन करती थी । ग्यारह सौ राम नाम लिख कर आटे की गोलियां मछलियों को खिलाती थीं । ++ + सन्ध्या के उपरान्त कथा-वार्ता , पुराण मद भागवत गीता का अठारवां अध्याय और भजन सुनती थीं । ? :2: रानी तथा अन्य झांसी नगर की स्त्रियों द्वारा गौर प्रतिमा का पूजन बड़ी श्रद्धा पूर्वक किया जाता था । "विवाह मंडप में रानी ने चैत की नव रात्रि में गौर प्रतिमा की स्थापना की । पूजन होने लगा । गौर प्रतिमा आभूषणों और फूलों के श्रृंगार से लद गई और धूप - दीप तथा नैवेद्य से कोलाहल सा मचा दिया ।" :3:

रानी आस्तिकता से पूर्णतया ओत - प्रोत थीं । अंग्रेजों ने जब झांसी को स्वाहा कर दिया तो वे कुण्ठित मन से विचार करती है कि " क्या वेद , शास्त्र , गीता , पुराण , दर्शन , काव्य ये सब व्यर्थ हो जायेंगे ! जला दिये जायेंगे !! :4: तत्क्षण उनका अन्तर्मन पुकार उठा कि "+ + नहीं ! कृष्ण अमर हैं । गीता अक्षय है । हम लोग अमिट हैं । भगवान की दया से , शंकर के प्रताप से , मालाकुंगी कि अभी भारत में कितनी सौ शेष हैं । + + + तपस्या का क्रम कभी खण्डित नहीं होगा ।" :5:

1:- झांसी की रानी लक्ष्मी बाई - पृष्ठ सं. - 28 - वृन्दावन लाल वर्मा

2:- वही - " " --156 - वही

3:- वही - " " - 93 - वही

4:- वही - " " - 246 - वही

5:- वही - " " - 246 - वही

6:- टूटे काँटे :-

प्रस्तुत उपन्यास में विभिन्न स्थलों पर आस्तिकता के दर्शन मिलते हैं । देवी प्रकोप से भी लोग भयभीत रहा करते थे । मोहन कहता है कि "औरे पानी का डर है । खेतों से यही फसल को कहीं बन्द देवता मिटा कर न धर दें !" :1: भूत - प्रेतों में भी लोगों की आस्था रहती है । वे प्रेतों की पूजा करते हैं । वे एक प्रेतात्मा की ओर संकेत करते हुये कहते हैं कि "जाओ महाराज पधारो । तुम्हारा चबूतरा बनवा देंगे । पूजा हूजा करेंगी । पकवान कढ़वा देंगे । मेला भरा करेगा । खूब कर देंगे ।" :2: बाबा - वैरागियों को लोग श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे । मराठा सरदार "किसी नामी बाबा - वैरागी या महात्मा का दर्शन करने और आशीर्वाद पाने ," :3: जाया करते थे । नूरबाई ब्रज के कन्हैया की अनन्य भक्त थी । वह मन्दिर में तन्मयता के साथ नन्ददास के भँवर गीत , सूरदास के पद तथा रसखान के सवैये गाया करती थी।उपन्यास में "मुख नाहिन उतो, तो कहौ किन माखन खायो," :4: "चरन कमल बन्दौ हरिराई " :5: तथा "मानुष हौं तो वही रसखान " :6: आदि उल्लेखनीय है । ये भावना , आस्तिकता की प्रबल पोषक है । मोहन लाल को "कन्हैया" में पूर्ण आस्था थी । वह अपनी मनोभावनायें व्यक्त करते हुये कहता है कि "संसार में कुछ भी हमारे कन्हैया की बाँसुरी ब्रज में सदा बजती रहती है । मन्दिरों में भजन गान, कृष्ण लीला के रास और गीत , गोपियों के नाँच बराबर होते रहते हैं ।" :7: उन सभी भावनाओं में आस्तिकता , के दर्शन होते हैं ।

7:- मुक्तध्वनी :-

प्रस्तुत उपन्यास में विभिन्न स्थलों पर आस्तिकता के दर्शन -

1:- टूटेकाँटे	-	पृष्ठ सं.	-	6 -	वृन्दावन लाल वर्मा
2:- वही	-	" "	-	120 -	वही
3:- वही	-	" "	-	90 -	वही
4:- वही	-	" "	--	135 -	वही
5:- वही	-	" "	--	324 -	वही
6:- वही	-	" "	-	332 -	वही
7:- वही	-	" "	-	297 -	वही

होते हैं । रात्रि गाँव के मन्दिर का पुजारी मोहन तथा ग्रामीण जन तन्मयता के साथ नृत्य और गीत द्वारा ईश्वर की आराधना करते हैं । मोहन "होरी गाकर अपने कृष्ण को रिझाता है ।"करलो न श्याम उसी मानो , घट जैसे चुन-रिया जिन तानो ।" :1: लोगों द्वारा रास लीलाओं , भजन - पूजन , देव-दर्शन , धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन आदि उनकी आस्तिकता को प्रकट करते हैं । जल की शुद्धि हेतु मिट्टी का शिवलिंग बना कर "ॐ नमः शिवाय " से अभि - मंत्रित करके कुये में डालना उसी भावना का पोषक है । शिवलिंग शिवगायत्री की महत्ता को प्रतिपादित करता हुआ कहता है कि "शिव की गायत्री ऐसी है, जिसका जप चाण्डाल भी कर सकता है और पवित्र हो सकता है ।" :2: संयम - नियम , तीर्थ भ्रमण , दान - पुण्य आदि भी यहाँ के निवासियों के जीवन से सम्बद्ध रहता है । राजा मानसिंह द्वारा एक विशाल विष्णु भगवान के मन्दिर की स्थापना करना सरस्वती की पूजा अर्चा करना युद्ध काल में हर - हर महा-देव का जयघोष करते हुये शत्रु को पराजित करना आदि तथ्य उसी भावना को उद्घोषित करते हैं । मृगनयनी भी आस्तिकविचारों वाली नारी है । वह तन्म-यता के साथ गाती है कि "मोरी तोहि लाज, मुकुट धारे, मोरी तोहि

चन्दा सूरज तोरी सेवा करत हैं

विनति करें मो लख तारे ।।" :3:

मोहन का विचार है कि "भगवान का भजन करता हूं । मैं तो भगवान के नाम के सिवाय कुछ नहीं जानता हूं" :4: विशिष्ट बात तो यह है कि यहाँ के निवा-सियों की आस्तिकता के सम्बन्ध में मुगल बादशाहों ने स्वयं कहा है कि "हिन्दू लोगों का दीन - ईमान और यकीन तो सैकड़ों - हजारों देवताओं में बटा हुआ है , इसलिये पेड़ों - पत्थरों को पूजते हैं । " :5:

लमितादित्य :- प्रस्तुत उपन्यास में बताया गया है कि "परमेश्वर के अनेक नाम हैं।

8:- ~~मृगनयनी कुमारी~~ :- उन्हें शिव शंकर कहते हैं। ×× हमारी भूलों को क्षमा कर देने वाले, भोला नाथ हैं।" :6: चक्रमर्दिका की प्रबल आस्तिक भावना इन शब्दों में व्यक्त होती है," भजन-पूजन में शक्ति है। भगवान की कृपा से ही सब कुछ होता है।" 7

1:- मृगनयनी - पृष्ठ सं. - 21 - वृन्दावन लाल वर्मा

2:- वही - " " - 35 - वही

3:- वही - " " - 440 - वही

4:- वही - " " - 28 - वही

5:- वही - " " - 244 - वही

6:- लमितादित्य - " " - 316 - वही

7:- वही - " " - 195 -

महारानीदुर्गावती :- प्रस्तुत उपन्यास में विभिन्न स्थलों पर आस्तिक प्रवृत्ति को दर्शाया गया है । "मन्दिया देवी के मन्दिर पर पूर्ण मासी के दिन एक बड़ा मेला लगता है ।" :1: जिसमें एक विशाल जन समूह देवी के दर्शनार्थ आता है । जिन्हें, जोलमाये, पूजा - पाठ , हवन - पूजन , चढ़ोतरी , आदि करके लोग अपनी आस्तिकता प्रकट करते हैं । नीलकंठ और भैरव देव की लोग सम्मयता के साथ पूजा करते हैं । लोग कालिंजर मेंदुर्गा देवी को अपनी अधिष्ठात्री देवी मानते हैं । रामकेरी का कथन है कि "हमारे कालिंजरमेंदुर्गा देवी की अत्यन्त सुन्दर मूर्ति है । हमारी राजकुमारी ने जो कुछ पाया है,उन्हीं से पाया है ।" :2: लोगों द्वारा गौ माता सूर्य देवता तथा वृक्षों की पूजा की जाती है । "साल कितना सीधा , विशाल और मनोहर पेड़ होता है + + + गोंड़ उसकी पूजा करते हैं । " :3: रामकेरी प्रत्येक कार्य को दुर्गा जी की कृपा का फल मानती है । वह उनके अष्ट भुजी रूप का अवलोकन करके मन्त्रमुग्ध हो जाती है और कल्पना करने लगती है कि "अष्ट भुजा देवी के अंग - प्रत्यंगों का कैसा अद्भुत समन्वय है । + + अनाचारी , दुराचारी महिषासुर को मारने के उपरान्त देवी जी शान्त हैं । ":4: गोंड़ लोग नृत्य गान करके देवी की उपासना करते हैं । "गोंड़ों ने देवी माता का एक गीत सारंगी और ढोल के साथ गाया , फिर गीत के साथ करमा नृत्य हुआ ।" हिन्दुओं की आस्तिक भावना का समादर करते हुये अकबर बादशाह ने तीर्थ यात्रा पर लगने वाला कर समाप्त कर दिया था ।

9:- भुवन विक्रम :-

प्रस्तुत उपन्यास में सब - सब आस्तिकता की भावना परिलक्षित होती है । नील और हिमानी अपने बाल भगवान की कृपा के आकांक्षी रहते हैं और उनकी पूजा करते हैं । " + + दालान के कोने में एक छपरा था , जिसमें पक्षियों के देवता बाल की मूर्ति थी । उसका पूजन हिमानी और नील किया -

---

1:- महारानी दुर्गावती - पृष्ठ सं. - 1- वृन्दावन लाल वर्मा

2:- वही - " " - 9 - वही

3:- वही - " " - 11- वही

4:- वही - " " - 27- वही

करते थे । हिमानी फूल चढ़ाने के उपरान्त अपने देवता से प्रार्थना करने लगी ++ हे स्वामी मुझे ओज और तेज दो ।" :1: श्रीमयंकि के आश्रम में नित्य हवन - पूजन और वेद - ऋचाओं का सुमधुर गान हुआ करता था । "आश्रमों के हवन के धुआं का धुन्ध ओढ़नी सा उड़ा रहा था । + + + कहीं - कहीं से आने वाला ऋचाओं का गान चिड़ियों की चहक के साथ गूंज कर उस छाया को स्फूर्ति सा दे रहा था । " :2: राजा रोमक यज्ञ , हवन , दान - पुण्य , पूजा - पाठ करके आस्तिक भावना को प्रकट करते हैं । चन्द्र , वायु अग्नि वरुण की स्तुतियां भी की जाती थी । ममता अपने पुत्र भुवन को आशीर्वाद देती हुई कहती है कि-"चन्द्र , वरुण , अग्नि , परमात्मा तुम्हें सुखों भर -भर सुख दे ।" :3: गांव के निवासी भूत - प्रेतों में विश्वास रखते थे तथा मंत्र फूंकने वाले साधुओं में उन्हें पूर्ण आस्था थी ।हिमानी , रेखा और उसके उसके उसके से कहती है कि "अपने देवता का पूजन किया करो और हमारे इस देवता का भी + + + फिर भूत - प्रेत नहीं सतायेंगे । " :4: इस प्रकार उपन्यास में विभिन्न स्थलों पर आस्तिकता को दर्शाया गया है ।

10:- अहिल्याबाई :-

प्रस्तुत उपन्यास में अनेक स्थलों पर आस्तिकता के दर्शन होते हैं । अहिल्या बाई आस्तिक प्रकृति की नारी थी वह नित्य "स्नानादि के उपरान्त पूजन करती थी , फिर स्वाध्याय । फिर विद्वान ब्राह्मणों से रामायण, महाभारत इत्यादि की कथा सुनने का क्रम आता था ।" :5: जनता दुर्गा देवी, आंजी की देवी तथा हिंगलाज देवी के परम भक्त थी । पूजा - पाठ , व्रत - नियम तथा मन्दिरों में मेलों का आयोजन किया जाता था । " यहां की नव दुर्गा माता है जिन्हें लोग फूल की धूनी के मेले में पूजा करके अपनी जीभ काट कर चढ़ाते हैं तो चार - पांच दिन में फिर ज्यों की त्यों हो जाती है । बड़ी -

---

1:- भुवन विक्रम - पृष्ठ सं. - 27 - वृन्दावन लाल वर्मा

2:- वही - " " - 42 - वही

3:- वही -- " " - वही

4:- वही - " " - 255 - वही

5:- अहिल्या बाई - " " -- 18 - वही

शक्ति वाली देवी है ।" :1: सिंधवाड़ भाषा के भी लोग अनन्य भक्त हैं, उनका विश्वास है कि किसी कामना की मन्नत - मनौती , इन देवी का नाम लेकर करने से कार्य सिद्ध हो जाता है । मल्हार दुष्ट प्रकृति का व्यक्ति था किन्तु उसमें भी आस्तिक भावना विद्यमान थी । उसने काली माई के मन्दिर पर बलि चढ़ाई तथा माशुकी अविद्या माई से कहता है कि " मैं नित्य मन्दिर में जाया करूंगा । जब तक यहां हूं , नर्मदा में स्नान किया करूंगा ।" :2: इसी भावना को दर्शाने के लिये सुलती द्वारा रचित दो पंक्तियों को उपन्यास में प्रयुक्त किया है , जो अवलोकनीय हैं ।

"सुलती अपने राम को, रीझ भजो या खीज,
उल्टो सूधो जग है, खेत परे को बीज ।। :3:

11:- रामगढ़ की रानी :-

प्रस्तुत उपन्यास में रामगढ़ के राजा की आस्तिक प्रवृत्ति को उसके अंग रक्षक द्वारा बताया गया है । उसका कथन है कि "देवी - दुर्गा और शंकर - महादेव के भक्त हैं । + + + तपस्या करते हैं । उन्हें सिद्धि है ।":4: उपन्यास में युग-युगान्तरों से पूजे जाने वाले गौड़ देवता "बाघदेव" और "खेड़े-देव" का उल्लेख मिलता है ।

12:- माधव की सिन्धिया :-

प्रस्तुत उपन्यास में सब - सब आस्तिता के दर्शन होते हैं । गन्ना बेगम मुसलमान होते हुये भी कृष्ण - कन्हैया की उपासिकाथी । वह कृष्ण - भक्ति के गीत रचती थी । माधव जी भक्ति गीत रचते थे । वे गन्ना से कहते हैं कि "मैं थोड़ी सी कविता कर लेता हूं, कृष्ण भगवान को अर्पित-करने के लिये ।" ,5: गन्ना के द्वारा गाये जाने वाला गीत भी उसकी आस्ति-

---

1:- अविद्या माई - पृ. सं. - 38 - वृन्दावन लाल वर्मा
2:- वही - " "--133 - वही
3:- वही - " " - 91 - वही
4:- रामगढ़ की रानी" " - 21 - वही
5:- माधव जी सिन्धिया- " - 389 - वही

लता को दर्शाता है , जो अवलोकनीय है -

"माधवि, मालति, मल्लिका फूली लवलि समेत
जिस 'माधव' प्रवराज है, मोहि कहो कहि देत ।
गुल्म लता तरु मृग कुल, कालिन्दी पल देखि
मो प्यारो माधव कहाँ जात जिमेहि ! " :1:

माधव जी में भी आस्तिकता विद्यमान थी । वे भगवान की प्रतिमा के सम्मुख होम करते थे तथा प्रसाद चढ़ाते थे । रानी का कहना है कि " भस्म और प्रसाद मुझे भी मिलना चाहिये माधव कृष्ण हमारे भी तो हैं ।" :2:

13:- कीचड़ और कमल :-

प्रस्तुत उपन्यास में विभिन्न स्थलों पर आस्तिकता के दर्शन होते हैं । प्रमिला नाम की युवती आस्तिक प्रकृति की नारी है । वह सुरसुन्दरी है । वह एक दिन भगवान के मन्दिर में गयी और वहाँ पर लोगों द्वारा की जाने वाली पूजा - अर्चना को देखा, जिससे वह बहुत प्रभावित हुई और "आँखे मूंद कर देवता की मूर्ति छवि पर मुग्ध होती रही ,:3: तथा सोचने लगीं कि, "कन्धी की कृपा से मुझे नृत्य गान विद्या आयेगी ।" :4: विद्यारम्भ के अवसर पर पूजा - पाठ - हवन - पूजन आदि होता था । प्रमिला तन्मयता के साथ मन्दिरों में नृत्य गान करती थी । उसका विचार था कि वह जीवन-पर्यन्त वाटिका रख कर देव अर्चना करेगी क्यों कि " भगवान की सेवा में सुर-सुन्दरी जीवन भर लगी रहे तो दूसरे जन्म में वहाँ की रानी भी हो सकती है " :5: ऐसी उस की आस्था थी । लेखक ने अनेक मन्दिरों का उल्लेख किया है । चमारी मन्दिर लोगों की अटूट आस्तिकता का प्रतीक है । इस मन्दिर में नित्य सायंकाल , ढोल , मजीरे व शंख बजाकर के साथ आरती की जाती है तथा अवसरों पर मेलों का आयोजन होता है । लेखक ने पचासी मन्दिरों का उल्लेख किया-

---

1:- माधव जी सिन्धिया - पृष्ठ सं॰ - 299 - वृन्दावन लाल वर्मा
2:- वही - " " - 453 - वही
3:- कीचड़ और कमल - " " - 13 - वही
4:- वही - " " - 13 - वही
5:- वही - " " - 160 - वही

है । वह कहता है कि " कालिंजर तीर्थ स्थल है जो ख्याति प्रसिद्ध है क्योंकि महाभारत काल में कालिंजर का वर्णन है । + + सभी तो उसमें महत्व का तीर्थ स्थल है ।" :1: जनता की प्रबल आस्तिक भावना को भी उपन्यास में दर्शाया गया है । जनता कंजर को सर्वोपरि मानती है । उसे आत्मशान्ति भगवान के चरणों में ही प्राप्त होती है । लोग " नीलकंठ महादेव के मन्दिर के सामने पहुंचे । वर्ष नर - नारी वहां पैंड़ भरते हुये साष्टांग करते हुये आ कर मन्दिर के सामने हाथ जोड़ कर नतमस्तक खड़े हो गये , तथा विपत्ति से छुटकारा पाने की प्रार्थना करने लगे ।" :2:

14:- देवगढ़ की मुस्कान :-

प्रस्तुत उपन्यास में जिनकी नाम की सबसे पूजती की आस्तिकता का उल्लेख किया गया है , वह सम्मता के साथ देवी के भजन गाती थी जिनकी दो पंक्तियां अवलोकनीय हैं -

"मइया को जगाऊं, जिंदरियन में लाग - लाग ।

फूलन वारी को सेजा सजाऊं, मइया को सुलाऊं ।।" :3:

वह नाग देवता , छटौंधा बाबा तथा गोऊबाबा की पूजा करती थी उनसे सम्बन्धित भजन भी गाया करती थी । वह प्रियम्बदा के साथ "माय मोरे आंगन आय, सिंदूर दें मैं मइया लागों ।:4: बाला देवी गीत बड़ी श्रद्धा से गाती थी । श्रद्धा का विचार था कि "भगवान के भजन से भाग्य का लिखा भी पलट जा सकता है ।" :5: मनिया देवी चन्देलों की इष्ट देवी थी, वे श्रद्धा के साथ उनकी पूजा-अर्चा करते थे । नव रात्रि में "दुर्गा देवी के मन्दिर में सभी वर्गों और जातियों के नर नारी , पूजन करने , फूल दूध - दीप चढ़ाने जाते थे ।" :6: पण्डितजन भी बड़े आस्तिक थे , वे गंगा मां की पावनता को स्वीकार

1:- कीचड़ और कमल - पृष्ठ सं॰ - 86 - वृन्दावन लाल वर्मा

2:- वही - " " - 87 - वही

3:- देवगढ़ की मुस्कान- " " --- 2 - वही

4:- वही - " " - 35 - वही

5:- वही - " " - 92 - वही

6:- वही - " " - 93 - वही

करते थे । उनका विचार था कि " गंगाजल में स्नान करने सुवास - सुवास सभी सुख हो जाते हैं ।" :1: राजा विजय पाल बड़े आस्तिक प्रवृत्ति के थे।वे भगवान से प्रार्थना करते थे कि " प्रभो! मेरी रक्षा करो, मुझे शक्ति दो , कल्याण देने की कृपा करो जिससे मैं अन्त तक संयत जीवन बिताऊं ।" :2:

15:- अचलमेरा कोई :-

प्रस्तुत उपन्यास में यत्र - तत्र आस्तिकता को दर्शाया गया है । बालिकाओं द्वारा देव पूजा नृत्य रामा और श्यामा द्वारा रामायण पाठ , हनुमान , रामनाम को पूजी समझना , तथा ठाकुर जी का अभिषेक और पूजन आस्तिकता के द्योतक हैं । अचल मौन व्रत की महत्ता प्रतिपादित करता है तथा व्रत हेतु तत्पर हो जाता है । " हम सब लोग सोमवार को मौनव्रत धारण कर लिया करेंगे । " :3: कुन्ती ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करती है।वह अपने को निर्दोष बताते हुये,ईश्वर को साक्षी मान कर सत्यता प्रकट करती है ।

16:- लगन :-

प्रस्तुत उपन्यास में ग्रामीण नर नारियों द्वारा मन्दिरों में दीप जलाना , मनौती मानना , देवी - देवताओं की पूजा करना,उनकी आस्तिक भावना को दर्शाते हैं । जहाँ गाँवों में विशाल मन्दिर नहीं होते हैं वहाँ लोग पीपल के वृक्ष के नीचे चबूतरे पर देवी - देवताओं की प्रतिमायें रखकर उनकी पूजाकरते हैं । स्त्रियाँ दीप जलाती है ।" + + दो स्त्रियाँ जलते हुये दिये हाथ में लिये पीपल की ओर आती दिखलायी दीं । दोनों अपने आँचलों से दीप शिखा की रक्षा करती हुई चली आ रही थीं । + + दिये धर कर दोनों ने देवता को :4: नमस्कार किया । " रामा कार्य सिद्ध हेतु मनौती मानती है - और कहती है कि " देवता की एक पिण्डी पीपल की उस खोह में , एक आन के लिये रखती हूं ।" :5:

1:- देवगढ़ की मुस्कान - पृष्ठ सं॰ - 253 - वृन्दावन लाल वर्मा

2:- वही - " " - 262 - वही

3:- अचल मेरा कोई - " " - 3 - वही

4:- लगन - " " - 32 - वही

5:- वही - " " - 33 - वही

17:-अमर बेल :-

प्रस्तुत उपन्यास में विविध स्थलों पर आस्तिकता के दर्शन होते हैं । लोग अषाढ़ मास में देवी - देवताओं के सम्मुख "रमतूला" बजा - बजा कर जागरण करसन्देश देते हैं । ईश्वरीय - क्रोध से बच ने के लिये लोग भगवान की शरण में जाकर पूजा - पाठ करके क्षमा याचना करते हैं । रामधुन, रामायण पाठ , भजन - कीर्तन का भी आयोजन किया जाता है । नव रात्रि में लोग तन्मयता के साथ देवी उपासना करते हैं तथा जवारे बोते हैं , जिसका रामनौमी के दिन जलूस निकाला जाता है । कालीमाई , ठाकुर बब्बा, गौड़ बाबा आदि की भी लोग पूजा करते हैं । गोवर्धन की पूजा के उपरान्त "मौन व्रतधारी + ढोल मजीरे बजाने वालों के साथ नृत्य लगाने के लिये निकले । + + मौनिये 12 वर्ष तक हर दीवाली की पड़वा को दिन भर मौन साधते हैं । + + इस दिन कृष्ण अपने ग्वालबालों के साथ नाचते - कूदते बांसुरी बजाते - बजाते वृन्दावन के आस - पास चक्कर काट आते हैं , तब वे अपना - अपना मौन तोड़ते हैं । " 1: मौनियों के संगी साथी चाँचर खेलते हुये गाते हैं कि "मधुकरसा महाराज के रानी कुंवरि गनेश , अवधपुरी ने ओरछे ज्यायें अवध नरेश " सनेही का विश्वास है कि " राम करोखे बैठ के सबका मुजरा लेहि, जाको जैसी चाकरी साको तैसा देहि ।" + । दास मलूका कह गये सबके दाता राम ।" :2: + + मूक होय वाचाल पंगु चढ़ै गिरवर गहन , जासु कृपा सो दयालु सजन कलिमल दहन ।" :3:

18:- कुण्डली चक्र :-

प्रस्तुत उपन्यास में एक विशाल जन समुदाय जवारा ईश्वर में गहन आस्था रखना , पूजा - पाठ करना , दीन दुखियों का सच्चा हित ईश्वर को मानना, मन्दिर में नित्य दर्शनार्थ जाना , देवी प्रकोप से भयभीत रहना , चार प्रकार , परमपिता परमेश्वर को जीवन का आधार मानना आदि आस्तिकता को प्रकट करते हैं । अजित का कथन है कि उसे "ईश्वर में विश्वास -

---

1:- अमर बेल - पृष्ठ सं०- 121 - वृन्दावन लाल वर्मा

2:- वही - " " - 272 - वही

3:- वही - " " - 336 - वही

है और सब देवों में आस्था रखता है ।" :1: भुवन का विचार है कि " इस संसार में भवसागर से पार उतारने वाले धर्म ग्रन्थ हैं । जैसे रामायण , महाभारत, श्री मद् भागवत इत्यादि ग्रन्थ बड़े हैं । सब का सार है - परोपकार करो , पराये के लिये अपना प्राण तक छोड़ दो ।" पूना जी माँ आस्तिक भावना को दर्शाते हुये अपनी बेटी से कहती है कि " पूना आज से तुम नित्य तुलसी जी की पूजा किया करो और सन्ध्या के समय पीपल के नीचे दिया धर आया करो ।" :2: बेबु की मनोभावना है कि "देवता की पटकार की कोई दवा किसी के पास नहीं है ।" :3: इस प्रकार विभिन्न पात्रों के माध्यम से आस्तिक भावना को दर्शाया गया है ।

19:- प्रेम की भेंट :-

वर्मा जी के प्रस्तुत लघु सामाजिक उपन्यास में लोगों द्वारा इन्द्र देवता की पूजा अर्चा करना , स्वास्थ्य लाभ और दीर्घ आयु पाने की अभिलाषा से बंदर का पूजा पाठ करना , प्राणों की भीख मांगना तथा पापों के लिये प्रायश्चित करना आदि आस्तिक भावना को दर्शाते हैं ।

20:- प्रत्यागत :-

प्रस्तुत उपन्यास में सन्तान की प्राप्ति हेतु व्रत रखना , भगवान की पूजा अर्चा करना देव दर्शन करना , रामायण पाठ तथा कीर्तन - भजन आदि लोगों की आस्तिक प्रवृत्ति के द्योतक हैं । प्रसाद चढ़ाना , हवन - पूजन करना , गोदान करना , गंगा - स्नान करना , ब्राह्मण भोज कराना , तथा रामलीला का आयोजन सभी भावना को दर्शाते हैं । टीका राम आस्तिक प्रवृत्ति के पुरुष थे वे " कुछ दिनों से रामायण के सुन्दर काण्ड का पाठ विशेष - रूप से करने लगे थे ।" :4: बड़े - बड़े त्योहारों में रामायण पाठ विशेष समारोह और सजावट के साथ होता था । स्त्रियाँ भी पाठ सुनने और देवदर्शन के -

---

1:- कुण्डली चक्र - पृ. सं. - 5 - वृन्दावन लाल वर्मा

2:- वही - " " - 33 - वही

3:- वही - " " - 166 - वही

4:- प्रत्यागत - " " - 4 - वही

लिये मन्दिर आया - जाया करती थी । टीकाराम का दृढ़ निश्चय था "रामायण प्रेमी का घर घर में कोई काम नहीं ।" :1: मथुरा निवासी का विचार है कि "उपवास , गंगास्नान , गोदान , हवन , पंचगव्य ; सत्यनारायण की कथा, ब्राह्मण भोज, जाति भोज इत्यादि यथा विधि करने से कलंक मुक्त हो सकते हैं ।" :2: मंगल की माँ गंगा की महत्ता प्रतिपादित करती हुई कहती है कि "गंगा जी में पापी स्नान करते ही अपने पापों से मुक्त हो जाता है परन्तु गंगा जी को सब पाप छूता भी नहीं है । " :3: इन सब भावनाओं में आस्तिकता के दर्शन होते हैं ।

21:- संगम :-

प्रस्तुत उपन्यास में सब - तब आस्तिकता दर्शायी गई है । कुलदेवता की पूजा , दुर्गा पूजन , राम - नाम का स्मरण , देवी जी की सिद्धि आदि तथ्य इस भावना की पुष्टि करते हैं । सेठ भगवान की क्षमताओं से मवारी निकालना , गौ वध रोकने के लिये आग्रह करना , तथा भ्रमण आदि भी आस्तिकता के द्योतक हैं । लोग पंडित को सर्व शक्ति मान मानकर उनकी पूजा करते हैं । "बुन्देलखण्ड में पहाड़ियों की चोटियों पर मंदिरों और मूर्तियाँ प्राय: पाये जाते हैं ", :4: जो यहाँ के जन - जीवन की धार्मिक भावनाओं और आस्तिक प्रवृत्ति के द्योतक हैं । रामचरण के इन विचारों से कि "मैं तो पंडित जी सम्पत्ति का अधिकारी हूँ । मुझे किसी के धन से क्या प्रयोजन ! चार पैसे रोज के धनों में आनन्द करता हूँ।" :5: उनकी त्यागी और आस्तिक प्रवृत्ति का आभास मिलता है । जकनकी कहती है कि " पुजारी को केवल पूजा का अधिकार है, प्रतिमा की शक्ल सूरत की आलोचना का नहीं ।" :6:

1:- प्रत्यागत - पृ. सं. - 13 - वृन्दावन लाल वर्मा

2:- वही - " " - 95 - वही

3:- वही - " " - 125 - वही

4:- संगम - " " - 122 - वही

5:- वही - " " - 139 - वही

22:- कभी न कभी :-

प्रस्तुत उपन्यास में कुछ पात्रों की मनो भावनायें आस्तिक भावनाओं से ओत - प्रोत हैं । ग्रामीण नर नारी देवी - देवताओं की श्रद्धा - भक्ति के साथ उपासना करते हैं । पंचायत को ही अपना सच्चा हितु समझना , मन्दिर में दर्शन करना , भगवान को प्रसाद चढ़ाना और मनौती मानना उनकी आस्तिक भावनाओं को उद्घोषित करते हैं ।

23:- उदय किरण :-

प्रस्तुत उपन्यास में छोटे मछले की मनो भावनाओं और विचार - धारा को बताते हुये बताया गया है कि " हनुमान जी और भगवान के सामने कोई बुरा ग्रह कुछ नहीं कर सकता ।" :1: मगन का विचार है कि "गाँव वालों का खयाल करना पहला धर्म है आगे दुर्गाभार्य के हाथ में है ।" :2: लोगों का विचार है कि --+ --+ रामायण गीता पढ़ने की बात और भी अच्छी रही । घर - घर कोई न कोई पढ़ता ही है , अब मिलकर गाया - बजाया करेंगे ।" 33: उपन्यास में बताया गया है कि "भगवान राम भक्तों की निष्ठा के प्रतीक हैं और संस्कृति , धन , सत्य , पराक्रम , लगन पुरुषार्थ के प्रति विश्व । रावण ,आलस्य , अधर्मी , आपस की फूट + + दुर्गुणों की मूर्ति है । " :4: अन्त में मगन ने अपनी उक्ति "रामभरोसे जो रहे, पर्वत पे हरियाय" :5: के द्वारा आस्तिकता का प्रबल समर्थन किया है ।

24:- सोना :-

प्रस्तुत उपन्यास में विभिन्न स्थलों पर आस्तिक भावनायें परिलक्षित होती हैं । धन की प्राप्ति हेतु लक्ष्मी जी की पूजा अर्चा,भवानी माँ - की साधना , अनेक मन्दिरों का निर्माण , चीजों को मंगोड़े खिला कर लक्ष्मी -

---

1:- संगम - पृ. सं. - 187 - वृन्दावन लाल वर्मा

2:- उदय किरण - " " - 149 - वही

3:- वही - " " " 51 - वही

4:- वही - " " - 94 - वही

5:- वही - " " - 143 - वही

प्राप्त करने की लालसा , देवी की उपासना , जवारों का जलूस , छटोरिया तथा गौड़ बाबा की तन्मयता के साथ पूजा अर्चा लोगों की आस्तिक मनो वृत्तियों को दर्शाते हैं । ग्रामीण देवताओं की सवारी लोगों के सिर पर आती थी । लोगों के मनोरथ पूर्ण हो जाया करते थे । "जैसे जैसे भजन की गति बढ़ी , लोगों को फुरेरु आने लगी । जिस के सिर देवता का आना था वह नाची देवता था । + + उसको मार्च का छुड़ला कहते थे । " :1: अन्त में कथावक्ता ने अपनी सहमति व्यक्त की कि " जैसे फेर दिये स्वामी जी ने दिन ! "अरे भाई , धर्म करने से,पूजा अर्चा करने से ।" :2:

29:- आवत :-

प्रस्तुत उपन्यास में भगवान को सर्व शक्तिमान घोषित किया गया है तथा बताया गया है कि "तीर्थ पूजनीय है " :3: लोग मां भवानी की अर्चना करते हैं और शक्ति पुंज रामदूत हनुमान की चालीसा नित्य पढ़ते हैं । भगवान के मन्दिर में नित्य दर्शन करने के लिये जाना , लोगों की आस्तिक भावना झलकाते हैं के द्योतक है । उपन्यास में प्रह्लाद और हिरण्य कश्यप की कथा का कुछ अंश भी दर्शाया गया है । " भगवान ने नृसिंह का रूप धारण कर के उस पापी को समाप्त कर दिया ।" : 4: कार्तिक स्नान करने वाली स्त्रियों द्वारा गाये जाने वाले लोक गीत में भी आस्तिकता के दर्शन मिलते हैं जिसका कुछ अंश अवलोकनीय है -

"भई न विरज की भोर, सखी री मैं तो भई न विरज की भोर ,

+ + + उड़ उड़ पंख गिरें धरती पर कीन्हत नन्द किशोर " :5:

गणेश चौथ में चन्द्र विहार की अनुपम छटा भी दर्शायी गई है :6: यह सब भावनायें आस्तिकता की ओर उन्मुख करती हैं । स्त्रियों द्वारा गाये जाने वाला

1:- सोना - पृ. सं. - 124 - वृन्दावन लाल वर्मा

2:- वही - " " - 247 - वही

3:- आवत - " " - 203 - वही

4:- वही - " " - 33 - वही

5:- वही - " " - 50 - वही

6:- वही - " " - 73 - वही

देवी गीत " देवी महारानी की जय जय बोलो + + सल्ला ने डारी है फुहार" उल्लेखनीय है । :1:

धर्म परायणता :-

"धर्म वह महान्तम एवं सर्वाधिक महत्व पूर्ण प्रयास है जिसके द्वारा मानव जाति ने अपने को पूर्णत्व देने की प्रवृत्ति का प्रदर्शन किया है । धर्म के समान ही संस्कृति का ध्येय भी मानवीयपूर्णत्व का प्रयास है । संस्कृति इस साधन को अपेक्षाकृत अधिक सम्पूर्णता प्रदान करने हेतु इस विषय पर व्यक्त मानव अनुभवों कला , विज्ञान , काव्य , दर्शन , इतिहास तथा धर्म की वाणियों में खोजती है ।" :2:

अन्य विद्वानों ने भी धर्म को संस्कृति का अभिन्न अंग माना है । आदि काल से मानव धर्म का विकास करता आया है और धर्मपरायण बनने का सतत प्रयत्न करता रहा है । संस्कृति में धर्म तत्व का विशेष स्थान है । डा० सत्येकेतु ने संस्कृति की अवधारणा का उल्लेख करते हुये स्पष्ट किया है कि "+ + मनुष्य ने जो धर्म का विकास किया , दर्शन के रूप में जो चिन्तन किया साहित्य संगीत और कला का जो सृजन किया , सामूहिक जीवन को चित्तकर और सुखी बनाने के लिये जिन प्रथाओं और संस्कारों को विकसित किया , उन सबका समावेश हम संस्कृति में करते हैं । " :3: कुछ विद्वानों ने प्रकृति पर मानवीय जीवन के आरोपों का परिणाम स्वरूप धर्म की रेखाओं के विकास की पुष्टि की है । "जब मनुष्य ने प्रकृति पर जीवन का आरोप किया तो धर्म का समोन्मेष हुआ । पर ही पदार्थ के प्रति उसकी जो धारणायें परिस्थितियों के अनुसार बनी और ये धारणायें विश्वासों के आधार पर धर्म की रेखायें बन गई ।" :4: धर्म बुन्देल - खण्ड की संस्कृति का प्राण है । यहाँ का जन जीवन प्राचीन काल से धर्म मय रहा है । अनेकों मन्दिरों , तीर्थों आदि का निर्माण यहाँ के राजाओं और प्रजा की धर्म परायणता को उद्घोषित करता है । धर्म का सम्बन्ध यहाँ के निवासियों -

---

1:- आज्ञा - पृष्ठ सं. - 82 - वृन्दावन लाल वर्मा

2:- culture and Anarcy preface - P-8 - Mathew Arnold

3:- भारतीय संस्कृति और उसका इतिहास-डा० सत्येकेतु विद्यालंकार- 20

4:- Mythology of the Aryan Nations - P-22 - Cox.

है व्यावहारिक जीवन तेरहा है किन्तु उसकी मूल प्रेरणायें अध्यात्म से सम्बद्ध रही है ।

बुन्देलखण्ड की भौगोलिक स्थिति एवं विभिन्न परिस्थितियों ने यहां के निवासियों को धर्म परायण बनने की प्रेरणा प्रदान की है । यहां धर्म का प्रचार और प्रसार भी अविरल गति से होता रहा है । बुद्ध की विचारधारा ने विशेष रूप से लोगों को आस्तिक और धार्मिक जीवन व्यतीत करने का प्रोत्साहित किया । वर्मा जी ने यहां के जन - जीवन में व्याप्त धर्म परायणता को अपने विविध उपन्यासों के माध्यम से प्रस्तुत किया है और स्पष्ट किया है कि धार्मिक भावनाओं ने ही यहां के लोगों में ईश्वर के प्रति गहन आस्था उत्पन्न की है जो कि अवलोकनीय है ।

1:- गढ़कुण्डार :-

प्रस्तुत उपन्यास में पात्रों के माध्यम से धर्म परायणता दर्शायी गई है । धरी चन्देल , अपनी मनोभावनाओं को व्यक्त करते हुये कहता है कि "यदि मेरे पास कांध , हथियार और मेरा धर्म है तो अपने लिये मार्ग सरल कर लूंगा । निःसन्देह धर्म शक्ति और सद्भावना का प्रतीक है ।" :1: दिवाकर धार्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति है । छल - कपट पूर्ण जीवन से उसे घृणा है । वह पुरुषवास से स्पष्ट शब्दों में कहता है कि "जिस दिन आप लोगों ने हमारों को धोखा देकर मारने का निश्चय किया , उसी दिन धर्मराज की पुस्तक में आप लोग क्षत्रियों की नामावली से काट दिये गये । -+ + + आप कल्पना करते हैं कि अधर्म संचित राज्य बहुत दिनों तक चलेगा । " :2: इस प्रकार धार्मिक प्रवृत्ति और धर्म का महत्व दर्शाया गया है ।

2:- विराटा की पद्मिनी :-

प्रस्तुत उपन्यास की नारी पात्र , छोटी रानी धर्म की महत्ता का प्रतिपादन करती है तथा अपने विचार व्यक्त करतेहुये कहती है कि " न्याय और धर्म का साथ देने में मनुष्यों को विलम्ब नहीं होता । बिखरी हुई , सोई हुई शक्तियां , मुर्दाघं हुई अचेत आत्मायें , धर्म के लिये सिमट कर प्रचण्ड रूप -

---

1:- गढ़कुण्डार - पृ. सं. - 155 - वृन्दावन लाल वर्मा

2:- वही - " " - 455 - वही

धारण करती है । " :1: दुर्गावती धर्म तत्व का उल्लेख करती हुई कहती है कि "जब मनुष्य को दुःख होता है , तो अपने ही कारण होता है , यदि मन में भ्रम न रहे तो उसे किसी का भय नहीं । यही धर्म का तत्व है ।" :2: उपन्यास में स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है कि " धर्म की रक्षा करना कर्त्तव्य है और कर्त्तव्य का पालन करना धर्म है । " :3: इस प्रकार के उल्लेखों से धर्म परायणता का आभास होजाता है ।

3:- मुताहिब खू :-

प्रस्तुत उपन्यास में पूरन और रमू ने स्वामी धर्म का पालन किया है । अपने स्वामी के प्राणों की रक्षा के लिये वे स्वयं मृत्यु का चिर आलिंगन करने को तत्पर हो जाते हैं । रमू का विचार है कि "लोतो राजा , ऐसे भी अपने स्वामी के लिये छाती पर गोला - गोली ओट लेने का उमारा धर्म है ।" :4: राजा विजय बहादुर सिंह भी अधर्म से परे रहते हैं।वे अपने एक सैनिक रामसिंह से कहते हैं कि "रामसिंह , इतना बड़ा अधर्म सहज ही नहीं पचाया जा सकता , चाहे जो कुछ हो ।" :5: चरखारी बाजीनेवाति ब्रह्म धर्म का पूर्ण रूप से पालन किया ।है ।

4:- कथनार :-

प्रस्तुत उपन्यास में विविध स्थलों पर धर्मपरायणता परिलक्षित होती है । उपन्यास में बाधियों को दण्ड देना और पीड़ितों की सेवा करना परम धर्म माना गया है । मन्टोले पदी के विचारानुसार " शरणागत की रक्षा करना भी धर्म है ।" :6: मदन का विचार है कि " शास्त्रों और धर्म का अपमान करना निन्दनीय है , क्योंकि राज्य और शरीर थोड़े ही दिन टिकते हैं ।

1:- विराटा की पद्मिनी - पृ. सं. - 132 - वृन्दावन लाल वर्मा
2:- वही - " " - 226 - वही
3:- वही - " " - 227 - वही
4:- मुताहिब खू - " " - 7 - वही
5:- वही - " " - 73 - वही
6:- कथनार - " " - - वही

धर्म तो अनन्त है ।" :1: उपन्यास में शास्त्रों , धर्म ग्रन्थों और गुरु का सम्मान करना धर्म की मर्यादा मानी गई है ।

5:- झाँसी की रानी - लक्ष्मी बाई :-

प्रस्तुत उपन्यास में विभिन्न पात्रों के माध्यम से धर्म परायणता दर्शायी गई है । तात्या टोपे , राजा गंगाधर राव से प्रार्थना करते हैं कि - "धर्म की रक्षा कीजिये , धर्म , अपने - अपने विश्वास की बात है , राज्य को इसमें तटस्थ रहना चाहिये ।" :2: वहिश्तन भी अपनी धार्मिक मनो भावनाओं को व्यक्त करते हुये रानी लक्ष्मी बाई से कहती है कि " धर्म की आज्ञा सबसे ऊपर होती है सरकार ! " :3: उपन्यास में राजा गंगाधर राव को कट्टर धार्मिक व्यक्ति दर्शाया गया है । अंग्रेजों से उत्पीड़ित और क्षुब्ध होकर बुन्देलखण्ड के नर-नारी अपनी मनोभावनायें व्यक्त करते हैं और अंग्रेजों के प्रति अपना क्रोध दर्शाते हुये कहते हैं कि " "तो का देसी आदे छूट गई के धरम - करम कछू नहीं रेहत ।" :4: धर्म को विजय का कारण माना गया है और स्पष्ट किया गया है कि धर्म की पृष्ठभूमि पर ही प्रत्येक वस्तु आधारित है । देश की स्वतंत्रता का उद्घोष भी धर्म को आगे रख कर किया गया था ।"उठो धर्म के लिये कट मरो । + + देश की स्वतंत्र करो । धर्म की रक्षा करो ।" :5: इन सब तथ्यों से धर्म परायणता का पूर्ण उल्लेख मिल जाता है ।

6:- टूटे काँटे :-

प्रस्तुत उपन्यास में एक कृषक के नाम से धर्म परायणता का बोध कराया गया है । वह रोनी की भूमि की देख भाल करता है और रोनी के गाँव छोड़ने से पूर्व कहता है कि "जब तक हम लोगों की जान में जान है तब तक तुम्हारी भूमि कोई नहीं दबाने पायेगा । धरम आड़े हाथ आयेगा ।" :6: मृत्यु -

---

1:- कथनार - पृ. सं. - - वृन्दावन लाल वर्मा

2:- झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई - पृ. सं. - 48 - वही

3:- वही - " " - 99 - वही

4:- वही - " " - 130 - वही

5:- वही - " " - 247 - वही

6:- टूटे काँटे - " " - 95 - वही

के उपरान्त मृतक की क्रिया कर्म के साथ दान - पुण्य , ब्राह्मण भोज आदि भी धार्मिक आस्था के प्रतीक हैं ।

7:- मृगनयनी :-

प्रस्तुत उपन्यास में विविध स्थलों पर धर्म परायणता के दर्शन मिलते हैं । दर्द गाँव के पुजारी बोधन द्वारा धर्मध्वजा का फहराना , शास्त्रों का सम्मान करना , धार्मिक पुस्तकों का मनन - चिन्तन करना , पूजा पाठ तथा दान पुण्य आदि धर्म की परिधि के अन्तर्गत आते हैं । बोधन का विचार है कि " + + धर्म के क्षीण - क्षीण हो जाने से , कर्म बिगड़ जाने से ही अत्याचारी सिर पर टूट पड़े हैं । + + धर्म , जिसको बड़े लोगों ने जतलाया है राधा कृष्ण की , सीताराम की भक्ति । साधारण लोगों के लिये इतना ही तो बहुत है ।" :1: राजा मान सिंह कला व प्रजा पालन को राजाओं धर्म मानते थे । उनका कथन था कि "प्रजापालन और कला दोनों के लिये हमें प्राण देने के लिये तैयार रहना चाहिये । इन दोनों की रक्षा का ही तो दूसरा नाम धर्म का पालन है । " :2: उपन्यास में दर्शाया गया है कि धर्म के बल पर अत्याचारों का सामना सुगमता से किया जा सकता है , जब धर्म बिगड़ता है तभी अत्याचार बढ़ते हैं । धार्मिक बन्धनों को तोड़ना पथ भ्रष्ट होना समझा जाता है , चाहे प्रजा हो या राजा , धर्म सबके लिये एक समान माना गया है । धर्म के लिये लोग मर मिटने को तैयार रहते हैं । धर्म का क्रय-विक्रय नहीं होता , तथा वह गो और ब्राह्मण की रक्षा करता है । बोधन वर्णाश्रम धर्म का तत्परता से पालन करता है और अटल से कहता है कि "मैं राज्य , छोड़ कर परदेश चला जा सकता हूँ परन्तु वर्णाश्रम धर्म को लात नहीं मार सकता । +-5 राजा अधर्मी हो जायेगा तो टिकेगा कितने दिन ! " :3: इन सभी भावनाओं में धर्म परायणता के दर्शन होते हैं ।

8:- महारानी दुर्गावती :-

प्रस्तुत उपन्यास में रानी दुर्गावती धार्मिक आस्था से ओत -

1:- मृगनयनी - पृ. सं. - 29 - वृन्दावन लाल वर्मा

2:- वही - " " - 139 - वही

3:- वही - " " - 201 - वही

प्रीत है । वह अपने धर्म और देश के लिये सब कुछ उत्सर्ग करने को उद्यत रहती है । धर्म के लिये ही वह मृत्यु स्थली में प्रवेश करती है । उसका विचार है कि " शूरवीर धर्म और न्याय के मार्ग से कभी विचलित नहीं होते ।" :1: पतिव्रत धर्म का भी उन्होंने पूर्ण रूप से पालन किया । गोंड़ लोग वेद , पुराण और गीता जैसे धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन और चिन्तन करते थे । + अपने प्राणों को संकट में डालकर भूखे हुये बालक के प्राण बचाना दुर्गावती अपना धर्म मानती थी । वह अपने पति राजा दलपति शाह से कहती है कि " मैं जिसकी अर्धांगिनी हूं , उनके अनुकूल धर्म का काम करना ही होगा । " :2: उपन्यास में संस्कृत के श्लोक के माध्यम से धर्म परायणता उद्घोषित की गई है जो अवलोकनीय है ।"

"निन्दन्तुनीतिनिपुणा: यदिवास्तुवन्तु
लक्ष्मी विशतु गच्छतु वा यथेष्टम्
अद्यैव मरणं वा युगान्तरे वा ,
न्यायात् पथ: प्रविचलन्ति पदं न धीरा: ।" :3:

रानी दुर्गावती ने मृत्यु से पूर्व अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा था कि "नीच के साथ नीच बने + + यह हमारे धर्म के विरुद्ध है ।0 :4: इन सभी भावनाओं में धर्म परायणता के दर्शन होते हैं ।

9:- भुवन विक्रम :-

प्रस्तुत उपन्यास में भुवन के माध्यम से धर्म परायणता दर्शायी गई है । वह विन्ध्य जी के कपिंजल से धर्म का नाता जोड़ता है जिसका अन्त तक निर्वाह करता है । गुरु धौम्य ऋषि ने उसके पिता रोमक के द्वारा कपिंजल के वध की सम्मति मांगी तो उसने निर्भयता से कहा कि " मैं कहता हूं गुरुदेव, कि कपिंजल के वध की योजना अधर्म मूलक है । कपिंजल के वध का समर्थन करते ही मेरी आत्मा टूट - टूट कर बिखर जायेगी ।" :5: भुवन ने अपने पिता राजा रोमक-

---

1:- मृगनयनी - पृष्ठ सं. - 226 - वृन्दावन लाल वर्मा
2:- वही - " " - 190 - वही
3:- वही - " " - 225 - वही
4:- वही - " " - 290 - वही
5:- भवन विक्रम- " " - 150 - वही

को भी धर्म का संदेश दिया और कहा कि " पूज्य पिताजी अधर्म युक्त साधन से राज्य प्राप्त करना आपको शोभा नहीं देता ।" :1: उसने कर्तव्य और धर्म के सम्बन्ध में अपना विचार प्रस्तुत करते हुये कहा है कि "पुरुषार्थ दायें हाथ में हो , धर्म हृदय में हो तो विजय बायें हाथ में रहती है ।" :2: धर्मपालन करने में प्राणोत्सर्ग हेतु तत्पर रहना पड़ता है तभी न्याय और धर्म का सच्चे अर्थों में पालन सम्भव हो सकता है । इन भावनाओं में धर्म की महत्ता का प्रतिपादन किया गया है ।

10:- रामगढ़ की रानी :-

प्रस्तुत उपन्यास में रामगढ़ की रानी अवन्ती बाई ने विभिन्न स्थलों पर धर्म परायणता की झाँकी प्रस्तुत की है । उनका दृढ़ विश्वास था कि "जब तक हमारे शरीर में रक्त की एक भी बूंद है , तब तक कोई हमारा धर्म नष्ट नहीं कर सकता ।" :3: वे देश और धर्म के लिये जन्मी , जीवित रही और वीरगति को प्राप्त हुई । भरत का कथन था कि "वह क्षत्रिय क्या जो देश और धर्म पर अपने प्राण न्योछावर न कर दे ।" :4: + + रानी जी ने अपने सम्पूर्ण क्षेत्र में धर्म की रक्षा हेतु लोगों को प्रेरित किया और संकेत करते हुये कहा कि " देश धर्म की रक्षा करो , नहीं तो चूड़ी पहन कर घर में बन्द हो जाओ । :5: इन सभी विचारों में रानी की धर्म परायणता मुखरित हो उठी है जिससे लोग प्रेरित हो कर कहते हैं कि "हम अपनी देश और धर्म की वेदी पर अपने सिर चढ़ा देने के लिये तैयार हैं ।" :6:

11:- माधव की शिक्षा :-

प्रस्तुत उपन्यास में देश धर्म की रक्षा की अनिवार्यता पर बल

1:- भुवन विक्रम - पृष्ठ सं. - 163 - वृन्दावन लाल वर्मा

2:- वही - " " - 162 - वही

3:- रामगढ़ की रानी-" " - 24 - वही

4:- वही -" " - 97 - वही

5:- वही - " " - 139 - वही

6:- वही - " " - 114 - वही

किया गया है । युद्ध स्थली में प्रवेश करने से पूर्व सिपाहियों को धर्म और कर्तव्य की ओर उन्मुख किया जाता था । "आज तुम्हारे ईमान धर्म की जाँच है ।" :1: उपन्यास में नीति श्लोक का उल्लेख करते हुये स्पष्ट किया गया है कि " न्यायात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ।" :2:

12:- अहिल्या बाई :-

प्रस्तुत उपन्यास में अहिल्या बाई की धार्मिक प्रवृत्ति को दर्शाया गया है । वे पूजा - पाठ , दान - पुण्य , तीर्थ भ्रमण , देव दर्शन , भोग आदि धार्मिक कार्य सम्पन्न करती थी । वेद , पुराण , रामायण , गीता , महाभारत आदि में उनकी विशेष आस्था थी । उनके पौराणिक गुरु अन्नाजी दास भी धर्म परायण पुरुष थे।वे शास्त्र और वेद सूक्तियों का अर्थ समझाया करते थे । उनका कथन था कि " संसार की सारी जंगम रचना एक शाश्वत नियम पर काम कर रही है उसी का नाम ऋतु है , और धर्म वह है जिससे भौतिक सुख और अध्यात्म की सिद्धि होती है ।" :3:

13:- कीचड़ और कमल :-

प्रस्तुत उपन्यास में कालिंजर और खजुराहो में निर्मित भगवान के अनेक मन्दिर बुन्देलखण्ड के निवासियों की धर्म परायणता के प्रतीक है । उपन्यास में धर्म युद्ध की महत्ता प्रतिपादित की गई है तथा सुन्दरी प्रमिला की धार्मिक जीवन झाँकी विस्तृत रूप में दर्शायी गई है । गुरु राम देव धार्मिक पुरुष थे।उनका कथन था कि - " धर्म और सौन्दर्य हमें परम प्रभु के निकट पहुँचाते हैं।" :4: + + दिग्विजय करके शक्ति को केन्द्रित करना और देश धर्म की रक्षा के लिये सशस्त्र बने रहना बहुत बड़ा उद्देश्य है ।" :5: लाखड प्रमिला से कहता है कि " + + तुम किसी विशेष स्थान पर जमाखोर करो या न करो , मानो और

1:- माधव जी सिन्धिया - पृष्ठ सं. - 245 - वृन्दावन लाल वर्मा

2:- वही - " " - 464 - वही

3:- अहिल्या बाई - " " - 108 - वही

4:- कीचड़ और कमल - " " - 132 - वही

5:- वही - " " - 142 - वही

गलियों में जाओ , धर्म और देश की रक्षा के संकेतक गीता गाओ ।" :1: इन सभी भावनाओं में धर्म परायणता प्रकट होती है ।

14/:- देवगढ़ की मुस्कान :-

प्रस्तुत उपन्यास में अनेक स्थलों पर धर्म परायण मनोवृत्ति के दर्शन होते हैं । प्रियम्वदा , कुन्दा से कहती है कि " देर मैया , तुमने धरम पूरा निभाया है ।" :2: उपन्यास के नारी पात्र सिन्धी और प्रियम्वदा धार्मिक प्रकृति की नारी है वे देवी के भजन तन्मयता के साथ गाती हैं । उप - न्यास में दर्शाया गया है कि + + +"युद्धों का समाज के धर्म - पक्ष पर कोई घातक प्रभाव नहीं पड़ता था । धर्म की चर्चा होती रहती थी , शास्त्रार्थ होते थे , ग्रन्थ पढ़े - लिखे जाते थे ।" :3: जैन मुनि रत्न गिरि ने धर्म तत्व के सम्ब- न्ध में बताया कि " धर्म की माला तथा है , इसे नहीं भूलना चाहिये ।" :4: देवगढ़ के राजा को लोग धर्मात्मा मानते थे । राजा का विचार था कि "प्रभु ने न्याय और धर्म पालन के लिये , प्रजारंजन और जनहित के लिये राज्य सौंपा है ।"9+ + धर्म सबसे बड़ा है ।" :6:वास्तव में धर्म तो एक त्याग और परोप- कार की भावना है । अन्त में उपन्यास में गीता के संदेश की आवृत्ति की गई है कि "जब-जब धर्म की हानि हानि होती है भगवान अवतार लेकर आते हैं ।" :7: राजा विजय पाल का विचार है कि " अर्थ लाभ के लिये और धर्म के लिये बहुत से लोग लड़ते , कटते , मरते हैं , परन्तु पुरुष वे हैं , जो धर्म के लिये जीते हैं । श्रेष्ठ जीवन वही है ।" :8:

14/2 अवक्याहेर - इस उपन्यास में मराठा युवती द्वारा सतीत्व की रक्षा के लिये प्राणाहुति करना, हीरोजी किलेदार द्वारा स्वामि धर्म का पालन करना, वंश - शिवाजी की धर्म परायणता का उल्लेख मिलता है।

1:- कीचड़ और कमल - पृष्ठ सं. - 276 - सुन्दरलाल लाल वर्मा

2:- देवगढ़ की मुस्कान - " " - 34 - वही

3:- वही - " " - 132 - वही

4:- वही - " " - 133 - वही

5:- वही - " " - 242 - वही

6:- वही - " " - 252 - वही

7:- वही - " " - 259 - वही

8:- वही - " " - 269 - वही

9:- अवक्याहेर - " " - 53 - वही

10 वही - " " - 26 - वही

15:- अवल मेरा कोई :-

प्रस्तुत उपन्यास में पूर्वजों के द्वारा सम्पन्न हुये धर्म - कर्म का उल्लेख किया गया है और बताया गया है कि धार्मिक कार्यों का सुपरिणाम प्राप्त होता है जिससे आगे आने वाली पीढ़ी सुख और शान्ति प्राप्त करती है । हिन्दू धर्म की महत्ता को भी प्रतिपादित किया गया है । पंचम का विचार है कि " सेवा हमारा धर्म है ।" :1: बुआ की एक धार्मिक प्रवृत्ति की नारी थी , उनकी मनो भावना थी कि हमारे पुरखों के धरम - करम को बहुत जीते जागते हैं।" :2: निशा ने हिन्दू धर्म की व्याख्या करते हुये बताया कि "हिन्दू धर्म में तन और मन के बीच कोई अन्तर नहीं रखा गया है ।" :3:

16 :- कुण्डली चक्र :-

प्रस्तुत उपन्यास में विभिन्न स्थलों पर धर्म परायणता दर्शायी गई है । भुवन अपने विचार व्यक्त करता है कि " धर्म तो उसका प्राण है बिना धर्म ग्रन्थ पढ़े , उसके जीवन का निर्वाह हो ही नहीं सकता ।" :4: अजित, हिन्दू धर्म में विशेष आस्था रखता है , उसका विचार है कि "हिन्दू धर्म का सम्प्रदायसंसार के लिये यही है - किसी को मत सताओ । त्याग -तप करो, किसी के विश्वास का निरादर मत करो ।" :5: इस असार संसार में भव सागर से पार उतारने वाले रामायण , श्री मद्भागवत , गीता आदि धार्मिक ग्रन्थों की महत्ता का प्रतिपादन किया गया है ।

17:- प्रत्यागत :-

प्रस्तुत उपन्यास में पं॰ टीकाराम और नवल किशोर कट्टर धार्मिक व्यक्ति थे । वे धर्म और रूढ़ियों से विचलित होते हुये किसी को नहीं देख सकते थे । टीकाराम अपने पुत्र मंगल से कहता है कि " रामायण द्रोही का -

---

1:- अवल मेरा कोई - पृष्ठ सं॰ - 93 - वृन्दावन लाल वर्मा

2:- वही - " " - 120 - वही

3:- वही - " " - 196 - वही

4:- कुण्डली चक्र - " " - 18 - वही

5:- वही - " " - 18 - वही

इस डर में कोई काम नहीं है।" :1: उनका दृढ़ निश्चय है कि " जब तक मेरा जीवन है धर्म पर आंच नहीं आने सकता । :2: धर्म - पत्नी की महत्ता प्रतिपादित की गई है । सोमवती अपने पति से कहती है कि" मैं आपकी स्त्री नहीं हूं , आप की धर्म पत्नी हूं ।:3: धर्म की रक्षा हेतु उपवास , व्रत गंगास्नान , हवन कथा आदि के महत्व पर भी प्रकाश डाला गया है । इन सब भावनाओं में धर्म परायणता मुखरित हुई है ।

18:- संगम :-

प्रस्तुत उपन्यास में गंगा नाम की नारी का कथन है कि वह दांत - पैरों के बल पर मजदूरी करेगी और " अपना धर्म रखेगी , देखें भगवान कब तक टेढ़े रहते हैं ! " :4: सम्पत भी श्रम के द्वारा धर्म का पालन करने को तत्पर है , उसका विचार है कि " श्रम के द्वारा धर्म से जो दो पैसा मिल जायेगे उसी से निर्वाह करेंगा ।" :5: राम चरण और केशव ने रोग के रोगियों की प्राण - पण से सेवा करके धर्म का निर्वाह किया है ।

19:- कभी न कभी :-

प्रस्तुत उपन्यास में देवजू को चोरी का झूठा आरोप लगाया जाता है जिससे उसके बड़े भाई की अन्तरात्मा पुकार उठती है और वह धर्म को दुहाई देते हुये कहता है कि " यदि धन्धोने चोरी की है तो संसार से धर्म बिल्कुल उठ गया है ।" :6: अन्त में धर्म की विजय हुई और देवजू निर्दोष सिद्ध हुआ ।

20:- ~~अमरकीर्ति~~ :- ललितादित्य - प्रस्तुत उपन्यास में ललितादित्य, धर्मपरायण राजा है। उनकी दृष्टि में " धर्मकर्म सर्व श्रेष्ठ था।" उपन्यास में क्षत्रिय को धर्म तलवार उठाये रखना दर्शाया गया है। ललितादित्य का कथन है कि "कर्तव्य का पालन करो। अपने धर्म को न भूलो।"

21:- सोना :-

प्रस्तुत उपन्यास में पूजा - पाठ पर विशेष बल दिया गया है ।

1:- प्रस्थान - पृ. सं. - 13 - वृन्दावन लाल वर्मा

2:- वही - " " --80 - वही

3:- वही - " " - 97 - वही

4:- संगम - " " -173 - वही

5:- वही - " " -184 - वही

6:- वही - " " - " - वही

7: ललितादित्य " " 315 - "

8: वही " " 54 - "

9 वही " " 501 - "

तथा धर्म की प्रतीक है उसका कथन है विश्वगतीय अजय है किन्तु धर्म और अभिज्ञान में किसी से कमनहीं है वह स्पष्ट रूप से कहती है कि "धर्म से बढ़कर धन नहीं ।" :1:

21:- उदय किरण :-

प्रस्तुत उपन्यास में धार्मिक पुस्तकों वाचन,पूजा-पाठ आदि के माध्यम से लोगों की धर्म परायणताको प्रदर्शित किया गया है ।

23:- अमरबेल :-

प्रस्तुत उपन्यास में नेवी नाम का पुरुष पात्र धर्म का प्रतिनिधित्व करते हुये एक पुरुष से कहता है कि" धर्म चुपके से कहता है किठठ, कर डाल कुछ । पुरुष बोला, "अमर बल ली है मैंने,देखा तो ।":2:

4- अवतार वाद

बुन्देलखण्ड कीसंस्कृति में' लोक मंगल और जन कल्याण कीभावना निहित है। सेवा,परोपकार,त्याग,तपस्या,दया,ममता आदि मानवीयगुणों का,बुन्देलखण्ड के जन-जीवनमेंबाहुल्य रहा है । बुन्देलखण्ड कीसंस्कृतिमें अवतार वाद कीविशद व्याख्या की गयी है । राम,कृष्ण,बुद्ध,मत्स्य,वराह,कूर्म,परशुराम आदि अवतारों कीमहत्ता को स्वीकार कियागयाहै ।" भारतीय मनीषियों ने ईश्वर के अवतार का प्रयोजन लोक-कल्याण माना है ।": 3:

बुन्देलखण्ड के निवासी अवतारों कीप्रतिमाओं को प्रतिष्ठापित करके पूजार्चा करतेहैं । लोगों काविश्वास हैकिघोर संकट में भगवान की रक्षा करता है,संकट से मुक्ति दिलाता है,सफा सभी मनोरथ पूर्ण करता है ।

राम को पूर्ण अवतार माना गया है। वृन्दावनलाल वर्मा ने राम की महत्ता को प्रतिपादित करते हुये बताया है कि -"भगवान राम भक्तों कीनिष्ठा के प्रतीक हैं,और संस्कृति ; धर्म,सत्य,पराक्रम,लगन,पुरुषार्थ के प्रतिबिम्ब हैं।":4: उनका विश्वास है कि " जब धर्म की हानि होती है,तो भगवान अवतार लेकर आते हैं ।" :5:

:1:	सोना	पृष्ठ संख्या- 113	वृन्दावनलाल वर्मा
:2:	अमरबेल	पृष्ठ संख्या -344	वृन्दावनलाल वर्मा
:3:	परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।		: दृष्टव्य :
:4:	उदय किरण	पृष्ठ संख्या 94	वृन्दावनलाल वर्मा
:5:	देवगढ़ की मुस्कान	पृष्ठ संख्या 249	वृन्दावनलाल वर्मा

वर्मा जी के विभिन्न उपन्यासों में अवतार वादकी प्रतिष्ठा हुई है :-

1- गढ़ कुण्डार :-

प्रस्तुत उपन्यास के पात्र नाग ने हेमवतीको देखा और कल्पना करने लगा कि " मानो दुर्गा अवतरित हुई हो ।"[1] लखनेन्द्र का विचार था कि " बुन्देलों की विन्ध्यवासिनी ने अन्याय-पीड़ित बुन्देलों की रक्षा के लिये अवतार लिया है ।"[2] दिवाकर अपनी मनोभावनायें व्यक्तकरते हुये तारा सेकहता है कि" आप देवीहैं। मेरे त्राण के लिये देवी काअवतार हुआहै ।"[3] तारा तुम देवी नहीं हो,देवीका अवतार हो।[4]

2- विराटा की पद्मिनी :-

प्रस्तुत उपन्यास में विराटा की पद्मिनी कुमुद को दुर्गाका अवतार माना गया है। जनार्दन राजा से कहता है कि"घाटन में एक दाँगीके घर दुर्गा जी ने अवतार लिया है। सिद्धि के लिये उनकीबड़ी महिमा है ।"[5] उसकन्या को देवीका अवतार मानते हुये न केवल गाँव के लोग एकत्र होकर उसके द्वार मानमन्दिर में जाते थे,बल्कि बाहर से दूर-दूर के लोग भी मानता मनाने आते थे ।[6] नरपति,कीर्तिमती को सम्बोधित करते हुये कहताहै कि" बेटी यह स्मरण रखना कि सुन्दरीदेव मानवों कीहै और कुमुद कुमारी दुर्गा काअवतार है ।"[7]

3- मृगनयनी :-

प्रस्तुत उपन्यास में विभिन्न स्थलों पर अवतार वाद कीपुष्टि होती है । ग्राम के निवासीराजा को भगवानका अवतार मानते थे तथा उनकीआरती उतारते थे। वोधन ग्रामीणों से कहता है कि" राजा भगवान का अवतार या पूर्व जन्म का योगी होता है ।"[8] राजा मान सिंहसे केवू मृगनयनी के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुये कहताहै कि" महाराज,वह पूर्वजन्म में संगीत काअवतार रही होगी ।"[9] मृगनयनी की चित्रशाला मेंअनेक प्रकार के चित्रों के साथ अवतारों के भी चित्र थे,जो किअवतार वाद को बताते है ।[10]

4- ललिता दित्य :- प्रस्तुत उपन्यास में दर्शाया गया है कि राजा देवता के अवतार होते हैं।

14: गढ़ कुण्डार	-1	पृष्ठ संख्या -50	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2	पृष्ठ संख्या -383	
	-3	पृष्ठ संख्या - 499	
	-4	पृष्ठ संख्या -501	
विराटाकी पद्मिनी	-5	पृष्ठ संख्या- 4	"
	-6	पृष्ठ संख्या- 7	
	-7	पृष्ठसंख्या - 83	
मृगनयनी	-8	पृष्ठ संख्या- 161	"
	-9	पृष्ठ संख्या- 239	
	-10	पृष्ठ संख्या--391	"
ललिता दित्य	-11	पृष्ठ संख्या - 178	

5- अहिल्याबाई :

प्रस्तुत उपन्यास में मल्हार ने एकमेव में अहिल्याबाई की सराहना करते हुये उन्हें देवी का अवतार बतलाया है ।[1]

6- कीचड़ और कमल :

प्रस्तुत उपन्यास में बताया गया है कि" राजा देवता का अवतार होता है और " अपने राजा-रानी किसी न किसी देवता के अवतार हैं ही ।"[2] अंगद ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुये बताया कि " राजा-राजा सब एक से,- जिनमें किसी देवता के अवतार होते आये हैं ।"[3] ब्रह्मा, विष्णु, महेश वगैरह देवता अनेक अवतारों में निर्मित किये गये हैं और मंदिरों में प्रतिष्ठापित किये गये हैं, जो कि अवतार बाद कीपुष्टि करते हैं ।"[4] साधु अपने गुरु को अवतार मानता है, उसका विचार है कि" हमारे गुरु रामदेव जी विश्वकर्मा के अवतार हैं ।"[5]

7- देवगढ़ की मुस्कान :

प्रस्तुत उपन्यासमें विभिन्न स्थलों पर राजा विजयपालसिंह को देवता का अवतार बतलाया गया है । कन्दुक कथन है कि " महाराज देवता के अवतार हैं ।"[6] कवि व और चारण अपने विचार व्यक्तकरते हुये कहते हैं कि " पृथ्वी पर हमारे ये राजा देवता के अवतार हैं ।"[7] छलिया ज्योतिषीजी अपने अपराध की क्षमा माँगते हुये उनसे अनुनय विनय करता है कि" पापी को देवता क्षमा कर देते हैं। श्री महाराजाधिराज देवता के अवतार हैं ।"[8] कबीलाजाति के लोगों तथा उच्च वर्ग के ब्राह्मण पन्नाकी मुद्रियों की अवधारणा है कि" श्री महाराज देवता के अवतार हैं।":: जब-जब धर्म की हानि होती है, भगवान अवतार लेकर आते हैं ।"[9] एक स्थल पर रानी भानुमती देती, राजा से कहती है कि"अनेक राजा हुये हैं, जिन्हें इन्द्र देवता का अवतार माना गया है, आप किसी से कमतर हैं ।"[10]

अहिल्याबाई	-1	पृष्ठ संख्या- 59	वृन्दावनलाल वर्मा
कीचड़ और कमल	-2	पृष्ठ संख्या- 2	
	-3	पृष्ठ संख्या- 33	"
	-4	पृष्ठ संख्या- 54	
	-5	पृष्ठ संख्या- 87	
देवगढ़ की मुस्कान	-6	पृष्ठ संख्या-236	
	-7	पृष्ठ संख्या-233	
	-8	पृष्ठ संख्या-243	
	-9	पृष्ठ संख्या-245	"
	-10	पृष्ठ संख्या-248	

8- टूटे काँटे :

प्रस्तुत उपन्यासमें सूरजार्थ को किसी योगी या अप्सरा का अवतार बतलाया गया है ।:1:

9- आहत +

प्रस्तुत उपन्यासमें जीव कीमा, भंवरी को अवतार माना गया है । इसका कहना है कि " जीव कुछ बुरा जरूर है, परन्तु उसकीमा-वह तो अवतार है ।"[:2:]

5- श्रद्धा-भक्ति :

बुन्देलखण्ड की संस्कृति में श्रद्धा और भक्ति-भावना का आधिक्य रहा है । इस तत्व को वर्मा जी ने अपने विविध उपन्यासोंमें दर्शाया है, जिसका उल्लेख निम्नवत् है:

1- गढ़ कुण्डार :

प्रस्तुत उपन्यास की नारी पात्र तारा के माध्यम से श्रद्धा-भक्तिको दर्शाया गया है ।" तारा ने श्रद्धा के साथ भैरवी शक्ति और शक्ति-भैरव की मूर्ति पर जल डाला और फिर भक्ति के साथ मालकौंस के विविध और मनोहर फूल चढ़ाये । हाथ जोड़ कर आँखें मूँदली और दया की भिक्षा माँगी ।[:3:]

2- विराटा की पद्मिनी :

प्रस्तुत उपन्यास में, विराटा के निवासियों की मनोभावनाओं को व्यक्त करते हुये बताया गया है कि" वे विलीजाने वाली विपत्ति के निवारण के लिये भक्तिके माध्यम पूजा में रत रहते थे ।[:4:] :: उनका दृढ़ निश्चय था कि देवीकावरदान डाली नहीं जाता तथा देवीकीपूजा रोकी नहीं पड़ती ।[:5:]

3- मुक्तिदूत :

प्रस्तुत उपन्यास भक्ति भावना का प्रतीक, उड़नू की ब टोरिया पर बनाया गया, भगवान का भव्य मंदिर है । जहाँ पहुँच कर मानव शान्ति प्राप्त करता है ।[:6:]

टूटे काँटे	-1	पृष्ठ संख्या- 371	वृन्दावनलाल वर्मा
आहत	-2	पृष्ठ संख्या- 108	"
गढ़ कुण्डार	-3	पृष्ठ संख्या- 242	"
विराटा की पद्मिनी	-4	पृष्ठ संख्या- 89	"
	-5	पृष्ठ संख्या- 86	"
मुक्तिदूत	-6	पृष्ठ संख्या- 41	"

4-कथनार :

प्रस्तुत उपन्यास में विभिन्न स्थलों पर श्रद्धा-भक्ति को दर्शाया गया है। एक विश्वास जन समुदायद्वारा बड़ी श्रद्धापूर्वक महन्त जी के दर्शन करना और उन्हें :1: विभिन्न वस्तुयें भेंट स्वरूप प्रदान करना, स्त्रियों द्वारा संध्या, उपासना, उपवास, भजन, गुरु सेवा आदि के उपरांत संन्यासलेकर श्रद्धा और भक्ति के साथ शंकर जी :2: के ध्यान में तन्मय होकर भोरली बनना, कथनार की, :3: धर्म पर अटूट श्रद्धा होना, सच्चा तपस्याकरने और सन्यास लेने का दृढ़ संकल्प करना, :4: पूर्ण मनस्य द्वारा अपने को भक्तिके :5: द्वारा परमात्मा में लीन करने का उपदेश, श्रद्धा-भक्ति को प्रदर्शित करते हैं।

5- झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई :

प्रस्तुत उपन्यासमें रानी लक्ष्मीबाई को धार्मिक ग्रन्थों, विशेष रूप से :6: भगवत गीता में परम श्रद्धा थी। रानी चैत्र की नवरात्रि में बड़ी श्रद्धा-भक्ति और उल्लास के साथ गौर प्रतिमा की स्थापना करती थीं और धूप-दीप, भोजन-आसन :7: सथा नृत्य के साथ पूजा किया करती थी। रानी और उनकी सखियों का नित्य, दर्शनार्थ मंदिरों में जाना, उनकी, ईश्वर के प्रति अटूट श्रद्धा और भक्तिको दर्शाता है। :8:

6- मृगनयनी :

प्रस्तुतउपन्यास में राधा कृष्ण और सीताराम की भक्तिपर प्रकाश डाला :9: गयाहै। ओरछा पुजारीका विचार तो यहाँ कि " पेड़, पत्थरोंऔर जानवरों कीपूजा भी अपना एक विशिष्ट स्थान रखतीहै। बनको या बनमें तेलिनीको भी अपने भीतर पूरी श्रद्धा और भक्तिके कन्दों में बाँध कर घरेलूईश्वर तक पहुँचने का सुख-मीता मिल :10: जायेगा। वह मूर्ति पूजा में विश्वास श्रद्धा-भक्ति रखता है। "

7- महारानी दुर्गावती :

प्रस्तुत उपन्यास में दुर्गावती अपने आराध्य के प्रतिअखण्ड श्रद्धा रखते हुये देवीजी :11: से प्रार्थना करती है कि मुझे अखण्ड भक्तिदो। दलपति शाह, नील कण्ठ महादेव के मंदिर

कथनार	-1	पृष्ठ संख्या- 85	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2	पृष्ठ संख्या- 88	
	-3	पृष्ठ संख्या-232	
	-4	पृष्ठ संख्या-175	
	-5	पृष्ठ संख्या-219	
झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई	-6	पृष्ठ संख्या- 77	
	-7	पृष्ठ संख्या-96	
	-8	पृष्ठ संख्या-149	
मृगनयनी	-9	पृष्ठ संख्या- 29	"
	-10	पृष्ठ संख्या-371	"
महारानी दुर्गावती	-11	पृष्ठ संख्या- 28	

में,श्रद्धा के साथ पूजन करते हैं,[1] और मन ही मन अपनी श्रद्धा भेंट करते हुये विचार करते हैं कि मेरी दुर्गावती को चन्देलों के वरदान से रत्न मिला है।[2] मार्ग में जाती हुई स्त्रियों का समूह,जो थालों में फूल और दीप सजाये तन्मयता के साथ मंदिरों की ओर जाता है,उसे देखकर उनकी श्रद्धा-भक्ति का सहज ही आभास हो जाता है।[3]

8- दीपक और कमल :

प्रस्तुत उपन्यासमें अनेक स्थलों पर श्रद्धा-भक्ति के दर्शन मिलते हैं। एक विशाल जन समुदाय द्वारा मंदिरों में छटि-थाड़ियाँ सजा कर देवार्चना और श्रद्धा के साथ पूजा न करना,[4] चन्देलों द्वारा महाभारत और रामायण पर श्रद्धा और भक्ति बनाये रखना,[5] सच्चा श्रद्धा और विश्वासके साथ ध्यान केन्द्रित करके सफलता प्राप्तकरने का उल्लेख उपन्यास में किया गया है।[6] लाडू सीताराम ने कि योगीराम देव के द्वारा निर्मित दुर्गा मूर्तिप्रतिष्ठा कार्यवि,श्रद्धा और भक्तिके साथ दर्शन किया जाय,सच्चा विश्वास के साथ आराधना और अर्चना कीजाय,तो मनवांछितफल अवश्य प्राप्त होताहै।[7] महाकार की आस्था देखि" कैसर एक है,अपनी-अपनी श्रद्धा और भक्ति के अनुसार,जो चित्त रत्न को अपने हृदय में छिपा लेताहै,वह भक्त सागर से पारहो जाता है।[8] वेदान्त पन्थियों काविश्वास है कि भक्तिमुक्ति होसर्व श्रेष्ठ साधन है।" साकार प्रभु के चरणोंमें भक्त अपने को सहज ही समर्पित कर सकताहै। पूरी लगन के साथ आत्म समर्पण करने पर इसे देव दर्शन होते हैं और वह सिद्धियाँ प्राप्त कर लेताहै।[9]

9-देवगढ़ की मुस्कान :

प्रस्तुत उपन्यास में दर्शाया गया है कि देवगढ़ में" जो देवीजी के सच्चा जैन मंदिरों में लोग नित्य धार्मिक गीत गाते थेऔर पूजन हेतु वहाँ जाया करते थे। वेर्धवर से भोजन-वस्त्र प्राप्त करने के लिये बड़ी श्रद्धा के साथ प्रार्थना करते थे।[10] एक बार रक्षा विजयपाल सिंह,मंदिर मेंगये और जैसे ही देवता मूर्तिमा के सम्मुख पहुँचे,तो श्रेष्ठ से

महारानी दुर्गावती	-1	पृष्ठ संख्या-119	
	-2	पृष्ठ संख्या-121	
	-3	पृष्ठसंख्या -121	
दीपक और कमल	-4	पृष्ठ संख्या- 28	
	-5	पृष्ठ संख्या-180	
	-6	पृष्ठ संख्या-133	
	-7	पृष्ठ संख्या-125	
	-8	पृष्ठ संख्या-226	वृन्दावनलाल वर्मा
	-9	पृष्ठ संख्या-234	
देवगढ़ की मुस्कान	-10	पृष्ठ संख्या- 83	

उनके भीतर भक्ति-भावना उमड़ पड़ी । वे प्रार्थना करने लगे कि" हे प्रभु, मुझे क्षमा कर दो । अहंकार ने मुझे कई बार पतन की ओर धकेला । आज ही मैं जगाया"[1]। तिल्ली के द्वारा देवी-भजनों को तन्मयता के साथ गाये जाने,[2] तथा मंदिरों की शिलाओं पर भक्ति और श्रद्धा को प्रेरित करने वाली मूर्तियों का निर्माण करने का[3] उल्लेख, उपन्यास में मिलता है ।

10- टूटे काँटे :

प्रस्तुत उपन्यासमें मूरजाई का वृन्दावन जाकर कृष्ण से संबंधित भक्ति भावना पूर्ण गीत गाना, तन्मयता के साथ नृत्य करना और घुंघरों में भ्रमण करना, उसकी श्रद्धा भक्ति को दर्शाते हैं[4] ।

11- रामगढ़ की रानी :

प्रस्तुत उपन्यासमें राजा विक्रमजीत में भक्ति भावना विद्यमान थी । वे नित्य नदीमें स्नान करके पाठ, जप, भजन किया करते थे[5] ।

12- लगन :

प्रस्तुत उपन्यासमें ग्रामीण नारियों द्वारा देवीदेवताओं की प्रतिमा पर दीप जलाना[6] तथा मनौती मानना[7], उनकी श्रद्धा-भक्तिको दर्शाता है ।

13- प्रेम की भेंट :

प्रस्तुत उपन्यास में कमलेश नित्य नियमानुसार मंदिर में ' देव दर्शन हेतु जाता था[8], जो कि उसकी श्रद्धा-भक्ति का परिचायक है ।

14- कुण्डली चक्र :

प्रस्तुत उपन्यास में ललित को हिन्दू दर्शन पर विशेष श्रद्धा थी[9] । पूना की माँ भक्तिमय नारी थी । वह अपनी बेटी पूना से कहती थी कि "पूना, आज से तुम नित्य तुलसी जी की पूजा किया करो, और सन्ध्या के समय पीपल के नीचे दिया बार

देवगढ़ की मुस्कान	-1	पृष्ठ संख्या-262	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2	पृष्ठ संख्या- 2	
	-3	पृष्ठ संख्या- 97	
टूटे काँटे	-4	पृष्ठ संख्या- 65	वृन्दावनलाल वर्मा
रामगढ़ की रानी	-5	पृष्ठ संख्या- 3	वृन्दावनलाल वर्मा
लगन	-6	पृष्ठ संख्या- 32	वृन्दावनलाल वर्मा
	-7	पृष्ठ संख्या- 35	
प्रेम की भेंट	-8	पृष्ठ संख्या- 7	वृन्दावनलाल वर्मा
कुण्डली चक्र	-9	पृष्ठ संख्या- 21	वृन्दावनलाल वर्मा

आधारों[1] यह भावनायें उनकी श्रद्धा-भक्ति को दर्शाती हैं ।

15- प्रत्यागत :

प्रस्तुत उपन्यास में, टीकाराम के द्वारा भजन, पूजन करना,[2] सांस्कृतिक भक्ति और श्रद्धा के साथ सम्मय होकर रामायण गाना,[3] नगर में प्रत्येक शनिवार तथा मंगलवार को सुन्दरकाण्ड का पाठ होना एवं रामायण वादिनी सभा की आराधना किया जाना[4] आदि जन मानस की श्रद्धा-भक्ति को दर्शाते हैं ।

16- आवत :

प्रस्तुत उपन्यास में दर्शाया गया है कि स्त्रियाँ कृष्ण की भक्ति में लीन होकर एक कार्तिक मास का व्रत धारण करती हैं और श्रद्धा के साथ, स्नान करके भगवान का पूजन करती हैं ।[5]

17- सोना :

प्रस्तुत उपन्यास में कुछ स्थलों पर श्रद्धा-भक्ति पर प्रकाश डाला गया है । नव दुर्गा में चरित्रार्थ जन समुदाय द्वारा श्रद्धा के साथ खप्परों का जिक्र निकालना, और भक्ति-भावना के साथ दुर्गा का पूजन करना, अपने गालों में सांग छेदना आदि, लोगों की मनोभावना को प्रदर्शित करते हैं।[6] रमा के द्वारा भक्ति भावना सोना से स्वामी का पूजन करना[7] तथा सोना द्वारा भवानी को प्रसन्न करने में भी श्रद्धाभक्ति को ही दर्शाया गया है ।[8]

18- उदय किरण :

प्रस्तुत उपन्यास में श्रद्धा पूर्वक मंगल व शनिवार के दिन रामायण और गीता का पाठ किया जाना[9] तथा क्षेत्र की नवदुर्गों में देवी जी के भक्ति गीत और भजनों को तन्मयता के साथ गाना, गाँव के निवासियों की श्रद्धा-भक्ति को प्रकट करते हैं ।[10]

कृष्णी चक्र	-1	पृष्ठ संख्या-55	वृन्दावनलाल वर्मा
प्रत्यागत	-2	पृष्ठ संख्या- 3	वृन्दावनलाल वर्मा
	-3	पृष्ठ संख्या- 6	"
	-4	पृष्ठ संख्या- 5	"
आवत	-5	पृष्ठ संख्या- 3	वृन्दावनलाल वर्मा
सोना	-6	पृष्ठ संख्या-116	वृन्दावनलाल वर्मा
	-7	पृष्ठ संख्या-110	"
	-8	पृष्ठ संख्या-141	"
उदयकिरण	-9	पृष्ठ संख्या-94	वृन्दावनलाल वर्मा
	-10	पृष्ठ संख्या-109	"

6- कर्मफल एवं पुनर्जन्म

कर्मफल एवं पुनर्जन्म बुन्देलखण्ड की संस्कृति की प्रमुख विशेषताएँ हैं । यह संसार क्षण भंगुर है, किन्तु आत्मा अजर और अमर है । भारतीय मनीषियों ने चौरासी लाख योनियों की अवधारणा की है । कर्मों के फलानुसार जीव को निर्धारित योनि में प्रवेश करके अपने पूर्व जन्म के या उसी जन्म के कर्मों का फल भोगना पड़ता है। सुकर्मों के कारण जीव मनुष्य योनि को प्राप्त होता है । मानव निष्काम कर्म से अपने जीवन को सफल बनाता है । अतृप्त इच्छाओं और मनोकामनाओं की सम्पूर्ति जीव अगले जन्म पूर्ण करने की अभिलाषा करता है। प्रेम-आत्माओं का मिलन यदि इसलोक में न हो सका तो, परलोक में मिलन की कल्पना से प्रेमीजनों को शान्ति प्राप्त होती है । जीव मोक्ष पर्यन्त जन्म लेता है। वर्मा जी ने अपने विभिन्न उपन्यासों में कर्मफल एवं पुनर्जन्म की अवधारणाओं का उल्लेख किया है :-

1- गढ़कुण्डार :

प्रस्तुत उपन्यास में लोकनाथ के शब्दों में पुनर्जन्म का आभास मिलता है। उसका विचार है कि "मुझे बिना प्राण मे छोड़ न रोको । मेरे लिये आप लोगों मेरा कुछ सहा उससे दूसरे जन्म में प्रतिऋण होना कठिन है।" :1: दिवाकर भी अपनी मनोभावनायें व्यक्त करते हुये तारा से कहता है कि" तारा ! हमारा संयोग अखण्ड और अनन्त है। जन्मान्तर धर्म हमारी देहों के संयोग का निषेध कर सकता है, आत्मा के संयोग का नहीं ।" :2:

2/- विराटा की पद्मिनी :

प्रस्तुत उपन्यास में कुन्दर सिंह, कुमुद से अपनी मनोभावनायें व्यक्त करता है, जिससे पुनर्जन्म का आभास होता है । " डोली से बाहर जाते हुये पीछे एकबार मुड़ कर कुँवर ने फिर कहा- अगले जन्म में फिर मिलेंगे । अवश्य मिलेंगे, यदि आज समाप्त हो गया तो ।" :3: छोटीरानी ने भी कर्मफल की ओर ध्यान आकर्षित किया है। उनका कथन है कि "कल देवीसिंह को उसके सब पापों का फल मिलेगा।" :4:

2/2 ललितादित्य- प्रस्तुत उपन्यास में पूर्वजन्म के तप का उल्लेख किया गया है, जिससे पुनर्जन्म का आभास हो जाता है।

गढ़ कुण्डार	- 1	पृष्ठ संख्या-412	वृन्दावनलाल वर्मा
	- 2	पृष्ठ संख्या-482	"
विराटा की पद्मिनी	- 3	पृष्ठ संख्या-323	वृन्दावनलाल वर्मा
	- 4	पृष्ठ संख्या-333	"
ललिता दित्य	- 5	पृष्ठ संख्या 15	"

5- कलनार :

प्रस्तुत उपन्यास में दलीप के उत्थान से पुनर्जन्म और कर्मफल का आभास मिलता है कि" मैं समझता हूँ कि पूर्वजन्म में अच्छे कर्म करने वाला इसजन्म में वाली राजा होता है या गुलाबी ।:: बस या तो हमारे गौड़ बाबा की मान्यता से फल मिल सकता है या महन्त माधव के आशीर्वाद से।:1: महन्त जी,सुमन्तपुरी से कहते हैं कि दलेश का समाप्तहो जाना और दूसरे का पाना ही मृत्यु है।:2: उत्थान से भी पुनर्जन्म की पुष्टि होती है । महन्त ने अपने व्याख्यानों में भी इसकी पुष्टि करते हुये बताया है कि " परमात्मा की प्रेरणा से लाखों-करोड़ों योनियों में होता हुआ जीवात्मा इन योनियों के गुण-दोष लेकर मनुष्य योनि में आया ।इस योनि में' बुद्धि ने ज्ञान के साथ साक्षात्कार किया । बुद्धि और ज्ञान के मनोबल को प्रबल किया। इन सब योनियों के दोषों ने सुख उत्पन्न किये । सुख की इच्छा पूर्ण न होने पर वे और बढ़े । आत्मा के रूप में' परमात्मा का अंश इस मनोबल कीअधिकता से किसी न किसीजन्म में मनुष्य को मुक्ति देता है । इस मनोबल में निरंतर अभ्यास का नाम ही कर्म है ।:: जन्म लेने के आरम्भ की पहली क्रिया का नाम मरण या मृत्यु है।:3:"

पूर्वजन्म के संस्कारों के संकेत में महन्त जी कैलपुरी से कहते हैं कि दलीप की बीमारी " पूर्वजन्म का संस्कार है । कदाचित अच्छे कर्मों के उदय होने पर यह चमत्कार पूर्ण होजाये ।:: उसका तमोगुण कम हो रहा है । रजोगुण बढ़ रहा है। एक दिन रजोगुण की जगह सतोगुण पड़ेगा ।:4: महन्त जी कर्मफल कीओर संकेत करते हुये दलीप से कहते हैं कि ::" गुरु की अवहेलना का दण्ड अगले जन्म में मिलेगा ।:5:" मानसिंह के विचारों में भी पुनर्जन्म का आभास मिलता है । वह गुरु से कहता है कि"देखो गुरु जो जन्म लेता है,वह मरता भी है ।:6:" कलनार त्रिवेणी की प्रतिमा के सम्मुख हाथ जोड़ कर विचार करती है कि " भगवान,क्या सुमन्त को आपने पूर्व जन्म के पाप का दण्ड दिया है ।:7:"

कलनार	-1	पृष्ठ संख्या- 86	सुन्दरावनलाल वर्मा
	-2	पृष्ठ संख्या-192	"
	-3	पृष्ठ संख्या-219	"
	-4	पृष्ठ संख्या-224	"
	-5	पृष्ठ संख्या-362	"
	-6	पृष्ठ संख्या- 38	"
	-7	पृष्ठ संख्या-251	

4- झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई :

प्रस्तुत उपन्यासमें वर्णायी गयीकथा सुनिश्चित" पुनर्जन्म का आभास मिलता ।" जिन्हा की मृदुता तो पूर्व जन्मोंसे संचित होकर मानों छटीके दिन ही ब्रह्मा ने पूरी तबीयत उसके हिस्से में रख दी थी :1: । सुन्दर और रानी लक्ष्मीबाई के वार्तालाप में पुनर्जन्म का आभास मिलताहै ।" सुन्दर- मैं लड़ाई में मारी गयी,तो फिर कब नाटक देखूँगी? रानी बोली,दूसरे जन्म में :2: ।" रानी के वीरगतिकोप्राप्तहोने के उपरांत राजा गंगादास अपनी मनोभावनायें व्यक्त करते हैं कि" प्रकाश अनन्त है । वह कण कण में व्याप्त कर रहाहै। फिर उदय होगा । फिर कण मुस्तैद हो उठेगा :3: । वनविहारों में भी पुनर्जन्म की कल्पना मुखरित हो उठी है ।

5- मृगनयनी :

प्रस्तुत उपन्यास में विभिन्न स्थलों पर कर्मफल एवं पुनर्जन्म कासंकेत मिलताहै। मजदूरों कामुखिया अपने विचार इन शब्दों में व्यक्त करताहै कि" हमारे भाग्य में यही बदा है । पूर्व जन्म काफल भुगतना पड़ता है । आप सबके भाग्य मेंपढ़ना लिखना, राज्य करनालिखा है,सो बड़ी जाति में जन्म लेते हो :4: ।" इसी प्रकार विजयबहादुर बताया गया है कि " पूर्व जन्म में सबके लिये काम को प्रधान रखा है । पूर्व जन्म के सब दुख,भय और चिन्ताकी गाथायें से कट जातेहैं :5: ।" राजा को पूर्व जन्म का योगी मानना, पूर्व जन्म की पुष्टि करता है :6: । बेजू का कथन है कि मृगनयनी पूर्वजन्म में संगीत का अवतार थी :7: सच्चा कला को आदर है " मुझे सेवा करने का पुण्य मिल जायेगा :8: ।" बेजू कर्मफल को दृष्टि में रखकर,पूर्वजन्म से होने वालीअपारशक्ति से प्रेरित होकर माता सरस्वतीके सम्मुख क्षमा याचना करते हुये कहता है कि" माता सरस्वती ! तुमने अपराध क्षमा कर दिया है । कर दिया न ! कभी भूल से बेसुरा या बेताल हो गया हूँगा,आगे कभी ऐसा न होगा,कान पकड़ता हूँ । ग्वालियर में इतने बेसुरे और बेताले बढ़ गये हैं कि ठिकाना नहीं । हो न हो यह उन्हीं के पापों का फल था । यह विचार कर्मफल की पुष्टि करते हैं :9: ।

झाँसी कीरानी लक्ष्मीबाई	-1	पृष्ठ संख्या-77	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2	पृष्ठ संख्या-334	"
	-3	पृष्ठ संख्या-492	"
मृगनयनी	-4	पृष्ठ संख्या-34	वृन्दावनलाल वर्मा
	-5	पृष्ठ संख्या-35	"
	-6	पृष्ठ संख्या-162	"
	-7	पृष्ठ संख्या-235	"
	-8	पृष्ठ संख्या-236	"
	-9	पृष्ठ संख्या-408	"

6 – महारानी दुर्गावती :-

प्रस्तुत उपन्यास में वनपति शाह के द्वारा दुर्गावती को प्रेषित पत्र में यथार्थ
:1:
है कि " पूर्वजन्म के पुण्य से मेरे भाग्य का उदय हुआ है। उनका विचार है कि
" पूर्व जन्म में मैंने कोई बड़ी तपस्या की थी, जिसका वरदान दुर्गावती है।"
:2:

7- भुवन-विक्रम :

प्रस्तुत उपन्यासमें मैंढा के द्वारा राजा रोमक से कहे गये इन शब्दों में कर्मफल का उल्लेख मिलता है। रोमक का कथन है कि " अकाल पर अकाल पड़ रहे हैं, पानी नहीं बरसता, इतने यत्नों का जो कुछ भी फलनहीं मिल रहाहै, वह तुम्हारे और उस राक्षस छोकरे के पापों का फल है।" हिमानी के कथन से भी पुनर्जन्म का आभास मिलता है। उसकाविचार है कि" मुझ जैसी, इस जन्म में क्या सर्व जन्मों में भी न हो पायेगी।"
:3:
:4:

8- कीचड़ और कमल :

प्रस्तुत उपन्यास में भी पुनर्जन्म और कर्मफल कीअवधारणा को यथार्थ मानाहै। अंगदका विचार है कि " अपने अपने ठौर पर सब अतुलनीय होते हैं, अर्थात पूर्व जन्म के फल और अपने स्वभाव के परिणाम होते हैं।" प्रमिला दूसरे जन्म की कल्पना करते हुये कहती है कि" भगवान की सेवा में सुर-सुन्दरी जीवन भर लगी रहे, तो दूसरे जन्म में वह कहीं की रानी भी हो सकतीहै।" लाडू, अपनी मनोभावनायें व्यक्त करते हुये प्रमिला से कहता है कि" तुम उस जन्म की योगिनी हो और इसजन्म कीमेरी देवी।"
:5:
:6:
:7:

9- देवगढ़ की मुस्कान :

प्रस्तुत उपन्यास में गनपत, भुवनसिंहको पूर्व जन्म के किसीपाप की सजा को थोड़े से शब्दों में यह करुणा-व्यंजना देने लगा –" अब तो भोग करके, आगे की सौ-दो राजा।"
:8:

महारानी दुर्गावती	–1	पृष्ठ संख्या–81	वृन्दावनलाल वर्मा
	–2	पृष्ठ संख्या–149	"
भुवन विक्रम	–3	पृष्ठ संख्या–22	वृन्दावनलाल वर्मा
	–4	पृष्ठ संख्या–296	"
कीचड़ और कमल	–5	पृष्ठ संख्या–41	वृन्दावनलाल वर्मा
	–6	पृष्ठ संख्या–160	"
	–7	पृष्ठ संख्या–267	"
देवगढ़ कीमुस्कान	–8	पृष्ठ संख्या–139	वृन्दावनलाल वर्मा

10- अमरबेल :

प्रस्तुत उपन्यास में विक्रम के दुष्कर्मों की ओर संकेत करते हुये बटोही ने कहा कि " उसने अपने किये का फल पाया है और आगे इससे भी ज्यादा पायेगा :1:। " विक्रम, दूसरे कहता है कि " जो जैसा करेगा, सो पायेगा :2: । इन विचारों में कर्मफल का आभास मिलता है ।

11- संगम :

प्रस्तुत उपन्यास में पड़ोसियों द्वारा भानीराम को भाग्य कीनिन्दा करतेहुये, कर्मफल पर व्याख्यान देना, :3: जामकी द्वारा रो-रोकर अपने कर्मों को कोसना, :4: सभाराम चरण द्वारा लालमन को यह कह कर संकेत करना कि " किसी दिन अवश्य तुम्हारे पाप का घड़ा फूटेगा, :5: आदि विचार कर्मफल को दर्शाते हैं ।

12- प्रत्यागत :

प्रस्तुत उपन्यासमें मंगल अपनी करनी पर पश्चाताप करते हुये कहता है कि मैंने " नवल विचारी का उस दिन उपहास किया, उसी पाप का यह सब फल है :6: । " यह विचार कर्मफल का संकेत देते हैं ।

13- कुण्डली चक्र :

प्रस्तुत उपन्यासमें भृगुजल का विचार है कि" संसार में कर्म का विचित्र खेल हुआ करता है :7: ।" सलिल का मतहै कि" जो जैसा करेगा, वैसा पायेगा, चाहे कोई हो :8:।"

14- सोना :

प्रस्तुत उपन्यास में सोना का अभिप्राय है किकर्मों का फल अवश्य मिलता है। वह सुरेन्द्र सिंह से कहती है कि" मेरी आपकी मिली हुई पूजा, उपासना बिना फल दिये नरहेगी :9: ।"

अमरबेल	-1	पृष्ठ संख्या-200	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2	पृष्ठ संख्या-462	
संगम	-3	पृष्ठ संख्या-34	वृन्दावनलाल वर्मा
	-4	पृष्ठ संख्या-70	"
	-5	पृष्ठ संख्या-178	
प्रत्यागत	-6	पृष्ठ संख्या-50	वृन्दावनलाल वर्मा
कुण्डलीचक्र	-7	पृष्ठ संख्या-144	वृन्दावनलाल वर्मा
	-8	पृष्ठ संख्या-173	"
सोना	-9	पृष्ठ संख्या-140	वृन्दावनलाल वर्मा

7- पारस्परिक अभेदभावना :

बुन्देलखण्ड के जन जीवन में पारस्परिक अभेद भावना का बाहुल्य रहा है । ऊपरी और दोधकेएक घाट पर पानी पीने वाली बकरियाँ,यहाँ परिलक्षित होती है। ऊँच-नीच,छोटी-भिन्न,शिक्षित-अशिक्षित का अंतर नगण्यप्रायहै । यहाँ की संस्कृति में विभिन्न जातियों,धर्मों और सम्प्रदायों को आत्मसात करने की क्षमता विद्यमान है । इसी भावना ने यहाँ के निवासियों में सद्भावना,प्रेम और त्याग को जन्म दिया है । यहाँ के निवासियों ने पाशविक प्रवृत्ति को त्याग कर,उच्च मानवीय गुणों को ग्रहण कियाहै और सच्चे अर्थों में वे सुसंस्कृत बने । उनमें न केवल एकाकी विकास की भावनाहै,अपितु वे सामूहिक उत्थानभी चाहते हैं ।बिना पारस्परिक प्रेम और सद्भावनाओं के,मानव अस्तित्व विहीन है । डा०भगवत शरण उपाध्याय ने स्पष्ट कियाहै कि" :: व्यक्ति सत्ता में शरीर मन को स्पृष्ट करके एक ओर व्यक्तिगत विकास दूसरीओर उसका समूह में शिष्ट आचरण,समाज के प्रतिष्ठित व्यवहार,उसे संस्कृत बनाता है ।" :1: यहाँ के निवासियों का आचरण डा० उपाध्याय जी की विचार श्रृंखलाओं की पुष्टि करता है ।

वर्मा जी ने अपने विभिन्न उपन्यासों के माध्यम से बुन्देलखण्ड के जन-जीवन में व्याप्त पारस्परिक अभेद भावना को दर्शाया है,जोकि अवलोकनीय है :-

1- गढ़ कुण्डार :

प्रस्तुतउपन्यासमें यत्र-तत्र पारस्परिक अभेद भावना परिलक्षित होती है । सोहन पाल बुन्देला अपने विचार व्यक्तकरते हुये कहते हैं कि" ये लोग बुन्देला हैं,और मेरे साथ एक पंक्ति में बैठकर खाने वाले भाई-बन्धु हैं । :2: होली जैसे त्योहार में पारस्परिक अभेद भावना चित्रपटल में दर्शायी गयी है। "होली एक ऐसा त्योहार था,जिसमें मन की उच्छृंखलता अपने पूरे विकसित रूप में कलोल किया करतीथी । भेदभाव और ऊँच-नीच को एकदिन के लिये विदा माँग जाते थे।:: जनता की प्रवृत्ति मूर्तिमान होकर आ खड़ी होतीथी । :3: उपन्यास में जातिवाद का खण्डन किया गयाहै । सहसेन्द्र,अर्जुन सैनिक के सम्बन्ध में नाग से कहताहै कि" और सैनिककिसी भी जाति काहो,उसे कुत्ते कीमौत नहीं मरने दिया जायेगा । :4:

इन सभी विचारों में पारस्परिक अभेद भावनायें वर्णितहैं ।

सांस्कृतिक भारत	-1	पृष्ठ संख्या- 8	डा०भगवत शरण उपाध्याय
गढ़ कुण्डार	-2	पृष्ठ संख्या-46	डा०वृन्दावनलाल वर्मा
	-3	पृष्ठ संख्या-277	"
	-4	पृष्ठ संख्या-49	"

2- विराटा की पद्मिनी :

प्रस्तुत उपन्यास में पारम्परिक क्रोध भावना दर्शाते हुये लोचनसिंह, राजानाथसिंह से कहते हैं कि "महाराज यह बुन्देलों की बारात है। दूल्हा पालकीसे नहीं उतरेगा। निर्भय हो, चाहे सम्बन्ध, परन्तु बुन्देले आपस में सब बराबर हैं :1: । यही विचार देवीसिंह का है । वह कहता है कि" सब बुन्देले भाई-बन्धु ही हैं :2: ।" एक भोला-भाला बुन्देलखण्डी कृषक आतिथ्य वश करके कुंवर सिंह को अपने द्वार पर निवास करने का आग्रह करता है "लो काय ! ऐसी का जल्दी पड़ी दाऊ ! जो कछु रूटी- दूबरी हमारी गाठ में है, सो मजर है । हमसें ऐसी का बिगरी कि अलग जाओ हो ऐसे है :3: ।" यह सभी विचार, पारम्परिक क्रोधभावना को दर्शाते हैं ।

3- मुक्ताबिब्बू +

प्रस्तुत उपन्यासमें मुक्ताबिब्बू के अन्तःकरण में पारम्परिक क्रोध भावना का बाहुल्य था । उन्होंने घायल होने पर एक हरिजन जाति के व्यक्ति पूरन के हाथ को बाँधने के लिये अपना बहुमूल्य मफलर फाड़ दिया था :4: । वे छुआछूत के दम्भ को नहीं मानते थे, :5: और उनका प्रण था जिस तक अपने संहिन्गयों में से एक भी भूखा रहेगा तक तक स्वयं अन्न ग्रहण न करेंगे :6: ।

4- झाँसी की रानी :

प्रस्तुतउपन्यासमें रानी लक्ष्मीबाई के माध्यम से पारम्परिक क्रोध भावनाओं का विरोध भी दर्शाया गया है । वे दासियों को अपने ही समान समझती थीं। दासियों से उनका कहना था कि तुम सब मेरी सहेलियाँ बन कर रहोगी । दासी मेरीकोई न होगी :7: । उनमें छुआ-छूत की भावना न थी । वे कावीजार्ड से कहती हैं कि "जिन्हें तुम छोटा आदमीकहती हो, आधार तो हमारे वे ही हैं :8: । रानी अन्य स्त्रियों को अपने से अभिन्न समझती थी । वे स्त्रियों से कहती हैं कि" तुम में से कोई बहिनों के बराबर हो, कोई काकी हो, कोई माई हो, कोई बूढ़ी :9: ।" रानी सारस्वा और जवाहरसिंह से अपने विचार व्यक्तकरती हैं कि" आप लोग यत्न करें कि नाहेवारियों में अपना मेल बढ़ायें

विराटा की पद्मिनी	-1	पृष्ठ संख्या-28	डा०वृन्दावनलाल वर्मा
	-2	पृष्ठ संख्या-55	"
	-3	पृष्ठ संख्या-138	"
मुक्ताबिब्बू	-4	पृष्ठ संख्या- 6	डा०वृन्दावनलाल वर्मा
	-5	पृष्ठ संख्या- 6	
	-6	पृष्ठ संख्या- 8	"
झाँसी की रानी	-7	पृष्ठ संख्या- 64	
	-8	पृष्ठ संख्या- 75	
	-9	पृष्ठ संख्या-101	

और उनको अपनायें :: छोटी से छोटी जातिके पुरुष या स्त्री को, गरीब से गरीब, मजदूर या किसानको कदापि छोटा न समझें ।:1:

5- मृगनयनी :

प्रस्तुत उपन्यास में, लाखी और उसकी सहेली मृगनयनी के माध्यम से यह भावना दर्शायी गई है। लाखी, मृगनयनी से कहती है कि" यदि कालीमाई को अपना सिर भेंट करके, तुमको ग्वालियर की रानी बनवा सकूँ, तो कभी न झिझकूँगी ।"[2] मृगनयनी, रानी बनने के उपरांत स्वर्णाभूषण धारण करती है और लाखी मात्र कुछ चाँदी के आभूषण पहिनती है, जिससे दुखी होकर, मृगनयनी उससे कहती है कि,"मैं चाहे नंगे पैर रहूँ, पर मैं सोने के गहने नहीं पहनूँगी । तुम चाँदी के पहिनो और मैं सोने के बस नहीं हो सकता ।"[3] राजा मान सिंह धनियों, गरीबों, किसानों और मजदूरों के साथ समता का व्यवहार करते थे, जिससे प्रभावित होकर वे अपने विचार व्यक्त करते हुये कहते हैं कि" सुना था कि महाराज ब्राह्मणों, पण्डितों और सेठों के हैं, आज जाना कि मजदूरों, किसानों के भी हैं ।"[4]

6- दुर्गावती :

प्रस्तुत उपन्यास में, पारम्परिक वैमनस्य भावना दर्शाते हुये रानमेरी, कालिंजर की नारियों से कहती है कि " हम-तुम सब बहिनें हैं कोई किसीको बुरा नहीं मान सकती ।"[5] इसी तरह कीर्तिसिंह से दलपति शाहनिवेदन करते हैं कि" आप मुझसे बड़े हैं, मैं आपके पुत्र के समान हूँ । : मेरे साथ के सूबे चमे ग्रहण करेंगे, तो हम कृतार्थ होंगे ।"[6] दुर्गावती अपनी परिचारिका को समता की दृष्टि से देखती है । उससे वे कोई भी रहस्य नहीं छिपाती थी । उनका कथन था कि" मेरी चिरइया, मैं तुम्हें सब बताऊँगी। :: राजरानी कभी भी नहीं छिपाऊँगी ।"[7]

7- मोतीराम :

प्रस्तुतउपन्यास में सैयद मुसलमानों ने पारम्परिक वैमनस्य भावनाओं का आदर्श रूप प्रस्तुत किया है । वे " अपने को हिन्दुस्तानी समझते थे-ईद के मौके पर पूरी मुसलमानियत बरतते थे और होली के अवसर पर कमाल का हिन्दूपन ।रंग पंचमी तक,

---

झाँसी की रानी	-1	पृष्ठ संख्या-191	वृन्दावनलाल वर्मा
मृगनयनी	-2	पृष्ठ संख्या-171	"
	-3	पृष्ठ संख्या-292	"
	-4	पृष्ठ संख्या-348	"
दुर्गावती	-5	पृष्ठ संख्या- 6	वृन्दावनलाल वर्मा
	-6	पृष्ठ संख्या- 51	"
	-7	पृष्ठ संख्या- 20	

पाँच दिन, धनवी रंग रेली होली।गोकिसीको यह याद नहीं रहता था कि वह भाई मुसलमान हैं ।"[1] रहमान और देवकी के वार्तालाप में भी पारस्परिक क्रोध भावना परिलक्षित होती है । रहमान, देवकी से कहता है कि "दीदी! हममें' जब कि वास्तव का ! आप मेरी बड़ी बहिन हैं । :::: हम लोग आपस में एकदूसरे की मदद न करेंगे तो क्या बाहर वाले मदद करने आयेंगे ।"[2]

8- देवगढ़ की मुस्कान :

प्रस्तुत उपन्यास में जैन मुनि रत्नगिरि के उपदेशों में पारस्परिक क्रोध भावना दर्शायी गयी है । उनका विचार है कि " अपने को बड़ा मानना और दूसरे को छोटा, यही तो अपमान का कारण बनता है ।"[3] वे आगे कहते हैं कि" सब मानव बराबरी के हैं। यह छुआछूत की भावना हमें' न जाने किस गहरे गड्ढे में पटकेगी ।"[4]

9- रामगढ़ की रानी :

प्रस्तुत उपन्यास में होली के अवसर पर पारस्परिक क्रोध भावना दर्शाते हुये रानी अवन्ती बाई जनता को सम्बोधितकरते हुये कहतीहैं कि" होली को अपना पवित्र त्योहार कहा गया है । अलग हुये मनों को मिलाने, मालभार के लगे भावों को दूरने, छोटे बड़े के भेदभाव को मिटाने, विषमता को दूर करके समता के प्रसार का यह त्योहार है।[5] शंकरराव ने एकक्रान्तिकारी कविता लिखी थी, जिसमें देशप्रेम, राष्ट्रीयता और पारस्परिक क्रोधभावना दर्शायीथी, जिसका कुछ अंश अवलोकनीय है -

" हिन्दू-मुसलिमां-सिक्ख, हमारा भाई भाई प्यारा
ये है आजादीका झण्डा, इसे सलाम हमारा ।"[6]

10-माधव जीसिन्धिया :

प्रस्तुत उपन्यासमें बंगालीमध्यवर्गी में पारस्परिकक्रोध भावना विद्यमान थी। उसकाविचारहै कि" छोटा और नीचा समझा जाने वाला, मुझे बहुत अखरता है। इस भेद भाव को दूर करने की बहुत बड़ी जरूरत है ।[7] वह अध्यापक से कहताहै कि" क्या छुआ,

लौंडीआग	-1 पृष्ठ संख्या-12	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2 पृष्ठ संख्या-78	"
देवगढ़ की मुस्कान	-3 पृष्ठ संख्या-54	वृन्दावनलाल वर्मा
	-4 पृष्ठ संख्या-57	"
रामगढ़ की रानी	-5 पृष्ठ संख्या-30	वृन्दावनलाल वर्मा
	-6 पृष्ठ संख्या-99	"
माधवजी सिन्धिया	-7 पृष्ठ संख्या-238	"

सिर्फ अरबी और फारसी या पश्चिमी जबानों को ही समझता है। क्या अंग्रेजी या हिन्दुस्तानी नहीं जानता ! क्या राम,खुदा नहीं है ! और क्या खुदा, राम नहीं है !" :1:

धर्मविचारों में भेद भावना परिलक्षित होती है ।

11-अजमेरा कोर्ट :

प्रस्तुत उपन्यासमें,पंचम अंजल द्वारा कहे गये शब्दों का ही उसे स्मरण दिला कर उसका मार्ग दर्शन करता है । वह कहता है कि आप कहाकरते थे कि"हम लोग सब भाई-भाई हैं,हमारे और तुम्हारे जीवमें कोई अंतर नहीं।" :2: यह सुनकर उसमें भेद-भावना पुनःसंचरण होने लगताहै ।

12- प्रत्यागत :

प्रस्तुत उपन्यास में मंगल का विचार है कि" मैं हिन्दू-मुसलमान सबको एकसा समझता हूं । सब धर्म एकसे हैं । सबका एकही ईश्वर है ।" :3: यह विचार उसकी पारस्परिक भेद भावनाओं के कुशोसक हैं ।

13- कुण्डली चक्र :

प्रस्तुतउपन्यास मे ' रतन का विचारहै कि" हमें छोटे-छोटे द्वार के भेद से कोई मतलब नहीं ।" :4: यह भावना ऊँच-नीच के अंतर को समाप्त करती है ।

14- कभी न कभी :

प्रस्तुत उपन्यास में दो अलग्गी मजदूरों मे ' इतना प्रेम बढ़ जाता है कि इन दोनों में कोई अंतर नहीं रहता । देखो,सलमन से कहता है कि" मैं जानता हूं किंतुम मेरे लिये अपना सिर तक कटवा सकते हो । इस संसार मे सबसे अधिकप्यारे तुम्हीं हो ।" :5:

8- संस्कार :

बुन्देलखण्ड की संस्कृति मे ' संस्कारों का विशिष्ट स्थान है । संस्कार ही मानव का पूर्ण समाजीकरण करता है एवं इसे दैहिक और मानसिक रूप से परिष्कृत करता है। संस्कारों को धार्मिक अनुष्ठान का रूप प्रदान कियागयाहै । मानव जाति मे संस्कारों

माधवजी सिन्धिया	-1	पृष्ठ संख्या-	वृन्दावनलाल वर्मा
अजमेरा कोर्ट	-2	पृष्ठ संख्या-47	"
प्रत्यागत	-3	पृष्ठ संख्या-30	"
कुण्डली चक्र	-4	पृष्ठ संख्या-42	"
कभी न कभी	-5	पृष्ठ संख्या-36	"

के माध्यम से सर्वांगीण विकास किया है । " मनुष्य अपनी आदिम अवस्था में संस्कारहीन रहता है ,धीरे-धीरे वह अपने ऊपर प्रतिबन्ध लगा कर,अनुचित को दबाकर,उचित को लेकर शीसुन्दर बना । व्यक्तिसत्ता में शरीर मन को शुद्ध करके एकओर व्यक्तिगत विकास ,दूसरी ओर उसका समूह मैत्रिपूर्ण आचरण,समाज के प्रतिउचितव्यवहार,उसे सुसंस्कृत बनाता है ।:1:

वर्मा जी ने अपने उपन्यासोंके माध्यम से बुन्देलखण्ड के जन-जीवन में प्रचलित संस्कारों का उल्लेख किया है ।

1- विराटा की पद्मिनी :

प्रस्तुतउपन्यास में राजा नायक सिंहके अंतिम संस्कार का उल्लेख कियागया है । " पंचनद/जिसे पचनदा भी कहते हैं बुन्देलखण्ड के अंतर्गत कालपी के समीप स्थित एक विशेष स्थानहै,जहाँ यमुना,चंबल,सिन्धु,पहुज और कुमारी,ये पाँच नदियाँ मिलती हैं:2: वहीं राजा नायक सिंह का अंतिम संस्कार सम्पन्न हुआ था । मृत्योपरांत "राजा को भूमि पर बैठा दे दी गयी । मुँह में गंगाजल डाल दिया गया । तोपों और जय-जयकार नादमें राजा नायक सिंह की संस्कार यात्रा समाप्तहो गयी ।:3:"

2- कपनार :

प्रस्तुत उपन्यास में कलावती के पाणिग्रहण संस्कार को दर्शाया गयाहै,जिसमें कलावती की कटार-भाँवर पड़ी थी । राजा दलीप बीमारीके कारण अपने विवाह मेंसम्मिलित नहीं हो सके थे,इसलिये भाँवर उनकी कटार से डाली गयी थी। विवाह में वर-वधू के नेग,मंत्रपठन आदि का भी विशेष उल्लेख कियागया है ।:4: उपन्यास मेंराम सिंह के पुत्र के जन्म संस्कार कोबड़ीधूम धाम के साथ मनाये जाने का उल्लेख मिलताहै ।एवं धूल पर अंत्येष्टि क्रिया का भी उल्लेख कियागया है ।:5:"

2/2 अबकयाहो :- प्रस्तुत उपन्यास में शिवाजी के विचारों में समन्वयभावना दर्शायी गई है।वे कहते हैं कि "दीन दुर्बलों को ;चाहे वह किसी भी ~~जाति~~ धर्मयाजाति का हो उसे कोई न सता सका"।:6:

3-झाँसीकी रानी :

इसउपन्यास में राजा गंगाधर राव का बड़ी धूम धाम के साथ सम्पन्न होने वाला विवाह संस्कार दर्शाया गया है । इससंस्कार में भाँवरों का विशेष रूप से उल्लेखकियागयाहै ।:7: उपन्यास में "अंतिम संस्कार के अंतर्गत,रघुनाथ रावकी अन्त्येष्टि

सांस्कृतिक भारत	-1	पृष्ठ संख्या- 8	डा०भगवत शरण उपा०
विराटा की पद्मिनी	-2	पृष्ठ संख्या- 68	वृन्दावनलाल वर्मा
	-3	पृष्ठ संख्या- 78	"
कपनार	-4	पृष्ठ संख्या- 9	"
अबकयाहो?	-5	पृष्ठ संख्या- 49	"
	-6	पृष्ठ संख्या- 99	"
झाँसी की रानी	-7	पृष्ठ संख्या- 69	"

क्रियाओं का भी उल्लेख किया गया है।[1] ब्राह्मणों के बालकों में जनेऊ संस्कार की अनिवार्यता पर बल दिया गया है।[2] अंत में, रानी लक्ष्मीबाई के अंतिम संस्कार का उल्लेख किया गया है, जिसमें उनके पार्थिव शरीर के अग्नि दाह संस्कार का उल्लेख मिलता है।[3]

4- मृगनयनी :

प्रस्तुत उपन्यास में लाखी बीमा के शव दाह संस्कार का उल्लेख मिलता है। जिसमें लोग श्मशान से लौट कर नदी में स्नान करते हैं तथा मृतक के लिये शोक-संतप्त व्यक्त करते हैं।[4] राजा मान सिंह और मृगनयनी का विवाह संस्कार भी उपन्यास में दर्शाया गया है।[5] पुरोहित द्वारा विवाह शुभ मुहूर्त में सम्पन्न कराया गया। कन्या पक्ष की ओर से कन्या दोजूलेज केमेगमे गाय दान दी गयी। सगाई और भूमिपूजन की गयी। वरपक्ष की ओर से बहुमूल्य वस्त्रालंकारों का उपहार चढ़ाया गया तथा लड़की की विदाई हुई।[6] अटल और लाखी के भूमि-पूजन सम्बन्धी होने वाले पारिवारिक संस्कार पर भी प्रकाश डाला गया है।[7] अंत में लाखी के पार्थिव शरीर को चिता पर रख कर अग्नि प्रज्वलित करके अंतिम संस्कार का कार्य किया गया है।

5- महारानी दुर्गावती :

प्रस्तुत उपन्यास में दलपतिशाह के पुत्र के जन्म तथा नामकरण संस्कार का उल्लेख मिलता है।[8] उपन्यास में गोंड़ जाति के, विवाह संस्कार और विवाह पद्धति को दर्शाया गया है। इस संस्कार के अंतर्गत वर-वधू पर भुने हुये धान, चावल और फूल फेंकना, पुरोहित द्वारा वर के माथे पर हल्दी और चन्दन का तिलक लगाना, वधू पर चुली हल्दी डालना, भांवर, नेग दस्तूर, भोज आदि कार्यायोजन आदि उल्लेखनीय है।[9] डोलीया अंक या पुनर्विवाह का भी उल्लेख मिलता है।[10] दलपतिशाह के अन्तिम संस्कार को भी दर्शाया गया है। दाह पूर्व उनके शव पर माल्यार्पण किया गया, सहगमन शुद्धि व तेरहवीं का भी उल्लेख किया गया है।[11] दुर्गावती के शव दाह संस्कार को भी दर्शाया गया है।[12]

झाँसी की रानी	- 1 पृष्ठ संख्या- 7	वृन्दावनलाल वर्मा
	- 2 पृष्ठ संख्या-218	"
	- 3 पृष्ठ संख्या-394	"
मृगनयनी	-4 पृष्ठ संख्या-	"
	- 5 पृष्ठ संख्या-192	"
	- 6 पृष्ठ संख्या-392	"
	- 7 पृष्ठ संख्या-430	"
महारानी दुर्गावती	-88 पृष्ठ संख्या-207	"
	- 9 पृष्ठ संख्या-163	"
	-10 पृष्ठ संख्या-227	"
	-11 पृष्ठ संख्या-238	"
	-12 पृष्ठ संख्या-333	"

5-भुवन विक्रम :

प्रस्तुत उपन्यास में आश्रम प्रवेश संस्कार का उल्लेख मिलता है । सौम्य ने कपिल की पीठ पर हाथ फेरते हुये कहा," आश्रम-प्रवेश-संस्कार के उपलक्ष में यज्ञ करूँगा ।"[1] अन्यसंस्कारों में दीक्षान्त और समावर्तन संस्कारों के समय भी सौम्य श्रेष्ठि भुवन से कहते हैं कि," उठो बहस तुम्हारी परीक्षा समाप्त हुई । आज से तुम स्नातक हो गये । दीक्षान्तऔर समावर्तन संस्कार आश्रम में होगा ।"[2] सोम-दमन के मन्त्रों के मध्य होने वाले गौरी और भुवन के विवाह संस्कार का भी उल्लेख उपन्यास में मिलताहै ।[3]

6- अहिल्याबाई:

प्रस्तुत उपन्यास में दाह संस्कार का उल्लेख मिलता है। इस संस्कार के सम्पन्न होने वाले दाह-कर्मों को भी दर्शाया गया है ।[4]

7- कीचड़ और कमल :

प्रस्तुत उपन्यास में शव दाह संस्कार का उल्लेख मिलता है ।[5] इससंस्कार के अंतर्गत "शोक्य रीति" और " भस्म उठावनी" का भी उल्लेख किया गया है ।[6]

8- देवगढ़ की मुस्कान :

प्रस्तुत उपन्यास में, प्रियम्बदा का शव दाह संस्कार ,[7] कुबेर दत्ता और धनपाल का, भारतीय रीति से सम्पन्न होने वाला विवाह संस्कार[8] तथा नामकरण और भुजबल सिंहका जैनरीति के अनुसार होने वाले पाणिग्रहण संस्कार का उल्लेख मिलताहै[9]

9- माधवी की सिसकियाँ :

प्रस्तुत उपन्यास में शव दाह संस्कार का उल्लेख मिलता है ।[10]

10/1 रामगढ़ की रानी :

प्रस्तुत उपन्यास में रानी जावली बाई के शवदाह संस्कार का उल्लेख मिलताहै[11]

10/2 अबकयाहै:- प्रस्तुत उपन्यास में दाहक्रिया,[12] यज्ञोपवीत,[13] तथा विवाह संस्कार का उल्लेख मिलताहै[14]

भुवन विक्रम	-1	पृष्ठ संख्या- 48	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2	पृष्ठ संख्या-185	"
	-3	पृष्ठ संख्या-315	"
अहिल्याबाई	-4	पृष्ठ संख्या- 1	"
कीचड़ और कमल	-5	पृष्ठ संख्या- 7	"
	-6	पृष्ठ संख्या- 8	"
देवगढ़ की मुस्कान	-7	पृष्ठ संख्या- 72	"
	-8	पृष्ठ संख्या-156	"
	-9	पृष्ठ संख्या-264	"
माधवजी सिसकियाँ	-10	पृष्ठ संख्या-256	"
रामगढ़ की रानी	-11	पृष्ठ संख्या-146	
अबकयाहै	-12	पृष्ठ संख्या -16	

13- पृष्ठ सं-98
14- पृष्ठ सं-99
- वही

11-संगम :

प्रस्तुत उपन्यास में शुभ मुहूर्त में भांवरों के द्वारा सम्पन्न होने वाले विवाह संस्कार[1] तथा सुखलाल के अन्तिम संस्कार का उल्लेख मिलता है[2]।

12- सोना :

प्रस्तुत उपन्यास में सगाई, फलदान और लगुन का उल्लेख करते हुये रमा के विवाह संस्कार[3] तथा टीका, चढ़ावा और भांवर आदि "वैवाहिक रीतियों को दर्शाते हुये सोना के विवाह संस्कार का उल्लेख किया गया है[4]।

13- आहत :

प्रस्तुत उपन्यास में पाणि ग्रहण संस्कार[5] तथा अन्त्येष्टि, कर्मकांड को दर्शाते हुये अन्तिम संस्कार का उल्लेख किया गया है[6]।

14- कभी न कभी :

प्रस्तुत उपन्यास में बिना धूम-धाम के सम्पन्न होने वाले लीला और लखन के विवाह संस्कार का उल्लेख मिलता है[7]।

15- कुण्डली चक्र :

16- अमरज्योति :-

प्रस्तुत उपन्यासमें रतन और भुजबल का विवाहसंस्कार[8] तथा धूना की माँ का अन्तिम अन्तिम संस्कार, दर्शाया गया है[9]।

16- अमरज्योति- प्रस्तुत उपन्यास में पाणिग्रहण संस्कार का उल्लेख किया गया है। पृष्ठ 10

9-समन्वय की भावना :

संस्कृति मानव समाज में एकता की भावना उत्पन्न करती है और निश्चित रूप से काम करने की शक्ति देती है[10]।

बुन्देलखण्ड, सांस्कृतिक एकता एवं समन्वय की भावनाओं का गढ़ रहा है। यहाँ के जन जीवन की समन्वयात्मक भावना ने ही बुन्देलखण्ड की संस्कृति को अस्तित्व प्रदान

संगम	-1	पृष्ठ संख्या- 24	बुन्दाबनलाल वर्मा
	-2	पृष्ठ संख्या-124	"
सोना	-3	पृष्ठ संख्या- 23	"
	-4	पृष्ठ संख्या- 51	"
आहत	-5	पृष्ठ संख्या-191	"
	-6	पृष्ठ संख्या-165	"
कभी न कभी	-7	पृष्ठ संख्या-129	"
कुण्डली चक्र	-8	पृष्ठ संख्या- 61	"
अमरज्योति	-9	पृष्ठ संख्या-119	"
	-10	पृष्ठसंख्या- 256	

किया है । धनी हो या निर्धन, ग्रामीण हो या शहरी, मजदूर हो या कृषक, इन सभी वर्गों में विश्वबन्धुत्व की भावना परिलक्षित होती रही है । लोगों की व्यवहार शैली ने यहाँ के निवासियों का जीवन सुसंगठित किया है ।

इस भूभाग पर विभिन्न धर्मों और जातियों के लोग सद्भावना और प्रेम से रहते आये हैं। युद्ध की विभीषिकाओं में भी स्नेहसौहार्द्रबन्धुत्व की भावना, शेष नहीं हो सकी है । लोगों में त्याग, सेवा और समताभाव संदेश बना रहा है ।

वर्मा जी ने अपने विभिन्न उपन्यासों के माध्यम से बुन्देलखण्ड में व्याप्त समन्वय की भावना को उल्लेख किया है, जो निम्नवत है :-

1- विराटा की पद्मिनी :

प्रस्तुत उपन्यास में कुमुद ने उत्कृष्ट समन्वय की भावना उजागर की है। वह सामान्य, असहाय गुजरी गोमती को संरक्षण प्रदान करती है। उसके सुख-दुख में सहभागी है और उसे भिन्न न मानकर अपनी निज बहिन के समान समझती है । वह गोमती से कहती है कि मुन्ने," आप-आप मत कहो, तुम कहो ।:1: मैं तुम्हारी बहिन हूँ । यह सम्बन्ध मानने का यत्न करो । इसी प्रकार राजा देवीसिंह भी बुन्देलों को एक समान समझते थे और उनमें बन्धुत्व की भावना लाने का प्रयत्न किया करते थे ।:2:

2- मुक्ताबिन्दु :

प्रस्तुत उपन्यास में राजा मुक्ताबिन्दु द्वारा महतर जाति के व्यक्ति घूरन को अपने गले लगाकर मोने की मुद्रा भेंट करना तथा उसे अपने समकक्ष समझना, उनकी समन्वय भावना उजागर करता है ।:3: उनका विचार था कि," जो कुछ हो, सबके लिये एक सा होना चाहिये ।:4: उन्होंने अपने साथियों का पेट भरने के लिये निज के आभूषणों को साहूकार के पास गिरवी रख दिया था, ताकि कोई भूखा न रह सके।:5: इन सभी विचारों में उनकी समन्वय की भावना परिलक्षित होती है ।

3- झाँसी की रानी :

प्रस्तुतउपन्यास में विभिन्न स्थलों पर समन्वय की भावना उजागरी गयी है ।

विराटा की पद्मिनी	-1	पृष्ठ संख्या- 82	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2	पृष्ठ संख्या- 55	"
मुक्ताबिन्दु	-3	पृष्ठ संख्या- 17	"
	-4	पृष्ठ संख्या- 12	"
	-5	पृष्ठ संख्या- 40	

3- झाँसी की रानी :

प्रस्तुत उपन्यास में विभिन्न स्थलों पर समन्वय की भावना दर्शायी गयी है। रानी अपने विचार व्यक्त करते हुये, अन्य झाँसी की स्त्रियों से कहती हैं कि, "तुम में से कोई मेरी बहिन के बराबर हो, कोई माता के समान। अपने बाप की, अपने ससुर की, अपने पति की, अपने भाई की लाज तुम्हारे हाथ है। ऐसे काम करना, जिससे अपने पुरखों को कीर्ति मिले।"[1] रानी अपनी मनोभावनायें व्यक्त करती हैं कि, "हमारे देश में ऊँच-नीच का भेद भाव न होता, तो कितना अच्छा होता।"[2] झाँसी की रानी स्वाभिमान के "किले में सभी जातियों के लोग आ-जा सकते थे। उन्हें समता की दृष्टि से देखा जाता था।"[3] झाँसी की सभी स्त्रियों और पुरुषों पर विश्वास किया जाता था।[4] गंगाधर राव की भावना थी कि, "मुझे झाँसी के लोग बहुत प्यारे हैं। मैं चाहता हूँ, मेरी जनता सुखी रहे।"[5] देशवासी बाजी राव में भी समन्वय की भावना विद्यमान थी। वे अपने नौकर मोरोपन्त के साथ कनिष्ठ और मित्रों जैसा व्यवहार करते थे। कोई नहीं कह सकता था, कि वे स्वामी मालिक हैं और मोरोपन्त नौकर।[6]

4- मृगनयनी :

प्रस्तुत उपन्यास में मिन्नी की विचारधाराओं में समन्वय की उत्कृष्ट भावना विद्यमान थी। वह लाखी से कहती थी कि, "हम तुम दोनों भिन्न हैं। दोनों एक से। तुम्हारी सभ्यता तुम्हारी माँ है, और मेरी, मेरा भाई। तुम मेरी और उनकी होकर रहोगी।"[7] राजा मानसिंह अपनी प्रजा में सुख शान्ति देखना चाहते थे। उनकी दृष्टि में सभी लोग एक समान थे। कदाचित उन्होंने कुछ गरीबों को दे डाला, तो उनकी आत्मा क्रोध और ग्लानि से भर गयी, वे उनसे कहने लगते हैं कि, "धिक्कार है, मुझको! मैं तो भरे पेट सो जाऊँ और तुम भूखों-रोगों मरो। मैं महलों में रहूँ और तुम बस्तीपट्टी में भूखों-ठण्डों मरो।"[8] राजा मानसिंह का विचार था कि, "मनुष्य

झाँसी की रानी	-1	पृष्ठ संख्या-349	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2	पृष्ठ संख्या-325	"
	-3	पृष्ठ संख्या- 95	"
	-4	पृष्ठ संख्या-139	"
	-5	पृष्ठ संख्या-123	"
	-6	पृष्ठ संख्या- 38	"
	-7	पृष्ठ संख्या- 51	"
मृगनयनी	-8	पृष्ठ संख्या- 47	

काम करके अन्तोक्ष और वर्ग तो प्राप्त कर सकता है, परन्तु काम से आनन्द तभी प्राप्त हो सकता है, जब कि उसको दूसरों के सहयोग से किया जाये ।"[3] यह सभी विचार, समन्वयात्मक भावना के द्योतक हैं ।

5- महारानी दुर्गावती :

प्रस्तुत उपन्यास में राजा कीर्तिसिंह का विचार है, कि यदि कौशल, परिवार और कलुदि एक हो जायें, तो किसी भी समस्या को सरल ही हल किया जा सकता है ।[2] दुर्गावती चाहती है कि उसके पिता, राजा दलपति शाह की तरह भी भेदों में, " हम सब मिलजुल कर चलें और अपने देश की रक्षा दृढ़ता से साथ करें ।"[3] एक स्थान पर कीर्तिसिंह, दलपति से आदरा व्यक्त करते हैं कि, यदि आपका अकाट्य सहयोग मिल जाये, तो हमदुश्मनों, मुगलों और पठानों : का सफलता के साथ सामना कर सकते हैं ।[4] महारानी दुर्गावती का विचार है कि बिना समन्वय के व्यक्ति अकेलेपन को प्राप्त होता है। वे कहती हैं कि, " हमारी आपसी कलह में ' सम्मिलित कार्यों की उपेक्षा में बुरे दिन बिताये हैं, अन्यथा विदेशी अपने पैर यहाँ न जमा पाते ।[5]

6- भुवन विक्रम :

प्रस्तुत उपन्यास में सौम्य अहिंसा के माध्यम से समन्वय की भावना को प्रसारित किया गया है । उनके आश्रम में ' सभी शिष्य बराबर स्थान रखते थे, चाहे वह युवराज हो या निर्धन पुत्र । सौम्य का विचार था कि, " ऊपर उठना और आगे बढ़ना प्रत्येक जीव का लक्ष्य है ।"[6] वे शस्त्रविद्या को जीवन का एक अंग मानते हैं और उनके विचार में, " आदर्श, उचित अनुपात में शरीर, मन और आत्मा का समन्वय और उनका समीकरण है ।"[7] उनकी दृष्टि में धर्म करने वाला शत्रु नहीं है और न ही जन्म से वे किसी को शत्रु मानते थे । उनके विचार से चोर, डाकू अधर्मी और अत्याचारी ही शत्रु हैं।[8] वे अपने शिष्यों को आदेश करते थे कि, " गाँव के रोगियों और पीड़ितों की भी, समय मिलने पर सेवा करो ।[8] उनका ही नहीं उनमें ' जन कल्याण की भावना विद्यमान

मृगनयनी	-1	पृष्ठ संख्या- 439		वृन्दावनलाल वर्मा
महारानी दुर्गावती	-2	पृष्ठ संख्या- 32		"
	-3	पृष्ठ संख्या- 34		"
	-4	पृष्ठ संख्या- 55		"
	-5	पृष्ठ संख्या- 94		"
भुवन विक्रम	-6	पृष्ठ संख्या- 47		"
	-7	पृष्ठ संख्या- 89		"
	-8	पृष्ठ संख्या- 114		"
	-9	पृष्ठ संख्या- 115		"

थी । विद्वानों से उनका कथन था कि," गाँव में प्रवेश के समयकहो, कि गाँव के नर-नारियों का स्वास्थ्य अच्छा रहे, उनका कल्याणहो ।"[1] उन्होंने राजा रोमक को संकेत करतेहुये कहाकि राजन प्रण करो कि जो बाहों से संग्राम करोगे तो सहस्त्र से काट दोगे और जनपद कीदरिद्रता को दूर करोगे ।[2] इस सभी विचारों के मूल में समन्वयात्मक भावना विद्यमान है ।

7- लौटी आग :

प्रस्तुत उपन्यास में मुहम्मदशाह के माध्यम से समन्वय कीभावना को दर्शाया गया है। वीर स्वयं " अपने महलों में हिन्दुओं से भीज्यादा बसन्त के साथ हो ली का दरबार तक करता था, जिससे भीतर की कुण्ठाओं को रंग-रेलियों का पूरा रंग मिल जाता था ।"[3] इतना ही नहीं बल्कि," मुसलमान सरदारों कीबेगमों के साथ हिन्दू महिलायें भीचोली खोलने जाती थीं और बहिनों की तरह आपसें में मिलती हँसतीऔर बोलती थी ।"[4] वात्स्योद्वार द्वारा हिन्दू-मुसलमानों की समन्वय-भावना मुखरितहो उठती थी ।

8- कीचड़ और कमल :

प्रस्तुत उपन्यास में गुरु राम देव ने देश कीअखण्डता और रक्षा के लिये समन्वय भावना की महत्ता को प्रतिपादित करते हुये बताया है कि," उस समय जबकि लुटों की आँधी देश की लूटमार और धर्म कोध्वस्त करने पर लगी हुयी है, तब एक दूसरे को मारकाटन न करके मेल जोल बनाये रखना और एक होकर बाहर के शत्रु को खदेड़ डालने की शक्तिकासंचित किये रखना, बड़ी आवश्यकता है।"[353] उपन्यास में समन्वयवादिता कीओर प्रकाश डालते हुये बताया गया है कि," सबके साथ समता का बर्ताव करो, मित्रधारी रहो, अच्छे गुरु ज्ञान से निर्दोष ज्ञान प्राप्तकरो, मनोरथ अवश्य प्राप्त होगा ।"[5] " प्रमिला अपने भाई, सदानन्द को आश्वासन देते हुये कहती हैकि ," मैं बार-बार जाकर विनय करूँगी कि देश द्रोहियों व राजद्रोहियों कीकठोर दण्ड दो,

---

भूलन चिह्न	-1	पृष्ठ संख्या- 137	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2	पृष्ठ संख्या- 166	"
लौटी आग	-3	पृष्ठ संख्या- 20	"
	-4	पृष्ठ संख्या- 21	"
कीचड़ और कमल	-5	पृष्ठ संख्या- 142	"
	-6	पृष्ठ संख्या-2233	

एक हो जाओ तथा एक होकर चलो और देश की रक्षा करो ।"[1] वह सभी विचार समन्वय की भावना को दर्शाते हैं ।

9- देवगढ़ की मुस्कान :

प्रस्तुत उपन्यास में' राजा विजयपाल और मुनि रत्नगिरि में' समन्वय की भावना विद्यमान थी । राजा चाहते थे कि सार्वभौम शान्ति स्थापित हो और दीन जनता सुख और सुखी हो।[2] वे ऊँच-नीच का भेदभाव नहीं मानते थे तथा सबको समान दृष्टि से देखते थे । लहरियों के डेरों में जाकर खेर खाने वाले राजा विजयपाल ने राम और शबरी के प्रसंग का स्मरण दिला दिया है । वे कहा करते थे कि," हम लोग तो बहुत छोटे से जीजीव हैं ।"[3] उनमें' छुआ-छूत की भावना न थी ।"[4] मुनि रत्नगिरि का निजी विचार था कि," अच्छे जीवन के लिये अत्यन्त आवश्यक है कि वह दूसरे के दृष्टिकोण को समझने का अभ्यास करता रहे, मिल जुल कर रहे व दीन दुखियों की सहायता करता रहे।[5]

10- माधव जी सिन्धिया :

प्रस्तुत उपन्यास में 'माधव जी सिन्धिया के माध्यम से समन्वय की भावना को दर्शाया गया है । " माधव जी का विश्वास था कि,भारत की शक्तियों को आपसी के विरुद्ध एकता में' बाँधने का था ।"[6] उनका दृढ़ निश्चय था कि" हम भारत के टुकड़े-टुकड़े नहीं कर सकते,चाहें कितने भी समझौतों में' दबे रहना पड़े ।"[7] वे भारत भर की शक्तियों का एकीकरण और सामञ्जस्य करके एक ऐसे संघ की स्थापना करना चाहते थे, जिससे भारतीय संस्कृति की रक्षा हो जाये,उसका विकास हो और वह निरंतर बढ़े।[8]

11-प्रत्यागत :

प्रस्तुत उपन्यास में हिन्दू-मुसलमानों की एकता की कामना,टीकाराम के द्वारा दर्शायी गयी है ।[9] भारतीय कला को समाप्तकरने के उद्देश्यसे पं० भगवान बिहारी अपनी मनोभावनायें व्यक्त करते हुये कहते हैं कि," भगवान के परिवार में सब एक हैं। सबको अपना भाई समझना चाहिये ।"[10]

कीचड़ और कमल	-1	पृष्ठ संख्या- 270	वृन्दावनलाल वर्मा
देवगढ़ की मुस्कान	-2	पृष्ठ संख्या- 50	"
	-3	पृष्ठ संख्या- 198	"
	-4	पृष्ठ संख्या- 226	"
	-5	पृष्ठ संख्या- 266	"
माधव जी सिन्धिया	-6	पृष्ठ संख्या- 9/परिचय/	"
	-7	पृष्ठ संख्या- 271	"
	-8	पृष्ठ संख्या- 403	"
प्रत्यागत	-9	पृष्ठ संख्या- 14	"
	-10	पृष्ठ संख्या- 38	

12- उदय किरण :

प्रस्तुत उपन्यास में' उदय, अपनी भावनायें दर्शाते हुये कहता है कि," मैं इस भूमि में हूं कि आपस के झगड़े मिट जायें ।:1: इसी उद्देश्य से इसने सहकारी समितियों के निर्माण में विशेष योगदान दिया । उसकी आशा थी कि " इससे आपस के झगड़े मिटेंगे तथा छोटे-छोटों का भेद भाव कम हो जायेगा ।:2: राम दयाल, अपनी समन्वय भावना व्यक्त करते हुये कहता है कि," न कोई मरे और मजबूर रहे । सब जिये और सुखी रहें ।:3:" यह सभी विचार लोगों की समन्वयात्मक भावना के द्योतक हैं ।

13- अमरबेल :

प्रस्तुत उपन्यास में, समाजी युवा सब जो अन्य भागा- अन्य दल के साथियों पर हमारा समान अधिकार हो,:4:" तथा " सब की भूमिका"- साथ मिल कर भोगें ।:5:" इन सूक्तियों के माध्यम से समन्वय की प्रबल भावना दर्शायी गयी है ।

10- असाम्प्रदायिकता :

यह निर्विवाद सत्य है बुन्देलखण्ड के निवासियों ने यहां पर सांस्कृतिक एकता बनाये रखने का भरपूर प्रयत्न किया । आतिथ्य सत्कार, यहां के लोगों की विशेषता रही है । विभिन्न धर्मों और सम्प्रदायों के लोग इतपरस्पर प्रेम और सद्भावनाओं के साथ रहते आये हैं । यहां के जन, जीवन में' लोक मंगल की भावना का आधिक्य रहा है । यहां व्यक्तिगत-हितों का कोई अस्तित्व और साम्प्रदायिकता का कोई स्थान नहीं रहा है । वर्मा जी ने बुन्देलखण्ड की सामान्य सांस्कृतिक विशेषता का वर्णन अपने उपन्यासों में' किया है, जो निम्नवत है :-

1- झाँसी की रानी :

प्रस्तुत उपन्यास में' दर्शाया गया है कि राजा गंगाधर राव के राज्य में' हरजू, रौस, राम मार्गी, वैष्णव आदि सभी प्रेम भावसे रहते थे। वैष्णव और शैवों की संख्या अधिक थी । " गुहे शाक्ता: अधिकोंश: तथा मध्ये च वैष्णवा:।:6:" अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ते हुये, वर्मा जी ने दर्शाया है कि, युद्ध काल में' चारोंओर दीप जला, अल्ला हो अकबर

उदय किरण	-1	पृष्ठ संख्या- 69	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2	पृष्ठ संख्या- 81	"
	-3	पृष्ठ संख्या-163	"
अमर बेल	-4	पृष्ठ संख्या-476	"
	-5	पृष्ठ संख्या-476	"
झाँसी की रानी	-6	पृष्ठ संख्या- 41	

और हर हर महादेव की पुकारें एक दूसरे में गूँज गईं।"[1] बल्ला की नजरें हिन्दू-मुसलमान, सब, अपने-अपने विश्वास के साथ त्योहारों को मनाते रहे हैं और उनमें कभी कोई कष्ट नहीं हुआ[2]।" इसप्रकार बुन्देलखण्ड के निवासियों में व्याप्त असाम्प्रदायिक भावना को, वर्मा जी ने दर्शाया है ।

2- मुरलवली :

प्रस्तुत उपन्यास में, राजा मान सिंह का कथन है कि ग्वालियर में स्थित तेल मंदिर का निर्माण, दो सम्प्रदायों की एकताओं परिश्रम का प्रतीक है । वे तेल मन्दिर की व्याख्या करते हैं जिसमें, "मन्दिर को उत्तर से वैष्णव और दक्षिण के शैवों ने मिलकर बनाया होगा[3] । उनकी इस बात से असाम्प्रदायिकता की पुष्टि होती है ।

3- दुर्गावती :

प्रस्तुत उपन्यास में दुर्गावती की मनोभावनायें, असाम्प्रदायिकता की परिचायक हैं। वह चाहती हैं कि "विभिन्न धर्मों में रोटी-बेटी का सम्बन्ध स्थापित हो जाय और "पंजाब के ब्राह्मण-क्षत्रिय खत्रादि, गुजरात के ब्राह्मण-क्षत्रियों में विवाह करें।[4] यह विचार असाम्प्रदायिकता की पुष्टि करता है ।

4- अहिल्याबाई :

प्रस्तुत उपन्यास में में दर्शाया गया है कि, एक प्रान्त के निवासी दूसरे प्रान्त के तीर्थों में आते-जाते रहते थे और उनमें प्रेम तथा सद्भावनाओं का आदान-प्रदान होता रहता था, जोकि असाम्प्रदायिकता का द्योतक है[5] ।

5- देवगढ़ की मुसकान :

प्रस्तुत उपन्यास में बुन्देलखण्ड क्षेत्र के निवासियों की प्रकृत असाम्प्रदायिक भावनाओं को दर्शाते हुए, राजा विजयपाल सिंह कहते हैं कि," यह है आर्यावर्त का, भारत का, वह क्षेत्र जहाँ वैष्णव, शाक्त और जैन सदा कन्धे से कन्धा मिला कर रहते चले आये हैं।"[6] कभी भी धर्म के कलह को लेकर एक ने दूसरे को नहीं सताया।[6]

6-प्रत्यागत :

प्रस्तुत उपन्यास में टीकाराम की असाम्प्रदायिक भावना को दर्शाया गया है । वह कहता है कि" हिन्दू और मुसलमानों का आपसी मेल-जोल हो जाये तो अच्छा होगा।[7]

झाँसी की रानी	-1	पृष्ठ संख्या-252	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2	पृष्ठ संख्या-299	"
मृगनयनी	-3	पृष्ठ संख्या-314	"
दुर्गावती	-4	पृष्ठ संख्या-25/26	"
अहिल्याबाई	-5	पृष्ठ संख्या-113	"
देवगढ़ की मुसकान	-6	पृष्ठ संख्या-262	

"वृन्दावन लाल वर्मा के पुत्र श्री सत्य देव वर्मा के उद्गार"

श्री देवीप्रसाद जी की इच्छा है कि मैं पूज्य पिता जी (महाकवि श्री वृन्दावनलाल वर्मा) के सम्बन्ध में कुछ लिखूं। 30 वर्ष की आयु तक मैंने उन्हें अपनी माँ-नन्ना से अधिक प्यार किया। मैं उनके बिना हीन था। जब उन्होंने कर्तव्य-बोध कराया, तो उन जैसा हितैषी, शिक्षक और वात्सल्य-स्रोत मेरे लिये अन्य नहीं था। माँ की ममता ने मुझे कर्तव्य-पालन करने में अद्भुत शक्ति दी। आज भी मानसिक कमज़ोरी के समय दोनों की याद बल प्रदान करती है। कभी कभी इन लोगों का अभाव मन को दबोच देता है। सत्यदेव वर्मा

11- पारिवारिक व्यक्तियों के परस्पर सम्बन्ध :

बुन्देलखण्ड के निवासियों के पारिवारिक जीवन में, जहाँ एक ओर माँ-बेटे, पुत्र-पिता, पति-पत्नी और भाई-बहिनों के मधुर सम्बन्धों का उल्लेख मिलता है, जिसमें त्याग, प्रेम, स्नेह और मृदुता पाई जाती है, वहीं दूसरी ओर सास-बहू, ननद-भौजी देवरानी-जेठानी आदि के कटु सम्बन्ध भी पाये जाते हैं। एक राजा की अनेक रानियों के पारस्परिक सम्बन्ध प्रायः अत्यन्त नीरस रहे हैं। वे सौतिया डाह से जलाकरती थीं।

वर्मा जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से यहाँ के निवासियों के पारिवारिक व्यक्तियों के परस्पर सम्बन्धों का उल्लेख किया है।

1- गढ़ कुण्डार :

प्रस्तुत उपन्यास में पुत्र-पिता के मधुर सम्बन्धों का उल्लेख किया गया है। राजा दुरमत सिंह अपने इकलौते पुत्र मानवस्त को काफी प्यार करते थे। उनकी सुख-सुविधाओं का पूरा ध्यान रखते थे। उनका कहना था कि," हमारा नाम मुख है, सुन्दर है, पूरा योद्धा है-सामान्तों का पराग है।"[1] वह अपने पुत्र के इच्छाओं की पूर्ति हेतु सतत प्रयत्नशील रहते थे। इसी प्रकार विष्णुदत्त को भी अपने पुत्र अभिमन्यु से काफी स्नेह था। उनके लाड़ प्यार ने ही उसके उद्दण्डपने को कर्कशता का रूप प्रदान कर दिया था।[2] दुरमत सिंह द्वारा देश परित्याग करने का दण्ड दिये जाने पर, विष्णु दत्त अपने पुत्र-प्रेम को दर्शाते हुये कहते हैं कि," क्या करूँ ! मैं दौड़ा जाकर अपने लाल को छाती से लगाना चाहता हूँ। भला है या बुरा जैसा है, है तो-लाल।"[3] तारा के अलावा एक भाई के कठोर व्रत के परिपालन में होने वाली कठिनाई का अनुभव करते, उनके भाई अभिमन्यु का भ्रात-प्रेम उमड़ पड़ता है और वह "अपनी बहिन तारा के जीवन पथों का ध्यान रखकर व्याकुल हो जाता है तथा व्रत के विषय की बात सोचता है।"[4] उपन्यास में चाटुयन्त्रों के विरुद्ध, दिवाकर अपने पिता की आज्ञा को ठुकरा देता है और कहता है कि," देह आपकी की हुई है और आत्मा

गढ़ कुण्डार -1 पृष्ठ संख्या-131. वृन्दावनलाल वर्मा
-2 पृष्ठ संख्या- 21 "
-3 पृष्ठ संख्या-415 "
-4 पृष्ठ संख्या-168 "
-5 पृष्ठ संख्या-449

भगवान की।" :1: वह हेय कार्य नहीं करेगा ।

8- झाँसी की रानी :

प्रस्तुतउपन्यास में पति-पत्नी के पारस्परिक सम्बन्धों का उल्लेख करते हुये दर्शाया गया है कि रानी एक ऐसी हिन्दू नारीथी,जो निरंतर अपने पति का सम्मान करती थी ।" :2: उन्होंने अपने पति की इच्छा के अनुरूप पर्दाप्रथा का भी निर्वाह किया था। :3: उनका कथन था कि," मुझे शिवराव भाऊ की वधू होने का बहुत दावा है। मुझको अपने राजा का,अपनी झाँसी का अभिमानहै ।" :4: रानी को अपने देश की स्वाधीनता और राज्य की रक्षा का विशेष ध्यान रहता था। इसी बात को लेकर अपने पति से वे चर्चा करती थी । उन्हें अपने पतिकीशृंगार-प्रियता और नाटकों में विशेष रुचि रखना पसन्द न था। स्वयं रानी से अपने पति राजा गंगाधर राव से कहती है कि," आपकी नाटकशाला में,जो अभिनेता बनते हैं,उनसे क्या औरत नहीं कराये जा सकते हैं ।" :5: मृत्यु के पूर्व राजा अपनी रानी के सम्बन्ध में अंग्रेज पलिस से कहते हैं कि " मेजर साहब,रानी बड़ी जबर है,परन्तु इसमें ऐसे गुण हैं जिससे-बड़े मर्द बनते पैरों की धूल अपने माथे चढ़ाते हैं ।" :6:

उपन्यास में माँ-बेटे के स्वार्थ पूर्ण सम्बन्धों का भी उल्लेख किया गया है, जिसमें अभिलाषा लोलुप माता मन्थरा ने सत्ता के पीछे अपने पुत्र रामचन्द्रराव को मौत के घाट उतारने का अनथक षड्यन्त्र रचा था । :7:

9- मृगनयनी :

प्रस्तुत उपन्यास में भाव-संचित के मधुर सम्बन्धों को दर्शाया गयाहै। माता-पिता कीमृत्यु के उपरांत अटल मेजपनी संचित किन्नरी को बड़े लाड़-दुलार से पाला था। उसने अपनी संचित के सुख-सुविधा में कोई कसर नहीं उठा रखी थी । :8: उपन्यास में पति-पत्नी के सम्बन्धों को भी दर्शाया गया है ।राजा मानसिंहअपनी पत्नी मृगनयनी

गढ़ कुण्डार	-1	पृष्ठसंख्या- 449	वृन्दावनलाल वर्मा
झाँसी कीरानी	-2	पृष्ठसंख्या- 77	"
	-3	पृष्ठ संख्या- 84	"
	-4	पृष्ठ संख्या- 794	"
	-5	पृष्ठ संख्या-122 79	"
	-6	पृष्ठ संख्या-122	"
	-7	पृष्ठ संख्या- 3	"
मृगनयनी	-8	पृष्ठ संख्या- 12	"

. [illegible] तो सब कुछ हो। मेरी जीवन सर्वस्व, मेरी प्राणेश्वरी, मेरी जीवन संगिनी हो।:1: रानी भी अपनी मनोभावनायें व्यक्त करते हुये उनसे कहती है कि" भगवान मुझको बलयोग्य बनाये कि मैं सदा इसी तरह आपकी कृपा पाये रहूँ।:2:" मृगनयनी और मान सिंह रात्रि गांव में पहुंच कर अपनी विगत कालीन स्मृति को जागृत करते हुये वार्तालाप करते हैं । " मैंने अपने देवता पर यहीं फूल चढ़ाया था :: और देवता ने उस फूल को अपनी पगड़ी में खोंस लिया था ।:3:"

अटल और लाखी के सरस दाम्पत्य जीवन पर भी प्रकाश डाला गया है । उन दोनों में सच्चा और आदर्शमयी प्रेम की भावना विद्यमान थी। जातियाँ भिन्न होते हुये भी, वे दाम्पत्य बन्धन में बंधे और प्रेम पूर्वक निर्वाह किया। युद्ध में घायल होने के उपरांत मृत्युशैय्या पर लाखी अपने पतिसे कहती है कि मुझे एक भीक्षा मांगती हूं," तुम अपनी जातिमें विवाह कर लेना।:4:" यह विचार उसके प्यार कीगरिमा को दर्शाते हैं । सुम्मोहिनी, राजा मान सिंह की बड़ी रानी थी । बहलौलिया ग्राम से पीड़ित थी और मान में' किया लगा आग होने वाली औरंगजेब मृगनयनी को छिनाकर, अपनी प्रतिशोध की भड़कती हुई अग्नि को शान्त करना चाहती थी ।:5:"

4- महारानी दुर्गावती :

प्रस्तुत उपन्यास में पिता-पुत्री के मधुर सम्बन्धों का उल्लेख किया गया है। दुर्गावती, कीर्तिसिंह सिंह नाम सन्तान थी । बचपन से ही उसे पिता ने काफी लाड़-दुलार दिया था। वे उससे राज्य कीसमस्याओं पर भी वार्तालाप करते रहते थे ।:6: वे अपनी पुत्री से सुना और उसकी बातों के आगे अपनी मनो भावनाओं को कुण्ठित कर देते थे। जब उन्हें दत्तपति और दुर्गावती के प्रणय सम्बन्धों के बारे में ज्ञात हुआ तो वे दत्तपति से उदारता पूर्वक कहते हैं कि और परामर्श देते हैं कि "आपके साथ, अपनी

मृगनयनी	-1 पृष्ठ संख्या-229	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2 पृष्ठ संख्या-229	"
	-3 पृष्ठ संख्या-392	"
	-4 पृष्ठ संख्या-430	"
	-5 पृष्ठ संख्या-379	"
महारानी दुर्गावती	-6 पृष्ठ संख्या- 80	"

-4-

बेटी का विवाह मुझे अच्छा लगेगा :: आप राज कुमारी के साथ अपनी राजधानी गढ़ जायेंगे । विवाह संस्कार वहीं से होगा ।"[1] वे वनपति को अपना दामाद बना लेते हैं और उनके साथ मधुर सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं । वनपति भी अपने ससुर कीर्ति सिंह का सम्मान करता है । वह कुमार सिंह को प्रतापित करते हुये कहता है कि "तुम हमारे और महाराज कीर्ति सिंह के बीच में विघ्न मत बोओ ।"[2] दुर्गावती एक पतिव्रता नारी थी और हिन्दू नारी का पूर्ण कर्तव्य निभाती है । राजा भी उसे बहुत से चाहते थे और अगाध प्रेम करते थे। वे उसे प्राणेश्वरी और अपने जीवन को सफल बनाने वाली हृदयेश्वरी मानते थे।"[3] दुर्गावती के देवर चन्द्र सिंह का व्यवहार अपनी भाभी के साथ ठीक नहीं था किन्तु भाभी ने अपने कर्तव्य का पालन किया और उसके साथ सदा सद्व्यवहार किया।"[4] इस प्रकार उपन्यास में विभिन्न पारिवारिकजनों के पारस्परिक सम्बन्धों का उल्लेख प्राप्त होता है ।

3- भुवन विक्रम :

प्रस्तुत उपन्यास में माता-पिता और पुत्र के मधुर सम्बन्धों को दर्शाया गया है। राज कुमार भुवन को सबसे अधिक अपने माता-पिता का लाड़ दुलार मिला था । माँ का तो वह विशेष लाड़ला बेटा था । उसे भौम्य-शिव के आश्रम भेजते समय उसकी ममता द्रवित हो उठी और वे :: आगे कुछ न कह सकीं । हिलकियाँ रोने लगी। माँ के आँसू देखकर पुत्र भुवन भावुक होकर बोला कि-" माँ तुम रोओगी, तो मैं नहीं जाऊँगा, चाहे कुछ भी हो जाये।"[5] आश्रम में पहुँच कर जब भुवन को अपने पिता के राज्य छीने जाने का समाचार मिला तो वह क्रोधावेश से भर गया ।[7] रानी ममता अपने पुत्र से विशेष स्नेह करती थी और सदा उसे आशीर्वाद दिया करती थी कि वे," चन्द्र, अग्नि, जल तुम्हें सदैव धार-धार रखें ।"[8] रोमक को अपने पुत्र का विछोह असहनीय था। वह सोचता था कि मेरा पुत्र आश्रम में रहकर दुबला हो गया होगा, गाल पिचक गये होंगे। कैसा सुन्दर कुमार । मेरा की क्रूरता ने कहाँ निकलवाया उसे।:: जब मैं आश्रम से लौटा

महारानी दुर्गावती	-1	पृष्ठ संख्या-103	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2	पृष्ठ संख्या-153	"
	-3	पृष्ठ संख्या-165	"
	-4	पृष्ठ संख्या-240	"
भुवन विक्रम	-5	पृष्ठ संख्या- 20	"
	-6	पृष्ठ संख्या- 82	"
	-7	पृष्ठ संख्या -104	"
	-8	पृष्ठ संख्या- 83	"

तो उसे छाती से नहीं लगा पाया था एक बार आँखों भर उसे देख तक नहीं सका था ।"[1] रानी ममता अपने बालिकासुता-सुता में पूर्ण सार्थ निभाती थी। वे उन्हें सान्त्वना देते हुये कहती हैं कि मैंने आपको विपत्तियों के सामने कभी इस प्रकार झुकते हुये नहीं देखा । देखता कभी रोते हैं ! अन्न की बालों का दूध पकने पर सूख भले जाय,पर उनमें दीनता कभी नहीं आती ।"[2] रोमक ममता जीवास से प्रभावित हुये और जीते-देवी,आप वास्तव में देवी हैं । आपके ही नाम जीवक देवी से मजबेत के कुछ मन्त्रों की रचना पूर्वकाल में की थी ।"[3] ममता ने नम्रता पूर्वकनिवेदनकिया कि,"आपने मुझे जो पद और आदर सदा अखण्ड भावना के साथ दिया है,उसे सब जानते हैं,परन्तु इतनी बड़ी सुलता के योग्य मैं नहीं हूँ ।"[4] उपन्यासमें नील और उसकीपुत्री हिमानी के सम्बन्धों काउल्लेख करते हुये बताया गया है कि पिता अपनी पुत्री की समस्त इच्छाओं और अभिलाषाओं की पूर्ति करने को सदा तत्पर रहता था ।"[5]

7- देवगुप्त की मुस्कान :

प्रस्तुत उपन्यास में शिवकी के मध्य उसके भाई कुमार और सिद्धु के मधुर सम्बन्धों को बताया गयाहै ।वे दोनों ही अपनी बहिन को बहुत प्यार करते थे तथा भाविष्य के सुख कीबातें करके वे अपनी बहिन को सदा प्रसन्न रखते थे।[6] सेठ धनपाल और उसकी पत्नी,प्रियम्वदा के मधुर सम्बन्धों का भी उपन्यासमें उल्लेख किया गया है। प्रियम्वदा अपने पति की आज्ञा को सर्वोपरि मानती थी,और उनकी सेवा-सुश्रुषा किया करती थी ।[7] सेठ धनपाल भीअपनी पत्नीको हृदय से चाहते थे तथा उसकी सराहना करते उसे प्रसन्न रखते थे।[8] उपन्यास में भुवना देवी और भुक्ता देवी के पारस्परिक मधुर सम्बन्धों कीझलक भी प्रस्तुत कीगयीहै[9] । वे दोनों रानियाँ अपने पति,राजा विजयपालसिंहके प्रतिआस्थावान थीं तथा वे उन्हें चक्रवर्ती और समदर्शी राजा मानती थीं।[10] भुवना देवी तो उन्हें अवतार मानती थी । उसका कथन था कि राजा

भुवन विक्रम	-1	पृष्ठ संख्या-149	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2	पृष्ठ संख्या-149	"
	-3	पृष्ठ संख्या-149	"
	-4	पृष्ठ संख्या-150	"
	-5	पृष्ठ संख्या- 34	"
देवगुप्त की मुस्कान	-6	पृष्ठ संख्या- 3	"
	-7	पृष्ठ संख्या- 32	"
	-8	पृष्ठ संख्या-41	"
	-9	पृष्ठ संख्या- 19	"
	-10	पृष्ठ संख्या-266	

किसी से कमनहीं है ।[1]

8- टूटे काँटे :

प्रस्तुतउपन्यासमें रोमी का अपने पतिमोहन और दूर के नाते के देवर सोहन के साथ बहु सम्बन्धों को दर्शाया गयाहै। क्रोध में आकर वह अपने पतिसे कर्कशता से बोलती थी तथा प्राय: दुवचनों का प्रयोगकरती रहती थी। वह अपने पतिको कटुचुनौती देते हुये कहतीहै कि," आओ,आओ,मुझको मार ही डालोगे और क्या करोगे ।"[2] मो हन अपनी पत्नी से दुखी होकर गाँव छोड़कर अन्यत्र जाने का विचार करता है और अपनी मनोव्यथायें व्यक्त करते हुये अपनीपत्नीसे कहता है कि," जिस द्वार में तुम सरीखी स्त्री हो,उस द्वार में मुझ सरीखा कोई रह भी नहीं सकता ।"[3]

9- लगन :

प्रस्तुत उपन्यास में पिता-पुत्र के मधुर सम्बन्धों को दर्शाया गयाहै। विनयू अपने पुत्र के द्वार पढ़ाईलिखाने पर व्याकुल रहने लगा था और एकदिन चिल्लाता हुआ पड़ोसियों से कहता है कि," मुझे,आज से किसी एक पल भी चैन नहीं।"[4] बादल भी अपनी बेटी की शादी तैयार करता थाऔर इच्छा व्यक्तकरताहै कि," मेरी लाड़ली बड़े घर में ही ब्याही जायेगी ।"[5] देव सिंह अपनी पत्नीको हृदय से चाहता है तथा उस पर अपना पूर्ण अधिकार समझता है।"[6] उपन्यासमें बहू-ससुर तथा दो सहेलियों के मधुर सम्बन्धों का चित्रण किया गया है ।[7]

10- अपने मे रा कोई :

प्रस्तुत उपन्यास में शिक्षित तथा पूर्व परिचित युवापति-पत्नीकेदाम्पत्य जीवन की कटुता विस्तृत रूप मे चित्रित की है । पति कार्यालय व्यापार और पत्नी की उदासीनता उनके जीवन मे विष घोल कर रख देतीहै। एक दिन सुधाकर अपनी पत्नी कुन्ती से रूठकरकर कहता है कि," तुममें पुरुषों के गुण अधिक हैं,इस लिये तुमसे बात करना व्यर्थ है ।"यह सुनकर कुन्तीक्रोधितहोकर कहतीहै कि,तो क्या मैं सेवल लेस,नारीरूप विहीन हो गयी हूँ।"[8] इन विचारों से पारस्परिक कलह काआभासहोता है।

देवदू की मुस्कान	-1	पृष्ठ संख्या-248	वृन्दावनलाल वर्मा
टूटे काँटे	-2	पृष्ठ संख्या- 10	"
	-3	पृष्ठ संख्या- 18	"
लगन	-4	पृष्ठ संख्या- 75	"
	-5	पृष्ठ संख्या- 2	"
	-6	पृष्ठ संख्या- 42	"
	-7	पृष्ठ संख्या- 79	"
अपने मे रा कोई	-8	पृष्ठ संख्या-229	"

इतना ही नहीं, जहाँ एक ओर सुधाकर कहता है कि मुझे कुन्ती का बार बार आना-जाना पसन्द नहीं है,[1] वहीं कुन्ती का कथन है कि उसका पति, स्त्री के हृदय को समझने की सुविधा नहीं रखता।[2] सुधाकर ग्लानि से भर कर कहता है कि मैं अपनी पत्नी पर ही शासन न कर पाया तो धिक्कार है।[3] अन्त में कुन्ती आत्महत्या करके अपने जीवन को नष्ट कर देती है।

11- कुण्डली चक्र :

प्रस्तुत उपन्यास में ललित और रतन कुमारी के मध्य भाई बहिन के पावन प्रेम को दर्शाया गया है। ललित अपनी बहिन को हृदय से चाहता था और पुत्री के समान उससे स्नेह करता था। पतिपत्नी के सम्बन्धों में, पति के आसक्तियुक्त और कामुक स्वभाव के कारण, कुछ उष्णता आ गयी है। रतन को," जिसे लोग पति का सुख कहते हैं, पूरा मिला था परन्तु प्रेम की भूखा, उसका हृदय ठेस पर ठेस की गयी या नहीं, यों वह नहीं जानती थी।"[4]

12- संगम :

प्रस्तुत उपन्यास में सास-बहू के कटु सम्बन्धों का उल्लेख किया गया है। पति-पत्नी के मधुर सम्बन्धों को अवश्य दर्शाया गया है। सम्भवतः कुछ न कुछ अनुचित कार्य करता रहता है। अन्त में पश्चाताप करते हुये वह अपनी पत्नी जानकी से कहता है कि," जानकी! मैं तुम्हारे योग्य नहीं हूँ। हाय! तुम्हारे कल्याण में ऐसा नराधम आ गया।"[5] यह सुनकर जानकी निवेदन करती है कि," तुम मेरे देवता हो। मुझे अपने देवता के चरणों से दूर न करो। तुम केवल मुझी में बसे हो।"[6] उपन्यास में दीनाराम नाम, ब्राह्मण की कन्या जानकी का लालन-पालन करता है और उसके साथ अपनी बेटी जैसा व्यवहार करता है। उसका जानकी के साथ पवित्र और पितातुल्य प्यार था।"[7]

14- प्रस्थान :

प्रस्तुत उपन्यास में भा-बेटे के पावन प्रेम की अभिव्यक्ति प्रस्तुत की गयी है। मंगल किसी कारण

अमल मे रा कोर्ष	-1 पृष्ठ संख्या-230	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2 पृष्ठ संख्या-232	"
	-3 पृष्ठ संख्या-255	"
कुण्डली चक्र	-4 पृष्ठ संख्या-102	"
संगम	-5 पृष्ठ संख्या-186	"
	-6 पृष्ठ संख्या-187	"
	-7 पृष्ठ संख्या- 75	"

प्रस्थान-

से रूठ जो जाताहै और जाना नहीं चाहता । यह देख चरुलती माँ कहती है कि बेटा," तू न जायेगा तो मैं भी न जाऊँगी ।:1:" मंगल अपनी माँ को बहुत स्नेह करता। वह कहता है कि," देवताओं से चाहे नाता टूट जाये, परन्तु माँ के साथ नाताकैसे टूटेगा ।:2:" उपन्यास में पति-पत्नीके मधुर सम्बन्धों को भी दर्शाया गया है । सोमवतीअपने पति मंगल से कहतीहै कि," मैं आपके मन्दिर की पुजारिन हूँ । पूजा कर्तव्य की शिक्षादिनी । पूजाके में तो आँसू चरणों पर भेंट हैं ।:3:" उपन्यास में सास-बहू के मधुर सम्बन्धों का भी चित्रण मिलता है। सास-बहू सेकहतीहै कि," मेरी रानी, मेरीसीता! तेरे ही भाग्य से मैंने अपना हीरा फिर पाया है, नहीं तो हम भाग्यहीन पाप तो कदम को खींचुके थे ।:4:" प्रत्युत्तर में सोमवती अपनी सास से कहती है कि," माँ जी, यह तुम क्या कहतीहो ! आपकी गिनती तो देवताओं में है। आपके ही पुण्य -प्रताप से यह संसार टिका हुआहै।:5:" धनशिखरोंमें सास-बहू के मधुरतम सम्बन्धों का उल्लेख मिला है ।

14-~~ललितादित्य~~ - प्रस्तुत उपन्यास में राजा ललितादित्य और रानी कमलावती के मधुर सम्बन्धों का उल्लेख किया गया है। रानी अपने पति से कहती है कि, "मेरे तो मन में केवल यह उठा करता है कि आप अमर रहें। आपकी आत्मा प्रबल रहे। आपका मन सदा पुष्ट रहे।:6:"

15-सोना :-प्रस्तुत उपन्यास में सोना की सहिमोंका पारस्परिक प्रेम, आद्योपान्त दर्शाया गया। आपस में कलह को देखकर, सोना और रत्ना के माता उन्हें प्रताड़ित करते हुये कहते हैं कि," जा बहू रत्ना, तब देखो तब आपस में गाली गलौजकर के लड़ती हो । गलौजीकम तब मेलहीं करती ।:7:" जब उन दोनों का क्रोध आसमान पर चढ़ जाताथा तो वे दोनों खाँडापाड़ पर उतर आती थी । एक दिन सोना ने रत्ना से कहा;" रत्ना बहुत बकबक बहू मतकरो, तुम्हारे कान-आँखें है, तो मेरे पाँव है। :: " मेरे भी पाँव हैं", रत्ना बोली यहाँ तक विरथा अपनी सहिम सोना के खिलाफ तक में सम्मिलितमहीं हुई और बोली," कि," मैं नहीं जाऊँगी । उस छूटे, झूटे, लंगड़े के साथ मैं?:8:"

प्रस्तावना	-1	पृष्ठ संख्या- 19	वृन्दावनलाल वर्मा
"	-2	पृष्ठ संख्या-45	"
"	-3	पृष्ठ संख्या-51	"
"	-4	पृष्ठ संख्या-71	"
"	-5	पृष्ठ संख्या-71	"
ललिता दित्य	-6	पृष्ठ संख्या-399	"
सोना	-7	पृष्ठ संख्या-15	"
"	-8	पृष्ठ संख्या-14	
"	9	पृष्ठ संख्या 45	

उपन्यास में विवाह को भी दर्शाया गया है, जब से सोना, देवगढ़ के राजा धुरंधर सिंह की रानी बनी तभी से उसकी महत्वाकांक्षा थी कि कैसे राजा को सदा दबाये रखूं। :1: राजा ने तरह तरह के प्रयत्न किये किन्तु वह अपनी नवोढ़ा रानी की अभिलाषा पूर्ण न कर सका। उधार रूपा जब गरीब थी, तब उसे अपने पति अनूप का पूर्ण स्नेह प्राप्त था। रानी होने पर, वह अपने पति को जितना निकट देखना चाहती थी, उतना नहीं देख पा रही थी, जिससे वही दुखी रहने लगी थी। :2:

1 14-विवाह प्रणाली :

विवाह के दृष्टिकोण से बुन्देलखण्ड कि बड़ा क्षेत्र माना जाता रहा है। आर्थिकता, रूढ़ियों का बाहुल्य, अशिक्षित जीवन के कारण यहां, विवाह संस्कारों के निर्माण कार्य पर ध्यान नहीं दिया गया। दुलहीयाव की अपेक्षा धनोपार्जन संबंधी बातों पर विशेष ध्यान दिया जाता रहा। गृह-विद्या में निपुण होना ही महत्वपूर्ण समझा जाता था। विवाह भौगोलिक परिस्थितियों ने भी यहां के जन-जीवन को कम विवाह हेतु प्रेरित नहीं किया। विवाहकी अपेक्षा साहित्य की ओर उन्मुख होना बुन्देलखण्ड की प्रकृति के मध्य रहने वाले मानव के लिये स्वाभाविक था। नारियों की विवाह तो एक प्रकार से मान्य ही रही, फिर भी बुन्देलखण्ड में कुछ विवाह-प्रणालियों का प्रचलन रहा है, जिनका वर्णन वर्मा जी ने अपने उपन्यासों में किया है :-

1- गढ़ कुण्डार :

:3: प्रस्तुत उपन्यासमें जिसीव्यक्ति विशेष क्षेत्रों को सुनकर, पारिवारिक विवाहोंका ज्ञान, स्वाध्याय के आधार पर अर्जित करने का अवसर मिलता है। उपन्यास का मुख्य पात्र विष्णुदत्त विवाहित मनुष्य था। वह संस्कृत, अरबी, उर्दू और कुछ फारसी जानता था। वीर प्रधान और विष्णुदत्त में विशेषी भाषायें

सोना	-1 पृष्ठ संख्या -73	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2 पृष्ठ संख्या-169	"
	-3 पृष्ठ संख्या- 30	"
गढ़ कुण्डार	~~-4--पृष्ठ-संख्या-160~~	

साथ-साथ सीखती थी । विष्णुदत्त ने अपने पुत्र को शस्त्र से पढ़ाया था तथा इसे युद्ध विद्या में भी निपुण बनाया था।"[1] अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा को व्यक्तिगत रूप से हस्तान्तरित करने का उल्लेख भी उपन्यास में किया गया है। अग्निदत्त, मानवती को एक तलवार करके, वेग क्रिया का अभ्यास कराता था ।"[2] इस प्रकार अभ्यास द्वारा शस्त्र शिक्षा प्रदान की जाती रही है ।

2- झाँसी की रानी :

प्रस्तुत उपन्यास में शिक्षा प्राप्त करने की विविधि प्रणालियाँ दर्शायी गयी हैं । राजाओं के राज्य में विभिन्न चित्रकार, आचार्य, गायक, नृत्यवद, वीणा, पखावज के पारंगत, लोगों को आश्रय प्राप्त था । वे अपने ज्ञान अनुभव और अपनी कला को हस्तान्तरित करते थे ।[3] इसके अतिरिक्त राज्य में 'विशाल पुस्तकालय की व्यवस्था कराई जाती थी, जिसमें वेद, उपनिषद, दर्शन, पुराण, तंत्र, आयुर्वेद, ज्योतिष, व्याकरण तथा काव्य संग्रहीत रहते थे, जिन्हें लोग पढ़कर शिक्षा प्राप्त करते थे ।[4] गायन-वादन और नृत्यकला की शिक्षा बड़े-बड़े उस्तादों के माध्यम से दी जाती थी ।[5] इतिहास को पढ़कर और सुनकर भी लोग विभिन्न विषयक शिक्षाओं को ग्रहण कर लेते थे ।"[6] रानी लक्ष्मी बाई को संस्कृत, हिन्दी, मराठी आदि की शिक्षा राम-भट्ट नौकर से प्राप्त हुई थी तथा मल्लविद्या और मल्लास्त्र आदि का ज्ञान उन्हें बाला गुरु से प्राप्त हुआ।[7] अभ्यास को शिक्षा का उत्तम साधन माना गया है, जिसका अनुसरण रानी किया करती थी ।[8] अंग्रेजों के द्वारा स्थापित सरकारी स्कूलों में बालिका की अनिवार्य शिक्षा का उल्लेख भी उपन्यास में किया गया है ।"[9][10]

गद्य कुञ्जार	-1	पृष्ठ संख्या-160	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2	पृष्ठ संख्या-177	"
झाँसी की रानी	-3	पृष्ठ संख्या- 8	"
	-4	पृष्ठ संख्या- 8	"
	-5	पृष्ठ संख्या- 10	"
	-6	पृष्ठ संख्या- 18	"
	-7	पृष्ठ संख्या- 35	"
	-8	पृष्ठ संख्या- 27	"
	-9	पृष्ठ संख्या- 84	"
	-10	पृष्ठ संख्या-104	

3- मृगनयनी :

प्रस्तुत उपन्यास में शिक्षा प्रणाली की ओर ध्यान देते हुये बताया गया है कि " पुरों और ग्रामों में लड़कों और लड़कियों की अलग-अलग पाठशालायें रहती थी।"[1] उपन्यासकार द्वारा शिक्षा ग्रहण करने की पद्धति को बताते हुये बताया गया है कि "मृगनयनी द्वारा तीरों से वर्षों से शिकार करने के निरंतर अभ्यास ने उसे उच्चकोटि का शिकारी बना दिया था । वह लक्ष्य भेद को एक ऐसी विद्या मानती थी, जो हार जीत की धारणा से परे थी ।[2] आचार्यों के माध्यम से गीतशिक्षा दी जाती थी ।इसी प्रकार से मृगनयनी को चित्रवर्णन में पुस्तकीयशिक्षासे वीणा वेणु में गायन वादन की शिक्षा प्रदान की थी ।[3]" संगीतके अभ्यास में "निरंतर संलग्न रहने पर वेणु, लोक प्रसिद्ध गायक वेणु द्वारा बन गया था ।[4]

4- दुर्गावती :

प्रस्तुत उपन्यासमें युद्ध सम्बन्धी शिक्षा प्रदान करने का उल्लेख मिलता है ।दलपति अपने पुत्र वीरनारायण से तीन वर्ष की अवस्था में ही तीर चलाने का अभ्यास कराने लगे थे ।[5] वह मिट्टीके खिलौने बनाने कार्य भेद क्रियाकरता था ।[6] महाभारत रामायण,पुराण आदि का प्रवचन करते थी,धार्मिक शिक्षा प्रदान की जाती थी। किस्से-कहानियां थी,शिक्षा ग्रहण करने की एक प्रणाली रही है ।[7]

5- धनुर्विद्या :

प्रस्तुत उपन्यास में, आचार्य भेदा द्वारा धनुष को धनुष-बाण चलाने की विद्या कारान कराये जाने का उल्लेखमिलता है। उपन्यास में बताया गया है कि

मृगनयनी	-1 पृष्ठ संख्या-29		वृन्दावनलाल वर्मा
	-2 पृष्ठ संख्या-193		"
	-3 पृष्ठ संख्या-232		"
	-4 पृष्ठ संख्या-393		"
दुर्गावती	-5 पृष्ठ संख्या-235		"
	-6 पृष्ठ संख्या-225		"
	-7 पृष्ठ संख्या-252		

"अपने कुटीर कन्धों पर ले और अनुभव ज्ञान बाँटने में लिये, स्वयं लाभ रहा था। पास की उसका उपाध्यायमेहता मेहता की क्रिया चला रहा था[1]।" मेहता, हिमानी को भी अनुशिक्षा ज्ञान कराया करते थे। वे अपने विचार व्यक्तकरते हैं कि::मैंने जितना सिखलाया, उसे हिमानी ने गाँठ में बाँध लिया[2]।" उपन्यासमें नगिनाकारण्य में स्थित आचार्य औरोम्य ऋषि के आश्रम में छात्रों को तरह तरह कीशिक्षा प्रदान की जाती थीऔर उनके जीवन को परिष्कृत, परिमार्जित और सुसंस्कृत बनाया जाता था। प्रातः और सन्ध्या के समय नित्य मुझे प्रवचन होते थे। औरोम्य, प्रवचन करते हुये बोले कि" अब तुम प्रातःकाल किये संकल्पों को सोचो, फिर कृत्यों का स्मरण करो- कितना सोचा था, कितना कर पाया[3]। औरोम्य अपने छात्रों को योग कीशिक्षा भी देते थे[4]। उपन्यासमें छात्रशाला के माध्यम से भी शिक्षा प्रदान करने का उल्लेख मिलता है[5]।"

6- कथनार :

प्रस्तुतउपन्यासमें उपर्युक्त गाँवों शिक्षण हेतु " यहाँ हर एक बड़े ग्राम में पाठशालायें थीं"[6]। महन्त द्वारा एक आश्रम स्थापितकियागया था, जिसमें महन्त अपने शिष्यों को अनेक विद्याओं की शिक्षायें प्रदान करते थे। उन्होंने बलीय सिंह को भी अक्षराभ्यास वर्णमाला ज्ञान और योगाभ्यास कराया था[7]। वे कर्म, प्राणायाम, ध्यान और योग कीशिक्षा भीदिया करते थे[8]। उपन्यास में आश्रम और उपदेशों द्वारा शिक्षण की पद्धतियों पर प्रकाश डाला गया है[9]।

7- देशभक्ति की भावना :

प्रस्तुतउपन्यासमें आचार्यों द्वारा विभिन्न प्रकार की शिक्षायें, प्रदान करने का उल्लेख मिलता है। राजा विजयपाल सिंहने देशभक्त जाने से पूर्व," राजकुमारों

अनुक्रम :	-1	पृष्ठ संख्या- 9	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2	पृष्ठ संख्या-12	"
	-3	पृष्ठ संख्या-43	"
	-4	पृष्ठ संख्या-47	"
	-5	पृष्ठ संख्या-82	"
कथनार	-6	पृष्ठ संख्या-26	"
	-7	पृष्ठ संख्या-183	"
	-8	पृष्ठ संख्या-215	"
	-9	पृष्ठ संख्या-229	

को अनेक अध्यापकों की देखा-रेखा में छोड़ा था। केवल अध्ययन, अध्यापन उद्देश्य नहीं था। उन्हें शनुविद्या में पूरे प्रकार से कुशल किया जाये, ऐसा राजा ने आदेश दिया था।" :1: जैन मुनि रत्नगिरि ने भी अपने सारगर्भित उपदेशों के माध्यम से राजा और प्रजाको शिक्षा प्रदान की।" :2:

8- अचल मेरा कोई :

प्रस्तुत उपन्यास में शिक्षा विद्यालयको उच्च शिक्षा प्रदान करने का सर्वोत्तम साधन बताया गया है।" :3: आचार्यों द्वारा नृत्यकलासिखाने का भी उल्लेख मिलता है।" :4: छोटे-छोटे गाँवों में बच्चियाँ, जहाँ रामायण आदि पढ़ने लगती थी, वहाँ उनकी शिक्षा पूर्ण मान ली जाती थी। :5: वहाँ शिक्षण संस्थाओं का अभाव था।

9- प्रेमकी भेंट :

प्रस्तुत उपन्यास में, काव्य ग्रन्थों और उपन्यासों को ,चरित्र द्वारा, अवकाश के समयमें पढ़कर अपना ज्ञान बढ़ाने तथा सरस्वती द्वारा कुछ दिनों तक ग्रामीण पाठशाला में पढ़ने का उल्लेख मिलता है। :6:

10- लग्न :

प्रस्तुत उपन्यास में चित्रगंध के पल्लाला जी द्वारा, देवसिंह को घर पर ही पढ़ाने का उल्लेख है। :7:

11- प्रत्यागत :

प्रस्तुत उपन्यास के मुख्य पात्र हीरालाल को फलित ज्योतिष विद्या का पूर्ण ज्ञान था। :8: उसके पुत्र मंगल ने स्कूल में शिक्षा ग्रहण करके अंग्रेजी सीखा ली थी। उसे भी खगोल-शास्त्र पर पूर्ण अधिकार था। :9:

देवगढ़ हीमुस्तान	-1	पृष्ठ संख्या-161	कुन्दनलाल जैन
	-2	पृष्ठ संख्या-138	"
अचल मेरा कोई	-3	पृष्ठ संख्या- 9	"
	-4	पृष्ठ संख्या- 45	"
	-5	पृष्ठ संख्या- 46	"
प्रेम की भेंट	-6	पृष्ठ संख्या- 10	"
लग्न	-7	पृष्ठ संख्या- 5	"
प्रत्यागत	-8	पृष्ठ संख्या- 1	"
	-9	पृष्ठ संख्या- 2	

12- आश्रम :

प्रस्तुतउपन्यास में, गाँव में स्थित मिडिल स्कूल तथा कस्बों में स्थित हाई स्कूलों का उल्लेख मिलता है, जहाँ छात्र-छात्रायें शिक्षा ग्रहण किया करते थे।[1]

13- उदयकिरण :

प्रस्तुतउपन्यास में उदय द्वारा कृषि विद्यालय में होती किसानी की वैज्ञानिक शिक्षा ग्रहणकरने का उल्लेख है।[2] कुश्तियादी शिक्षा के अंतर्गत तिलार्च, छतार्च, मुद्गरी, बहुर्बगीरी, बाजबानी आदि सीखने का भी उल्लेख है।[3]

14- अमरबेल :

प्रस्तुतउपन्यास में अम्बना द्वारा बड़े-बड़े संगीताचार्यों से शिक्षा पाने तथा स्कूलों और कालेजों में संगीत सीखने का उल्लेख है।[4] उपन्यासमें प्रौढ़ शिक्षा प्रणाली तथा रात्रि पाठशाला प्रावधान का भी उल्लेख है।[5] कुछ हरिजन पाठशालायें भी खोली गयी थी, जिनमें शिक्षण कार्य सम्पन्न होता था।

13- कर्तव्य भावना :

" जनता की शिक्षा साधनाओं जीसको सुन्दर परिणति को ही संस्कृति कहा जा सकता है।"[6] बुन्देलखण्ड के जन-जीवन में साधकों की कमी नहीं रही है। यहाँ के निवासियों ने कठोर साधना और निस्वार्थ कर्तव्य पालन करके, यहाँ की संस्कृति को उदार बनाने का सतत प्रयत्न किया है। यहाँ के निवासी कर्तव्य भावना से सदैव ओत-प्रोत रहे हैं और उनकी धार्मिक प्रवृत्ति सदा उन्हें सत्कर्मों कीओर प्रेरित करती रही है। वे धर्म के पालन और कर्तव्य के निर्वाह हेतु प्राणोत्सर्ग करने में भी किंचित विलम्ब नहीं होने देते थे। वर्मा जी ने धर्म को कर्तव्य से सम्बद्ध किया है। उनकी दृष्टि में, व्यक्ति के अन्तःकरण में धर्म पालन हेतु सच्ची कर्तव्य भावना

आश्रम	-1	पृष्ठ संख्या- 12	वृन्दावनलाल वर्मा
उदय किरण	-2	पृष्ठ संख्या- 81	"
	-3	पृष्ठ संख्या-138	"
अमर बेल	-4	पृष्ठ संख्या-169	"
	-5	पृष्ठ संख्या-340	
आलोक के फूल	-6	पृष्ठ संख्या- 63	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

का अभ्युदय होता रहता है । बुन्देलखण्डवासियों में ' व्यक्तिगत हित की अपेक्षा सामूहिक हित की भावना का बाहुल्य रहाहै। राजा, गृहस्थ, कृषि-मुनि आदि सभीने , निःस्वार्थ कर्तव्य पालन करके, अपने दायित्व का निर्वाह किया है। अन्तर्मन व्यवस्था तो कर्तव्य पालन की प्रेरणा प्रोत बनी रही । नर हो या नारी, बालक हो या वृद्ध, सभीने बिना यश की तीव्र कामना किये हुये, मस्त-चित्त होकर निष्ठा और दृढ़ता के साथ अपने कर्तव्य को पूर्ण कियाहै । वर्मा जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से लोगों की कर्तव्य भावना का उल्लेखकियाहै।

1- गढ़ कुण्डार :

प्रस्तुतउपन्यास में अर्जुन पहरेदार की दृढ़ कर्तव्यभावना को दर्शाया गया है । वह बिना सामन्त की अनुमति के गढ़ी का फाटक नहीं खोलता तथा सामन्तों के द्वारा अनाधिकृत चेष्टा करने पर, दृढ़ता के साथ उन्हें उत्तर देता है कि " दिल्ली से रायपिथौरा आये हैं, पै खोलत हौं मैं फाटक, सो आवैं मनुआखान लियो। :1: :: भोर आइयो तब मिलहैं, सामन्त ।" अर्जुन के द्वारा कहे गये इन शब्दों में भी उसकी कर्तव्यभावना परिलक्षित होतीहै कि," महाराज, और तो मैं कछू नहीं कत, पै आप साँची खानिओ के मोरे तन की अपुन के लागैं चोटी-चोटीकट कै गिर जाये, तो गिरा देहौं :2: ।" नाग देव ने शत्रुओं से डट कर मुकाबलाकियाऔर अपने कर्तव्यका पालन किया । अपने दायित्व के निर्वाहमें उपरालखलोचता है कि," रनवासकी रक्षा हो गयी । अब मैं चढ़िबर जाऊँ, तो कोई चिन्ता नहीं :3: ।" मोहनलाल बुन्देला अपनी भावनायें व्यक्तकरते हैं, जिससे ' उनकी कर्तव्य परायणता का आभास मिलता है । वह कहते हैं कि," जब तक यह भी बुन्देला जीता रहेगा, चुनौति की रक्षा के लिये शरीराघातमें को उद्यत रहेगा :4: ।" दिवाकर ने अपने प्राणों को संकट में डालकर, तारा की अर्थदेश चिकित्साकी और अपने कर्तव्यका निर्वाह किया

गढ़कुण्डार -1 पृष्ठ संख्या- 17 वृन्दावनलाल वर्मा
-2 पृष्ठ संख्या- 71 "
-3 पृष्ठ संख्या- 58 "
-4 पृष्ठ संख्या-142 "

जिसके लिये अपने प्राण का मोह उसका कृत्य हो जाता है[1]। सारा ने विद्याधर के प्राण बचाने का सतत प्रयत्न किया। वह रामचरण से प्रार्थना करती है कि," निरपराध निराधारिणी एकप्राण की रक्षा मांगती है। यदि तुम्हारा कार्यों फल मिलता है,तो उसके अतिरिक्त कुछ नहीं चाहती[2]।" इनविचारों में उसकीसच्ची कर्तव्य भावना निहितहै ।

2- विराटा की पद्मिनी :

प्रस्तुत उपन्यास में देवीसिंहने अपनेकर्तव्य का उस समय निर्वाहकिया,जबकि कालपी के सैनिकों ने दतिया नगर पर हमला कर दिया था। उससमय देवी सिंह दुल्हाजेबा में था। वह" म्यान कालांगा पहिने और मुट्ठ बांधे तलवार चाँजता हुआ,शत्रुओं पर आ टूटा और शत्रुओं को परास्त होना पड़ा। उसकी कर्तव्य भावना समय-असमय नहीं देखतीथी[3]। कुंवर की कर्तव्य भावना उनपत्रों में व्यक्त की गयीहै । उसका कथन है कि," धर्म की रक्षा करना कर्तव्य है । कर्तव्यपालन करना धर्म है। आपकी आज्ञा पालन करना धर्म,कर्तव्य और सत्कर्म है।[4] मोमती कथन है कि," मैं ठाकुर की बेटीहूं । अपना कर्तव्य पालन करूंगी ।[5]

3- कलार :

प्रस्तुतउपन्यासमें" कर्तव्यभावना उससमय परिलक्षितहोतीहै,जबकि उसपरिवार को शत्रुओं द्वारा घेर लिया जाता है और उनसे आत्मसमर्पणकरने को कहा जाता है। तब बेनिसिंहनाथ करते है कि," या तो हम शत्रु को मौत के घाट उतार कर राज्य करेंगे अथवा महादेव जी के धाम को सिधारेंगे,पर सिर नहीं झुकायेंगे।[6]" महन्त जी भी कर्तव्यभावना से ओत-प्रोत हैं। वे वासनाओं से परे रह कर ,किये जाने वाले कर्मों को उचितमानते हैं तथा अखाड़ों काकर्तव्यपरोपकार,अलख जगाने

गढ़ कुण्डार	-1	पृष्ठ संख्या- 286	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2	पृष्ठ संख्या-498	"
विराटा की पद्मिनी	-3	पृष्ठ संख्या- 29	"
	-4	पृष्ठ संख्या-227	"
	-5	पृष्ठ संख्या-336	"
	-6	पृष्ठ संख्या- 92	"

योग क्रियायें करने तथा योगबल अर्जित करने का उपदेश देते हैं :1:। "दसीष, गुलाब बनने के उपरांत गुलाबों के कर्तव्यों का पूर्ण पालन करते हैं। उनका कथन है कि," यदि गुलाब होने के कारण मैं पंखुड़ी का कर्तव्य पालन नहीं कर सकूंगा, तो कांटों और डाली अलग रहा दूंगा :2:।" उनके विचारों में कर्तव्य भावनायें अन्तर्निहित हैं।

4- झांसी की रानी :

प्रस्तुतउपन्यास में कुछ स्थलों पर कर्तव्य भावना का उल्लेख मिलता है। मनु की उक्तभावना में भाग्य की अपेक्षा कर्तव्य की महत्ता को स्वीकार किया गया है। वह कहती है कि 'यावाचया भाग्य में दूर और दीना भी लिखा रहता है। यदि देना है, तो अनेक सिंह त्यार होते होंगे और अनेक त्यार सिंह :3:।" रानी लक्ष्मीबाई कहाकरती थी कि भगवानकृष्ण की वाणी को याद रखो 'कि हमको केवल कर्म करने का अधिकार है। कर्म के फल का नहीं :4:।" नाना का कथन है कि हमारा जीवन सिर्फ अपने धर्म, देश और स्वराज्य के लिये तन मन धन से तैयार है। लोग जिन्दगी भर लालच देखना कर्तव्यभिमाने को तत्पर हैं :5:।" रानी लक्ष्मीबाई की भावना थी कि," जीवन कर्तव्य पालन का नाम है- कर्तव्य पालन करते हुये मरना जीवन का ही दूसरा नाम है :6:।" झांसी की रानी, अपनी उच्च विचारों कर्तव्य भावना के कारण ही स्वराज्य के लिये आजीवन पर्यन्त कर्तव्यों अमर हो गयी।

5- मुगनयनी :

प्रस्तुतउपन्यासमें 'शिवपुरम के राजों में' उनकी कर्तव्य भावना प्रदर्शित गयी है। वह कहती है कि," जीवन में कुछ करना, श्रम से रोटीउपार्जन करना और शिवका नाम लेना, यही मोक्ष है :7:।" राजा मान सिंह कहिवारहे कि," कर्म मुख्य है, जो उससे

कथनार	-1	पृष्ठ संख्या-181	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2	पृष्ठ सं.T-339	"
झांसी की रानी	-3	पृष्ठ संख्या- 25	"
	-4	पृष्ठ संख्या-163	"
	-5	पृष्ठ संख्या-239	"
	-6	पृष्ठ संख्या-398	"
मुगनयनी	-7	पृष्ठ संख्या- 35	

योग क्रियायें करने तथा योगबल अर्जित करने का उपदेश देते हैं :1: । "दधीच, गुलाब बनने के उपरांत गुलाबों के कर्तव्यों का पूर्ण पालन करते हैं। उनका कथन है कि," यदि गुलाब होने के कारण मैं मधुमक्खी का कर्तव्य पालन नहीं कर सकूँगा, तो कोयल और तोती अलग रहा दूँगा :2: ।" इनसब विचारों में कर्तव्य भावनायें अन्तर्निहित हैं ।

4- झाँसी की रानी :

प्रस्तुतउपन्यास में कुछ स्थानों पर कर्तव्य भावना का उल्लेख मिलता है । मनु की उक्तभावना में भावुक की अपेक्षा कर्तव्य की महत्ता को स्वीकार किया गया है । वह कहती है कि "यावावया भाग्य में दूर और दोना भी लिखा रहता है। यदि ऐसा है, तो अनेक सिंह स्यार होते होंगे और अनेक स्यार सिंह :3:।" रानी लक्ष्मीबाई कहाकरती थी कि भगवानकृष्ण की आज्ञा को याद रखो "जिसको केवल कर्म करने का अधिकार है। कर्म के फल का नहीं :4:।" नाना का कथन है कि हमारा जीवन बलिदान अपने धर्म, देश और स्वराज्य के लिये तन मन धन से तैयार है। लोग जिन्दगी भर लालच देखना कर्तव्यभिमान को तत्पर हैं :5: ।" रानी लक्ष्मीबाई की भावना थी कि," जीवन कर्तव्य पालन का नाम है- कर्तव्य पालन करते हुये मरना जीवन का ही दूसरा नाम है :6:।" झाँसी की रानी, अपनी उच्च निस्वार्थ कर्तव्य भावना के कारण ही स्वराज्य के लिये बाहुबल पराक्रम करीं और अमर हो गयी ।

5- मृगनयनी :

प्रस्तुतउपन्यासमें 'गिरिवर्गम के राजों में' इसकी कर्तव्य भावना उपजायी गयी है। वहकहताहै कि," जीवन में कसम करना, श्रम से रोटीउपार्जन करना और पिताका नाम लेना, यही गौरव है :7:।" राजा मान सिंह कहियारहे कि," कर्म मुख्य है, जो उससे

कथनार	-1	पृष्ठ संख्या-101	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2	पृष्ठ सं० T-339	"
झाँसी की रानी	-3	पृष्ठ संख्या- 29	"
	-4	पृष्ठ संख्या-163	"
	-5	पृष्ठ संख्या-239	"
	-6	पृष्ठ संख्या-398	"
मृगनयनी	-7	पृष्ठ संख्या- 33	

लगाना चाहते हैं, वे भी वर्षा-वर्षा की घनघटाएँ छूटते हैं ।:1:"उनका कथन है कि, "काम शीलकुछ है । एक काम से मन हटे तो दूसरा करने लगे।:2:" वे कला के अनुशीलन और कर्तव्य पालनको एक साथ करनेकी कामना करते हैं।:3:"विजयने तो यहाँ तक कहा है कि," काम करते-करते मनुष्य स्वर्ग लोक की प्राप्ति भी कर सकता है ।:4:"लाखाजी का मत है कि " हम लोगों को भगवान ने भुजाओं में बल दियाहै और काम करने की लगन फिर कोई भीकार्य दुष्कर नहीं हो सकता ।:5:" " देश को निठल्लों और निकम्मों ने डुबोया है :6:"यह कह कर कर्तव्य की महत्ता को प्रतिपादित किया गया है । लाखाजी ने राष्ट्र की गद्दी की रक्षा करने तथा अपनेकर्तव्यपालन करने में प्राणोत्सर्ग करके एक आदर्श प्रतिस्थापित किया था ।:7:"

6/ दुर्गाबाई :

प्रस्तुत उपन्यास में दुर्गाबाई की कर्तव्य भावनाओं का विशद रूप प्रस्तुत किया गया है । उसका विचारथाकि," जब कर्तव्य सामने आये तो दृढ़ता के साथ पालन करो । एक कर्तव्य चाहे किसी पापी को मारने से सम्बन्धरखता हो, चाहे किसी दीन-दुखियाके दुखहरण, हित करने या किसीनिष्काम कर्म से सम्बन्ध रखता है, तथा अपने आराध्य श्रीकृष्ण सखा से, समर्पणऔर दत्तचित्त होकर करते रहो।:8:" इसका दृढ़ निश्चय था कि," हम अपने पराक्रम द्वारा उठेंगे:9:"वह कर्तव्यपालन को भी योग का अंग मानती थी ।:10:" उसकाकथन था कि," मैं अपने पिता की लाड़ली बेटी हूँ,जीवन पर्यन्त दृढ़ता के साथ काम करूँगी और कर्तव्यका पालन करूँगी ।:11:" और नारायण अपनी माँ से प्रेरणा पाता है और कर्तव्य की ओर उन्मुख होकर कहता है कि ," कार्य साधयेम वा शरीरं पातयेयम् वा "- या तो अपने कर्तव्य कार्य को साधनामें लगा रहूँगा या प्राण दे दूँगा ।:12:

6/2 अवतरण 2 प्रस्तुत उपन्यास में सम्पति शिवपूजी का कथन है कि," शिक्षा और संस्कृति का प्रसार राज्य का बड़ा कर्तव्य है ।:13: [illegible] उदय की ओर प्रेरित किया करते थे।:14:"

मृगनयनी	-1 पृष्ठ संख्या-42	उपन्यासकार वर्मा
	-2 पृष्ठ संख्या-103	"
	-3 पृष्ठ संख्या-392	"
	-4 पृष्ठ संख्या-439	"
	-5 पृष्ठ संख्या-200	"
	-6 पृष्ठ संख्या-294	"
	-7 पृष्ठ संख्या-428	"
दुर्गाबाई	-8 पृष्ठ संख्या- 28	"
	-9 पृष्ठ संख्या- 44	"
	-10 पृष्ठ संख्या-245	"
	-11 पृष्ठ संख्या-223	"
	-12 पृष्ठ संख्या-265	"
अवन्या बी?	-13 पृष्ठ संख्या 101	"
वही	-14 पृष्ठ संख्या 81	

7- अर्जुन विषाद :

प्रस्तुत उपन्यास के अंतर्गत, जीवन में परिश्रम की महत्ता और कर्तव्यपालन की अनिवार्यता पर बल दिया गया है। सौम्य ऋषि अपने शिष्यों को उपदेश देते हैं कि प्रातः काल के लिये संकल्पों को सोचो, जिन कृत्यों का स्मरण करो- कितना सोचा था, कितना कर पाया।"[1] उनका कथन था कि," श्रम सबसे उत्तम है, सबका राजा है।"[2] वे आस्तिता से कहते हैं कि," सन्ध्या कर्म की चिन्ता मत करो! कुछ कर्तव्य शेष है, जो उसके अतिरिक्त महत्व के होते हैं।"[3] सौम्य ऋषि का विचार था कि," बिना प्रवृत्ति के जो सेवा करता है, वह शीघ्र ही पतन पर पहुँच जाता है।"[4] वे ज्ञान और कर्म का सामंजस्य जीवन का पर्याय मानते थे।[5] अर्जुन ने अपनी कर्तव्य भावना दर्शाते हुये कहा कि," राज्य भोग के विस्तार की मुझे कोई भी चाह नहीं है। पिताजी! काम करने वाला सौ पैरों के नीचे रह कर भी बहुत कुछ कर सकता है।[6] अन्त में रोमक के इन विचारों में उसकी कर्तव्य-भावना परिलक्षित होती है कि," बिना श्रम और परिश्रम के देवताओं की मित्रता प्राप्त नहीं हो सकती है।"[7] अपने कर्तव्यपथ देह को दांव पर लगा देने वाले अधिपति को कौन भूल सकता है।[8]

8- कीचड़ और कमल :

प्रस्तुत उपन्यास में रामदेव कैमाश्रम ने कर्तव्य-भावना को दर्शाया गया है। वे कहते हैं कि," परिश्रम और अभ्यास से ही विद्या की प्राप्ति होती है। तपस्या से ही सरस्वती देवी प्रसन्न होती है।"[9] उनका कथन है कि," यदि स्वराज्ये- हम स्वराज्य के लिये सदा प्रयत्नशील रहें।"[10] वे भगवान कृष्ण के आदेशों को दोहराते हैं कि "जब, जिस काम में लगे हो, कर्तव्यपालन के काम में चाहे वह काम सतोगुण वाला हो, चाहे रजोगुण वाला हो, चाहे तमोगुणवाला, उसे डट कर करो।"[11] सदानन्द

अर्जुन विषाद	-1 पृष्ठ संख्या -43	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2 पृष्ठ संख्या- 114	"
	-3 पृष्ठ संख्या-159	"
	-4 पृष्ठ संख्या-184	"
	-5 पृष्ठ संख्या-185	"
	-6 पृष्ठ संख्या-187	"
	-7 पृष्ठ संख्या- 21	"
	-8 पृष्ठ संख्या-290	"
कीचड़ और कमल	-9 पृष्ठ संख्या- 92	"
	-10 पृष्ठ संख्या-162	"
	-11 पृष्ठ संख्या-294	"

की भावनाओं कि," अपना कर्तव्य पालन करो साथ ही की के साथ समता का भाव
:1:
रखो ।"

9- देवगढ़ की मुस्कान :

प्रस्तुत उपन्यास में ' राजा विजयपाल सिंह में कर्तव्यभावना से प्रेरित होकर
:2:
नदी में ' कूद कर एक मुसक के प्राण बचा लिये थे । उनका कथन था कि, "पहले
:3:
कर्तव्य, भोजन, शयन उसके उपरांत ।"

10- टूटे कांटे :

प्रस्तुत उपन्यास में मोहन की कर्तव्य भावना को प्रकाशित हुये बताया गया है कि
," वह काम के एक-एक धागे को बीन कर सुलझा कर रखा था। उसके मन में ' आकांक्षा
:4:
सबसे आगे बढ़ जाने के लिये घूँट-सी मारती थी ।" उसका विचार था कि, अपनी रक्षा,
:5:
अपने खेतों की रक्षा और घरबार की रक्षा, यही सिपाही का धर्म है ।" उपन्यास
:6:
में ' चौधरिन, मूरजाई से कहती है कि," खूब मेहनत करियो, और खूब खाइयो, भला।"
:7:
मूरजाई का विचार है कि वह" भजन और काम-काम और भजन" में रत रहेगी।" इन
भावनाओं में कर्तव्य निहित है ।

11-रामगढ़ की रानी :

प्रस्तुतउपन्यास में स्वराज्य की अभिलाषा में ' रानी प्राण-पण से संघर्षरत
रही और वीरगतिको प्राप्तहुई। वह त्याग-तपस्या के जीवन को अपनाने कीप्रेरणा
:8:
देती थी । वहाँ साथ आध्यात्मिक और भौतिक-दोनों कर्तव्यों के समन्वय पर
:9:
बल देते थे। "

12- माधवजी सिन्धिया :

प्रस्तुत उपन्यास में ' राम शास्त्री की भावना को प्रकाशित हुये बताया गया
है कि," धर्मचिन्ता के साथ कर्तव्य पालन में ' सदा उत्साहित रहना चाहिये ।"::

कीचड़ और कमल	-1 पृष्ठ संख्या-282	वृन्दावनलाल वर्मा
देवगढ़ की मुस्कान	-2 पृष्ठ संख्या- 75	"
	-3 पृष्ठ संख्या-180	"
टूटे कांटे	-4 पृष्ठ संख्या- 23	"
	-5 पृष्ठ संख्या- 81	"
	-6 पृष्ठ संख्या-214	"
	-7 पृष्ठ संख्या-353	"
रामगढ़ की रानी	-8 पृष्ठ संख्या- 31	"
	-9 पृष्ठ संख्या- 49	

जो अपना पुरुषार्थ आठ घण्टे काम नहीं करे, उसे भोजन का अधिकार नहीं है।[1] माधव की हिन्दू-संस्कृतिराज्य की स्थापना हेतु सदैव प्रयत्नशील रहे और कर्तव्यों का पालन करते रहे।"[2]

13- कुण्डली चक्र :

प्रस्तुत उपन्यासमें कर्मठों की महत्ता को प्रतिपादित करते हुये, अंकित कहता है कि," इस क्रीडा-मान्यक्षेत्र में विचारक कर्मकर्ता भी हुये हैं। वे लोग जीवन में अपने सिद्धान्तों का कार्य रूप में प्रतिपादनकरते थे।[3] रतन कुमारी तन्मयता के साथ सतियों के चरित्र पर लिखी पुस्तक का अध्ययन करती है और पुस्तक में समझाये गये सभी कर्तव्यों का पालन करतीहै।"[4]

14- प्रत्यागत :

प्रस्तुत उपन्यासमें मीरा कर्तव्य भावना से प्रेरितहोकर दृढ़ निश्चय से कहता है कि," निकम्मों पर कृपा करना ही कौन है? कुछ करके दिखाऊँगा।"[5]

15- आवत :

प्रस्तुत उपन्यासमें अध्यापक दीप के अन्तःस्थल में कर्तव्यभावना जागृत करने के लिये कहते हैं कि," परिश्रम करते रहो तो तुम भीकुछ कर सकते हो।" इस उपदेश से वह प्रेरित होकर कर्मठ बनने का निश्चय करताहै और उसे" भान होता है कि कष्टों से लड़-भिड़ कर जो अपने पुरुषार्थ की स्थोरी और मुस्कान बचा ले जाये, वही कुछ कहलाने योग्य हो सकताहै।"[7]

16- संगम :

प्रस्तुत उपन्यास में कायस्थ लड़कों की एक मण्डलि में कर्तव्य भावना से प्रेरित होकर चोरों के दोनियों की सहायता की,[8] श्री राम चरण की कर्तव्य भावना ने उसे

माधव की सिद्धियाँ	-1	पृष्ठ संख्या-323	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2	पृष्ठ संख्या- 495	" "
कुण्डली चक्र	-3	पृष्ठ संख्या-19	"
	-4	पृष्ठ संख्या-156	"
प्रत्यागत	-5	पृष्ठ संख्या-20	"
आवत	-6	पृष्ठ संख्या-65	"
	-7	पृष्ठ संख्या-166	"
संगम	-8	पृष्ठ संख्या-108	

सोचने को विवश किया कि," एक दिन सबको मरना है। यदि बीड़ियों की सेवा में देह जाये,तो क्या रहेगी ।" :1: राधाबेटी अपने " छोटे-छोटे निर्लज्ज हाँड़ा पैरों को एक जगह ठारे-ठारे मोटे होने देना अनुचित मानती है और कर्तव्य की ओर उन्मुख होती है।" :2:

17- कड़ी न कभी :

प्रस्तुत उपन्यास में ' अपने पगड़ी बदल भाई लखन के बीमार होने पर,उसके उपचार और जीवनोपार्जन हेतु देह तिड़ने उत्साह और लगन के साथ कठोर परिश्रम किया। उसकी कर्तव्य-भावना ने अन्यमजदूरों को आश्चर्य चकित कर दिया।" :3:

18- अमर बेल :

प्रस्तुत उपन्यास में टकल,कर्तव्य भावना से ओत प्रोत है । उसके विचार हैं कि ," मैं ने जिये जीवन में जो कुछ भी बहुतसुन्दरहै,वह काम है।":: करो कर्म करम! :4: पसीने से नहीं नहा लो । मन चिन्ता-वाहाओं को सदा ले जायेगी।"::::: दीपों की जगमगाहट में क्या होता है। पसीनों बीजुरों से ही लक्ष्मी प्रसन्न हो सकतीहै।" ::: :5: :6: हम लोग निर्धन हैं। श्रम ही हमारा बल और धन है।" :7: सनेहीके विचारों में भी कर्तव्य भावना परिलक्षितहोती है। उसका कथनहै कि" अच्छा हम लोगों को प्रश्न करना है किअपने भीतर ऐसा स्वाभाविकपन्न करें,जो कठिनार्यों पर हँस दे और हाँड़ा में लिये कार्यों को समाप्तकरके ही दम लें ।" :8: आगे वह कहता है कि," जैसे समय अनन्त है,वैसे ही काम भी अनन्त है; आओ हम-तुम काम की अगली कड़ी को पकड़ें ! :9:

19- सोना :

प्रस्तुतउपन्यासमें ' श्रमा नीकर्तव्य भावना के उत्कृष्ट रूप को दर्शाया गया है। :10: उसका विचार है कि," लक्ष्मी जी हाँड़ा के श्रम से ही प्रसन्न होतीहै । ::: निकम्मेपन से काम नहीं चलता ।" :11: वह कहानी कीपुष्टि कहानी के कथारा करना चाहती है।" :12:

सोना	-1	पृष्ठ संख्या-112	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2	पृष्ठ संख्या-167	"
कालीनकला की अमरबेल	-3	पृष्ठ संख्या- 13	"
	-4	पृष्ठ संख्या- 98	"
	-5	पृष्ठ संख्या-120	"
	-6	पृष्ठ संख्या-121	"
	-7	पृष्ठ संख्या-137	"
	-8	पृष्ठ संख्या-328	"
	-9	पृष्ठ संख्या-401	"
सोना	-10	पृष्ठ संख्या- 39	"
	-11	पृष्ठ संख्या-173	"
	-12	पृष्ठ संख्या-182	"

उसका कारण है किसान-काम छोड़े। ऐसा काम न हो कि जिसमें सरस्त डिग जाये।" :1:
रमा के प्रभाव से अन्नू में कर्तव्य भावना का उदय होताहै। वह इस सत्य को स्वीकार करने लगता है कि," परिश्रम न करने वाला कभी सुखी नहीं रह सकता।" :2:
अन्त में रमा, अन्नू से स्पष्ट शब्दों में कहतीहै कि," फूलों की सेज और श्रम का संग कभी नहीं हो सकताऔर न होगा।" :3:

20- उदयकिरण :

प्रस्तुतउपन्यास में स्त्रियों के द्वारा गाये जाने वाले लोक गीत में कर्तव्य भावना निहित है। स्त्रियाँ गाती है :-

कल वेली हुवेला लाल जी ::: सब की तो काम करूँ,
हंस-हंस के काम करूँ - बड़ी मेहनत लेवलाल जी .." :4:

:::: :::: :::: ::::

सूरज बड़ आयो सीस पे अग्नि दोपहरी होय,
जाके पेड़ मेल पे बू ! काम करे कछु होय ।।" :5:

डाकर गाँव के निवासियों को अपने धन और धर्मों का गर्व था।" :6: जिला अधिकारी अपनी कर्तव्य-भावना को प्रकाशितकरते हुये ग्रामीणों को सम्बोधित करते हुये कहते है कि," छूट जाइये, और छूटे रहिये काम पर, आपस में झगड़े मिटाइये, मिल जुलकर काम करिये। :7: उपन्यास में " कर्म प्रधान विश्व करि राखा," :8: पर भी बल दिया गया है।

21- अमरज्योति : प्रस्तुत उपन्यास में देश के लिये प्राणों की बलि के लिये अमर जैसा साहसी युवक तत्परहै। वह देश की सेवा में अपना जीवन व्यतीत करने का इच्छुक है। उसमें यह भावना कर्तव्य से सम्बद्ध है। :9:

14- जाति वाद :

प्राचीन काल से बुन्देलखण्ड में जातिवाद का रूप सदा विद्यमान रहा है। यहाँ विभिन्न जातियाँ और उपजातियाँ अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिये

सोना	-1 पृष्ठ संख्या-191	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2 पृष्ठ संख्या-246	"
	-3 पृष्ठ संख्या-247	"
उदय किरण	-4 पृष्ठ संख्या-94	"
	-5 पृष्ठ संख्या-110	"
	-6 पृष्ठ संख्या-118	"
	-7 पृष्ठ संख्या-129	"
	-8 पृष्ठ संख्या-178	"
अमरज्योति	-9 पृष्ठ संख्या-15	

प्रवृत्तियाँ चली रहीं । लोगों में अपनी जाति के प्रति गहन आस्था थी । वे अपनी जाति के प्रति पुनरुत्थान हेतु सजग और तत्पर रहे । जाति की प्रबल भावना ने समाज में ऊँच-नीच की भावनाको जन्म दे दिया, जिससे जहाँ एक ओर जातीय संगठनों का निर्माण हुआ, वहीं दूसरी जातिके प्रतिलोगों की आस्था निर्बल हो गयी। यहाँ के निवासियोंमेंजाति स्वाभिमान का विकास कम परिलक्षितहोता है।

जातिवाद ने जहाँ समाज मेंछूता छूत, वहीं सुधारों को भी जन्म दिया । विवाह सम्बन्धोंमेंभी अपनी जातिऔर उपजातिको प्रधानता दी गयी । जाति के बन्धनोंको तोड़ने वाला, दण्ड का भागी होता था और उसे हेय दृष्टि से देखा जाता था । वर्मा जी ने अपने उपन्यासों में बुन्देलखण्ड में व्याप्त जातिवाद और उसके दूषित परिणामोंका उल्लेख किया है ।

1- गढ़ कुण्डार :

प्रस्तुत उपन्यास में लोगारों और बुन्देलों का जाति स्वाभिमान चरम सीमा पर पहुँच सकक्रिय सकक्रिय जाता है। दोनों ही अपनी जाति को बड़ा मानतेहैं । नाग लोगारजाति का युवराज है । वह अभिमन्यु से वार्तालाप करताहै, जिससे जातिवाद का आभासमिलताहै। उसका कथन है कि:: " भूल जाओ तो ठाकुर न कहना, चमार कहना ।" :1: लोहन यह बुन्देलाथेऔर हेमवती उनकीपुत्री थी । नाग चाहता था कि उसका विवाह हेमवती से हो जाय । इस सम्बन्ध में अभिमन्यु नाग से कहता है कि," लोहन्यास जाति-पाँतिका कठोर उपहास करेगा।" इसपर नाग अहंकार में कहता है कि," मैं लोगार ठाकुर हूँ वह भी हमसे ऊँचा नहीं है।" :2: नाग की प्रणय याचना को जब हेमवती ने सुना तो उसमें जाति का अहंकार जागृत हो गया और वह नाग से बोली," मैं क्षत्रिय कन्या हूँ । बुन्देला हूँ। आप लोगार हैं।जाइये ।" :3: यह सुन कर नाग क्रुद्ध हो गया और विचारने लगा कि," नागवती मुझको तुच्छ समझती है और अपने को क्षत्रिय! ::: और मुझको ओछी जाति का। कभी बुन्देलों के साथ तलवार का काम पड़े,तो बतलाऊँगा कि मैं किस जातिका हूँ ।" :4: उपन्यास में कहानियाँ

गढ़ कुण्डार -1 पृष्ठ संख्या- 23 वृन्दावनलाल वर्मा
-2 पृष्ठ संख्या- 24 "
-3 पृष्ठ संख्या-336 "
-4 पृष्ठ संख्या-344 "

गया है कि उसमय जाति-पाँति और छूत-नीच का भेद भाव बहुत काफी था ।" :1:
एक दिन ऐसा आया कि," चारों ओर डाँगर और बुन्देले आपस में जुट गये । बुन्देलों ने मारा काफी था, इसलिये डाँगरों ने वार न पाया। अधिकांश वहीं पर मारे गये ।" :2: अर्जुन, कुम्हार जातिकासैनिकथा, जिसे गोपीचन्द हेय दृष्टि से देखते थे । वह अर्जुन से कहते हैं कि," तुम नरीजो नीच जाति के लोगों को देखने से महाराज को पाप लगेगा । तू महाराज के सामने नहीं जा सकता ।" :3: इन शब्दों में जाति के प्रबल रूप को दर्शाया गया है। इन्हीं भावनाओं के प्रतीक चित्रण डाँगर है, वे स्वाभिमान वश अर्जुन से कहते हैं कि," अरे तू अन्त में कुम्हार जीतो ठहरा" इसपर अर्जुन उत्तर देता है कि," वे डाँगर जितनी ठकुराइस दिखाउत उतनी तो बुन्देला नहीं कहारत ।" :4:

3- विराटा की पद्मिनी :

प्रस्तुतउपन्यास में बुन्देलों की जाति-गरिमा को दर्शाते हुये बताया गया है कि," यह बुन्देलों की कारत है। दूल्हा पालकी से नहीं उतरेगा ।" :5: इसी प्रकार मोमती को अपनी जाति का अभिमान था वह कहती है कि," मैं ठाकुर की बेटी हूँ, इसलिये नहीं डरती ।" :6: इन विचारों से जातिवाद का आभास मिलता है।

3- मुसाहिबजू :

प्रस्तुत उपन्यास में दर्शाया गया है कि भिन्न जाति के लोगों का छुआ लोग नहीं खाते थे। मुसाहिब जू के सैनिकों में सहसर थे, उन्होंने लूट-पाट कर दी, जो वह भी कहार थे। वह कहती है," गाड़ियों को इन लोगों ने लूट लिया था। पठान काबू में नहीं रहे :: ये लोग नीची जाति के थे- भंगी ।" :7: उपन्यास राम सिंह के कथन से जातिवाद की पुष्टि होती है। वह दतिया के राजा से कहता है कि," हुजूर, पहले जमाने से सुनते आये हैं- ब्राह्मण अवध्यी जो कुछ दण्ड, क्षत्रिय को कुछ और, वैश्य को कुछ और दूसरे प्रकार का, और शूद्र को अत्यन्त कठोर ।" :8:

* [illegible]

गढ़ कुण्डार	-1 पृष्ठ संख्या-278	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2 पृष्ठ संख्या-478	"
	-3 पृष्ठ संख्या-127	"
	-4 पृष्ठ संख्या-140	"
विराटा की पद्मिनी	-5 पृष्ठ संख्या- 20	"
	-6 पृष्ठ संख्या- 63	"
मुसाहिब जू	-7 पृष्ठ संख्या- 43	"
	-8 पृष्ठ संख्या- 73	

4- टूटे काँटे :

प्रस्तुत उपन्यास में रोमी के कथन में जातिवाद की गंध मिली है। वह कहती है कि," चौधरिन तो हैं-ही,तुम सरीखी डोम-चमारिन है क्या ।"[1] उपन्यास में मोहन के विचारों को पात्रों में पहचाना गया है । दोषा के घर में जोशा-," और छुआछूत कायाचार-विचार यहाँ इतना ज्यादा है जिसे जल उठता है। मैं जाट ठाकुर हूँ । अपने को किसी भी जाति वाले से छोटा नहीं समझता हूँ ।"[2]

9- कथनार :

प्रस्तुत उपन्यास में कई भी पात्रों में जातिवाद परिलक्षित होता है । मृत्युदण्ड से पूर्व वह कहता है कि," यह तोता पानी मंगवाओ,ब्राह्मण जाने। गोड़ आगुलाँ के छोटा का हुआ नहीं मिलेगा ।"[3] भानसिंह का विचार है कि," हम लोग अपने को सुनारों से ऊँचा समझते हैं।"[4] अहीर जाति के व्यक्ति का कथन है कि," हम अहीर है,किसीसे नहीं डरते ।"[5]

6- आँसी की रानी :

प्रस्तुत उपन्यास में जातिवाद का कोढ़ा विभिन्न पात्रों पर परिलक्षित होता है । अनेक कारण कहने के संकेत में दोषा मिलता है कि," ब्राह्मण,क्षत्रिय वैश्य अनेक कारण करते थे। शूद्र अनेकों अधिकारी नहीं। अन्यछूटी जातियाँ अनेक कारण कर सकती थी ।"[6] अमुक शूद्र है अमुक वर्ण इस सम्बन्ध में जातिवाद होता रहा था। औरंगजेब,मजहबानी थी । उसका विचार था कि," अगर हमारी जाति में कोई गुलाम है,तो वह कि हम लोग छेड़खानी नहीं करते ।"[7] पण्ड विचारान थी

टूटे काँटे	-1 पृष्ठ संख्या-38	कृष्णाका लाल वर्मा
	-2 पृष्ठ संख्या-80	"
कथनार	-3 पृष्ठ संख्या-358	"
	-4 पृष्ठ संख्या-372	"
	-5 पृष्ठ संख्या- 46	"
आँसी की रानी	-6 पृष्ठ संख्या- 41	"
	-7 पृष्ठ संख्या- 53	

जातियों के अनुरूप था। शूद्रों की स्थिति अत्यन्तदयनीय थी । वे और उनकी शिक्षा और साधना के स्थान पर नहीं आसकतीथी ।:11:"उपन्यास में जातिवाद के फलते-फूलते और पनपते रूप को दर्शाया गया है ।

7- मुलायमी :

लाडलीअपने जाति अभिमान को व्यक्तकरते हुये कहती है कि," तीर-तलवार चलाना" सब गूजर कन्या सीख सकती है,तो अहीर कन्या किससे कम है।" :12: अटल और लाडली के विवाह में जाति विभिन्नता मार्ग रोड़ बनी रहती है।" :13: जोधान पुजारी ने तो सर्वोत्तकथ दिया कि," अरे राम- राम !! स्त्रियाँ और शूद्र वेद नहीं पढ़ सकते।" :14: लाडली, मुलायमी से कहतीहै कि," तुमको गूजर होने काबड़ा अभिमानहै,तो हमको भी अहीर होने का मान क्या नहीं।" :15: जाति-पाँतिके कठोर नियमोंका उल्लेखकिया गयाहै।" :16: स्थान बताया गया है किकिस समय में' मान पढ़ता है कि जिसके घोड़ा का हुआ पानी पियें,जिसके घोड़ा का न पियें।" :17: उपन्यासमें दर्शाया गया है कि," छोटी जाति का चिन्ह, चमड़ी,जिसके घोड़ा काहुआ,दूसरी जाति वाले का है ।" :18:

8- दुर्गावती :

प्रस्तुत उपन्यास में जाति वाद को भावना परदृष्टिपात करते हुये,दुर्गावती कहती है कि," अपने देश में' एकजाति,दूसरी जातिसे बिल्कुल अलग तो पढ़ नहीं है।:: एक दूसरे के छोड़ाहुआ हुआ भोजन तो क्या हुआ पानीतक नहीं पी सकती । एक दूसरे को नीचा दिखाने के प्रयत्न में' नहीं चूकती ।" :19: राजपूत जातियों को अन्य जातियाँ नीचा मानते थे तथा उनके घोड़ा काहुआ नहीं खाते थे। " :10: उपन्यास में

आँसी औरतों	-1 पृष्ठ संख्या- 95	कुन्दनलाल वर्मा
मुलायमी	-2 पृष्ठ संख्या- 23	"
	-3 पृष्ठ संख्या- 25	"
	-4 पृष्ठ संख्या- 29	"
	-5 पृष्ठ संख्या- 31	"
	-6 पृष्ठ संख्या-250	"
	-7 पृष्ठ संख्या-251	"
	-8 पृष्ठ संख्या-352	"
	-9 पृष्ठ संख्या- 23	"
दुर्गावती	-10पृष्ठ संख्या- 34	

बताया गया है कि," छुआछूत ! किसके हाथ का और परोसा खाया जाये। किस जाति वाले के हाथ का न खाया जाये,अपने बहुत बड़े,घोर रूप में प्रचलित था।" :1: कीर्ति सिंह विचार करते हैं कियदि छाते में छेकर दलपतिराम के साथ भोजन करना पड़ा तो बाद में प्रायश्चित करना पड़ेगा।" :2:

9- भूखन विक्रम :

प्रस्तुत उपन्यास में रघुवंश जाति के लोगों के प्रतिउदासीनता बतायी गयी है। वे सलाह करने के अधिकारी नहीं माने गये हैं। मेहता कविजी से कहते हैं कि," रघुवंशी तेरी यह अनाधिकार चेष्टा !" :3: यह विचार जातिवाद के पोषक हैं ।

10- सोनी आग :

प्रस्तुत उपन्यास में बताया गया है कि छुआछूत कायरता और घृणा और यह हिन्दुओं के धर्म का धब्बा था। :4:

11- कीचड़ और कमल :

प्रस्तुत उपन्यासमें अंगा की भावना जातिवाद पोषक समर्थक है । वह सोचता है कि," यदि अपने में नीची जातिवाले,तो पानी-पानी नहीं पिया जा सकता है;किन्तु जब उसे ज्ञात होता है कि वह उसी नीचजातिका है,तो कहता है कि," अरे वाह बाप तो हमारे ही है।" आदि किसी दूसरीजातिके होते तो ,"हमारे नहीं कहला सकते थे ।" :5:

12- देवगढ़ की मुसकान :

प्रस्तुत उपन्यास में नहरियों के प्रति डा.गुप्तदेव अपने विचार व्यक्त करता है," कि: कि: तुम्हारा पानी हम कैसे पी सकते है।" ब्राह्मणों के हाथ का बना भोजन अन्यजाति ग्रहण कर नहीं सकती । :6: जाति-पाँति का विचार उग्ररूप धारण किये रहता था । :7:

दुर्गावती	-1 पृष्ठ संख्या -66	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2 पृष्ठ संख्या -67	"
भूखन विक्रम	-3 पृष्ठ संख्या- 12	"
सोनी आग	-4 पृष्ठ संख्या- 70	"
कीचड़ और कमल	-5 पृष्ठ संख्या- 4	"
देवगढ़ की मुसकान	-6 पृष्ठ संख्या- 12	"
	-7 पृष्ठ संख्या- 156	"
	-8 पृष्ठ संख्या- 235	"
	-9 पृष्ठ संख्या-235	"
	-10 पृष्ठ संख्या=247	

पंडितों का कथन था कि," कुजातों को मन्दिरों में नहीं आने दिया जाता ।" :11: जनता में जातिवाद की प्रबल भावना विद्यमान थी । अपने विचार व्यक्त करते हुये लोग राजा विजयपाल से कहते हैं कि," जी महाराज,चाहे हमें मरवा डालें,हम अपना धर्म नहीं छोड़ सकते, कुजातको सुजात नहीं बना सकते।" :12:

13- लगन :

प्रस्तुत उपन्यास में नवातीय व्यक्तियों में अपनत्वकी भावनाको दर्शाया गया है ।" :13: जाति के अहंकार का भी उल्लेख मिलता है। पुनर्विवाह की प्रथा छोटी जातियों में थी,इसलिये मुन्नाद्वा,राजा से कह देतीहै कि," हमारी जाति में ऐसा नहीं होता ।" :14: जाति स्वाभिमान को दर्शातेहुये धन्नालाल कहताहै कि " ऐसी कल्पनाभी मत करो कि जाति का कोई भी कोढ़ी ऐसी लड़की को अंगीकार नहीं करेगा ।" :15: जाति विरोधीकार्य करने पर जातिदण्ड दिया जाता था।" :16:

14- प्रत्यागत :

प्रस्तुत उपन्यास में " हेमसिंहका विचारहै कि" सब अहीर तो क्षत्रिय हैं नहीं। वास्तविक क्षत्रिय तो हम ही लोग हैं।" :17: पीताराम कहता है कि," हम ठाकुरों को देख लो देखो,भले तो दीखते हैं और ऊपर यह अक्ड़ ! ::: ये लोग गरीबों को सता सता कर मोटे होते हैं।" :18: वह अपने को चन्द्रवंशी क्षत्रिय मानताहै और गजोपवीत धारणकरना समझता है।" :19: क्रोधावश वह ऐसे शब्दों में कहताहै कि," :: ठकुरा बनका बहुत घमण्ड मत करना । हम भी क्षत्रिय हैं ।" :20: तथा " हम उन डाकुओं को दिखा देंगे जिनमारी जाति कितनी भयंकर है" :21:

14- अमरज्योति : प्रस्तुत उपन्यास में अमर और ज्योति के वैवाहिक बन्धनों में जाति,मार्गदर्शक

देवगढ़ की मुस्कान	-1 पृष्ठ संख्या-253	कुन्नालाल वर्मा
	-2 पृष्ठ संख्या-247	"
लगन	-3 पृष्ठ संख्या- 21	"
	-4 पृष्ठ संख्या- 26	"
	-5 पृष्ठ संख्या- 65	"
	-6 पृष्ठ संख्या- 46	"
प्रत्यागत	-7 पृष्ठ संख्या- 38	"
	-8 पृष्ठ संख्या- 38	"
	-9 पृष्ठ संख्या- 54	"
	-10 पृष्ठ संख्या- 36	"
	-11 पृष्ठ संख्या- 59	"
अमरज्योति	-12 पृष्ठ संख्या 73	

15- संगम :

प्रस्तुत उपन्यास में नन्द राम अपनी जाति की महत्ता दर्शाते हुये कहता है कि ," मैं ब्राह्मण हूँ । मेरी पोथी पत्रा को तो न डाँड़ू से सकते हैं न तिवाड़ी।:1: ब्राह्मणों से कोई नहीं बोलता ।"बिरादरियों की पंचायतों कानिर्माण होना जातिवाद का परिचायक था ।:2:" पिताजी लाल काकड़ान ने किजिन्होंने अहीरों ऐसा कायरों काया,वे ब्राह्मण नहीं अहीरों से हुये हैं।:3:" ब्राह्मणों को उपरि शिरोमणि मानना तथा जिस जाति मेंजन्म लो,उसका उपकार करो,इसी भावना कि पोषक है।:4:

16- लोना :

प्रस्तुत उपन्यास में ' लोना-रमा के माध्यम से शहरों में जातिवाद की भावना चित्रित है। वे कहते हैं कि," हम लोनखड़ी जाति के हैं। कोई बलतरण की जातें सुनेगा तो मुझको झील में डूब कर मर जाना पड़ेगा।:5:

17- अमर बेल :

प्रस्तुत उपन्यास में ' सदाचार नगर के किसानों में जाति कौर्यधारण करने पर यह निर्णय किया जिसे मृत- पशु की लाश नहीं उठायेंगे । यह सुन्दर देवराज अपनी भावनाओं व्यक्तकरता है कि ," कितने ढीठ हो गये हैं,ये लोग । सब ब्राह्मण-ठाकुर बनना चाहते हैं। हजारों-लाखों बरस के रीति रिवाज एक दिन में मिटा :6 : इन विचारों में चित्रित कोसाहेकिजातिवाद की जड़ें बहुत गहरी हैं ।"

18- भोजन-वस्त्र एवं प्रसाधन सामग्री :

क्षेत्रीय संस्कृति में अन्य तत्वों के अतिरिक्त खेत-पूजा और खान-पान को भी समाविष्ट किया गया है ।:7:" सुन्देलखण्ड केनिवासियों के भोजन तथाखाद्य आदि में सभ्यता परिलक्षित होती है. ग्रामीण तथा कम शिक्षित लोग प्रायः

संगम	-1 पृष्ठ संख्या-12	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2 पृष्ठ संख्या-16	"
	-3 पृष्ठ संख्या-60	"
	-4 पृष्ठ संख्या-85	"
	-5 पृष्ठ संख्या-186	"
लोना	-6 पृष्ठ संख्या-15	डा० हरीलाल शर्मा
सुरेन्द्रेश उनका साहित्य	-7 पृष्ठ संख्या-18	

आभूषण धारण करते हैं। पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से जो परिवर्तन आये हैं, उनका सामान्यतः से प्रभाव पड़ा। धनी और निर्धन वर्ग के मध्य खान पान रहनसहन वेश भूषा में अंतर अवश्य मिलता है।

बुन्देलखण्ड के निवासियों का विविध प्रकार का भोजन, अपने ढंग के निराले वस्त्र और उनके पहिनने का एक अलग ढंग, वर्मा जी ने अपने उपन्यासों में बताया है। स्त्रियों की प्रसाधन सामग्री का भी विस्तृत रूप में उल्लेख किया गया है।

1- गढ़ कुण्डार :

प्रस्तुत उपन्यास में मांस-मदिरा पान का उल्लेख मिलता है। विवाह के अवसर पर तो बाराती में अधिकतर मांस-मदिरा का उपभोग किया जाता था।[11] उपन्यास में रोटी का भी उल्लेख किया गया है[12] तथा भोजन के उपरांत पान-सुपारी खायी जाती थी।[13] वस्त्रों के अंतर्गत, गुलाबी रंग की चोलीका कछोटा बांधना,[14] मुनिया रंग के कपड़े,[15] मुंडासा,[16] मर्दानी अंगरखी,[17] रंग-बिरंगे बहुमूल्य वस्त्र,[18] सिन्दूरी रंग की जलती तथा रंगीन साफा,[19] मुकुटनुमा सफेद चोली,[20] पीला अंगरखा,[21] रेशमी कमरबंद तथा उष्णीष जम्बू फूलों का उल्लेख मिलता है।[22] प्रसाधन सामग्री में रोरी कीचुम्बकी,[23] केवड़े की आँख,[24] सोने की माला तथा मणि जटित बाली,[25] रत्न जटित नक्कारदार,[26] हीरा माणिक तथा सोने की विविध आभूषणों वेशभूषाओं का उल्लेख मिलता है। बेटों में[27] पुत्रों की माला पहनी जाती थी।[28]

2- विराटा की पद्मिनी :

प्रस्तुत उपन्यास में बाँगा,[29] मुकुट,[30] साड़ी अंगरखी,[31] घुटन्ना,[32] अंगोछा,[33] तथा पेशनी[34] का उल्लेख मिलता है।

गढ़ कुण्डार	1 पृष्ठ संख्या- 436	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2- पृष्ठ संख्या-400	"
	-3 पृष्ठ संख्या-200	"
	-4 पृष्ठ संख्या-162	"
	-5 पृष्ठ संख्या-11	"
	-6 पृष्ठ संख्या-496	"
	-7 पृष्ठ संख्या-494	"
	-8 पृष्ठ संख्या-465	"
	-9 पृष्ठ संख्या-323	"
	-10 पृष्ठ संख्या-171	"
	-11 पृष्ठ संख्या-162	"
	-12 पृष्ठ संख्या-172	"
	-13 पृष्ठ संख्या- 12	"
	-14 पृष्ठ संख्या-471	"
	-15 पृष्ठ संख्या-444	"
	-16 पृष्ठ संख्या-172	"
विराटा की पद्मिनी	-17 पृष्ठ संख्या- 29	"
	-18 पृष्ठ संख्या-156	

3- मुखाविन्दु :

प्रस्तुत उपन्यास में भोजन के अंतर्गत सत्तू,[1] खीर,[2] दाल,[3] रोटी,[4] घी,[5] चावल, मांस तथा भात, गाजा,[6] सम्बाकू आदि का उल्लेख मिलता है। वस्त्रों के अंतर्गत साफा,[7] मूंगिये रंग के कपड़े तथा कुन्देलखण्डी कम्बूदार फूलों का उल्लेख मिलता है। [8] इसके अतिरिक्त रत्नजटित स्वर्ण पहुंचियां तथा गुप्त काउल्लेख भी किया गया है। [9]

4- अंगार :

प्रस्तुत उपन्यास में भोजन के अंतर्गत बताया गया है कि तृतीया के पूर्व घर प्रत्येक द्वार में कच्ची रसोई बनती है, जिसमें दाल, चावल, बड़े, भांगोड़े, बड़ी, समूची रोटी बनाई जाती है। [10] गरीब घरों का पेय छाछ है। [11] साड़ी और मसूरे जीवराज पीने का भी उल्लेख मिलता है। [12] फलाहारतथा लड्डू, जूरमा, कुकुटा आदि पकवानों को भी बताया गया है। [13] युद्धकाल में लोग चिड़ियों को मारकर खाते थे। [14] वस्त्रों के अंतर्गत बांधी पगड़ी, लम्बा अंगरखा तथा आभूषणों में कांसे के तोड़े चूल्ले और पेजनों का उल्लेख किया गया है। [15] इसके अतिरिक्त स्त्रियों के रंग-बिरंगे रेशमी वस्त्र लम्बा छहूंटा अंकार तथा पैरों में पुष्प गूंथने पर प्रकाश डाला गया है। [16] अन्य वस्त्रों में घाघर, चोलियां रंगीन लीनी साड़ी, सफेद मोटीचोली और रंग-बिरंगी चुंदड़ी का भी उल्लेख किया गया है। [17]

मुखाविन्दु	-1 पृष्ठसंख्या-14	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2 पृष्ठ संख्या-26	"
	-3 पृष्ठ संख्या911	"
	-4 पृष्ठ संख्या-27	"
	-5 पृष्ठ संख्या- 2	"
	-6 पृष्ठ संख्या-2	"
	-7 पृष्ठ संख्या-15	"
अंगार	-8 पृष्ठ संख्या-18	"
	-9 पृष्ठ संख्या-77	"
	-10 पृष्ठसंख्या-14	"
	-11 पृष्ठसंख्या-91	"
	-12 पृष्ठ संख्या-95	"
	-13पृष्ठसंख्या-160	"
	-14 पृष्ठ संख्या-292	"
	-15 पृष्ठ संख्या- 69	"
	-16 पृष्ठ संख्या-172	"
	-17 पृष्ठ संख्या-174	

5- झाँसी की रानी :

प्रस्तुत उपन्यास में भोजन के अंतर्गत अनेक व्यंजनों और मिष्ठान्न खाने का :1: मिलने का उल्लेख मिलता है। :2: वस्त्रों के अंतर्गत रेशमी तथा सूती वस्त्र, बेशकीमती कपड़ा तथा नव वधुएँ रंगीन कपड़े धारण करती थी। सप्ताह सोलह आने बुन्देलखण्डी रहन करते थे। पैर के पैजनों से लेकर पाटनी तक सब आभूषण स्थापित होते थे। :3: वेशभूषा में रानी श्वेत साड़ी और एकमोटा श्वेत दुशाला ओढ़ती :4: थी। कभी कभी वे मर्दानी पोशाक धारण करती थी। उपन्यास में पगड़ी-पटे और घूघटे का भी उल्लेख मिलता है। :5: आभूषणों में मोतियों का हार, काजल रंग बिरंगे पुष्पों की माला, :6: तथा अद्भुत वस्त्र का प्रयोग किया जाता था। :7: माथे पर सिन्दूर की बिन्दी तथा :8: पाँव में छोटे को अंगूठी पहनने का उल्लेख मिलता है।

6- मृगनयनी :

प्रस्तुत उपन्यास में :9: भोजन के अंतर्गत :10: ज्वार के पूड़े, गुड़, रोटी, मेहू-पकवान, माँस :11: :12: :13: :14: :15: :16: :17: एवं लीलापन चावल-ज्वार पूड़ा, मट्ठा, तथा शराब, पूड़ा-पड़ी तथा :18: :19: :20: :21: एवं पूल पकवान, चिड़ियों और मछलियों का सर्वांगली सुअर का मांस, तथा ज्वार की :22: :23: रोटी का उल्लेख है। वस्त्रों में, ओढ़नी, मोटे लंहगे का कपड़ा, कंचुकी, नटों के वस्त्र-:24: मेली चोलियाँ, पटे पायजामे तथा :25: चोली मोटी लाल चोली, मोटी छींट की चोली, :26: रंग-बिरंगी ओढ़नी, मोटे छींट के लंहगे, मोटी-मोटी लाल ओढ़नी, रेशमी रंगीन

झाँसी की रानी	-1 पृष्ठ संख्या-464	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2 पृष्ठ संख्या- 17	"
	-3 पृष्ठ संख्या- 97	"
	-4 पृष्ठ संख्या-137	"
	-5 पृष्ठ संख्या- 17	"
	-6 पृष्ठ संख्या- 69	"
	-7 पृष्ठ संख्या-151	"
	-8 पृष्ठ संख्या-137	"
	-9 पृष्ठ संख्या- 10	"
मृगनयनी	-10 पृष्ठ संख्या- 28	"
	-11 पृष्ठ संख्या- 84	"
	-12 पृष्ठ संख्या-109	"
	-13 पृष्ठ संख्या-114	"
	-14 पृष्ठ संख्या-117	"
	-15 पृष्ठ संख्या-188	"
	-16 पृष्ठ संख्या-297	"
	-17 पृष्ठ संख्या-193	"
	-18 पृष्ठ संख्या- 2	"
	-19 पृष्ठ संख्या- 18	"
	-20 पृष्ठ संख्या- 24	"

21-:99:, 22-:77:, 23-:45:, 24-:86:, 25-:130:, 26-:162:

:1: :2: :3:
असली हार मुक्ताली, रेशमी वस्त्र और अनेक उल्लेखनीय है । आभूषणों में मूँगों
:4: :5:
और काँच की माला, काँच की चूड़ियाँ, जस्ते की बालियाँ, मटा, काँसे पीतल के गहने, चाँदी
:6: :7: :8:
का कलश, कड़े और चूड़े , स्वर्ण रत्नजटित हार, सोने मोती के गहने सुनारों, मोती,
:9:
कुण्डल और मुक्त माला का उल्लेखनीय है।

7- दुर्गावती :

:10:
प्रस्तुत उपन्यास में कुदर्य, चाल और शाकाहारी भोजन का उल्लेखनीय है।
:11:
वस्त्रों के अंतर्गत भूरियाँ रंग के कपड़े मुंडासा, साड़ी का लपेटा सुहाग का
:12: :13:
उल्लेख किया गया है। प्रसाधन सामग्री में 'असली चाँदी के सिक्कों के हार , चाँदी-
:14: :15:
मूँगे और कौड़ियों के गहने, सोने की चढ़ाव चूड़ियाँ, जंगली फूलों की मनकों माला
:16:
सुहाग चीरे जवाहरात और बहुमूल्य गहने पहिनने का उल्लेख मिलता है।

8- भूषण-विधान :

प्रस्तुत उपन्यास में जंगली फल फूल, जौ का सत्तू सुगंधित, पूड़ी, बड़ी, गुड़
:17:
शक्कर, महुए और फलों का उल्लेख मिलता है।"वस्त्रों में, सूती घरेलू, लहंगा,
:18: :19:
कांचुल, लम्बी कलगीदार रेशमी चोली, कुर्ता, रेशमी उत्तरीय, पीले रंग कांचुल,
:20: :21:
कसारी का रंग सिंदूरी कंचुक, लाल, भूरिया रंग कामदार, लाल रेशम काकीला,
:22: :23: :24:
चोली, छपारा, बारीक ओढ़नी, नीचे तक लटकता सुहावना मूँगिया कंचुक, लहंगा,
:25: :26:
चमक , रंग सिंदूरी कंचुलियाँ, मोटी रंगीन चोलियाँ, गेरुये रंग कोटो-पीन, कपड़े की
:27:
बल्लियाँ, कुर्ता, चादर, सिरम कसी और सेंदुये की कालों की बल्लियाँ, सुनार भूषणों
:28:
का उल्लेख किया गया है । प्रसाधन सामग्री में ' सुगन्धित तेल, महावर, सिन्दूर, अंगराग,
:29:
अलक्तक, अंजन, मुखलेप, केवड़ा सुगन्धित मुखलेपन, सिंदूर उल्लेखनीय है।आभूषणों
में ' मोतियों की माला, भूषणों, मूँगों का हार मुक्ताहार, सोने के कड़े, कलम और कर
:29:
चोली का उल्लेख भी किया गया है ।

| मृगनयनी | पृष्ठ संख्या | | |

अधिव्याख्यार्थ :

प्रस्तुत उपन्यास में :1: नारीले वेष वस्त्रों का उल्लेख मिलता है, जिनमें साड़ी, :2: घाघरा, :3: कुरति तथा चरण्डों का उल्लेख किया गया है। वस्त्रों के अंतर्गत, परिवार लहंगा, कंचुकि, रंग-बिरंगी चुनरी, और ओढ़नी को दर्शाया गया है। :4: इसके अतिरिक्त :5: पगड़ी सिलवटोंदार काली कुंचियों वाला लहंगा, ओढ़नी, चोली का भी उल्लेख किया गया है।। सिन्दूर की टिपकी और नीले रंग के भी तियाँ कीमाला भी उल्लेखनीय है। :6:

10- टूटे काँटे :

प्रस्तुत उपन्यास में :7: मट्ठा, :8: दूध, :9: जना-पकेना, :10: घी, :11: रोटी, घाघरा, :12: भूने चने, :13: प्याज, :14: मिर्चा, :15: गाजा-घास, चिलम-तम्बाकू, तथा रोटी का उल्लेख मिलता है। वस्त्रों में, :16: मुंदरा, :17: अंगरखी, :18: घुटन्नू धोती, :19: जनी दार साफा, तथा रंगीन साफा, :20: पेजामा, :21: चुर्रा, साफा, रंगीन चुन्दरी धोती, :22: जनी-टाँकी, रंग बिरंगीचोली तथा उपर्युक्त :23: वस्त्रों वाला लहंगा उल्लेखनीय है। उपन्यास में :24: सड़ाक कंचुकिया मोती, जवाहरात और स्वर्ण-पुष्पों को भी दर्शाया गया है।

अधिव्याख्यार्थ	-1 पृष्ठ संख्या- 1	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2 पृष्ठ संख्या-145	"
	-3 पृष्ठ संख्या-135	"
	-4 पृष्ठ संख्या- 40	"
	-5 पृष्ठ संख्या-11	"
	-6 पृष्ठ संख्या-33	"
टूटे काँटे	-7 पृष्ठसंख्या- 2	"
	-8 पृष्ठ संख्या- 7	"
	-9 पृष्ठ संख्या-24	"
	-10 पृष्ठ संख्या-25	"
	-11 पृष्ठ संख्या-45	"
	-12 पृष्ठ संख्या-86	"
	-13 पृष्ठ संख्या-90	"
	-14 पृष्ठ संख्या-196	"
	-15 पृष्ठ संख्या-208	"
	-16 पृष्ठ संख्या- 1	"
	-17 पृष्ठ संख्या- 61	"
	-18 पृष्ठ संख्या- 79	"
	-19 पृष्ठ संख्या-195	"
	-20 पृष्ठ संख्या-197	"
	-21 पृष्ठ संख्या-199	"
	-22 पृष्ठ संख्या-247	"
	-23 पृष्ठ संख्या-103	"
	-24 पृष्ठ संख्या-247	"

श्रीचन्द्रौप्र कमल :

प्रस्तुत उपन्यास में पीले रंग की धोती के ऊपर वाली चोली, उभरी चुन्नी, :1: कटोरा, रंग बिरंगी चमकदार साड़ी, मोतियों वाली चुन्नी, जरतारी की चोली, :2: चुटकू, नीला आसरा, सुर्ख चुन्नी, चोली लंगोट तथा रंगीन रेशमी सुर्ख, जरतारी का पेटी :3: का उल्लेख मिलता है। उपन्यास में रोली की चुन्नी, फूलमाला, कर्धनी :4: आदि का भी उल्लेख मिलता है।

12- माधव की सिन्धिया :

प्रस्तुत उपन्यास में वस्त्रों के अंतर्गत लाल रंगका रेशमी पैजामा, पीले रंग की :5: :6: चुन्नी चोली रंगका घुटना पैजामा रंग का रेशमी साफा, चुटकों तक का :7: :8: लम्बा जाकिया, पूरी बाहों का अंगरखा, पेंटा, पगड़ी, सुनहरा जरतारी का साफा, :9: बहुत मोटे कपड़े का स्वच्छ उत्तरीय और मोटे कपड़े की स्वच्छ चोली तथा सुर्ख- :10: :11: चोली का उल्लेख मिलता है। उपन्यास में केवड़ा, चन्दन, तथा सफेद-गंगार :12: चिन्हों का उल्लेख भी किया गया है।

13- रामगढ़ की रानी :

प्रस्तुत उपन्यास में राम गढ़ के सैनिकों के वस्त्रों का उल्लेख किया गया है, :13: जिसमें भूरिया रंग की वर्दी को दर्शाया गया है।

14- देवगढ़ की मुस्कान :

प्रस्तुत उपन्यास में जंगली जानवरों के मांस भक्षण के अतिरिक्त, लहंगा, :14: महुये, जंगली करोंदी के पेड़ों का उल्लेख है। वस्त्रों में चन्देरी की साड़ियां तथा

श्रीचन्द्र और कमल	-1 पृष्ठ संख्या-28	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2 पृष्ठ संख्या-59	"
	-3 पृष्ठ संख्या-58	"
	-4 पृष्ठ संख्या-24	"
माधव की सिन्धिया	-5 पृष्ठ संख्या-72	"
	-6 पृष्ठ संख्या-73	"
	-7 पृष्ठ संख्या-175	"
	-8 पृष्ठ संख्या-183	"
	-9 पृष्ठ संख्या-274	"
	-10 पृष्ठ संख्या-359	"
	-11 पृष्ठ संख्या-154	"
	-12 पृष्ठ संख्या-276	"
रामगढ़ की रानी	-13 पृष्ठ संख्या-115	"
देवगढ़ की मुस्कान	-14 पृष्ठ संख्या-196	

:11:
मूँगिये रंग के वस्त्रों का उल्लेख है।

15- प्रसाधन :

:12:
प्रस्तुत उपन्यास में सिंदूर,चूड़ी और पत्रधानों का उल्लेख है।

16- आहार :

:13:
प्रस्तुत उपन्यासमें पराठे ,आम के अचार और बाँसी रोटियों का उल्लेख
:14: :15: :16:
है। वस्त्रों के अंतर्गतलाड़ी ,साड़ी चुनरी और लंगोट को दर्शाया गया है।

17- लेखन :

:17: :18: :19: :20:
प्रस्तुत उपन्यास में भोजन के अंतर्गत भात ,रायता,लड्डू-सिंदूर,घाटर्य ,
:21: :22:
सिंघाड़ीखार साग गुड़ और भुने हुये चनों का उल्लेख है। त्यौहारों में
:23:
घर और गाँव की सिलसिले घीमे घर भी प्रकाश डाला गया है। वस्त्रों में चटकन्नू
:24: :25: :26:
भोली, लाख,चादर ,चुनरी-ओढ़नी ,लंगा-ओढ़नीसाग चोली,उल्लेखनीय है।
:27: :28: :29:
प्रसाधन सामग्री में महावर,मेंहदी, काजल, साग आभूषणों में चाँदी-सोने की
:30: :31:
मूँगरी बंगुरिया और नथ का उल्लेख है।

देशबन्धु की मुख्यान :	-1 पृष्ठ संख्या-235	वृन्दावनलाल वर्मा
प्रसाधन	-2 पृष्ठ संख्या- 11	"
आहार	-3 पृष्ठ संख्या- 10	"
	-4 पृष्ठ संख्या- 11	"
	-5 पृष्ठ संख्या- 11	"
	-6 पृष्ठ संख्या- 29	"
लेखन	-7 पृष्ठ संख्या- 23	"
	-8 पृष्ठ संख्या- 24	"
	-9 पृष्ठ संख्या- 25	"
	-10पृष्ठ संख्या- 25	"
	-11पृष्ठ संख्या- 50	"
	-12पृष्ठ संख्या-112	"
	-13पृष्ठ संख्या- 73	"
	-14पृष्ठ संख्या- 9	"
	-15पृष्ठ संख्या- 25	"
	-16पृष्ठ संख्या-183	"
	-17पृष्ठ संख्या- 38	"
	-18पृष्ठ संख्या- 69	"
	-19पृष्ठ संख्या-172	"
	-20पृष्ठ संख्या- 44	"
	-21पृष्ठ संख्या-170	

18- रोटी मक्खन :

प्रस्तुत उपन्यास में आटा,दाल,मक्खन,मिर्च,आलू,गुड़ ,मूंग-दाल,[1] [2] उपवास की मनौती और न्याय का उल्लेख मिलता है । वस्त्रों के अंतर्गत कुर्ता-धोती,[3] [4] लंगोट,साफा, लंगूर ,पतलून तथा पिछौरे का उल्लेख है । आभूषणों में कानों के पेंडलों[5] [6] [7] [8] [9] का उल्लेख किया गया है ।[10]

19- प्रेम की चोट :

प्रस्तुत उपन्यास में मूंग,धागा,चूने वाले,दाल रोटी,कागज तथा मूंग धागा[11] [12] का उल्लेख है ।[13]

20- उपवन विवरण :

प्रस्तुत उपन्यास में जामुन तथा तेल में पकाई मनौतियों का उल्लेख[14] मिलता है । गुड़ की चाय बड़े चाय से लोग पीते थे ।[15]

21- लगन :

प्रस्तुत उपन्यास में वस्त्रों के अंतर्गत प्रचलित साफा,[16] उपवस्त्र,लहरियादार[17] उच्च धोतुली साफा, साड़ी,[18] लंगोट,कुर्ता तथा धोती का उल्लेख मिलता[19] है। प्रसाधन सामग्री में,आरती,सिन्दूर, सुगन्धित तेल,[20] [21] [22] [23] का उल्लेख मिलता है ।

रोटी न रोटी	-1 पृष्ठ संख्या-5	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2 पृष्ठ संख्या-13	"
	-3 पृष्ठ संख्या-90	"
	-4 पृष्ठ संख्या- 6	"
	-5 पृष्ठ संख्या- 9	"
	-6 पृष्ठ संख्या-18	"
	-7 पृष्ठ संख्या-23	"
	-8 पृष्ठसंख्या-29	"
	-9 पृष्ठ संख्या-433	"
	-10पृष्ठ संख्या 84	"
प्रेम की चोट	-11पृष्ठ संख्या- 7	"
	--12पृष्ठ संख्या- 9	"
	-13पृष्ठ संख्या-42	"
उपवन विवरण	-14पृष्ठ संख्या-17	"
उपवन	-15पृष्ठ संख्या-118	"
लगन	-16पृष्ठ संख्या-14	"
	-17पृष्ठ संख्या-15	"
	-18पृष्ठ संख्या-42	"
	-19पृष्ठ संख्या-72	"
	-20पृष्ठ संख्या-40	"
	-21पृष्ठ संख्या-48	"
	-22पृष्ठ संख्या-21	"
	-23पृष्ठ संख्या-26	

22- अब मेरा कोर्ट :

प्रस्तुत उपन्यास में :1: भोजन के अंतर्गत मिष्ठान्न, नमकीन, पूड़ी, :2: बाजार की मिठाई साथ के साथ चटपटी :3: मंगौड़ियाँ, तथा मादक वस्तुओं में शराब, बीड़ी, गांजा और चरस उल्लेखनीय है। :4: उपन्यास में रंगीन साड़ियाँ और कंघुकी, :5: बार, चादर, रंजन, :6: महावर तथा शृंगार हेतु गुलाब और :7: बेला की पुष्पमालाओं का उल्लेख है।

23- कुण्डली चक्र :

प्रस्तुत उपन्यास में :8: रोटी, चावल और :9: चौमल की पूड़ियों का उल्लेख मिलता है। :10: :11: इसके अंतर्गत अखबार, बनानी :12: कोठी, मर्दानी :13: कोठी, अंगरखी तथा :14: लेख का उल्लेख किया गया है। प्रसाधन सामग्री में :15: :16: :17: गुलाब के फूल गुलाबी और महावर लगाने का भी उल्लेख मिलता है।

24- सोना :

प्रस्तुत उपन्यास में :18: भोजन के अंतर्गत मगौड़े, :19: :20: :21: साग, दाल बाटिया, :22: :23: :24: :25: :26: :27: :28: :29: :30: :31: :32: :33: :34: :35: :36: :37: :38: :39: :40: :41: :42: :43: :44: :45: :46: :47: :48: :49: :50: :51: :52: :53: :54: :55: :56: :57: :58: :59: :60: :61:

29- अवलोकन :

प्रस्तुत उपन्यास में भोजन के अंतर्गत पकवान :1: ,पूड़ी :2:,ज्वार की मोटरी :3:,गेहूं की रोटी और पूड़ी तथा जीमारी में साबूदाना :4: और दाल का पानी ,नमक,मिर्च,केला की चटनी, गेहूं-चने की रोटी :5:,मक्खा,चना,गुड़,चिरौंजी की खूटा,जल जैसे के छटमे मिर्च मलाले दार :6:,काजू का गुंडे :7: , मठा मोटरी :8: मठे में रोटी मीड़ कर खाना, पूड़ी, पलाश के दाने :9:,आम की चटनी, महुये के फूलों को भून कर या उबाल कर खाना :10:, कॉम काजू देकर अनार नारीयल मनोकियों का उल्लेख मिलता है :11:।वस्त्रों में मोटीदारी का कुर्ता :12:,पेजामा,सिर पर बांधने के लिये सोलिया, कछोटा-धोती, साफा :13:, लम्बूतरेवाली साड़ी ,छोटे उपरों वाली चोली, हरी चुन्दड़ियों वाली घम घम साड़ी :14: ,काली कुर्ता :15:, ढीला पेजामा,साफ कोट :16: तथा काला की चुनी अंगिया सुर्ख रंगीन साड़ी :17: का उल्लेख मिलता है। आभूषणों में चूड़ियां,कांसे के पटेले :18: तथा बसुली-पटेली का उल्लेख उल्लेख किया गया है :20: ।

अवलोकन	-1 पृष्ठ संख्या- 91	पुन्नालाल शर्मा
	-2 पृष्ठ संख्या- 85	"
	-3 पृष्ठ संख्या- 179	"
	-4 पृष्ठ संख्या-207	"
	-5 पृष्ठ संख्या- 307	"
	-6 पृष्ठ संख्या-308	"
	-7 पृष्ठ संख्या-449	"
	-8 पृष्ठ संख्या-145	"
	-9 पृष्ठ संख्या-280	"
	-10पृष्ठ संख्या-288	"
	-11पृष्ठ संख्या-383	"
	-12पृष्ठ संख्या-80	"
	-13पृष्ठ संख्या-233	"
	-14पृष्ठ संख्या-18	"
	-15 पृष्ठ संख्या-33	"
	-16 पृष्ठ संख्या-47	"
	-17 पृष्ठ संख्या-449	"
	-18 पृष्ठ संख्या-44	"
	-19 पृष्ठ संख्या-233	"
	-20 पृष्ठ संख्या-333	

16-व्यायाम-अखाड़ा आदि :

शारीरिक संस्कारों के निर्माण हेतु बुन्देलखण्ड के निवासियों ने व्यायामों पर विशेष बल दिया। शरीर को दृढ़ और फौलादी बनाने की उनकी इच्छा बलवती हो उठी और सतत प्रयत्नों से उन्होंने अनेक अखाड़ों का निर्माण कर डाला। पुरुषों के अतिरिक्त यहाँ की नारियों ने भी व्यायाम के द्वारा अपने शरीर को सुगठित बनाने का प्रयत्न किया । स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क के निवास की कल्पना ने उन्हें नानाप्रकार की प्रेरणायें प्रदान की । योग,प्राणायाम,कसरत,मल्ल युद्ध,मल्लाम्ब,अस्त्र संचालन और घुड़सवारी में लोग विशेष रुचि लेने लगे ।

राम-कृष्ण,अर्जुन और भीम जैसे वीर महापुरुष बुन्देलखण्ड के निवासियों के प्रेरणा स्रोत बन गये । वह भारती पर ओछी शासन से मुक्तिपाने की आकांक्षा ने लोगों को सबलों और वीर बनने की प्रेरणा दी । इसी प्रेरणा से वर्मा जी ने स्वयं- " व्यायाम की माला जपा की भी कि शायद कोई किसी ओर से मुकाबला हो गया तो किला चित्त लिये न रहें ।"[11] उन्होंने अपने उपन्यासों में व्यायामों और अखाड़ों का उल्लेख कीजिये :-

1- मधु कर :

प्रस्तुत उपन्यास में[2] शिकारकरना,[3] घुड़सवारी करना,[4] तैर लगाना करना,[5] परिभ्रमणद्वारा व्यायाम करना,[6] व्यन्द युद्ध,[7] तथा बाण विद्या अभ्यास का उल्लेख मिलता है । उपन्यासमें[8] ओरछा की सबसे ऊँची चोटी पर स्वामी आनन्द के योगाभ्यास स्थल राजसोल कीगुफा के समीप बनाये गये लम्बे चौड़े अखाड़े का उल्लेख मिलता है ।[9]

अपनी कहानी	-1 पृष्ठ संख्या- 18	वृन्दावनलाल वर्मा
मधु कर	-2 पृष्ठ संख्या- 1	"
	-3 पृष्ठ संख्या- 13	"
	-4 पृष्ठ संख्या-202	"
	-5 पृष्ठ संख्या-243	"
	-6 पृष्ठ संख्या-235	"
	-7 पृष्ठ संख्या-179	"
	-8 पृष्ठ संख्या-211	"
	-9 पृष्ठ संख्या-321	"

झाँसी की रानी :

प्रस्तुत उपन्यास में व्यायाम के विविध साधनों को दर्शाया गया है, जिसके अंतर्गत घुड़ सवारी तीर-बाजी, तेगा चलाना, निशाना साधना, तलवार, भाँजना, मल्लयुद्ध तथा कुश्ती का उल्लेख मिलता है।:1: छुरी, कटार, तीर-तमन्चा चलाने का उल्लेख किया गया है।:2: मल्ल युद्ध पर विशेषाधिकार दिया गया है।:3: बिछुआ और रपेटा चलाने की परम्परा को भी दर्शाया गया है।:4: नाव खेने को स्त्रियों का अच्छा व्यायाम माना गया है।:5: अखाड़ों के अंतर्गत मल्लयुद्ध और मल्ल युद्ध के आचार्य बालगुरु के अखाड़े सभाझाँसी में स्थित नरसिंह राव की टौरिया पर स्थित अखाड़े का उल्लेख मिलता है।:6::7:

3- मृगनयनी :

प्रस्तुत उपन्यास में व्यायाम साधनों में तीन कमान कायाभ्यास करना,:8: मल्ल युद्ध,:9: :10: :11: :12: हिंडोला/हिंडोरा झूलना, झाँकी चलाना, मटके द्वारा हिंडोला झुलाते हुये रस्से पर चलना, :13: :14: :15: गुलाँचें खाना, कोल्हा-कूदना, और स्वच्छन्द नृत्य करने का उल्लेख मिलता है।

4- दुर्गावती :

प्रस्तुतउपन्यास में व्यायामों के अंतर्गत, तेल मालिश, स्नान, शिकारसभा तैर :16: :17: सपाटा, घुड़ सवारी तथा घोड़े को दौड़ाते हुये बरसी भेंगड़ी कूँटी उखाड़ना, :18: :19: :20: जोम क्रियायें करना, नदी में तैरना, गोंड़ी नृत्यों द्वारा युद्ध के तेवरों का प्रदर्शन :21: उल्लेखनीय है।

झाँसी की रानी	-1	पृष्ठ संख्या- 136	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2	पृष्ठ संख्या- 56	"
	-3	पृष्ठ संख्या- 30	"
	-4	पृष्ठ संख्या-181	"
	-5	पृष्ठ संख्या-65	"
	-6	पृष्ठ संख्या-27	"
	-7	पृष्ठ संख्या-181	"
मृगनयनी	-8	पृष्ठ संख्या-24	"
	-9	पृष्ठ संख्या-40	"
	-10	पृष्ठ संख्या-71	"
	-11	पृष्ठ संख्या-132	"
	-12	पृष्ठ संख्या-119	"
	-13	पृष्ठ संख्या-107	"
	-14	पृष्ठ संख्या-125	"
	-15	पृष्ठ संख्या-131	"
	-16	पृष्ठ संख्या-233	"
दुर्गावती	-17	पृष्ठ संख्या- 54	"
	-18	पृष्ठ संख्या-190	"
	-19	पृष्ठ संख्या-257	"
	-20	पृष्ठ संख्या-184	

5-कीचड़ और कमल

प्रस्तुत उपन्यास में :1: तालाब में तैरना और डुबकियाँ लगाना, :2: कुश्ती लड़ना और :3: :4: :5: :6: घुड़सवारी, मल्ल विद्या का अभ्यास करना, मुष्टि युद्ध, दण्ड युद्ध, धनुर्विद्या, तलवार :7: :8: :9: चलाने का अभ्यास, अन्य युद्ध तथा योगाभ्यास का उल्लेख मिलता है। मल्ल युद्ध के सम्बन्ध में "बताया गया है कि" वह तो हमारे सुगौरित जनपद में सभी करते हैं। गाँव-गाँव में अखाड़े हैं। बहुत से लोग ऐसे जन होंगे, जो मल्ल विद्या में कवि न :10: रखते हों।" उपन्यास में मद्य, मांस, मदिरा, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन शब्दों को विशिष्ट :11: अर्थों में प्रयुक्त किया गया है। ये शब्द कुण्डली शक्तिसाधना करते हैं। "इसके अतिरिक्त :12: मल्ल योग, हठयोग, राज योग भी बताया गया है। यह भी बताया गया है कि मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध, सहस्रार और आज्ञा चक्रों का ध्यान इन पर ध्यान केन्द्रित करने से नाद और प्रकाश का सम्पर्क प्राप्त होता है और :13: :14: :15: इस साधना से शक्तिसंचय आनन्द की प्राप्ति होती है। समाधि, आसन :16: तथा योगमुद्रा धारण करने का उल्लेख किया गया है। योगाभ्यास के लिये योग :17: आसन की साधना की जाती है।

6- मुसाफिरखाना :

प्रस्तुत उपन्यास में :18: शिकार खेलना तथा तलवार चलाना, एवं कवायद परेड :19: करने का उल्लेख मिलता है।

7- देवगढ़ की मुसकान :

प्रस्तुत उपन्यास में :20: तैरना और तैराकी प्रतियोगिता करना, घोड़ों का उल्लेख

कीचड़ और कमल	-1 पृष्ठ संख्या- 3	कृष्णचन्द्रलाल वर्मा
	-2 पृष्ठ संख्या-18	"
	-3 पृष्ठ संख्या-19	"
	-4 पृष्ठ संख्या-10	"
	-5 पृष्ठ संख्या-44	"
	-6 पृष्ठ संख्या-19	"
	-7 पृष्ठ संख्या-21	"
	-8 पृष्ठ संख्या-210	"
	-9 पृष्ठ संख्या-120	"
	-10पृष्ठ संख्या- 19	"
	-11पृष्ठ संख्या-226	"
	-12पृष्ठ संख्या-228	"
	-13पृष्ठ संख्या-229	"
	-14पृष्ठ संख्या-237	"
	-15पृष्ठ संख्या-239	"
	-16पृष्ठ संख्या-260	"
	-17पृष्ठ संख्या-256	"
	-18पृष्ठ संख्या- 6	"
	-19पृष्ठ संख्या- 73	"

:1: :2: :3: :4:
बोलना, घुड़सवारी करना, जंगलों में घूमना-फिरना, उठ योगी क्रियायें करना, जंगली
:5:
जंगली जानवरों का शिकार करना के शिकार खेलना, तीर कमान, कुल्हाड़ी तथा कुदाल
:6: :7:
चलाना, बंदूकें, चाकू, कटार मिलते हैं।

8- उपन्यास :

प्रस्तुत उपन्यास में दण्ड देना, :8: शिक्षा, कटार मिलते हैं। उपन्यास में गुसाइयों के अखाड़ों का उल्लेख भी किया गया है, जिनमें आनन्द, आभाल, आचाल, गिरि और पुरी के अखाड़ों के नाम आते हैं। महन्त जी की दृष्टि में अखाड़ों के कर्तव्य निभाना, योग क्रियायें करना और योगबल को अर्जित करना विशेष महत्व :9: रखता है।

9- टूटे काँटे :

प्रस्तुत उपन्यास में साधु, सन्त, तपस्वी और अखाड़ेबन्द नागों का उल्लेख किया गया है। वे उनमें पवित्रबन्धक थे, जो प्रतिदिन तीन घन्टे शीर्षासन किया :10: :11: करते थे। उपन्यास में योगी महत्ता भी दर्शायी गयी है।

10- अधूरा मेरा कौन :

प्रस्तुत उपन्यास में बतलाया गया है कि" नृत्य कला- शरीर को स्फूर्ति प्रदान :12: करती है तथा रोगों के अभाव करने की क्षमता रखती है अतः नृत्य शारीरिक व्यायाम का एक अच्छा साधन है।

11- लगन :

प्रस्तुत उपन्यास में देवसिंह, रामा और सुभद्रा के द्वारा नदी में :13: तैरने, और तैर तथा काटे करने का उल्लेख मिलता है।

देवगढ़ की मुस्कान	-1	पृष्ठ संख्या-8	मुन्नालाल शर्मा
	-2	पृष्ठ संख्या-9	"
	-3	पृष्ठ संख्या-12	"
	-4	पृष्ठ संख्या-46	"
	-5	पृष्ठ संख्या977	"
	-6	पृष्ठ संख्या- 3	"
	-7	पृष्ठ संख्या-161	"
	-8	पृष्ठ संख्या-212	"
उपन्यार	-9	पृष्ठ संख्या-191	"
	-10	पृष्ठ संख्या- 90	"
टूटे काँटे	-11	पृष्ठ संख्या- 92	"
	-12	पृष्ठ संख्या-122	"
अधूरा मेरा कौन	-13	पृष्ठ संख्या-15/16	"
लगन	-14	पृष्ठ संख्या-24	

12- लंगम :

प्रस्तुत उपन्यास में कबड्डी खेलकर लोगों द्वारा सामूहिक रूप से व्यायाम कर लेने का उल्लेख मिलता है :1: । इस उपन्यास में सम्भवतः के अखाड़े का भी उल्लेख किया गया है :2: ।

13- आसन :

प्रस्तुत उपन्यास में गुल्ली डण्डा खेलने, तैरने तथा सैर सपाटे करने का उल्लेख भी मिलता है :3: ।

14- सोना :

प्रस्तुत उपन्यास में, सोना द्वारा बाँस के डण्डे से बैलों को मालीशें पिलाने के लिये हिलाने की, एक अच्छे व्यायाम की संज्ञा दी गयी है :4: ।

15- अमर बेल :

प्रस्तुत उपन्यास में टहलना, गेंदी उछालना, श्रम करना, कसरत परेड करना, तथा कबड्डी खेलकर व्यायाम करने का उल्लेख मिलता है :5:। इस उपन्यास में आगुर्दम गाँव के अखाड़े का उल्लेख मिलता है :6: ।

लंगम	-1 पृष्ठ संख्या-80	वृन्दावनलाल वर्मा
	-2 पृष्ठ संख्या-95	"
आसन	-3 पृष्ठ संख्या- 90	"
सोना	-4 पृष्ठ संख्या-78	"
अमरबेल	-5 पृष्ठ संख्या-306	"
	-6 पृष्ठ संख्या-398	

सप्तम अध्याय

"सांस्कृतिक दृष्टि-कोण से वर्मा जी की अन्य उपन्यासकारों से तुलना, उनपर प्रभाव एवं प्रदेय"

अन्य उपन्यासकारों से तुलना

वर्मा जी का अन्य उपन्यासकारों पर प्रभाव

सांस्कृतिक दृष्टि से वर्मा जी के उपन्यासों का प्रदेय

उपसंहार :

सांस्कृतिक दृष्टि से वर्मा जी अन्य उपन्यासकारों से तुलना, उन पर प्रभाव एवं प्रदेय

कुछ वृन्दावनलाल वर्मा हिन्दी के अन्य उपन्यासकारों की श्रेणी में विशिष्टतम स्थान रखते हैं। उनके उपन्यासों का सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण प्रदेय है। जनमानस की समस्यायें, सामाजिक रीति-रिवाज, रूढ़ियाँ, परम्परायें, विश्वास, अन्धविश्वासों, कलाओं, धर्म, प्रेम-उपासना, लोकसाहित्य, पर्यावरण, कला तथा मूर्तिपूजा सौन्दर्यचिन्तन, स्थान, सत्यनिष्ठा, स्वतन्त्रता, ज्ञान, दान, क्षमा, सदाचार, लोकरीति, कहानी, कहावतें, आश्रम-व्यवस्था, जातिवाद, भोजन, वस्त्र प्रसाधन साज-सज्जा आदि सभी सांस्कृतिक विशेषताओं का उल्लेख वर्माजी ने अपने उपन्यासों में किया है। वे कला-पारखी थे। उन्होंने बुन्देलखण्ड की विखरी हुई पुरातत्वकला का जन-जन से परिचय कराया। यहाँ के मनोहारी मन्दिरों, विशाल भवनों, अनेक दुर्गों, मूक मूर्तियों की गौरव गाथा कोभी प्रस्तुत किया है। कुल्लकी भाव भंगिमायें, साज-सज्जायें, राग-रागनियाँ भी उनके उपन्यासों में निहित हैं। चित्रकला को प्राथमिकता देना वर्मा जी का एक महत्वपूर्ण कर्तव्य रहा है। बुन्देली लोक गीतों का समावेश उपन्यासों में करके, वर्मा जी ने बुन्देलखण्ड की संस्कृति को अनुपम झाँकी प्रस्तुत की है।

वर्मा जी के उपन्यासों के पात्र पतिव्रता-पत्नियों के साथ धर्म कार्यों में रत हुये, आदिवासी भाव से विन्ध्यवासिनी देवी, राम, कृष्ण, हनुमान तथा ग्रामीण देवताओं की उपासना में रहकर सीधा, और तुलसी तक की पूजा करते हैं। लोग गृहस्थाश्रम में रहकर अपने दायित्वों का परिपालन करते हुये। धर्म, अर्थ, काम का उपभोग करते हैं और मोक्ष की कामना में रतरहते हैं।

वर्माजी के उपन्यासों के सम्बन्ध में अनेक विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किये हैं। उनके ऐतिहासिक उपन्यासों के सम्बन्ध में डा० कृष्णलाल का कथन है "कि वृन्दावनलाल वर्मा ने अवश्य कुछ उत्तम ऐतिहासिक उपन्यास लिखे हैं। उनके यह कथन में मध्यकालीन बुन्देलखण्ड की संस्कृति, उसकी सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों और वातावरण का सुन्दर चित्रण मिलता है। एक अन्य विद्वान कहता है कि" साहित्य के इतिहास में संस्मरणीय ऐतिहासिक उपन्यास लेखक, लेखन

:1: - आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास - पृ० सं० 286 - डा० कृष्णलाल

धार पर है::: कथानक में गुण और परिणाम दोनों की दृष्टियों से सर्वाधिक
ज ता लिखने वाले हैं, वैसी कृष्णावतार वर्मा ।"

वर्मा जी की कृतियों का अनुशीलन और विश्लेषण करते सरकार और साहित्यिक संस्थाओं के द्वारा उन्हें समय-समय पर पुरस्कार प्रदान किये जाते रहे हैं। वर्मा जी जन-साधारण की सांसारिकता में उदासीन थे और उन्मुख करने को उत्सुक रहा करते थे । वे शक्ति का भाव दिखाकर लोगों को मुक्तियों से बचाते थे और उन्हें पर लोक सुधारने की प्रेरणा प्रदान करते रहे हैं । वे चाहते थे कि लोग सदैव भावना से ऊपर समन्वित रहें और सामुदायिक श्रेय लाते रहें। उन्होंने सभी क्षेत्रों में अपना पूर्ण योगदान दिया है। ज्योतिष, आयुर्वेद ज्ञान उपचार, रोग फैलने के कारणों, वृष्टि सम्बन्धी ज्ञान तथा सभ्यता की शिक्षा के माध्यम से उन्होंने सभी वर्गों के लोगों को सहयोग प्रदान किया है।

वर्मा जी के उपन्यासों में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से तत्कालीन सामाजिक समस्याओं का समग्रता से विश्लेषण और निराकरण हुआ है। उन्होंने विधवा विवाह समस्या, जातीय समस्या, वर्गीय समस्या, दहेज, जमींदारी-प्रथा, मजदूरों की समस्या, किसानों की समस्या, बहु पत्नी प्रथा, तथा नारी-जीवन की विभिन्न समस्याओं का सम्यक् रूप से विवेचन किया है। निःसन्देह वर्मा जी की कृति में का सर्वांगीण योगदान, सराहनीय है ।

:क: वर्मा जी की अन्य उपन्यासकारों से तुलना :

वर्मा जी की तरह अन्य उपन्यासकारों ने भी सांस्कृतिक तत्वों, सामाजिक समस्याओं और जन कल्याण की भावनाओं को लेकर उपन्यासों की रचना की है, जिनकी सांस्कृतिक दृष्टिकोण से तुलना निम्नवत है :-

वर्मा जी और प्रेमचन्द:- वर्मा जी ने मुंशी प्रेमचन्द की तरह ही सामाजिक समस्याओं का अवलोकन किया और समाज में व्याप्त रूढ़ियों और कुरीतियों से लोगों को बचाने का हर सम्भव प्रयत्न किया। उन्होंने युगदृष्टा और युग स्रष्टा के रूप में सामाजिक उत्थान करते हुये लोगों में नव जीवन-संचरण किया है। उन्होंने

आलोचना इतिहास -1 पृष्ठ संख्या-127 डा० प्रभाकर माचवे
विश्लेषण
:ख: साहित्य मंथन -2 पृष्ठ संख्या-311 डा० उषाकुमारी चौधरी
:ग: हिन्दी उपन्यास -2 पृष्ठ संख्या-361

पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय अथवा प्रकार की परिस्थितियों से दोनों को अवगत कराते हुये अपनी मानवता के प्रति आकर्षित करने को प्रेरित किया।

शिक्षा जीवन कठिनता और उनके विवाह की समस्या पर दोनों की उपन्यासकारों ने मौलिक चर्चा है। प्रारम्भ में वर्मा जी ने बाल विधवा-"उजियारी" के नैराश्य जीवन की छटपटाहट को बड़े मार्मिक शब्दों में व्यक्त किया है, किन्तु विधवाओं के प्रति उनका परिवर्तित दृष्टिकोण उदार होता चला गया और बिना किसी संकोच के उन्होंने "निर्मला" और "गबन" जैसी विधवाओं का पुनर्विवाह करा के उनके जीवन में सरसता भर दी है। प्रेमचन्द के उपन्यास की, शिक्षा गायत्री आदर्शोन्मुखी एक मूक पहेली बनी रहती है। कभी वह अपनी छोटी बहिन विद्या के प्रति अत्यन्त कठोर और आकृष्ट होती है तो कभी अपना शेष जीवन काटने के लिये, आश्रम की ओर उन्मुख होने लगती है।:1: गायत्री का जीवन निरंतर गुप्त रूप से उन्नति की ओर बढ़ता रहता है। जहाँ तक विद्या अपने पतिव्रत धर्म को दृष्टि रखने लगती है और अपनी बहिन से कपट व्यवहार और घृणा करने लगती है। एक दिन गायत्री के कारण ही वह विक्षिप्त करके, अपनी जीवनलीला समाप्त कर देती है।:2: उधर ज्ञान का गायत्री के प्रति स्वार्थपूर्ण प्रेम होता है। जब उसे वास्तविकता ज्ञात होता है, तब पश्चाताप करती पूर्व, वह बड़ी शान्ति से परलोक धाम में रम करके शेष जीवन व्यतीत करने का निर्णय लेती है। वर्माजी के उपन्यासों की विधवायें इन कठिनताओं से घिरे रहकर, जीवन की एक नई राह पा लेती हैं। प्रेमचन्द ने वर्मा जी की तरह विधवा विवाह कराने की योजना बनाई थी किन्तु वासनाओं की तीव्र आंधी में विधवा विवाह कार्यक्रम मीलों दूर उड़ गया। पुरुषों जवान विधवा को देखकर भोग की लार टपक पड़ना और झपटकर शिकार मार लाने वाली उनकी दुष्टावृत्ति, शिक्षा विवाह के प्रति उदार दृष्टिकोण न होकर, मात्र वासना और कामुक प्रवृत्ति प्रतीत होती है।:3:

प्रेमाश्रम -1 पृष्ठ संख्या-82 प्रेम चन्द
-2 पृष्ठ संख्या-348 "
-3 पृष्ठ संख्या-348 "

वर्मा जी ने वृन्दावनदत्त व्यभिचारी की धार्मिक निष्ठा और धर्म परायणता को निःसृत रूप से दर्शाया है। वे कर्तव्य पालन को ही धर्म मानते थे। उनकी दृष्टि में धर्म सबसे बड़ा था :1: । वे उदर धर्म-पन्थी को भी महत्ता प्रदान करते हैं। टीकाराम अपने विधर्मी पुत्र को अंगीकार नहीं करता है। उसका विचार था कि जब तक उसका जीवन है, तब तक वह धर्म पर लात नहीं मार सकता :2: ,जबकि उसके विधर्मी पुत्र मोह के आगे प्रेम चन्द का औपन्यासिक पात्र-दासदीन छूटने देता है। वह अपने पुत्र मातादीन से कहता है कि "पेट दान खाये, धरम जाये, लोक परलोक जाये, पर तुझे नहीं छोड़ सकता :3: ।" वर्मा जी की सोमवती को ब्राह्मण की धर्मपत्नी बनने का गर्व रहता है। वह धर्म के विरुद्ध कार्य नहीं करती, भले ही उसका पति रूठ जाये :4: । प्रेमचन्द की "गबन" में भी वर्मा जी की सोमवती की तरह धर्मनिष्ठ बनने में असफलता प्राप्त की । वह अपने स्वामी के लिये सब कुछ करने को तैयार रहती है, किन्तु धर्म की अवज्ञा करना, उसको सहन नहीं :5: । दोनों उपन्यासकारों ने कर्मफल, तथा पुनर्जन्म, को मान्यता प्रदान की है। वर्मा जी की तरह प्रेम चन्द ने भी इस सत्य को स्वीकार किया है कि करनी का फल प्रत्येक व्यक्ति को भोगना ही पड़ता है :6: । दहेज की समस्या दोनों उपन्यासकारों ने उठाई है किन्तु प्रेमचंद ने "निर्मला" और "सेवा सदन" उपन्यासों की रचना का मूल उद्देश्य दहेज रखा है, जबकि वर्मा जी ने घटनाओं की प्राथमिकता देते हुये भी इसे उपन्यासों का मुख्याधार नहीं माना । उनके दहेज में लोभ का आधिपत्य रहता है। सो भाँतों का दहेज न मिलने पर विवाहिता बेटा वापस लौट आना, घर-बाहर के जीवन में अवाञ्छित उत्पन्न हो जाना और पति के जीवित रहते हुये पुनर्विवाह की कल्पना, मात्र दहेज के लोभ के दुष्परिणामों को दर्शाते हैं, किन्तु दहेज के लोभी व्यक्ति में को वर्मा जी ने पश्चाताप करने के लिये विवश और संकेत भी किया है।

देवगढ़ की मुस्कान	-1 पृष्ठ संख्या- 232	वृन्दावनलाल वर्मा
प्रत्यागत	-2 पृष्ठ संख्या- 80	वृन्दावनलाल वर्मा
गोदान	-3 पृष्ठ संख्या- 211	प्रेमचंद
प्रत्यागत	-4 पृष्ठ संख्या- 87	वृन्दावनलाल वर्मा
प्रेमाश्रम	-5 पृष्ठ संख्या- 125	प्रेमचंद
गबन	-6 पृष्ठ संख्या- 74	प्रेमचंद

वर्मा जी ने दहेज लेकर बसाये जाने वाली वधुओं की विडम्बना को भी दर्शाया है। जहाँ "जालकी" को टुकड़े टुकड़े कर जीने के लिये विवश किया गया है, वहीं "छाया" द्वारा दहेज के लोभी वर और उसके पिता का घोर अपमान कराके, दोष के साथ पिता दहेज के ही उसका पाणिग्रहण कराके लेखक ने युवकों का मार्गदर्शन किया है।:1: वर्मा जी की तरह प्रेमचंद के उपन्यासों में भी दहेज के कारण लोगों को होने वाली दुर्दशा का उल्लेख मिलता है। कृष्णचंद को दहेज के कारण ही बेईमानी का आश्रय लेना पड़ा और जेल की यातना भुगतनी पड़ी। सुमन जैसी, सरल और सात्विक प्रवृत्ति वाली युवती को वेश्या के कोठे तक पहुँचाने और निर्वाचनी युवतीको पिता की आयु के बराबर वाले वृद्ध व्यक्ति के साथ वैवाहिक गठ-बन्धन करने को लाचार होना पड़ा। यदि एक प्रकार की धनराशि दोनों में न दी जाती तो कदाचित कन्या के साथ कभी दोनों न हो पाते।:2: प्रेमचन्द ने लोगों की मनोवृत्तियों को दर्शाते हुये बताया जिनो लोग अपनी बेटी के विवाह में दहेज देते हैं, वे पुत्र के विवाह में दहेज की माँग करते हैं और यही आदान-प्रदान, दहेज-प्रथा का पोषण बना रहता है। प्रेमचंद का दृष्टिकोण इन्हीं लोगों में से था।:3:

वर्मा जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से लोगों की आध्यात्म भावना को दर्शाया है। उन्होंने आत्मा और परमात्मा के सम्बन्धों को भी समझाया है तथा आत्मा की अमरता पर बल दिया।:4: उन्होंने सत्कर्म करके पर लोक सुधारने की बात तथा पुण्य कार्यों को करने के लिये लोगों को उद्यत किया। प्रेमचंद की अध्यात्मता के विचिन्दु धर्म में एक बतनी पुण्य होती है, जिसको जिसकी मात्र सेवा से लोक-परलोक दोनों सुधर सकते हैं।:5: वर्मा जी के आश्रम प्रेमी युवक, शरीर की नश्वरताको स्वीकार करते हैं और पारलौकिक मिलन की सुखद कल्पनायें रख रखते हैं, किन्तु प्रेमचंद के प्रेमी पात्र उदात्तीय, निःस्वार्थ तथा कुण्ठित भावना से ग्रस्त रहा करते हैं। वे सौन्दर्य को ही ईश्वर और निस्सार मान कर चलते हैं, तथा पति-पत्नी के सम्बन्ध उन्हें मायाजाल के समान प्रतीत होते हैं।:6: "भाग" का तो

आश्रम	-1 पृष्ठ संख्या- 195	वृन्दावनलाल वर्मा
गबन	-2 पृष्ठ संख्या- 6	प्रेमचंद
गोदान	-3 पृष्ठ संख्या- 206	प्रेमचंद
कृष्णार	-4 पृष्ठ संख्या- 219	वृन्दावनलाल वर्मा
गोदान	-5 पृष्ठ संख्या- 113	प्रेमचंद
प्रेमाश्रम	-6 पृष्ठ संख्या- 128	प्रेमचंद

अनेक सांसारिक वस्तुओं से विरक्ति हो उठ चुका है।[1] प्रेमचंद ने संसार को नश्वरता बताया और मृत्यु की अनिवार्यता को उद्घोषित किया है।[2] वर्मा जी ने लोगों की आत्मिक भावना का समादर करते हुये भगवान की प्रसाद चढ़ाना- लगा प्रत-पूजापाठ, मनौतीआदि का समादर किया है।[3] प्रेमचंद ने भी इसी प्रकार के मनौती की महत्ताको प्रतिपादित किया है। सदा मेरे लड़कों का, मन तीर ने को भोग चढ़ाके कार्यसिद्धि की प्रबल कामना का भी उल्लेख वे उनके उपन्यास में किया है।[4]

वर्मा जी को बुन्देली भाषा से विशेष लगाव था। उन्होंने उपन्यासों में बुन्देलीभाषा के शब्दों और वाक्यों का यथासम्भव प्रयोग किया है। उनकी नारी पात्र- लक्ष्मीबाई, औरतों की बुरी स्थिति के प्रति अपनी विरोधी भावना दर्शाते हुये उन्हें प्रकाशितकरती हुई कहती है कि" जो महिला मोरी ओर का सेवाल, तोर्ई के का व्यवहार होत न हुवई।"[5] प्रेमचंद ने भी भोजपुरी भाषा का सौन्दर्य अपने उपन्यासों में दर्शाया है। उनका एक पात्र कहता है कि" जो मर्द चोर न होय, सो ठेंगुआरी टाँग से निकल जाई। अस चोर की नाई ताकत है।"[6]

वर्मा जी ने अपने उपन्यासों में जातिवाद को भी दर्शाया है। बुन्देलों और कोरियों का परिचय [illegible] और कोरियों के पतन का मात्र कारण जाति भावना ही रही। दलपति-दुर्गावती, अचलदासमाल्यवती, नाग-केसरी, दिवाकर-तारा, अटल और साखी का प्रणय सम्बन्ध था तो अधूरा रहा या उन्हें बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा, जिसका मुख्य कारण उनकी जाति भिन्नता थी। प्रेमचंद ने भी सामाजिक विवाह की महत्ता प्रतिपादित की है। उन्होंने परजाति में विवाह करने पर दण्ड व्यवस्था का उल्लेखकिया है।[7] दोनों उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में लोक गीतों का समावेश किया है। जहाँ वर्मा जी ने एक देवाहिक लोकगीत का

प्रेमाश्रम	-1 पृष्ठ संख्या- 73	प्रेमचंद
गबन	-2 पृष्ठ संख्या- 129	प्रेमचंद
लगन	-3 पृष्ठ संख्या- 33	वृन्दावनलाल वर्मा
गबन	-4 पृष्ठ संख्या- 101	प्रेमचंद
रानी दुर्गावती	-5 पृष्ठ संख्या- 151	वृन्दावनलाल वर्मा
गबन	-6 पृष्ठ संख्या- 132	प्रेमचंद
गोदान	-7 पृष्ठ संख्या- 175	प्रेमचंद

प्रयोग किया है " कचनार की कली, केला फूल कोयली, दूल्हा सोहल अटरिया सजा :1: शालन में फूल गीतों का उल्लेखनीय है। वहीं प्रेमचंद लिखते " कदम की डरिया फूला :2: बड़ की, राधा रानी फूल आई" जैसे सरस लोकगीत की कड़ी प्रस्तुत की है। वर्मा जी ने जहां भी प्रेमियों के मधुर मिलन को" चांद गरी में पिया के जगाय, धान खेले :3: पियमोरे घर आये, कह कर उकेरा है वहीं प्रेमचंद जी ने भी प्रेमियों के विरह-दग्ध दृश्य की जैसा उन्होंने में प्रस्तुत की है, किया अरस मिल-रैन, आम की डरिया कोयल बोले। :5:

दोनों उपन्यासकारों ने राष्ट्रीयभावना, धार्मिक प्रथाओं के प्रति गहन आस्था जैसे उत्सव, कथावार्ता, लोक-नाट्यकला, शास्त्रीय गान, ज्योतिष, व्यायाम, कुश्ती योगाभ्यास, लोक रीतियाँ, जन्म मरण, समाज की भावना, शिकारी प्रवृत्ति, मनोरंजन के साधन, वाद्य यंत्र, ग्रामोत्थान आदि का उल्लेख किया है, किन्तु मनोहारी प्रवृत्ति की छवि अंकन करने में वर्मा जी को प्रेमचंद की अपेक्षा कहीं अधिक सफलता मिली है और ये इस दौड़ में उनसे काफी आगे निकल गये हैं।

वर्मा जी और विश्वम्भरनाथ शर्मा "कौशिक" :

वर्मा जी ने भिखारिणी को हेय दृष्टि से आंका है। वे उत्तम खेती, मध्यम व्यापार अधम चाकरी भीख निदान" के सिद्धान्त को मानते थे। :6: इसी प्रकार कौशिक जी ने भी भिखारिणी के प्रति उदासीन दृष्टिकोण अपनाया है। उनको अपने पिता के भिखारीपन में रस देखकर ग्लानि से भर जाती है और एक दिन अस्पष्ट कह देती है कि, "आप तुम क्यों नौकरी क्यों नहीं करते ? भीख मांगने से तो नौकरी :7: अच्छी है।" एक स्थान पर वर्मा जी का पुरुष पात्र नौकरी को हेयमानकर गांव में जाकर कृषि कार्य में जुट जाता है, ठीक उसी प्रकार कौशिक जी का कथानायक है, जो :8: अधम चाकरी मानकर चलता है। दोनों पात्रों के आचार-विचार एक समान है। :9: :10: वर्मा जी ने प्रेम विवाह को उतना समर्थ नहीं माना है, जितना कि कौशिक जी ने।

कचनार	-1 पृष्ठ संख्या- 20	वृन्दावनलाल वर्मा
संगम	-2 पृष्ठ संख्या- 69	वृन्दावनलाल वर्मा
गबन	-3 पृष्ठ संख्या- 68	प्रेमचंद
मृगनयनी	-4 पृष्ठ संख्या- 11	वृन्दावनलाल वर्मा
गोदान	-5 पृष्ठ संख्या-204	प्रेमचंद
उदयकिरण	-6 पृष्ठ संख्या- 39	वृन्दावनलाल वर्मा
भिखारिणी	-7 पृष्ठ संख्या- 9	कौशिक जी
भिखारिणी	-8 पृष्ठ संख्या- 31	कौशिक जी
अचलमेरा कोई	-9 पृष्ठ संख्या- 38	वृन्दावनलाल वर्मा
भिखारिणी	-10 पृष्ठ संख्या - 32	कौशिक जी

साँप, पीपल, तुलसी आदि वृक्षों की पूजा का उल्लेख किया है, इसी प्रकार रांगेय राघव ने भी अपने के विभिन्न अवस्था, शालग्राम और पीपल की पूजा करते :1: हैं। अवस्था वृक्ष को तो विशेष पूज्य माना गया है। इसकी छाया, सौन्दर्य और पार्वत्यजाति के लोगों द्वारा सम्मिलाके साथ पूजा की जाती रही है। स्त्रियाँ भगवान के सम्मुख आकर सन्तान की प्राप्ति के लिये मनौती मनाती हैं। दोनों उपन्यासकारों ने दास प्रथा पर प्रकाश डाला है तथा दासों पर किये :2: जाने वाले अत्याचारों के प्रति विरोध प्रकट किया है। वर्मा जी ने भगवान सिंह की तरह कुछ राघव जी कालिदास भी दास प्रथा को दिव्यदृष्टि से देखता था।

वर्मा जी व रांगेयराघव, दोनों ही उपन्यासकारों ने लौकिक, पुनर्जन्म, और अध्यात्मिक भावना को दर्शाया है। वर्मा जी ने शूद्रों को संन्यास का अधिकार प्राप्त कराने पर बल दिया है और धार्मिक शक्ति के द्वारा आश्रम के समीप कपिंजल को तप का करने की अनुमति दिलाई है, ठीक इसी प्रकार रांगेय राघव का विचार था। वे भी चाहते थे कि संन्यास का अधिकार शूद्रों को भी मिलना :3: चाहिये। वर्मा जी ने युवक प्रेमियों के प्रेमालाप और मिलन में मर्यादा बनाये रखी है, जबकि रांगेय राघव ने पुरुषाकार के अवसर पर मर्यादा और शिष्टता पर विशेष ध्यान नहीं दिया है, जिससे उनके प्रेम-वर्णनों में कहीं-कहीं अश्लीलता परिलक्षित होती है। वे शिक्षार्थी के द्वारा " कपिलवाणी को अंक में भरकर अपने गर्म होठों से छिपा लेने में, कोई संकोच नहीं करते हैं। :4:

धर्म की महत्ता को, दोनों ही उपन्यासकारों ने दर्शाया है। रांगेय राघव :5: ने धर्म को संयुक्त रूप से आँका है और करुणा को ही धर्म का रूप प्रदान किया है। वर्मा जी ने धर्म को कर्तव्य की दृष्टि से अभिभाषित किया है। डा० मु० भगवान अवस्थी के विचार से " वर्मा जी ने उपन्यासों में कर्तव्य शब्द का धर्म के पर्यायवाची में प्रायः प्रयोग कराया है, तथापि शास्त्रों और परिस्थितियों के अनुसार धर्म की धारणा, आचरण, जन्म या आधार-विचार बदलते रहते हैं। मनुष्य कालिदास की

अवारोहरा जीत गई -1 पृष्ठ संख्या- 1 तथा 2 रांगेय राघव "
अवारोहरा जीत गई -2 पृष्ठ संख्या- 8 "
अवारोहरा जीत गई -3 पृष्ठ संख्या- 41 "
अवारोहरा जीत गई -4 पृष्ठ संख्या- 49 "
अवारोहरा जीत गई -5 पृष्ठ संख्या- 131

दोनों उपन्यासकार भाग्यवाद, पूर्व जन्मों में आस्था रखते हैं। कौशिक जी का कहना है कि मनुष्य को पूर्व जन्म के पापों का फल अवश्यमेव भोगना पड़ता है।:1: समाज की तरह कौशिकजी भी, दास प्रथा और जमींदारी प्रथा के घोर विरोधी रहे हैं। दोनों उपन्यासकारों ने छूत अछूत प्रथा और बहु विवाह प्रथा की कटु आलोचना की है और नारी को मुक्तिदाता है। वर्मा जी के अनुरूप कौशिक जी ने भी क्षेत्रीय भाषा की रचना शैली का सजीव प्रयोग अपने उपन्यासों में किया है। शशि वर्मा जी वाचस्पति अपने विचार इस शब्दों में व्यक्त करता है कि " नहीं यह बस्तीलो में के सकल कि बेटी के रख छाड़-छाड़ बरसा । गंगासों रानी सी लगत।":2: तो कौशिक जी का ठाकुर अपनी मनोकामनायें व्यक्त करते हुये कहता है कि " अ ता जिक रखना, तेरी कहि देजो,कहिया-मुंह कोरे कारतिर गहम पानी के आये।":3: दोनों उपन्यासकारों ने विवाह को जातीय निष्ठा को मार्ग संकट के रूप में स्वीकार किया है। जगार और कुन्देला दोनों काल्पनिक थे, किन्तु उनमें जाति सम्बन्धी कठिनाई की भावना विद्यमान थी, जिससे उनमें पारस्परिक रोटी-बेटी का सम्बन्ध निषिद्ध था।:4: ठीक इसी प्रकार कौशिक जी ने वेश्यासमस्या को जनमानस के सम्मुख रखते हुये बताया है कि विवाही और ठाकुर अमानवीय पर भी, विवाह अन्यत्र में नहीं कर सकते हैं।:5: वर्मा जी की तरह लोगों की जातिगत प्रवृत्तियों को कौशिकजी ने भी स्वीकारा है। उन्होंने कार्य सिद्धि के लिये लोगों द्वारा देवी-देवताओं से मनाये जाने वाली मनौतियों का उल्लेख किया है।:6: वर्मा जी की नारी पात्रों की तरह कौशिक जी की पात्रों का भी स्थान अमर है।:7:

वर्मा जी और राजेन्द्र राघव + वर्मा जी की तरह राजेन्द्र राघव ने भी ऐतिहासिक और सामाजिक उपन्यासों की रचना की है। जिसप्रकार वर्मा जी ने अपने उपन्यासों में

भिखारिणी	-1 पृष्ठ संख्या- 112	कौशिक जी
नहू कुम्हार	-2 पृष्ठ संख्या- 33	वृन्दावनलाल वर्मा
भिखारिणी	-3 पृष्ठ संख्या- 112	कौशिक जी
नहू कुम्हार	-4 पृष्ठ संख्या- 336	वृन्दावनलाल वर्मा
भिखारिणी	-5 पृष्ठ संख्या- 150	कौशिक जी
भिखारिणी	-6 पृष्ठ संख्या- 175	कौशिक जी
भिखारिणी	-7 पृष्ठ संख्या- 196	कौशिक जी

:1:

हम के बहुमुखी पक्ष पर उनका सबसे अच्छे और सच्चा मार्ग दर्शक हो सकता है ।

वर्मा जी ने नारी सौन्दर्य के प्रति बड़ा उदार दृष्टिकोण अपनाया है । उनका वेगम को छोड़कर उनके सभी नारी पात्र, सौन्दर्य मूर्तियाँ बनकर उभरे हैं । दुर्गाजी का सौन्दर्य कला की मधुरता और चित्रलेखा उनकी की मृदुलता प्रदान करता है। :2: रसिक राजा का दृष्टिकोण, वर्मा जी के दृष्टिकोण से कुछ भिन्न है। केशोदास की नखशिख को दृष्टि में रखते हैं और उन्हें नारी के सौन्दर्य के प्रति उतना मोह नहीं रहता । उनका विचार है कि इन स्त्रियों में मलमूत्र भरा है:: :3: उनके गन्दे शरीर में प्राणी रहता है और उनके मल-मूत्र में पड़ा रहता है ।

वर्मा जी की तरह, रसिक राजा ने भी पराक्रम की महत्ता को स्वीकार किया है। वर्माजी के उपन्यास के मुख्य पात्र-"भुवन" का दृढ़ निश्चय है कि यदि मानव जाति में पराक्रम हो, तो आधे जाति में विजय अपने अपने :4: रसिक राजा ने भी शिक्षार्थी के माध्यम से शक्ति और पराक्रम की प्रतिष्ठा बढ़ायी है। उनका विचार है कि " जिनमें शक्ति नहीं है, वे भी पराक्रम से दूर भागने के रास्तों और खोज में लगे रहते हैं ।" :5:

वर्मा जी और भगवतीप्रसाद वाजपेयी :

वर्मा जी बहुपत्नी प्रथा के विरुद्ध थे । वे एक पत्नीत्व रखते हुये दूसरा विवाह करने को दुराचार मानते थे। भगवान, दूसरे विवाह की कामना की पूर्ति के लिए स्वयं प्रयत्न-शील रहता है, किन्तु वर्मा जी ने उसकी साथी पूजा के साथ उसका दूसरा विवाह नहीं होने दिया और उसकी पहलीपत्नी रतन का जीवन संकट में पड़ने से बचा लिया। :6: वाजपेयी जी ने, वर्मा जी की इस उच्च भावना का समादर किया है। वे भी बहुपत्नी प्रथा के कटु आलोचक बनकर उभरे हैं। उन्होंने बहु विवाह को पुरुषों की क्रूरता एवं स्त्रियों के प्रति घोर अन्याय माना है । :7: प्राचीन हिन्दू समाज में होने वाले स्त्रियों के विवाह के प्रति दोनों ही उपन्यासकारों ने असन्तोष व्यक्त किया है। वर्माजी ने कथा किया प्राचीन काल में" किसी भी तरह का पति, बूढ़ा-लंगड़ा, रोगी-अपाहिज, कैसा भी हो, उसे पत्नी बनाकर पूजा भेंट करने का नियम था । अपाहिज में नहीं अधिक परिवार प्रयोजन रखा करता था। किसी भी

वृन्दावनलालवर्मा के उपन्यासों का सांस्कृतिक अध्ययन	-1 पृष्ठ संख्या-170	3। कृष्णा अवस्थी
दुर्गावती	-2 पृष्ठ संख्या-189	वृन्दावनलालवर्मा
महारोहरा जीत गई	-3 पृष्ठ संख्या- 64	रसिक राजा
रावन विजय	-4 पृष्ठ संख्या-162	वृन्दावनलाल वर्मा
महारोहरा जीत गई	-5 पृष्ठ संख्या- 69	रसिक राजा
सरकती भूख	-6 पृष्ठ संख्या-220	वृन्दावनलाल वर्मा
दो बहनें	-7 पृष्ठ संख्या- 27	भगवतीप्रसाद वाजपेयी

आकार -आकृति को पति बना लिया या बनाया गया, वही पूजनीय हो गया।" :1: यह विचार वर्मा जी को अच्छा प्रतीत नहीं हुआ । वर्मा जी ने इसी सम्बन्ध पर अपने विचार व्यक्त करते हुये बताया कि" हिन्दू समाज में स्त्रियाँ पति को अपनी इच्छा से नहीं चाहती हैं, जिस तरह एक पशु, दूसरे व्यक्ति के हवाले कर दिया जाता है, उसी तरह स्त्रियाँ पति को प्राप्त करती हैं ।" :2: दोनों उपन्यासकारों ने वाणिज्यवाद तथा अन्धविश्वास का भी उपेक्षा किया है। :3: दोनों ही उपन्यासकार, सौन्दर्य के उपासक हैं। जहाँ वर्मा जी मानवीय और प्राकृतिक सौन्दर्य की अनुपम झाँकी प्रस्तुत करना, अपना परम कर्तव्य मानते हैं, वहीं वाजपेयी जी भी सौन्दर्य के अनन्य भक्त हैं । वे एक ऐसे सौन्दर्य के पुजारी हैं, जो सौन्दर्य उपासना को ही अपना परम धर्म मानते हैं । :4: दोनों उपन्यासकारों ने आध्यात्म, जन्म जन्मान्तर नर्क-स्वर्ग और पाप-पुण्य के सम्बन्धों में अपनी निजी आख्यायें प्रस्तुत कीहैं तथा जनसाधारण की विचार धारायें भी बतायी हैं। दोनों उपन्यासकारों ने शोषित लोक गीतों को व्यक्तिगत करने में सफलता प्राप्त की है। वर्मा जी की नायिका अपनी मनोभावनायें व्यक्त करते हुये गाती है:- " उड़ जो न श्याम कहो मानो- पट खेंच चुनरिया लिन लानो- :5: तो वाजपेयी जी की नायिका अपनी मनोभावनायें इन शब्दों में व्यक्त करती है - " एक तो मोरी चारी चुनरिया उस पे निपट अंधेरा, दूजे यह मेल लाँकरी जहुत है, धरत पग न लहराय-मोरा जिया घबराय।" :6: दोनों उपन्यास कारों ने लोगों की आध्यात्मिक भावनाओं को बताया है। वर्मा जी ने राजा विजयपाल सिंह की भावनाओं का उल्लेख करते हुये बताया कि वे भगवान की प्रतिमा के सम्मुख मस्तक टेककर क्रोध, राग-द्वेष से बचने और शान्ति तथा आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिये प्रार्थना करते रहते थे। :7: वहीं वाजपेयी जी ने अपने औपन्यासिक पात्रों की मनोभावनाओं को बताते हुये बताया है कि वे ईश्वर से प्रार्थना करते हैं जिन्हें सुबुद्धि मिले, जन-जन का कल्याण हो। :8: इस प्रकार से दोनों ने अपनी-अपनी अभिव्यक्तियों को उद्घोषित किया है ।

अवध मेरा देश	-1 पृष्ठ संख्या- 59	वृन्दावनलाल वर्मा
दो बहनें	-2 पृष्ठ संख्या- 52	वाजपेयी जी
दो बहनें	-3 पृष्ठ संख्या- 51	वाजपेयी जी
दो बहनें	-4 पृष्ठ संख्या-139	वाजपेयी जी
मृगनयनी	-5 पृष्ठ संख्या-182	वृन्दावनलाल वर्मा
दो बहनें	-6 पृष्ठ संख्या- 21	वाजपेयी जी
देवगढ़ की मुस्कान	-7 पृष्ठ संख्या-	वृन्दावनलाल वर्मा
विश्वास बोल	-8 पृष्ठ संख्या-	वाजपेयी जी

वर्मा जी का विचार है कि विवाह ऐसी लड़की से करना उचित है, जो पूर्व परिचित :1: न हो। ठीक इसी प्रकार वाजपेयी जी की दृष्टि में प्रेमविवाह के पूर्व प्रेम का कोई :2: स्थान और अस्तित्व नहीं है। वर्मा जी ने जहाँ शिक्षाओं का पुनर्निर्माण करवाया है, वाजपेयीजी ने उपन्यास की शिक्षा" छाया" की सीमारेखा से परे रखकर पंडित आस्तिकता में :3: लय लीन रखकर अपने लेखन को सीमित करने में लिप्त रहे हैं। वर्मा जी का दृष्टिकोण वाजपेयी जी से कुछ भिन्न रहा है। उनका विचार था कि " समाज के लाभ-संकोच में ही शिक्षायें अपने वास्तविक को गला-गला कर और ढला-ढालकर अपना जीवन :4: व्यतीत करती हैं, पर इन वास्तविक सत्यों को कोई नहीं पूछता। "

वर्मा जी और जैनेन्द्र कुमार :

वर्मा जी एक रोमांसवादी लेखक थे। " भावों के सम्मुख उन्होंने भाषा की शब्दावली पर विशेष बल नहीं दिया और न ही पंडितजी की तरह :5: उसे सरल, सजीव और सवारा है।" जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों में " न भाषा का विकास है न भाव का। दोनों किसी ओर के चित्रों में सम्बद्ध नहीं हो सके हैं।" :6: इस सत्यता उद्घाटन स्वयं जैनेन्द्र ने किया है। वर्मा जी ने प्रेम को पेट में जहाँ वास्तविक उपचारों की अन्तर्वेदनाओं को प्रबल किया है साथ उनके जीवन को एक लक्ष्य को प्रस्तुत किया है, वहीं जैनेन्द्र ने भी शिक्षा समस्या पर लेखिनी चलाई। उन्होंने आदर्श का सम्बल लेकर कट्टो के विषय को आधुनिक एक कुशल उपन्यासकार की तरह बल दिया है। वे कट्टो को शिक्षा समाज के कुशिक्षा कुसंस्कार से बचाना चाहते थे। वे समाज की शिक्षाओं को विकृतमयता मानते थे। उनकी दृष्टि में विवाह एक आवश्यक आहुति के समान था। उन्होंने इन सभी अपने के लिये :7: कट्टो का विवाह विहारी से करा दिया था। वर्मा जी ने भी कट्टो और विहारी को विवाह कराके एक आदर्श उपस्थित किया है। वर्मा जी ने प्रामीण कुन्तेलाकी

अचल मेरा कोई	-1 पृष्ठ संख्या- 38	कृष्णलाल वर्मा
विश्वास का बल	-2 पृष्ठ संख्या-107	वाजपेयी जी
विश्वास का बल	-3 पृष्ठ संख्या-119	वाजपेयी जी
अचल मेरा कोई	-4 पृष्ठ संख्या-239	कृष्णलाल वर्मा
हिन्दी उपन्यास एक अन्तर्यात्रा	-5 पृष्ठ संख्या- 193	कृष्णलाल वर्मा
परख	-6 पृष्ठ संख्या- 204	जैनेन्द्र कुमार
परख	-7 पृष्ठ संख्या-133	जैनेन्द्र कुमार

दुल्ला ठेका ठूला के अंतर्गत मुंडासा, मेली तलीदार अंगरखी, ठूल्लू छोती, चमकी वाली चादर, अच्छूदार जूतों को बताया है, वहीं शैलेन्द्र ने भी दुल्ला ठेका ठूला में मोटा कुर्ता का कुर्ता, सिर पर मटमैली टोपी, ठूल भारे ठेकी चरमराते हुये जूतों का उल्लेख करके किया है। :2: वर्मा जी के कुछ औपन्यासिक पात्र, विवाह को संस्कार न मान कर मात्र सिविल कंट्राक्ट तथा पारस्परिक समझौता मानते हैं। :3: शैलेन्द्र के अनुसार विवाहपक्ष सामाजिक समस्या और सामाजिक सत्य भार है। :4: दोनों ही उपन्यासकारों ने क्षेत्रीय कथा की शब्दावलि का प्रयोग किया है। वर्मा जी की तरह शैलेन्द्र ने भी कर्मफल को मीमांसा की है तथा बताया है कि कर्मफल की परम्परा में आदि और अंत नहीं, केवल मध्य ही है। :5: जहाँ वर्मा जी के पात्र सपरिवार और सौहार्द के साथ लोक-परलोक सुधारने के लिये तत्पर रहते हैं वहीं शैलेन्द्र ने भी परलोक की पूजा को मानवीयता की संज्ञा प्रदान की है। :6: :7: :8: वर्मा जी की "रोमी" और शैलेन्द्र की सुगदा दोनों ही नारियाँ हैं, जो पति के साथ मजदूर और किसानों की समस्या उठाने में अग्रसर रहीं हैं। :9: वर्मा जी ने आदर्श प्रेरणा के माध्यम से स्त्रीवर्ग के द्वारा अन्य बुन्देलखण्ड की नारियों को देश की स्वतंत्रता के लिये प्रेरित किया है। उन्होंने नारियों को आध्यात्म का संबल लेकर जीवन के प्रति सजगता का बोध कराते हुये शरीर और आत्मा को सबल बनाकर, देश की रक्षा के लिये मर मिटने को प्रेरित किया। :10: उन्होंने नारियों को गृहस्थ जीवन के दायित्वों से भी विमुख नहीं होने दिया, जबकि शैलेन्द्र की सुगदा वासनापूर्ण भावना से परे रहकर अन्य स्त्रियों से अपेक्षा करती है जिसे वहाँ सौहार्द अपने पुत्रियों की अलग करके देश की असहाय आबादी हेतु आगे आई। उसकी यह भावना नारी की महत्ता पर ठेस पहुँचाती है। वर्मा जी की रोमी के समान शैलेन्द्र की सुगदा को भी स्वतन्त्र जीवन से विरोधाभास था, किन्तु सुधाकर, सुगदा के पति

टूटे काँटे	-1 पृष्ठ संख्या- 1	वृन्दावनलाल वर्मा
धरती	-2 पृष्ठ संख्या- 9	शैलेन्द्र कुमार जैन
अमर मेरा कोर्ट	-3 पृष्ठ संख्या-188	वृन्दावनलाल वर्मा
धरती	44 पृष्ठ संख्या- 90	शैलेन्द्र कुमार
सुगदा	-5 पृष्ठ संख्या- 5	शैलेन्द्र कुमार
कटनार	-6 पृष्ठ संख्या-181	वृन्दावनलाल वर्मा
सुगदा	-7 पृष्ठ संख्या- 5	शैलेन्द्र कुमार
टूटे काँटे	-8 पृष्ठ संख्या- 10	वृन्दावनलाल वर्मा
सुगदा	-9 पृष्ठ संख्या- 10	शैलेन्द्र कुमार
झाँसी की रानी	-10पृष्ठ संख्या-102	वृन्दावनलाल वर्मा

की तरह उदार और उन्मुक्त नहीं बन सका, परिणाम स्वरूप लक्ष्मी चौकर पुत्री की आत्महत्या कर लेनी पड़ी, उधर पुत्र के जीवन की शान्ति छिन गयी। जैनेन्द्र ने पारिवारिक जीवन की महत्ता को स्वीकार किया है। उनकी दृष्टि में घर में रहकर ही धर्म और कर्तव्य का पालन किया जा सकता है। परिवार को वे संस्कृति के मूल का प्रमुख साधन मानते हैं, जबकि जैनेन्द्र ने परिवार के स्थान पर समाज को प्रियतर स्थान दिया है। वे सामाजिक संस्कृति को श्रेष्ठ मानते हैं[1]। उन्हें उनकी दृष्टि में आपसी रिश्तों के नियमों को बनाकर, व्यवहार की मर्यादायें छोड़ने पर ही मानव-संस्कृति का निर्माण सम्भव है[2]।

---

1. पृष्ठ संख्या-22 जैनेन्द्र
2. पृष्ठ संख्या-176 जैनेन्द्र

७ - वर्मा जी का अन्य उपन्यासकारों पर प्रभाव :

वृन्दावनलाल वर्मा एक प्रतिभाशाली उपन्यासकार थे। उनके उपन्यासों का आधार मात्र कल्पना नहीं था। वे वस्तु-स्थिति और यथार्थ को अपने अनुभवों से स्वयं निरीक्षण करके अध्ययन तथा मनन द्वारा उनकी पुष्टि कर लेते थे। इसी कारण उनके उपन्यास इतने यथार्थ, रोचक और सजीव बन पड़े हैं। उन्होंने ऐतिहासिक तथ्यों को बिना तोड़-मरोड़े प्रस्तुत किया है। उन्होंने समुचित और रोचक कथाओं का समावेश अपने उपन्यासों में विशेष रूप से किया है। आदर्श प्रेम को उन्होंने उपन्यासों में प्रधानता दी है। साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनका साहित्य निर्दोष है प्रायः चूक ऐसे ही क्षमता रखता है। उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से बुन्देलखण्ड की संस्कृति का समग्रता जन मानस के समक्ष प्रस्तुत किया है।

वर्माजी का लोक कल्याणकारी व्यक्तित्व साधारण से लेकर असाधारण व्यक्तियों तक को प्रभावित करने की क्षमता रखता था। वे युवकों और युवतियों को उभारते और उन्होंने कोटि-कोटि जनों का कल्याण किया। उनकी इस प्रतिभा ने बुन्देलखण्ड के शिक्षितों को उपन्यासकार बनने को प्रेरित किया। अन्य उपन्यासकार भले ही वर्मा जी जितने बारे न उतर सके हों, किन्तु फिर भी उन्होंने वर्मा जी के पदचिन्हों पर चलकर यथा कीर्तिलब्धता पा ली है। उन्हीं के उपन्यासकार भी उनसे अछूते नहीं रह पाये हैं। कोई उनकी लेखन शैली से प्रभावित हुआ तो कोई उनके रोमान्स में खो गया। किसी ने उनकी आंचलिकता को ग्रहण किया, तो कोई उनकी कथावस्तु से मुग्ध हुआ। किसी ने उनके ऐतिहासिक अनुसंधान को स्वीकार किया, तो किसी ने प्रेम, त्याग, बलिदान, कर्तव्य, धर्म का पाठ पढ़ा। उन्होंने मानव जीवन के अनेक पहलुओं और अनेक वर्गों के लोगों की जीवन झाँकी प्रस्तुत की है, जिसमें उन्हें अद्भुत सफलता और लोकप्रियता मिली। वर्मा जी ने बुन्देलखण्ड तथा अन्य क्षेत्रों के उपन्यासकारों पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है।

:क: क्षेत्रीय उपन्यासकारों पर वर्माजी का प्रभाव :

वर्मा जी का बुन्देलखण्ड के अन्य उपन्यासकारों पर विस्तृत प्रभाव पड़ा है।

झाँसी जनपद के अंतर्गत चिरगाँव निवासी श्री सियारामशरण गुप्त का" अंतिम आकांक्षा" इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है । उन्होंने गोद तथा नारी नामक उपन्यासों की भी रचना की है। वर्मा जी ने गुप्त जी को बुन्देली भाषा के प्रति गहन आस्था उत्पन्न की थी, जिसके फलस्वरूप उन्होंने अपने उपन्यासों में अनेक, बुन्देली भाषा
:1: :2: :3: :4: :5: :6:
के शब्दों का प्रयोग किया है। सत्ता, कमाऊ, खिसका, काका, छिटकना, अथम,
:7: :8: :9: :10: :11: :12: :13:
राजव, अम्मा, छेड़ खान, नाच, भौजी, सवाली, कुनैला और रोटा आदि शब्दों का प्रयोग करके उन्होंने वर्मा जी की तरह बुन्देली भाषा आत्मसात करने का पूर्ण प्रयास किया है और बुन्देली भाषा के प्रति अपना मोह दर्शाया है ।

बुन्देलखण्ड में जातिवाद का बोलबाला प्राचीन समय से चला आ रहा है । लेखकों में जाति को लेकर ऊँच-नीच और छुआछूत की भावना सदैव विद्यमान रही है। वर्मा जी ने बखूबी अपने विभिन्न उपन्यासों में व्यक्त किया है और उसके दूषित प्रभावों से भी आगाह किया है। वर्मा जी का अनुकरण, गुप्त जी ने भी किया है। उन्होंने राम को "नीचजाति" का जातीयुगे कथाकिसव नीची जाति का होने के कारण" तो कह रोटी खा सकता है और छूते दर्शन हो सकता है। उसे अन्तर्जातीय के कार्यों में न संकोच और न पूर्वजों का सिर नीचा होने का [illegible] वर्मा जी की मनोवृत्ति भावना से प्रेरित होकर वे जातिवाद के संकीर्ण दायरे से निकलना चाहते थे, फलस्वरूप उन्होंने किन्हीं कारण निम्नजाति के लोगों के
:19:
जातिगत व्यवस्था समाप्त करने का सफल प्रयत्न किया है ।

गुप्त जी ने निकृष्ट कर्मों के दुष्परिणामों से अपने को लिये प्रायश्चित करने की प्रेरणा भावना जी से प्राप्त की । उन्होंने भी प्रायश्चित के अंतर्गत," गंगा स्नान, कन्यादान, शिक्षा और ब्रह्मभोज आदि देने की पद्धति प्रचलित
:18:
किया है। पूजा-पाठ, व्रत-नियमों की महत्ता को गुप्त जी ने भी स्वीकार किया है। वर्मा जी ने बंगाल प्रांत के महत्व को विशेष रूप से दर्शाया है। गुप्त जी ने भी इस
:17:
परिपाटी को आगे बढ़ाया । वर्मा जी के उपन्यासों में बाबू प्रायः देवीजी का

अंतिम आकांक्षा
-1 पृष्ठ संख्या-8
-2 पृष्ठ संख्या-17
-3 पृष्ठ संख्या-10
-4 पृष्ठ संख्या-11
-5 पृष्ठ संख्या-13
-6 पृष्ठ संख्या-23
-7 पृष्ठ संख्या- 24
-8 पृष्ठ संख्या-29
-9 पृष्ठ संख्या-109
-10 पृष्ठ संख्या-111
-11 पृष्ठ संख्या-33
-12 पृष्ठ संख्या-32
-13 पृष्ठ संख्या-80
-14 पृष्ठ संख्या-20
-15 पृष्ठ संख्या-121
-16 पृष्ठ संख्या-56
-17 पृष्ठ संख्या-37

--- सियाराम शरण गुप्त

स्पष्ट करते थे। गुप्त जी ने भी इसी अवधारणा से सम्बन्ध लेकर आदि शिक्षमूर्ति को महावीर जी का स्पष्ट करते दिखाया है।[1] वर्मा जी ने अपने शिक्षित उपन्यासों में धर्म परायणता और कर्तव्य भावना का आदर्श प्रतिष्ठापित किया है, जिसकी छाप गुप्त जी पर पड़ी। उन्होंने अपने उपन्यासों में स्पष्ट दिखाया है कि धर्म-कर्म का अपना एक विशिष्ट स्थान है।[2] बुन्देलखण्ड में विवाह के अवसरों पर वर और कन्या पक्ष के मध्य कभी न किसी बात को लेकर विवाद हो जाया करता था। रिश्तेदार और बात चौधरी के चौधरी आदि मनमुटाव को समाप्त करते थे। वर्मा जी ने इसका भी पुष्टि की है। गुप्त जी ने भारतीय संस्कृति की पुनरावृत्ति करते हुये विवाहों में हो जाने वाले विदेशीय वाह्यपक्ष की कमियों को प्रस्तुत किया है।[3] छोटी जाति में होने वाले फुसलिवाह और विधवा विवाह की प्रथाओं को गुप्त जी ने भी स्वीकार किया है। बड़ी जाति के लोगों में बहुविवाह का प्रचार, मद्य के दुष्प्रभाव, विधवा आदि उन्होंने उल्लेख किया है।[4]

इसप्रकार वर्मा जी ने अत्यन्त रूप से गुप्त जी पर अपना विशिष्ट प्रभाव बनाये रखा है, जिससे उनके उपन्यासों में रोचकता और आकर्षकता का प्रभाव परिलक्षित होता है।

बुन्देलखण्ड के सामाजिक उपन्यासों की तरह ऐतिहासिक उपन्यासकारों पर भी वर्मा जी का अमिट प्रभाव पड़ा है। जालौन जनपद के अंतर्गत गोपालपुरा के निवासिनी जागीर अवध को वर्मा जी के ऐतिहासिक उपन्यासों ने विशेष रूप से आकर्षित किया, जिसने उन्होंने, "राजनर्तकी" जैसे मार्मिक ऐतिहासिक उपन्यास की रचना कर डाली। इस उपन्यास के सम्बन्ध में उन्होंने अपनी मनोकामनायें बताते हुये लिखा है कि" राज नर्तकी" ऐसे मानस मैल करते, मदिरापानों के दम अंधविश्वासों का प्रतीक है, जो चारों ओर विचारी समाजियों, दमनकारों, मौन प्रसादों और उनके टूटते हुये कंगूरों जिस कर अतल में एकत्र हो गये थे। इनमें

		गुप्त जी
अंतिम आकांक्षा	-1 पृष्ठ सं० T-47	
	-2 पृष्ठ संख्या- 34	
	-3 पृष्ठ संख्या-	सियारामशरण वर्मा
	-4 पृष्ठ संख्या-63/64	गुप्त जी
अंतिम आकांक्षा	-5 पृष्ठ संख्या-84	गुप्त जी

लेखकों ने अतीत की अनेक कल्पित कथाओं की गढ़ी मूर्तियों ऐसे घटना-चित्र अंकित किये, जिनमें वर्तमान सत्य है, जीवन है और जीवन की ऐसी निर्मल धारा है, जिनमें पाठकों को सामाजिक परिस्थितियों के प्रवाह से प्रभावशील व्यक्तियों में प्रच्छन्न मानवीय सौन्दर्य के दर्शन होंगे।" :1:

जहीर अहमद ने प्रस्तुत उपन्यास में ऐसे व्यक्तियों और घटनाओं का समावेश किया है, जिनमें ईर्ष्या, द्वेष, हिंसा, कामुकता के और उनके पृष्ठ में उनके संस्कारों और अनुभाव का एक अद्भुत अभिमुख छिपा हुआ है। उसमें वेश्या और माता मानवीय और मानुष्य, देश प्रेम और अर्थतुष्टि के चित्र, एक साथ परिलक्षित होते हैं।

वर्मा जी के उपन्यासों से प्रेरित होकर जहीर जी ने अपने उपन्यास को आंचलिक रंग में रंग दिया है। श्री रामनाथ "सुमन" का यह यथोचित है- उनका विचार है कि राज नर्तकी में प्रभाव है, उत्कण्ठा और कुतूहल है, चरित्रों का चारु-चित्रण है, आंचलिक रंग है। उसमें वेश्या और पशु का कम-कम नाद सत्ता यथार्थ टीलों का आख्यान है। उनकी कथा में वह कसाव नहीं है, जिसमें ऐतिहासिक उपन्यासों की कला में कुम्भनदास तथा को छोड़ कर दिखाई, परन्तु ऐतिहासिकता भी नहीं कि हमें निराशा हो। :2:

"राजनर्तकी", जहीर अहमद की एक ऐसी कृति है, जिसमें बुन्देलखण्डी भाषा के शब्दों की एक पाठक को कल्पना के प्रति सहज ही आकर्षित कर देती है। वर्मा जी के चित्रलेखा उपन्यासों में बुन्देलखण्डी भाषा का प्रयोग, जहीर अहमद को सहज और उन्होंने ठेठ बुन्देली भाषा का आश्रय लिया है। बुन्देलखण्डी लड़के नाचे का माँ के रूप में अपने बालकों पर इन शब्दों में कोई "अलंकृत्या सहा है। " नाहा पिटे---- रोटी करिबो मुसकिल करें " तथा बालक जागेन्द्र की शिकायत उसकी माँ से करते हुये कहता है कि" हमार्य मोरिया जागेन्द्र पुरा ज्यादे।" :3: जहीर जी ने बाड़, पिछवना, टीला, टोरिया, भूरी, सोना, खाट, लकड़ा

राज नर्तकी -1 भूमिका
राज नर्तकी -2 दो शब्द -पृ०सं०-2
राज नर्तकी -3 पृ०सं०-24

जहीर अहमद
रामनाथ "सुमन"
जहीर अहमद

आदि अनेक बुन्देलखण्डी भाषा के शब्दों को अपने उपन्यासों में संजोया है। उन्होंने वर्मा जी की कोमलता और सौम्यता प्रदान करने के साथ-साथ उनकी सजीवता को भी आत्मसात् किया है। वे वर्मा जी के समान मुक्त रूप में अपने उद्गार व्यक्त करते हैं। यथा " मुक्त-मुक्त " है, साधना और संयम में नहीं " :1: एवं आकाशोन्मुख अनुशासनहीन होकर मार्ग बदलती हैं अथवा कृत्रिम अलंकरण भाव से लज्जित हो उठता है क्योंकि अहंकार हीन मानस से निर्विकार, निर्दोष और सच्चे रूप को अभिव्यक्ति होती है।" :2:

वर्मा जी के उपन्यासों का विस्तृत फलक बुन्देलखण्ड की अनुपमेय संस्कृति, सघन निसर्ग प्रकृति जीवन के प्रति अवरोधित दिखायी देते वर्ग और उनसे, नष्ट होता मन्दिरों और दुर्गों की अवशिष्ट विरासत है, जिसने अमीर अहमद इलम मान लेखक को अपने बहुरंगी रंग में रंजित कर दिया है। सेवता, बहुल की निर्मल धारा आम, अमरूद, अंजीर, करौंदी, बहुल, नीताफल, सेवनारंगी, नीबू, अनार, पपीता, अटवस, जामुन, खिरनी, पालसा, लोधी के विशाल वृक्ष सदा सुगन्धित चमेली, जूही, केला और चन्दन की महक सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड को सुवासित किये हुये है, जो लेखक के चक्षुओं से परे नहीं रहा है। :3: पीलू, गौरी, भैरव, दीपक राग-रागनियाँ किसे नहीं सुहाती यह सत्य है कि आत्मिक सौन्दर्य के प्रदर्शन बिना सजा और स्वाभाविकता के बिना रूप अपाहज और अपूर्ण प्रतीत होते हैं। :4: रूपनारायण, मृगनयनी, दुर्गावती और रानी लक्ष्मीबाई की तरह राजरानी ने भी अपने कर्तव्य और दायित्वों का पूर्ण निर्वाह किया है। :5:

बुन्देलखण्ड के तीज त्योहारों में कजली और सावनी पर्व :6: आत्मिक शक्ति के औरंगजेब सम्प्रदायिकों का आशीर्वाद, भिन्नमें-मनोलिया, दान पुण्य :7: , राज्यों की

राज भर्तकी

-1 पृष्ठ संख्या- 10 — अमीर अहमद
-2 पृष्ठ संख्या- 17 — "
-3 पृष्ठ संख्या- 175 — "
-4 पृष्ठ संख्या- 15 — "
-5 पृष्ठ संख्या- 16 — "
-6 पृष्ठ संख्या- 42 — "
-7 पृष्ठ संख्या- 43 — "
-8 पृष्ठ संख्या-48
-9 पृष्ठ संख्या-65

:1:

की परम्परा के अनुरूप अतिथियों को भोजन पात्र देना, दरबार लगना, कलाकार, साहित्यकार, आदि का सम्मान किया जाना तथा पुरस्कार वितरण करना आदि बड़ी रूपों का समावेश "राज नर्तकी" में परिलक्षित होता है और उसमें बुन्देलखण्ड की संस्कृति के साक्षात दर्शन उपलब्ध हो जाते हैं।

कबीर जी, को लक्ष्मी वर्मा के जीवन-चरित्र में उपस्थित किया गया है। उनके पुत्र पात्र हकीम जी यह कहने में गर्व करते हैं कि ::: काशी की रानी के सोहर को कौन नहीं जानता। :2: वर्मा जी ने अपनी अभिष्ट पात्र चौड़ कर कबीर अहमद को न केवल एक उपन्यासकार की प्रतिभा प्रदान की अपितु हिन्दी साहित्य जगत में एक मुसलमान हिन्दी उपन्यासकार को अमर कर दिया। बुन्देली जनता उनकी सदा ऋणी रहेगी।

राज नर्तकी -1 पृष्ठ संख्या- 143 कबीर अहमद

-2 पृष्ठ संख्या- 115 कबीर अहमद

वर्मा जी के उपन्यास, मानवीय अन्तःकरण का स्पर्श करने की क्षमता रखते हैं। वे भूतकाल की भूलों के प्रति मोह रखना उचित नहीं मानते थे[1] उनके साहित्य में देश प्रेम और बुन्देलखण्ड की संस्कृति के प्रति अगाध स्नेह विद्यमान था, जो कि उनके सम्पूर्ण साहित्यसृजन का मूल प्रेरणा स्रोत था[2]। वे आकर्षक व्यक्तित्व वाले व्यक्ति थे। प्रथम भेंट में ही लोग उनके अभिन्नतम और अन्तरंग बन जाते थे। डा० कृष्णा अवस्थी ने उनके व्यक्तित्व के सम्बन्ध में यथार्थ ही लिखा है कि " बड़ी बातों से बड़े थे, साधारण से, घुट-घुट, छोटी किन्तु तेज आँखवाले, छोटी-मुटी थाती- वृन्दावनलाल वर्मा से सामने बैठाते हुये, देखने वाले को कुछ भय लग सकता था। आकृति, वेशभूषा और बातचीत में वह औसत बुन्देलखण्ड के निवासी से कुछ भी भिन्न से नहीं दिखायी देते थे।[3] "ऐसा प्रतिभाशाली उपन्यासकार यदि अनेक उपन्यासकारों का प्रेरणा स्रोत बना तो कोई आश्चर्य नहीं।

वर्मा देश सांस्कृतिक, हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यासकार के रूप में अवतरित हुये हैं। उन्होंने सिंह सेनापति, मृग नयनी, झाँसी की रानी और मदन रहस्य नामक ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना करके ख्याति प्राप्त की है। उनके उपन्यास सिंह सेनापति पर वर्मा जी का प्रभाव और प्रधान प्रकाश परिलक्षित होता है। प्रस्तुत उपन्यास में मुख्यकथा मन्थर गति से आगे बढ़ती हुई, अपने लक्ष्य को प्राप्त होती है। वर्मा जी की तरह उन्होंने अपने विनोदी कथानों, उपकथाओं और चित्रात्मक वार्तालापों को जोड़कर उपन्यास को रोचक रूप प्रदान करने की चेष्टा की है। उद्देश्य की सफलता और सिद्धि हेतु उन्होंने अनेक घटनाओं का समावेश किया है। कुल्हार में सार और विस्तार का प्रणय प्रसंग बराबर, वर्मा जी ने भी इस पद्धति को अपनाया था। इन घटनाओं के समावेश से कथानक बोझिल नहीं है और न उपन्यास इसे साथ ऐतिहासिक प्रभाव प्रतीत होता है। लेकिन बुन्देलखण्ड देश के पात्र चुटकुले नहीं देते हैं। उन्होंने लिखित और रोचिनी का अत्यन्त मार्मिक और सजीव चित्रांकन किया है। वर्मा जी के साथ दुःखान्तिक, निर्भय, दृढ़ और लगन के पक्के

अपनी कहानी -1 पृष्ठ संख्या- 231 वृन्दावनलाल वर्मा
ऐतिहासिक उपन्यास -2 पृष्ठ संख्या- 303 डा० भागीरथ मिश्र
चित्रोपांक "साहित्य संदेश"
वर्मा जी के उपन्यासों -3 पृष्ठ संख्या-104 वृन्दावनलाल वर्मा
का सांस्कृतिक अध्ययन.

रहते हैं। वे जिस कार्य को करने की ठान लेते हैं, उसे पूरा करके छोड़ते हैं। यही कारण है राहुल जी के पात्रों की उनके उपन्यासों की घटनाएँ भी सीधी-सीधी चलती हुई अपने गन्तव्य तक पहुँच जाती हैं। कोई ऐसे व्यापार का विस्तृत वर्णन करके वर्मा जी, पाठकों का वैशेष्ट मनोरंजन करने में रत रहते हैं।:1: वहीं राहुल ने भी विनोद वाला और व्यंग्यों की झड़ी सी लगा दी है। इस सम्बन्ध में विद्वानों का कथन है कि कहीं-कहीं तो उन्होंने विनोद के लिये तीन-चार पृष्ठ रंग दिये हैं।:2:

राहुल जी ने समकालीन वातावरण, रहन-सहन, संस्कृति-सभ्यता की काफी प्रस्तुति की है। उन्होंने नए राज्यों का निर्माण दर्शाते हुये व्यक्ति के सामाजिक सम्बन्धों को दर्शाया है तथा राजा-महाराजाओं की लोलुपता और राज्य विस्तार का उल्लेख किया है।:3: वर्मा जी ने वैदिक काल के पात्रों की दीनहीन दशा और उन पर किये जाने वाले अत्याचारों का उल्लेख किया है।:4: स्त्री व्यक्ति के आश्रम की महत्ता अनुशासन, शिक्षा पद्धति आदि का भी उन्होंने वर्णन किया है। गुरु और शिष्यों के अनुशासित सम्बन्धों की व्याख्या भी की गयी है। राहुल जी ने बुद्धकाल में पात्रों के साथ किये जाने वाले पशु-व्यवहार, गुरुकुल में आचार्यों और शिष्यों के मर्यादित सम्बन्धों, विवाह पद्धतियों, प्रेम प्रणय कथाओं और सुभाषितियों का उल्लेख किया है।:5: उपन्यास "सुरु" में लेखक ने अवैध स्त्री-पुरुष प्रेम का जो रूप प्रस्तुत किया है, वह कामुकता का मूल्यवान प्रतीत होता है। इस सम्बन्ध में मिश्र जी ने यथार्थ चित्रण करते हुये बताया है कि " लेखक ने स्थान-स्थान पर चुम्बन आलिंगन की भरमार सी कर दी है। :: कोई भी स्त्री किसी पुरुष के अधीन नहीं, प्रत्येक पुरुष, प्रत्येक रमणी से रमण कर सकता है।:6: वर्मा जी के नायक-नायिकाओं का, प्रेम त्याग, मर्यादा, आदर्श और भव्यता का प्रतीक था। उनमें न कामुकता है, न वासना चाहिये, तो केवल पूजा-उपासना और बलिदान।

भैरव प्रसाद गुप्त ने गंगा मैया मरती मैया का चोरा, शोषितों का आदमी और छोटी ईंटें जैसे सामाजिक चेतनावादी उपन्यास लिखे हैं। उनके उपन्यास का मुख्य पात्र,

---

मृगनयनी	-1 पृष्ठ संख्या- 3 से 12 तक	वृन्दावनलाल वर्मा
हिन्दी उपन्यास एक अनुशीलन	-2 पृष्ठ संख्या-163	डॉ० राम दरारेश मिश्र
सिंह सेनापति	-3	राहुल सांकृत्यायन
भुवन विक्रम सिंह सेनापति	-4	वर्मा जी राहुल जी हिन्दी
हिन्दी उपन्यास एक अध्ययन	-5 पृष्ठ संख्या	
हिन्दी उपन्यासकार एक अध्ययन	-5 पृष्ठ संख्या-160 -6 प्रेमा मैया	रामदरश मिश्र

ऐसा कर्मठ, निर्भीक और सत्यशील युवक किसान है, जो जमींदारों के अत्याचारों के सम्मुख घुटने नहीं टेकता। अन्त में वह अन्याय के प्रति विद्रोह कर देता है और सम्पूर्ण ग्रामीणों का हितकरता है।:1: शर्माजी ने अपने उपन्यास में हलधर को लाकर ग्रामीण समाज में नवचेतनता लाने का प्रयत्न किया है। वे भी देवराज और उनके कारिन्दों की षड्यंत्रपूर्ण और अत्याचारी प्रवृत्ति के प्रतिविद्रोहात्मक दृष्टि रखते थे।:2: "गोदान" की तरह शर्मा जी की " राज दुलारी, " छाटी वाली" और " किरण" जैसी कृतियों में ग्रामोत्थान, हेतु सतत संघर्ष किया था। शर्मा जी के पात्रों ने अत्याचारों के प्रति विद्रोह अन्याय और सामाजिक रूढ़ियों को समूल उखाड़ फेंका, जिससे किसानों में नव चेतना जागी। यही उद्देश्य गुप्त जी का भी था, उन्होंने किसानों की भावना कायम करने प्रयास किया। उनकी दृष्टि में किसान गंगा और धरती माँ के सच्चे सपूत हैं। गंगा और धरती ही वास्तविक जीवनकी वास्तविकता है।

इन आंचलिक उपन्यासों को प्रत्यक्ष या प्रच्छन्न रूप से शर्मा जी के आंचलिक उपन्यासों ने प्रभावित किया है। फणीश्वरनाथ रेणु का मैला आंचल भी इसी प्रकार का उपन्यास है, जिसमें पूर्णिया जनपद के पिछड़े ग्राम " मेरी गंज" की स्थानीय स्थिति को चित्रांकित किया गया है। प्रस्तुत उपन्यास में अंचल के जीवनकी समग्रता और विविधता विद्यमान है। इस उपन्यास के सम्बन्ध में यह विचार दार्शनिक और यथार्थ प्रतीत होते हैं। कि इसमें फूल भी है, शूल भी है, गुलाब भी, कीचड़ भी है, चन्दन भी, सुन्दरता भी है, कुरूपता भी- लेखक किसीसे भी दामन बचाकर नहीं निकल पाया है।:3: वास्तव में लेखक ने किसी वस्तु की उपेक्षा नहीं की और न किसी एक वस्तु पर वह अपनी आँखे गड़ाये बैठा रहा है। समकालीन राजनीतिक दलों के पारस्परिक टकराव, प्राचीन और नवीन मान्यताओं का सम्मिलन और विसंगतियों में जैसे, परिवर्तनशील परिस्थितियों से घुटे हुये पात्रों का चरित्रचित्रण आदि का जो कलात्मक ढंग से चित्रांकन उपन्यास में किया है। उन्होंने जहाँ "मेरी गंज"

गंगा मैया	-1	प्रेमचन्द
अमर बेल	-2	सुन्दरलाल शर्मा
मैला आंचल "लेखक चित्रांकन"	-3	फणीश्वरनाथ रेणु

जैसे नारि का चतुर्मुखी वर्णन करते हुये नारि के प्रति लोगों की आस्थाहीन दृष्टि को उजागर किया है। उनके पास समूचे अंचल को मूर्तित करने में पूर्ण सक्षम हैं। "मेरी गंज" में चिकित्सालय की स्थापना, सरकारी साथ पूर्ण राजनीति से भोले ग्रामवासियों को लेस करना, अधिकारियों का दुष्ट परिवर्तन करने, लोकगीतों और प्राकृतिक उपादानों का चित्रण आदि करने उपन्यास की आंचलिकता की पुष्टि करते हैं।

ग- सांस्कृतिक दृष्टि से वर्मा जी के उपन्यासों का प्रदेय:

वर्मा जी ने अपने प्रगाढ़ अनुभवों की सीमा से सम्बद्ध, बुन्देलखण्ड जनपद को मुख्य रूप से अपने उपन्यासों का क्षेत्र बनाया। विश्वास, लगन और सहयोग के साथ बुन्देलखण्ड वैशिष्ट्यों की सजीव छवि अंकित करने में उन्हें पूर्ण सफलता मिली है। उन्होंने इस धरती की समग्रतापूर्ण जीवनानुभूति को मूर्त वाणी दी है। उन्होंने लोगों के हृदय और अन्तःकरण में सामन्जस्य प्रतिष्ठापित करने का सतत प्रयत्न किया उनके पास जीवन-दृष्टि, गहन-अनुभव, रचनात्मक कल्पनाशक्ति कथन विचार और विश्लेषण क्षमता का बाहुल्य था। इन गुणों को रोचक ने एक उच्चकोटि के उपन्यासकार के लिये अनिवार्य माना है।:1:

वर्मा जी ने आंचलिकता को ध्यान में रखते हुये सामाजिक और ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना करके, साहित्य को एक अमूल्य निधि सौंपी है। उन्हें अतीत से प्रेम था और वर्तमान से द्वेष। उनके उपन्यासों के मूल में, स्वयं का अध्ययन और अनुशीलन, जन-श्रुतियाँ तथा परम्परायें निहित हैं। वे रोमांटिक परम्परा के वाहक थे। उनके वर्णनों में प्राचीन तथा अनुकूल आकर्षण शक्ति विद्यमान है। उनके उपन्यासों की चतुर्मुखी सांस्कृतिक देन, भारतीयजनमानस को प्रेरणा प्रदान करती रही है। बुन्देलखण्ड की मनोहारी प्रकृति ने उन्हें उपन्यासकार बनने को प्रेरित किया था। वे कायरता, भय, पलायन, अकर्मण्यता, संशय, अनास्था आदि चित्रवृत्तियों से परे रहते थे तथा आदर्श और यथार्थ के समन्वयात्मक रूप को लेकर चलते थे।:2::3:

वर्मा जी के उपन्यासों का गहन अध्ययन एवं अनुशीलन करने से स्पष्ट होता है कि सांस्कृतिक दृष्टि से उनकी कालजयी प्रदेय रहा। विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त होने वाले उनके योगदानों का विवरण अवलोकनीय है।

-1 पृष्ठ संख्या-34 — डॉ मोहिनी पन्त की पीयूष
-2 पृष्ठ संख्या-133 — रोचक — वृन्दावनलाल वर्मा — अपनी कहानी
-3 पृष्ठ संख्या-209 — वृन्दावनलाल वर्मा — अपनी कहानी

/1/ आंचलिक स्तर पर वर्मा जी का उद्देश्य प्रदेय :

वर्मा जी ने, बुन्देलखण्ड के जन-जीवन को एक सिद्ध-हस्त मूर्तिकार की तरह सजाया, एक कुशल चित्रकार की तरह सजाया, संवारा और इन्द्रधनुषी रंग में उसे रंग दिया। उनके उपन्यास, बुन्देलखण्ड के समग्र जीवन के उपन्यास हैं। उन्हें, बुन्देलखण्ड की हरी भरी प्रकृति, पावन सरिताओं, विशाल फूले, फैले-फैले वन-वाटिकाओं, अलंकृत मन्दिरों, विशाल भवनों, एवं उत्कृष्ट ललित कलाओं ने विशेष लगाव था। वर्मा जी उकरीली माटी और लहरी नदी के सीमित जल ने उनके व्यक्तित्व का निर्माण किया था, यही ये उनके उपन्यासों के कथानक बुन्देली रंग में रंगे हुये हैं। जिस भी कोण पर निर्विवाद कहा है कि वर्मा जी ने अपने कथानक बुन्देलखण्ड की घाटियों में निवास करने वाली जनता से चुने हैं। कथानकों के उतार-चढ़ावों बुन्देलखण्डी जीवन की प्रतिच्छाया है। उनमें अपूर्व आकर्षण का रहस्य है साथ ही सहज, सरल और स्वाभाविक जीवन शैली के प्रवाह में निरंतर प्रवाहित होते रहते हैं :1: सत्येन्द्र ने तो वर्मा जी के उपन्यासों को बुन्देलखण्डी उपन्यासों की संज्ञा प्रदान की है :2: वर्मा जी ने अपने उपन्यासों में बुन्देलखण्ड जीवन के सभी पक्षों का समावेश किया है। उन्होंने वस्तुवाद की भौगोलिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, आर्थिक राजनीतिक, धार्मिक, अध्यात्मिक, सांस्कृतिक आदि सभी परिस्थितियों को प्रत्यक्ष या प्रच्छन्न रूप में अपने उपन्यासों में दर्शाया है। उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से बुन्देलखण्ड के रीति रिवाजों, रूढ़ियों, विश्वास मान्यताओं, उत्सवों, त्योहारों, मेलों, व्रतों, संस्कारों, प्रकृति, मनोरंजनों, लोकगीतों, लोक कथाओं, कलाओं, भाषा, और लोक साहित्य एवं शौर्य, पराक्रम, वीरता, साहस, कमजोरी आदि को भी दर्शाया है। उन्होंने इस क्षेत्र की साधारण सांस्कृतिक विशेषताओं का भी विस्तृत रूप से उल्लेख करना अभिलाषी समझा है। उनमें बुन्देलखण्ड के समग्र जीवन को प्रकट करने की अदम्य इच्छा थी। बुन्देली संस्कृति को पूर्ण अभिव्यक्ति करने का उद्देश्य उनके उपन्यासों में आंचलिकता का विशिष्ट रंग ला देता है। डा० कृष्णा असनानी का विचार है कि

-1 पृष्ठ संख्या- 153 — डा० राम दरश मिश्र — हिन्दी उपन्यास /एक अन्तर्यात्रा/

-2 पृष्ठ संख्या-70 — डा० सत्येन्द्र — हिन्दी उपन्यास विवेचन

वर्मा जी के उपन्यासों की सबसे बड़ी विशेषता है," उनकी बुन्देलखण्डी महक।" बुन्देलखण्ड के प्रति प्रगाढ़ आत्मीयता अपनी पूरी समग्रता से उपन्यासों में झलक उठी है। बुन्देलखण्डी नारियों के घर आँगन पौर-अटारी, मन्दिर-शिवालय, खेत, खलिहान, ताल-तलैया, पंछी-परेवा सभी कुछ अपने वास्तविक रंगरूपों में साकार हो उठे हैं। बुन्देलखण्डवासियों की रीति-प्रथाओं, विश्वास मान्यताओं, उत्सव-त्योहारों, पूजापर्व, खान-पान और वेश-भूषा का सजीव अकृत्रिम चित्रांकन उपन्यास कृतियों में प्राणी बन पड़ा है। प्रादेशिक लोक गीत और लय में लोकगीत रागरागनियों व फुट आँचलिक रंगों को और भी गाढ़ा कर देते हैं। स्वतंत्रता के पश्चात बुन्देलखण्ड के ग्रामों में आधुनिक की सुगबुगाहट, आशा और आकांक्षाओं को वर्मा जी, पूरी प्रमाणिकता और यथार्थता से उभार सके हैं।:1: वर्मा जी ने एक कुशल उपन्यासकार की तरह अपने जीवन की समस्याओं का उद्घाटन किया और उन्हें जन मानस के समक्ष प्रस्तुत करते हुये उनके निराकरण करने की पुनीत व्यवस्था की। वे अतीत से चलकर आने की प्रवृत्ति को बड़े चाव से देखे अवसरों की तरह मान कर पुष्ट होते हैं और नारियों तक विस्तृत समस्याओं को मूल शक्ति नष्ट करने को उद्यत हो जाते हैं।:2: वर्मा जी उदात्त और व्यापक दृष्टिकोण रखते थे। उन्हें अमानवता के प्रति अमानवता थी। दुर्गावती की मनोव्याधि को बहुतों के बीच में थी, उसे देखकर उन्हें सन्तोष होता है। उनकी दृष्टि में सहृदयता, सौन्दर्य, कला, सभ्यता, सुन्दरता, उज्ज्वलता और पवित्रता की मूर्ति-दुर्गावती की अभिव्यक्ति, मुझसे के साथ में केवल देखकर होनी चाहिये थी।:3:

वर्मा जी के उपन्यासों के नायक प्रायः साधारण वर्ग के पुरुष होते हैं। देश हित का भीषण परिणामों का कारण उन्होंने बुन्देलखण्ड के पुरुषों को सतर्क करने की प्रेरणा प्रदान की है।:4: जो कुछ आचरणअन्दर होता रहता है, उसी को समाज के समक्ष लाने का प्रयत्न करने वाले वर्मा जी सहकारिता के प्रबल पोषक थे।:5: वे समाज के निराश्रितों को जीवन-सुख और समृद्धि से भर देना चाहते थे। सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड के उपेक्षित जीवन के प्रश्नों, विवशताओं और मानसिक विवशताओं को वर्मा जी ने अपने उपन्यासों में प्रकट किया है। वर्मा जी के उपन्यासों का एक बहुत बड़ा प्रदेय है-" बुन्देली भाषा का अधिकाधिक प्रयोग।":7: उन्होंने सरकारिक दुर्दशा

---

1 -1 पृष्ठसंख्या- 361 — जयशंकरलाल वर्मा के उपन्यासों का सांस्कृतिक अध्ययन।

अमर बेल/परिचय/ -2 पृष्ठ संख्या-
दुर्गावती/परिचय/ -3 पृष्ठ संख्या-
लगन /परिचय/ -4 पृष्ठ संख्या-
अजमेराकोट/ " / -5 पृष्ठ संख्या-
उदय किरण/ " / -6 पृष्ठ संख्या-
झाँसी की रानी -7 पृष्ठ संख्या- 97

:1: :2:
अर्जुन सहोदर और सरसाई के माध्यम से बुन्देलखण्डी भाषा के सारल्य को उजागर किया है, जिससे उनके उपन्यासों में रोचकता और सजीवता आ गयी है। बुन्देली लोकोक्तियों और सूक्तियों का भी प्रयोग करके वर्मा जी ने बुन्देलखण्डी भाषा की गरिमा को प्रतिष्ठित किया है। खान-पान में बुन्देलखण्ड में प्रचलित प्रिय भोजनों के अंतर्गत, उन्होंने कढ़ी, भात, राबड़ा, अरा मसूरी रोटी, चने की दाल, पकवान, मिष्ठान और मोटे अनाजों का उल्लेख किया है। वस्त्रों की भाषा में अंगरखा, छत्तू धोती, मुंडासा, साफा, कछोटा, धोती, चमकर, लँगा, जो नी साड़ी, धोती को उजागर करके अपने वास्तविक को दिखाया है। आभूषणों (गहनों) पेजनी, बाजूबंद, करधोनी, पटेला, कड़े, चुल्ले तोड़े, लच्छे आदि चूड़ी और सोने के अनेक आभूषणों को भी दर्शाया गया है। विवाह, सगाई /सगाई/ लग्न-पत्र, मंडपी, गूँथ, सुती आदि प्रथाओं तथा अनेकों विश्वास और मान्यताओं को उजागर किया है बुन्देलखण्ड की समग्र लोकोपयुक्त एवं महत्व पूर्ण योजनाएँ दिखाई है। कुछ गीत, देवी गीत, फाग, ऋतुगीत आदि विभिन्न लोक गीतों को उन्होंने अपने उपन्यासों में संजोया है। उनके उपन्यासों में विभिन्न मन्दिरों शिवालय भवनों, किलों और गढ़ियों का उल्लेख भी मिलता है। ग्राम मन्दिरों और मूर्ति भक्त को वर्मा जी ने " जा के रहे दोनों लोकुकाम" की संज्ञा
:3:
से अभिहित किया है। विभिन्न राग-रागनियों का उल्लेख करके उन्होंने बुन्देलखण्ड की कला-प्रियता को उजागर किया है। संगीत को उन्होंने देवी-देवताओं को प्रसन्न करने एवं मानसीय आत्माओं में देवत्व को जागृत करने का प्रबल साधन
पृ:4:
बताया है।

प्राकृतिक जीवन से भी देवास का, बुन्देलखण्ड की मनोहारी प्रकृति से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। आम, नीम, बेर, बबूल, अरण्ड, महुआ, पीपल, पैंजना, करौंदी अनार, ताल, कचार, कमली, बेल, करधई और साजू आदि पेड़ों का उल्लेख प्रायः सभी के उपन्यासों में उपलब्ध है। वर्मा की पावन सरिताओं से प्राकृतिक सौन्दर्य को

गढ़ कुण्डार	-1 पृष्ठ संख्या-17	वृन्दावनलाल वर्मा
विराटा की पद्मिनी	-2 पृष्ठ संख्या-136	वृन्दावनलाल वर्मा
मृगनयनी	-3 पृष्ठ संख्या-3	वृन्दावनलाल वर्मा
कोच और कमल	-4 पृष्ठ संख्या-11/6	वृन्दावनलाल वर्मा

दर्शाकर बुन्देलखण्ड के प्रति अटूट अनुराग की पुष्टि की है। बेतवा, यमुना, सोन, केन, बहुरा, कुमारी, सिंध, चम्बल, नर्मदा, टिहरी, मंदाकिनी, आदि नदियों की गति-शीलता और विन्ध्याचल, पलोधर, केयूर, गोपाचल, फाटा तथा भांडेर पर्वतों की विशालता का भी उल्लेख करके, इस अंचल की प्रकृति का सजीव एवं सामान्य के समक्ष प्रस्तुत किया है। कलात्मक ढंग से प्रस्तुतीकरण करने की अद्वितीय क्षमता, लेखक में विद्यमान थी। आदिकाल से प्रकृति यहाँ के निवासियों की प्रेरणा बनी रही है। पाठक को आकर्षित करें, जिसके मन को नहीं छू जाती, यहाँ की प्राणवान प्रकृति भौतिक समस्याओं से आकुल रहने वाले दिवाकर को अपनी मातृभूमि के लिये आत्मोत्सर्ग करने की प्रेरणा प्रदान करती है। बुन्देलखण्ड की प्रकृति यहाँ के मानव के हृदय में अटूट उल्लास भरने की शक्ति रखती है। इसप्रकार आंचलिक स्तर पर वर्मा जी के उपन्यासों का अमूल्य योगदान और महत्वपूर्ण प्रदेय है। वे इस भूमि के सदा ऋणी रहे और यह भूमि उनके उपकार को कभी नहीं भूल सकती।

/2/ सामाजिक स्तर पर वर्मा जी के उपन्यासों का प्रदेय :

वर्मा जी, समाज के प्रति सदैव जागरूक रहे। उनके उपन्यासों में राष्ट्रीय और सामाजिक चेतना विद्यमान थी। उन्होंने बुन्देलखण्ड के समाज का विशिष्ट रूप से अध्ययन किया था और सामाजिक व्यक्तियों की अन्तर्वेदनाओं को निकट से परखा और समझा। समाज, व्यक्तित्व का निर्माता है, उसका अदृश्योपरान्त प्रभाव मानव-जीवन पर पड़ता रहा है। बिना समाज के व्यक्ति का कोई अस्तित्व नहीं होता किन्तु व्यक्ति, समाज की एक इकाई होती है। वर्मा जी ने व्यक्ति और समाज दोनों की सत्ता को स्वीकार किया है। मानव जाति का सामाजिक जीवन चित्रण करने में उन्हें अद्भुत सफलता मिली है। वे उस मंगल कारी समाज की कल्पना करते थे। सामाजिक असमानता, उन्हें खटकती रहती थी। उन्होंने समाज के दुखित व्यक्तियों, अनाथों, गरीबों, किसानों, मजदूरों, विधवाओं, दरिद्रियों, नारियों, पिता एवं अभिभावकों, अछूतों, ब्राह्मणों, राजा-रानियों आदि सभी के जीवन-चर्चा प्रस्तुत की है।

-1 पृष्ठ संख्या- 97 — वृन्दावन लाल वर्मा
-2 पृष्ठ संख्या- 184 — वृन्दावनलाल वर्मा

शिवरानी की पहिचानी
मधु कुलकर

उनके उपन्यास [illegible] कथाएं जीवनकला में ओत-प्रोत हैं और वे जन-मानस का सच्चा प्रतिनिधित्व करते हैं। वे भारतीय पुनर्जागरण काल में उपन्यासकार के रूप में उभरे थे। उस काल में समूचा समाज पर पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव बढ़ रहा था। सामाजिक कुरीतियाँ प्रकट दिखायी पड़ने लगी थी। उसी समय वर्मा जी ने अन्य लेखकों से आगे बढ़कर तत्कालीन समाज की विभिन्न समस्याओं को उठाया और उनका निराकरण करके समाज में नव जागरण का शुभ संदेश प्रसारित किया। दहेज, समाज का नासूर है। यह आदिकाल से कुमारियों के लिये अभिशाप बना हुआ है। कन्या जन्मते उसके माता-पिताओं मात्र इसलिये आनन्दित नहीं हो पाता जिनके पास अपनी पुत्री के विवाह में देने के लिये दहेज की भारी रकम उपलब्ध नहीं हो पाती। वर्मा जी ने समाज से दहेज प्रथा को समूल नष्ट करने का प्रयत्न किया। वे दहेज प्रथा के घोर विरोधी थे :1: । दहेज के लालची व्यक्ति विशेष मात्र ने अपने पुत्र देवदत्त की शादियों पर पानी फेर दिया था। वर्मा जी ने, उन्हें इसे पश्चात्ताप करने पर विवश किया और उसके मन में दहेज के प्रति घृणा उत्पन्न कर दी :2: । कथा के व्यापार और उसके दहेज के लालची पिता का तीव्र अपमान करके कितना दहेज के वास्तविक स्वरूप को समाज के लिये एक प्रेरणादायक घटना है :3: । लालची को पारदर्शि जीवन व्यतीत करने का कारण दहेज का न मिल पाना बताया गया है :4: ।

वर्मा जी ने जातिवाद के दुष्परिणामों को उजागर किया है, जिससे लोगों में जाति भावना दूर हो सके और स्वस्थ समाज की रचना हो सके। कुंवर और कुन्दनों का जीवन सुख और कुंवारों का विवाह मात्र जातिवाद के कारण हुआ था :5: । मानसी और अभिमन्यु विभिन्न जातियों के कारण प्रेम परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो सके :6: । और सैकड़ों के उपरांत कीचड़ और पिताजी आदुपाद्रों :7: बन सके :8: । रामशरण को जातिवाद का शिकार बनना पड़ा। अटल और मालती के माध्यम अन्धन में जाति ही मार्ग कंटक बनी :9: । प्रकार वर्मा जी ने जातिवाद की

आदत	-1 पृष्ठ संख्या- 3	वृन्दावनलाल वर्मा
लगन	-2 पृष्ठ संख्या- 76	"
आदत	-3 पृष्ठ संख्या-195	"
संगम	-4 पृष्ठ संख्या- 58	"
गढ़ कुण्डार	-5 पृष्ठ संख्या- 478	"
गढ़ कुण्डार	-6 पृष्ठ संख्या- 179	"
गढ़ कुण्डार	-7 पृष्ठ संख्या- 304	"
संगम	-8 पृष्ठ संख्या- 84	"
मृगनयनी	-9 पृष्ठ संख्या- 30	

कट्टरता को उत्तरोत्तर समाज में जाति व्यवस्था के प्रति अनास्था व्यक्त की है। वे ऐसे समाज की कल्पना करते थे, जहाँ जाति का बोलबाला न हो और नारायण शास्त्री को देश निकाले का दण्ड न मिल सके।:1:

वर्मा जी ने समाज में व्याप्त अन्य कुरीतियों के प्रति असन्तोष व्यक्त किया है और उन्हें समाज से निकाल फेंकने का सम्भव प्रयत्न किया। बहुपत्नी प्रथा का उन्होंने डट कर विरोध किया और भ्रूजल जैसे कामुक व्यक्ति को निन्दित करने में कसर न उठा रखी।:2: विन्तकों के माध्यम से छुआ छूत की प्रथा की आलोचना करते हैं।:3: स्वतन्त्र रोमक के विचारों से दास प्रथा की अवहेलना दर्शाने का प्रयत्न करते हैं।:4:

वर्मा जी, आर्थिक रूप से समाज को समुन्नत-शाली बनाना चाहते थे। सहकारिता पर उन्होंने विशेष बल दिया। धनी-निर्धनों, छोटे-बड़े की बीच की खाई को वे समेटना चाहते थे। जमींदारी प्रथा और जमींदारों के द्वारा किसानों तथा गरीबों पर किये जाने वाले अत्याचारों का उन्होंने डट कर विरोध किया। दूसरे शब्दों में जमींदार की भावना उन्हीं ने अपनी।:5: वर्मा जी ने समाज में व्याप्त रूढ़ियों को जड़ से मिटा देने का संकल्प सा ले लिया था। वैदिक काल की आत्मा को पुनः प्रस्तुत करते उन्होंने उस काल के सारे धन, शील, संयम और सहनशीलता को लोगों के जीवन में उतारने की प्रेरणा दी।:6: नारी-समाज के उत्थान के लिये उन्होंने भगीरथ प्रयत्न किया। वे नारी की आर्थिक स्वतन्त्रता के कट्टर पक्षपाती थे। नारी उत्थान के लिए सतत समाज की कल्पना, उच्चदृष्टि से निरखा थी। उन्होंने अपने उपन्यासों में, सावन, बसुंध, लक्ष्मीबाई, दुर्गावती, अवन्तीबाई, प्रमिला, कलवार, जयशारीवाली, गोरी, राधा, लीला, मृगनयनी, गन्धाकेशम अहिल्याबाई, सरस्वती, रतन कुमारी, भीमवती, जानकी किरणादि ऐसी नारियों का उल्लेख किया है जो त्याग, प्रेम, वीरता, बलिदान, कर्तव्यनिष्ठता, पतिव्रता, सच्चरित्रता, लगन, कर्मठता, न्याय, सहनशीलता, आत्मसम्मान, महिमामयता और चरित्र का प्रतिनिधित्व करती है। पुरुषों में मानसिंह, टंडन, ताल्या, गंगाधरदास, दिवाकर, देवीसिंह, कविराज, उदय, देवसू, मंगल, अंजन, नाथसिंह, डा० मनोहरलाल, भ्रूजल आदि

कुन्दनलाल वर्मा		
काशी की रानी	-1 पृष्ठ संख्या- 58	"
कुलटी वधू	-2 पृष्ठ संख्या- 220	"
भ्रूजल विक्रम	-3 पृष्ठ संख्या-26	"
उदय किरण	4 48 पृष्ठ संख्या- 1	"
भ्रूजल विक्रम	-5 पृष्ठ संख्या-10	"
उदयकिरण	उन्नत पृष्ठसंख्या-	

वीरता, त्याग, सद्भावना, देशप्रेम, सहनशीलता, पराक्रम, तपस्या, समर्पण, कर्मठता, राष्ट्रीयता, निर्भीकता, सत्यनिष्ठा आदि के प्रतीक हैं। ये पात्र समाज के नारी और पुरुषों के सच्चे पथ-प्रदर्शक बन कर उभरे हैं।

/3/ ऐतिहासिक स्तर पर वर्मा जी के उपन्यासों का प्रदेय :

वर्मा जी उच्चकोटि के ऐतिहासिक उपन्यासकार थे। इतिहास के कंकाल में मांसजोर रक्त का संचार करने का सफल साधन, उन्होंने उपन्यास को माना है।:1: उनके ऐतिहासिक उपन्यासों की सामग्री प्रायः मुस्लिम काल से सम्बन्ध रखती है। वर्मा जी ने इतिहास की उन घटनाओं को प्राथमिकता दी, जिनसे उपन्यास कौतूहलता नष्ट नहीं तथा कोमल से विभिन्न पक्षों का पारस्परिक संघर्ष और उनमें उदात्तप्रवृत्तियों को विकसित करे। वर्मा जी इतिहास के बिखरे हुये खण्डहरों से इनोंओं को चुन-चुन कर उन्हें कल्पना से सजाते थे, तब उन्हें जन मानस के समक्ष प्रस्तुत करते थे।:2: विद्वानों ने उन्हें उच्चकोटि के ऐतिहासिक उपन्यासों का प्रणेता माना है। वर्मा जी के ऐतिहासिक उपन्यासों का एक महत्व पूर्ण प्रदेय यह है कि उन्होंने इतिहास के सही तथ्यों को प्रकट करके लोगों में फैली भ्रान्ति का निवारण किया। वर्मा जी ने, पारसनीस की पुस्तक " लक्ष्मीबाई के जीवन चरित्र का अध्ययन किया, उसमें उन्होंने पढ़ा कि रानी, गदर के समय में अंग्रेजों को जोरदार टक्कर का प्रबंध करती थी तथा अन्तःकरणीय विद्रोहों की परिस्थितियों में उत्पन्न हुआ था किन्तु जब उन्होंने 1858 में किसी अंग्रेजी फौजी अफसर के द्वारा लि० गार्डनर को प्रेषित किये गये अनेक पत्रों का अध्ययन किया, तो निम्नांकित कथनों सामने आकर और सत्य तक पहुँचे। उन्होंने स्पष्ट किया कि रानी कादंबिनी विद्रोह की परिस्थितियों में उत्पन्न नहीं हुआ था। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि रानी स्वराज्य के लिये लड़ी थी।:3: वर्मा जी ने भारतीय स्थलों को स्वयं देखकर भौगोलिक परिचय प्राप्त करने की प्रेरणा

रानी की रानी हिन्दी उपन्यास	-1 पृष्ठ संख्या- 4	"परिचय"	कृष्णदास वर्मा
	क -2 पृष्ठ संख्या- 73		डा० केशव प्रसाद मिश्र
	ख -2 पृष्ठ संख्या- 92		डा० महेन्द्र चतुर्वेदी
	ग -2 पृष्ठ संख्या- 48		डा० रामनारायण सिंह मधुर।
रानी की रानी	-3 पृष्ठ संख्या- 4	"परिशिष्ट"	कृष्णदास वर्मा

वर्माजी ने स्वतंत्र से प्रेरणा लीजी । उन्होंने वर्तमान को सजीव बनाने के लिये अतीत से उपजीव्य को खोजने की चेष्टा की है।[1] वे वर्तमान जीवनता को स्वीकार करते थे। यथार्थवादिता उन्हें रुचिकर नहीं थी। वे भविष्य को सफल बनाने की चेष्टा में रत रहते थे। वर्मा जी ने इतिहासके तथ्यों को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत नहीं किया और बुन्देलखण्डवासियों की प्रतिभा शौर्य वीरता, सहिष्णुता आदि के कथन में प्रतिष्ठापित किया है। उन्हें विदेशी इतिहासकारों से सावधान रहने की प्रेरणा दी है। उनके द्वारा लगाये गये आरोपों का, प्रमाण देते हुये खण्डन किया है। देश प्रेम तो उनके व्यक्तित्व और कृतित्व की आत्मा है।[2] उन्होंने ऐतिहासिक पात्रों के माध्यम से बुन्देलखण्ड के नारी पुरुषों की महत्ता और गौरव गाथा को प्रतिपादित किया है। वृन्दावन जी काव्यमय सरसे विवर्तमान काल में ऐतिहासिक उपन्यास के क्षेत्र में केवल बाबू वृन्दावनलाल वर्मा दिखाई दे रहे हैं।[3] वर्मा जी, कल्याणकारी नये समाज के सृजन में विश्वास रखते थे। वे प्राचीन आत्मघाती बन्धनों से मुक्ति चाहते थे । वे, नये जीवन, नई सहर, प्रगति नये संकेतों को, प्रवीन की श्रेष्ठता और पूजा के प्रतीकों से पहचाना चाहते थे।[4] कल्याणकारी प्राचीन उन्हें प्रायः था। वे जमींदारी उन्मूलन और सरकारी संस्थितियों के निर्माण को समाज के लिये हितकर मानते थे।[5] वे नारी की सरकारी के लिये नारी आरक्षण के लिये सतत् प्रयत्न किया। वे समाज में नारी के अस्तित्व को स्वीकार करते थे । उनके विचार से नारियों की शिक्षा की समस्या का तात्काल समाधान हो-जाना चाहिये, तभी वे उन्नति, के शिखर तक पहुँच सकती हैं।[6] मजदूरों की दीन दशा पर भी उन्होंने चिन्ता की है।[7] घरों और शिक्षा कानू पुनर्निर्माण करके उन्होंने विद्यार्थियों के जीवन में नव रस घोल दिया और नाच संकेत द्वारा मांस खाकर भारतीय जीवन से बन नारियों को मुक्ति दिलाई।[8] वर्मा जी ने संकीर्ण विचारों के प्रति अनास्था व्यक्त कीऔर

वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यासों का सांस्कृतिक अध्ययन
डा० हरिहर मंदिर ऐतिहासिकउपन्यास विशेषांक

हिन्दी साहित्य का इतिहास /राम चन्द्र शुक्ल /
अमर बेल
अमर बेल
अमर बेल
अमर बेल
अचल मेरा कोई

वृन्दावनलाल वर्मा

-1 पृष्ठसंख्या- 366370
-2 पृष्ठ संख्या-303कृष्णा /डा०आशीरवाद सिंह/ आदि
-3 पृष्ठ संख्या-515
-4 पृष्ठ संख्या-61
-5 पृष्ठ संख्या-91
-6 पृष्ठ संख्या-203
-7 पृष्ठ संख्या-477
-8 पृष्ठ संख्या-259

लोगों को स्वाधीनता से बताया । समाज में वर्गीय परावलम्बता की महत्ता प्रतिपादित की । धर्म की पूजा करने का उपदेश दिया। पारिवारिक स्नेह और प्रेम के महत्व को दर्शाया । अनुशासित समाज ही श्रेष्ठ गति पर पहुँच सकता है, इस धारणा से उन्होंने शासन व्यवस्था को और अधिक बल दिया तथा सेवनी और सहयोगपरक वाले व्यक्तियों को भी :1: । इतिहास ,परम्परा और रूढ़ियों की स्मृति से प्रेरित होकर उन्होंने रामचन्द्र की रानी अवन्तीबाई के त्याग, बलिदान, शौर्य और पराक्रम गाथा को :2: उपन्यास का रूप प्रदान किया। वर्माजी का विचार था विदेश और राष्ट्रों में भी ऐसे व्यक्ति हैं और उसी देश में शायद फल-फूल सकते हैं। :3: उनके ऐतिहासिक उपन्यासों के मुख्य पात्र देशभक्ति, त्याग, बलिदान, सत्य और स्वाभिमान के प्रतीक हैं। उनके द्वारा जो ऐतिहासिक तथ्य और आँकड़े प्रस्तुत किये गये हैं, उनसे राष्ट्रीय भावों का :4: उद्दीपन सम्भव हो सकता है। डा० कृष्ण अवस्थी कथन है, उन्होंने विश्वनाथ वर्मा ने भारतीय और विशेषतः बुन्देलखण्ड के इतिहास को हृदय और मस्तिष्क दोनों से आत्मसात किया था परम्परा और जन श्रुतियों के कोमल तन्तुओं से टूटी हुई इतिहास की कड़ियों को जोड़ कर उसे कलात्मक कौशल सहित प्रस्तुत किया है। :5: डा० राम विलास शर्मा ने अपने मनोभावनायें व्यक्त करते हुये स्पष्ट किया कि वर्मा जी उपन्यास के व सबसे अच्छे कहानी कहने वाले हैं, जहाँ और उपन्यासकार कथानक की ओर से उदासीन रहते हैं और उस की पुष्टि के लिये सरस-सरस की रसिकता का सहारा लेते हैं, वर्मा जी अपनी सरस कथा में पात्र कामनायें रखते हैं और अन्त तक उनकी उत्सुकता ताजी रखते हैं। :6: वर्मा जी के उपन्यासों में आखेट, शस्त्र संचालन, मल्ल-युद्ध, घोड़े दौड़ाना, मल्लयुद्ध, और दौड़ के खेलों का उल्लेख, युद्ध सम्बन्धी विद्या प्रदान करवाई। वर्मा जी ने जीवन मूल्यों पर दृष्टि पात रखते हुये इतिहास को आधार बनाया

भुवन विक्रम	-1 पृष्ठ संख्या- 82	वृन्दावनलाल वर्मा
रामचन्द्र की रानी	-2 पृष्ठ संख्या- 10	वृन्दावनलाल वर्मा
मृगनयनी	-3 पृष्ठ संख्या- 442	वृन्दावनलाल वर्मा
कचना	-4 पृष्ठ संख्या- 135	राधाकृष्ण बन्दोपाध्याय
वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यासों का सांस्कृतिक अध्ययन	-5 पृष्ठ संख्या- 368	-
उपन्यास और कला	-6 पृष्ठ संख्या- 162	डा० शिवकुमार मिश्र

उनके उपन्यासों की घटनाएँ महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक हैं ।

सम्राट अकबर को घंट का प्रकाश पत्थर से देने वाली, वर्मा जी के उपन्यास की नायिका दुर्गावती निःसन्देह नारी जातिको गौरवान्वित करती हैं :1: । उसके अतिरिक्त रूप मीनाक्षी का अनुपम त्याग और आत्मोत्सर्ग :2:, भीष्म के आश्रम का कठोर अनुशासन :3:, मुक्तबाली की संयम शीलता :4:, अहिल्याबाई का न्याय :5:, मुनि रत्नगिरि के उपदेश :6: रामदेव की कर्त्तव्यपरायणता :7: अवन्तीबाई का आत्म बलिदान :8: और सारंग का निःस्वार्थ प्रेम :9: सदियों सदियों को प्रेरणा देता रहेगा । निःसन्देह वर्मा जी के ऐतिहासिक उपन्यासों का एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है । वे इतिहास के अनुसन्धान कर्ता थे और उनकी इति सम्बन्धी खोज राष्ट्र की सम्पत्ति है :10: ।

/4/ राजनीतिक स्तर पर वर्मा जी के उपन्यासों का प्रभाव :

वर्मा जी राजनीतिक क्षेत्र में भी विशेष अभिरुचि रखते थे । वे चुनाव भी लड़े और विधान मंडल के सदस्य निर्वाचित हुये :11: । उन्हें मानवता की सच्ची परख थी। वे कपटी धन और कोरे उपाधियों से घृणा करते थे । वे इतिहासकार को मानते थे कि वह मनोज को आदर्श दृष्टि प्रदान करे :12: । यद्यपि वे सक्रिय राजनीति के सदस्य न थे :13:, परन्तु उन्हें राजनीति का ज्ञान पर्याप्त था। उन्होंने दल की गिनती बढ़ाने और नई की गिनती कम करने के प्रयत्न की पुष्टि की है। उनका विचार था कि प्रत्येक राजनीतिक दल या शासन को चाहिये विशेषी व्यवस्था की जाये कि प्रत्येक व्यक्ति भोजन, वस्त्र, शिक्षा, मनोरंजन, विकास, अनुशासन, व्यवसाय, धार्मिक स्वतंत्रता आदि प्राप्त हो सके :14: ।

वर्मा जी एकमात्र राजनीतिज्ञ की तरह मार्ग दर्शक का कार्य करते थे । वे सत्ता से ऊपर उठ कर सत्य को मानते थे :15: ।

दुर्गावती -1 पृष्ठ संख्या- 12
कोई लौटा दो -2 पृष्ठ संख्या- 491
प्रतिज्ञा विक्रम -3 पृष्ठ संख्या- 82
मुक्तबाली -4 पृष्ठ संख्या-230
अहिल्याबाई -5 पृष्ठ संख्या- 2
देवगढ़ की मुस्कान -6 पृष्ठ संख्या- 286
कीचड़ और कमल -7 पृष्ठ संख्या- 294
रामगढ़ की रानी -8 पृष्ठ संख्या- 143
मृदु कुमार -9 पृष्ठ संख्या- 398
अपनी कहानी -10पृष्ठ संख्या-200
अपनी कहानी -11पृष्ठ संख्या-158
अपनी कहानी -12पृष्ठ संख्या-157
अपनी कहानी -13पृष्ठ संख्या-220
अपनी कहानी -14पृष्ठ संख्या-260
प्रतिज्ञा विक्रम -15पृष्ठ संख्या- 98

--- वृन्दावनलाल वर्मा

अधर्म युक्त आचरण सेराज्य कोप्राप्त को वे हेय और अनुचित मानते हैं[1]। वर्मा जी ने राज्य करने वालों को संकेत करते हुये बताया कि आलस,आगे की न सोचना,ठीक निर्णय पर न पहुँच कर परस्पर विरोधी विचारों में उलझे रहना, बेगार लेना,कौशी विरोधियों की सहायता न करना, विजय मेदिनी का तिरस्कार करना, लुटेरों को न दबा पाना, दुष्टियों को मारे-मारे फिरने देना, धनवान के कोष को अपना मान ना, कामों को अधूरे छोड़ देना और मन में लालच बनाये रखना आदि आलस के साथ हैं[2]। उन्होंने सीधा विचारविचारशीलता मनोदोष होते हुये भी व्यक्तियों को चाहिये कि वे अधिकृतिक सत्ता अवश्य बनाये रखें[3]। वे जनता की मनोभावनाओं का अध्ययन करते थे। उनके विचार से जब भूखी-नंगी जनता उत्तेजित हो जाये,तो फिर उस आग और तलवार का रूप धारण कर लेतीहै सत्ताकर्तृकों कीभी परवाह नहीं करती[4]। वर्मा जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुये धर्मिक विचारधारा धर्म के सम्बन्ध में राज्य को तटस्थ रहना चाहिये[5]। अधर्मी राजा काराज्य काल अल्प होता है[6]। राजा के कर्तव्यों का बोध कराते हुये वर्मा जी विचार व्यक्त करते हैं कि राजा को प्रजा पालन और धन की रक्षा के लिये प्राण-पण तैयार रहना चाहिये। इन दोनों की रक्षा की दूसरा नाम धर्म है[7]। वर्मा जी ने राजाओं के प्रमुख कर्तव्यों के अंतर्गत न्याय,धर्म पालन, प्रजारंजन और जनहित का उल्लेख किया है[8]। वे राजा के लिये समदर्शी होना अति आवश्यक मानते थे[9]। अहिल्याबाई राज्य संचालन में दक्ष थी,इसलिये उन्हें उनकी प्रिय प्रजा देवी मानती थी[10]। वर्मा जी ने बताया कि शासक लोग यदि भोग-विलासी हैंऔर जनता की चिन्ता नहीं करते,तो वे राज्य कारागृह पतन को जाता है[11]। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि राजाओं और सामन्तों का पारस्परिक कलह ही उनके विनाश का कारण बनता है[12]। अपना सर्वस्व आहुत करने वाले प्रजा वत्सल राजा विजयपाल सिंह अन्य राजाओं के लिये

भोजन विक्रम	-1 पृष्ठ संख्या- 183		मुन्शीलाल वर्मा
भोजन विक्रम	-2 पृष्ठ संख्या- 186		"
अमर सेन	-3 पृष्ठ संख्या- 65		"
अमर सेन	-4 पृष्ठ संख्या- 71		"
अवन्तिकाबाईजी रानी	-5 पृष्ठ संख्या- 49		"
मृगनयनी	-6 पृष्ठ संख्या- 201		"
मृगनयनी	-7 पृष्ठ संख्या-159		"
देस मह की मुस्कान	-8 पृष्ठ संख्या- 246		"
देवगढ़ की मुस्कान	-9 पृष्ठ संख्या- 266		"
अहिल्याबाई	-10पृष्ठ संख्या- 2		"
रामगढ़ की रानी	-11पृष्ठ संख्या- 31		"
कीचड़ और कमल	-12 पृष्ठसंख्या- 262		"

प्रेरणा प्राप्त की[1]। वर्मा जी ने अंग्रेज विदेशी सत्ता के लिये समय से पहले कोई मूल्यवान जीवन नहीं बलिदान करते हुये उन्होंने सुझाव दिया कि उन्हें राष्ट्र प्रभाव के सुधारों की कल्पना में अपने को उलझा नहीं देना चाहिये कि स्वयं की निराशा का उदय होते ही उनका मन त्रास-विश्वास हो जाये[2]। जैसे जाना राजनीति का प्रथम कदम आते हुये वर्मा जी ने पुरुष में चरित्रवान और शक्ति में सत्याग्रह होने को उचित किया[3]। अत्याचार मिटाने का सत्याग्रह, उत्तम साधन मानने वाले वर्मा जी का राजनीतिक योगदान सराहनीय है[4]।

/3/ आध्यात्मिक और धार्मिक स्तर पर वर्मा जी के उपन्यासों का प्रभाव :

भारतीय मनीषियों के अनुसार मानव जीवन के प्रमुख चार उद्देश्य हैं। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। अन्तिम लक्ष्य की प्राप्ति हेतु मनुष्य सतत प्रयत्नशील रहता है। वह भौतिक सुखों का उपभोग करता हुआ मोक्ष प्राप्ति की कामना करता है और भौतिकता से आध्यात्मिकता की ओर उन्मुख होने की चेष्टा करता है। आध्यात्मिक अभिवार्यता पर पाश्चात्य विद्वानों ने भी बल दिया है[5]। आत्मा में दिव्य गुणों का समावेश होना मुक्ति प्राप्तिका सच्चा साधन है। वर्मा जी ने आध्यात्मिक संदेशों के जन मानस के समक्ष प्रस्तुत किया। उन्होंने अंतरा विश्वास को संचालित करने वाली महाशक्ति ही परमात्मा है[6]। आत्मा अमर है और शरीर नश्वर जानते[7]। परमात्मा की कृपा से जीव नाना योनियों में होता हुआ, मनुष्य योनि को पाता है। बुद्धि और ज्ञान उसके मनोबल को प्रबल करते हैं। आत्मा में परमात्मा का निवास रहता है[10]। वर्मा जी ने लोगों को आध्यात्मिक ज्ञान देते हुये प्रेरित किया कि व्यक्ति को बिना कर्म करना चाहिये न कि फल की चिन्ता[11]। निर्भयता पूर्वक कर्तव्य पर आरूढ़ रहना ही मानव का सच्चा ध्येय होना चाहिये[12]। वर्मा जी ने

जीवन और कला	-1 पृष्ठ संख्या- 179	वृन्दावनलाल वर्मा	
विराटा की पद्मिनी	-2 पृष्ठ संख्या- 144	"	
विराटा की पद्मिनी	-3 पृष्ठ संख्या- 247	"	
अचल मेरा कोई	-4 पृष्ठ संख्या- 90	"	
अचल मेरा कोई	-5 पृष्ठ संख्या- 71	"	
अचल मेरा कोई	-6 पृष्ठ संख्या- 70		
	-7 पृष्ठ संख्या- 9	"	
अमरबेल	-8 पृष्ठ संख्या- 312	"	
कचनार झाँसी की रानी	-9 पृष्ठ संख्या- 163	"	
कचनार	-10 पृष्ठ संख्या- 219	"	
झाँसी की रानी	-11 पृष्ठ संख्या- 320	"	
दुर्गावती	-12 पृष्ठ संख्या- 293		

पुनर्जन्म की महत्ता को प्रतिपादित करते हुये दो अलग श्रेणियों के परलोक में चिर-स्थायी मिलन के लिये उन्हें आशान्वित किया है।[1]

आध्यात्मिक प्रेरणा की लोगों की मनोभावनाओं को परिवर्तित कर देती है और उन्हें देश के लिये प्राणोत्सर्ग करने को प्रेरित करती रहती है।[2] बलूकार वर्मा जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से नश्वर संसार की वास्तविक स्थिति को दर्शाकर, आत्मा से परमात्मा के मिलन की प्रेरणा देकर, मृत्यु भय से मुक्त कराकर, माया के बन्धनों को काटने की युक्तियाँ बताकर, सत्कर्मों के लिये प्रेरित किया है, ईश्वर की सत्ता को दर्शाकर, तप-संयम, पूजा-पाठ और अध्यात्मिक विचार मोक्ष की प्राप्ति के साधनों से अवगत कराकर आध्यात्मिक स्तर पर बहुत बड़ा योगदान दिया है।

वर्मा जी ने बुन्देलखण्डवासियों को धर्म कर्म की ओर प्रेरित किया, जिससे धर्म के प्रति लोग जागरूक हुये। उन्होंने कर्तव्य का निर्वाह करना, आत्मिकता से सम्बद्ध किया है। रमू का विचार है कि स्वामी के लिये प्राणों की बाजी लगा देना धर्म है।[3] वर्मा जी का विचार था कि धर्म से ही भौतिक सुख और आध्यात्म की सिद्धि सम्भव है।[4] रोगियों और पीड़ितों की सेवा करने का संदेश देकर उन्होंने सच्चे अर्थों में धर्म पालन की प्रेरणा दी है।[5] उन्होंने अधर्म मूलक कार्य करने से आत्मा के टूट-फूट कर बिखर जाने का भय दर्शाया है ताकि लोग कुत्सित कार्यों से परे रह सकें।[6] वर्मा जी ने प्रबल संदेश देते हुये बताया कि दायें हाथ में पुण्यार्थ और बायें में धर्म हो, सो आँख बाँध में विश्वासिश्वास है।[7]

गढ़ कुण्डार	-1 पृष्ठ संख्या- 482	वृन्दावनलाल वर्मा
झाँसी की रानी	-2 पृष्ठ संख्या- 483	"
मुसाहिब जू	-3 पृष्ठ संख्या 7	"
अहिल्याबाई	-4 पृष्ठ संख्या- 108	"
प्रेमी मिलन	-5 पृष्ठ संख्या- 119	"
प्रेमी मिलन	-6 पृष्ठ संख्या- 160	"
प्रेमी मिलन	-7 पृष्ठ संख्या- 162	

वर्मा जी ने धर्म विरोधी कार्य करने वा धार्मिक ग्रन्थों की अवहेलना करने वालों को हेय दृष्टि से देखा है । राष्ट्रवाद प्रेमी उनकी आँखों में खटकता रहता है था, उन्होंने सब धर्मों को एक समान माना है और अनेकवाद की कल्पना की है। :1: धर्म पत्नी के पाखण्डों का ओढ़ा कराकर उन्होंने नारी जगत को उद्बोधन दिया है । :3: न्याय और धर्म को महत्ताप्रतिपादित करते हुये, वर्मा जी ने बताया कि अनेक आत्माओं भारी धर्म के लिये सिमट कर प्रचण्ड रूप धारण कर लेती है। उन्होंने धर्म की रक्षा को सर्वप्रथम कर्तव्य माना है । :4: :5: रानी अवन्तीबाई, लक्ष्मीबाई और शिवाजी की पत्नियों ने अपनी मातृ-भूमि और अपने सतीत्व की रक्षा हेतु अपने धर्म का पालन किया, जिससे लोगों को देशधर्म में प्राणाहुति कर देने की प्रेरणा मिली ।

इस प्रकार वर्मा जी ने आध्यात्मिक और धार्मिक स्तरों पर समुचित योगदान दिया है ।

उनके चतुर्थ पद्यों में न केवल बुन्देलखण्ड वासी, अपितु सम्पूर्ण भारत वासी प्रेरणा पाते रहेंगे। वर्मा जी ऐसी दिव्य-दृष्टि थे, जो सदियों-शताब्दियों तक सम्पूर्ण देश का प्रतिनिधित्व करते रहेंगे ।

प्रस्तावना	-1 पृष्ठ संख्या- 13	बुन्देलखण्ड-पर वर्मा
प्रस्तावना	-2 पृष्ठ संख्या- 30	"
प्रस्तावना	-3 पृष्ठ संख्या- 87	"
शिवाजी की पत्नियाँ	-4 पृष्ठ संख्या- 132	"
शिवाजी की पत्नियाँ	-5 पृष्ठ संख्या- 227	

उपसंहार

वृन्दावनलाल वर्मा एक प्रतिभाशाली उपन्यासकार हैं। उनके उपन्यास एक ऐसे विशेष क्षेत्र के सम्बन्ध में, जिसमें बुन्देलखण्ड की समूची संस्कृति प्रतिबिम्बित हुई है।

" इस चम्बल, इस नर्मदा, इस यमुना इस टौंस " की सीमाओं से घिरा बुन्देलखण्ड की संस्कृति, भारतीय संस्कृति में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यदि भारतीय संस्कृति काया है तो बुन्देली संस्कृति उसका अन्तः स्थल है। यदि भारतीय संस्कृति को एक ओर से, सुविस्तृत फलाश्रित वृक्ष के रूप में आंका जाये तो बुन्देली संस्कृति उस वृक्ष की जड़ है। वर्मा जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से बुन्देली संस्कृति की छवि अंकित की है। यमुना, नर्मदा, सिन्ध, मधुर, बेतवा, धसान, केन, दुधारी आदि बुन्देलखण्ड में प्रवाहित होने वाली सरिताओं, विन्ध्याचल, कालिंजर जैसे विशाल पर्वतों, महुआ, चिरौंजी, आम, नीम, बरगद, पीपल आदि घने वृक्षों तथा मनोहारी अन्य उपवनों का सजीव चित्रांकन करके, वर्मा जी ने बुन्देलखण्ड की मनोरम प्रकृति से जन मानस का परिचय कराया है। उनके बुन्देलखण्डी प्रकृति के चित्रण सराहनीय हैं। लहरी नदी का पानी और बुन्देलखण्ड की सौंधी माटी ने उनके व्यक्तित्व को सजाया तथा सवांरा था।

वर्मा जी के उपन्यासों में इस प्रकार से चित्रित अनेक ऐतिहासिक स्थलों की झांकी प्रस्तुत की गई है। वर्मा का पर्यटनशील इतिहास और तीर्थों के प्रति लोग आकर्षित रहे हैं और वीरों तथा सतियों की समाधियों पर श्रद्धान्वित होकर उन्हें श्रद्धांजलि भेंट करते रहे हैं।

वर्मा जी ने बुन्देलखण्ड के नारी जीवन की यथार्थ झांकी प्रस्तुत की है। उनके नारी पात्र पूर्णतया बुन्देलखण्ड की नारियों का

प्रतिनिधित्व करते हैं। वो वीर, त्यागी, कर्तव्यपरायण, उच्च, देशभक्ति, धर्मपरायण, नैतिक और आध्यात्मिक भावनाओं से ओत प्रोत हैं। वे अपने दायित्वों का पूर्ण रूप से निर्वाह करते हैं। उनकी वेशभूषा भले ही उत्कृष्ट न हो किन्तु उनमें आत्मीयता है, प्रेम है त्याग है और सच्चाई करने की भावना है। भोली भाली नारियाँ दादुरी, बेटा, कुन्दर, कांकेरू सब्बे पूरी, सैनी, कुमकुम, कदमनी और बिहुले पर्दे हुये, धोती का लहंगा पहने और लम्बा घूंघट डाले, वर्षा की नारियों की कमोबेश वेशभूषा को उद्घोषित करती हैं। उनमें वे सुद्ध-चित्त से स्वच्छन्दी बनजाती हैं, अपनी सभ्यता के साथ कठिन कृतसाधना, और पूजा पाठ करने में पीछे नहीं रहतीं पूरक्ष आश्रम के संचालन में भी वे सिद्धहस्त हैं।

वर्मा जी के उपन्यासों के पुरुष पात्र बुन्देलखण्ड के पुरुषों का प्रतिनिधित्व हैं उनकी प्रवृत्ति सात्विक, धार्मिक, आध्यात्मिक और नैतिक भावना से ओत प्रोत है। उनमें साहस, पराक्रम और वीरता की भी कमी नहीं है। पुटम्बू धोती, कमीज, जाकेट, कन्धे पर फटा कंबल सिर में बंधा लम्बा साफा और पैरों में देसी जूता पहने हुये वे देखकर बुन्देलखण्ड के निवासियों के सादा जीवन और उच्च विचारों का पूर्ण आभास हो जाता है। वे अतिथियों के सत्कार में जितने उदार हैं शत्रुओं को पराजय करने में उतने ही दुर्दान्त।

वर्मा जी के उपन्यासों में बुन्देली भाषा के शब्द, रत्नों की तरह से जड़े हुये हैं ऐसा लगता है कि वे बुन्देली भाषा के साहित्य के कण कण को जीवन्त विभोर कर देने का संकल्प लिये हुये हैं। लोकोक्तियाँ

एवं भूमिकाएं उनके उपन्यासों में उन्हें रोचकता और सजीवता ला देती हैं।

बुन्देलखण्ड के निवासी कला प्रिय रहे हैं। कलाओं में उस भू भाग के सम्पूर्ण वातावरण को सफलतापूर्वक रंग में रंग दिया है जिसकी मनोरम झांकी वर्मा जी द्वारा प्रस्तुत की गई है। कलात्मक मन्दिरों, विलास भवनों और सुसज्जित गढ़ों का निर्माण यहां के निवासियों की कलात्मकता प्रियता की साक्षी रखते हैं। बुन्देली नृत्य संगीत, चित्रकला हस्तशिल्पियां, लोकगीत आदि जिससे मन को गहरी लुभाते। इन सबका सजीव चित्रांकन करने में वर्मा जी को अद्भुत पूर्ण सफलता मिली है।

वर्मा जी ने इस क्षेत्र के विभिन्न रीति रिवाजों और मनोरंजनों का उल्लेख करके, क्षेत्रीय संस्कृति के अंग प्रत्यंग को उभारने का सफल प्रयास किया है।

वर्मा जी के उपन्यासों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने बुन्देलखण्ड की सामान्य सांस्कृतिक विशेषताओं का चित्रण किया है। आध्यात्म, धर्म, सौन्दर्य, मूढ़ाभक्ति, अवतारवाद, पारिवारिक चित्रण प्रवृत्तियां, पारिवारिक, सामाजिक, सुसंगठित परिवार के व्यक्तियों के पारिवारिक सम्बन्ध पारस्परिक सम्बन्ध, अपनत्व की भावना, आत्मपरायणता, संस्कार, भोजन, वस्त्र, प्रसाधन सामग्री, व्यायाम, खाड़े आदि सभी विशेषताओं का उल्लेख करके उन्होंने बुन्देली संस्कृति का सम्पूर्ण रूप उन भावों के समक्ष प्रस्तुत किया है।

वर्मा जी के सांस्कृतिक पक्षों से न केवल बुन्देलखण्ड अपितु सम्पूर्ण देश का आर्य दर्शन हो रहा है उन्होंने सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक ऐतिहासिक, आर्थिक, आध्यात्मिक सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिये हैं,

जिससे देश विदेश लाभान्वित होता है।

वर्मा जी ने अनेक उपन्यासकारों को भी जन्म दिया है और प्रेरणा प्रदान करके अपने दायित्वों का पूर्ण पालन किया है उन्होंने बुन्देल खण्ड की संस्कृति का जितना सजीव और सफल चित्रांकन किया है वैसा कोई अन्य आंचलिक उपन्यासकार कर सकने में सक्षम नहीं हो सका है।

वर्मा जी बुन्देली वसुन्धरा के सच्चे सपूत थे जिनका सम्पूर्ण जीवन अपनी मातृभूमि की सेवा में व्यतीत हुआ है। वर्मा जी जैसे उच्च कोटि के साहित्यकार का अभाव बुन्देलखण्ड में सदैव खटकता रहेगा। किन्तु उनके उपन्यास साहित्य के रूप में घर घर प्रेरणा अवश्य देते रहेंगे। इस मूर्धन्य साहित्यकार को शत शत नमन करने में सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड के निवासी अपने को गौरवान्वित समझेंगे।

अपने यशस्वी सपूत के वियोग में व्यथित बुन्देली वसुधा की मनोदशा अवलोकनीय है।

बुन्देली धरती की माटी और लहरों का पानी,
फूल कांटों से टकराकर,गाता जिसकी अमर कहानी।
जब न "स्वामी" से वसन्त को,फूल गई बगिया की
जब से "वृन्दावन" से त्यागा,सुख सही दुनियाँ ।।

यह सत्य है कि पूज्य वर्मा जी को हम अपने वाङ्मय पुष्पों से श्रद्धा अवलोकन करने की क्षमता नहीं रखते किन्तु यह निर्विवाद सत्य है कि वे अमर थे और युग युगान्तरों तक अमर रहेंगे।

सहायक ग्रन्थ सूची

(क) संस्कृत एवं हिन्दी के ग्रन्थ :

१: छान्दोग्योपनिषद

२: कौटिल्य

३: अशोक के फूल : डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी

४: भारतीय संस्कृति और उसका इतिहास : डा० सत्येन्द्र विद्यालंकार

५: भारतीय संस्कृति : डा० देवराज

६: भारतीय समाज का ऐतिहासिक विश्लेषण : डा० भारतशरण उपाध्याय

७: संस्कृति के चार अध्याय : श्री रामधारी सिंह दिनकर

८: मुन्शी अभिनन्दन ग्रन्थ : डा० गुलाबराय

९: भारतीय संस्कृति का विकास : डा० मंगलदेव शास्त्री

१०: स्वतन्त्रता और संस्कृति : डा० राधाकृष्णन्

११: प्रमाणिक शब्दकोश : श्री रामचन्द्र वर्मा

१२: मध्यकालीन हिन्दी काव्य में भारतीय संस्कृति : डा० भवानीशंकर गुप्त

१३: समाजशास्त्र की रूप रेखा : श्री रामबिहारीसिंह तोमर

१४: व्यक्ति और समाज : प्रो० गोस्वामी

१५: हिन्दी साहित्य कोश : धीरेन्द्र वर्मा

१६: भारतीय संस्कृति का प्रभाव : श्री चन्द्र विद्यावाचस्पति

१७: भारतीय संस्कृति के मूलतत्व : डा० इन्दुमती

१८: भारत का सांस्कृतिक इतिहास : हरिदत्त वेदालंकार

१९: भारतीय संस्कृति की प्रमुख धाराये : मालवीय एवं त्रिपाठी

२०: हमारे पर्व और त्योहार : श्री० हरिहरसिंह

२१: बुन्देलखण्ड की संस्कृति और साहित्य : श्री रामचरण व्यास "मिश्र"

२२: हमारी जीवन संस्कृति : श्री रामानन्द तिवारी

२३: भारतीय ग्रामीण समाज : बालेश्वरीसिंह परिहार

२४: लोकायनी : श्री रामधारी सिंह "दिनकर"
२५: ईसुरी प्रकाश : स्व० पं० गौरीशंकर द्विवेदी
२६: बुन्देलखण्ड की आत्मा : पं० विष्णुदत्त शर्मा
२७: बुन्देली बोल : गजराजसिंह सेंगर "निर्मोही"
२८: विन्ध्य भूमि की लोक कथायें : श्री चन्द्र अम्बाप्रसाद
२९: रानी लक्ष्मीबाई : श्री निवास बालाजी हार्डीकर
३०: बुन्देलखण्ड का इतिहास : दीवान प्रतिपालसिंह
३१: भारतभूमि का इतिहास : शिवनारायणसिंह राना
३२: बुन्देलखण्ड की पावन भूमि : स्व० हरिकेन्द्र जी
३३: सांस्कृतिक भारत : डा० भगवतशरण उपाध्याय
३४: सूर और उनका साहित्य : डा० हरबंशलाल शर्मा
३५: आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास : डा० कृष्णलाल
३६: आलोचना इतिहास विशेषांक : डा० प्रभाकर माचवे
३७: वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यासों का सांस्कृतिक अध्ययन : डा० कृष्णा जलवी
३८: प्रेमाश्रम : मुंशी प्रेमचन्द
३९: गोदान : मुंशी प्रेमचन्द
४०: गबन : मुंशी प्रेमचन्द
४१: भिखारिणी : विश्वम्भरनाथ कौशिक
४२: यशोधरा जीत गई : दिनेश राधा
४३: दो बहिनें : भगवतीप्रसाद वाजपेयी
४४: परख : जैनेन्द्र कुमार
४५: सुखदा : जैनेन्द्र कुमार
४६: अंतिम आकांक्षा : शिवाराम शरण गुप्त
४७: राज मतृकी : श्री अमीर अहमद
४८: सिं० सेनापति : राहुल सांकृत्यायन

४९: गंगा मैया : भैरव प्रसाद गुप्त

५०: मैला आँचल : फणीश्वर नाथ रेणु

५१: विश्वास का बल : भगवतीप्रसाद वाजपेयी

५२: हिन्दी उपन्यास : एक अन्तर्यात्रा : डा० रामदरश मिश्र

५३: अपनी कहानी : वृन्दावनलाल वर्मा

५४: साहित्य सन्देश ।।ऐतिहासिक उपन्यास विशेषांक।।
डा० भागीरथ मिश्र

५५: हिन्दी उपन्यास : डा० शिव नारायण श्रीवास्तव

५६: हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास : डा० रामनारायणसिंह मधुर

५७: कहानी : रावलदास बन्द्योपाध्याय

५८: उपन्यास और कला : डा० शिव कुमार मिश्र

५९: कल्याण हिन्दू संस्कृति अंक : कल्याणी जी

६०: उपन्यासकार वृन्दावनलाल वर्मा : शशिभूषण सिंहल

६१: हिन्दी उपन्यास विवेचन : डा० सत्येन्द्र

६२: हिन्दी साहित्य का इतिहास : रामचन्द्र शुक्ल

६३: साहित्य सन्देश : त्रिलोकीनाथ दीक्षित

६४: हिन्दी के स्वच्छन्दतावादी उपन्यास : डा० कमलकुमारी चौधरी

।स।

ENGLISH BOOKS :- & LITRATURE

1. Primitive culture - E.V. Tylor
2. Encyclopaedia of Social Science -Melinowki
3. The Evolution of culture - Lesli A white
4. General Anthropology- Boar & others
5. Culture and Anarcy preface- Mathew Arnold
6. Mythology of the Aryan Nations- Cox.
7. Our Greatest need- K.M.Munshi
8. The Novel & the people - Rolf

।ग। पत्र पत्रिकायें :

१: वर्तमान ज्योति

२: दैनिक मध्यदेश ।। दीपावलि विशेषांक ।।

३: हिन्दू धुत कमाये : श्रीमती मृणाल

४: बुन्देलखण्ड प्रान्त निर्माण लेख : इन्दु सक्सेना

५: करवीर नारी पत्रिका : हर प्रसाद प्रेमी

।घ। शीघ्र प्रबन्ध में प्रयुक्त वर्मा जी के उपन्यास :

१: गढ़कुण्डार : संस्करण ८, १९७७ : रचनाकाल १९२७

२: लगन संस्करण १३, १९७४ : रचनाकाल १९२७

३: संगम संस्करण ३, १९६३ : रचनाकाल १९२७

४: मृत्यागत संस्करण २, १९६० : रचनाकाल १९२७

५: कुण्डली चक्र संस्करण ६, १९७३ : रचनाकाल १९२८

६: प्रेम की भेंट संस्करण ६, १९७६ : रचनाकाल १९२८

७: विराटा की पद्मिनी संस्करण १०, १९७६ रचनाकाल १९३३

८: मुसाहिब जू संस्करण संशोधित १९७९ रचनाकाल १९३७

९: कभी न कभी संस्करण ३, १९६३ रचनाकाल १९४२-४३

१०: झाँसी की रानी संस्करण १५, १९७३ रचनाकाल १९४६

११: सोनागढ़ संस्करण ११, १९७५ रचनाकाल १९४६

१२: अचल मेरा कोई संस्करण १२, १९७२ रचनाकाल १९४७

१३: माधव जी सिन्धिया संस्करण ७, १९७४ रचनाकाल १९४८

१४: टूटे काँटे संस्करण ४, १९६५ रचनाकाल १९४९

१५: फूलमयनी संस्करण १९, १९६५ रचनाकाल १९५०

१६: सीमा संस्करण १०, १९७५ रचनाकाल १९५०

१७: अमरबेल संस्करण ४, १९६३ रचनाकाल १९५२

१८: भुवन विक्रम संस्करण ८, १९७५ रचनाकाल १९५५

१९: अविस्मरणीय संस्करण २३, १९७४ रचनाकाल १९५५

२०: आग्रह संस्करण ४, १९७१ रचनाकाल १९६०

२१: उपयोगिता संस्करण ३, १९६५ रचनाकाल १९६१

२२: दुनीयती संस्करण ८, १९७३ रचनाकाल १९६१

२३: रामगढ़ की रानी संस्करण ४, १९७३ रचनाकाल १९६१

२४: बीचड़ और कमल संस्करण ३, १९७३ रचनाकाल १९६३

२५: सीती आग संस्करण २, १९७२ रचनाकाल १९६४

२६: देवगढ़ की मुसलमान संस्करण १, १९७५ रचनाकाल १९६७

२७: ललितादित्य ।। ऐतिहासिक उपन्यास ।। अप्रकाशित

२८: अमर ज्योति ।। विविध उपन्यास ।। अप्रकाशित

२९: अब कथा की अमूर्त सत्ता अप्रकाशित

ooooooooooooooo